अन्तोन मकारेन्को

जीवन की ओर



अन्तोन मकारेन्को

जीवन की ओर

दो खण्डों में

द्वितीय खण्ड

दूसरा और तीसरा भाग



'राद्गा' प्रकाशन ताशक़न्द १६८५

अनुवादक : नरोत्तम नागर
चित्रकार कन्स्तान्तिन इवानोविच ईशिन

АНТОН МАКАРЕНКО

ПЕДАГОГИЧЕСКАЯ ПОЭМА

Роман в двух томах

Том II

Части вторая и третья

На языке хинди

ANTON MAKARENKO

THE ROAD TO LIFE

A novel. In two books

Book 2

in Hindi

M $\frac{4803010102-189}{031(05)-85}$ 390-84

दूसरा संस्करण

ISBN 5 — 05 — 000623 — 6
ISBN 5 — 05 — 000625 — 2

विषय-सूची

दूसरा भाग

तीसरा भाग

दूसरा भाग

१. दूध का एक कूज़ा

वह ग्रीष्म का एक सुन्दर सुहावना दिन था, जब हमने नयी कोलोनी ।। स्थानान्तरण किया। पेड़ों की पत्तियों ने अभी रंग बदलना शुरू नहीं किया था। घास अभी भी हरी-भरी थी—शरद के प्रारंभिक दिनों की ताज़गी से युक्त उसकी नवीनता जैसे दूसरी बार हिलोरें ले रही थी। नयी कोलोनी भी, अपने-आप में, तीस वर्षीया सुन्दरी प्रतीत होती थी—खुद अपने-आप पर मुग्ध होती और दूसरों को भी मुग्ध करती हुई अपने सुनिश्चित आकर्षण में प्रसन्न और शान्त। कोलोमाक नदी करीब-क़रीब चारों ओर से उसे पखारती थी, एक संकरा सा पथ छोड़ते हुए जो गोंचारोव्का गांव से उसका सम्बन्ध जोड़ता था। हमारे बग़ीचे के खूब हरे-भरे तथा कानाफूसी करते पेड़ कोलोमाक पर अपना चंवर डुलाते थे। छायादार रहस्यमय स्थलों की वहां कमी नहीं थी जहां स्नान किया जा सकता था, सौन्दर्य की प्रतिमाओं के साथ मेल-मिलाप बढ़ाया जा सकता था, मछलियों का शिकार या और भी कुछ नहीं तो अपने मित्रों के साथ मन का भार हल्का किया जा सकता था। हमारी मुख्य इमारतें गहरे तट के ऊपरी हिस्से में स्थित थीं। लाज की चेतना से अछूते तथा चतुराई से भरे हमारे नन्हे लड़के अपने अल्प कपड़ों को खिड़कियों की ओटक पर रख सीधे वहीं से नदी में छलांग लगा सकते थे।

पुराने बग़ीचेवाला ढलान चबूतरेदार था, और सबसे नीचेवाले चबूतरे पर, एकदम शुरू से ही, शेरे नें दख़ल जमा लिया था। हवा और धूप की यहां सदा बहार थी। कोलोमाक नदी का प्रवाह जल-परियों, मछलियों के शिकार और कविता के लिए कोई ख़ास उपयुक्त न होने पर भी शान्त और प्रशस्त था। कविता के बजाय गोभी और

काली करेण्ट यहां लहलहाती थीं। एकदम कामकाजी इरादे से, फावड़े या अपनी कुदाली से लैस, कोलोनी के सदस्य यहां जाते थे। कभी-कभी कुछ लड़के, हल में जुते और मुश्किल से चल पाते 'बाज़' या 'डाकू' के साथ इधर आते दिखाई पड़ते थे। तट से साढ़े तीन गज़ आगे तक कोलोमाक की लहरों के ऊपर निकले हुए तीन तख़्तों से सज्जित हमारा घाट भी यहीं स्थित था।

और भी आगे, पूर्व की ओर बल खाती हुई कोलोमाक नदी बड़ी उदारता के साथ, हमारे पदतल में कई हेक्टरों के क्षेत्र में चरागाह की हरी भूमि छोड़ गई थी, जिनमें जहां-तहां झाड़ियां और वन-खंड लहराते नज़र आते थे। अपने नये बग़ीचे से हम सीधे इस चरागाह में पहुंच सकते थे। अवकाश के क्षणों में बग़ीचे के छोर पर स्थित इस हरियाले ढलान पर जाने तथा पोपलर के पेड़ों की छाया में बैठकर चरागाह, वन-खण्डों, आकाश और क्षितिज के पट पर अंकित गों-चारोव्का गांव की छायाकृति को एक बार फिर नज़र भर कर दखने के लिए मन बुरी तरह ललकता था। कालीना इवानोविच इस जगह का बहुत प्रेमी था। कभी-कभी दोपहर के समय किसी इतवार के दिन वह मुझे भी अपने साथ वहां खींचकर ले जाता था।

कालीना इवानोविच के साथ बातें करना मुझे बड़ा अच्छा लगता था: किसानों के बारे में, मरम्मतों के बारे में, जीवन की ज़्यादतियों तथा ख़ुद अपने ही भविष्य के बारे में। हमारे सामने चरागाह फैली होती थी। और यह स्थिति उसे कभी-कभी उसकी अत्यन्त उच्च दार्शनिक उड़ानों से भटका देती थी।

"जानते हो, दादा, ज़िन्दगी एक स्त्री की भांति है – इन दोनों से ही न्याय की आशा नहीं की जा सकती। कोई आता है बढ़िया मूंछ पैनाए – मालपूओं, पनीर की टिकियों तथा इलायची-दानों से उसे पाट दिया जाता है। फिर दूसरा आता है जिसकी, मूंछों की बात छोड़िए, दाढ़ी तक नहीं उगना चाहती, और वह दुष्टा पानी की एक घूंट तक उसे नहीं देती। हां तो मैं घुड़सवार सेना में था... ओह, कुत्ते की औ-लाद, तेरा दिमाग़ कहां है? भोजन की जगह क्या उसे ही चटकर गया, या उसे घर पर छोड़ आया? देख तो, मुफ़्तख़ोर, घोड़े को तूने कहां भटक जाने दिया है। बुरा हो तेरा। वहां गोभी उगी हुई है।"

मुझसे काफ़ी दूर, खड़े-खड़े ही अपने पाइप को हवा में हिलाते हुए, कालीना इवानोविच अपने इन उद्‌गारों को पूर्ण करता था।

करीब तीन सौ गज़ की दूरी पर घास के बीच, मुश्की रंग के पृष्ठ-भाग पर नज़र पड़ती, लेकिन वहां 'कुत्ते की औलाद' जैसी कोई चीज़ न दिखाई देती थी। जो हो, कालीना इवानोविच से यह छिपा नहीं था कि किसको वह सम्बोधित कर रहा है। चरागाह ब्रातचेन्को की रियासत थी, वह बराबर वहां रहता था, – अदृश्य, और कालीना इवानोविच उसी को लक्ष्य कर सम्भाषण रूपी अपने इन मंत्रों का उच्चारण करता था। दो या तीन बार वह अपने इन संक्षिप्त मंत्रों की मूठ चलाता, और ब्रातचेंको एकदम जादुई ढंग से, घोड़े के बराबर में नहीं बल्कि ठीक हमारे पीछे, बग़ीचे में से सशरीर प्रकट हो जाता।

"क्यों बेकार शोर मचा रहे हो, कालीना इवानोविच? गोभियां कहां हैं और घोड़ा कहां है?"

इसके बाद तद्‌विषयक अत्यन्त लम्बी बहस छिड़ जाती जिसे सुनकर एक उनजाने आदमी को भी यह पता चल जाता कि कालीना इवानोविच अपने विचारों में काफ़ी पुराना पड़ गया है। कोलोनी के नाक़नक़्शे का अनुसरण करना अब उसके लिए कठिन है। उसे सचमुच यह याद नहीं है कि गोभियां उगाने के लिए किस जगह खेत साफ़ किया गया था।

लड़कों ने कालीना इवानोविच को शान्ति के साथ बुढ़ाने के लिए छुट्टा छोड़ दिया था। खेतीबाड़ी का काम अब एकमात्र शेरे के हाथों में था और कालीना इवानोविच केवल जब-तब अतिसावधान आलोचना के द्वारा कृषि रूपी दुर्ग की दरारों में अपनी पुरानी नाक धंसाने का प्रयत्न करता था। परन्तु शेरे बहुत ही ठंडे, सलीक़ेदार तथा मगन ढंग से उसकी इस नाक में चिकोटी काटता था और कालीना इवानोविच हमेशा मैदान छोड़कर भागता नज़र आता था।

लेकिन, इस सब के बावजूद, हमारे सामान्य अर्थ-तंत्र में कालीना इवानोविच की स्थिति अधिकाधिक उस राजा के समान बनती जा रही थी जो राजा तो होता है, लेकिन शासन नहीं करता। उसके आर्थिक राजत्व को हम सभी मानते थे, उसकी सूक्तियों को सिर झुकाकर सुनते थे, लेकिन करते वही थे जो हमें ठीक लगता था।

कालीना इवानोविच इसका बुरा भी नहीं मानता था, कारण कि वह छुई-मुई स्वभाव का आदमी नहीं था, इसके अलावा वह, वस्तुत: अपनी दार्शनिकता के सिवा और किसी चीज़ से वास्ता नहीं रखता था।

बहुत पहले से क़ायम परम्परा के अनुसार घोड़ा-गाड़ी लेकर शहर जाने का काम कालीना इवानोविच किया करता था। उसकी इन यात्राओं के साथ अब समारोह का भी कुछ पुट शामिल हो गया था। पुराने ढंग के ठाठ-बाट का वह सदा से ही पक्षपाती था, और लड़के उसके इस उद्‌गार से परिचित थे:

"श्रीमन्त लोगों की बग्घी ठाठदार और घोड़ा अकाल का मारा होता है, लेकिन अच्छे मालिकों की बग्घी सीधी-सादी और घोड़ा ख़ूब हृष्ट-पुष्ट होता है।"

लड़के पुरानी ताबूतनुमा गाड़ी के फ़र्श पर ताज़ी घास बिछाकर उसे एक साफ़-सुथरी हाथ की बुनी चादर से ढक देते। इसके बाद सबसे अच्छे घोड़ों को उसमें जोतते और ठाठ के साथ हांकते हुए उसे कालीना इवानोविच की देहरी पर ले जाकर खड़ा कर देते। हमारे सारे अधिकारी अपना-अपना कर्त्तव्य पालन करते थे। हमारे सहकारी सप्लाई मैनेजर देनीस कुदलाती की जेब में उन सब कामों की सूची होती थी जिन्हें शहर में करना होता था। अल्योश्का वोल्कोव – हमारा स्टोरकीपर – आवश्यक बक्सों, नांदों, सुतली के गोलों तथा पैकिंग के लिए अन्य चीज़ों को घास के नीचे खिसका देता था। कालीना इवानोविच गाड़ी को तीन या चार मिनट तक अपनी देहरी पर इन्तज़ार में खड़ा रखता, और इसके बाद बाक़ायदा लोहा किये हुए साफ़-सुथरे बरसाती कोट में बाहर प्रकट होता था। पहले से तैयार किये हुए अपने पाइप में माचिस लगाता, घोड़े और गाड़ी पर एक उड़ती हुई-सी नज़र डालता, और दांतों के बीच से कभी-कभी रोष के साथ बुदबुदा उठता:

"जाने कितनी बार मैंने तुमसे कहा है कि इस मनहूस टोपी को पहनकर शहर न जाया करो, ओह, कैसे बेवक़ूफ़ों से पाला पड़ा है।"

और उस बीच जबकि देनीस अपने साथियों में से किसी एक से टोपी बदलता होता, कालीना इवानोविच अपनी जगह पर जा बैठता और आदेश देता: "हां तो चलो अब।"

शहर में कालीना इवानोविच रसद-विभाग के किसी बड़े अफ़सर के दफ़्तर में अपना समय बिताता था। अपने सिर को सीधा रखने तथा उस सशक्त और समृद्ध सत्ता – गोर्की कोलोनी – की प्रतिष्ठा को ऊंचा उठाए रखने का प्रयत्न करता। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए उसकी बातचीत मुख्यतः उच्च राजनीतिक महत्व में पगी होती।

"किसानों के पास वह सभी कुछ है जो उन्हें चाहिए," वह एलान करता, "यह मैं दावे के साथ कह सकता हूं।"

इस बीच देनीस कुदलाती, उधार ली हुई अपनी टोपी पहने, भण्डार के निचले तल्ले में प्रवाहित सम्पदाओं के सागर में तैरता और डुबकियां लगाता रहता। आदेशों को दर्ज करता, मैनेजरों और क्लर्कों से झगड़ता, बोरों और थैलों से गाड़ी को लादता, – इस बात का ध्यान रखते हुए कि कालीना इवानोविच की बैठने की जगह एकदम सही-सलामत रहे। घोड़ों को दाना-पानी देता और तीन बजे दफ़्तर में आटा और बुरादा लेकर उपस्थित हो जाता।

"चलने का समय हो गया, कालीना इवानोविच।"

कालीना इवानोविच के चेहरे पर एक कूटनीतिपूर्ण मुसकान खेल जाती। निदेशक के हाथ को दबाते हुए काम-काजी अन्दाज़ में वह देनीस से पूछता: "हर चीज़ क़ायदे से गाड़ी में रख ली है न?"

कोलोनी में वापस लौटने पर थकान से चूर कालीना इवानोविच आराम करता, जबकि देनीस उतावली के साथ अपने गुनगुने भोजन को गटकता, कोलोनी की सम्पदा-प्रणालियों को इधर से उधर नापता और बूढ़ी स्त्री की भांति बड़बड़ाता जाता।

देनीस कुदलाती का स्वभाव ही कुछ ऐसा था कि वह किसी चीज़ को नष्ट होते देखना सहन नहीं कर सकता था। भूसे को गाड़ी से गिरते देख उसे सचमुच में कष्ट होता था। किसी के ताला खोने, घास के बाड़े के दरवाजे को एक ही चूल से अटका छोड़ देने पर भी उसकी ऐसी ही हालत होती थी। हालांकि वह मुसकराता कम था, लेकिन चिड़चिड़ा कभी नहीं मालूम होता था। और जिस धुन के साथ वह आर्थिक साधनों को नष्ट करनेवालों के पीछे पड़ता था, उसमें केवल दोष निकालने जैसी कभी कोई बात नहीं होती थी। उसकी आवाज़ में समझाने की ठोस भावना तथा संयमित इच्छा का कुछ विचित्र

पूट मिला होता था। वह उन छोटे बच्चों से व्यवहार करना जानता था जो अपने भोलेपन के कारण यह विश्वास करते थे कि पेड़ पर चढ़ना मानवीय शक्ति का अत्यन्त संगत ढंग से व्यय करना है। देनीस अपनी भौंहों के एक इशारे मात्र से उन्हें पेड़ से नीचे उतार लेता था।

"आखिर मामला क्या है – कभी अपने दिमाग़ से भी सोचा करो। जल्दी ही तुम ब्याह करने लायक़ हो जाओगे, लेकिन तुम लोग हो कि यहां बेदवृक्ष पर चढ़े अपनी पतलूनों की दुर्गत कर रहे हो। चलो, मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें दूसरी पतलून दे दूंगा!"

"कैसी पतलून?" नन्हा लड़का सहमकर पूछता।

"ऐसी जिसे पहनकर पेड़ों पर चढ़ा जा सके। भला नयी पतलून पहनकर क्या कभी कोई पेड़ों पर चढ़ता है? क्या तुमने कभी किसी को ऐसा करते देखा है?"

अर्थ-सम्बन्धी भावना का देनीस पर गहरा रंग चढ़ा था, और इसलिए मानवीय भावनाओं के प्रति संवेदनशील होने में वह असमर्थ था। वह नहीं समझ सकता था कि नयी पतलून मिलने के आनन्दातिरेक ने ही उस छोटे लड़के को पेड़ पर चढ़ने के लिए प्रेरित किया है। पतलून और पेड़ पर चढ़ने में आपसी सम्बन्ध था, जबकि देनीस उनमें क़तई कोई पटरी नहीं बैठा सकता था।

लेकिन, यह सब होने पर भी देनीस कुदलाती की यह कड़ी नीति एक आवश्यकता की पूरक थी, हमारी ग़रीबी का यह तक़ाज़ा था। इसलिए हम जान-मार हद तक किफ़ायत करते, कमाण्डरों की परिषद कुदलाती को सहायक सप्लाई मैनेजर के रूप में मनोनीत करती थी। सो पतलूनों के बारे में छोटे लड़कों की इस अनुचित शिकायत को कि उनके साथ बदले में व्यर्थ ही ज़्यादती की गई, कमाण्डरों की परिषद ने दृढ़ता के साथ रद्द कर दिया। कराबानोव, बेलूखिन, वेर्शनेव, वुरून तथा अन्य पुराने लड़के कुदलाती की शक्ति की सराहना करते थे। उन्होंने बिना किसी भुनभुनाहट के कुदलाती के इस आदेश को सिर झुकाकर ग्रहण किया जो कि उसने वसन्त की एक आम सभा में दिया था "कल जूते स्टोररूम में लौटा दिए जाएं। गर्मियों में हम नंगे पांव गुज़र सकते हैं।"

अक्तूबर १९२३ में देनीस ने कसकर काम किया। जिन इमारतों की

अब तक पूर्ण मरम्मत हो चुकी थी, उनमें कोलोनी के दस दस्ते मुश्किल से ही समा सकते थे। पुराने प्रासाद में, जिसे हम श्वेत घर कहते थे, शयनागार और पाठशालाएं थीं, और बड़े हाल में जो बरामदे का काम देता था, बढ़ईघर था। भोजन के कमरे के लिए दूसरे घर के निचले भाग में जगह मिली थी जहां कोलोनी के कर्मचारी रहते थे। इस कमरे में एक बार में तीस से ज़्यादा लोग नहीं बैठ सकते थे। फलस्वरूप हमें तीन पालियों में भोजन करना पड़ता था। मोचीखाने, पहियासाज़ी तथा दर्ज़ीघरों को – उद्योगशाला के लिए सर्वथा अनुपयुक्त स्थानों में धकेल दिया गया था। कोलोनी में किसी के पास भी पर्याप्त जगह नहीं थी – न तो शिष्यों के, और न ही अध्यापकों के। शाही ढंग की एक दोमंज़िला इमारत समृद्ध सम्पन्नता की एकमात्र यादगार के रूप में, नये बग़ीचे में खड़ी थी। उसके ख़ूब ऊंचे खुले कमरे, बेलबूटों से सजी-धजी उसकी पलस्तर की हुई छतें, और बग़ीचे की ओर उन्मुख उसका चौड़ा बरामदा देखकर हमारा हृदय ललक उठता था। केवल फ़र्श, खिड़कियां, दरवाज़े, सीढ़ियां और भट्टी बनाने भर की देर थी। इससे एक सौ बीस लोगों को शानदार शयनागार मिल जाता और शिक्षण सम्बन्धी सभी प्रकार की आवश्यकताओं के लिए जगह निकल आती। लेकिन इस सबके लिए छः हज़ार रूबल की दरकार थी, और उन्हीं की हमारे पास कमी थी। हमारी समूची भूतपूर्व ग़रीबी, अदा न होनेवाले अवशेषों के ख़िलाफ़ संघर्ष की भेंट चढ़ जाती थी। इस ग़रीबी में फिर लौटकर जाना हम सभी के लिए असह्य था। इस मोर्चे पर हमारे आक्रमण ने रूई भरी जाकेटों, चिथड़ा हुई टोपियों, ख़ानाबदोशी बिस्तरों, अन्तिम रोमानोव युग की विरासत रूई भरी रज़ाइयों और पांवों के इर्द-गिर्द लपेटनेवाले चीथड़ों का सफ़ाया कर दिया था। महीने में दो बार बाल बनानेवाला अब हमारे यहां आने लगा था, और बावजूद इसके कि वह क़ैंची से बालों की सफ़ाई के तथा बाक़ायदा बालों की कटाई के बीस कोपेक वसूलता था, विभिन्न शैली में बाल कटाने की ऐयाशी करने की स्थिति में अब हम हो गए थे। यह सच है कि हमारा फ़र्नीचर – मेज़-कुर्सियां अभी रोग़न से वंचित थीं, शोरबे के लिए अभी तक हम लकड़ी की चम्मचों का प्रयोग करते थे, और हमारे नीचे पहनने के कपड़ों में अभी भी पैबन्द

लगे थे, लेकिन ऐसा इसलिए था कि हम अपनी आय के अधिकांश भाग को साज़-सामान, औज़ारों तथा नित्य पूँजी के अन्य रूपों में परिवर्तित कर लेते थे।

हमारे पास छः हज़ार रूबल की आवश्यक रक़म नहीं थी, और न ही उसे प्राप्त करने की कोई सम्भावना थी। नित्य ही इस रक़म की चर्चा होती थी, – आम सभाओं में, क़माण्डरों की परिषद में, कोम्सोमोल के भाषणों में, या महज़ अपने से बड़ों की बातचीत तथा छोटों की चहचहाटों के दौरान और हर बार इतनी बड़ी – लम्बी-चौड़ी – रक़म को प्राप्त करना एक असंभव कल्पना मालूम होती थी।

उस समय गोर्की कोलोनी शिक्षा की जन-कमिसरियट की मातहती में थी। उससे हमें, जो तख़मीना हम पेश करते थे उसके अनुसार, थोड़ी सहायता मिल जाती थी। सहायता के परिमाण का अन्दाज़ा इस तथ्य से किया जा सकता है कि कपड़ों के लिए प्रति व्यक्ति अट्ठाईस रूबल वार्षिक की रक़म नियत की गई थी। कालीना इवानोविच विक्षुब्ध हो उठा:

"भला कौन है वह चतुर जिसने यह रक़म नियत की है? काश कि मैं उसके चौखटे पर एक नज़र डाल सकता – केवल यह जानने के लिए कि वह कैसा दिखता है। तीन बीस, आप जानो पूरे साठ साल हो गए मुझे इस दुनिया में आए, लेकिन हाड-मांस का ऐसा कोई जीव अब तक मेरे देखने में नहीं आया... हरामख़ोर कहीं का।"

ऐसे जीवों को मैंने कभी नहीं देखा था, हालांकि शिक्षा की जन-कमिसरियट में मेरा अक्सर जाना होता था। ये आंकड़े – रक़म के ये अंक – किसी जीवित संयोजक की देन नहीं थे, बल्कि सारे देश में मौजूद परित्यक्तों तथा आवारा लड़कों के लिए नियत रक़म को उनकी संख्या से भाग करके इन्हें प्राप्त किया गया था।

धन के अभाव में लाल भवन को – जैसा कि घनिष्ठता के साथ त्रेपके जागीर की इस राजसी इमारत का हमने नाम रख छोड़ा था, – झाड़-बुहारकर हमने इतना लक़दक़ बना दिया जैसे उसमें नृत्य का समारोह होनेवाला हो, लेकिन नृत्य का यह समारोह था कि अनिश्चित काल के लिए टल गया था। यहां तक कि प्रथम नृत्यकर्त्ता – बढ़ई के पास अभी बुलावा नहीं भेजा गया था।

लेकिन, इस निराशाजनक स्थिति के बावजूद, कोलोनी के निवासियों के मन बुझे हों, ऐसा कुछ नहीं था। कराबानोव के शब्दों में इसका कारण दानवी शक्तियों में हमारा विश्वास था।

"देख लेना, शैतान हमारी मदद करेगा। भाग्य के हम शुरू से सिकन्दर हैं, प्रेम की हम सन्तान हैं... देख लेना आप, अगर खुद शैतान नहीं तो कोई प्रेतात्मा – कोई डायन या ऐसी ही कोई अन्य हस्ती – हमारी मदद करेगी... मुझे तो, सच, विश्वास नहीं होता कि यह घर सदा हमारी आंखों का कांटा ही बना रहेगा।"

और सो, एक तार द्वारा हमें सूचना मिली कि छः अक्तूबर को 'उक्राइनी बाल-सहायता' की एक निरीक्षिका जिनका नाम बोकोवा था, हमारा मुआयना करने आएंगी। और उन्हें ले आने के लिए खारकोव गाड़ी के समय पर सवारी भेजना जरूरी है। कोलोनी के अग्रणी लड़कों को यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समाचार मालूम हुआ और उनमें से कितनों ने ही यह विचार प्रकट किया कि लाल भवन की मरम्मत अब फ़ौरन अमल में आ सकती है।

"बुढ़िया हमारे लिए छः हज़ार रूबल का बन्दोबस्त कर सकती है..."

"तुमने कैसे जाना कि वह बुढ़िया है?"

"'बाल सहायता' में हमेशा बूढ़ी स्त्रियां ही तो होती हैं।"

कालीना इवानोविच सन्देहों से भरा था।

"'बाल सहायता' से तुम्हारे कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। वह तुमसे यही पूछेगी कि क्या तुम तीन लड़कों को और नहीं ले सकते? और फिर, तुम जानो-स्त्रियां! सिद्धान्त में स्त्रियों के लिए भले ही समान अधिकार हों, लेकिन वास्तविकता में स्त्रियां हमेशा स्त्रियां बनी रहेंगी..."

पांच अक्तूबर को, अन्तोन ब्रातचेन्को के हल्के में, दो घोड़ेवाली फिटन को धोया गया, और 'लाल' तथा 'मेरी' की अयालों में चोटियां गूंथी गईं। राजधानी से कोलोनी में मेहमानों का आगमन विरले ही होता था और अन्तोन उनके प्रति गहरे सम्मान की भावना से भरा हुआ था। छः अक्तूबर की सुबह मैं स्टेशन के लिए रवाना हुआ। गाड़ीवान की जगह पर खुद ब्रातचेन्को जमा हुआ था।

स्टेशन के अहाते में खड़ी गाड़ी में बैठे हुए, जो भी वृद्धा स्त्री

स्टेशन से बाहर आती उसे मैं और अन्तोन ध्यान से देखते, – यह जानने के लिए कि उनमें कौन ऐसी है जो शक्ल-सूरत में जन शिक्षा विभाग से आई मालूम होती है। अचानक एक ऐसी मानवी आकृति की आवाज़ हमारे कानों में पड़ी जो क़तई हमारे क्षेत्र की नहीं मालूम होती थी। वह पूछ रही थी:

"यह गाड़ी कहां से आई है?"

"हम यहां अपने निजी काम से आए हैं। गाड़ियों का अड्डा उधर है," अन्तोन ने थोड़ा झुंझलाकर कहा।

"क्या तुम गोर्की कोलोनी से नहीं आए हो?"

अन्तोन ने पांव उठाये और अपनी धुरी पर घूमकर वह एक पूर्ण चक्कर लगा गया। मैं भी उत्सुक हो उठा।

हमारे सामने एक अत्यन्त आश्चर्यजनक आकृति खड़ी थी – हल्के भूरे रंग का चेकदार कोट पहने, और नीचे अत्यन्त शोख़, रेशमी बाने में दो टांगें नज़र आ रही थीं। चेहरा- चिकना और गुलाबी, और गालों में अत्यन्त अद्‌भुत भंवर पड़े हुए थे। आंखों में चमक और कमान-सी खिंची हुई बढ़िया भौंहें। बेलदार रूमाल के नीचे चमचम करते सुनहरे बालों के छल्ले झांक रहे थे। उसके पीछे एक कुली खड़ा था – सर्वाधिक हल्का सामान लिए हुए एक छोटा बक्स तथा बहुत ही बढ़िया चमड़े का एक सफ़री बैग।

"तो क्या आप कामरेड बोकोवा हैं?"

"वही तो। मैंने फ़ौरन भांप लिया था कि तुम लोग गोर्की कोलोनी से आये हो।"

अन्तोन ने आख़िर अपने आपको चौकस किया, भारी-भरकम अन्दाज़ से अपना सिर हिलाया, और सावधानी के साथ रासों को संभाला। बोकोवा उड़ती-सी गाड़ी में आई, और स्टेशन तथा गाड़ी की गंध को एक सर्वथा भिन्न, ताज़ी और भीनी गंध ने तिरोहित कर दिया। मैं सीट के एक कोने में सिमट गया। इस असाधारण उपस्थिति ने मुझे बुरी तरह अचकचा दिया था।

रास्ते-भर कामरेड बोकोवा विविध विषयों पर बातें करती रही। गोर्की कोलोनी के बारे में वह बहुत कुछ सुन चुकी थी और इस विषय में जानने के लिए उसका हृदय एकदम ललक उठा था।

"सच मानो, कामरेड मकारेन्को, इन लड़कों के साथ हमें इतनी जान-मारी – ओह, इतनी जान-मारी – करनी पड़ती है कि क्या कहूं। बहुत दुःख होता है इन्हें देखकर, जैसे भी बने इनकी मदद करना मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। क्या यह तुम्हारे लड़कों में से एक है? ओह, कितना प्यारा लड़का है यह – बहुत ही प्यारा। क्या यहां तुम्हारा जी नहीं ऊबता? तुम तो जानते हो इन बाल-गृहों में भयानक रूप से मन ऊब उठता है। तुम्हारे बारे में बहुत कुछ हमने सुना है। लेकिन कहते हैं कि तुम हमें पसन्द नहीं करते।"

"किसको पसन्द नहीं करते?"

"हमें, 'ज़नानी समाज-शिक्षा' को।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"वे कहते हैं कि तुमने हमें, 'समाज-शिक्षा विभाग' की स्त्रियों को, यही नाम दे रखा है – 'ज़नानी समाज-शिक्षा'।"

"यह तो एकदम नयी बात है।" मैंने कहा। "अपने जीवन में मैंने कभी किसी को इस नाम से नहीं पुकारा... लेकिन... सच पूछो तो यह ऐसा कुछ बुरा भी नहीं है।"

मैं खुलकर हंसा। वोकोवा को भी यह नामकरण आह्लादपूर्ण मालूम हुआ।

"तुम तो जानते हो, यह सब कुछ यों ही नहीं है, – समाज-शिक्षा में स्त्रियों का काफ़ी बाहुल्य है और मैं ख़ुद भी उनमें से एक हूं। तुम मेरे मुंह से ऐसी कोई चीज़ नहीं सुन पाओगे जो विद्वतापूर्ण हो। क्यों, तुम खुश हो न?"

अन्तोन कोचवान अपनी जगह पर बार-बार मुड़कर, अपनी बड़ी-बड़ी आंखों को बरबट्टा-सी खोले हुए, इस असामान्य सवारी की ओर गम्भीरता के साथ ताक रहा था।

"वह बराबर मुझ पर आंखें गड़ाए है।" वोकोवा ने हंसते हुए कहा। "वह मेरी ओर इस तरह क्यों देख रहा है?"

अन्तोन का चेहरा लाल हो गया और घोड़ों को आगे बढ़ने के लिए अकसाते हुए कुछ बुदबुदा उठा।

ठिकाने पर पहुंचने पर कोलोनी के सदस्यों तथा कालीना इवानोविच ने हमारी अगवानी की। सब गहरी दिलचस्पी से भरे थे। सेम्योन

करावानोव अपना सिर खुजला रहा था जो इस बात का सूचक था कि वह एकदम सकपका गया है। ज़दोरोव ने अपनी एक आंख को सिकोड़ा और मुसकरा उठा।

मैंने वोकोवा का लड़कों से परिचय कराया। वे उसे आदरपूर्वक कोलोनी दिखाने ले गए। कालीना इवानोविच ने मेरी आस्तीन को खींचते हुए पूछा "इन्हें खाना क्या दिया जाएगा?"

"पता नहीं, ये लोग क्या खाते हैं," उसके स्वर की नक़ल करते हुए मैंने जवाब दिया।

"मेरी समझ में तो इनके लिए दूध की भरपूर मात्रा ठीक रहेगी। क्यों, आपका क्या ख़याल है?"

"नहीं, कालीना इवानोविच," मैंने कहा। "इससे कुछ अधिक ठोस चीज़ की इनके लिए जरूरत होगी।"

"तो फिर इन्हें क्या दिया जाए? न हो तो एक सूअर को ही मार लिया जाए। लेकिन एडुअर्ड निकोलायेविच कभी ऐसा नहीं करने देगा।"

कालीना इवानोविच हमारे सम्मानित अतिथि के खाने का प्रबंध करने चला गया, और मैं वोकोवा की ओर लपका। लड़कों से इस बीच उन्होंने मित्रता का नाता जोड़ लिया था। वे कह रहे थे:

"मुझे मारिया कोन्द्रातियेवना कहा करो।"

"मारिया कोन्द्रातियेवना। बहुत बढ़िया। हाँ तो, मारिया कोन्द्रातियेवना, यह देखिये, – यह हमारा पौधाघर है। ख़ुद हमने इसे बनाया है। ओह, भरपूर खोदाई की है मैंने वहां। यह देखिये, मेरे हाथों में अभी तक छाले मौजूद हैं।"

कराबानोव ने प्रदर्शन के लिए फावड़े की भांति अपना एक हाथ मारिया कोन्द्रतियेवना के सामने फैला दिया।

"इसकी बातों में न आना, मारिया कोन्द्रातियेवना। ये छाले नाव खेने में पड़े हैं।"

मारिया कोन्द्रातियेवना अपने गोरे-चिट्टे सुन्दर सिर को जो अब रूमाल से मुक्त था, अत्यन्त चंचल अन्दाज़ में बार-बार मोड़ रही थी, लेकिन यह साफ़ मालूम होता था कि हमारे पौधाघर तथा हमारी अन्य उपलब्धियों के प्रति वह बहुत ही कम दिलचस्पी का अनुभव कर रही है।

उसे लाल भवन भी दिखाया गया।

"इसे तुम लोग पूरा क्यों नहीं कर लेते?" उसने पूछा।

"छः हजार रूबल," ज़दोरोव ने कहा।

"और तुम्हारे पास पैसा नहीं है, क्यों? ओह, बेचारे।"

"तो क्या आपके पास है?" सेम्योन बड़बड़ाया। "तब फिर क्या है... अरे कुछ मालूम है आपको... आइए, ज़रा यहां घास पर बैठें।"

मारिया कोन्द्रातियेवना, ठीक लाल भवन के सामने, बड़ी कमनीयता के साथ घास पर बैठ गई। लड़कों ने सजीव रंग भरते हुए घिचपिच में बीतनेवाले हमारे जीवन के ढंग तथा उन समृद्ध रूपों का वर्णन किया जो कि हमारा भविष्य ग्रहण करेगा, अगर यह लाल भवन पुनर्स्थापित हो जाए।

"आप तो जानती हैं कि हमारे यहां अस्सी सदस्य हैं, और अब हम सौ ऊपर बीस हो जाएंगे।"

कालीना इवानोविच ने बग़ीचे की ओर से प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे एक भारी कूज़ा, दो मिट्टी के गिलास और रई की रोटी का आधा खण्ड लिए ओल्या वोरोनोवा चली आ रही थी। मारिया कोन्द्रातियेवना मुंह बाये रह गई।

"ओह, कितना सुन्दर।" वह चहक उठीं। "यहां की हर चीज़ कितनी सुन्दर है। और यह इतने प्यारे बूढ़े बाबा क़ौन हैं? शहद की मक्खियों को पालनेवाले – क्यों, ठीक है न?"

"नहीं, मैं शहद की मक्खियों को पालनेवाला नहीं हूं।" कालीना इवानोविच ने खिलते हुए कहा। "मैंने कभी भी यह धंधा नहीं किया। लेकिन एक बात मैं तुम्हें बताता हूं, वह यह कि यह दूध शहद से भी ज्यादा मीठा है। यह शैतान की देन नहीं, बल्कि गोर्की कोलोनी का प्रसाद है। ऐसा दूध – इतना शीतल, इतना मीठा – तुमने अपने जीवन में पहले कभी नहीं चखा होगा।" मारिया कोन्द्रातियेवना ने अपने हाथों से ताली बजाई और गिलास के ऊपर झुक गई जिसमें कालीना इवानोविच इस अन्दाज़ से दूध उंडेल रहा था जैसे कोई धार्मिक विधि सम्पन्न कर रहा हो। ज़दोरोव भी पीछे नहीं रहा और इस दिलचस्प प्रसंग से पूरा लाभ उठाने के लिए तुरन्त आगे बढ़ आया।

"आपके पास छः हज़ार रूबल हैं जो किसी काम नहीं आ रहे, जो बेकार पड़े हैं, और हम अपने घर की मरम्मत भी नहीं कर सकते। आप जानती हैं, यह न्याय की बात नहीं है।"

मारिया कोन्द्रातियेवना को दूध की शीतलता ने स्तंभित कर दिया। द्रवित होकर वह बुदबुदा उठी:

"ओह, क्या दूध है। जीवन में पहले कभी... एकदम अमृत है यह।"

"और छः हजार रूबल,—क्या कहती हैं आप उनके बारे में?" उद्विग्नता के साथ उसके चेहरे की ओर देखकर मुसकराते हुए ज़दोरोव ने कहा।

"ओह, पूरा भौतिकवादी है यह लड़का तो।" अपनी आंखों को मिचमिचाते हुए मारिया कोन्द्रातियेवना ने कहा।

"तुम्हें छः हज़ार रूबल चाहिए, लेकिन बदले में मुझे क्या मिलेगा?"

ज़दोरोव ने निराशा से अपने इर्द-गिर्द देखा, हवा में अपने हाथों को लहराया मानो छः हजार रूबल के बदले में अपनी समूची सम्पदा देने के लिए तैयार हो गया हो पर कराबानोव ने सोच-विचार में समय नहीं खोया।

"हम तुम्हें छककर अमृत-पान करा सकते हैं।"

"अमृत-पान... अमृत-पान क्या?" मारिया कोन्द्रातियेवना ने पूछा, उसके गाल लाल हो उठे थे।

"शीतल दूध।"

मारिया कोन्द्रातियेवना मुंह नीचा किए हुए ही घास पर लोट-पोट हो गई, हंसते-हंसते उसकी आंखों में आंसू तिर आए।

"ओह नहीं, ख़ाली अपने दूध से ही तुम मुझे नहीं भरमा सकते।" उसने कहा। "मैं तुम्हें छः हज़ार रूबल दिला दूंगी, लेकिन तुम्हें चालीस बच्चे मुझसे लेने पड़ेंगे—प्यारे बच्चे, जो केवल इस समय थोड़े धूल-धूसरित मालूम होते हैं।"

कोलोनी के निवासी गम्भीर हो गए। ओल्या वोरोनोवा ने कूज़े को पेण्डुलम की भांति झुलाते हुए, मारिया कोन्द्रातियेवना की आंखों में झांककर देखा।

"यह क्या कोई कहने की बात है?" उसने कहा। "हम चालीस बच्चों को ले लेंगे।"

"अच्छा तो अब मुझे वहां ले चलो जहां स्नान कर सकूं। मैं थोड़ा झपकी लेना चाहती हूं। तुम्हें छः हज़ार रूबल मिल जाएंगे।"

"आपने अभी हमारे खेत तो देखे ही नहीं।"

"खेतों में कल चलेंगे। क्यों, ठीक है न?"

मारिया कोन्द्रातियेवना तीन दिन हमारे साथ रही। पहले ही दिन, सांझ होते न होते, कोलोनी के कतिपय सदस्यों के नामों से वह परिचित हो गई, और गई रात तक, पुराने बगीचे में पड़े एक बेंच पर बैठी, उनसे बातें करती रही। उन्होंने उसे नौका में सैर कराई, झूलों और लम्बी टिकटिकियों पर झुलाया, लेकिन खेतों का मुआयना उसने नहीं किया, – इसके लिए उसके पास समय नहीं था। मेरे साथ समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए भी वह बड़ी मुश्किल से समय निकाल सकी। इस समझौते के अनुसार 'उक्राइनी बाल सहायता' ने लाल भवन की मरम्मत के लिए हमें छः हज़ार रूबल देने की ज़िम्मेदारी ली थी और हमने, मरम्मत के पूरा हो जाने पर 'उक्राइनी बाल सहायता' के चालीस घर-बारविहीन बच्चों को लेने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली थी।

मारिया कोन्द्रातियेवना कोलोनी को देख उत्साहित हुई थी।

"यह तो पूर्ण स्वर्ग है।" उसने उद्गार प्रकट किया। "और अत्यन्त शानदार हैं यहां के... भला क्या कहूं मैं उन्हें?"

"फ़रिश्ते?"

"नहीं, फ़रिश्ते नहीं। लोग।"

विदा के समय मैं मारिया कोन्द्रातियेवना को छोड़ने नहीं गया। ब्रातचेन्को ने भी कोचवान की जगह नहीं संभाली, न ही घोड़ों की अयालों को गूंथा गया। कराबानोव जिसके हाथों में ब्रातचेन्को ने इन सब की ज़िम्मेदारी सौंप दी थी, कोचवान की गद्दी पर बैठा। उसकी काली आंखें चमक रही थीं, शैतानी मुसकराहटों से वह छलछला रहा था और सारे अहाते में उनकी वर्षा कर रहा था।

"क्यों अन्तोन सेम्योनोविच, समझौते पर तो दस्तख़त हो गए न?" दबे स्वर में उसने मुझसे पूछा।

"हां," मैंने जवाब दिया।

"तब ठीक है। देखना, क्या फर्राटे से इस गुड़िया को अब मैं ले जाता हूं।"

ज़दोरोव ने मारिया कोन्द्रातियेवना का हाथ दबाया।

"देखो, गर्मियों में आना," उसने कहा। "जानती ही हो, तुम वायदा कर चुकी हो।"

"आऊंगी, ज़रूर आऊंगी। और यहां एक दाचा* लेकर रहूंगी।"

"दाचा किस लिए? तुम यहां, हमारे पास, आ सकती हो।"

चारों ओर माथा नवाते तथा एक सहृदय, मुसकराती नज़र से हम सबको सींचते हुए मारिया कोन्द्रातियेवना ने अभिवादन किया।

स्टेशन से लौटकर घोड़ों को खोलते समय कराबानोव कुछ व्यग्र मालूम होता था। ज़दोरोव भी व्यग्रता के साथ उसकी बातें सुन रहा था। मैं उनके पास गया।

"मैंने कहा था न कि कोई-न-कोई डायन हमारी मदद को निकल आएगी," ज़दोरोव ने कहा, "और ऐसा ही हुआ भी।"

"मारिया कोन्द्रातियेवना डायन नहीं है।"

"तुम समझते हो कि जितनी भी डायनें हैं वे सब झाड़ू की मूठ की सवारी करती हैं, और उनकी नाक हुकदार होती है! अरे नहीं, असली डायनें सौन्दर्य की पुतली होती हैं, पुतली।"

२. ओत्चेनाश

वोकोवा ने हमें धोखा नहीं दिया। सप्ताह-भर के भीतर ही हमें छः हज़ार रूबल का एक मनीआर्डर मिल गया। कालीना इवानोविच को तो जैसे निर्माण का बुख़ार चढ़ा था, इतने ज़ोर का कि वह हर जगह कांखता-कराहता नज़र आता था। चौथा दस्ता भी जो तारानेत्स के अधीनस्थ था और जिसे कच्ची लकड़ी में से खिड़कियाँ बढ़िया चौखटे तथा दरवाज़े बनाने का आदेश दिया गया था, कांख-कराह रहा था। कालीना इवानोविच किसी अज्ञात व्यक्ति को कोस रहा था:

* गर्मियाँ बिताने के लिए शहर के बाहर बना हुआ आश्रमस्थल। —सं०

"हरामखोर कहीं का। खुदा करे कि जब वह मरे तो उसके लिए वे कच्ची लकड़ी का ही ताबूत बनवाएं।"

त्रेपके-खण्डहरों के साथ हमारे चारसाला संघर्ष का अन्तिम अंक शुरू हो गया था। कालीना इवानोविच से लेकर शुर्का जेवेली तक हम सभी पर जितनी भी जल्दी हो सके घर को पूरा करने की धुन सवार थी। जिस लक्ष्य का हम इतने दिनों से और इतने अडिग रूप में सपना देखते आ रहे थे, उसे अब हमें अविलम्ब प्राप्त करना था। चूने के गड्ढे, सरकंडों का आल-जाल, बग़ीचे की विकट पगडंडियां, सारे अहाते में फैला मलबा और निर्माण का काठ-कबाड़ हमें झनझना देने के लिए काफ़ी था। और हम केवल अस्सी ही तो थे। कमाण्डरों की रविवासरीय परिषदों ने शेरे को ऐंठ-मरोड़कर जैसे-तैसे दो या तीन मिश्रित दस्तों की व्यवस्था की ताकि समूचे अहाते को क़ायदे में किया जा सके। शेरे पर वे रह-रहकर झुंझला उठते।

"भई, सच, यह तो हद हो गई। हम किसी चीज़ में कुछ नहीं कह सकते... हर चीज़ पहले से ही पत्थर की लकीर बनकर सामने आती है।"

शेरे शान्त भाव से अपनी मुड़ी-तुड़ी नोटबुक बाहर निकालता, इन बातों पर ज़ोर देता कि हर चीज़ पिछड़ी हुई है, दुनिया-भर का काम करना अभी बाक़ी है। अगर उसने अहाते में काम करने के लिए दो दस्ते दिये हैं तो इसका कारण केवल यह है कि वह खुद भी इस काम की आवश्यकता को पूर्णतया समझता है, अन्यथा वह कभी दस्ते नहीं देता, बल्कि उन्हें बीजों के चुनने या क्यारियों के चौखटों की मरम्मत करने के काम में लगा देता।

कमाण्डर विक्षोभ के साथ बुदबुदाते। वे कठिनाई का अनुभव करते कि दो विरोधी भावनाओं को अपने दिमाग़ में वे कैसे जगह दें। एक तो शेरे की ज़िद से पैदा होनेवाले गुस्से को, और दूसरे सराहना के उस भाव को जो उसकी दृढ़ता से अपनी बात पर डटे रहने की वजह से शेरे के प्रति उनमें पैदा होता था।

यह वह समय था जब कि शेरे हेरी-फेरी से छः फसलों की बोवाई की प्रणाली का संगठन पूरा करने जा रहा था। अचानक हम सब को ऐसा प्रतीत हुआ कि खेती-बाड़ी की दिशा में कितनी प्रगति हमने कर

ली है। कोलोनी के हमारे कितने ही सदस्य खेती के काम में जुटे थे। उसी में वे अपना भविष्य देखते थे। इनमें ओल्या वोरोनोवा का विशिष्ट स्थान था। धरती के प्रति कराबानोव, वोलोख़ोव, बुरून और ओसादची का उत्साह क़रीब-क़रीब शुद्ध सौन्दर्यवादी प्रकृति का था। व्यक्तिगत लाभ का ज़रा-सा भी ख़याल किए बिना खेती के काम से प्रेम करने के बाद वे उसमें रमते ही गए, एक बार भी उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। न तो वे अपने भविष्य के साथ इसका सम्बन्ध जोड़ते थे, न ही अपनी अन्य रुचियों-अरुचियों के साथ उसे सम्बद्ध करते थे। वे महज़ जीते और जीवन का रस लेते थे, गहरे काम भरे प्रत्येक दिन का उपभोग करते थे, और आनेवाले कल की ऐसे बाट देखते थे जैसे छुट्टी का दिन आनेवाला हो। उन्हें विश्वास था कि ये सभी दिन उन्हें नयी और उज्जवल सफलताओं की ओर ले जा रहे हैं, लेकिन ये सफलताएं कैसी होंगी, यह सोचने की परेशानी नहीं उठाते थे। वे सब रबफ़ाक के लिए तैयारी कर रहे थे, लेकिन यहां भी उनकी आकांक्षाओं ने कोई सुनिश्चित आकार ग्रहण नहीं किया था। उन्हें यह तक नहीं मालूम था कि किस रबफ़ाक में वे प्रवेश करना चाहते हैं।

कोलोनी में कुछ अन्य सदस्य ऐसे भी थे जो खेती-बाड़ी के काम को चाव से करते हुए भी उसके प्रति अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण रखते थे। जैसे ओप्रिश्को और फ़ेदोरेन्को जो हमारे स्कूल में अध्ययन करने के आकांक्षी नहीं थे और कुछ मिलाकर जीवन से किसी ख़ास मांग का दावा नहीं करते थे। विनम्रता के साथ मानव के लिए वे इसी को एक शानदार भविष्य समझते थे कि धरती को जोता जाए, अपने लिए एक अच्छी-सी कुटिया प्राप्त की जाए, साथ में एक घोड़ा और घरवाली हो। ग्रीष्म के दिनों में सूरज निकलने से लेकर उसके छिपने तक काम किया जाए, शरद् में भण्डार में हर चीज़ जमा कर ली जाए और उसे अलग सुरक्षित रहने दिया जाए। जाड़ों में आराम के साथ बैठकर तली हुई कचौरियों और बंदगोभी के शोरबे का, पनीर की टिकियों और सूअर की चर्बी का आनन्द लिया जाए। महीने में दो बार ब्याह-शादियों, सन्त-दिवसों, सगाई-मंगनियों या जन्म-दिवसों के समारोहों में शामिल हुआ जाए।

ओल्या वोरोनोवा की बात इन सबसे सर्वथा भिन्न थी। एक को-

ागोमोल की भांति वह हमारे अपने या पड़ोसियों के खेतों पर विचार-पूर्ण या व्यग्र भाव से नज़र डालती थी। उसके लिए खेत चना-चबैना ही नहीं बल्कि समस्याओं के भी घर थे।

हमारी साठ देस्यातिना भूमि, जिस पर शेरे इतना कठोर श्रम करता था, उसे और उसके शिष्यों को ट्रेक्टर तथा एक किलोमीटर लम्बी हराई से युक्त बड़े पैमाने की खेती के सपने देखने के मार्ग में आड़े नहीं आती थी। शेरे इस विषय में कोलोनी के सदस्यों की दिलचस्पी जगाना जानता था और स्थायी श्रोताओं के एक दल का उसने निर्माण भी कर लिया था। हमारे अपने लोगों के साथ-साथ पावेल पावलोविच तथा गोंचारोव्का कोमसोमोल संगठन के मंत्री स्पिरिदोन भी इस दल में शामिल होने से कभी नहीं चूकते थे।

पावेल पावलोविच निकोलायेन्को, हालांकि वह छब्बीस साल का था, अभी तक अविवाहित था और गांव के मानदण्ड से चिर कुमार की पदवी सुशोभित करता था। उसका पिता वृद्ध निकोलायेन्को ठीक हमारे देखते-देखते एक ठोस कुलक बन गया था और भीतर-बाहर, चारों ओर से, अपने आपको ग़रीब किसान जताते हुए वह आवारा लड़कों का चोरी-छिपे शोषण करता था।

और शायद इसी वजह से पावेल पावलोविच को अपने पिता का घर नहीं सुहाता था। अपना अधिकांश समय वह कोलोनी में बिताता था जहां शेरे जोतनेवालों के साथ अधिक ज़िम्मेदारी के काम में उसे लगाता था, और जहां हमारे लड़कों की नज़र में वह क़रीब-क़रीब उस्ताद का या निर्देशक का – स्थान रखता था। पावेल पावलोविच ख़ूब पढ़ा-लिखा था। जब शेरे बोलता था तो ध्यान और समझदारी के साथ उसकी बातें सुनता था।

पावेल पावलोविच और स्पिरिदोन, जब भी होता, बातचीत का सिलसिला किसान-विषयों की ओर मोड़ने से न चूकते – बड़े पैमाने की खेती को वे केवल व्यक्तिगत किसानी के रूप में ही सोच सकते थे। ओल्या वोरोनोवा स्थिर दृष्टि से उनकी ओर देखती और उसकी भूरी आंखें सहानुभूति से सुहावनी हो उठतीं जब पावेल पावलोविच शान्त भाव से कहता.

"मैं तो इसे इस तरह देखता हूं. चारों ओर लोग काम में जुटे

रहते हैं, लेकिन ठीक ढंग से नहीं और अगर उन्हें ठीक ढंग से काम करना है, तो उन्हें सिखाना होगा। पर उन्हें सिखाएगा कौन? दहक़ान? जहन्नुम में जाए वह – उसे सिखाना वैसे ही टेढ़ी खीर है। यहां एडुअर्ड निकोलायेविच है, हर चीज़ के प्रति चौकस। उसने हमें बताया कि क्या करना चाहिए। एकदम ठीक। काम करने का यही तरीक़ा है। लेकिन वे शैतान कभी इस तरह काम नहीं करेंगे। वे तो बस अपने ढंग से काम करना चाहते हैं।"

"लेकिन कोलोनी के सदस्य काम करते हैं," सावधानी के साथ स्पिरिदोन ने बीच में कहा जिसके चौड़े मुंह से चतुराई झलकती थी।

"कोलोनी के सदस्य," विचारपूर्ण मुद्रा में पावेल पावलोविच मुसकराया।" तुम जानते हो, उनकी तो बात ही एकदम अलग है।"

ओल्या भी मुसकराई, अपनी उंगलियों को गूंथते हुए अपने हाथों को उसने जोड़ा, जैसे गिरह खोलने जा रही हो, और पोपलर की चोटियों की ओर चंचल नज़र से देखा। ओल्या की सुनहरी चोटियां उसके कंधों पर लुढ़क आईं, और उन्हीं के साथ-साथ पावेल पावलोविच की भूरी गम्भीर आंखें भी वहां आकर टिक गईं।

"कोलोनी के लोगों का इरादा खेती-बाड़ी करना नहीं है, फिर भी वे काम करते हैं, और किसानों का तो सारा जीवन धरती के सहारे बीतता है, उनके बच्चे होते हैं. और भी सारा खटराग..."

"सो तो ठीक है, लेकिन इससे क्या?" स्पिरिदोन ने कहा जो उसका आशय नहीं समझ पा रहा था।

"अरे, तुम इतना भी नहीं देखते?" ओल्या ने आश्चर्य भरी आवाज़ में कहा। "कम्यून में किसानों को और भी ज़्यादा अच्छी तरह काम करना चाहिए।"

"सो किसलिए, – तुम ऐसा क्यों सोचती हो?" पावेल पावलोविच ने कोमलता से पूछा।

ओल्या ने कड़ी नज़र से पावेल पावलोविच की आंखों में देखा और वह पलक झपकते ही उसकी चोटियों को भूल गया। ओल्या की कड़ी, और नारीत्व से क़रीब-क़रीब शून्य नज़र के सिवा और किसी चीज़ का उसे भान ही नहीं रहा।

"उन्हें करना चाहिए।" ओल्या ने कहा। "जानते हो कि इस

'चाहिए' का क्या मतलब है – जानते हो न? उतना ही साफ़ है जितना कि दो और दो चार।"

कराबानोव और बुरून इस बातचीत को सुन रहे थे। उनके लिए यह केवल सैद्धान्तिक दिलचस्पी की बात थी, उस सारी चर्चा के समान जो 'दहक़ान' को लेकर की जाती थी जिससे वे हमेशा के लिए अपना नाता तोड़ चुके थे। लेकिन बातचीत में इस क्षण जो तनाव आ गया था, वह कराबानोव को रोचक मालूम हुआ और ज़बान की इस कसरत में हिस्सा लेने से वह अपने आप को नहीं रोक सका।

"ओल्या का कहना ठीक है," उसने कहा। "करना चाहिए का मतलब है कि उन्हें मुट्ठी में कसना और मजबूर..."

"तुम उन्हें मजबूर कैसे करोगे?" पावेल पावलोविच ने पूछा।

"किसी न किसी तरह से, जैसे भी होगा," सेम्योन ने विषय को गरमाते हुए कहा। "लोगों को कैसे मजबूर किया जाता है? बलपूर्वक। अपने सारे दहक़ान तुम बस मेरे हवाले कर दो, सात दिन के भीतर ही वे बिना कुछ कहे काम करते दिखाई देंगे, और दो सप्ताह बीतते न बीतते वे मेरे प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने लगेंगे।"

पावेल पावलोविच ने अपनी आंखों को सिकोड़ा।

"तुम्हारी एक घूंसे से अधिक शक्ति ही क्या है।"

सेम्योन हंसी के मारे बेंच पर लुढ़क गया, और बुरून ने, अपनी आवाज़ में संयत घृणा का पुट लिए, उसकी बात को साफ़ किया।

"ऊंह, घूंसे की शक्ति ही क्या है – मूर्ख कहीं के। असली शक्ति है – रिवाल्वर।"

ओल्या ने धीरे-धीरे अपना चेहरा उसकी ओर घुमाया, और धैर्य-पूर्वक उसे सीख दी:

"मूर्ख तो तुम ख़ुद हो। अगर लोगों को कुछ करना है तो वे उसे बिना रिवाल्वर के करेंगे। स्वयं अपनी इच्छा से करेंगे। तुम्हें केवल उन्हें ठीक ढंग से बताना, समझाना होगा।"

सेम्योन ने बेंच पर से अपना सिर उठाया। उसकी पुतलियां आश्चर्य से फैली थीं।

"ओल्या, ओल्या।" उसने चिल्लाकर कहा। "तुम्हें बिलकुल कुछ पता नहीं। 'समझाना'। सुना तुमने, बुरून? भई वाह।

समझाना'। समझाना क्या ख़ाक काम करेगा जब कोई कुलक बनने पर तुला हो।"

"कौन कुलक बनना चाहता है?" अपनी आंखों को चौड़ाते हुए ओल्या ने विक्षोभ मे पूछा।

"कौन क्या? वे सब बनना चाहते हैं। उनमें से प्रत्येक, शुरू से आख़िर तक। स्पिरिदोन, पावेल पावलोविच, सब के सब।"

पावेल पावलोविच मुसकराया। स्पिरिदोन इस अप्रत्याशित आक्रमण से अभिभूत हो उठा और वह केवल इतना ही कह सका

"ज़रा सोचो तो।"

"ज़रा सोचो तो।" कराबानोव ने दोहराया। "वह कोमसोमोल केवल इसलिए है कि उसके पास ज़मीन नहीं है। ज़रा तुम एक बार बीस देस्यातिना भूमि, एक गाय, एक भेड़ और एक अच्छा-सा घोड़ा इसके हवाले कर दो – फिर देखना इसके बाद ओल्या, सबसे पहले वह तुम्हें ही खदेड़ता दिखाई देगा।"

बुरून हंसा और अधिकारपूर्ण अन्दाज़ में उसने कराबानोव का समर्थन किया: "वह ऐसा ही करेगा। वही क्यों, पावेल भी ऐसा ही करेगा।"

"भाड़ में जाओ तुम, हरामी कहीं के।" स्पिरिदोन चीख़ उठा, जैसे अचानक बिच्छू ने डंक मार दिया हो। उसका चेहरा तमतमाया हुआ और मुट्ठियां भिची हुई थीं।

सेम्योन ने बग़ीचे के बेंच के इर्द-गिर्द चक्कर लगाया, अपनी प्रत्येक टांग को ज़मीन पर टेकने से पहले ऊंचा उठाते हुए, जो कि उसके अत्यन्त आह्लादित होने का सूचक था। यह जानना कठिन था कि वह सचमुच में खुश था, या केवल देहातियों को चिढ़ाने के लिए ऐसा कर रहा था।

बेंच के सामने घास पर सिलान्ती सेम्योनोविच ओत्चेनाश बैठा था। उसका सिर बैरलनुमा और चेहरा लाल था। बेरंग, छंटी हुई मूंछें और एकदम गंजी खोपड़ी थी उसकी। उसके जैसे लोग अब विरले ही दिखाई देते हैं। लेकिन एक समय था जब उनके दल के दल रूस के ओर-छोर को नापते नज़र आते थे – ऐसे दार्शनिक जो मानवता के सत्य तथा वोद्का के स्वाद, दोनों मे परिचित थे।

"सेम्योन ने जो कहा वह सच है," उसने कहा। "दहक़ान,

ेगा कि कहते हैं, वह क्या जाने कि भाई-चारा क्या होता है। मगर उसके पास एक घोड़ा है तो वह साथ में एक घोड़ी और चाहेगा, ताकि एक से दो हो सकें। इसके सिवा उसे और किसी चीज़ से मतलब नहीं। तो देखा तुमने, असलियत क्या है।"

अपने गांठ-गंठीले अंगूठे को जो बंधी हुई मुट्ठी मे बाहर निकला था, ओत्चेनाश ने हिलाया, और सफ़ेद पलकों से युक्त अपनी आंखों को बुद्धिमानी की मुद्रा में सिकोड़ा।

"तो इसका मतलब यह है कि घोड़े आदमियों की नकेल थामे हैं, क्यों, यही न?" स्पिरिदोन ने झुंझलाकर पूछा।

"हां ठीक यही, तूती घोड़ों की ही बोलती है। असल बात यहीं है। घोड़े, और तुम जानो, गाय। और अगर उसके पास कुछ नहीं है, तो वह किसी काम का नहीं है, सिवा इसके कि तरबूज़ की क्यारियों की चौकसी किया करे। सो समझे तुम, असलियत क्या है।"

हमारी कोलोनी में सिलान्ती को सभी चाहते थे। ओल्या वोरोनोवा भी उसे ख़ूब पसन्द करती थी। और इस समय वह प्यार से उसके ऊपर झुक आई। उसका प्रशस्त मुसकराता हुआ चेहरा भी उसकी ओर घूम गया, जैसे वह सूखा हो।

"यह क्या, गुड़िया रानी?"

"तुम पुरानी चाल के हो, सिलान्ती, पुरानी चाल के। और तुम्हारे चारों ओर सभी कुछ नया है।"

यह किसी को कुछ पता नहीं था कि सिलान्ती सेम्योनोविच ओत्चेनाश कहां से आया था। वह जैसे एकदम आकाश में से फट पड़ा था, रीति-रिवाजों और सम्पत्ति, दोनों के बन्धनों से मुक्त। मोटी लिनेन का कुर्ता पहने और एक फटे-पुराने पतलून को अपनी नंगी टांगों के ऊपर खींचे। और तो और, वह डंडा तक अपने साथ नहीं लिए था। यह उन्मुक्त जीव कोलोनीवासियों को ख़ास तौर से आकर्षक लगा और अत्यन्त उत्साह के साथ खींचते हुए वे उसे मेरे दफ़्तर में ले आए।

"अन्तोन सेम्योनोविच, यह देखो, किसका हमारे यहां आगमन हुआ है?"

सिलान्ती ने दिलचस्पी के साथ मेरी ओर देखा, और एक पुराने मित्र की भांति पलटकर छोटे लड़कों की ओर मुसकराया।

"और ये – भला क्या नाम है इनका – क्या तुम्हारे प्रमुख हैं?"

मेरे हृदय में भी उसने तुरन्त घर कर लिया।

"क्या तुम किसी काम से यहां आए हो?" मैंने पूछा। सिलान्ती ने अपनी आकृति को नये ढंग से चौकस किया, कुछ इस तरह कि देखने में वह एकदम कामकाजी मालूम हो, और विश्वास का संचार कर सके।

"बात यह है, देखिए न," उसने कहा। "मैं खुद एक मज़दूर हूं, और आपके पास काम है, और जो है सो..."

"तुम क्या काम कर सकते हो?"

"हां तो, जैसा कि कहते हैं, जब पैसा पास नहीं होता तो इनसान कोई भी काम करना सीख जाता है।"

उसके होठों पर अचानक उन्मुक्त, आह्लादपूर्ण हंसी फूट पड़ी। लड़के भी उसके साथ हंसे, और मैं भी अपने को नहीं रोक सका। यह सभी को अच्छी तरह मालूम था कि वह बड़ा ही मज़ाक़िया है।

"तुम सभी तरह का काम कर सकते हो?"

"हां, क़रीब-क़रीब सभी... देखिए न, बात जो है कि..." सिलान्ती ने, जो अब कुछ गड़बड़ा गया था, घोषित किया।

"लेकिन, ज़रा ठीक से बताओ, कौनसा काम?"

"मैं हल चला सकता हूं, हेंगी फेर सकता हूं," अपनी उपलब्धियों का उंगलियों की पोरों पर हिसाब लगाते हुए सिलान्ती ने कहना शुरू किया, "मैं घोड़ों और दूसरे सभी जानवरों की देख-भाल कर सकता. हूं, और मैं – अर्र – भला क्या कहते हैं उन्हें – सभी तरह के छिट-पुट काम कर सकता हूं – बढ़ईगीरी का, लोहारी का और भट्टी बनाने का। और आप जानो, मैं घरों में रंग करना भी जानता हूँ, जूते गांठ सकता हूं। और अगर कोई झोंपड़ी बनवानी हो तो मैं वह भी बना सकता हूं। सूअर को मार सकता हूं। बस एक ही चीज़ है जो मैं नहीं कर सकता। वह है धर्म-पिता बनना, – इससे कभी मेरा साक्षात्कार नहीं हुआ।"

और उसकी हंसी जैसे भयानक बांध तोड़कर बहने लगी, इतना मगन कि उसे अपनी आंखों मे आंसू पोंछने पड़े।

"कभी साक्षात्कार नहीं हुआ? यह क्या कहते हैं आप?"

"किसी ने कभी मुझे इसके लिए नहीं कहा। सो यह बात है।"

लड़के जी-भरकर हंसे, और तोस्का सोलोवियोव तो, पंजों के बल सिलान्ती की ओर ढुरकते हुए, क़रीब-क़रीब कह उठा:

"किसी ने तुमसे क्यों कभी नहीं कहा? क्यों नहीं कहा किसी ने तुमसे?"

सिलान्ती गम्भीर हो गया, और एक अच्छे शिक्षक की भांति उसने तोस्का को समझाना शुरू किया:

"देखो न भाई, बात यह है," उसने कहा। "जब भी किसी का नामकरण होने को होता तो मैं अपने मन में सोचता – वे मुझसे कहेंगे। पर तब उन्हें कोई और ज़्यादा धनी आदमी मिल जाता। सो यह बात है।"

"क्या तुम्हारे पास कोई काग़ज़-पत्तर-दस्तावेज़ हैं?" मैंने उससे पूछा।

"मेरे पास एक काग़ज़ था तो, कुछ ही पहले तक मेरे पास – भला क्या कहते हैं उसे – एक दस्तावेज़ थी," उसने कहा। "लेकिन, आप जानो, बात यह है कि मेरे पास कोई जेब नहीं है, और सो – आप जानो – वह खो गया। लेकिन दस्तावेज़ का क्या आप अचार डालेंगे, जब कि मैं ख़ुद यहां मौजूद हूं – आप जानो, सशरीर और सजीव, सामने खड़ा हूं।"

"पहले तुम कहां काम करते थे?"

"कहां काम करता था? आप जानो, सभी तरह की जगहों में मैंने काम किया है और सभी तरह के लोगों के यहां। भले भी, और पशु भी, साफ़-साफ़ मैं बताता हूं – छिपाना मुझे कुछ नहीं – सभी तरह के लोगों के यहां मैंने काम किया है।"

"सच-सच बताना, – क्या तुमने कभी चोरी का भी सहारा लिया है?"

"साफ़ बात मैं तुम्हें बताऊंगा, – मैंने कभी चोरी-चमारी में हाथ नहीं लगाया। न ही, मैंने कभी चोरी की, यह सच है। असलियत यही है, समझा आपने!"

सिलान्ती ने अचकचाहट के साथ मेरी ओर देखा। वह यह सोचता प्रतीत होता था कि अगर वह इससे भिन्न जवाब देता तो मुझे अधिक सही मालूम होता।

मिलान्ती हम लोगों के साथ काम करने के लिए रह गया। हमने उसे ग्रेर के साथ पशु-पालन के काम में फिट करने की कोशिश की, लेकिन उसे संयोजित करने के हमारे प्रयासों का कोई नतीजा नहीं निकला। मानवीय क्रिया-कलाप के क्षेत्र में सिलान्ती किन्हीं भी सीमाओं को स्वीकार नहीं करता था, उसे यही काम क्यों करने दिया गया, और उस काम पर पाबन्दी क्यों लगाई गई? फलतः, हमारे लिए काम करते समय, जिस चीज़ को भी वह आवश्यक समझता उसे ही करने लगता, और सो भी ठीक तभी जब उसे आवश्यक प्रतीत होता। सभी अधिकारियों को वह मुस-कराकर टाल देता। उनके आदेशों की ओर वह उतना ही ध्यान देता जितना कि विदेशी भाषा में दिए गए सम्भाषण की ओर। दिन-भर में कभी वह अस्तबल में काम करता, कभी खेतों में, कभी सूअरघर में, कभी खलिहान में, कभी लोहारघर में। साथ ही दोनों परिषदों की बैठकों में वह शामिल होता – शिक्षकों की भी और कमाण्डरों की भी। यह पता लगाने की उसमें असाधारण प्रतिभा थी – जैसे वह किसी अतिरिक्त सूचना-यंत्र से सज्जित था। कोलोनी में जहां भी सब से ज़्यादा ख़तरा उपस्थित रहता, पलक झपकते ही एक ज़िम्मेदार आदमी का चोला धारण किए – वह उस स्थल पर पहुंच जाता। हालांकि अधिकारी के सामने वह कोई विवरण पेश नहीं करता था, लेकिन अपने काम के बारे में जवाबदेही के लिए तैयार रहता, या ग़लतियों तथा विफलताओं के लिए ताने-उलाहनों तथा गालियों को सहन करता था। जब कभी ऐसा होता था तो वह अपना सिर खुजलाता और अपनी बाँहें हवा में लहराता।

"गोलमाल," वह स्वीकार करता। "मैंने गोलमाल कर दिया है। तो जानते ही हैं जो बात हुई है।"

सिलान्ती सेम्योनोविच ने हमारे साथ रहने के ठीक पहले दिन से ही अपने आपको कोमसोमोल जीवन में निमग्न कर दिया था और कोमसोमोल की आम सभाओं, ब्यूरो की बैठकों में बढ़कर हिस्सा लेने में उसने कभी नागा नहीं किया। एक बार विक्षोभ से भरा, वह मेरे पास आया।

"देखिये न," उसने कहा। "मैं उनके पास गया ..."

"किनके पास?"

ओह, उन कोमसोमोलों के, आप जानते हैं, उन्होंने मुझे भीतर आने नहीं दिया, उनकी बंद बैठक थी। क़ायदे मे मैंने उनसे बात की, 'सुनो, लड़को,' मैंने कहा, 'अगर तुम मुझे बाहर रखोगे तो मरते दम तक तुम निरे दूधमुंहे बच्चे ही बने रहोगे। जन्म लिया तब बुद्धू, मरे तब बुद्धू, और बस।"

"और इसके बाद?"

बात जो है आप जानते हैं। या तो वे समझते नहीं या उन्होंने बोतल चढ़ा रखी है – लेकिन नहीं, उन्होंने बोतल नहीं चढ़ायी है। मैंने उनसे पूछा: तुम किससे चीज़ों को छिपाना चाहते हो? अगर लूका से, या ग्रामोफ़ोन से या मौस्सी से, तब तो ठीक है। लेकिन तुम मुझे कैसे दूर रख सकते हो? शायद तुम्हारा दिमाग़ कहीं चरने चला गया है। उन्होंने सुना तक नहीं, बस हंस पड़े, एकदम – भला क्या कहते हैं उसे – छोटे लड़कों की भांति। तुम उनसे गम्भीरता के साथ बातें करते हो, और वे केवल मज़ाक़ बनाते हैं। बस, यह बात है सारी।"

सिलान्ती, हमारे कोमसोमोल संगठन के साथ-साथ शिक्षण पढ़ाई-लिखाई के मामलों में भी हिस्सा लेता था।

कोमसोमोल के नियमित परिचालन का पहला नतीजा यह हुआ कि हमारा स्कूल अपने पांवों पर खड़ा हो गया। तब तक वह अपने नगण्य अस्तित्व को किसी तर खींच रहा था और उस अरुचि पर क़ाबू पाने में असमर्थ था जो कि कोलोनी के कितने ही सदस्य अध्ययन के प्रति अनुभव करते थे।

लेकिन स्वीकार करना चाहिए कि यह सर्वथा समझ में आनेवाली बात थी। गोर्की कोलोनी के प्रारम्भिक दिन गृहविहीन दिनों के कुछ कटु अनुभवों के घावों को भरने के दिन थे। ये वे दिन थे जब कि मोची या बढ़ई बनने के विनम्र सपने ऐसी शरणस्थली का काम देते थे जिसमें अति तनावग्रस्त स्नायु अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त कर सकें।

हमारी सामूहिकता की चौंधिया देनेवाली प्रगति तथा कोलोमाक के तट पर उसकी विजयपूर्ण दुन्दुभ ने कोलोनी के सदस्यों को ख़ुद अपनी आंखों में ऊंचा उठाने में काफ़ी योग दिया। जूते बनाने के विनम्र

आदर्शों के स्थान पर शुभ और प्रेरणादायक प्रतीक स्थापित करने में हमें कोई ख़ास कठिनाई नहीं उठानी पड़ी। यह प्रतीक था

र ब फ़ा क

उन दिनों 'रबफ़ाक' शब्द का महत्व आज से सर्वथा भिन्न था। अब तो वह एक साधारण विद्यापीठ की एक उपाधि मात्र बन गया है। लेकिन तब यह मेहनतकश वर्ग के युवकों को अंधकार तथा अज्ञान से मुक्ति और ज्ञान-प्राप्ति के लिए मानव के नये अधिकार का ज्वलन्त प्रतीक था। और उन दिनों जिन भावनाओं का रबफ़ाक हम सबमें संचार करता था, उन्हें केवल कोमलतम शब्दों में ही व्यक्त किया जा सकता है।

वास्तव में जो चीज़ सामने आई वह इस प्रकार है: १९२३ की शरद् तक रबफ़ाक की आकांक्षाओं ने क़रीब-क़रीब हमारे सभी शिष्यों को अपने वश में कर लिया था। ये आकांक्षाएं बहुत पहले, १९२१ में ही, उस समय जब कि हमारी महिला-शिक्षकों ने अभागी रईसा को रबफ़ाक में जाने के लिए राज़ी किया था, अदृश्य रूप में हमारी कोलोनी में समा गई थीं। इंजन वर्कशाप के कितने ही रबफ़ाक छात्र हमारे यहां आते और हम से मिला-जुला करते। कोलोनी के सदस्य उनके मुंह से प्रथम रबफ़ाकों के वीरतापूर्ण दिनों की कहानियां सुनते और रश्क करते। इस रश्क ने उन्हें सहारा दिया और वे रबफ़ाक के लिए हमारे अपने प्रचार को अधिक हार्दिकता के साथ ग्रहण करने लगे। हम, अत्यन्त तीव्र गति से, स्कूल तथा ज्ञानार्जन की ओर अपने छात्रों को अग्रसर करते और एक अत्यन्त शानदार पथ के रूप में रबफ़ाक का वर्णन करते जिसे मानव ग्रहण कर सकता है। लेकिन लड़कों की दृष्टि में रबफ़ाक में प्रवेश करना एक ऐसी परीक्षा से जुड़ा था जो अनुल्लंघनीय कठिनाइयों से घिरी थी और जिसे, प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, केवल वरदपुत्र ही पार कर सकते थे। अपने छात्रों को यह विश्वास दिलाने में हमें भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि इस भयानक अग्नि-परीक्षा के लिए यहां, अपने स्कूल में भी, तैयारी करना सम्भव है। उनमें से कितने ही अब तक रबफ़ाक में पहुंच भी गए होते, लेकिन धुंधली आशंकाओं ने ऐसा नहीं करने दिया, और उन्होंने एक साल और कोलोनी में ही रहने का निश्चय किया ताकि अपनी तैयारी

को और भी पक्का बनाया जा सके। बुरून, कराबानोव, वेर्शनेव और ज़दोरोव ने ऐसा ही किया।

विद्या प्राप्त करने का बुरून का जोश हमें खास तौर से प्रभावित करता था। उसे बढ़ावा देने की बिरले ही आवश्यकता होती थी। मौन दृढ़ता के साथ वह गणित तथा व्याकरण की कठिनाइयों से, यहां तक कि खुद अपनी सीमाओं से भी जूझता। मामूली से मामूली बात भी – व्याकरण का कोई नियम या गणित की कोई एक खास क़िस्म की समस्या का हल – उसकी सम्पूर्ण शक्ति की अपेक्षा रखता। वह खूब ज़ोर लगाता, हांफता और पसीने में तर हो जाता। लेकिन झुंझलाहट या नतीजे के बारे में सन्देह को कभी हावी नहीं होने देता। सौभाग्य से, यह ख़याल उसके मन में जम गया था कि शिक्षा एक अत्यन्त कठिन तथा मस्तिष्क का कचूमर निकाल देनेवाली चीज़ है जिसे केवल असाधारण प्रयास करने पर ही प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन, पता नहीं, किसी ने कोई जादू कर दिया था क्या, वह यह नहीं देख सका कि अन्य सब लोग इन सभी कठिनाइयों को बाएं हाथ का खेल समझते हैं। ज़दोरोव आम स्कूली घंटों के अलावा एक क्षण भी पढ़ने पर कभी खर्च नहीं करता था, कराबानोव पढ़ाई के घंटों तक में ऐसे सपनों में रमा रहता है जिनका उसकी पढ़ाई से कोई सम्बन्ध नहीं होता था। वह किसी सवाल या अभ्यास के बजाय कोलोनी के जीवन की मामूली बात को लेकर मन ही मन उधेड़-बुन में डूबा रहता था। और अन्त में वह दिन आया जब बुरून अपने सब साथियों से आगे था, जब कि उनके ज्ञान की उजली चमक उसके अपने ठोस पाण्डित्य की तुलना में ओछी मालूम होती थी। मारूस्या लेवचेन्को बुरून से ठीक उल्टी थी। वह अपने साथ असह्य झगड़ालू स्वभाव, उन्माद सन्देहशीलता और आंसुओं की नदियां लेकर कोलोनी में आई थी। उसकी वजह से हमें बहुत कुछ सहना पड़ा। मदांध लापरवाही तथा उन्मादी आवेग के साथ, पलक झपकते ही वह बेशक़ीमती से बेशक़ीमती चीज़ों को – मित्रता को, सफलता को, सुहावने दिन और उजली, शान्त संध्या को, प्रिय से प्रिय तथा अत्यन्त उज्जवल आशाओं को चकनाचूर कर डालती। कितनी ही बार इसके सिवा और कोई चारा नज़र नहीं आता कि ठंडे पानी की बाल्टियां उठाई जाएं और

चिरन्तन, मूर्खतापूर्ण अगिया बैताली विस्फोटों से युक्त इस असह्य जीव के ऊपर बेरहमी के साथ उंडेल दी जाएं।

कोलोनी का यह अडिग प्रतिरोध, जो कोमलता से वंचित होता था, बहुधा क़रीब-क़रीब निर्दय रूपों में अपने को व्यक्त करता था। इसने मारूस्या को अपने पर काबू रखना तो सिखाया, लेकिन उसी विवादग्रस्त ज़िद्द के साथ उसने अब अपनी खिल्ली उड़ाना तथा अपने को यंत्रणा देना शुरू कर दिया। उसकी याददाश्त अद्‌भुत थी। वह चतुर और अत्यन्त प्रियदर्शिनी थी। उसके सांवले गाल गहरी लाली से दमकते थे और उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखें, शान्त, शुद्ध समझदार, आश्चर्य से निरस्त्र कर देनेवाले माथे के नीचे लपटें तथा बिजलियां छोड़ती मालूम होती थीं। लेकिन मारूस्या के मन में यह बात बैठ गई थी कि विधाता ने उसे विकराल बनाया है, वह 'भयंकर' है, वह कुछ नहीं समझती, और न कभी कोई चीज़ उसकी समझ में आएगी। सरल से सरल कामों पर भी वह पूर्व कल्पित क्षोभ के साथ बरस पड़ती।

"जो हो, कोई नतीजा इसका नहीं निकलेगा।" वह चीखती। "तुम मेरे पीछे पड़े हो—पढ़ो, अध्ययन करो। यह सब अपने बुरूनों को सिखाओ। नौकरानी बनकर मैं अपना जीवन बिता लूंगी। जब मैं किसी काम की नहीं हूं, तो मुझे सताने से क्या फ़ायदा?"

नतालिया मारकोवना ओसिपोवा जो एक भावुक जीव थी, फ़रिश्तों जैसी जिसकी आंखें, और फ़रिश्तों जैसी जिसकी सीरत थी—इस हद तक कि उससे तबीयत क़रीब-क़रीब भन्ना उठती थी—मारूस्या के साथ काम करने पर आंसुओं में तिरने लगती।

"मैं उसे पसंद करती हूं," वह कहती, "और मैं उसे सिखाना भी चाहती हूं, लेकिन वह मेरी परवाह नहीं करती है, और कहती है कि उसकी जान खाते मुझे शर्म नहीं आती। मैं अब क्या करूं?"

मैंने मारूस्या को येकातेरिना ग्रिगोरियेवना के दल में बदल दिया, हालांकि इस क़दम के परिणामों के प्रति मैं आशंकित था। कारण, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना लोगों से सीधे-सच्चे और बेलाग दायित्व की अपेक्षा करती थी।

पढ़ाई शुरू होने के तीन दिन बाद ही येकातेरिया ग्रिगोरियेवना

मारूस्या को लिए मेरे पास आई, दरवाज़े को उसने बंद किया, अपनी शिष्या को – जो गुस्से से थरथरा रही थी – एक कुर्सी पर बैठाया और बोली :

"अन्तोन सेम्योनोविच। यह मारूस्या आपके सामने मौजूद है। अब आप ही निश्चय कीजिए कि इसका क्या किया जाए। मिल के मालिक को, संयोग से, एक नौकर की ज़रूरत है। और मारूस्या का ख़याल है कि चाकरी के सिवा वह कभी और किसी काम लायक़ नहीं हो सकती। सो इसे मिल के मालिक की चाकरी करने दें। लेकिन एक रास्ता और भी है। मैं इस बात की गारंटी लेती हूं कि शरद से पहले मैं इसे रबफ़ाक के लिए तैयार कर दूंगी। इसमें काफ़ी क्षमता है।"

"रबफ़ाक, निस्संदेह," मैंने कहा।

मारूस्या कुर्सी पर बैठी घृणाभरी आंखों से येकातेरिना ग्रिगोरियेवना के शान्त चेहरे की ओर देख रही थी।

"लेकिन," येकातेरिना ग्रिगोरियेवना कहती गई, "लेकिन यह नहीं हो सकता कि सबक़ के दौरान वह मेरा अपमान करती रहे। मैं ख़ुद भी एक श्रमिक हूं, और मेरा अपमान नहीं किया जा सकता। अगर इसने फिर कभी 'शैतान' शब्द प्रयोग किया या मुझे 'मूर्खाधिराज' कहा तो मैं इसके रहते काम नहीं करूंगी।"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की चाल को मैंने समझा, लेकिन मारूस्या के साथ सभी चालों को कसौटी पर परखा जा चुका था। शिक्षक के नाते मेरी कल्पना में अब ज़रा भी उत्साह का संचार नहीं हुआ। मारूस्या की ओर अलसाई नज़र से मैंने देखा और, बिना किसी लगावट के, कहा :

"इससे कुछ नहीं होगा। वह अपने शैतानों, मूर्खाधिराजों और काठ के उल्लुओं जैसे शब्दों की बौछार करती रहेगी। मारूस्या के हृदय में दूसरों के लिए कोई इज़्ज़त नहीं है, और उसका यह रवैया ऐसा नहीं है जो एकबारगी दूर हो सके..."

"मैं दूसरों की इज़्ज़त करती हूं," मारूस्या ने मुझे टोका।

"नहीं, तुम्हारे हृदय में किसी के लिए इज़्ज़त नहीं है," मैंने कहा। "लेकिन किया भी क्या जाए? हमारे संरक्षण में है। मैं इस मामले को इस रूप में देखता हूं, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना। तुम बड़ी

हो, समझदार और अनुभवी हो। और मारूस्या एक बद-दिमाग़ छोटी लड़की है। सो अच्छा यही है कि इसे लेकर हम अपने को परेशान न होने दें। हम इसे अपने मन की करने दें। यह तुम्हें पशु और लुच्ची भी कहे तो न रोको — ऐसा हो भी चुका है — हो चुका है न? और तुम बस इसकी ओर ध्यान ही न दो। सब ठीक हो जाएगा। क्यों, सहमत हो न?"

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने मुसकराते हुए मारूस्या की ओर देखा, और केवल इतना ही कहा:

"ठीक है। इसका यही उपाय है। मैं सहमत हूं।"

मारूस्या की काली पुतलियां, ग्लानि के आंसुओं से चमकती, एकटक मुझपर जमी थीं। अचानक रूमाल से उसने अपना मुंह छिपा लिया, और रोती हुई कमरे से भाग गई।

एक सप्ताह बाद मैंने येकातेरिना ग्रिगोरियेवना से पूछा:

"मारूस्या का क्या हाल है?"

"ठीक है। अपनी ज़बान को क़ाबू में रखती है, लेकिन आपसे बहुत नाराज़ है।"

और अगले दिन, गई रात, मारूस्या को लिए हुए सिलान्ती मेरे पास आया। कहने लगा:

"जैसा कि कहते हैं, बड़ी मुश्किल से घसीटकर इसे मैं आपके पास ला सकता हूं। आप जानते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच, मारूस्या आपसे बहुत क्षुब्ध है। आप ज़रा इससे बात कर लीजिए।"

विनीत भाव से वह एक ओर हट गया। मारूस्या का सिर नीचे झुक आया।

"मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है," उसने कहा, "अगर वे मुझे पागल समझते हैं तो समझा करें।"

"तुम मुझसे किसलिए नाराज़ हो?" मैंने पूछा।

"मैं पागल जो हूँ न।"

"लेकिन मैं तुम्हें पागल नहीं समझता।"

"तो फिर आपने येकातेरिना ग्रिगोरियेवना से यह सब क्यों कहा?"

"अरे वह, हां, उसमें मुझसे ग़लती हुई। मेरा ख़याल था कि तुम उसके ख़िलाफ़ दुनिया-भर की बुरी भाषा का प्रयोग करोगी।"

मारूस्या मुसकराई।

"लेकिन मैं उसे गालियां नहीं देती।"

"सच? इसका मतलब यह कि मैंने ग़लत समझा। जाने कैसे, मुझे लगा कि तुम गालियां दोगी।"

मारूस्या का सुन्दर चेहरा एक संदिग्ध, सावधान आह्लाद से खिल गया।

"आप हमेशा ऐसा ही करते हैं – बस, एकदम टूट पड़ते हैं।"

सिलान्ती आगे बढ़ आया, और अपनी टोपी को हिलाते हुए बोला:

"यों बौखलाना ठीक नहीं। एक तरफ़, जैसा कि कहते हैं, तुम ढेर के ढेर हो, और वह फ़क़त एक है। अगर उनसे कोई छोटी-मोटी ग़लती हो भी गई तो इससे क्या, तुम्हें उनसे क्षोभ नहीं करना चाहिए।"

मारूस्या ने एकदम सिलान्ती के चेहरे की ओर प्रसन्नता से देखा।

"तुम निरे बुद्धू हो, सिलान्ती," खनकदार आवाज़ में उसने कहा। "हालांकि बड़े-बूढ़ो में तुम्हारा शुमार है।"

और वह दफ़्तर से बाहर भाग गई। सिलान्ती ने अपनी टोपी लहराई।

"तो यह हाल हैं," उसने कहा।

अचानक घुटने पर अपनी टोपी मारी और हंसी के मारे दोहरा हो चला।

"तो यह हाल है, कम्बख़्त चमगादड़ कहीं की।"

३. प्रमुख प्रवृत्तियां

लाल भवन की खिड़कियां चढ़ाने का काम बढ़ई अभी मुश्किल से ही ख़त्म कर पाए थे कि जाड़ा आ धमका। उस साल जाड़ा था: रोयेंदार और कोमल, बर्फ़ के गलने या कड़े पालों से मुक्त। तीन दिनों तक कुदलाती कोलोनी के निवासियों को जाड़ों के कपड़े वितरित करने में व्यस्त रहा। साईसों और सूअर-पालकों को वालेन्की – ऊनी बूट – दिये गये, और बाक़ी के हिस्से में जो जूते आए वे न तो नयेपन के लिए उल्लेखनीय थे, न तरहदारी के लिए, लेकिन उनमें अन्य कितने ही गुण थे: वे ठोस सामग्री के बने थे, सफ़ाई के साथ उनमें पेबन्द लगे

थे, खुले हुए इतने थे कि उनपर रश्क किया जा सकता था। उनमें से प्रत्येक में पांव, दो जोड़ी पायताबों के साथ आसानी से समा सकते थे। उन दिनों कोट जैसी चीज़ से मुश्किल से ही हमारा कभी वास्ता पड़ता था, उसके बदले हम एक तरह की जाकेट पहनते थे जिसमें गद्दियां भरी रहती थीं। उनकी आस्तीनें भी गद्दीदार होती थीं। ये विश्वयुद्ध की विरासत के रूप में हमें मिली थीं। कुछ के सिरों पर टोपियां नज़र आती थीं जो ज़ारशाही सैन्य कमिसरियट की यादगार थीं। लेकिन अधिकांश लड़के, जाड़ों में भी, अपनी सूती टोपियां ही पहनते थे। उन दिनों हममें इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि अपने छात्रों के शरीरों को और अधिक सम्यक् रूप में गरमा सकें। जाड़े और गर्मियों में वे हल्के सूती कपड़े की क़मीज़ें तथा पतलूनें पहनते थे। फलत: जाड़ों के दिनों में, लड़कों के चलने-फिरने में एक तरह का अतिरिक्त चापल्य समा जाता था। वे अत्यन्त कड़े पाले के दिनों में भी, एक जगह से दूसरी जगह तीर की भांति लपकते नज़र आते थे।

जाड़ों की संध्या कोलोनी में आकर्षण से पूर्ण होती थी। काम पांच बजे तक समाप्त हो जाता था, और शाम के भोजन में अभी तीन घंटों की देर होती थी। यहां-वहां तेल के लैम्प रोशन हो जाते लेकिन वास्तविक चेतनता तथा सुहावनेपन का संचार उनसे नहीं होता था। शयनागार तथा पाठशाला में भट्टियां गरमायी जाती। प्रत्येक भट्टी के इर्द-गिर्द हमेशा दो चीज़ों का जमघट होता – एक तो लकड़ी के कुन्दों का, और दूसरा कोलोनीवासियों का। ऐसा मालूम होता था जैसे गरमाने के लिए इतना नहीं, जितना कि संध्याकालीन मित्रतापूर्ण बातचीत के लिए इन दोनों का वहां जमाव हुआ है। शुरुआत कुन्दों से की जाती, उस समय जब कि लड़कों के चपल हाथ उन्हें भट्टी में लगाना शुरू करते। वे लम्बी कहानियां सुनाते – ऐसी कहानियां जो रोचक साहसिक अभियानों की गोलियों के दग़ने की, पीछा करने तथा बाल-सुलभ प्रफुल्लता की और विजयी उछाहों से भरी होती थी। लड़के मुश्किल से ही उनकी बातें पकड़ पाते। कारण, कहानी कहनेवाले बीच में ही एक-दूसरे को रोककर बोलने लगते थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे सब के सब, इस या उस जगह पहुंचने की उतावली में हों। लेकिन कहानी का आशय काफ़ी साफ़ होता और हृदय की गहराइ-

यों का स्पर्श करता: ऐसा प्रतीत होता कि जीवन एक आनन्दप्रद और रमणीय साहसिक अभियान है। और जब लकड़ियों की चरचराहट शान्त हो जाती, और कहानी कहनेवाले उत्कट विश्राम की भावना से स्थिर हो जाते—केवल फुसफुसाकर अपनी अलस जिह्वाओं से कुछ बुदबुदाते रहते—तब लड़के और लड़कियां अपनी कहानियों का स्वर छेड़ते।

इन दलों में से एक में वेत्कोवस्की था। क़िस्साख्वानों के रूप में वह कोलोनी में प्रसिद्ध था, और उसके श्रोताओं की संख्या निश्चित रूप में हमेशा बड़ी होती थी।

"यह दुनिया कितनी ही अद्भुत चीज़ों से भरी है," वह कहता। "हम यहां चिपके हैं और कभी कुछ नहीं देख पाते। लेकिन दुनिया में ऐसे आदमी भी हैं जो कभी किसी भी चीज़ को नहीं छोड़ते। इधर ऐसा ही एक आदमी मुझे मिला था। कास्पियन सागर की उसने यात्रा की थी और काकेशिया का चक्कर उसने लगाया था। वहां एक दर्रा है और एक चोटी, और वह 'ख़ुदा मुझे उस पार ले चले' कह जाती है। यह इसीलिए कि वहां और कोई रास्ता नहीं है, केवल यही एक रास्ता है, इस चोटी से होकर। कुछ पारकर जाते हैं, कुछ नहीं—पत्थर हर घड़ी लुढ़ककर नीचे गिरते रहते हैं। तब तक सब ठीक रहता है जब तक कि कोई तुम्हारी थूथनी पर आकर नहीं गिरता, लेकिन अगर वह गिरता है तो तुम सीधे अतल गर्त की ओर प्रयाण करते हो और फिर तुम्हारा कभी कुछ पता नहीं चलता।"

ज़दोरोव खड़ा हुआ ध्यान से सुन रहा था और उतने ही ध्यान से वेत्कोवस्की की नीली आंखों में देख रहा था।

"तो कोस्त्या, तुम क्यों वहां नहीं जाते और कोशिश करते," वह कहता। "शायद ख़ुदा तुम्हें उस पार पहुंचा दे।"

भट्टी की लाल चमक से आलोकित लड़कों के सिर ज़दोरोव की ओर घूम जाते।

कोस्त्या अप्रसन्नता से उसांस छोड़ता।

"तुम कुछ नहीं समझते, शुर्का," वह कहता। "हर चीज़ देखने को मिले, इससे अच्छा और क्या होगा। अब देखो न, यह छोकरा वहां गया था।"

सदा की भांति उपनी उसी आकर्षक, व्यंगमयी मुसकान के साथ ज़दोरोव ने कहा:

"इस छोकरे से तो मुझे कुछ और ही पूछना है.. चिमनी को अब बंद करना चाहिए, लड़को।"

"तुम उससे क्या पूछोगे?" वेत्कोवस्की ने जानना चाहा।

ज़दोरोव उत्कण्ठा से भरे उस लड़के की ओर देखता रहा जो धुआंकश के ढक्कन को खड़खड़ा रहा था।

"मैं इससे गुणा का पहाड़ा पूछूंगा। है तो आख़िर निखट्टू ही। दुनियाभर में जूतियां चटखाएगा, हराम का खाएगा और अज्ञान की पोटली बने रहेगा। शायद इसे पढ़ना तक नहीं आता। बेशक मुझे उस पार पहुँचा दो। पर ऐसे कूढ़ दिमाग़ों का तो भेजा निकाल देना चाहिए। वह पहाड़ी चोटी जैसे जान-बूझकर ऐसे लोगों के लिए ही बनी है।"

लड़के हंसते और उनमें से कोई सलाह देता:

"अच्छा यही है कि तुम हमारे साथ रहो, कोस्त्या। तुम कोई कूढ़ दिमाग़ थोड़े ही हो।"

एक अन्य भट्टी के पास सिलान्ती अपने घुटनों को फैलाकर फ़र्श पर बैठा हुआ एक लम्बी कहानी का ताना-बाना बुनता।

"हमने सोचा अब सब ठीक है। वह आंसू बहा रहा था और हमें चूम रहा था – कमीना कहीं का। लेकिन जैसे ही वह अपने दफ़्तर में पहुंचा, उसने एक कमीनी चाल चली। उसने शहर में अपने शिकारी कुत्ते छोड़ दिए। अगली सुबह हम क्या देखते हैं कि घुड़सवार पुलिस आ गई। सबके मुंह में एक ही बात कि कोड़ों से हमारी ख़बर ली जाएगी। लेकिन मेरा भाई और मैं भला यह कब पसन्द करते कि हमारे सुतने उतारे जाए। अपनी उस प्रेमिका के लिए मैं दुःखी था। सच, मैं बहुत दुःखी। लेकिन अपने मन में सोचा: वे उस लड़की को हाथ नहीं लगाएंगे।"

सिलान्ती के पीछे कालीना इवानोविच की वालेन्की* चमक रहे थे और उनके सिरों पर कालीना इवानोविच के पाइप से निकलता,

---

* नमदे के बूट। सं०

धुआँ भट्ठी तक नीचे उतरता फिर एक लड़के के कानों के इर्द-गिर्द दो हिस्सों में बंट जाता और तत्परता के साथ भट्ठी की तप्त चिमनी में फैल जाता। मेरी ओर आंख मारते हुए कालीना इवानोविच ने सिलान्ती को टोका।

"ही-ही। अच्छा, सिलान्ती, ज़रा यह तो बताओ – उन हरामख़ोरों ने तुम्हें उस जगह कोड़े लगाये या नहीं जहां से तुम्हारी टांगें शुरू होती हैं?"

सिलान्ती ने अपने सिर को झटका दिया, और क़रीब-क़रीब फ़र्श पर लुढ़कते हुए हंसी में बह चला।

"उन्होंने लगाए, कालीना इवानोविच, तुमने यह ठीक पकड़ा। और यह सब हुआ एक तिरिया की बदौलत – भाड़ में जाए वह।"

और कहानियों की मर्मर करती ये धाराएं अन्य भट्ठियों के इर्द-गिर्द और कक्षा-भवनों तथा शयनागरों में, प्रवाहित होतीं। वेर्शनेव और कराबानोव निश्चय ही लिदोच्का के कमरे में आसन जमाते जहां लिदोच्का चाय तथा मुरब्बों से उनकी ख़ातिर करती। लेकिन चाय वेर्शनेव के कराबानोव से नाराज़ होने में बाधक न होती।

"बहुत ठीक।" वह हकलाता। "हर घड़ी छींटे उड़ाने के सिवा तुम्हें और कुछ नहीं आता। आख़िर अपने दिमाग़ से काम लेना कब शुरू करोगे?"

"क्यों, किस चीज़ को लेकर दिमाग़ को परेशान किया जाए? क्या हमारे पास बीवी है या बैल है, या हमारे गोदामों में माल भरा है? बस, मौज से जियो और कुछ नहीं।"

"तुम्हें जीवन के बारे में भी सोचना चाहिए, समझे, मौजी राम।"

"तुम बुद्धू हो, कोल्का, सच – तुम निरे बुद्धू हो।" कराबानोव चीख़ा। "सोचने का तुम्हारे लिए मतलब है – आराम कुर्सी में जमकर बैठ जाओ और बस, अपनी नाक की सीध में ताकते रहो। लेकिन सोचेगा वही जिसके पास दिमाग़ होगा। यह तो केवल तुम्हारे जैसे लोग हैं जिन्हें सोचना शुरू करने से पहले अपना पेट भरने की ज़रूरत होती है।"

"कोल्या को तुम क्यों चिढ़ाते हो!" लिदोच्का कहती। "उसका मन करता है तो सोचने दो उसे, हो सकता है कि इस तरह कुछ उसके पल्ले पड़ जाए।"

"किसको? कोल्या को? अरे नहीं। क्या तुम जानती हो कि कोल्या क्या है? उसे छोटा ईसा मसीह ही समझो। वह 'सत्य की खोज' में जुटा है। कभी देखा है ऐसा बुद्धू? वह सत्य का मजनूं है। अपने जूतों को भी वह सत्य से ही चमकाना पसन्द करेगा।"

लेकिन सेम्योन और कोल्या गहरे मित्रों की भांति लिदोच्का से विदा होते। सेम्योन अपनी पूरी आवाज़ से गाता और कोल्या सेम्योन की कमर में प्यार से अपनी बांह डाले उसे क़ायल करने का प्रयत्न करता।

"ज – ज – जब कि क्रान्ति हो चुकी है" वह हकलाते हुए कहता, "तब हर चीज़ क़ायदे से सम्पन्न होनी ही चाहिए।"

मेरे ग़रीबख़ाने में भी आगन्तुकों का जमाव होता। मेरी मां भी अब मेरे माथ रहती थी। वह एक वृद्धा स्त्री थी जिसके जीवन की संध्या शान्त पारदर्शी बादलों की छाया में, अपने अन्तिम छोरों को छू रही थी। कोलोनी के निवासी उसे 'नानी' कहते थे। शूर्का जेवेली, मित्का जेवेली का छोटा भाई, इस समय उससे मिलने आया था। शूर्का की नाक सबसे पैनी थी। कोलोनी में वह एक लम्बे अर्से से रह रहा था, लेकिन वह बढ़ता मालूम नहीं होता था, हालांकि उसके कुछ अंग अधिकाधिक पैने होते जा रहे थे, यहां तक कि एकदम नोक-नुकीला बन गया था – उसकी नाक नुकीली थी, उसके कान नुकीले थे, उसकी ठोढ़ी नुकीली थी, और उसकी नज़र भी नुकीली थी।

शूर्का कोई न कोई छिट-पुट धन्धे चालू रखता था। एकान्त में बग़ीचे की झाड़ी के पीछे, उसने एक घरौंदा बना रखा था जिसमें ख़रगोशों का एक जोड़ा रहता था, और तल्ले में उसने एक कौवा रख छोड़ा था। आम सभा में कई बार कोमसोमोल शूर्का पर निजी 'फ़ार्म' चलाने का अभियोग लगाते जो उन्हीं के शब्दों में बिलकुल व्यक्तिगत क़िस्म का था और जिसका उद्देश्य मुनाफ़ा कमाना था। शूर्का ज़ोरों के साथ, यहां तक कि विनम्रता को भी ताक़ पर रखते हुए, अपना बचाव रखता।

"ऐसा ही तो साबित करके दिखाओं न कि मैंने कुछ बेचा है? क्या तुमने मुझे कुछ बेचते देखा है?"

"तो तुम्हारे पास फिर यह पैसा कहां से आता है?"

"कैसा पैसा?"

"जिस पैसे से कल मिठाई ख़रीदी थी, वह कहां से आया था?"

"उसे तुम पैसा कहते हो? नानी ने मुझे दस कोपेक दिए थे!"

आम सभा में नानी के ख़िलाफ़ कोई मुंह न खोलता। कुछ नन्हें लड़के नानी के साथ हमेशा लगे रहते थे। कभी-कभी नानी का छिट-पुट काम करने के लिए वे गोंचारोव्का गांव की दौड़ लगाते थे। लेकिन यह सब वे हमेशा मेरी नज़र बचाकर करते थे। जब यह एकदम निश्चित होता कि मैं व्यस्त हूं और मेरे जल्दी घर लौटने की आशा नहीं है, तब वे दो-दो या तीन-तीन के दलों में नानी की मेज़ के इर्द-गिर्द जमा हो जाते, चाय पीते, या फल के किसी मुरब्बे को चट करते, जिसे नानी ने मेरे लिए बनाया था, लेकिन जिसे खाने का मुझे अभी तक मौक़ा नहीं मिला था। नानी, वृद्धावस्था की क्षीण स्मृति के कारण, अपने इन सब मित्रों के नाम तक नहीं जानती थी, लेकिन शूर्का सबसे अलग दिखाई दे जाता था। एक तो इसलिए कि वह सबसे अधिक ज़िन्दादिल तथा सबसे ज़्यादा बातूनी था।

शूर्का आज नानी के पास एक ख़ास महत्वपूर्ण वजह से आया था।

"राम-राम, नानी।"

"राम-राम, शूरा। अरे, इधर तू कहां रहा? कहीं बीमार तो नहीं पड़ गया था?"

शूर्का एक तिपाई पर बैठ गया। छींट के अपने नये पायजामे के घुटने पर से और अपनी टोपी की चोटी से जो कभी सफ़ेद रही होगी, धूल झाड़ी। उसका सिर सन जैसे चमकीले बालों का झौवा बना हुआ था जिनकी कैंची से ख़ातिर करने की ज़रूरत थी। अपनी नाक को हवा में उठाए वह छत की ओर देख रहा था।

"मैं बीमार नहीं रहा। लेकिन मेरा ख़रगोश बीमार है।"

नानी बिस्तरे पर बैठी लकड़ी के अपने बक्से में कुछ खोज रही थी। उस की अधिकांश सम्पदा – सूत और ऊन के गोले, बची-खुची कतरनें थीं, नानी के ज़ख़ीरे में यही सब चीज़ें थीं जो उसमें भरी थीं।

"तो तुम्हारा ख़रगोश बीमार है – बेचारा। तुम्हारा चिन्ता करना स्वाभाविक है।"

"और चारा भी क्या है," गम्भीर मुद्रा में, अपनी सिकुड़ी

हुई दाहिनी आंख में चिन्ता की झलक को छिपाने में असमर्थ शूर्का ने कहा।

"अगर तुम कुछ कोशिश करते, तो उसे चंगा कर लेते?" शूर्का की ओर देखते हुए नानी ने कहा।

"मेरे पास कुछ नहीं है जिससे उसे चंगा करता।"

"क्यों, क्या तुम्हें किसी दवा-दारू की ज़रूरत है?"

"हां, अगर मुझे थोड़ा बाजरा मिल जाता – बस, आधा कटोरी, और अधिक नहीं।"

"कुछ चाय पीना पसंद करोगे, शूरा?" नानी ने पूछा। "देखो, वहां भट्टी पर केतली रखी है, और गिलास वहां उधर है। थोड़ी मेरे लिए भी उंडेल लाना।"

शूर्का ने सावधानी के साथ अपनी टोपी को तिपाई पर रख दिया, और ऊंची भट्टी पर अटपटी-सी मुद्रा में व्यस्त हो गया। उधर नानी ने, पंजों के बल मुश्किल से जैसे-तैसे उचककर ताक पर से गुलाबी रंग का अपना थैला उतारा जिसमें उसने अपना बाजरा रख छोड़ा था।

कोज़िर का इलाक़ा – पहियासाज़ी का एक ऐसा स्थान था जहां सबसे ज़्यादा आह्लाद तथा चहल-पहल से पूर्ण जमावड़ा लगता। कोज़िर यहीं सोता था, और काम भी यहीं करता था। बाड़े के कोने में एक नीची, घर-की-बनी भट्टी थी, और भट्टी के ऊपर एक केतली रखी थी। एक दूसरे कोने में फ़ोल्डिंग बिस्तरा था जो पेबंदोंवाली एक रज़ाई से ढका पड़ा था। बिस्तरे पर ख़ुद कोज़िर बैठा था, और उसके मेहमान लकड़ी के कुन्दों, टैकनीकल साज़-सामान और पहियों की टालों पर आसन जमाए थे। कोज़िर विश्वासों का भरा-पूरा भंडार था जिन्हें उसने अपने जीवन के दौरान संचित किया था, और वे सबके सब मेहमान कोज़िर के इस ज़खीरे में से कुछ झटकने की अपनी कोशिशों में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। कोज़िर भेद भरे अन्दाज़ में मुसकराया।

"यह ग़लत है, बच्चो, यह ग़लत है – ख़ुदा हमें माफ़ करे। प्रभु नाराज़ हो जाएगा।"

लेकिन इससे पहले कि प्रभु को अपनी नाराज़ी प्रकट करने का मौक़ा मिले, कालीना इवानोविच भड़क उठा। दरवाज़े के अंधेरे शून्य में से वह प्रकाश में निकल आया और अपने पाइप को हिलाते हुए चीखा:

"इस बूढ़े आदमी का क्यों तुम मज़ाक उड़ा रहे हो? प्रभु ईसा से तुम्हें क्या मतलब, ज़रा मुझे भी तो मालूम हो। मैं तुम्हें ऐसा झापड़ दूंगा कि तुम न केवल प्रभु ईसा की ही, बल्कि सन्त निकोलस की भी दोहाई देते नज़र आओगे।"

"प्रभु तुम्हें बरकत दे, कालीना इवानोविच। तुमने एक बूढ़े आदमी का साथ दिया।"

"अगर ऐसी हरकत फिर कभी हो तो बस तुम मेरे पास चले आना, और मुझे बताना। तुम इन आवारों से मेरे बिना पार नहीं पा सकते – मैं तुम्हारे प्रभु ईसा पर कुछ ज़्यादा भरोसा नहीं करूंगा।"

लड़के कालीना इवानोविच से भयभीत होने का भाव जताते, और पहियासाज़ के बाड़े में से तुरत-फुरत निकल कोलोनी के कोनों में छितर जाते। बड़े-बड़े बैरकनुमा शयनागार से अब हमारा पीछा छूट गया था। हमारे शिष्य अब छोटे-छोटे कमरों में सोते थे, जिन में छः से आठ व्यक्ति तक सो सकते थे। इस प्रणाली के अन्तर्गत अपने दलों को वे और भी ज़्यादा घनिष्ट बना सकते थे। प्रत्येक दल की विशेषताएं अब और भी अधिक सजीव रूप में निखर उठी थीं। अतएव उनके साथ काम करना अब अधिक दिलचस्प हो गया था। एक ग्यारहवां दस्ता और बना लिया गया था। यह दस्ता कम उम्र लड़कों का था और गेओर्गीयेवस्की के अडिग अनुरोध से इसका संयोजन किया गया था। पहले की भांति अब भी सदा वही उनकी देख-भाल करता था – उन्हें नहलाता-धुलाता था, उनके साथ खेल करता और उन्हें झिड़कता था, मां की भांति उन्हें दुलारता था, अन्य लड़कों की कड़ी आत्माओं को अपनी शक्ति और धीरज से चकित करता था। गेओरर्गीयेवस्की के इस अद्‌भुत कार्य ने उस अप्रिय स्थिति को संभालने में काफ़ी योग दिया, जो उसके बारे में इस आम विश्वास से पैदा हो सकती थी कि वह इरकूत्स्क के गवर्नर का लड़का है।

कोलोनी में नये शिक्षकों की वृद्धि हो गई थी। मैं अभी भी धैर्य के साथ असली इनसानों की खोज में जुटा था, और शिक्षकों के रिज़र्व समुदाय में से – बावजूद इसके कि वे ऐसे कोई ख़ास प्रतिभाशाली नहीं होते थे – कुछ काम चलाऊ 'रत्न' मैंने प्राप्त कर लिए थे। पावेल इवानोविच जुरबिन का, मैंने शिक्षकों की ट्रेड यूनियन के साग-भाजी

के बगीचे में से, जहां कि वह चौकीदार की हैसियत से काम कर रहा था, आविष्कार किया था। वह सुशिक्षित, सहृदय, अनुशासन प्रिय, निस्पृह और सचमुच में भला इनसान था। उसकी एक विशेषता को मैं ख़ास तौर से पसन्द करता था। एक पारखी की भांति वह मानवी प्रकृति में रस लेना जानता था। संग्रहकर्त्ता की लगन और अनुराग के साथ वह मानव-मनोविज्ञान की व्यक्तिगत प्रवृतियों, व्यक्तित्व की सूक्ष्म गुत्थियों, मानव की वीरता की ख़ूबसूरतियों, और मानव की नीचता के अंधेरे गर्तों में डुबकी लगाता था। उसने इस सब का काफ़ी अनुशीलन किया था, और मानवसमूहों की धैर्य के साथ जांच करता था कि कहीं कोई ऐसी चीज़ तो नहीं प्रकट हो रही है जो नये सामूहिक नियमों का पता दे सके। मैं यह साफ़ देख सकता था कि उसका यह नौसिखिया उत्साह उसके लिए किसी काम का सिद्ध नहीं होगा, फिर भी उसकी सच्ची विशुद्ध प्रकृति मन को मोहनेवाली थी।

ज़िनोवी इवानोविचं बुत्साई मेरा एक अन्य आविष्कार था। क़रीब सत्ताईस वर्ष की उसकी आयु थी। उसने अभी हाल ही में कला-विद्यालय से डिग्री प्राप्त की थी, और कलाकार के रूप में उसकी हमसे सिफ़ारिश की गई थी। हमें अपने स्कूल और नाटकघर दोनों के लिए, और कोमसोमोल के विविध क्रिया-कलापों के लिए एक कला-कार की आवश्यकता थी।

ज़िनोवी इवानोविच में प्रभावित करनेवाली बात यह थी कि उसकी सभी विशिष्टताएं अति की सीमा को छूती थीं। वह अत्यन्त क्षीण था, अत्यन्त काला था, और उसकी पुरुष आवाज़ इतनी गहरी थी कि उससे बातचीत जारी रखना कठिन हो जाता था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह अल्ट्रा-वायोलेट ध्वनियां प्रसारित कर रहा हो। ज़िनोवी इवानो-विच की एक अन्य विशेषता थी: उसका अत्यन्त शान्त रहना तथा विचलित न होना। नवम्बर के अन्त में वह हमारे यहां आया था, और यह देखने के लिए हम सभी विह्वल थे कि कौन-कौन-सी कलात्मक नवीनताएं अब हमारे जीवन को समृद्ध करने जा रही हैं। लेकिन ज़िनोवी इवानोविच ने पेन्सिल हाथ में उठाने से पहले ही अपनी कलात्मक प्रकृति के एक अन्य पहलू से हमें चकित कर दिया।

उसके आगमन के कुछ ही दिन बाद लड़कों ने मुझे सूचना दी

कि हर सुबह कोट को अपने कंधों पर लटकाए, अपने कमरे से वह नंगा प्रगट होता है और कोलोमाक में स्नान करने जाता है। नवम्बर का अन्त होने तक कोलोमाक का पानी जमना शुरू हो गया और देखते न देखते उसने कोलोनी के स्केटिंग रिंक का रूप धारण कर लिया। ओत्चेनाश की मदद से ज़िनोवी इवानोविच ने बर्फ़ में एक हिमविवर बनाया, और पूर्ववत प्रतिदिन अपना भयानक स्नान करता रहा। इसके शीघ्र बाद प्लूरिसी से आक्रान्त हो एक पखवाड़े तक बिस्तरे पर पड़ा रहा। लेकिन जैसे ही वह अच्छा हुआ, उसने फिर उस गढ़े में डुबकी लगानी शुरू कर दी। दिसंबर में उसे ब्रोंकाइटिस ने जकड़ लिया। साथ में कुछ अन्य जटिलताएं भी पैदा हो गईं। बुत्साई, कक्षा से ग़ैरहाज़िर रहा। हमारा कार्य-क्रम गड़बड़ा गया। आखिर मेरा धीरज डगमगा गया और इस ख़ुराफ़ात को बंद करने का मैंने उससे अनुरोध किया।

ज़िनोवी इवानोविच ने रुखाई से जवाब दिया:

"मैं जब भी ठीक समझता, स्नान कर सकता हूँ। श्रम-क़ानून में इसपर कोई पाबन्दी नहीं है। मुझे एक और भी अधिकार है: बीमार पड़ने का। सो मेरे ख़िलाफ़ कोई भी सरकारी अभियोग नहीं लगाए जा सकते।"

"लेकिन ज़िनोवी इवानोविच," मैंने विरोध किया, "मैं यह सरकारी रूप में नहीं कह रहा हूं। क्यों बेकार अपने को यंत्रणा देते हो? केवल एक मानव के नाते तुम्हारे लिए मुझे दुःख होता है।"

"उस हालत में, मैं आपको समझता हूं – मेरा स्वास्थ्य कमज़ोर है, मेरे शरीर की बनावट – मेरा ढांचा – गया-बीता है। ऐसे ढांचे को लेकर, आप जाने, जीना एकदम असह्य है। मैंने दृढ़ निश्चय किया है – या तो मैं इससे कड़ा बनाऊंगा जिससे शान्ति से इसके साथ गुज़र हो सके, या फिर – जहन्नुम में जाए यह। इससे अच्छा है कि मर जाऊँ। पिछले साल चार बार प्लूरिसी के आक्रमण हुए। इस साल – दिसम्बर तो आ ही गया है, केवल एक बार आक्रमण हुआ। मैं नहीं समझता कि इनकी संख्या दो से आगे बढ़ेगी। मैं समझ-बूझकर आपके पास आया था, इसलिए कि यहां नदी एकदम बहुत ही पास है।"

मैंने सिलान्ती को बुलाया और उसे डांटा

"यह क्या खुराफ़ात है? यहां इस आदमी का दिमाग़ तो ख़राब हो ही रहा है, और तुम उसके लिए और बर्फ़ में गढ़े खोद रहे हो?"

सिलान्ती ने क्षमा-याचना के अन्दाज़ में अपनी बाँहें फैला दीं।

"गुस्सा न हों, अन्तोन सेम्योनोविच। मेरे लिए अन्य कोई उपाय नहीं था, आप ही सोचकर देखिए। ऐसे ही एक आदमी से पहले भी मेरा वास्ता पड़ चुका है। वह इस जीवन से मुक्ति पाना चाहता था। उसने डूबने का निश्चय किया था। ज़रा नज़र फिरी नहीं कि वह, जंगली कहीं का, नदी में जा गिरता। मैं उसे खींचकर बाहर निकालने में थककर चूर-चूर हो गया। आप सोच भी नहीं सकते, वह दग़ा दे गया और गले में फंदा डालकर लटक गया। यह एक ऐसी चीज़ थी जो कभी मेरे दिमाग़ में नहीं आई। देखा आपने, असलियत क्या है। मैं अब इसके मार्ग में नहीं पड़ूंगा। बस, यही बात है।"

ज़िनोवी इवानोविच ठीक मई तक बर्फ़ के गढ़े में स्नान करता रहा। लड़के पहले तो इस क्षीण-काय की सनक पर हंसे लेकिन धीरे-धीरे उसके प्रति सम्मान की एक भावना उनके हृदय में घर कर गई। प्लूरिसी, ब्रोंकाइटिस और साधारण ठंड खाकर जब वह बिस्तर पकड़ता तो वे बड़े चाव से उसकी देख-भाल करते।

लेकिन लगातार कई-कई सप्ताह तक ऐसा भी होता कि शरीर को कड़ा बनाने की ज़िनोवी इवानोविच की प्रक्रिया के बावजूद उसके तापमान में कोई वृद्धि न होती, और तब प्रकृति सच्ची कलात्मकता के साथ अपने-आपको प्रकट करती। तेज़ी के साथ उसके संयोजन में एक कला-मण्डल का उदय हुआ जिसके सदस्यों ने अटारी के एक छोटे से कमरे को सज्जित कर उसे अपना स्टूडियो बना लिया।

जाड़ों की चहल-पहल-भरी सांझों में बुत्साई के स्टूडियो में उत्साह-पूर्ण काम दिखाई देता, और अटारी की दीवारें कलाकारों तथा मुग्ध दर्शकों के ठहाकों से हिल उठतीं।

कई व्यक्ति एक बहुत बड़े लैम्प की रोशनी में एक भीमाकार व्यंग चित्र पर काम करते होते। कोयले से काले अपने सिर को वे रंगने की तूलिका से खुजलाते, एक ऐसे संगीत-निर्देशक की भांति जो नशे के असर को झटककर चौकस हो उठता है। ज़िनोवी इवानीविच की आवाज़ गूंजती:

"फ़ेदोरेन्को पर कुछ और सीपिया रंग चढ़ाओ। वह किसान है

और तुमने उसे सौदागर की बीवी बना दिया। ज़रूरी हो चाहे नहीं तुम्हारे सिर पर तो बस गुलाबी रंग लगाने की धुन सवार रहती है।"

गाजरनुमा, झाईदार और बैठी हुई नाकवाला वान्का लापोत, ज़िनोवी इवानोविच की नक़ल उतारता हुआ वैसी ही भरभरी पुरुष आवाज़ में जवाब देता:

"अपना सारा सीपिया मैं लेशी पर ख़र्च कर चुका हूं।"

किसी-किसी शाम मेरा आफ़िस भी चहल-पहल से गूंज उठता। हाल ही में ख़ारकोव से दो-एक लड़कियां आई थीं। वे अपने साथ एक काग़ज़ लाई थीं जिसमें लिखा था:

"ख़ारकोव शिक्षण विद्यालय मक्सिम गोर्की कोलोनी की शिक्षा-प्रणाली से व्यावहारिक रूप में परिचित होने के लिए कामरेड क० वार्स्कोया तथा र० लैण्ड्सबर्ग को भेजता है।"

शिक्षकों की नयी पीढ़ी के इन प्रतिनिधियों को मैंने अत्यन्त कौतूहल के साथ स्वीकार किया। क० वार्स्कोया तथा र० लैण्ड्सबर्ग दोनों इतनी युवा थीं कि रश्क होता था। दोनों बीस से ज़्यादा की न होंगी। क० वार्स्कोया एक सुन्दर, सुनहरी बालोंवाली और गुदगुदे बदन की लड़की थी, छोटा क़द और गतिशील। उसके कपोल एक सूक्ष्म कोमल लाली से रंजित थे जिनके साथ केवल पानी के रंगों में ही न्याय किया जा सकता था। उसकी महीन, क़रीब-क़रीब अदृश्य-सी भौहें निरन्तर बल खाती रहती थीं। उसके होंठ जैसे बार-बार मुसकान से खिल उठना चाहते थे जिसे तिरोहित करने में उसे दृढ़ प्रयास का सहारा लेना पड़ता था। मुझपर वह बाक़ायदा सवालों की बौछार करती रहती थी।

"क्या आपके यहां शिक्षणशाला है?"

"नहीं, हमारे यहां कोई शिक्षणशाला नहीं है।"

"तब फिर आप व्यक्तित्व का अध्ययन कैसे करते हैं?"

"बच्चे के व्यक्तित्व का?" मैं भरसक गम्भीरता के साथ पूछता।

"हां, बेशक। अपने छात्र के व्यक्तित्व का।"

"उसका अध्ययन क्यों करने चाहिए?"

"क्यों क्या? इसके बिना आप काम कैसे कर सकते हैं? जब तक आपको सामग्री की जानकारी न हो, तब तक कैसे आप उसके साथ काम कर सकते हैं?"

क० वार्स्काया उछाह तथा सच्ची भावना के साथ अपने शब्दों का उच्चारण करती, और रह-रहकर अपनी संगिनी की ओर मुड़कर देखती जाती। र० लैण्ड्सबर्ग जिसका रंग सांवला और जिसकी चोटियां बहुत ही शानदार काली थीं, अपनी आंखें झुका लेती और अपने सहज विक्षोभ को प्रकट न होने देती अपितु धैर्यपूर्ण अनुकम्पा के चोले में उसे छिपाए रहती।

"आपके छात्रों में कौनसी वृत्तियां सबसे ज़्यादा हावी हैं?" विचलित न होने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञा-सी क० वार्स्काया पूछती।

"कोलोनी में जब व्यक्तित्व का अध्ययन ही नहीं किया जाता," शान्त भाव से र० लैण्ड्सबर्ग ने टोका, "तब प्रमुख प्रवृत्तियों की बात करना बेकार है।"

"बिलकुल नहीं," मैंने गम्भीरता के साथ कहा। "प्रमुख प्रवृत्तियों के बारे में मैं तुम लोगों को कुछ बता सकता हूं। खुद तुम लोगों में जिन प्रमुख प्रवृत्तियों का प्रभुत्व है, वही यहां भी है।"

"यह आपको कैसे मालूम कि हम क्या हैं?" क० वार्स्काया ने पूछा। उसके स्वरों में अमैत्रीपूर्ण भाव था।

"क्या तुम मेरे सामने बैठी हुई और बातें नहीं कर रही हो?"

"तो इससे क्या?"

"तो इससे यह – कि मैं तुम्हें आर-पार देख सकता हूं। तुम मेरे सामने इस तरह बैठी हो जैसे शीशे की बनी हुई हो। और तुम्हारे भीतर जो कुछ हो रहा है, वह सब मुझे दिखाई दे रहा है।"

क० वार्स्काया के गालों पर लाली दौड़ गई, लेकिन ठीक तभी कराबानोव, वेर्शनेव, ज़दोरोव तथा अन्य कई लड़के दफ़्तर में आ धमके।

"क्या हम भीतर आ सकते हैं, या आप लोग कोई गुप्त वार्ता कर रहे हैं?"

"बेशक, तुम लोग आ सकते हो।" मैंने कहा। "आओ, तुम्हारा परिचय करा दूं, ये हैं हमारी मेहमान, ख़ारकोव से आई छात्राएं।"

"मेहमान। बहुत सुन्दर। आप लोगों के नाम क्या हैं?"

"क्सेनिया रोमानोवना वार्स्काया।"

"राख़िल सेम्योनोवना लैण्ड्सबर्ग।"

सेम्योन कराबानोव् ने हथेली से अपने गाल पर आघात किया और कृत्रिम भय का अभिनय करते हुए बोला :

"अरे बाप रे। क्या इसका इतना लम्बा होना ज़रूरी है? तुम बस ओक्साना हो, हो न?"

"हां-हां, ठीक।" क० वास्कीया ने सहमति प्रकट की।

"और तुम, तुम राख़िल हो। क्यों, ठीक है न?"

"जैसा तुम्हें अच्छा लगे," र० लैण्ड्सबर्ग ने फुसफुसाकर कहा।

"बिलकुल ठीक। हां तो अब तुम्हारे ब्यालू के लिए कुछ करना चाहिए। क्या तुम छात्राएं हो?"

"हां।"

"यह तुमने एकदम सीधे क्यों नहीं बताया। तुम लोग – अरे हां – भेड़ियों की भांति, नहीं, नहीं, बिल्लियों की भांति भूखी होंगी। क्यों, ठीक हैं न?"

"बात तो सच है। हमें भूख लगी है। कहीं नहाने-वहाने का कुछ इन्तज़ाम है?"

"चलो। हम तुम्हें लड़कियों के हवाले कर दें। फिर जो तुम चाहो वहां कर सकती हो।"

इस प्रकार हमारी जान-पहचान सम्पन्न हुई। हर शाम वे मेरे पास आतीं, लेकिन कुछ ही क्षणों के लिए। व्यक्तित्व के अध्ययन का ज़िक्र फिर कभी नहीं चला, ओक्साना और राख़िल को इसकी फ़ुरसत ही नहीं थी। लड़कों ने उन्हें कोलोनी के मामलों, आमोद-प्रमोदों और द्वन्द्वों के छोर-विहीन सागर में खींचकर उन्हें बहुत-सी बुनियादी समस्याओं से परिचित करा दिया था। सामूहिक धारा में जब-तब उठनेवाले भंवरों तथा लघु लहरियों से बचे रहना किसी भी जीवित मानव के लिए कठिन था। इससे पहले कि हम उनसे मुंह फेरना चाहें, वे हमें घेर और अपने साथ बहा ले जातीं। कभी-कभी ऐसा होता कि यह धारा किसी को बहाकर सीधे मेरे दफ़्तर में ले आती और उसे वहां ऐसे पटक देती जैसे वह तट हो।

एक शाम ओक्साना, राख़िल, सिलान्ती और ब्रातचेन्को का मनोरंजक दल ने मेरे दफ़्तर में प्रवेश किया।

ओक्साना सिलान्ती की आस्तीन थामे थी और हंसते हुए उद्गार प्रकट कर रही थी:

"अरे आओ, आओ, पीछे क्यों अटक रहे हो।

सिलान्ती सचमुच पीछे की ओर अटक रहा था।

"इसने कोलोनी में मनोबल का ह्रास करनेवाली नीति चालू कर रखी है, और आपको कभी पता तक नहीं चला," ओक्साना ने कहा।

"क्यों, बात क्या है, सिलान्ती?" मैंने पूछा।

सिलान्ती ने झुंझलाहट के साथ अपनी आस्तीन को मुक्त किया। और अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरा।

"बात यह है कि", उसने कहा। "यह जो बर्फ़गाड़ी है न, यह आंगन में पड़ी थी। सेम्योन और ये जो यहां हैं, इस पर सवारी करने की धुन सवार हुई। अन्तोन यहां मौजूद है। खुद उसके मुंह से आप सारी बात सुन लीजिए।"

"ये मेरे इस तरह पीछे पड़ी कि जान ही खा ली, घूमने जाएंगे।" अन्तोन ने कहा। "तो मैंने सेम्योन को ज़ीन की पट्टी कसकर जड़ दी, सो वह तो चलता बना। लेकिन इन दोनों ने न सुनी, और बर्फ़गाड़ी को खींचती-तानती रहीं। मैं क्या करता? अगर मैं ज़ीन-पट्टी का प्रयोग करता तो ये रोने लगती। तभी सिलान्ती ने उनसे बोला..."

"हाँ, ठीक तो है।" विक्षुब्ध ओक्साना चीखी। "अब सिलान्ती फिर से दोहराकर बताए कि उसने क्या कहा था।"

"इसमें ऐसा क्या है जो बतंगड़ बना रखा है?" सिलान्ती ने कहा। "जो सच था, वही मैंने इनसे कहा, बस इतना ही मैंने कहा: "तुम शादी करना चाहती हो, और इसीलिए तुम बर्फ़गाड़ी को तोड़ती हो। सारी बात यह है।"

"सारी बात यही नहीं है।"

"और क्या? कुल इतना ही मैंने कहा था।"

"इसने अन्तोन से कहा – 'इसे बर्फ़गाड़ी में जोतो और हांकते हुए इसे गोंचारोव्का ले जाओ। पल-भर में इसकी सारी गर्मी झड़ जाएगी।' यही कहा था न तुमने?"

"और यह तो मैं फिर भी कहूंगा कि क्या मुस्तण्ड बनी है।

करती-धरती कुछ है नहीं, और यहाँ हमारे पास घोड़े भी कोई अधिक नहीं हैं।

"ओह।" ओक्साना के मुंह से निकला। "जाओ, दफ़ा होओ यहां से। तो अब आप ख़ुद ही देख लीजिए।"

सिलान्ती हंसा और अन्तोन के साथ दफ़्तर से निकल भागा। ओक्साना एक सोफ़े पर जा पड़ी, जिस पर कुछ देर पहले से राखिल झपकी ले रही थी।

"सिलान्ती एक दिलचस्प जीव है," मैंने कहा। "तुम्हें उसके व्यक्तित्व का अध्ययन करना चाहिए।"

ओक्साना दफ़्तर से बाहर की ओर लपकी, लेकिन दरवाज़े में अटककर हंसी की मुद्रा में नक़ल उतारते हुए बोली:

"मैं उसके एकदम आर-पार देख सकती हूं। वह शीशे का बना है।"

विदा के इन शब्दों के साथ वह दरवाज़े से बाहर लपकी और कोलोनीवासियों के एक दल में जा मिली। मुझे उसकी आवाज़ गूंजती और इसके बाद कोलोनी के परिचित चक्रवात में खोती हुई सुनाई दी।

"जाकर बिस्तरे पर सोओ, राखिल।" मैंने कहा।

"क्या – आ? मैं उनींदी थोड़े ही हूं, नहीं हूं न? क्या आपको नींद लगी है?"

"मैं जा रहा हूं।"

"तब ठीक है... बेशक..."

बच्चे की भांति मुट्ठी से अपनी बाईं आंख को मसलते हुए उसने मेरा हाथ दबाया और ऊंघती हुई-सी दरवाज़े के चौखट में अपना कंधा उलझाते हुए दफ़्तर से बाहर चली गई।

४. हमारा नाटकघर

पिछले परिच्छेद में जो कुछ वर्णन किया गया है, वह सब हमारी शीतकालीन सांझों की व्यस्तताओं की केवल एक बहुत ही हल्की-सी झांकी मात्र है। पीछे की ओर मुड़कर जब मैं देखता हूं तो यह

स्वीकार करते कुछ शर्म मालूम होती है, कि हमारे अवकाश का क़रीब-क़रीब सारा समय नाटकघर के चक्कर में व्यतीत होता था।

नयी कोलोनी में एक वास्तविक नाटकघर हमारे हाथों में आ गया था। उस आनन्दातिरेक का वर्णन करना असम्भव है जिसका हमने उस समय अनुभव किया था जब कि मिल का सभी ओर से बंद समूचा बाड़ा हमारे लिए उपलब्ध हो गया।

हमारे नाटकघर में छः सौ तक आदमी बैठ सकते थे। एक साथ कई गांवों के दर्शक उसमें समा सकते थे। इसने नाटक-मण्डल के महत्व में वृद्धि कर दी, और तदनुसार उसकी मांग भी बढ़ चली।

यह सच है कि नाटकघर में कुछ असुविधाएं भी थीं। इन असुविधाओं को कालीना इवानोविच इतना बड़ा समझता था कि उसने नाटकघर को गाड़ियों का बाड़ा बना देने का प्रस्ताव किया।

"अगर तुम गाड़ी इसमें रखोगे तो उसे ढंड-वंड कुछ नहीं सताए-गी," उसने कहा, "और तुम्हें उसमें अंगीठी नहीं रखनी पड़ेगी। लेकिन श्रोताओं का अंगीठियों के बिना काम नहीं चल सकता।"

"ठीक है, तब हम उसमें अंगीठियां रखेंगे।"

"उससे उतना ही फ़ायदा होगा जितना कि भिखारी को हाल-चाल पूछने से होता है। तुम ख़ुद देख सकते हो कि वहां छत नहीं है, केवल लोहे की चादरें छाई हैं जिनके नीचे और कुछ नहीं लगा है। अंगीठियों को गरमाना ऐसा ही होगा जैसे कि स्वर्ग-लोक को गरमाना मानो श्रोताओं के लिए नहीं बल्कि चेरुविम और सेराफ़िम आदि फ़रिश्तों के लिए उन्हें गरमाया जा रहा हो। भला किस तरह की अंगीठी तुम वहां लगाओगे? लोहे की अंगीठी चाहिए वहां, और तुम्हें लोहे की अंगीठी वहां लगाने कौन देगा, यह तो आग को बुलावा देना होगा। एक ओर तुम प्रदर्शन शुरू करोगे और इसके साथ ही साथ, दूसरी ओर, तुम्हें आग बुझानेवाले इंजन का आह्वान करना पड़ेगा।"

लेकिन हम कालीना इवानोविच से सहमत नहीं हुए। ख़ास तौर से जैसा कि सिलान्ती ने कहा:

"आप तो जानते ही हैं कि प्रदर्शन निःशुल्क होगा। आग से कोई मुसीबत खड़ी नहीं होगी और कोई उसे हमारे ख़िलाफ़ इस्तेमाल भी नहीं करेगा।"

हमने लोहे की बनी कई अंगीठियां लगा लीं। केवल प्रदर्शनों के दौरान ही उन्हें जलाते। लेकिन नाटकघर के वायुमण्डल को गरमाने में वे कभी समर्थ नहीं हो सकीं। कारण सारी गरमाई सीधे ऊपर चली जाती और लोहे की छत में से होकर निकल भागती। हालांकि अंगीठियां अपने-आप में हमेशा अंगारे-सी धधकती रहतीं, फिर भी श्रोतागण अपने कोटों में सिमटे-सिमटाए बैठे रहना अधिक पसन्द करते। हाँ, इस बात का ध्यान ज़रूर रखते कि अंगीठी के पासवाले बाज़ू से कहीं उनका कोट झुलसकर न रह जाए।

आग लगने की घटना हमारे नाटकघर में केवल एक बार ही घटी, सो भी अंगीठी से नहीं, बल्कि लैम्प के मंच पर गिर जाने से। भगदड़ मची, लेकिन अपेक्षाकृत एक मौलिक क़िस्म की। श्रोतागण अपनी-अपनी जगहों पर बैठे रहे, जब कि कोलोनीवासी – प्रकट उल्लास के साथ – मंच पर चढ़ आए। कराबानोव ने उनसे चिल्लाते हुए कहा:

"मूर्ख कहीं के, क्या तुमने पहले कभी आग लगते नहीं देखी?"

हमने एक वास्तविक मंच का निर्माण किया था: विस्तृत, ऊंचा, पाखों की एक पेचीदा प्रणाली और प्रौम्पटर के बौक्स से युक्त। मंच के पीछे खूब खुली जगह थी, लेकिन हम उसका प्रयोग करने में असमर्थ थे। अभिनेताओं के सहन करने योग्य तापमान की व्यवस्था करने के लिए पर्दा लगाकर इस जगह हमने एक छोटा-सा कमरा बना लिया था। उसमें एक अस्थायी अंगीठी रख छोड़ी थी, और वहीं मेक-अप करते तथा कपड़े बदलते थे – प्राथमिकता के क्रम तथा यौन-विभाजन का जैसे-तैसे निर्वाह करते हुए। पाखों के पीछे के शेष स्थान व मंच में भी ठंड उतनी ही थी जितनी नाटकघर के बाहर।

श्रोताओं के बैठने के स्थान पर तख़्तों के बेंचों की दर्जनों पांतें लगी हुई थीं। वहां सीटों का एक व्यापक सागर लहराता प्रतीत होता था। सांस्कृतिक कार्य के लिए यह एक अद्भुत क्षेत्र था जो बीज डालने और फ़सल बटोरने की प्रतीक्षा करता मालूम होता था।

नयी कोलोनी में नाटकसम्बन्धी हमारी गतिविधि बहुत तेज़ी के साथ विकसित हुई, और तीन जाड़ों के दौरान एक क्षण के लिए भी न तो उसका जोश कभी ठंडा पड़ा, न ही उसका परिमाण कभी कम हुआ। बल्कि फैलकर उसने इतना प्रभावशाली आकार-प्रकार ग्रहण

कर लिया कि अब उसके बारे में लिखते समय उस पर एकाएक विश्वास करना कठिन प्रतीत होता है।

जाड़ों की ऋतु में हमने क़रीब चालीस नाटक प्रस्तुत किए, लेकिन हम उस सस्ते आम मनोरंजन के मोह में कभी नहीं पड़े जो कि क्लबों में मिलता है। हमने केवल गम्भीर नाटक प्रस्तुत किए जो कि अधिकांशतः राजधानी के नाटकघरों की नाटकावली में से लिए गए थे, पूरी लम्बाई के चार-पांच अंकों में समाप्त होनेवाले नाटक। इसे अत्यन्त बेजोड़ दुस्साहस कहा जा सकता है, लेकिन चलतू काम यह निश्चय ही नहीं था।

तीसरे प्रदर्शन से हमारे नाटकघर की ख्याति गोंचारोव्का की सीमाओं से भी दूर तक फैल गई। पिरोगोव्का, ग्राबिलोव्का, बावीचेव्का, गोन्त्सी, वात्सी, स्तोरोजेवोए के निवासी, वोलोव्यी, चुमात्स्की तथा ओज़ेरस्की गांवों के बाशिन्दे, उपनगरी बस्तियों के मज़दूरों, स्टेशन तथा इंजनवर्क्स के रेलवे-मजदूर हमारे यहां आते थे। शीघ्र ही शहर के रहनेवालों – शिक्षकों, जन-शिक्षा विभाग के लोगों, फ़ौजियों, सोवियत कर्मचारियों, सहकारी समितियों में काम करनेवालों, रसद-विभाग के कार्यकर्त्ताओं तथा युवकों और युवतियों – हमारे अपने लड़के-लड़कियों के मित्रों तथा उनके मित्रों ने भी आना शुरू कर दिया। पहले जाड़ों के खत्म होने तक, शनिवार के दिन, भोजन के समय से ही हमारे नाटक के इर्द-गिर्द दूर-दूर के लोगों का पड़ाव लगना शुरू हो जाता। भेड़ की खालों तथा भारी कोटों से लदे मुच्छड़ व्यक्ति अपने घोड़ों की जोत खोलते नज़र आते, टाट और कम्बलों से उन्हें ढकते, और कुएँ की जगत के पास अपने डोल-डोलचियों को खड़काते। उनकी स्त्रियां, आंखों तक लबादे में लिपटीं, यात्रा में सुन्न हुए अपने पांवों को गरमाने के लिए नाटक के बाड़े के सामने कूद-कूदकर नाचतीं और इसके बाद लोहे की नाल लगी अपनी ऊंची एड़ियों पर झकोले खाती हुई हमारी लड़कियों के शयनागारों में दौड़ जातीं। वहां जाकर अपने को गरमातीं और हाल ही में क़ायम हुई अपनी मित्रता को ताज़ा बनातीं। कितनी ही सींकों के अपने थैलों तथा पोटलियों को खोलतीं। नाटकघर की उनकी यात्रा लम्बी थी, और इसके लिए वे अपने साथ रसद का सामान लाती थीं: पूए, गेहूं की रोटियां, चर्बी के चौकड़े और वि-

भिन्न प्रकार के समोसे। इन चीज़ों का काफ़ी बड़ा हिस्सा कोलोनी के सदस्यों की ख़ातिर करने के उद्देश्य से लाया जाता, और कभी-कभी तो बाक़ायदा दावतों का सा समाँ बंध जाता। यह इस हद तक बढ़ा कि आए हुए दर्शकों से कोई चीज़ लेने पर कोमसोमोल ब्यूरो को थोड़ी पाबन्दी लगानी पड़ी।

शनिवार के दिन नाटकघर में अंगीठियों को दो बजे से जला दिया जाता ताकि हमारे मेहमान अपने को गरमा सकें। लेकिन जितना अधिक वे हमारे साथ घनिष्ठ होते, उतना ही अधिक वे सीधे कोलोनी की इमारतों में चले आने का उपक्रम करते। विशिष्ट आगन्तुकों का एक दल हमारे भोजन के कमरे तक में नज़र आता। ये उन सर्वप्रिय दर्शकों में से थे जिन्हें हमारे मानीटर भोजन की मेज़ पर बुलाने का अपने को अधिकारी समझते।

प्रदर्शन कोलोनी के कोष के लिए भारी सिद्ध हुए। चालीस या पचास रूबल पोशाकों, बालों की टोपियों तथा अन्य साज़-सज्जा की भेंट चढ़ जाते। इस या उस रूप में क़रीब दो सौ रूबल प्रति मास ख़र्च हो जाते। ख़र्च की यह एक भारी रक़म थी। लेकिन हम कभी इतना नीचे नहीं गिरे कि अपने दर्शकों से प्रवेश-शुल्क के रूप में एक कोपेक भी वसूल करते। युवा लोग हमारे लक्ष्य का केन्द्र थे और ग्रामीण युवा लोगों की जेब में – ख़ास तौर से लड़कियों की जेब में – कभी पैसा नहीं होता था।

शुरू-शुरू में नाटकघर में प्रवेश करने के लिए टिकटों की आवश्यकता नहीं होती थी, लेकिन वह समय आते देर नहीं लगी जब उन सब लोगों को जो आना चाहते थे, बाड़े में समाना सम्भव नहीं रहा। फलत: हमें टिकटों की एक प्रणाली का समावेश करना पड़ा जिसमें कोमसोमोल संगठनों, ग्राम-सोवियतों तथा हमारे अपने विशेष स्थानिक प्रतिनिधियों को पहले से टिकट वितरित कर दिए जाते थे।

नाटकों के प्रति देहातों की आबादी की विकट उत्सुकता ने हमें चकित कर दिया। उन्होंने टिकटों को लेकर झगड़ों और ग़लतफ़हमियों की झड़ी लगा दी। उत्तेजित कोमसोमल सेक्रेटरी बिलकुल हमलावरी भाषा की हम पर बौछार करते :

"कल के लिए हमें केवल तीस ही टिकट क्यों दिए गए?"

जोर्का वोल्कोव टिकटघर का मैनेजर, ताने के साथ ठीक सेक्रेटरी के मुंह के आगे अपना सिर हिलाता।

"तुम्हारे लिए इतना ही बहुत है।"

"बहुत है! नौकरशाह की भांति यहां बैठकर कुर्सी तोड़ते हो, और समझते हो कि तुम्हें यह मालूम है कि हमारे लिए कितना बहुत है, कितना नहीं।"

"हम यहां कुर्सी तोड़ते हैं, और देखते हैं कि हमारे टिकटों पर पादरी की लड़कियां किस प्रकार चली आ रही हैं।"

"पादरी की लड़कियां? क्या मतलब है आपका?"

"पादरी की लड़कियां। वही जिनके बाल लाल हैं।"

स्थानिक पादरी की लड़कियों के हुलिये को पहचानने पर सेक्रेटरी का स्वर बदल जाता, लेकिन वह अपने हथियार नहीं डालता।

"हां तो, ठीक—पादरी की दो लड़कियां। लेकिन आपने बीस टिकटों पर क्यों स्याही फेर दी? पचास टिकट हमें मिला करते थे, और अब हमें केवल तीस ही दिए गए।"

"तुम में हमारा विश्वास नहीं रहा," जोर्का सख़्ती के साथ जवाब देता। "दो पादरी की लड़कियां, और पादरियों तथा दुकान-दारों की बीवियों का तो जैसे कुछ हिसाब ही नहीं। हमारा यह धंधा नहीं कि इस बात का पता लगाते फिरें कि किस हद तक तुम लोग घुन्ने हो गए हो।"

"और किस कुतिया के बच्चे ने यह सुराग़ दिया है, ज़रा हमें भी तो मालूम हो।'

"हां तुम्हारी कुतिया के बच्चे भी आते हैं! तीस टिकट तुम्हारे लिए बहुत हैं।"

सेक्रेटरी को जैसे बिच्छू काट खाता। इस नव-आविष्कृत घुन की छान-बीन करके वह उल्टे पांव घर की ओर लपकता। लेकिन उसकी जगह खाली होते ही तुरन्त कोई अन्य कुटिलता का पुतला वहां आ मौजूद होता।

"इसका क्या मतलब है, कामरेड? हमारे यहां पचास कोमसोमोल हैं, और आपने केवल पन्द्रह टिकट हमारे लिए भेजे हैं।"

"मिश्रित टुकड़ी 'छ-पी' की रिपोर्ट के मुताबिक़ पिछली बार

जो कोमसोमोल आए थे, उनमें केवल पन्द्रह ही होश-हवास के साथ थे। इनमें चार वृद्ध स्त्रियां थीं, बाक़ी सब नशे में धुत्त थे।"

"बिलकुल नहीं। जिस किसी ने भी यह कहा है कि वे नशे में धुत्त थे, झूठ कहा है। हमारे सदस्य दारू खींचने की भट्ठी में काम करते हैं, और यह स्वाभाविक है कि उनके बदन से गंध आए..."

"हमने उनकी जांच की थी, उनकी सांस से गंध निकल रही थी। भट्ठी के माथे इसका दोष मढ़ना बेकार है।"

"मैं उन्हें आपके पास ले आऊंगा, आप खुद देख लेना। उनमें से हमेशा ही गंध आती है और आप दोष निकालने की कोशिश कर रहे हैं, अपने मन से गढ़कर कह रहे हैं। यह भला कहां की नीति है?"

"ज़्यादा बनो नहीं। हमें सदा मालूम हो जाता है कि अपने काम की वजह से उनमें कब गंध आती है, और नशे में धुत्त होने की वजह से कब।"

"अच्छा, भाई, अच्छा। कम से कम पांच टिकट तो और बढ़ा दीजिए। आपको खुद शर्म आनी चाहिए। शहर में दुनिया-भर की लड़कियों को, और अपने मित्रों को आप टिकट देते हैं, और हमारे कोमसोमोलों का नम्बर सबसे बाद में आता है।"

सहसा हमने अनुभव किया कि नाटक हमारे लिए केवल एक दिल बहलाव या मनोरंजन मात्र नहीं है बल्कि कर्त्तव्य है, एक अनिवार्य सामाजिक दायित्व है, जिसे चुकाने से बचा नहीं जा सकता।

हमारी कोमसोमोल ब्यूरो ने पूरी लगन के साथ इसपर विचार किया। अकेले नाटक-मण्डल इतना बोझ अपने कंधों पर नहीं वहन कर सकता था। यह सोचा तक नहीं जा सकता था कि कोई भी शनिवार प्रदर्शन से सूना जाएगा। हर सप्ताह हम एक भिन्न खेल प्रस्तुत करते थे। खेल को दोहराना अपने फरहरे को नीचे गिराना और नियमित आनेवाले अपने निकटतम दर्शकों की संख्या को खराब करना था। नाटक-मण्डल में अनेक विकट समस्याएं सिर उठातीं।

कराबानोव तक पनाह मांगने के लिए चीख उठता:

"पता नहीं, मुझे लद्दू घोड़ा समझा जाता है क्या? पिछले सप्ताह मैं उच्चाधीश पादरी बना, इस सप्ताह सेनापति, और अब तुम मुझे एक छापामार सैनिक बनाना चाहते हो। क्या तुम समझते हो कि मैं

लोहे का बना हूं? हर रात दो-दो बजे तक रिहर्सल चलते हैं, और शनिवार को मेज़ों की उठा-धरी तथा दृश्यों की अदला-बदली में खटना पड़ता है।"

कोवाल, मेज़ के सहारे टिकी अपनी मुट्ठियों पर भार डालते हुए, चिल्लाता:

"तो शायद आप यह चाहते हैं कि आराम करने के लिए नाशपाती के पेड़ के नीचे सोफ़ा लगाया जाए? नहीं, सब करना होगा।"

"सब करना होगा तो इस ढंग से इसका संयोजन करो कि सब काम करें।"

"करेंगे।"

"अच्छी बात है तो – करो।"

"कमाण्डरों की परिषद बुलाओ।"

कमाण्डरों की परिषद में ब्यूरो ने निश्चय किया: "नाटक-मण्डल ख़त्म – हरेक को बिना किसी आनाकानी के योग देना होगा।

परिषद के आदेशों द्वारा मामलों को सूत्रबद्ध करने का उन्हें चाव था। निम्न रूप में उन्होंने इसे निबद्ध किया:

§५

कमाण्डरों की परिषद के प्रस्ताव के मुताबिक़, 'प्रदर्शनों की तैयारी का काम कोलोनी के प्रत्येक सदस्य के लिए अनिवार्य माना जाए। फलस्वरूप मिश्रित दस्तों को 'गुमनाम क़बीले की मुहिम' नामक प्रदर्शन की तैयारी करने के लिए नियत किया गया है...'

इसके बाद मिश्रित दस्तों की सूची दी हुई थी, मानो मामला उच्च कला का नहीं, बल्कि चुकन्दरों की निराई या आलुओं में मिट्टी डालने का था। कला की मिट्टी-पलीद होना उस समय शुरू हुआ जब एक प्रदर्शन विशेष के लिए नाटक-मण्डल की जगह ६–'अ०' टुकड़ी को नियुक्त किया गया जिसमें वेर्शनेव के कमान में अठाईस सदस्य थे।

मिश्रित दस्ते का अर्थ था अनिवार्य उपस्थिति और समय की पाबन्दी, शाम की रिपोर्ट में अपराधियों का नामोल्लेख, कमाण्डर का आदेश, सलामी के साथ बहुत अच्छा कर्त्तव्य-पालन। इस में ज़रा-

सी भी ढिलाई करने पर कमाण्डरों की परिषद या आम सभा में पेशी की जाती कि अमुक ने कोलोनी का अनुशासन भंग किया। परिणाम-स्वरूप दोषी व्यक्ति को मेरे मुंह से फटकार सुननी पड़ती, कुछ अति-रिक्त कामों का भार वहन करना पड़ता या काम से छुट्टी के दिन उसे घर पर गिरफ़्तार रखा जाता।

यह एक वास्तविक सुधार था। आखिर नाटक-मण्डल एक स्वेच्छित संगठन था और इसलिए उसका झुकाव हमेशा कुछ 'अति जनतांत्रिकता' की ओर रहता था। उसकी सदस्यता घटती-बढ़ती रहती थी। इसके अतिरिक्त कला-मण्डल व्यक्तिगत रुचियों तथा दावों का हमेशा युद्ध क्षेत्र बना रहता था। यह बात खास तौर से उस समय दिखाई देती थी जब नाटक का चुनाव तथा भूमिकाओं का वितरण किया जाता था। हमारे नाटक-मण्डल में 'मैं क्या उससे कम हूं' की भावना ने—व्यक्तिगत बराबरी के दावे ने—सिर उठाना शुरू कर दिया था। लेकिन ब्यूरो तथा कमाण्डरों की परिषद के प्रस्ताव को कोलोनी में एक तय हुई चीज़ की भांति माना जाता था, जिसपर सन्देह नहीं किया जा सकता। इस तरह नाटकघर ने भी कोलोनी में अब वहीं स्थान प्राप्त कर लिया जो कि खेतों के काम को, जागीर की मरम्मत को, व्यवस्था तथा घरों के भीतर तथा बाहर की सफ़ाई को प्राप्त था। कोलोनी के इस या उस सदस्य द्वारा प्रदर्शन के सम्बन्ध में किया गया काम, जहां तक कोलोनी के हितों का सम्बन्ध था, कोई विशेष महत्व नहीं रखता था, यह प्रत्येक का कर्त्तव्य था कि वह अपना दायित्व पूरा करे।

कमाण्डरों की रविवासरीय परिषद में नियमित रूप से मैं आगामी शनिवार के लिए खेल तथा सम्बन्धित भूमिकाओं के लिए उपयुक्त दिखाई पड़नेवाले कोलोनी के सदस्यों के सम्भावित नामों की घोषणा करता था। कोलोनी के ये सब सदस्य अविलम्ब ६—'अ०' मिश्रित दस्ते में शामिल कर लिए जाते थे, और उनकी संख्या में से एक को कमाण्डर नियुक्त कर दिया जाता था। बाक़ी सब नाटक सम्बन्धी मिश्रित दस्तों में बंट जाते थे। ये सब दस्ते छ: की संज्ञा धारण करते थे और प्रस्तुत प्रदर्शन के सम्पन्न होने तक कार्य करते थे। ये मिश्रित दस्ते निम्न थे:

६ – 'अ०' – अभिनेता
६ – 'द०' – दर्शक
६ – 'वे०' – वेशभूषा
६ – 'ग०' – गरमाई
६ – 'दृ०' – दृश्यावलि
६ – 'सा०' – साज़-सामान
६ – 'प्र०' – प्रकाश और मंचसज्जा
६ – 'स०' – सफ़ाई
६ – 'ध्व०' – ध्वनि-प्रभाव
६ – 'प०' – पर्दे

साथ ही अगर यह बात भी ध्यान में रखी जाए कि तब तक कोलोनीवासियों की संख्या केवल आठ थी तो यह एकदम साफ़ हो जाएगा कि कोलोनी का एक भी निवासी कभी ख़ाली नहीं छूटता था। और अगर चुने हुए नाटक में पात्रों की संख्या काफ़ी अधिक होती थी तो हमारी शक्तियां एकदम अपर्याप्त सिद्ध होती थीं। मिश्रित दस्तों का संयोजन करते समय, स्वभावत:, कमाण्डरों की परिषद व्यक्तिगत इच्छाओं तथा झुकावों को भरसक ध्यान में रखती थी, लेकिन यह हमेशा सम्भव नहीं होता था। बहुधा ऐसा होता कि कोई एक कोलोनी-वासी पूछता:

"मुझे ६–'अ०' में क्यों नियुक्त किया गया है? अपने जीवन में मैंने कभी अभिनय नहीं किया।"

"तुम दहक़ान की भांति बात कर रहे हो," उसे बताया जाता। "हरेक को किसी न किसी दिन पहली बार अभिनय करना होता है।"

सप्ताह के समूचे दौरान ये मिश्रित दस्ते, ख़ास तौर से उनके कमाण्डर, अपने अवकाश काल में पागलों की भांति कोलोनी में इधर से उधर चक्कर लगाते, यहां तक कि शहर के भी धावे बोलते। बहानों को स्वीकार करना – चाहे वे कितने ही भले क्यों न हों – हमारी प्रथा में शामिल नहीं था। इससे मिश्रित दस्तों के कमाण्डरों को बहुधा कठि-नाइयों का सामना करना पड़ता था। यह सच है कि शहर में हमारे कितने ही मित्र थे, और अनेक हमारे लक्ष्य से सहानुभूति भी रखते

थे। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, चाहे जो भी नाटक हो, उसके लिए उपयुक्त पोशाक प्राप्त करने में हम प्राय: हमेशा सफल हो जाते थे। जब यह असम्भव हो जाता तब ६–'वे०' मिश्रित दस्ता यह जानता था कि पोशाकें कैसे बनाई जाती हैं। हर काल की, और चाहे जितनी भी संख्या में आवश्यकता हो, खुद कोलोनी में उपलब्ध विभिन्न तथा सभी प्रकार की चीज़ों-सामग्रियों से वह पोशाक बना ली जाती थी। इसके अलावा, न केवल उन्हीं चीज़ों को जो कोलोनी की सम्पदा होती थीं बल्कि उन्हें भी जो स्टाफ़ की सम्पत्ति होती थी, हमारे नाटक-दल के लिए पूर्णतया प्रस्तुत समझा जाता था। मिसाल के लिए ६–'दृ०' मिश्रित दस्ते को यह पक्का विश्वास था कि सम्पत्ति को यह संज्ञा इसी लिए दी गई क्योंकि वह स्टाफ़ की सम्पत्ति थी। जैसे-जैसे हमारा उद्योग विकसित होता गया, स्थायी नाटकीय साज़-सामान भी सीमित संख्या में–कोलोनी के भीतर हमारे पास जमा होने लगा। क्योंकि हम बहुधा सैन्य प्रकृति के नाटक पेश करते थे जिनमें गोलियां दाग़ने की ज़रूरत होती थी, इसलिए हमारे पास एक अच्छा-ख़ासा अस्त्रागार जमा हो गया था। साथ ही सभी प्रकार की सैनिक वर्दियां, कंधों के फ़ीते और पदक भी हमारे पास मौजूद थे। धीरे-धीरे विशेषज्ञों का–इनमें केवल अभिनेता ही नहीं होते थे–कोलोनी के समूह के बीच से उदय होना शुरू हो गया। हमारे पास मशीनगनों के बहुत ही शानदार माहिर थे जो खुद अपने आविष्कारों की मदद से बाक़ायदा मशीनगनों की बौछार प्रस्तुत कर लेते थे। उनमें तोपची भी थे जो एकदम इन्द्र के अवतार प्रतीत होते थे, जो अत्यन्त सच्ची गरज और बिजली जैसी कड़क पैदा करना जानते थे।

भूमिकाओं के अध्ययन के लिए एक सप्ताह दिया जाता था। शुरू-शुरू में हम यह क़ायदे से करते थे–भूमिकाओं को कापी में उतारते और उन्हें ज़बानी याद करते थे–लेकिन शीघ्र ही हमने इसे छोड़ दिया। दोनों में से किसी के लिए भी अब समय नहीं मिलता था–न नक़ल उतारने के लिए, और न ज़बानी याद करने के लिए। आखिर हमें कोलोनी में अपना नित्य का काम भी तो करना होता था, स्कूल जाना होता था, और पाठ याद करने का स्थान तो सबसे पहले था। इसलिए नाटक जगत की तमाम परिपाटियों को ताक़ पर रख

हमने पूर्णतया प्रौम्पटर का सहारा लिया, और ऐसा करके हमने अच्छा ही किया। कोलोनी के सदस्य प्रौम्पटर के मुंह से निकले अपने शब्दों को पकड़ने में दक्ष हो गए। यहां तक कि व्यक्तिगत क्षेपकों तथा मंच पर सभी प्रकार की मनमानियों के विरुद्ध संघर्ष करने के मोह का भी हम संवरण न करते, लेकिन प्रदर्शनों के निर्विघ्न संचालन के लिए यह ज़रूरी था कि प्रस्तुतकर्त्ता के रूप में अपने कर्त्तव्यों के साथ-साथ प्रौम्पटर के कर्त्तव्यों को भी शामिल कर लिया जाए। फलस्वरूप मेरा कार्य केवल प्रौम्पट करना ही नहीं, बल्कि मंच पर जो कुछ होता था, उसका निर्देशन करना भी था। इस बात का ध्यान रखना कि मंच पर हर चीज़ सही ढंग से पेश हो, ग़लतियों को बताना, गोलियों के छूटने, आलिंगन और मौत के क्षणों का निर्देश देना भी इसमें सम्मिलित था।

अभिनेताओं की तंगी ने हमें कभी परेशान नहीं किया। कोलोनी-वासियों में अनेक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। प्योत्र इवानोविच गोरोविच, क़राबानोव, वेत्कोवस्की, बुत्साई, वेर्शनेव, ज़दोरोव, मारूस्या लेवचेन्को, कुदलाती, कोवाल, ग्लेइसर और लापोत हमारे मंजे हुए अभिनेता थे।

हम ऐसे नाटकों को चुनने का प्रयत्न करते थे जिनके पात्रों की सूची लम्बी होती थी। कारण कोलोनीवासी काफ़ी तादाद में अभिनय करना चाहते थे, और हमें भी इस बात की लगन थी कि मंच पर स्वाभाविकता के साथ व्यवहार करनेवाले व्यक्तियों की संख्या बढ़े। नाटक को मैं भारी महत्व प्रदान करता था। इसके माध्यम से कोलोनीवासियों के बोलने का ढंग बहुत सुधर गया था, और उनके दृष्टि-क्षेत्र का विस्तार हुआ था। लेकिन कभी-कभी ऐसा होता था कि अभिनेता कम पड़ जाते, और तब सहायता के लिए हम स्टाफ़ के सदस्यों का आह्वान करते। एक बार तो हमने सिलान्ती तक को मंच पर खड़ा कर दिया। रिहर्सलों में वह केवल एक उदासीन अभिनेता ही सिद्ध हुआ, लेकिन क्योंकि उसे एकमात्र वाक्य का उच्चारण करना था: "गाड़ी तीन घंटा लेट जाएगी," इसलिए कुछ ज़्यादा गड़बड़ का अन्देशा नहीं था। लेकिन वास्तविकता ने हमारी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया।

सिलान्ती ठीक मौक़े से मंच पर प्रकट हुआ, और सब कुछ ठीक-

ठाक मालूम होता था, लेकिन उसने जो कहा वह यह था: "पर जो गाड़ी है न, आप तो जानते ही हैं तीन घंटे लेट है, और जो है सो यह बात है।"

इस कथन ने श्रोताओं पर असाधारण प्रभाव डाला, लेकिन यह कुछ नहीं, स्टेशन पर इन्तज़ार करते शरणार्थियों की भीड़ पर उसने जो प्रभाव डाला वह और भी ज़्यादा ज़ोरदार था। वे अत्यन्त निराश से मंच पर इधर से उधर मटरगश्ती कर रहे थे, प्रौम्पटर के बौक्स से मेरी मनुहारों का उनपर क़तई असर नहीं हो रहा था, इसलिए मैं ख़ुद भी प्रत्यक्षत: उद्वेगरहित नहीं था। सिलान्ती ने कुछ क्षणों तक इन सब हरकतों को देखा, और इसके बाद उसका पारा गरम हो उठा।

"तुमसे कहा न, बछिया के पूतो, तुमसे। यह जो गाड़ी है सो तीन घण्टे लेट आएगी, इसमें हंसने की ऐसी क्या बात है?"

शरणार्थियों ने मगन भाव से सिलान्ती की बात को सुना, और इसके बाद भगदड़ में मंच से नौ दो ग्यारह हो गए।

मैं अब चेता और फुसफुसाया:

"यह क्या तमाशा बना रखा है। सिलान्ती, तुम भी दफ़ा हो यहां से।"

"ओह, आप जानो ..."

मैंने पुस्तक को छोर के बल खड़ा किया, यह इस बात का सूचक था कि परदा गिराया जाए।

अभिनेत्रियों को पाना कठिन था। लेवचेन्को और नास्त्या नो-चेवनाया अपने एक ढंग का अभिनय कर सकती थीं, लेकिन लि-दोच्का के सिवा स्टाफ़ में से अन्य कोई पकड़ में नहीं आती थीं। फिर ये स्त्रियां मंच के लिए नहीं बनी थीं। वे ज़रूरत से ज़्यादा शर्मीली थीं, आलिंगन व चुम्बन में योग देने से साफ़ इनकार कर देती थीं, उस समय भी जब कि नाटक में इनका होना एकदम ज़रूरी था। और बिना प्रेमियों के नाटक सधता नहीं था। अभिनेत्रियों की अपनी खोज के दौरान हमने सबकी पत्नियों, बहिनों, चाचियों और अपने स्टाफ़ की अन्य रिश्तेदारनियों की परीक्षा की। मिलवालों को खटखटाया शहर में अपने मित्रों से हाथ बंटाने के लिए कहा, लेकिन तब भी इस ओर से कभी निश्चिन्त न हो सके। सो ओक्साना तथा राखिल

जब कोलोनी में आई तो उसके अगले दिन ही वे रिहर्सलों में हिस्सा लेती भी दिखाई देने लगीं। बिना किसी परेशानी के चुम्बन लेने की अपनी क्षमता से उन्होंने सभी को मुग्ध कर लिया।

एक बार हमने ऐसे ही संयोगवश आई एक स्त्री को दर्शक में से पकड़ लिया। वह मिलवाले की परिचिता थी और उससे शहर से मिलने-जुलने आई थी। वह एक अच्छी निधि सिद्ध हुई : उसका सौन्दर्य, उसकी कोमल समृद्ध आवाज़, उसकी आंखें, उस का अन्दाज़, उसमें वे सभी चीज़ें मौजूद थीं जो एक क्रान्तिकारी नाटक में एक चरित्रहीन कुलीन पात्री में होनी चाहिए। रिहर्सलों में हम ख़ुशी और पहली ही रात शानदार सफलता पाने की आशा से उल्लसित हो उठे। अत्यधिक उत्साह के साथ प्रदर्शन शुरू हुआ, लेकिन पहले मध्यान्तर के बाद हमारी निधि का पति जो रेल्वे तार-आपरेटर का काम करता था, मंच के पिछवाड़े से आया और सारी मण्डली के सामने अपनी पत्नी से बोला : "मैं तुम्हें इस नाटक में अभिनय नहीं करने दे सकता। चलो, घर चलो।"

निधि निराशा से फ़ुसफुसाई :

"यह कैसे हो सकता है? नाटक का क्या होगा?"

"नाटक से मुझे क्या मतलब, बस चली चलो। मैं अपनी पत्नी के साथ चाहे जिसके द्वारा मंच पर चूमा-चाटी और खींचातानी होते नहीं देख सकता।"

"नहीं, भला यह कैसे हो सकता है?"

"अकेले पहले अंक में ही तुम्हें दस बार चूमा गया है। यह घृणास्पद है।"

शुरू-शुरू में तो हम एकदम हक्के-बक्के-से हो गए। लेकिन बाद में हमने ईर्ष्या से ग्रस्त पति को समझाने का प्रयत्न किया।

"लेकिन, कामरेड, मंच पर चुम्बन का कोई अर्थ ही नहीं होता," कराबानोव ने कहा।

"कुछ अर्थ होता है या नहीं, यह मैं ख़ुद देख सकता हूं। क्या तुम मुझे अंधा समझते हो? मैं पहली पंक्ति में ही बैठा था।"

मैंने लापोत को सम्बोधित किया।

"तुम चतुर आदमी हो। जैसे भी हो, इन महाशय को समझाने का प्रयत्न करो।"

लापोत ने पूर्ण चतुराई के साथ इस काम में हाथ लगाया। ईर्ष्यालु पति के बटन को उसने अपने हाथ में लिया, एक बेंच पर उसे बैठाया, और दुलार के साथ उसके कानों में फुसफुसाने लगा।

"आप भी मज़ेदार आदमी हैं। और फिर देखिये कितना उपयोगी, सांस्कृतिक, उद्देश्य है यह। अगर इतने अच्छे लक्ष्य के लिए तुम्हारी पत्नी किसी को चूमती भी है तो उसका परिणाम भले के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता।"

"हो सकता है कि यह अन्य किसी के लिए भला हो, लेकिन मेरे लिए तो ज़रा भी उचित नहीं है," तार-आपरेटर ने बल दिया।

"लेकिन इसमें तो हर किसी का भला है।"

"तब तो, तुम्हारे कथनानुसार, मेरी पत्नी को कोई भी चूम सकता है।"

"अजीब हैं आप भी। यह उससे तो अच्छा है कि वह किसी अन्य रसिक व्यक्ति के साथ ऐसा करे।"

"रसिक व्यक्ति क्या?"

"यह अप्रत्याशित घटना नहीं है। और फिर, ज़रा आप ही सोचिए। यहां वह सब के सामने करती है, और आप स्वयं भी इसे देखते हों। यह और भी बुरा होगा यदि वह किसी झाड़ी की ओट में आपको ज़रा भी ख़बर लगे बिना ऐसा करे।"

"वह ऐसा नहीं करेगी।"

"क्या सचमुच? तुम्हारी पत्नी बहुत सुन्दर ढंग से चुम्बन लेना जानती है। क्या तुम समझते हो कि अपनी इस प्रतिभा को वह यों ही बेकार जाने देगी? अच्छा यही है कि वह मंच पर इसका उपयोग करे ..."

पति बड़ी कठिनाई के साथ लापोत के तर्कों के आगे सिर झुकाने को तैयार हुआ और दांतों को भींचते हुए उसने अपनी पत्नी को नाटक ख़त्म करने की अनुमति दी। एकमात्र इस शर्त पर कि चुम्बन 'वास्तविक' न हो। झेंप से भरा हुआ वह वहां से चला गया। निधि विचलित थी। हम आशंकित थे कि कहीं प्रदर्शन का सत्यानाश न हो जाए। पति आगेवाली पंक्ति में बैठा अजगर की भांति ऐसे ताक रहा था जैसे सब को लील जाएगा। मातमी वातावरण में दूसरा अंक शुरू हुआ।

लेकिन तीसरे अंक के शुरू होने तक उसे अगली पंक्ति से ग़ायब देख सभी को ख़ुशी हुई। पता नहीं, कहां चला गया था वह। केवल प्रदर्शन के बाद ही इसका रहस्य खुला।

"मैंने उसे खिसक जाने की सलाह दी थी," कराबानोव ने सकुचाते हुए कहा। "शुरू में तो वह जाने को तैयार नहीं हुआ, लेकिन फिर सहमत हो गया।"

"तुम ने यह जादू कैसे किया?"

कराबानोव की आंखों में चमक दौड़ गई, शैतानी अन्दाज़ में अपनी दंतपंक्ति को उसने चमकाया, और बोला :

"सुनो। अच्छा यही है कि हम में समझौता हो जाए। आज तो सब कुछ ठीक हो ही जाएगा। लेकिन अगर आप तुरन्त नहीं जाते, तो मैं कोलोनी की क़सम खाकर कहता हूं, हम आपको मैना बनाकर छोड़ेंगे। हमारे यहां ऐसे-ऐसे मौजी लड़के हैं कि आपकी पत्नी उनका लोभ संवरण नहीं कर सकती।"

"फिर क्या हुआ?" अभिनेताओं ने ख़ुशी से उमड़ते हुए पूछा।

"फिर क्या। उसने केवल इतना कहा : 'अच्छी बात है। लेकिन अपने वायदे का ध्यान रखना,' और आख़िरी पंक्ति में चला गया।"

प्रतिदिन रिहर्सल होते थे, और सारा नाटक दोहराया जाता था। हम नियमित रूप से पूरी नींद नहीं ले पाते थे। यहां यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे कितने ही अभिनेता अभी तक इस स्थिति में नहीं थे कि मंच पर ठीक ढंग से इधर से उधर तक भी जा सकें। इसलिए सम्पूर्ण प्रसंगों को हमें ज़बानी याद करना होता था, हाथ या पांव की एक-एक हरकत से लेकर सिर की प्रत्येक मुद्रा, प्रत्येक नज़र, और प्रत्येक मोड़ तक। इन्हीं सब पर मैं अपना ध्यान केन्द्रित करता था, और बोलों के लिए प्रौम्पटर पर भरोसा रखता था कि यह काम तो वह जैसे-तैसे कर ही लेगा। शनिवार की संध्या तक नाटक की तैयारी पूरी हुई समझी जाती थी।

लेकिन, सब कुछ होते हुए भी, यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारा अभिनय कुछ बुरा नहीं होता था। शहर के बहुत से लोग हमारे प्रदर्शनों से ख़ूब ख़ुश थे। अभिनय करते समय हम कला का ध्यान रखने का प्रयत्न करते थे। अतिरंजन, या जनता की रुचि का अनुसरण,

या सस्ती सफलता के प्रयासों से हम बचते थे। हम उक्राइनी और रूसी नाटकों को पेश करते थे।

शनिवारों को नाटकघर के आस-पास दो बजे से चहल-पहल शुरू हो जाती थी। अगर नाटक में पात्रों की संख्या ज़्यादा होती थी तो बुत्साई, प्योत्र इवानोविच की मदद से, भोजन के बाद ही उनकी साज-सज्जा का काम शुरू कर देता था। दो से लेकर रात के आठ बजे तक और भी कुछ नहीं तो वे साठ जनों को तैयार कर लेते थे, और इसके बाद अपने को तैयार करते थे।

प्रदर्शन के लिए साज़-सामग्री लाने में कोलोनीवासी मानव से अधिक जंगली दरिन्दों की भांति पेश आते थे। अगर मंच पर नीले शेड से युक्त लैम्प की ज़रूरत होती तो वे न केवल स्टाफ़ के लोगों के कमरों में ही धावा मारते, बल्कि शहर में मित्रों के कमरों को भी न बख़्शते थे, और नीले शेड से युक्त लैम्प निश्चय ही हाज़िर हो जाता। अगर उन्हें मंच पर ब्यालू करना होता था तो यह ज़रूरी था कि ब्यालू असली हो। इसमें कोई आनाकानी नहीं चलती थी। इसके लिए केवल ६–'सा०' मिश्रित टुकड़ी से ही पूर्ण सुचारुता की मांग की जाती थी, यही इस परम्परा का भी तक़ाज़ा था। मंच पर नक़ली तश्तरियों से ब्यालू करना हमारे अभिनेताओं को कोलोनी की शान के खिलाफ़ मालूम होता था, हमारी रसोई को, इसलिए, कभी-कभी काफ़ी कठिन कामों का सामना करना पड़ता था – भांति-भांति के व्यंजनों, मालपूओं, मीठी रोटियों आदि को तैयार करना होता था। मदिरा की जगह हम सेब की शराब इस्तेमाल करते थे।

भोजन के दृश्य के दौरान प्रौम्पटर के बौक्स में खड़ा मैं हमेशा झल्ला उठता था। ऐसे क्षणों में अपनी भूमिका में अभिनेता इतने लीन हो जाते थे कि प्रौम्पटर की एक भी नहीं सुनते थे, और जब तक मेज़ एकदम साफ़ नहीं हो जाती थी, दृश्य को लम्बा खींच ले जाते थे। दृश्य को जल्दी से सम्पन्न कराने के लिए आम तौर से मैं इस तरह की टिप्पणियों का सहारा लेने के लिए बाध्य होता था:

"बस भी करो। क्या सुनाई नहीं देता? खाना बन्द करो, कम्बख़्तो।"

अभिनेता आश्चर्य के साथ मेरी ओर देखते, अपनी आंखों से

अध-खाए बत्तख़ की ओर इशारा करते, और केवल तभी मेज़ से हटने का नाम लेते जब मैं, गुस्से से भन्ना कर फुंकारता :

"करावानोव, मेज़ से उठो। सेम्योन, शैतान की दुम, कहो : 'मैं चला।'"

करावानोव उतावली के साथ अध-चबे भारी-भरकम बत्तख़ के निवाले को गटकता, और कहता :

"मैं चला।"

और फिर अवकाश के दौरान मुझे झिड़का जाता।

"अन्तोन सेम्योनोविच, यह आप कैसे कर सके? ऐसे बत्तख़ को खाने का अवसर क्या रोज़-रोज़ मिलता है? और आप हैं कि उसे ख़त्म तक नहीं करने देते..."

लेकिन अक्सर अभिनेता मंच पर – जहां उतनी ही ठंड होती थी जितनी कि बाहर – ज़रूरत से ज़्यादा देर तक टिकने के लिए व्यग्र नहीं रहते थे।

'मशीनों का उपद्रव' नामक नाटक में, सिवा एक लंगोटी के बदन पर और कुछ नहीं पहने, करावानोव को पूरे एक घंटे तक मंच पर रुकना था। प्रदर्शन फरवरी के महीने में हुआ था। हमारे दुर्भाग्य से तापमान कभी-कभी शून्य से भी तीस डिग्री * नीचे तक गिर जाता था। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना का अनुरोध था कि इसका प्रदर्शन किया ही न जाए। उसने आशंका प्रकट की कि अन्यथा सेम्योन की पांव की उंगलियां निश्चित रूप से जाम हो जायेंगी। पर फिर अंक के बाद उन्हें गरमाने के लिए येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने किसी तरल मिश्रण से उनमें मालिश कर दी।

लेकिन ठंडक, कभी-कभी, हमारे कलात्मक विकास के मार्ग में बाधक होती थी। हम 'कामरेड सेमिवृज़्वोदनी' नामक नाटक पेश कर रहे थे। किसी ज़मींदार के बग़ीचे का एक दृश्य था जिसमें एक बुत की भी कल्पना की जाती थी। ६–'सा०' मिश्रित दस्ता, शहर के सारे क़ब्रिस्तानों की टोह लेने के बाद भी कोई बुत नहीं खोज सकी। सो तय हुआ कि बिना बुत के ही काम चलाया जाए। लेकिन जब परदा

---

* फारनहाइट – २२° – सं०

उठा तो बुत को सामने देख मैं चकित रह गया। पाउडर की गहरी पेत जमाए, चादर लपेटे, एक स्टूल ऊपर खड़ा शेलापूतिन धूर्तता के साथ मेरी ओर देख रहा था। मैंने परदे को नीचे कराया और '६–सा०' मिश्रित दस्ते को अत्यधिक निराश करते हुए बुत को मंच पर से खदेड़ दिया।

६–'ध्व०' मिश्रित दस्ते के प्रयास सजग और सूझ-बूझपूर्ण होते थे। हम 'आज़ेफ़' नामक नाटक प्रस्तुत कर रहे थे। साज़ोनोव को प्लेवे पर एक बम फेंकना था। बम विस्फोट भी होना था। ६–"ध्व' मिश्रित दस्ते के कमाण्डर ओसाद्ची ने घोषित किया:

"हम इसे वास्तविक विस्फोट बनाएंगे।"

प्लेवे का अभिनय मैं ख़ुद कर रहा था, इसलिए इस प्रश्न में मेरी दिलचस्पी जितनी अधिक थी, उतनी अन्य किसी की नहीं थी।

"'वास्तविक' क्या, क्या मतलब है तुम्हारा?" मैंने पूछा।

"ऐसा कि जिससे नाटकघर की चिन्दियां उड़ने लगें।"

"लेकिन यह कुछ ज़्यादा भारी तो नहीं पड़ेगा?" मैंने सतर्कता के साथ कहा।

"सब ठीक रहेगा," ओसाद्ची ने मुझे विश्वास दिलाया। "अन्त में सब ठीक-ठाक रहेगा।"

विस्फोटवाले दृश्य से पहले ओसाद्ची ने मुझे अपनी तैयारियां दिखाईं, पांखों के अगले हिस्से में कई ख़ाली नांदें रखी थीं, प्रत्येक नांद की बग़ल में दोनाली बन्दूकों के साथ एक-एक कोलोनीवासी खड़ा था। बन्दूक़ों में बारूद भरी थी जो एक हाथी को मारने के लिए काफ़ी थी। मंच के दूसरी ओर फ़र्श पर कांच के टुकड़े बिखरे हुए थे, और हाथ में ईंट लिये एक कोलोनीवासी प्रत्येक टुकड़े के पास खड़ा था। तीसरी ओर मंच के प्रवेशद्वार के सामने अपने आगे जली हुई मोमबत्तियां रखे आधा दरजन के क़रीब लड़के नियत थे और अपने हाथों में किसी तरल पदार्थ से भरी बोतलें लिए हुए थे।

"यह मातमी तामझाम किसलिए?" मैंने पूछा।

"यही तो मुख्य चीज़ है। इन लड़कों के हाथ में केरासीन की बोतलें हैं। ठीक समय पर ये केरासीन अपने मुंह से भर लेंगे और मोमबत्तियों पर उसकी फुहार छोड़ेंगे। बहुत शानदार रहेगा।"

"तुम्हें शैतान उठा ले जाए। अगर आग लग गई तो?"

"कोई चिन्ता न करें। बस, इसका ध्यान रखें कि केरासीन आपकी आंखों में न जाने पाए। अगर आग लगी तो उसे हम बुझा लेंगे।"

उसने कोलोनीवासियों की एक अन्य पांत की ओर इशारा किया जिनके पांवों के पास पानी से भरी बाल्टियां रखी थीं।

इन तैयारियों से सच्ची गम्भीरता के साथ, मैंने अभागे सेक्रेटरी की चेतना का अनुभव करना शुरू किया, आसन्न विनाश की चेतना का। पूरी गम्भीरता के साथ मैंने अपने आप से कहा कि चूंकि व्यक्तिगत रूप में प्लेवे के सारे जुर्मों के लिए मैं जवाबदेह नहीं हूं, इसलिए– अगर बहुत ही बुरा होते देखूंगा तो मुझे श्रोताओं के बीच से निकल भागने का अधिकार होगा। ओसाद्‌ची के सचेत उत्साह को मैंने एक बार फिर मुलायम करने का प्रयास किया।

"लेकिन क्या केरासीन को पानी से बुझाया जा सकता है?" मैंने पूछा।

ओसाद्‌ची मात नहीं खा सकता था। मामले के इन सभी पहलुओं को वह जानता था और अत्यन्त विद्वतापूर्वक उन्हें समझा सकता था।

"जब मोमबत्ती की लौ पर केरासीन की फुहार छोड़ी जाती है तो वह गैस में परिवर्तित हो जाती है, और उसे बुझाने की आवश्यकता नहीं रहती। अन्य चीज़ों को बुझाना पड़ सकता है।"

"मिसाल के लिए, मुझे?"

"आपको हम सबसे पहले बुझाएंगे।"

मैंने अपने आपको भाग्य के भरोसे छोड़ दिया। अगर मैं जलकर न भी मरा तो कम-से-कम ठंडे पानी की बौछार तो सहनी ही पड़ेगी, सो भी शून्य से क़रीब बीस डिग्री नीचे के इस तापमान में। लेकिन समूचे ६–'ध्व०' दस्ते के सामने जिसने विस्फोट की अपनी तैयारियों में इतनी शक्ति और इतनी सूझ-बूझ लगाई थी, अपनी भीरुता का परिचय मैं भला कैसे दे सकता था?

जब साज़ोनोव ने बम फेंका तो मुझे एक बार फिर प्लेवे के चोले में समाने का अवसर मिल गया। मुझे उससे ईर्ष्या का अनुभव नहीं हुआ। शिकार की बन्दूकें नांदों पर दग़ीं, नांदें कांपीं और उनकी पेंदियां तथा मेरे कानों के परदे फटे, ईंटें भयानक शक्ति के साथ कांच के

ऊपर गिरीं, पांच या छः मुंहों ने — अपने युवा फेफड़ों की समूची शक्ति से — मोमबत्तियों की लौ पर केरासीन की फुहार छोड़ी, और सारा मंच दमघोट लपटों का चक्रवात बन गया। मैं अगर चाहता भी तो ख़ुद अपनी मौत का अभिनय बुरा नहीं कर सकता था। कान-फोड़ करतल-ध्वनियों तथा ६—'ध्व०' मिश्रित दस्ते की उत्साह किलकारियों के बीच मैं क़रीब-क़रीब अचेत होकर फ़र्श पर गिर पड़ा। ऊपर से काली, चिकनी, केरासीन की राख मुझपर आ गिरी। परदा खिंचा, हाथ से सहारा देते हुए ओसाद्ची ने मुझे उठाया और उद्विग्नता से पूछा :

"कहीं जले तो नहीं?"

मेरा शरीर तो नहीं, पर मेरा दिल जल रहा था, लेकिन इस सम्बन्ध में मैंने किसी से कुछ कहा नहीं। कौन जाने, ६—'ध्व०' मिश्रित दस्ते ने इस तरह की घटना के लिए क्या तैयारी कर छोड़ी थी।

इसी तरह हमने एक जहाज़ को भी उड़ाया था जबकि वह अपने एक दुर्भाग्यपूर्ण अभियान के दौरान सोवियत संघ के क्रान्तिकारी तटों की ओर जा रहा था। इस घटना के यांत्रिक प्रसाधन और भी पेचीदा थे। न केवल जहाज़ के प्रत्येक छेद और खिड़की में से लपटों को निकलता दिखाना आवश्यक था, बल्कि यह दिखाना भी ज़रूरी था कि जहाज़ सचमुच हवा में टुकड़े-टुकड़े हो गया है। इस उद्देश्य के लिए कुछ कोलोनीवासी जहाज़ की दूसरी ओर जा खड़े हुए, और उन्होंने तख़्ते, कुर्सियों तथा स्टूलों को हवा में उछाला। जाने कैसे, अपने सिरों को इन पदार्थों से बचाने में उन्होंने सफलता प्राप्त की। लेकिन कप्तान प्योत्र इवानोविच इतना भाग्यशाली सिद्ध नहीं हुआ, उसकी आस्तीनों की सुनहरी काग़जी बेल में आग लग गई, और गिरती हुई मेज़-कुर्सियों ने उसे बुरी तरह नोच-खरोंच डाला। लेकिन यह सब होने पर भी उसने कोई शिकवा-शिकायत नहीं की, बल्कि उसकी हंसी ख़त्म होने तक हमें आध घंटा रुकना पड़ा। तब कहीं जाकर हम यह निश्चयपूर्वक जान सके कि कप्तान के सारे अंग सही-सलामत हैं।

कुछ भूमिकाएं ऐसी भी थीं जिनका अभिनय करना हमारे लिए कठिन था। मिसाल के लिए कोलोनी के वासी 'मंच से परे' गोली

मारना अस्वीकार करते थे। अगर आपको गोली मारी जानी है, तो आपको कठिन परीक्षा के लिए अपने-आपको तैयार कर लेना चाहिए। आपकी हत्या के लिए, आम तौर पर एक मामूली रिवाल्वर से काम लिया जाता था, गोली मारी जानी है, तो आपको कठिन परीक्षा के लिए अपने-आपको तैयार कर लेना चाहिए। गोली कारतूसों से निकाल ली जाती थी और सारी ख़ाली जगह सन तथा डट्टों से भर दी जाती थी। ऐन मौक़े पर आप पर उसकी बौछार होती और निशाने बाज़ अपनी भूमिका के आवेग में निश्चित रूप से आपकी आंखों पर अपना निशाना साधता। अगर कई गोलियां दाग़नी होतीं तो आपकी ख़ातिर रिवाल्वर के सब कारतूसों को इसी शैतानी ढंग से भर लिया जाता।

श्रोतागण हम से अच्छी स्थिति में थे। वे गर्म कोटों में बैठ सकते थे, हाल में जगह-जगह अंगीठियां रखी होती थीं। अगर कोई पाबन्दी थी तो वह केवल सूरजमुखी के बीजों को कुतरने तथा नशे में धुत्त होकर नाटकघर में आने पर थी। पुरानी परम्परा के अनुसार अगर किसी नागरिक से अत्यन्त बारीक जांच-पड़ताल के बाद दारू की नाम मात्र को भी गंध आ रही होती तो उसे नशे में धुत्त समझा जाता था। कोलोनी के निवासी इस गंध से या इस गंध के आभास मात्र से व्यक्ति को सैकड़ों दर्शकों के बीच से खोज निकालने की क्षमता रखते थे। इससे भी अधिक उन्हें उनकी जगहों से खींचकर लाने तथा अपमान और निर्ममता के साथ अत्यन्त संगत विरोधों की अवहेलना करते हुए, उन्हें, नाटकघर से बाहर निकालने की क्षमता रखते थे। वे प्रतिरोध करते रह जाते:

"सच मानो, सुबह से एक मग बीयर के सिवा अन्य किसी चीज़ को मैंने नहीं छुआ।"

प्रस्तुतकर्त्ता होने के नाते मुझे और भी अधिक मुसीबतों को सहना पड़ता था: प्रदर्शनों के दौरान भी और उनसे पहले भी। उदाहरण के लिए एक फिकरा था जिसे कुदलाती हर बार कसता था, उपहास की दृष्टि से।

कोलोनी के निवासी गोगोल कृत 'इन्स्पैक्टर जनरल' का अभिनय करते थे, लेकिन प्रदर्शन का अन्त होने से पहले वे मुझे ग़ुस्से से पागल

बना देते थे। कारण, मेरी सबल स्नायुओं के लिए भी वह समय असह्य हो उठता जब अन्तिम अंक में. मेरे साथी अभिनेता मुझे अन्तोन सेम्योनोविच कहकर सम्बोधित करते, जब कि मैं गवर्नर अन्तोन अन्तोनोविच की भूमिका का निर्वाह कर रहा होता था। उनके बदले हुए रूप में दृश्य इस प्रकार चलता था :

अमोस फ़्योदोरोविच : "क्या यह सच है, अन्तोन सेम्योनोविच ? क्या सचमुच असाधारण सौभाग्य आपके हाथ लग गया है ?"

आर्तेमी फ़िलिप्पोविच : "इतने असाधारण सौभाग्य की प्राप्ति पर अन्तोन सेम्योनोविच को बधाई देते हुए मैं सम्मान का अनुभव कर रहा हूं। जब मैंने इनके बारे में सुना तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।"

रास्ताकोवस्की : "अन्तोन सेम्योनोविच, मैं आपको बधाई देता हूं। परमात्मा आपको और युवा दम्पति को दीर्घ जीवन तथा अनगिनत सन्तानें, पोते, पड़पोते प्रदान करे।"

कोरोबकिन : "मैं अन्तोन सेम्योनोविच को बधाई देते हुए सम्मान का अनुभव करता हूं।"

और इसका सब से बुरा पहलू तो यह था कि मंच पर, गवर्नर की वेशभूषा में होने के कारण इन राक्षसों को ठीक करने का मेरे पास उपाय नहीं था। नाटक के अन्तिम दृश्य की समाप्ति पर मंच के पार्श्व में पहुंचने के बाद ही मैं उनपर अपना क्रोध उतार सकता था।

"बुरा हो तुम्हारा, यह सब क्या है ? क्या तुम मुझे बेवक़ूफ़ बना रहे थे ? क्या यह सब तुमने जान-बूझकर किया था ?"

सब चकित चेहरे लिए मेरी ओर ताकते और पोस्टमास्टर का अभिनय कर रहा ज़दोरोव पूछने लगता :

"बात क्या है ? हुआ क्या ? सब इतना अच्छा तो था।"

"तुमने मुझे अन्तोन सेम्योनोविच कहकर क्यों सम्बोधित किया ?"

"तो फिर क्या कहकर हमें ... सो हमने किया ... ओह, कम्बख़्त ... गवर्नर का नाम है अन्तोन अन्तोनोविच, हां, यही उसका नाम है।"

"रिहर्सलों में तो तुमने मुझे ठीक सम्बोधित किया था।"

"ओह, क्या परेशानी है ... वे रिहर्सल थे, और मंच पर जाने क्या होता है कि दिमाग़ चकरा जाता है ..."

५. कुलक शिक्षा

छब्बीस मार्च को हम ने मक्सिम गोर्की के जन्म-दिवस का समारोह आयोजित किया। हम अन्य समारोह भी मनाते थे। हम कोशिश करते थे कि हमारे समारोहों में ख़ूब लोग आएं, हमारी मेज़ें ख़ूब भरी-पूरी रहें। यह मानना पड़ेगा कि कोलोनी के निवासी समारोह मनाने में, ख़ास तौर से समारोहों की तैयारी करने में बहुत आनन्द लेते थे। गोर्की के जन्म दिवस का हमारे लिए एक विशेष आकर्षण था। उस दिन हम वसन्त के आगमन का स्वागत करते थे। यह तो ख़ैर एक बात हुई। कभी-कभी ऐसा होता कि लड़के मेज़ें सजाते – निश्चय ही खुले में – जिससे हम सब एक साथ बैठ सकें और मज़े से दावत उड़ा सकें। तभी अचानक उत्तर-पूर्व की ओर से हवा का एक जानमार झोंका आता, ओलों की एक तेज़ निर्मम बौछार पड़ती, अहाते में पानी के गड्ढे बन जाते और हमारे समारोहों के सम्मान में झंडे की सलामी के लिए तत्पर ढोल नरम पड़ जाते। यह सब कुछ होने पर भी कोलोनी का कोई निवासी आंख मिचमिचाकर हुए उत्तर-पूर्व की ओर देखते हुए कहता: "ओह, वसन्त की कितनी भीनी गंध से सराबोर है यह।"

गोर्की सम्बन्धी हमारे समारोहों की एक विशेषता ऐसी थी जिसका ख़ुद हमने आविष्कार किया था और जिसपर हमें अपरिमित गर्व तथा उत्साह था। कोलोनी के निवासियों ने यह तो बहुत पहले से तय किया था कि उस दिन 'हम अपनी पूरी शक्ति' से समारोह मनाएंगे, बाहर के एक भी आदमी को हम नहीं बुलाएंगे। अगर कोई अपने मन से टपकेगा तो उसका स्वागत होगा, केवल इसलिए कि वह ख़ुद अपनी प्रेरणा से आया है। वैसे यह एक पारिवारिक समारोह था जिसमें बाहर के लोगों के लिए कोई स्थान नहीं था। हर चीज़ हमेशा बहुत ही सादगी और अपनत्व से पूर्ण होती थी, गोर्की के अनुचरों को और भी घनिष्ठ सूत्र में गूंथनेवाली। हालांकि ख़ुद समारोह के रूप का जहां तक सम्बन्ध था, उसमें घरेलूपन कुछ नहीं होता था। परेड से हम शुरू करते, विधिपूर्वक झंडे को बाहर लाते, भाषण दिए जाते, और इसके बाद गोर्की के चित्र के सामने से विधिपूर्वक मार्च-पास्ट करते।

फिर हम मेज़ पर बैठते – और झूठी विनम्रता में क्यों पड़ा जाए – गोर्की के स्वास्थ्य की कामना में... गिलास तो हम नहीं टकराते, लेकिन खाते ज़रूर थे, और सो भी कैसे! कालीना इवानोविच मेज़ पर से उठते हुए कहता:

"मैं अब देखता हूं कि पूंजीपतियों पर हम व्यर्थ दोषारोपण करते थे। ऐसी दावत के बाद एक बेज़बान पशु भी काम नहीं करेगा, मानव जीवधारी की तो बात ही छोड़िए।"

हमारे भोजन की सूची इस प्रकार होती थी: बन्दगोभी का शोरबा, लेकिन कोई मामूली शोरबा नहीं, ऐसा शोरबा जिसे गृहिणी केवल घर के प्रमुख सदस्य के जन्म-दिवस के उपलक्ष में बनाती है और समोसे जिनमें मांस, बंदगोभी, चावल, मलाई पनीर, आलू और दूसरे खाद्यान्न भरे रहते थे। प्रत्येक समोसा आकार में इतना बड़ा होता था कि कोलोनीवासियों की जेब तक में नहीं समा सकता था। शोरबे के बाद भुना हुआ सूअर का मांस परोसा जाता था। यह मांस बाज़ार से ख़रीदा हुआ न होकर हमारे अपने रेवड़ का होता था, जिसे दसवां दस्ता ख़ास तौर से गोर्की कोलोनी के लिए शरद के दिनों से ही पाल-पोसकर मोटा करता था। कोलोनी के निवासी सूअरों के रेवड़ की देख-भाल करना जानते थे, लेकिन उनमें से एक भी काटा जाए, यह कोई नहीं चाहता था। यहां तक कि दसवें दस्ते के कमाण्डर स्तुपीत्सिन ने भी ऐसा करने से इनकार कर दिया था।

"मैं इसकी हत्या नहीं कर सकता। मुझे दुःख होता है। 'क्लियोपैट्रा' इतना अच्छा सूअर है।"

लेकिन, कहने की आवश्यकता नहीं, 'क्लियोपैट्रा' को ही काटा गया। सिलान्ती ओत्चेनाश ने यह काम किया और अपने कृत्य की सफ़ाई देते हुए बोला:

"मेरे पाले हुए सूअर को हमारे दुश्मन क्यों खाएं? हम तो अच्छे से अच्छे को मारेंगे। समझ गए न?"

'क्लियोपैट्रा' को उदरस्थ करने के बाद हम मज़े से लम्बी तान सकते थे, लेकिन गाढ़ी खट्टी मलाई से भरे छोटे और बड़े पात्र मेज़ पर हाज़िर हो गए, और उनकी बग़ल में पनीरी समोसों के ढेर। कोलोनी के निवासियों में एक भी ऐसा नहीं था जिसे सुस्ताने की उतावली

हो बल्कि इसके विपरीत वे समोसों और खट्टी मलाई खाने में पूरी तरह जुट गए। समोसों के बाद फलों की जेली का नम्बर आने पर उन्हें – जैसा कि कुलीनों में होता है – प्यालियों में नहीं, बल्कि शोरबे की तश्तरियों में परोसा गया था। क्या मजाल जो एक भी कोलोनी-वासी अपनी जेली को रोटी या समोसे के बिना खाता नज़र आता हो। केवल इसके बाद ही दावत को पूरा हुआ समझा जाता और मेज़ से उठने पर हरेक को मिठाइयों तथा मसालेदार बिस्कुटों से भरी एक-एक थैली और मिलती थी। इस सम्बन्ध में भी कालीना इवानोविच के मुंह से बहुत ही सच्ची बात निकलती :

"काश कि गोर्की रोज़-रोज़ जन्म लेते।"

दावत के बाद कोलोनीवासी विश्राम के लिए नहीं चले जाते थे बल्कि मिश्रित छठे दस्ते के साथ "पाताल लोक" के प्रदर्शन की तैयारी करने में जुट जाते जोकि ऋतु का अन्तिम प्रदर्शन था। कालीना इवानोविच इसके प्रदर्शन में भारी दिलचस्पी लेता :

"देखेंगे, हम भी देखेंगे, किस क़िस्म का नाटक है यह। सुना तो मैंने बहुत कुछ है, तुम्हारे इस 'पाताल लोक' के बारे में, लेकिन उसे अपनी आंखों से कभी नहीं देखा। और जाने कैसे, इस नाटक को पढ़ने का भी मुझे कभी अवसर नहीं मिला।"

यहां यह बता देना चाहिए कि इस मामले में अपने दुर्भाग्य की संयोगमयी प्रकृति को कालीना इवानोविच ने अत्यधिक अतिरंजन के साथ प्रकट किया था। कारण, काले अक्षर के रहस्य को भेद सकना कालीना इवानोविच के लिए क़रीब-क़रीब टेढ़ी खीर था। लेकिन यह सब होने पर भी कालीना इवानोविच आज ख़ूब उत्साह में था, उसे झिड़कना अवश्य ही शर्म की बात होती। गोर्की की वर्षगांठ इस साल एक नवीनता के साथ मनाई गई थी : कोमसोमोल संगठन के सुझाव से 'कोलोनिस्ट' की उपाधि का पहली बार प्रचलन किया गया। कोलोनीवासियों और शिक्षकों, दोनों ने इस नवीनता पर लम्बी तथा गम्भीरता के साथ बहस की, और अन्त में मंज़ूर किया कि यह एक अच्छा विचार है। 'कोलोनीवासी' की उपाधि केवल उन्हें ही प्रदान की जाती थी जो कोलोनी की सच्ची क़द्र करते थे और उसके कल्याण के लिए काम करते थे। लेकिन जो पिछड़े रहते थे जो रोते-झींकते

और भुनभुनाते थे या डींग मारते थे, वे केवल 'छात्र' रहते थे। वास्तव में ऐसों की संख्या अधिक नहीं थी – वे लगभग बीस के क़रीब रही होगी। स्टाफ़ के पुराने सदस्यों को भी कोलोनिस्ट की उपाधि दी जाती थी। साथ ही यह भी निश्चय किया गया था कि अगर स्टाफ़ के किसी सदस्य ने अपने काम के पहले साल में उपाधि अर्जित नहीं की तो उसे कोलोनी से विदा होना पड़ेगा।

प्रत्येक कोलोनिस्ट को क़लई किया हुआ एक बिल्ला दिया जाता जिसे हमारे विशेष ऑर्डर के अनुसार ख़ारकोव की एक फ़ैक्टरी ने बनाया था। बिल्ला एक जीवन-पेटी के रूप में था जिस पर म० गो० * अक्षर अंकित थे और इनके ऊपर एक लाल सितारा बना था।

इस दिन कालीना इवानोविच को भी परेड के समय एक बिल्ला दिया गया। वह इससे अत्यन्त प्रसन्न था, और अपनी ख़ुशी को उसने छिपाकर नहीं रखा।

"वहां निकोलाई अलेक्सान्द्रोविच ** की चाकरी में इतने दिनों तक मैंने एड़ियां रगड़ीं, इसके एवज़ में कुल जमा जो मिला वह यह कि मुझे हुस्सार *** बना दिया। और इन आवारों ने – हरामी कहीं के – मुझे एक पदक प्रदान किया है। और सो तो होता ही, – एकदम ख़ुशी की बात है यह। देखो न, जब राजसत्ता वे अपने हाथों में लेते हैं, तब ऐसा ही होता है। वे ख़ुद तो नंगे घूमते हैं, लेकिन हमें पदक प्रदान करते हैं।"

मारिया कोन्द्रातियेवना बोकोवा के अप्रत्याशित आगमन से कालीना इवानोविच का उत्साह कुछ मंद पड़ गया। एक मास हुआ जब हमारी 'प्रान्तीय समाज शिक्षा विभाग' में उसकी नियुक्ति हुई थी, और बावजूद इस के कि वह सीधे हमारी अध्यक्ष नहीं थी, फिर भी एक हद तक हमें वह अपनी निगरानी में रखती थी।

किराये की बग्घी से उतरते समय व्यंजनों से सजी हमारी मेज़ों को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। कोलोनी के जिन निवासियों ने भोजन

---

* मक्सिम गोर्की। सं०

** आख़िरी रूसी ज़ार। सं०

*** ज़ार के ज़माने में घुड़सवार सेना का सैनिक। सं०

परोसा था, वे अब उसे ख़त्म कर रहे थे। कालीना इवानोविच ने उस के अचरज से लाभ उठाने में देर नहीं की, और अपने अपराधों का भुगतान मेरे ऊपर छोड़ते हुए। नज़र बचाकर ग़ायब हो गया।

तुम लोग यह क्या मना रहे हो?" मारिया कोन्द्रातियेवना ने पूछा।

"गोर्की का जन्म-दिवस।"

"तुमने मुझे क्यों नहीं आमंत्रित किया?"

"हमारी परम्परा है कि इस दिन हम बाहर किसी भी व्यक्ति को नहीं बुलाते।"

"जो हो, मुझे भी कुछ खिलाओ।"

"यह हम कर सकते हैं। अरे, यह कालीना इवानोविच जाने कहां ग़ायब हो गया!"

"ओह, वह जानलेवा बुढ़ऊ। मधुमक्खी पालक, वही न? क्या यह वही था जो अभी मुझे देखते ही छूमन्तर हो गया? और उस गंदे मामले में क्या आप का भी हाथ था? 'जन-शिक्षा के प्रान्तीय विभाग' में वे अब हमेशा मुझे तंग करते हैं। कमाण्डेण्ड कहता है कि वह मेरे वेतन में से दो साल का वेतन काट लेगा। कहां है वह कालीना इवानोविच? उसे बुलाओ तो यहां।"

मारिया कोन्द्रातियेवना चेहरे पर नाराज़ी का भाव लाई, लेकिन साफ़ दिखाई देता था कि कालीना इवानोविच के लिए कोई ख़ास ख़तरा नहीं है। मारिया कोन्द्रातियेवना भीतर से प्रसन्न थी। उसे बुलाने के लिए मैंने कोलोनी के एक सदस्य को भेज दिया। कालीना इवानोविच दूर से ही सिर झुकाता हुआ निकट आया।

"बस-बस, ज़रा दूर ही रहो।" मारिया कोन्द्रातियेवना हंसी। "तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए। निरा भयानक है यह।"

कालीना इवानोविच एक बेंच पर बैठ गया। बोला:

"हमने वह एक अच्छा काम किया।"

एक सप्ताह पहले कालीना इवानोविच के उस अपराध का मैं भी साक्षी था। वह और मैं 'जन-शिक्षा विभाग' में गए थे, और किसी मामूली काम से मारिया कोन्द्रातियेवना के दफ़्तर में भी हमें जाना पड़ा था। उसका दफ़्तर विशाल था और एक विशेष प्रकार की

लकड़ी के साज़-सामान से भरा था। दफ़्तर के बीच में मारिया कोन्द्रातियेवना की मेज़ थी। वह अत्यन्त जनप्रिय थी। उसके इर्द-गिर्द 'जन-शिक्षा विभाग' के विशेष लोगों का हमेशा जमघट रहता था। उनमें से किसी एक से वह बात करती, दूसरा बातचीत के बीच में ही अपना सिर अड़ा देता, और तीसरा केवल सुनता रहता। अन्य टेलीफ़ोन का प्रयोग करते होते, और कुछ मेज़ के एक बाजू पर लिखते और पढ़ते होते। किसी का हाथ हस्ताक्षरों के लिए एक काग़ज़ को उसकी ओर खिसकाता होता। इन सब व्यस्त लोगों के अलावा भी काफ़ी लोग ख़ाली इधर-उधर खड़े और बातें करते होते। कमरा हमेशा बातों की चहक, धुएँ और कूड़े-करकट से भरा रहता।

कालीना इवानोविच और मैं एक सोफ़े पर बैठे अपने मामले पर बातचीत कर रहे थे। अचानक दुबली-पतली और बुरी तरह परेशान एक स्त्री दफ़्तर में आ धमकी, और शब्दों की एक प्रबल धारा उसने हमारे कानों में उंडेलनी शुरू कर दी। अत्यधिक कठिनाई के बाद हम यह जान सके कि वह किंडरगार्टन के बारे में कुछ कह रही है। जिसमें बच्चों की संख्या भी ख़ूब थी, पढ़ाई का तरीक़ा भी जिसका अच्छा था लेकिन वहाँ फ़र्नीचर कुछ नहीं था। और, प्रत्यक्षतः पहली बार ही वह यहां आई थी। बड़े प्रयत्न से वह अपने को व्यक्त कर पा रही थी, और विभाग के प्रति आदर की ज़रा-सी भी भावना उसमें नहीं थी।

"भाड़ में जाएं वे, किंडरगार्टनों का एक अच्छा-ख़ासा नगर तो वे खड़ा कर देते हैं, लेकिन फ़र्नीचर नहीं देते। मैं पूछती हूं, बच्चे किस पर बैठें? उन्होंने हमसे कहा था – 'आज आना, तुम्हें फ़र्नीचर मिल जाएगा।' अपने बच्चों को दो मील तक मैं खींचकर लाई, साँथ में गाड़ियां लेकर आई, और यहां कोई नहीं है, और न ही कोई ऐसा है जिसके सामने अपना दुख व्यक्त किया जा सके। शर्म की बात है यह, पूरा एक महीना हो गया मुझे यहां चक्कर लगाते हुए। और देखो न, ख़ुद कितना फ़र्नीचर लिए बैठी है, आख़िर किस लिए, मैं तुम से पूछती हूं?"

उस स्त्री की आवाज़ चाहे जितनी भी तेज़ क्यों न थी, मारिया कोन्द्रातियेवना की मेज़ के इर्द-गिर्द खड़े लोगों में से किसी ने भी उसकी

ओर क़तई ध्यान नहीं दिया। बहुत सम्भव है कि उनमें से कुछ लोगों ने उसे सुना भी न हो। कमरे में पहले ही से बहुत शोर था। कालीना इवानोविच ने नज़र भरकर फ़र्नीचर की ओर देखा, सोफ़े को अपने हाथ से थपथपाया, और पूछा :

"क्यों कामरेड, क्या मैं ठीक सोच रहा हूं कि यह फ़र्नीचर तुम्हारे लिए उपयुक्त होगा?"

"यह फ़र्नीचर?" स्त्री ने ख़ुशी से दोहराया। "भला इससे सुन्दर और क्या होगा?"

"तो फिर परेशानी क्या है?" कालीना इवानोविच ने कहा। "क्योंकि यह तुम्हारे लिए उपयुक्त है और यहां बेकार पड़ा है, सो इसे उठवाओ और अपने बच्चों के लिए ले जाओ।"

उस स्त्री की आंखें जो अब तक कालीना इवानोविच के चेहरे पर ध्यान से जमी थीं, अचानक अपने कोठरों में फिरकी-सी घूमीं, और इसके बाद एक बार फिर कालीना इवानोविच पर जा टिकीं।

"सो कैसे?"

"बिलकुल सीधा तरीक़ा है–इसे यहां से ले जाओ, और अपनी गाड़ियों में लाद लो।"

"हे भगवान, और फिर?"

"अगर तुम दस्तावेज़ों के लिए चिन्तित हो तो उनपर कोई ध्यान न दो, हराम की खानेवाले लोगों की कोई कमी नहीं है। वे तुम्हारे पास इतने खर्रे लिखकर भेजेंगे कि तुम अघा जाओगी। ले जाओ इसे।"

"और मान लो कि वे मुझसे पूछ-ताछ करते हैं–तो मैं क्या कहूंगी कि किसने मुझे आज्ञा दी?"

"कहना, मैंने तुम्हें आज्ञा दी।"

"तो आप मुझे आज्ञा देते हैं?"

"हां, मैं देता हूं।"

"ओह, मेरे भगवान।" आनन्दातिरेक से उस स्त्री के मुंह से निकला और तितली की भांति हल्की ही कमरे से बाहर फरफरा गई।

क्षण-भर बाद ही वह फिर कमरे में आई। इस बार दरजनों बच्चों को साथ लिए हुए थी। वे कुर्सियों, आराम कुर्सियों, बच्चा कुर्सियों

और कोचों की ओर लपके और उन्हें जैसे-तैसे दरवाज़ों से बाहर खींच ले चले। उनकी खड़खड़ से सारा कमरा गूंज उठा। आख़िर मारिया कोन्द्रातियेवना को इसका चेत हुआ। वह मेज़ पर खड़ी हो गयी और पूछा :

"यह क्या कर रहे हो तुम?"

"हम इसे बाहर ले जा रहे हैं," साँवली चमड़ी के एक छोटे से बच्चे ने कहा जो एक साथी की मदद से कुर्सी को अपने साथ खींचे ले जा रहा था।

"क्या तुम थोड़ा ख़ामोशी के साथ यह नहीं कर सकते?" मारिया कोन्द्रातियेतना ने कहा, और अपने 'जन-शिक्षा विभाग' के मामलों में एक बार फिर निमग्न हो गई।

कालीना इवानोविच ने बनावटी क्षोभ की दृष्टि से मेरी ओर देखा।

"ऐसा आपने कभी न देखा होगा? ये बच्चे, हरामी कहीं के, लगता है कि सारा फ़र्नीचर ले जाने पर तुले हैं।"

मैं मगन भाव से मारिया कोन्द्रातियेवना के दफ़्तर के फ़र्नीचर का यह निर्यातन देख रहा था। मुझे अपने हृदय में ऐसा कुछ नहीं लगा जिसपर क्षुब्ध हुआ जा सके। दो लड़के उस सोफ़ा को भी खींच ले चले जिसपर हम बैठे थे, हमने भी इसे ले जाने की उन्हें पूरी छूट दी। धुन में डूबी वह स्त्री अपने बच्चों के आख़िरी चक्कर लगा लेने के बाद दौड़कर कालीना इवानोविच के पास आई, उसके मुसकराते, परेशान चेहरे को अपनी दुलार-भरी नज़र से देखने लगी और उसके हाथों को भावावेश से दबाते हुए बोली :

"अपना नाम क्या हमें नहीं बताएंगे? ज़रूर बताइए। यह तो मालूम होना ही चाहिए। सच, आपने हमें उबार लिया।"

"मेरा नाम जानकर क्या करोगी? जीवितों को कोई अर्घ्य नहीं चढ़ाता, और पिण्डदान का समय आने में अभी देर है।"

"ओह, लेकिन बता दीजिए न।"

"कालीना इवानोविच सेरद्युक है इस भले आदमी का नाम," भावोन्मेष के साथ मैंने कहा।

"धन्यवाद, कामरेड सेरद्युक, धन्यवाद।"

"यों तुम्हारा स्वागत है। लेकिन जितनी जल्दी हो सके, इसे

यहां से ले जाओ। अन्यथा कोई भी आ सकता है और सब कुछ उलट सकता है।"

परम आनन्द और कृतज्ञता के पंखों को फरफराती वह ओझल हो गई।। कालीना इवानोविच ने अपने ओवरकोट की पेटी को ठीक किया, और गले साफ़ कर अपने पाइप को सुलगाया।

"आपने उसे क्यों बता दिया? जैसे था, वैसे ही ठीक था। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। लोग धन्यवादों के पुल बांधना शुरू कर देते हैं। लेकिन यह तो मालूम करना चाहिए कि यह सब लेकर वे यहां से तिड़ी हो सके हैं या नहीं?"

थोड़ी देर में मारिया कोन्द्रातियेवना के यहां आए लोग विभाग के अन्य कमरों में तिरोहित हो गए, और हमारी सुनवाई का नम्बर आया। मारिया कोन्द्रातियेवना ने जल्दी ही हमें निबटा दिया, और खोई-सी नज़र से अपने कमरे में इधर-उधर देखते हुए, आश्चर्य से बोली:

"कुछ मालूम तो हो कि वे इस फ़र्नीचर को कहां उठा ले गए हैं। मेरे दफ़्तर को तो जैसे टिड्डियों ने चुग लिया है।"

"वे इसे किंडरगार्टन में ले गए हैं," अपनी कुर्सी की पीठ के सहारे टिकते हुए कालीना इवानोविच ने गम्भीरता के साथ कहा।

संयोगवश केवल दो दिन बाद ही, यह बात प्रकट हो गई कि फ़र्नीचर कालीना इवानोविच की आज्ञा से ले जाया गया है। 'जन-शिक्षा विभाग' ने हमें बुलवा भेजा, लेकिन हमें जाने की ऐसी कोई जल्दी नहीं थी।

"नगण्य कुर्सियों के पीछे कौन वहां के चक्कर लगाए।" कालीना इवानोविच ने कहा। "यहां अपनी मुसीबतें क्या कुछ कम है?"

इन्हीं सब कारणों से कालीना इवानोविच मारिया कोन्द्रातियेवना की उपस्थिति में सकपका गया था।

"चाहे जो हो, काम हमने अच्छा किया।"

"क्या तुम्हें अपने पर शर्म नहीं मालूम होती? तुम्हें इजाज़त देने का क्या अधिकार था?"

कालीना इवानोविच अदब से अपनी कुर्सी की ओर बढ़ा।

"मुझे भी अनुमति देने का उतना ही अधिकार है जितना अन्य

किसी को। उदाहरण के लिए मैं आपको अपने लिए जागीर ख़रीदने की अनुमति देता हूं, – हां, मैं अनुमति देता हूं, और बस। ख़रीद लो जाकर। और चाहो तो मुफ़्त में भी हथिया सकती हो। मेरी ओर से इसकी भी अनुमति है।"

"लेकिन यों तो मैं भी अनुमति दे सकती हूं," अपने चारों ओर नज़र डालते हुए मारिया कोन्द्रातियेवना ने कहा। उदाहरण के लिए, इन सब स्टूलों और मेज़ों को उठा ले जाने की अनुमति।"

"आप दे सकती हैं।"

"और इसके बाद?" मारिया कोन्द्रातियेवना ने थोड़ी परेशानी के साथ बल दिया।

"इसके बाद क्या, कुछ नहीं।"

"तो क्या तुम्हारा आशाय है, बस इन्हें उठाओ और नौ दो ग्यारह हो जाओ।"

"और इन्हें ले कौन जाएगा?"

"कोई भी।"

"ओह-हो। ज़रा कोशिश तो करें। मैं भी देखना चाहता हूं कि उसका क्या हुलिया बनता है जब वह इन्हें ले जाता है।"

"वह गाड़ी को हांक नहीं पाएगा, बल्कि ख़ुद हांका जाएगा।" ज़दोरोव ने मुसकराते हुए कहा। वह मारिया कोन्द्रातियेवना के पीछे काफ़ी देर से खड़ा था।

मारिया कोन्द्रातियेवना झेंपी, ज़दोरोव की ओर उसने देखा और अटपटाकर पूछा:

"क्या तुम ऐसा समझते हो?"

एक प्रशस्त मुस्कान में ज़दोरोव की सारी दंतपंक्ति झलक आई।

"मुझे तो ऐसा ही लगता है," उसने कहा।

"लुटेरों का दर्शन," मारिया कोन्द्रातियेवना ने कहा। "अपने संरक्षितों को क्या आप लोग इसी तरह दीक्षित करते हैं?" कड़ाई के साथ उसने मुझसे कहा।

"थोड़ा बहुत इसी तरह।"

"यह कैसी शिक्षा-दीक्षा है, किस नाम से पुकारते हैं आप लोग इसे? दफ़्तर में से फ़र्नीचर उठा ले जाना – क्या यह ठीक है? आख़िर

आप लोग इन्हें क्या बनाना चाहते हैं? अगर चीज़ें इधर-उधर पड़ी हों, तो इसका मतलब यह कि आप इन्हें उठा ले जाएं – क्यों, यही न?"

कोलोनीवासियों का एक दल हमारी बातें सुन रहा था। बातचीत के प्रति एक सजीव दिलचस्पी उनके चेहरों पर झलक रही थे। मारिया कोन्द्रातियेवना का पारा चढ़ा था, उसकी आवाज में वैमनस्य का-सा भाव था। बहस को इस दिशा में बढ़ाने की मेरी इच्छा नहीं थी। मैंने शान्ति के लहजे में कहा:

"अच्छा हो कि इसपर किसी दिन अच्छी तरह बहस की जाए। आख़िर, यह काफ़ी कठिन समस्या है।"

लेकिन मारिया कोन्द्रातियेवना कब माननेवाली थी।

"इसमें ऐसा पेचीदा क्या है? यह काफ़ी सीधा है – तुम्हारी शिक्षा कुलक शिक्षा है।"

कालीना इवानोविच ने उसकी झुंझलाहट को अनुभव किया और वह उसके अधिक निकट खिसककर बैठ गया।

"मेरे जैसे वृद्ध आदमी से नाराज़ न हो," उसने कहा।

"आपको यह – कुलक – नहीं कहना चाहिए। हमारे छात्र सोवियत-नस्ल के हैं। मैं केवल मज़ाक़ कर रहा था। मैंने सोचा: मालकिन यहां मौजूद है, यह हंसेगी और बस। शायद इससे वह यह भी महसूस कर सके कि बच्चों के पास कुर्सियां नहीं हैं। लेकिन मालकिन कुछ भी नहीं, उसका फ़र्नीचर ठीक उसकी नाक के नीचे से तिड़ी हो गया, और वह अपराधियों की खोज कर रही है – ऊंह, कुलक शिक्षा।"

"इसका मतलब यह कि तुम्हारे छात्र भी वही करेंगे, क्यों?" मारिया कोन्द्रातिवना ने कहा, लेकिन उसका प्रतिरोध कमज़ोर पड़ चला था।

"अच्छा है, करें।"

"लेकिन क्यों?"

"क्यों क्या, लापरवाह मालिकों को सीख देने के लिए।"

कराबानोव कोलोनीवासियों की भीड़ में से प्रगट हुआ, और मारिया कोन्द्रातियेवना की ओर उसने एक छड़ी बढ़ाई जिसमें बर्फ़-सा सफ़ेद एक रूमाल बंधा था – समारोह के उपलक्ष्य में सभी कोलोनीवासियों को साफ़ रूमाल दिए गए थे।

"कोई फ़ायदा नहीं, मारिया कोन्द्रातियेवना, अच्छा हो कि सफ़ेद झंडा दिखाओ।"

मारिया कोन्द्रातियेवना अचानक हंसी और उसकी आंखें खिल उठीं।

"लो बाबा, मैं हथियार डालती हूं, आत्मसमर्पण करती हूं। कुलक-शिक्षा तुम्हारे यहां नहीं है, किसी ने मेरे साथ चार-सौ-बीसी नहीं की। मैं हथियार डालती हूं। 'स्त्री समाज शिक्षा' हथियार डालती है।"

उस रात, किसी अन्य की चमड़े की जाकेट पहने जब मैं प्रौम्पटर के बौक्स से बाहर निकला, मारिया कोन्द्रातियेवना क्रमश: ख़ाली होते हाल में बैठी कोलोनीवासियों की अन्तिम क्रियाओं को ध्यान से देख रही थी। तोस्का सोलोवियोव अपनी ऊंची आवाज़ में पुकार रहा था:

"सेम्योन, सेम्योन, क्या तुमने अपनी पोशाक जमा करा दी? जाने से पहले अपनी पोशाक जमा कराते जाना।"

जवाब में कराबानोव की आवाज़ सुनाई दी:

"तोसेच्का, बुद्धू की औलाद, मैंने साटिन * का अभिनय किया था!"

"ओह, साटिन। तब तो इस यादगार को अपने पास ही संजोकर रखना।"

वोलोख़ोव मंच के कगार पर खड़ा था और अंधेरे में चिल्ला रहा था:

"गलातेन्को, यह नहीं चलेगा, अंगीठी को बुझाना होगा।"

"यह अपने आप ही बुझ जाएगी," गलातेन्को ने उनींदी, मरमरी आवाज़ में जवाब दिया।

"मैं कहता हूं, इसे बुझाओ। तुमने फ़रमान सुना है – अंगीठियों को हर्गिज़ जलती नहीं छोड़ना चाहिए।"

"फ़रमान, फ़रमान।" गलातेन्को भनभनाया। "अच्छा बाबा, बुझा दूंगा।"

कोलोनीवासियों का एक दल मंच पर से सरायघर के बिस्तरों को उठा रहा था। और कोई नाटक के किसी गीत को गुनगुना रहा था।

---

* गोर्की के नाटक 'पाताल लोक' का एक पात्र जो केवल चिथड़ों में लिपटा था। सं०

“ये तख़्ते कल बढ़ईघर में पहुंच जाने चाहिएं,” मित्का जेवेली ने किसी को याद दिलाया, और सहसा चिल्ला उठा: “अन्तोन। अरे अन्तोन।”

पाखों के बीच से ब्रातचेन्को ने जवाब दिया:

“मैं यहां हूं। ज़्यादा रेंको नहीं – तुम गधे नहीं हो।”

“कल मुझे गाड़ी दे दोगे न?”

“ले लेना।”

“और घोड़ा?”

“क्या ख़ुद नहीं खींच सकते?”

“इतनी ताक़त मैं कहां से लाऊंगा?”

“क्यों, क्या वे तुम्हें भर-पेट जई नहीं खिलाते?”

“नहीं।”

“तो मेरे पास चले आना – भरपूर चारा मिलेगा।”

मैं मारिया कोन्द्रातियेवना के पास पहुंचा।

“आपने सोने के लिए क्या प्रबंध किया है?”

“मैं बस लिदोच्का के इन्तज़ार में हूं। वह अपना सिंगार उतार रही है और इसके बाद वह मुझे अपने कमरे में ले जाएगी... अन्तोन सेम्योनोविच, तुम्हारे कोलोनीवासी बहुत प्यारे हैं लेकिन वे ज़रूरत से ज़्यादा सख़्त काम करते हैं। काफ़ी देर हो गई है, और अभी भी काम में जुटे हैं। मैं सहज ही कल्पना कर सकती हूं कि वे कितने थके होंगे। क्या तुम उन्हें कुछ खाने को नहीं दे सकते? या कम-से-कम उन्हें जिन्होंने काम किया है।”

“काम तो सभी ने किया है और इतना कुछ है नहीं जो सब के हिस्से में आ सके।”

“अच्छा तो फिर तुम ख़ुद अपने और अपने शिक्षकों के लिए ही कुछ करो। तुमने आज अभिनय किया है, इतना दिलचस्प था वह कि बस, क्यों नहीं तुम सब लोग एक जगह जमा हो जाते, बैठकर बति-याते, और – लगे हाथ – थोड़ा मुंह भी मीठा कर लेते। क्यों, इसमें क्या हर्ज है?”

“हमें छ: बजे उठना है, मारिया कोन्द्रातियेवना।”

“बस, यही एक कारण है?”

"बात यह है कि," मैंने इस प्यारी भली स्त्री से कहा,"हमारा जीवन, जितना तुम सोचती हो, उससे कहीं ज़्यादा सख़्त है। कहीं ज़्यादा सख़्त।"

मारिया कोन्द्रातियेवना कुछ सोचने-सी लगी। लिदोच्का कूदकर मंच पर से नीचे आ गई, यह कहते हुए:

"बहुत अच्छा प्रदर्शन था आज का, था न?"

६. कामदेव के वाण

हमारे गोर्की समारोहों के साथ वसन्त ने पदार्पण किया। लेकिन एक विशेष क्षेत्र था जिसमें वसन्त के जागरण का हम पहले से अनुभव कर रहे थे। नाटक सम्बन्धी हमारे कार्यकलापों ने कोलोनी के सदस्यों तथा गांव के युवा समुदाय के बीच सम्पर्कों को स्थापित करने में काफ़ी योग दिया था। और इन सम्पर्कों के दौरान कई मौक़ों पर, ऐसे भाव तथा योजनाएं प्रगट होती थीं जिनका समाज-शिक्षा के सिद्धान्तों में कोई उपक्रम नहीं था। कमाण्डरों की परिषद की इच्छा से अत्यन्त ख़तरनाक जगहों में नियुक्त कोलोनीवासियों को – ६ –'द०' मिश्रित दस्ते के साथ लगा अक्षर 'द०' जो स्पष्टत: 'दर्शक शब्द का सूचक था – सबसे ज़्यादा वेदना सहनी पड़ती थी।

उन कोलोनीवासियों को जो ६–'अ०' मिश्रित (अभिनेता) के सदस्यों के नाते मंच पर अभिनय करते थे, नाटकघर की 'विषैली दलदल' में बरबस सराबोर होना पड़ता था। मंच पर वे बहुधा रोमाण्टिक क्षणों का अभिनय करते थे, और संचीय प्रेम उनके भी अनुभवगत होता था, इसी लिए एक अवधि विशेष तक वे तथाकथित प्रेम के बुख़ार से बचे भी रहते थे। अन्य '६'–मिश्रित दस्तों के सदस्य भी समान रूप में सहायक तत्वों से संरक्षित रहते थे। मिश्रित ६–ध्व०' के सदस्यों को हमेशा भयानक विस्फोटकों से काम करना पड़ता था। तारानेत्स मुश्किल से ही कभी सिर पर पट्टी बांधे बिना दिखाई देता था – उन चोटों के परिणामस्वरूप जिनका वह अनगिनत गंध की तकनीकी प्रयोगों के दौरान शिकार होता था। इस मिश्रित दस्ते में भी प्रेम कुछ जड़ जमाता नहीं मालूम होता था। कारण, विस्फोट से ध्वस्त होते हुए

जहाज़ों, क़िलेबन्दियों और मंत्रियों के कानों को बहरा बना देनेवाली आवाज़ों से वे आन्दोलित रहते थे 'प्रेम की क्षुब्ध, रिसती हुई लपटों के लिए' वहां कोई स्थान नहीं था। न ही इन लपटों के लिए उन लड़कों के वक्ष में कोई गुंजाइश थी जो फ़र्नीचर तथा दृश्यपटों को हटाते थे – वह प्रक्रिया जिसे शिक्षाविद बड़े चाव से 'रूपान्तरण' कहते हैं, उनमें अत्यधिक सबल रूप में विकसित थी। यहां तक कि अंगीठियां जलानेवाली टुकड़ी भी जिसकी गतिविधि का क्षेत्र ठीक श्रोताओं के बीच था, कामदेव के वाणों से सुरक्षित थी। कारण, कि कोई भी कामदेव वह चाहे जितना भी मनमौजी और दायित्वहीन क्यों न हो, इन कोयला-पुते, धुएँ की कीट चढ़े तथा कलमुंहे जीवों पर निशाना साधने की बात सपने में भी नहीं सोच सकता था।

इस मामले में सबसे ज़्यादा ख़तरा ६–'द०' मिश्रित के सदस्यों के लिए था। ये लोग सबसे अच्छे कपड़ों में थियेटर के दर्शकों के बीच जाते थे। औघड़पन के ज़रा से भी चिह्न के लिए मैं उनकी ख़बर लेता था। साफ़-सुथरे रूमाल का एक कोना अदा के साथ उनके वक्ष की जेबों में से झांकता रहता था, उनके बाल हमेशा नफ़ासत का नमूना पेश करते थे, कूटनीतिज्ञों की भांति सलीक़ेदारी और दांत के डाक्टर की भांति देख-भाल उनके लिए ज़रूरी थी। इस साज़-सज्जा के साथ, सहज ही वे उन मोहिनी मंत्रों के जाल में फंस जाते थे जिनकी रचना करने में गोंचारोव्का, पिरोगोव्का और वोलोवी गांव भी उतने ही दक्ष हैं जितने कि पेरिस के सौन्दर्यकक्ष।

नाटकघर के द्वार पर टिकट चेक करने तथा जगहों की खोज के दौरान हुए प्रथम सम्मिलन निर्विघ्न गुज़र जाते। इन अद्‌भुत प्रदर्शनों के स्वामी तथा संयोजक हृदय को छूनेवाले अपने शब्दों तथा तकनीक के अपने चमत्कारों के साथ लड़कियों को एक साथ आकर्षक तथा वर्ज्य मालूम होते, प्रेम की पहुंच से क़रीब-क़रीब बाहर। इस हद तक बाहर कि गांव के मजनूँ भी उनकी इस विशेषता पर मुग्ध हो उठते, और ईर्ष्या की जलन उनके हृदयों को न सताती। इतने में एक अन्य प्रदर्शन का नम्बर आ जाता, फिर एक और, और फिर एक और, और उस कहानी की पुनरावृत्ति होने लगती जो उतनी ही पुरानी है जितनी पुरानी कि दुनिया। पिरोगोव्का की परासका या वोलोवी गाँव की

मारूस्या को यह समझते देर नहीं लगती कि उनके गुलाबी गालों, चमकती हुई आंखों, काली या सुनहरी भौंहों, फैशनेबल तथा एकदम लक़दक़ नयी छींट की पोशाक का संगम करोड़ों प्रत्यक्ष गुणों पर पर्दा डाल देता है। साथ ही वे यह भी समझ जातीं कि उनके कुमारी-सुलभ होठों से उच्चरित उक्राइनी 'ल' से निःसृत क़रीब-क़रीब इतालवी संगीत जैसा स्वर भी गोर्की कोलोनीवासियों की दृश्य-चातुरी या किसी भी तकनीक से कहीं अधिक सबल है। इन सबके क्रियाशील होने पर कोलोनीवासियों की अभेद्यता शेष नहीं रह पाती। एक समय ऐसा आता जब कोलोनी का एक निवासी प्रदर्शन के बाद मेरे पास आकर छद्म-प्रार्थना करता:

"अन्तोन सेम्योनोविच, क्या मैं लड़कियों को छोड़ने उनके घर पिरोगोव्का तक जा सकता हूं? उन्हें अकेले जाते डर लगता है।"

इस तरह का वाक्य झूठ का एक दुर्लभ पिटारा होता। प्रार्थी और मैं दोनों ही अच्छी तरह जानते थे कि डर-वर किसी को कुछ नहीं लगता, किसी को घर पहुंचाने की कोई ज़रूरत नहीं है। बहुवचन 'लड़कियां' एक भीषण अतिरंजन हैं। इसके अलावा अनुमति लेने की कोई ज़रूरत नहीं थी। बिना अनुमति के भी चुटकी बजाते दर्शिका के लिए संरक्षण का संयोजन हो जाएगा।

इन सब कारणों से मैं अनुमति दे देता और शिक्षक के रूप में अपनी आत्मा की गहराइयों में विरोध की एक सुस्पष्ट संवेदना को दबाने का प्रयत्न करता। यह स्पष्ट है कि शास्त्र बिना किसी रियायत के प्रेम से इनकार करता है। वह समझता है कि यह 'वृत्ति' केवल तभी उभार लेती है जब शिक्षा के तरीक़े असफल सिद्ध होते हैं। सभी कालों में और सभी लोगों में शिक्षाविदों ने प्रेम को हेय समझा है। मैं ख़ुद भी उस समय नाराज़गी का अनुभव करता जब कोलोनी का कोई निवासी कोमसोमोल या आम सभा से अनुपस्थित रहता, अपनी पुस्तक को घृणा के साथ दूर पटक देता और सामूहिक वर्गचेतना के तमाम गुणों की उपेक्षा करते हुए ढीठ की भांति किसी मारूस्या या किसी नताशा के अतिरिक्त जो शिक्षात्मक, राजनीतिक या नैतिक दृष्टि से मेरे मुक़ाबले कहीं अधिक हीन थीं—अन्य किसी के अधिकारत्व मानने से इनकार कर देता। लेकिन मैं चीज़ों को सोचने-समझने में

विश्वास करता था। उतावली में अपनी ईर्ष्या को किसी भी तरह के अधिकारों का दावा नहीं करने देता था। कोलोनी में मेरे सहयोगी, और उनसे भी बढ़कर जन-शिक्षा विभाग में काम करनेवाले मेरी अपेक्षा ज़्यादा पक्के थे, और कामदेव की अनोपेक्षित तथा अव्यवस्थित हस्त-क्षेपों से अत्यधिक झुंझला उठते थे।

"इसका दृढ़ता से विरोध करना चाहिए।"

इन बहसों से हमेशा मदद मिलती थी। कारण, वे स्थिति पर प्रकाश डालती थीं। ज़रूरी था अपनी आम समझ पर और जीवन की आम समझ पर भरोसा किया जाए। उस वक़्त जीवन में तो आम समझ की कमी थी।

मैं सपने देखता था: अगर हम सम्पन्न होते, तो मैं कोलोनीवासियों की शादी कर डालता, और पड़ोस सें विवाहित कोमसोमोलों को बसा देता। इसमें भला क्या नुक़्सान हो सकता था? लेकिन इस तरह की परिणति अभी दूर की चीज़ थी। कोई चिन्ता नहीं। निर्धन जीवन भी रास्ते सुझा सकता है। शिष्टता को ध्यान में रखते हुए शिक्षकात्मक हस्तक्षेप के द्वारा प्रेम के दीवानों को मैंने कटघरे में खड़ा नहीं किया। उन्मुक्त सहृदयता के क्षणों में ओप्रिश्को ने मुझे मारूस्या का एक चित्र दिखाया, जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण था कि जीवन अपना काम करने में जुटा है, जब कि हम अभी तक सोच-विचार ही कर रहे हैं।

अपने आप में वह चित्र कुछ अधिक प्रकट नहीं करता था। एक प्रशस्त, बैठी नाकवाला चेहरा मेरी ओर देख रहा था। औसतन लड़कियों का जो टाइप होता है, वह वैसा ही था। लेकिन उसके दूसरी ओर स्कूली लड़की के प्रभावशील हाथ की लिखावट अंकित थी: "प्रिय दिमत्री को मारूस्या लुकाशेन्को की ओर से। मुझे प्यार करना और भूल न जाना।"

दिमत्री ओप्रिश्को वहां अपनी कुर्सी पर बैठा सारी दुनिया के सामने अपनी मुदित आत्मा को बिना किसी छिपाव के खोलकर रख रहा था। गिने-चुने नगण्य चिन्हों को छोड़कर उसके पहलेवाले प्रफुल्ल चोले का अब कुछ बाक़ी नहीं बचा था, यहां तक कि उसकी बालों की ढीठ लट भी उसके माथे से ग़ायब हो गयी थी तथा शराफ़त और सुथराई

के साथ सजावटी ढंग से संवारे हुए उसके बालों में हिल-मिल गई थी। उसकी भूरी आंखें कोई फ़बती कसने या प्रगल्भता से हंसने-हंसाने का मौक़ा मिलने पर, जो पहले इतनी जल्दी चमकने लगती थीं, अब शान्तिमय घरेलू चिन्ताओं तथा कोमल भाग्य के आगे आत्मसमर्पण के सिवा और कुछ व्यक्त नहीं कर रही थीं।

"अब क्या करने का इरादा है?"

ओप्रिश्को मुसकराया।

"आपकी मदद के बिना बड़ा कठिन होगा। उसके पिता को अब तक हमने कुछ नहीं बताया है। मारूस्या डरती हैं। लेकिन उसका पिता यों मुझे पसन्द करता है।"

"बहुत ठीक, हम इन्तज़ार करेंगे। देखें, क्या होता है।"

ओप्रिश्को पूर्ण सन्तुष्ट, अपनी प्रिया के चित्र को सावधानी के साथ अपने वक्ष में छिपाकर रखते हुए चला गया।

चोबोत की हालत और भी शोचनीय थी। वह एक उदास, अनुराग-भरा आदमी था। उसमें एक भी विशिष्ट प्रवृत्ति नहीं थी। कोलोनी में उसका प्रवेश एक ऐसे द्वन्द्व से चिन्हित था जिसमें चाकुओं का प्रयोग किया गया था। लेकिन उसके बाद वह धीरे-धीरे अनुशासन में आता गया। हालांकि हमारे जीवन के चहल-पहलवाले केन्द्रों से वह हमेशा अलग रहता था। उसका चेहरा भावशून्य और बेरंग था, यहां तक कि गुस्से के क्षणों में भी वह शून्य ही बना रहता था। बड़ी विवशता से वह स्कूल जाता था और अत्यन्त कठिनाई से उसने पढ़ना सीखा। लेकिन अपने को व्यक्त करने का उसका ढंग मुझे अच्छा लगता था। उसके विरल कथनों में हमेशा एक तरह की महान और सरल सच्चाई का अनुभव होता था। वह उन लोगों में से था जो सबसे पहले कोम-सोमोल संगठन में शामिल हुए थे। कोवाल उसके बारे में एक निश्चित मत रखता था:

"उससे कभी भाषण देते नहीं बनेगा और प्रचार-कार्य के लिए भी वह कभी ठीक सिद्ध नहीं होगा। लेकिन उसके हाथ में एक मशीनगन थमा दो। वह मर भले ही जाए, लेकिन उसे अपने हाथ से जाने देगा।"

सारी कोलोनी जानती थी कि चोबोत नताशा पेत्रेन्को के प्रेम में पागल है। नताशा मूसी कारपोविच के घर में रहती थी। प्रकट

रूप से उसकी भतीजी की हैसियत से, लेकिन वस्तुत: एक खेतमज़दूरनी के रूप में। मूसी कारपोविच उसे नाटकघर में तो आने देता था, लेकिन वह बहुत ही नगण्य कपड़े पहने होती थी: बदन में ठीक से न आनेवाला एकदम तार-तार हुआ घाघरा जो किसी की पुरानी उतरन था, ऐंठे-मुड़े जूते, जो उसकी नाप के नहीं थे और एक पुराने फ़ैशन का प्लेट-पड़ा ब्लाउज़। हमने कभी उसे अन्य वेश-भूषा में नहीं देखा। इन कपड़ों में नताशा एक हौआ मालूम होती थी, लेकिन इसी लिए उसके चेहरे का आकर्षण और भी उभरा हुआ दिखाई देता था। चिथड़ा हुए मटमैले शाल की कत्थई आभा से घिरा उसका चेहरा मासूमियत, शुद्धता और एक प्रकार के बाल-सुलभ मुसकराते विश्वास का मूर्त रूप मालूम होता था। नताशा कभी मुंह नहीं फुलाती थी; कभी ग़ुस्सा, क्षोभ, सन्देह या रंज नहीं व्यक्त करती थी। वह ध्यान के साथ किसी की भी बातें सुन सकती थी। क़रीब-क़रीब बेमालूम से अन्दाज़ में अपनी घनी काली पलकों को फरफराते या खुलकर मुसकराते समय उसके छोटे-छोटे आनन्दायक दांत खिल उठते थे। हाँ, उनमें से आगे का एक दांत थोड़ा अटपटा ज़रूर लगता था।

नताशा हमेशा लड़कियों के एक झुंड के साथ कोलोनी में आती थी और उसका सरल, बच्चों जैसा संकोच तथा भला स्वभाव उनकी कृत्रिम प्रफुल्लता की पृष्ठभूमि में और भी उभर आता था।

चोबोत, निश्चित रूप से उसके स्वागत के लिए पहुंचता, और बेंच पर उसकी बग़ल में गुमसुम बैठा रहता। न तो वह उसे छेड़ पाता, न ही उसके आन्तरिक जीवन में कोई परिवर्तन ला पाता। मेरे लिए यह विश्वास से परे था कि इस दुधमुंही बच्ची में भी चोबोत से प्रेम करने की सामर्थ्य हो सकती है, लेकिन लड़के एक स्वर से मेरी बात का खण्डन करते:

"कौन? नताशा? अरे, चोबोत के लिए तो वह आग या पानी में कहीं भी बिना झिझक कूद सकती है।"

सच पूछो तो उन दिनों हमारे पास इतना समय नहीं था कि प्रेम के मामलों में डूबते-उतराते। गर्मी का मौसम आ धमका था। प्रतिदिन अठारह घण्टे तक दमककर सूरज अपना वार्षिक प्रत्याक्रमण शुरू कर रहा था। शेरे भी, मानो सूरज का अनुसरण करते हुए, हमारे ऊपर

इतना अधिक काम लाद देता कि हम केवल निःशब्द हांफते और दम तोड़ते रह जाते। झुंझलाहट के साथ याद करते कि हम ही तो थे जिन्होंने, केवल शरद की आम सभा में, भारी उत्साह के साथ बोवाई की उसकी योजना को स्वीकार किया था। रस्मी तौर से हमने समझा था कि शेरे छः क्षेत्रीय हेरी-फेरी की प्रणाली को चलाएगा, लेकिन वस्तुतः यह कहीं अधिक पेचीदा धंधा सिद्ध हुआ। शेरे ने अनाज की ऐसी कोई फ़सल नहीं बोई थी। क़रीब सात हैक्टर में शीतकालीन गेहूं था। इसके अलावा एक छोटे से खेत में जई और जागीर के किसी सुदूर हिस्से में जौ की बोवाई की गयी थी। ज़मीन का एक खण्ड उसने प्रयोगों के लिए रख छोड़ा था। इस खण्ड में उसने अनसुनी जाति की रई बोई थी, जिसे देखकर उसने ऐलान किया था कि किसान मुंह बाए रह जाएंगे। वे कभी नहीं पहचान सकेंगे कि यह रई है। अब तक किसान तो नहीं, बल्कि हम ही अटकल लगाते थे। आलू, चुकन्दर, तरबूज़, गोभी और भांति-भांति की क़िस्म की मटरों का, जिन्हें एक दूसरे से पहचानना कठिन था, बाक़ायदा एक बाग़ खड़ा हो गया था। लड़कों का कहना था कि शेरे खेतों में बाक़ायदा प्रतिक्रान्ति का विस्तार कर रहा है।

"उसने समूची जगह में बादशाहों, ज़ारों और रानियों की फ़सल खड़ी कर रखी है।" वे कहा करते।

और निस्संदेह तमाम प्लॉटों को आदर्श सीधी सीमा-रेखाओं तथा मेड़ों से विभाजित करते हुए शेरे लकड़ी के खूंटो पर छोटी-छोटी तख़्तियां लगा देता था। प्रत्येक तख़्ती पर यह अंकित होता था कि यहां कितने परिमाण में क्या बोया गया है। कोलोनीवासियों ने, सम्भवतः उन्होंने, जो गायों से फ़सलों की रक्षा करते थे, एक सुबह शेरे की तख़्तियों की बग़ल में अपनी तख़्तियां खड़ी कर दीं। उनकी इस चाल ने शेरे को बुरी तरह आहत कर दिया। उसने कमाण्डरों की फ़ौरी परिषद बुलाने की मांग की और हमें बुरा-भला कहने लगा। इस तरह से बात करना उसके स्वभाव में ही नहीं था।

"निरी ख़ुराफ़ात और भोंदूपन। मैं क़िस्मों के वही नाम तो अंकित करता हूं जो हमेशा अंकित किए जाते हैं। अगर किसी क़िस्म को 'अन्दालूशिया का राजा' कहा जाता है तो इसलिए कि सारी

दुनिया में उसका यही नाम है और मैं ख़ुद अपने मन से नाम नहीं गढ़ सकता। यह निरी गुण्डागर्दी है। आख़िर वे अपने 'जनरल चुकन्दर,' 'कर्नल मटर' और अपने 'कैप्टर तरबूज़' तथा 'लेफ़्टिनेंट आलू' को लेकर क्यों बीच में टांग अड़ाते हैं?"

कमाण्डर उसकी बात पर मुसकरा देते। उनकी समझ में न आता कि तरकारी-बटालियनों के साथ कैसे पेश आया जाए। काम-काजी ढंग से वे पूछते:

"इस मूर्खतापूर्ण चाल के लिए कौन ज़िम्मेदार है? प्रथम वे राजा हैं, और इसके बाद निरे कैप्टन, और जाने क्या-क्या।"

लड़के अपनी मुसकराहट को न रोक पाते, हालांकि शेरे का डर भी उनमें समाया था। सिलान्ती द्वन्द्व के तनाव को समझता और उसे हल्का करने का प्रयत्न करता।

"बात कुछ इस तरह है, आप जानो। वह राजा जिसे, एक गाय चटकर सकती है, ख़तरनाक नहीं हो सकता – उसे राजा बने रहने देना चाहिए।"

कालीना इवानोविच भी शेरे का पक्ष लेता:

"आख़िर झगड़ा किस लिए? तुम यह दिखाना चाहते हो कि तुम सच्चे क्रान्तिकारी हो, राजाओं से लड़ना और हरामख़ोरों के सिर क़त्ल करना चाहते हो – क्यों, यही न? कोई बात नहीं, हम तुममें से प्रत्येक को एक चाकू दे देंगे, और तुम तब तक सिर काटते रहना जब तक पसीना बनकर बह न जाओ।"

कोलोनीवासी इसका अर्थ समझते थे। उन्होंने कालीना इवानोविच की घोषणा को अत्यन्त नम्रता के साथ स्वीकार किया। इसके साथ हमारे खेतों में प्रतिक्रान्ति के मामले का अन्त हो गया। जब मुख्य इमारत के सामने शेरे ने दो सौ गुलाब की झाड़ियां लगाईं, जिनपर 'हिम रानी' की तख़्ती लगी थी, किसी भी कोलोनीवासी ने इसका विरोध नहीं किया। कराबानोव ने केवल इतना कहा:

"रानी या नौकरानी, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता – जब तक कि वह सुगंधि देती है।"

चुकन्दर ने हमें सबसे ज़्यादा परेशान किया। सच पूछो तो यह बड़ी हुज्जतवाली फ़सल है – बोने में सहज, लेकिन देख – संभार में

पागल बना देनेवाली। नाम मात्र को ही वह धरती से ऊपर फूटती है। इसकी निराई करनी पड़ती है। चुकन्दर की पहली सफ़ाई एक अच्छी-खासी ट्रेजेडी होती है। नया आदमी तो नवजात चुकन्दर को घास-पात से पहचान तक नहीं पाता। सो शेरे सफ़ाई के लिए पुराने कोलोनीवासियों की मांग करता, पर वे बिदककर कहते: "क्या, चुकन्दर की निराई? अपने दिनों में क्या हम काफ़ी निराई नहीं कर चुके हैं?"

प्रथम निराई के बाद फिर दूसरी आ धमकती है। सब के ध्यान गोभी तथा मटर की ओर उन्मुख हैं, और भूसा तैयार करने का समय आया चाहता है कि तभी, शेरे शान्त भाव से अपनी रविवासरीय अर्ज़ी में लिखता है: "चुकन्दर की निराई के लिए चालीस आदमी।"

परिषद का मंत्री वेर्शनेव विक्षोभ के साथ इस निर्मम प्रार्थना को मन ही मन पढ़ता है और धमाके के साथ अपनी मुट्ठी को मेज़ पर पटकता है।

"यह क्या तमाशा है? फिर चुकन्दर? इस कम्बख़्त का कब अन्त होगा, भाड़ में जाए यह! कहीं ऐसा तो नहीं कि तुमने ग़लती से पुरानी अर्ज़ी फिर दाखिल कर दी हो?"

"अर्ज़ी नयी है," शेरे ने शान्त भाव से कहा। "चालीस आदमी, और पुराने, कृपा करके।"

मारिया कोन्द्रातियेवना भी जिसने गर्मियों के लिए हमारे पड़ोस में एक कुटीर ले ली थी, परिषद में मौजूद थी, और उसके गालों के भंवर खेल के अन्दाज़ में, विक्षुब्ध कोलोनीवासियों की ओर झांक रहे थे।

"तुम कितने आलसी हो, लड़को। लेकिन, निश्चय ही, शोरबे में चुकन्दर तो तुम पसन्द करते हो न।"

सेम्योन ने अपना सिर झुकाया और भावना के साथ बोला:

"पहली बात तो यह है कि यह चारेवाली चुकन्दर है। दूसरे, आप खुद क्यों नहीं आगे बढ़कर निराई में हमारा हाथ बंटातीं? अगर आप केवल एक दिन काम करने की कृपा करें, तो मैं वायदा करता हूं कि चुकन्दरों में काम करने तथा इस वाहियात काम को ठिकाने लगाने के लिए एक मिश्रित दस्ता खड़ा कर लूंगा।"

अपने सिर से कोलोनीवासियों की ओर इशारा करते हुए सहानुभूति की खोज में मारिया कोन्द्रातियेवना मेरी ओर देखकर मुसकराई।

"ज़रा देखो तो इन्हें।"

मारिया कोन्द्रातियेवना छुट्टी पर थी, सो दिन में भी वह कोलोनी में मिल जाती थी। लेकिन दिन में कोलोनी में ऊब मालूम होती। केवल भोजन के लिए लड़के वापस लौटते – चिपचिपे, धूल में सने, धूप में सांवले हुए। अपनी कुदालियों को कुदलाती के कोने में फेंक, राह में ही अपने जांघियों के बदन खोलते हुए गहरे तट से वे छलांग लगाते देखते न देखते उनके गरमाए हुए शरीरों, खेल, किलकारियों और शैतानियों से कोलोमाक सजीव हो उठता। लड़कियां तट पर झाड़ियों के पीछे से चिचियाती:

"चले आओ। बस, बहुत हो चुका। अब निकलो। साथियो, ऐ साथियो! अब हमारी बारी है।"

मानीटर चेहरे को व्यग्र बनाए तट पर चक्कर लगाता, और लड़के अभी भी गर्मी से व्याकुल, अपने जांघियों को अपने गीले अंगों पर चढ़ाते हुए, जिनके कंधों पर पानी की बूंदें चमकती रहतीं, पुराने बग़ीचे में फौवारे के इर्द-गिर्द लगी मेज़ों के पास जमा हो जाते। कितनी देर से मारिया कोन्द्रानियेवना उनका इन्तज़ार कर रही थी। कोलोनी में एक मात्र वही अपनी चमड़ी को सफ़ेद रखे थी, और उसके बालों का रंग नहीं उड़ा था। फलतः हमारे जमघट में वह असाधारण रूप से बनी-संवरी मालूम होती थी, यहां तक कि कालीना इवानोविच से भी इसपर टिप्पणी किए बिना नहीं रहा गया:

"अन्तोन सेम्योनोविच, इतनी बढ़िया प्रतिमा, यहां धूल में पड़ी है। आपको उसे सैद्धान्तिक नज़र से नहीं देखना चाहिए। वह तो आपको एक मानव समझकर आती है, और आप उसपर ज़रा भी ध्यान नहीं देते, मानो आप दहक़ान हों।"

"कुछ तो शर्म करो।" मैंने कालीना इवानोविच से कहा। "केवल एक इसी चीज़ की कोलोनी में मेरे लिए क़सर रह गई है। प्रेम का धंधा शुरू कर दूं, और बाक़ी सब छुट्टी, क्यों?"

"करके देखो न।" कालीना इवानोविच ने बूढ़ी टर्राती हुई आवाज़ में अपना पाइप सुलगाते हुए कहा। "मेरी बात गांठ बांध लो। शीत में हाथ मलते रह जाओगे।"

मारिया कोन्द्रातियेवना के गुणों का सैद्धान्तिक या व्यावहारिक

विश्लेषण करने के लिए मेरे पास समय नहीं था। शायद इसी लिए वह मुझे बराबर चाय पर बुलाती। जब विनम्रता के साथ मैं उससे पूरी सच्चाई के साथ कहता :

"लेकिन मैं चाय पसन्द नहीं करता, सच, चाय मुझे अच्छी नहीं लगती," तो उसका मन आहत हो जाता। एक दिन नाश्ते के बाद, (उस समय जब कि कोलोनीवासी काम पर चले गये थे) मारिया कोन्द्रातियेवना और मैं मेज़ पर बैठे रह गये थे। तब सरल मित्रता के साथ उसने मुझसे कहा :

"मेरी बात सुनो, वीतराग सेम्योनोविच। अगर आप आज सांझ मेरे यहां नहीं आए तो मैं आपको बस बहुत ही अक्खड़ समझूंगी।"

"क्या है तुम्हारे पास? चाय?"

"मेरे पास आइसक्रीम है, समझे। समझे, आइसक्रीम, चाय नहीं। ख़ास तौर से आपके लिए मैं इसे तैयार कर रही हूं।"

"अच्छी बात है," मैंने बेमन से कहा। "आइसक्रीम के लिए किस समय मुझे आना होगा?"

"आठ बजे।"

"लेकिन साढ़े आठ बजे मुझे कमाण्डरों की रिपोर्ट लेनी है।"

"ओह, शिक्षा विज्ञान के शहीद। अच्छा है, नौ बजे चले आना।"

लेकिन नौ बजे, रिपोर्टों के फ़ौरन बाद, जब मैं अपने दफ़्तर में बैठा था और यह सोचकर खिन्न हो रहा था कि मुझे आइसक्रीम के लिए जाना है, तभी जेवेली भागा हुआ आया। वह चिल्लाकर कह रहा था :

"अन्तोन सेम्योनोविच, जल्दी चलिए।"

"क्यों क्या हुआ?"

"लड़के चोबोत और नताशा को लाए हैं। वह दद्दा—मूसी कारपोविच, आप जानो..."

"कहां हैं वे?"

"वहां, उधर, बग़ीचे में।"

मैं लपककर बग़ीचे में पहुंचा। लिलक की वीथिका में एक बेंच पर भयभीत नताशा बैठी थी। लड़के वीथिका के समूचे विस्तार में

टोलियां बनाए तत्परता के साथ किसी चीज़ पर बहस कर रहे थे। करावानोव कह रहा था.

"और बिलकुल ठीक। दुःख यही है कि उसने उस सूअर को मार नहीं डाला।"

ज़दोरोव कांपते, रोते हुए, चोबोत को दिलासा दे रहा था।

"भय की ऐसी कोई बात नहीं है। यह लो, अन्तोन आ गये – वह सब ठीक कर देंगे।"

एक दूसरे के बीच में टोकते हुए उन्होंने मुझे निम्न कहानी बताई :

"मूसी कारपोविच ने नताशा को सज़ा देने का निश्चय किया था, शायद इसलिए कि हाथ के कते सूत के चौखटों को सुखाना, या ऐसा ही अन्य कुछ और काम था जिसे वह भूल गई थी। और दो बार वह उसपर मार लगा भी चुका था। तभी ऐन मौक़े पर चोबोत पहुंच गया। चोबोत ने ठीक क्या किया, यह मालूम करना कठिन था क्योंकि वह चुप्पी साधे बैठा था। लेकिन गांव से पड़ोसी तथा हमारे कुछेक कोलोनीवासी मूसी कारपोविच के चिल्लाने की आवाज़ सुनकर दौड़ आए थे। तब उन्होंने देखा था कि उसका बुरा हाल है, खून से लथपथ एक कोने में डर के मारे गठरी बना पड़ा है। मूसी कारपोविच के बेटों में से भी एक की इतनी ही त्रस्त दशा थी। खुद चोबोत झोंपड़ी के बीच में खड़ा था और, करावानोव के शब्दों में, कुत्ते की भांति गुर्रा रहा था। नताशा बाद में एक पड़ोसी की झोंपड़ी में मिली।

इस सब की बदौलत कोलोनीवासियों और गांवों के लोगों के बीच कुछ कहा-सुनी हुई। ऐसे चिन्हों का अभाव नहीं था कि कहा-सुनी की इस प्रक्रिया के दौरान घूंसों तथा बचाव के अन्य प्रकारों की उपेक्षा की गई हो। लेकिन लड़कों ने इसका कोई ज़िक्र नहीं किया। नाटकीय आवेश के साथ वर्णन करते हुए उन्होंने केवल इतना कहा :

"हमने ऐसी कोई खास चीज़ नहीं की, हमने तो महज़ दुर्घटनाओं के बाद प्राथमिक चिकित्सा-भर की, और करावानोव ने नताशा से कहा : 'तुम कोलोनी चली जाओ, नताशा। डरो नहीं, कोलोनी में – तुम जानो – अच्छे लोग तुम्हें मिलेंगे। यहां इन सब को हम देख लेंगे।'"

इस मामले में जिस-जिस ने हिस्सा लिया था, सब को मैंने अपने दफ़्तर में बुलाया।

नताशा गम्भीर बनी फटी आंखों से अपने चारों ओर के वातावरण को देख रही थी और भय का चिन्ह केवल उसके होठों की बेमालूम-सी फरफराहट में, तथा उस गरम आंसू की बूंद में देखा जा सकता था, जो उसके गाल पर बहकर ठंडा हो चला था।

"क्या किया जाए?" कराबानोव ने आवेश के साथ कहा। "आखिर इस मामले को तय करना ही होगा।"

"तो आओ, तय कर लिया जाए," मैंने कहा।

"इनकी शादी कर दो," बुरून ने सुझाव दिया।

"इनकी शादी करने के लिए काफ़ी समय पड़ा है," मैंने जवाब दिया। "ठीक इस समय हमें यह नहीं करना है। हमें नताशा को कोलोनी में लेने का पूर्ण अधिकार है। क्या किसी को आपत्ति है? बस-बस, शान्त रहो, इतना न चिल्लाओ। लड़की के लिए हमारे पास जगह है। कोल्या, पाँचवें दस्ते के लिए कल के निर्देश-पत्र में इसका नाम दर्ज कर लो।"

"बहुत अच्छा।" कोल्या ने ज़ोरों से कहा।

सहसा नताशा ने अपना वह भयानक शाल उतारकर दूर फेंक दिया और उसकी आंखें तेज़ हवा में लपटों की भांति लपक उठीं। दौड़कर वह मेरे पास आई, खुशी से हंसती हुई। उसकी हँसी ठीक बच्चों की तरह थी।

"क्या सचमुच? कोलोनी में? ओह, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, चाचा जी।"

लड़कों ने अपने भावोद्वेग को हंसी में छिपा लिया। कराबानोव ने फ़र्श पर पांव पटका।

"कितना सरल। एकदम सरल... भाड़ में जाएं सब... कोलोनी में, बिला शक। ज़रा वे कोशिश तो करें किसी कोलोनीवासी को हाथ लगाने की।"

लड़कियां खुशी से छलछलाती नताशा को शयनागार में लिवा ले गईं। लड़के बहुत देर तक बातें करते रहे। मेरे सामने बैठे चोबोत ने मुझे धन्यवाद देने का प्रयत्न किया।

"मैं तो कभी यक़ीन तक नहीं कर सकता था। इतने अकिंचन आदमी का आपने बचाव किया, इसके लिए आपको धन्यवाद। और

जहां तक शादी करने की बात हैं – वह बाद में भी हो सकती है।"

रात काफ़ी देर तक हम इस घटना पर विचार करते रहे। लड़कों ने इस तरह के अन्य मामलों का उल्लेख किया। सिलान्ती ने अपनी राय दी और कोलोनीवासी की पोशाक में नताशा को मुझे दिखाने के लिए लाया गया – वह दुलहिन नहीं बल्कि एक कोमल नन्ही बालिका मालूम होती थी। सबसे अन्त में कालीना इवानोविच का आगमन हुआ और सांझ की घटनाओं का निम्न रूप में उसने पेश किया :

"ऐसा कुछ नहीं हुआ जिसके लिए हो-हल्ला किया जाए। जब तक तुम किसी का सिर धड़ से जुदा नहीं करते, वह ज़िन्दा है, और सो सब ठीक है ... खेतों में चलो, तुम ख़ुद अपनी आंखों से देख लोगे। वे हरामख़ोर अब बिलकुल मेमने मालूम होते हैं – मरने और ताबूत में लेट जाने पर भी वे इतने अधिक शान्त न होते जितने कि अब मालूम होते हैं।"

आधी से अधिक रात बीत चुकी थी। कालीना इवानोविच और मैं चरागाह के लिए रवाना हुए। रात सुहावनी और शांत थी। ऐसा मालूम होता था जैसे कालीना इवानोविच के शब्दों को ध्यान से सुन रही हो। पोप्लर के वृक्ष, सुदृढ़, चुस्त-दुरुस्त, अपने स्तर को क़ायम रखने के अपनी चिरकालीन लगन के प्रति फरमावरदार, अपने निजी विचारों में डूबे, हमारी कोलोनी की निगाहबानी कर रहे थे। शायद वे अपने चारों तरफ़ के परिवर्तनों को देखकर चकित थे। मूलतः, त्रेपके बंधुओं की चौकीदारी करने के लिए उन्हें यहां लाकर खड़ा किया गया था। अब मक्सिम गोर्की कोलोनी की निगरानी करने की उनसे आशा की जाती थी।

मारिया कोन्द्रातियेवना की अंधेरे में डूबी कुटिया पोप्लर के पेड़ों के एक झुरमुट में से सीधे हमारी ओर देख रही थी। अचानक चुपके से उसकी एक खिड़की खुली, और कोई कूदकर उसमें से बाहर निकला। वह हमारी दिशा में बढ़ा, लेकिन क्षण-भर के लिए रुका और जंगल में ओझल हो गया। कालीना इवानोविच ने १६१८ में मिर्गोरोद को ख़ाली करने के अपने वर्णन को बीच में ही छोड़ दिया और धीमे से बोला :

"यह हरामखोर कराबानोव था। वह, देखा आपने व्यावहारिक है, केवल सैद्धान्तिक नहीं। और आप – पढ़े-लिखे आदमी – बस, शीत में हाथ मलते रहिए।"

७. नयी कुमक

जब मूसी कारपोविच कोलोनी में आया तो हमने सोचा कि गुस्से में चोबोत ने उसके सिर के साथ जो मनमानी की थी, उसके लिए हमें कांटों में घसीटने का उसका इरादा है। उसका सिर नुमाइशी ढंग से पट्टियों से बंधा था, वह मृतप्राय हंस की भांति बोल रहा था, न कि अपने सहज-स्वाभाविक रूप में। लेकिन हमें इतना परेशान करनेवाले जिस विषय में हमारी दिलचस्पी थी, उसके बारे में उसने शान्त ईसाइयों जैसे परित्याग की भावना के साथ किया।

"यह न समझना कि उस कलमुंही के बारे में मैं यहां आया हूं। बल्कि, उससे सर्वथा भिन्न काम के लिए आया हूं। खुदा न करे कि मेरा आपसे झगड़ा हो – भला मैं आपसे क्यों झगड़ा करूंगा? जो हो गया सो हो गया... मैं तो मिल के बारे में आया हूं। ग्राम-सोवियत की ओर से एक बहुत ही बढ़िया प्रस्ताव मैं आपके लिए लाया हूं।"

कोवाल का सिर मूसी कारपोविच के ऊपर झुक आया।

"मिल के बारे में?"

"हां-हां, मिल के बारे में। तुम लोग मिल को लेने की कोशिश में हो – मेरा मतलब यह कि किराये पर, और ग्राम-सोवियत ने भी एक प्रार्थना-पत्र भेजा है। हम तो यह सोचते हैं कि आप भी सोवियत अधिकारी हैं और ग्राम-सोवियत भी। सो हमारे और आपके बीच टकराने का कोई सवाल ही नहीं है।"

"हां," कोवाल कुछ व्यंग्य से कह उठा।

इसके बाद एक संक्षिप्त कूटनीति का सूत्रपात हुआ। मैंने कोवाल तथा अन्य लड़कों की आत्माओं को कूटनीतिक बाना धारण करने के लिए तैयार किया, और लूका सेम्योनोविच तथा मूसी कारपोविच के लिए यह सम्भव बना दिया कि अपनी जान को खतरे में डाले बिना वे कोलोनी में आ-जा सकें।

उन दिनों समूची कोलोनी घोड़े ख़रीदने की उधेड़-बुन में बुरी तरह व्यस्त थी। हमारे सुविख्यात दुलकिए प्रत्यक्षतः बुढ़ा चले थे, यहां तक कि 'लाल' को भी दाढ़ी निकलनी शुरू हो गई थी। उधर 'लंडूरा' को कमाण्डरों की परिषद ने अपंग ठहराकर उसे पेंशन दे दी थी। उसके लिए कोलोनी में एक जगह नियत कर दी गई थी और जीवन के बाक़ी दिनों के लिए जई का राशन उसके लिए तय कर दिया गया था। केवल मेरी व्यक्तिगत सहमति से ही उसे जोता जा सकता था। 'डाकू,' 'मेगी' और 'बाज़' के प्रति शेरे की झल्लाहट किसी घड़ी भी दूर नहीं होती थी।

"अच्छे फ़ार्म के पास यदि घोड़े निकम्मे हैं तो फ़ार्म भी निकम्मा है।"

यहां तक कि अन्तोन ब्रातचेन्को भी जो बारी-बारी से हमारे प्रत्येक घोड़े को लैला समझने के दौर में से गुज़र चुका था उन सब में 'लाल' को सबसे ज़्यादा चाहता था। शेरे के रंग में रंगकर वह भी भावी घोड़े की प्रतीक्षा करने लगा जो किसी क्षण भी हमारे प्रदेश में उपस्थित हो सकता था। हम लोगों में से शेरे, कालीना इवानोविच, ब्रातचेन्को और ख़ुद मैं किसी भी मेले को ख़ाली नहीं छोड़ते थे। हज़ारों घोड़ों का हमने निरीक्षण किया था, लेकिन ख़रीदा अब तक एक भी नहीं था। कभी घोड़े हमारे अपने घोड़ों से भी गए-बीते होते, कभी अत्यधिक ऊंचे दाम उनके मांगे जाते और कभी शेरे सावधानी के साथ छिपाए गए उनके किसी रोग या दोष को खोज निकालता। और सच क्यों छिपाया जाए, अच्छे गुणोंवाले घोड़े मेलों में नज़र ही नहीं आते थे। युद्ध और क्रान्ति ने बढ़िया नस्ल के घोड़ों को तबाह कर दिया था। नये घोड़ा-पालन-घर अभी अस्तित्व में नहीं आए थे। अन्तोन जब मेले से लौटता तो क़रीब-क़रीब ग़ुस्से से उबलता हुआ होता।

"यह कैसे हो सकता है? क्या सब घोड़े ग़ायब हो गए? मान लो, अगर हमें अच्छे घोड़े की ज़रूरत हो तो हम क्या करें? टोपी हाथ में थामे बुर्जुआ लोगों के सामने जाकर गिड़गिड़ाएं, या क्या करें?"

पुराना हुस्सार होने के नाते कालीना इवानोविच घोड़ों की समस्या में गहरी डुबकी लगाने का शौक़ीन था। शेरे भी—केवल एक इसी मामले में—स्थायी ईर्ष्या की भावना त्यागकर कालीना इवानोविच के

पाण्डित्य का विश्वास करता। एक दिन, विषेशज्ञों की एक मण्डली में, कालीना इवानोविच ने एलान किया: "लूका और मूसी – हरामख़ोर कहीं के – कहते हैं कि गांवों में दहक़ानों के पास बढ़िया घोड़े हैं, लेकिन वे उन्हें मेलों में डर के मारे नहीं ले जाते।"

"सो कुछ नहीं," शेरे ने कहा. उनके पास अच्छे घोड़े नहीं हैं। केवल वैसे ही हैं जैसे कि हम देख चुके हैं। शीघ्र ही हमें घोड़ा-पालन-घरों से बढ़िया घोड़े मिल जाएंगे। लेकिन अभी ऐसा होने में थोड़ी देर है।"

"मैं कहता हूं कि उनके पास है" कालीना इवानोविच ने बल दिया। "लूका जानता है, वह कुतिया का बच्चा, समूचे ज़िले की, और उसमें जो कुछ होता है उसकी ख़बर रखता है। और, ज़रा सोच-कर देखने की बात है। अच्छे घोड़ेवाला अमली खेतिहर गांवों में सिर छुपाकर रहता है और लुक-छिपकर घोड़े का पालन करता है क्योंकि वह डरता है कि कहीं उसे उससे छीन न लिया जाए। लेकिन अगर हम ख़ुद उनमें से किसी एक के पास जाएं, तो हो सकता है कि हम घोड़ा ख़रीदने में समर्थ हो सकें।"

मैं भी, सिद्धान्त को लेकर ज़रा परेशान हुए बिना, समस्या को निबटाने के पक्ष में था।

"अगले रविवार को चलकर हम एक नज़र देख आएंगे," मैंने कहा। "और हो सकता है कि कुछ ख़रीद भी लें।"

"क्यों नहीं?" शेरे ने सहमति प्रकट की। "घोड़ा तो, कहने की ज़रूरत नहीं, हम क्या ख़रीदेंगे, लेकिन अच्छा है कुछ सैर हो जाएगी। मैं देखना चाहूंगा कि इन अमली खेतिहरों ने कैसी फ़सल पैदा की है।"

रविवार के दिन अपने घोड़ों को हमने फिटन में जोता और मुलायम कच्ची सड़क पर, जो गांवों को जोड़ती थी, आराम से चल पड़े। हम गोंचारोव्का से गुज़रे, ख़ारकोव राजमार्ग को पार किया, और क़दमचाल से पाइन के एक जंगल की रेतीली भूमि को लांघते हुए उस 'दूर देश' में पहुंचे जहां हम पहले कभी नहीं गए थे।

एक ऊंचे ढलान की चोटी पर से दूर तक का दृश्यपट साफ़ दिखाई पड़ रहा था। सामने की ओर, क्षितिज तक, एक अन्तहीन मैदान फैला था। ऐसा मालूम होता था जैसे उसपर स्तीमरोलर फेरा गया हो।

विविधता के लिए वह उल्लेखनीय नहीं था, लेकिन शायद उसकी इस एकरसता में ही उसका मुख्य आकर्षण छिपा हो। मैदान में सघन अनाज बोया हुआ था, चारों ओर लहरियां उमड़ रही थीं – जो सुनहरी, हरी-सुनहरी-कत्थई – जहां-तहां ज्वार की उजली हरियाली या मोथे के खेत के भंवरों की विविधता से युक्त थीं। इस सुनहरी पृष्ठभूमि में, क़रीब-क़रीब खलनेवाली नियमितता के साथ, बर्फ़-सी सफ़ेद झोंपड़ियों के समूह खड़े थे। इनके इर्द-गिर्द निम्नस्तरीय, आकारविहीन, बाग़ों के खण्ड नज़र आ रहे थे। प्रत्येक समूह अपने दो या तीन बेद-वृक्षों, ऐस्प-वृक्षों तथा अधिक विरल रूप में पोपलर के वृक्षों और भूरे रंग की धूमिल कुटिया सहित तरबूज़ की क्यारियों से सज्जित था। सभी कुछ, सख़्ती के साथ, एक शैली विशेष में गुंथा था – अत्यन्त कुशल दृश्यपट-चित्रकार भी उसमें कोई ग़लती नहीं निकाल सकता था।

यह दृश्यपट कालीना इवानोविच को भी बेहद अच्छा लगा।

"देखो न, मालिक कैसे रहते हैं। कितने व्यवस्थित लोग बसते हैं यहां।"

"हां," शेरे ने बेमन स्वीकार किया।

"चलिए, वह जो वहां हैं न, ज़रा उधर चलकर देखें।" कालीना इवानोविच ने प्रस्ताव किया।

अन्तोन घास में रौंदी एक बटिया पर मुड़ा और एक पुराने ढंग के फाटक तक गाड़ी को ले गया। यह फाटक बेद वृक्ष के तीन कोमल तनों को छाल से जोड़कर बनाया गया था। भूरे रंग का एक कुत्ता बेंच के नीचे से रेंगकर बाहर निकला, अपने अंगों को उसने सीधा किया और मरियल आवाज़ में हमें देखकर भोंका। झोंपड़ी का मालिक अपनी उलझी हुई दाढ़ी में से कोई चीज़ झटककर दूर करते बाहर निकला और चिन्ता मिश्रित आश्चर्य से मेरी अध-फ़ौजी वेशभूषा को देखने लगा।

"राम-राम, मालिक।" कालीना इवानोविच ने प्रसन्न भाव से कहा। "लगता है, अभी गिरजाघर से लौटे हो, ठीक है न?"

"मैं तो गिरजाघर ऐसे कुछ ज़्यादा नहीं जाता," घर के मालिक ने जवाब दिया, वैसी ही मरियल आवाज़ में जैसी कि उसकी सम्पत्ति के रक्षक ने की थी। "मेरी घरवाली जब-तब हो आती है। और आप लोग कहां से आए हैं?"

"हम काम से आए हैं। सुना है कि आपके पास कोई बढ़िया बिकाऊ घोड़ा है। क्या यह सच है?"

मालिक की नज़र हमारे तामझाम पर घूमी, और इस तथ्य से कि 'लाल' और 'मेरी' की जोड़ी बेमेल थी, उसकी चिन्ता कुछ दूर होती मालूम दी।

"सो तो मैं नहीं जानता। मेरे पास बढ़िया घोड़े भला कहां से आते? एक घोड़ी है, तीन साल की। शायद आपके काम आ जाए।"

वह अस्तबल में गया और उसके दूरतम कोने से तीन साल की एक घोड़ी निकाल लाया, वह जानदार और ख़ूब पुष्ट थी।

"कभी जोती नहीं गई, क्यों?" शेरे ने पूछा।

"ऐसे किसी ख़ास जगह के लिए जोतकर तो इसे कभी नहीं ले जाया गया, लेकिन जहां तक सवारी का सम्बन्ध हैं, इसे जोता जा सकता है। चाल इसकी अच्छी है, यह मैं अवश्य कहूंगा।"

"इससे काम नहीं चलेगा," शेरे ने कहा। "हमारे लिए अभी यह बहुत बच्ची है। हमें तैयार घोड़े की आवश्यकता है।"

"बेशक, यह कम उम्र है," मालिक ने सहमति प्रकट की। "लेकिन अच्छे घर में यह बढ़ निकलेगी। सच, बढ़ निकलेगी। मैं तीन साल से इसे पाल-पोस रहा हूं। अच्छी तरह से मैंने इसे पाला है, यह आप भी देख सकते हैं। क्यों, ठीक है न?"

घोड़ी निश्चय ही अच्छी हालत में थी। साफ़-सुथरी चमकती हुई खाल और ख़ूब कंघी से संवारी हुई उसकी अयाल, अपने पालक और मालिक से वह इतनी अधिक साफ़-सुथरी मालूम होती थी कि कोई तुलना नहीं की जा सकती थी।

"इस घोड़ी के लिए क्या दाम मांगते हो, ज़रा सुनें तो।"

"यह देखकर कि काम-काजी लोग इसे ख़रीदना चाहते हैं – साठ चेरवोनेत्स, और लगे हाथ कुछ तरी के लिए भी।"

अन्तोन की नज़र बेद-वृक्ष की चोटी पर जा टिकी, और अन्त में जब बात को समझा तो क़रीब-क़रीब मुंह बाए रह गया।

"कितना? छः सौ रूबल?"

"ठीक कहा आपने – छः सौ रूबल," मालिक ने विनीत भाव से कहा।

"छ: सौ रूबल – इस कूड़े के लिए?" अपने विक्षोभ को क़ाबू में रख सकने में असमर्थ अन्तोन बरस पड़ा।

"कूड़ा होगे तुम ख़ुद, बड़े आए मीन-मेख निकालनेवाले!" मालिक ने पलटकर जवाब दिया।" घोड़ी को जांच कर देखो, तब फ़ैसला करना।"

"यह तो ख़ैर नहीं कहा जा सकता कि घोड़ी कूड़ा है," कालीना इवानोविच ने शान्त भाव से कहा। "घोड़ी अच्छी है, लेकिन इससे हमारा काम नहीं चल सकता।"

शेरे चुपचाप मुसकराया। हम सब अपनी फिटन के पास लौट आए और आगे बढ़ चले। भूरे कुत्ते ने एक बार फिर भौंककर हमारे प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया, लेकिन उसके मालिक ने अपने दरवाज़े को बंद करते हुए एक बार भी हमारी ओर घूमकर नहीं देखा।

एक दर्जन के लगभग गाँवों में हम गए। क़रीब-क़रीब उनमें से हरेक के पास घोड़े थे। लेकिन हमने कोई ख़रीदारी नहीं की।

जब हम घर की ओर लौटे तब क़रीब-क़रीब संध्या हो आई थी। शेरे, जिसकी खेतों में दिलचस्पी विलीन हो गई मालूम होती थी, विचारों में डूबा था। अन्तोन अपनी झुंझलाहट 'लाल' पर उतार रहा था, और चाबुक को निरन्तर फटकारते हुए बुदबुदा रहा था।

"दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया? क्या झाड़-झंखाड़ पहले कभी नहीं देखे? ठहर, मैं दिखाता हूं।"

सड़क के किनारे उगी झाड़ियों को ग़ुस्से के साथ देखते हुए कालीना इवानोविच रास्ते भर भनभनाहट से भरे स्वगत-भाषण की झड़ी लगाए रहा।

"देखो न, कितने बुरे लोग हैं, हरामी कहीं के। लोग उनके पास जाते हैं, हां तो, चाहे तुम बेचो या न बेचो, कम-से-कम तुम – सूअर की जात तुम – एक इनसान की तरह तो पेश आ सकते हो, एक मेज़बान की तरह तुम – हराम की खानेवाले तुम देख सकते हो कि लोग सुबह से घर निकले हैं, थोड़ा पेट में डालने को तुम उन्हें कुछ दे सकते हो – दलिया तो तुम्हारे घर में होगा – क्यों, ठीक है न – या कम-से-कम आलू... ज़रा सोचो तो, दाढ़ी में कंघी तक करने के लिए वह समय नहीं निकाल सकता – कभी देखा है ऐसा जोड़?

और मांगता है एक कोढ़ियल टट्टू के लिए छः सौ रूबल। उसने 'घोड़ी को पाला,' – यह मुंह और मसूर की दाल। लेकिन उसने उसे नहीं पाला – क्या तुमने नहीं देखा कि कितने ढेर सारे मज़दूर वह रखता है?"

मैंने उन्हें देखा था – चिथड़ों में लिपटे – अस्तबल और सूअरघर के पास निश्चल खड़े हुए, शहरी लोगों के आगमन जैसे असाधारण दृश्य को आतंकित तथा तनी हुई नज़र से देखते हुए। अहाते में एक साथ इतने प्रतिष्ठितों के कल्पनातीत जमाव ने उन्हें अभिभूत कर दिया था। कभी इन मूक जीवों में से कोई अस्तबल में से घोड़े को निकाल कर लाता, सकुचाता हुआ मालिक के हाथों में उसकी रास थमाता, या घोड़े के पिछले पुट्ठों को भी थपथपाता, और इस प्रकार शायद अपने परिचित साथी-जीव के प्रति अपना प्रेम प्रकट करता।

आख़िर कालीना इवानोविच झुंझलाहट के साथ अपनी पाइप से जूझते हुए चुप हो गया। केवल ठीक कोलोनी के दरवाज़े पर पहुंचकर ही उसने अपनी ख़ामोशी तोड़ी, जब वह ख़ुशी से चिल्लाया:

"कम्बख़्तों ने भूखों मार डाला, हरामख़ोर कहीं के।"

कोलोनी में लूका सेम्योनोविच और मूसी कारपोविच से हमारी भेंट हुई। लूका को हमारे अभियान की असफलता पर आश्चर्य हुआ।

"सो कैसे हो सकता है!" उसने विरोध किया। "अरे हां, वह मैंने ही तो अन्तोन सेम्योनोविच और कालीना इवानोविच को इसके बारे में बताया था, सो इस मामले को ख़ुद हमें निबटाना होगा। तुम चिन्ता न करो, कालीना इवानोविच। तुम अपने स्नायुओं को झनझना डालोगे। आदमी के लिए इससे बुरा और कुछ नहीं हो सकता। यह बुरी बात है कि तुम अपने आपको विचलित करो। अगले सप्ताह तुम और मैं चलेंगे, लेकिन अन्तोन सेम्योनोविच को घर पर ही रहने देना। वह कुछ ज़रूरत से ज़्यादा – हें-हें – बोल्शेविक दिखते हैं। इससे कुलक डर जाते हैं।"

अगले रविवार को कालीना इवानोविच और लूका सेम्योनोविच लूका की गाड़ी में गाँवों के लिए रवाना हुए। ब्रातचेन्को ने जो इस समूचे मामले के प्रति भन्ना देनेवाली उदासीनता धारण किए था, कुत्साजन्य ठिठोली के शब्दों की बौछार करते हुए उन्हें विदा किया:

"देखना, अपने साथ रोटी ले जाना न भूल जाना, नहीं तो भूखों मर जाओगे।"

लूका सेम्योनोविच ने अपने रविवासरीय कुर्ते के कशीदा कढ़े अग्र-भाग पर लहराती अपनी शानदार लाल दाढ़ी को संवारा। उसके लाल होंठ आशा से मुसकराए।

"साथी ब्रातचेन्को, यह तुम कैसे कहते हो? हम मिलने जा रहे हैं, भला अपने साथ रोटी कैसे ले जा सकते हैं? आज असली दलिया मिलेगा और मांस भी। हो सकता है कि साथ में किसी चीज़ की बोतल भी निकाल लाए।"

उसने गहरी दिलचस्पी से उमगे कालीना इवानोविच की ओर आंख मारी और चुस्त गुलाबी रासों को बटोरा। प्रशस्त वक्ष और ख़ूब हृष्ट-पुष्ट घोड़े ने चौड़े बमों की कमान के नीचे उत्साह से डग बढ़ाया और भारी गाड़ी चल पड़ी।

सांझ को सभी कोलोनीवासी, मानो आग लगने की घंटी सुनकर, एक आश्चर्यजनक दृश्य देखने के लिए बाहर उमड़ आए – कालीना इवानोविच के विजयी होकर लौटने का दृश्य। लूका सेम्योनोविच का घोड़ा गाड़ी के पीछे बंधा था, और बमों के बीच में एक ख़ूबसूरत, चितकबरे भूरे रंग की, एक बड़ी घोड़ी जुती थी: कालीना इवानोविच और लूका सेम्योनोविच दोनों अपने आप में उस आतिथ्य का साक्षात प्रमाण थे जोकि घोड़े के मालिकों ने उनका किया था। कालीना इवानोविच के लिए गाड़ी में से बाहर निकलना दूभर था, लेकिन कोलोनीवासियों को उसकी स्थिति का पता न लगे, इसके लिए वह अत्यन्त प्रयत्नशील था। कराबानोव ने उसे नीचे उतरने में मदद दी।

"तो ख़ातिर-वातिर भी हुई?"

"बेशक हुई। देखो न, कितना बढ़िया जानवर हम लाए हैं।"

कालीना इवानोविच ने घोड़ी के पिछले भीमाकार पुट्ठों को थपथपाया। बेशक, वह एक 'बढ़िया जानवर' थी: सशक्त झालरदार टांगें, लम्बा-चौड़ा डील-डौल, विशाल वक्ष, सुगठित, वज़नदार काठी। शेरे तक उसमें कोई दोष नहीं निकाल सका, हालांकि उसके पेट के नीचे रेंगते हुए उत्साह और प्रसन्नता के साथ रह-रहकर काफ़ी समय उसने यह कहते हुए बिताया:

"अपने पांव, अपना पांव तो मुझे दो।"

लड़कों ने ख़रीदारी को सराहा। गम्भीरता के साथ अपनी आंखों को सिकोड़े हुए बुरून ने घोड़ी के इर्द-गिर्द पूरा चक्कर लगाया, और इसके बाद एलान किया:

"आखिर इस कोलोनी में एक... ऐसी घोड़ी आ ही गयी जिसे सचमुच में घोड़ी कहा जा सकता है।"

कराबानोव ने भी घोड़ी को पसन्द किया।

"हां, यह काम करनेवाली घोड़ी है," उसने कहा। "यह पांच सौ रूबल के योग्य है। ऐसे एक दरजन घोड़े-घोड़ियां हों तो माल-पूओं की कमी न रहे।"

ब्रातचेन्को ने दुलार भरी संलग्नता के साथ घोड़ी को ग्रहण किया। उसने उसके इर्द-गिर्द पुरा चक्कर लगाया, उसकी असीम, शान्त और हृदय में घर कर लेनेवाली प्रवृत्ति पर मगन भाव से स्तब्ध हुआ, और उसकी आंखों के सामने नयी आशाएँ साकार हो उठीं। उसने अब हर घड़ी शेरे की नाक में दम करना – शेरे से यह मांग करना – शुरू किया:

"अब हमें एक अच्छे 'प्रजापति' की ज़रूरत है। अब हम अपना घोड़ा-गृह खोल सकते हैं – तुम जानते ही कि मेरा आशय क्या है।"

"शेरे खूब अच्छी तरह जानता था कि उसका आशय क्या है। 'ज़ोर्का' (यही घोड़ी का नाम था) की ओर गम्भीर जांचनेवाली नज़र डालते हुए अपने दांतों के बीच से वह कहता:

"मैं बीजाश्व की टोह में रहूंगा। एक जगह मेरी नज़र में है। बस, गेहूं कटने तक इन्तज़ार करो, तब मैं वहां जाऊंगा।"

उन दिनों प्रात: से लेकर सांझ तक तालयुक्त गति से कोलोनी में काम चलता था – उन साफ़-सुथरी लीकों पर जिनकी व्यवस्था शेरे ने की थी। मिश्रित दस्तों – कुछ बड़े, कुछ छोटे, कुछ पुराने वयस्कों की और कुछ ऐसे जिनमें जान-बूझकर केवल छोटे लडके ही रखे गऐ थे, कुदालियों, हंसियों, पंजों या केवल अपने दो हाथों से लैस खेतों में जातीं और एक्सप्रेस गाड़ी की नियमितता के साथ नियत समय पर लौट आतीं, हंसती और खिलखिलाती, प्रफुल्लता और आत्मविश्वास से युक्त पूरी तरह यह जानती हुई कि क्या करना है, कहां और कैसे उसे करना है। कभी-कभी ओल्या वोरोनोवा हमारी सहायक कृषि-

विद, खेतों से लौटती, दफ़तर में रखे कूज़े से पानी की चुस्कियां लेते हुए ड्यूटी पर नियुक्त मानीटर से कहती:

"पांचवें मिश्रित दस्ते के लिए मदद भेजो।"

"क्यों, क्या बात है?"

"वे बंधाई में पिछड़े हैं। गर्मी बेहद है।"

"कितनों की आवश्यकता है?"

"लगभग पांच की। क्या लड़कियां ख़ाली हैं?"

"केवल एक ख़ाली है।"

ओल्या अपने होंठों को आस्तीन पर पोंछते हुए कहीं जाकर विलीन हो जाती। मानीटर हाथ में नोटबुक लिए नाशपाती के पेड़ की ओर डग बढ़ाता, जिसके नीचे प्रातः से ही मिश्रित दस्ते का कोतल स्टाफ़ तैनात था। ड्यूटी-पर-नियुक्त कमाण्डर के पीछे ड्यूटी-पर-नियुक्त बिगुलवादक – अनोखी, लघु-दुलकी चाल से लपकता। अगले ही क्षण कोतल-शक्ति के लिए संक्षिप्त आह्वान-ध्वनि गूंज उठती। झाडियों के नीचे से, नदी की ओर से, शयनागारों से, छोटे लड़के ताबड़-तोड़ लपकते, नाशपाती के पेड़ के नीचे एक घेरा बन जाता, और एक मिनट बाद पांच कोलोनीवासी गेहूं के खेतों की ओर प्रस्थान करते नज़र आते।

चालीस नये बच्चों को हम अपने यहां ले चुके थे। रविवार का सारा दिन कोलोनीवासी उनकी देख-भाल में बिताते। उन्हें नहलाते-धुलाते, कपड़े पहनाते, और उन्हें सम्बन्धित दस्तों में नियुक्त करते। दस्तों की संख्या हमने नहीं बढ़ाई थी, बल्कि सारे ग्यारह दस्तों को लालगृह में स्थानान्तरित कर दिया था। प्रत्येक में एक निश्चित संख्या में कुछ जगहों को बाद में भरने के लिए ख़ाली छोड़ दिया था। इसकी बदौलत नवागन्तुकों को मूल सदस्यों की पंक्ति के साथ मज़बूती से गूंथना सम्भव हो गया था। गर्व के साथ वे अनुभव करते कि वे गोर्की कोलोनी के वासी हैं। हालांकि अभी वे ढंग से मार्च तक नहीं कर सकते थे, बल्कि – कराबानोव के शब्दों में – केवल टुरकते थे।

नवागन्तुक सब के सब बहुत कम-उम्र थे, तेरह या चौदह वर्ष से अधिक नहीं होंगे। उनके चेहरों से आह्लाद बरसता था। ख़ास तौर से स्नान के बाद गुलाब-सा खिला चेहरा और साटिन के नये चमकते

हुए जांघिये पहने जब कोई लड़का आता तो वह और भी मनोहर प्रतीत होता। उसके बाल भले ही क़ायदे से न कटे हों, लेकिन वेलूख़िन हमें यक़ीन दिलाता :

"उन्होंने ख़ुद अपने बाल काटे हैं आज, और आप तो जानते ही हैं, कि वे ऐसे कोई खास माहिर तो हैं नहीं। बाल काटनेवाला आज रात को यहां आएगा, और सब एकदम संवर जाएंगे।"

शुरू-शुरू में कुछ दिनों तक हमारी यह नयी कुमक आश्चर्य से अपनी आंखों को फाड़े और तमाम नये प्रभावों को ग्रहण करती कोलोनी में कभी यहां तो कभी वहां घूमती रही। वे सूअरघर में गए और कठोर स्तुपीत्सिन की ओर चकित आंखों से ताकते रहे।

अन्तोन ने, सैद्धान्तिक तौर पर, नयी कुमक से कोई लगाव रखने से इनकार कर दिया।

"तुम लोग यहां क्या ताक-झांक रहे हो? तुम्हारी जगह अभी भोजन के कमरे में है।"

"भोजन के कमरे में क्यों?"

"इसके सिवा तुम और कर क्या सकते हो? तुम लोग खाना खाने की मशीनों के सिवा और कुछ नहीं हो।"

"ओह, मैं काम कर सकता हूं।"

"मैं जानता हूं कि तुम किस तरीक़े से काम करोगे। एक नहीं, दो-दो निरीक्षक तुम्हारी निगरानी के लिए लगाने पड़ेंगे। बोलो, लगाने पड़ेंगे कि नहीं?"

"लेकिन कमाण्डर ने कहा था कि हमें परसों से काम शुरू करना है। तब देखना।"

"तब देखना, – क्या सचमुच? क्या तुम समझते हो कि मैं नहीं जानता? बस यही होगा – 'ओह, कितनी गर्मी लगती है। पानी के लिए मन छटपटा रहा है! ओह, पापा! ओह, मामा!'"

नन्हे लड़के विस्मय के साथ मुसकराए।

"पापा! मामा! सो कुछ नहीं!"

लेकिन, ठीक पहले दिन के अन्त होने से पहले ब्रातचेन्को ने अपनी पसन्द लड़कों को खोज निकाला। उसने अपनी निजी प्रणाली के अनुसार घोड़ा-प्रेमियों को चुना। बस फिर क्या था, पानी का पीपा खेत की

बटिया में लुढ़क रहा है, और पीपे के ऊपर एक नया गोर्कीआइट पेत्या ज़दोरोजनी दोहरा हुआ 'बाज़' को हांक रहा है। अस्तबल के फाटक पर से आदेशों की वर्षा हो रही है

"बस-बस, घोड़े को इतना तेज न हांको, पीपे को साथ लेकर तुम्हें कहीं आग बुझाने नहीं जाना है।"

एक दिन के भीतर नवागन्तुकों ने मिश्रित दस्तों में अपरिचित, श्रमसाध्य प्रयासों में लड़खड़ाते और चरमर करते हुए हिस्सा लेना शुरू कर दिया। लेकिन कोलोनीवासियों की एक पांत बिना डिगे और अपनी पंक्ति को ज़रा भी तोड़े बिना, आलू के खेत की ओर बढ़ रही थी। नवागन्तुकों को लगा कि वे भी पांत में अपनी जगह पर टिके रह सकते हैं। एक घण्टा बीता और तब कहीं जाकर उसकी समझ में आया कि दो नौसिखियों को केवल एक पांत दी गई है, जबकि पुरानों में से प्रत्येक के पास एक-एक पांत है। पसीने से बुरी तरह सराबोर वह धीमे से अपने पड़ोसी से पूछता है :

"क्या यह जल्दी निबट जाएगा?"

गेहूं की कटाई पूरी हो गई है, और दंवरी का काम शुरू होने जा रहा है। शेरे अन्य सबकी भांति धूल और पसीने से सना, गीयरों की जांच और दंवरी के लिए तैयार किए गए पूलों का निरीक्षण कर रहा है।

"परसों से हम दंवरी का काम करेंगे, और कल घोड़े को लाने जाएंगे।"

"मैं जाऊंगा," ब्रातचेन्को की ओर एक प्रश्नसूचक दृष्टि फेंकते हुए सेम्योन ने कहा :

"तो जाओ न, तुम्हीं जाओ," अन्तोन ने कहा। "क्या घोड़ा अच्छा है?"

"हां, बुरा नहीं," शेरे ने जवाब दिया।

"कहां से खरीदा, — क्या, सोवखोज़ से?"

"हां, सोवखोज़ से।"

"कितने में?"

"तीन सौ में।"

"तब तो महंगा नहीं है।"

"हाँ!"

"तो यह कहो, सोवियत घोड़ा है!" कालीना इवानोविच ने कहा। फिर दाय-मशीन की ओर देखते हुए बोला: "एलीवेटर इतना ऊंचा क्यों रखा है?"

"सोवियत घोड़ा है न!" शेरे ने जवाब दिया। "लेकिन यह ऐसा कुछ ज़्यादा ऊंचा भी नहीं है। पुआल बहुत हल्का है।"

रविवार के दिन सभी आराम करते, नहाते-धोते, नाव पर सैर करने जाते, नवागन्तुकों के साथ व्यस्त रहते, और शाम को – सदा की भांति – मुख्य इमारत की बरसाती के नीचे लोग एक साथ जमा होते, और हिम-रानियों की सुगंधि को फेफड़ों में भरते तथा नवागन्तुकों को, जो काफ़ी दूरी पर चुपचाप खड़े होते, अपनी अनेकानेक विविध कहानियों से अत्यन्त प्रभावित करते रहते।

अचानक मिल के मोड़ से घूमकर, धूल के बादलों के बीच, एक घुड़सवार प्रकट हुआ। रास्ते में पड़े एक पुराने बायलर को देखकर उसका घोड़ा बुरी तरह चमका, और सरपट दौड़ने लगा। सुनहरे घोड़े पर सवार सेम्योन हवा से बातें करता ठीक हम तक आ पहुंचा। हम सब एकाएक चुप हो गए, ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की सांस नीचे। इससे पहले इस तरह के दृश्य केवल चित्रों में हमने देखे थे – परियों की कहानियों तथा गोगोलकृत "भयानक प्रतिशोध" के चित्रों में। घोड़ा सेम्योन को धारण किए एकबारगी सहज और सशक्त डग भर रहा था, – अपनी घनी, ख़ूब भरी-पूरी पूंछ को झुलाता और मुलायम तथा सुनहरी आभा से चमकती अयाल को हवा में पीछे की ओर फहराता हुआ। उसकी गति इतनी तेज़ थी कि हमारे आतंकित मस्तिष्क उसके हर घड़ी नये तथा अभिभूत कर देनेवाले डगों का अनुसरण नहीं कर पा रहे थे। उसकी सशक्त गरदन गर्वीले तथा खेल के अन्दाज़ में ख़म खाए थी और छरहरी टांगें बड़ी उदारता के साथ धरती नाप रही थीं।

सेम्योन ने हमारे पास आकर रास खींची, और घोड़े का सुन्दर छोटा सिर उसके वक्ष से जा लगा। उसकी आंखें, कोयले-सी काली, यौवन और उत्कण्ठा से भरी, अग्निमय कोनों से युक्त – अचानक कुछ ऐसी तेज़ नज़र उन आंखों ने फेंकी कि पहले से ही बेसुध अन्तोन ब्रात-

चेन्को के हृदय को सीधे बींधती चली गई। अन्तोन के हाथ उसके कानों से जा सटे, उसने मुंह खोला और उसका बदन थरथरा उठा।

"क्या यह हमारा है। क्या सचमुच? यह घोड़ा हमारा है?"

"हमारा है," सेम्योन ने गर्व के साथ कहा।

"तो दफ़ा हो अब इस घोड़े पर से!" अचानक अन्तोन करा-बानोव पर चिल्लाया। "क्या हमेशा उसी पर चढ़े रहोगे? क्या अभी तक मन नहीं भरा? देखो न, कितने झाग निकाल डाले हैं तुमने इसके मुंह से। इसे भी क्या तुमने अपने कुलकों का टट्टू समझ लिया है।"

अन्तोन ने रास थामी, ग़ुस्से से भरी नज़र के साथ अपने फ़रमान को दोहराया। सेम्योन काठी से उतर आया।

"ठीक है, दद्दा," उसने कहा। "मैं समझता हूं। ऐसा घोड़ा अगर पहले कहीं रहा होगा तो बस एक नेपोलियन के पास ही रहा होगा।"

अन्तोन हवा के झोंके की भांति घोड़े की गरदन को कोमलता से थपथपाते हुए काठी की ओर लपका। फिर, अचानक सकपकाकर अपनी आंखों को आस्तीन से सहलाते हुए एक तरफ़ खड़ा हो गया।

लड़के धीमे से हंसे। कालीना अपना गला साफ़ किया और फिर मुसकराया।

"इससे इनकार नहीं किया जा सकता," उसने कहा, "कि यह एक शानदार घोड़ा है। इतना ही नहीं, बल्कि मैं कहूंगा,—हमारे लिए यह ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा है। हम इसका सत्यानाश कर डालेंगे।"

"कौन सत्यानाश कर डालेगा?" फनफनाकर उसकी ओर झुकते हुए अन्तोन चिल्लाया। इसके बाद कोलोनीवासियों की ओर वह मुड़ा। "मैं मार डालूंगा।" वह गुर्राया। "मैं उसे मार डालूंगा जो इसे ज़रा भी हाथ लगाएगा। डंडे से मैं उसकी ख़बर लूंगा, लोहे की छड़ से उसका भेजा चूर-चूर कर दूंगा।"

उसने घोड़े का मुंह तेज़ी से दूसरी ओर मोड़ा और घोड़ा विनीत भाव से, उसे बैठाये हुए अस्तबल की ओर ले चला,—लचकदार, इतराहट-भरे डगों से, मानो इस बात से ख़ुश होकर कि आख़िर काठी में मालिक ने आसन जमाया है।

हमने घोड़े को 'मोलोदेत्स' नाम से सुशोभित किया।

८. नौवें और दसवें दस्ते

जुलाई के प्रारम्भ में तीन साल के पट्टे पर हमें मिल प्राप्त हो गई। वार्षिक किराया था तीन हज़ार रूबल। वह पूर्णतया हमारी बन गई थी। अन्य किसी की कैसी भी साझेदारी उसमें नहीं थी।

ग्राम-सोवियत से हमारे कूटनीतिक सम्बन्ध फिर विच्छिन्न हो गए थे। उसके सदस्यों का नया चुनाव होनेवाला था। मिल की उपलब्धि, लड़ाई के मोर्चे के दूसरे सेक्टर पर, हमारे अपने कोमसोमोल संगठन की विजय थी।

कोलोनी अब इतनी सराहनीय हद तक सम्पन्न तथा एक ठोस, सुनियमित उद्योग का रूप धारण करती जा रही थी कि ख़ुद हमें भी आश्चर्य होता था।

केवल कुछ ही समय पहले तक एकाध जोड़ी घोड़ों की ख़रीद भी हमारे साधनों को देखते दूभर मालूम होती थी, लेकिन गर्मियों के मध्य तक हम अच्छी नसल की गायों, भेड़ों के एक रेवड़ और नये फ़र्नीचर के लिए काफ़ी बड़ी रक़म नियत करने की स्थिति में हो गए।

और शेरे ने, हमारे बजट पर मुश्किल से ही कोई बोझ डाले बिना, चुपचाप एक नयी गोशाला का निर्माण शुरू कर दिया था। इससे पहले कि हम मुड़कर देख पाते, एक नयी इमारत खड़ी हो गई, जो एकबारगी सुन्दर भी थी और ठोस भी। वह अहाते के एक बाज़ू में बनी थी, और उसके अग्रभाग के सामने शेरे ने फूलों की क्यारियां बिछाकर इस धारणा को धूल में मिला दिया था कि गोशाला गंदगी और दुर्गन्ध की जगह है। नयी गोशाला में पांच सिमेन्ताल गायें खड़ी थीं, जबकि हमारे बछड़ों में से एक, सबको और यहां तक कि शेरे को भी आश्चर्य में डालते हुए, बड़ा होकर अचानक 'सीज़र' नामधारी बैल बन गया था। उसका असाधारण नुक़्तों का प्रदर्शन देखकर हम सब दंग रह जाते थे।

'सीज़र' के लिए सर्टीफ़िकेट लेने में शेरे को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा, लेकिन उसके सिमेन्ताल नुक़्ते इतने प्रत्यक्ष थे कि अन्त में सर्टीफ़िकेट जारी कर दिया गया। 'मोलोदेत्स' के पास भी सर्टीफ़िकेट प्राप्त सदस्य 'वासीली इवानोविच' था, — सोलह पूड वज़न

का एक सूअर जिसे प्रायोगिक स्टेशन से कुछ दिन पहले मैं कोलोनी में लाया था। वह असली नसल का सूअर था, और उसका नाम अग्रज त्रेपके के नाम पर रखा गया था।

इन विशिष्ट विदेशियों को बीज-रूप में अपनाकर उनकी नसल तैयार करना आसान हो गया।

दसवें दस्ते का क्षेत्र – सूअरगृह – स्तुपीत्सिन की कमान में एक बहुत महत्त्वपूर्ण संस्थान बन गया था। उत्पादन और नसल की शुद्धता की दृष्टि से उसका नम्बर केवल प्रायोगिक स्टेशनों से नीचे था।

चौदह सदस्यों की शक्ति से सम्पन्न दसवाँ दस्ता हमेशा अनुकरणीय ढंग से काम करता था। सूअरगृह कोलोनी की उन जगहों में से था जिनके बारे में एक क्षण के लिए भी कोई नाम को भी उंगली नहीं उठा सकता था। हल्के कंकरीट की वह एक शानदार इमारत थी, त्रेपके बन्धुओं की यादगार। वह हमारे अहाते[*] के बीचोंबीच – रेखागणित के हिसाब से ठीक उसके मध्यबिन्दु के स्थान पर खड़ी थी। लेकिन वह इतनी लक़दक़ और रोबदार थी कि किसी के मस्तिष्क में कभी यह ख़याल तक नहीं आता था कि उसकी स्थिति गोर्की कोलोनी के लिए लांछनीय है।

बहुत ही कम कोलोनीवासियों को उसमें पांव रखने दिया जाता था, हालांकि नवागन्तुकों को पर्यवेक्षी दलों का सदस्य होने के नाते प्रवेश करने दिया जाता था। साधारणतया भीतर जाने के लिए मेरे या शेरे के दस्तख़त किए हुए पास की आवश्यकता होती थी। इसलिए कोलोनीवासियों तथा गांव के लोगों की नज़र में दसवें दस्ते का काम रहस्यमय हो गया था, और उसमें दीक्षित होना एक विशेष सम्मान की चीज़ समझा जाने लगा था।

'वेटिंग रूम' में प्रवेश अपेक्षाकृत आसान था। इसके लिए केवल दसवें दस्ते के कमाण्डर स्तुपीत्सिन से अनुमति लेने की आवश्यकता होती थी। इसमें बिक्री के लिए शावक-सूअर रहते थे, और यहीं गांव की मादा-सूअरों को गर्भाधान के लिए लाया जाता था।

गर्भाधान का शुल्क तीन रूबल था जिसके बदले में ओवचारेन्को, स्तुपीत्सिन का सहायक और ख़ज़ान्ची, रसीद देता था। वेटिंग रूम में शावक-सूअर वज़न के हिसाब से निश्चित दामों पर बेचे जाते थे।

हालांकि किसान हमें क़ायल करने का प्रयत्न करते कि वज़न के सिहाब से सूअरों को बेचना हास्यास्पद है, और यह एक ऐसी चीज़ है जो पहले कभी सुनने-देखने में नहीं आई थी।

बच्चे होने के दिनों में वेटिंग रूम में आगन्तुकों की हर घड़ी भीड़ लगी रहती। शेरे प्रत्येक झोल में कभी सात से ज़्यादा सूअरों को नहीं रखता था, – केवल उन्हें रखता था जो सबसे पहले जन्म लेते और सबसे बड़े होते थे, और बाक़ी में से अधिकांश को सूअर-प्रेमियों को निःशुल्क बांट देता था। अपनी मां से अभी विलग हुए शावक-सूअरों के प्राप्तकर्त्ताओं को स्तुपीत्सिन लगे हाथ निर्देश भी देता कि रबड़ की टोंटी से उन्हें किस तरह दूध पिलाना चाहिए, कितना गाढ़ा दूध देना चाहिए, उसे कैसे नहलाना-धुलाना और ठोस ख़ुराक पर लाना चाहिए। दूध-पीते बच्चे केवल उन्हें ही दिए जाते थे जो ग़रीब किसानों की कमेटी का सर्टीफ़िकेट पेश करते थे। शेरे को पहले से पता रहता था कि बच्चे कब होंगे, इसलिए सूअरगृह के दरवाज़े पर आम तौर से एक समयसूचक तालिका लटका दी जाती थी कि इस या उस नागरिक को अपने शावक-सूअर को लेने के लिए कब आना चाहिए।

शावक-सूअरों के वितरण से ज़िले के समूचे ओर-छोर में हमारी ख्याति फैल गई, और देखते ही देखते गांव के लोगों में हमारे कितने ही मित्र हो गए। आस-पास के सभी गांवों में अब बढ़िया अंग्रेज़ी नसल के सूअर बढ़ और पल रहे थे जो प्रजनन के लिए भले ही उपयुक्त न हों, लेकिन मोटाने की क्षमता उनमें ख़ूब थी।

सूअरगृह का अगला विभाग 'नर्सरी' था। यह एक अच्छी-ख़ासी प्रयोगशाला थी। जिसमें प्रत्येक जीव का, उसके जीवन की भावी दिशा के बारे में निश्चय करने से पहले अत्यन्त कड़ाई के साथ निरीक्षण किया जाता था। शेरे के हाथ में हमेशा कई सौ कमसिन सूअर रहते थे। वसन्त में उनकी संख्या बढ़ जाती थी। कोलोनीवासी इन प्रतिभाप्रदत्त बिरवों में से कितनों को देखते ही पहचान लेते थे और अत्यन्त दिलचस्पी तथा ध्यान के साथ उनके विकास का अनुसरण करते थे। अत्यन्त होनहारों से मैं, कालीना इवानोविच, कमाण्डरों की परिषद तथा अन्य कितने ही कोलोनीवासी परिचित होते थे। मिसाल के लिए अपने जन्म के दिन से ही वासीली इवानोविच तथा मातिल्दा के आत्मज

पर सबका ध्यान केन्द्रित था। खूब हट्टा-कट्टा – बिलकुल रुस्तम – वह पैदा हुआ था। शुरू से ही उसने तमाम आवश्यक नुक़्तों का परिचय देना शुरू कर दिया था। साफ़ था कि वह अपने पिता के पदचिह्नों का अनुसरण करेगा। उसने हमारी आशाओं को ग़लत सिद्ध नहीं किया। शीघ्र ही, उसके जनक की बग़ल में, एक मांद उसे दे दी गई, और युवा त्रेपके के नाम के आधार पर उसका नाम प्योत्र वासीलियेविच रखा गया।

इसके और भी अधिक पीछे खुराकघर था। यह रसीदों और वज़न के नक़्शों का क्षेत्र था जहां बुर्जुआ सुख और शान्ति का चरम राज्य छाया रहता था। अगर मां के स्तनों से विलग करने पर, कुछ जीव दार्शनिक सन्देहों के चिह्न प्रकट करते या इस हद तक आगे बढ़ते कि सस्वर विविध दार्शनिक मान्यताओं का उच्चार करने लगते तो वे, महीना बीतने से पूर्व ही, चुपचाप अपनी पुआल पर पड़े तथा मेमने की भांति अपने राशन को पचाते नज़र आते। उनके जीवन-चरित्रों का अन्त होता ज़र्बदस्ती खिलाने में, और आखिर वह दिन आता जब उन्हें, पुराने बग़ीचे के निकट रेतीले ढलान पर, कालीना इवानोविच के अधिकार में दे दिया जाता। सिलान्ती बिना किसी दार्शनिक ऊहा-पोह के, उन्हें मांस में परिवर्तित कर देता। उधर स्टोर रूम में आल्योशा चर्बी भरने के लिए अपना पीपा तैयार रखता।

सबसे अन्तिम खंड मादासूअरघर था, लेकिन इसमें केवल महा पुरोहित ही प्रवेश कर सकते थे। नतीजा यह कि मैं खुद भी तीर्थों के इस तीर्थ के रहस्यों से अनभिज्ञ था।

सूअरगृह हमें अच्छी आमदनी देता था। वैसे यह आशा हमने कभी नहीं बांधी थी कि इतनी अल्प अवधि में यह एक मुनाफ़ा देनेवाला संस्थान बन जाएगा। अन्तिम छोर तक नियमित शेरे के फसलोत्पादन से चारे – चुकन्दर, कद्दू, मकई – का विशाल भण्डार अब हमारे पास सुरक्षित रहता था। शरद में हमें कुल इतना ही करना होता था कि इन्हें ढककर रखें।

मिल प्राप्त हो जाने से व्यापक सम्भावनाओं का उदय हो गया। पिसाई की आय (प्रति पूड चार पौंड) के अलावा मिल से हमें चोकर की प्राप्ति होती जो हमारे पशुधन के लिए सबसे मूल्यवान चारा थी।

मिल एक अन्य स्तर पर भी हमारे लिए महत्त्वपूर्ण थी, — आस-पास के समूचे किसान वर्ग के साथ उसने हमें एक नया आधार प्रदान कर दिया था। हमारे लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा व्यापक नीति को अमल में लाना सम्भव बना दिया था। मिल कोलोनी का विदेश मंत्रालय था। किसानों की हर घड़ी बदलती परिस्थिति के पेचीदा जाल में अपने को उलझाए बिना हमारे लिए अब ज़रा-सी भी हरकत करना सम्भव नहीं था। हर गांव में ग़रीब किसानों की एक कमेटी क़ायम थी, अधिकांश सक्रिय तथा अनुशासित। फिर मझोले किसान थे, मटर की ही भांति अपने अलग प्रकोष्ठों में बंद तथा विलग। फिर 'मालिक' भी थे — कुलक — अपने ही मज़बूत गढ़ों में दुर्दमनीय ; अवरुद्ध गुस्से तथा तीखी स्मृतियों ने जिन्हें बर्बर बना दिया था।

मिल को अपने हाथों में लेने के बाद शीघ्र ही हमने घोषणा की कि हम सामूहिकों से व्यवहार करना चाहते हैं, और यह भी कि हम उन्हें प्राथमिकता प्रदान करेंगे। हमने अनुरोध किया कि पहले से ही सामूहिकों को आसानी से बना लेते थे, समय की पाबन्दी के साथ उनमें आते थे, अपने प्रतिनिधियों के आदेशों का बिना किसी संशय के पालन करते थे, जल्दी-जल्दी पर शान्ति के साथ अपने हिसाब को निबटा लेते थे, जिससे मिल का काम सुगमता से चलता था। 'मालिक' छोटे सामूहिकों को बनाते थे, ख़ूब गुंथी हुई, लेकिन पारस्परिक सहानुभूतियों और रक्त के नातों से। उनका संगठन एक तरह की दुर्भेद्य ख़ामोशी से रक्षित था, और बहुधा यह तक पता लगाना कठिन होता था कि उनमें मुखिया कौन है।

लेकिन उस समय जब मझोले किसानों की कम्पनियों के मिल में चरण पड़े, कोलोनीवासियों के काम ने कठोर श्रम का रूप धारण कर लिया। वे कभी एक साथ नहीं आते थे, बल्कि सारे दिन एक-एक कर टपकते थे। उनके साथ उनका एक प्रतिनिधि भी होता, लेकिन वह अपना अनाज पहले देता, जैसे कोई बात ही न हो और तरह-तरह के सन्देहों तथा अन्यायपूर्ण व्यवहार की अस्पष्ट चेतना से उद्विग्न भीड़ को उसके हाल पर छोड़ते हुए घर का रास्ता नापता। सफ़र की ओट लेते हुए हमारे आसामी कलेवा के नाम पर जी भरकर दारू का पान करते, तरह-तरह के घरेलू द्वन्द्वों का हिसाब चटपट चुकता करने की

प्रबल वृत्तियों का प्रदर्शन करते, और दिन के भोजन का समय होने तक, सुदीर्घ वहसों तथा अपने हाथों का थोड़ा ज़ोर आज़माने के बाद, जो कोलोनीवासियों को काफ़ी भन्ना देता, कितने ही असामी येकाते-रिना ग्रिगोरियेवना के मरहम-पट्टी घर की शरण लेते। मिल में काम करनेवाला नौवें दस्ते का कमांडर ओसाद्‌ची येकातेरिना ग्रिगोरियेवना से झड़प करने के लिए जान-बूझकर आरज़ी अस्पताल में जाता।

"तुम क्यों उनकी मरहम-पट्टी में जान खपाती हो? जैसे उनका इलाज किया जा सकता है! वे दहक़ान हैं, तुम उन्हें नहीं जानतीं। उधर तुम उन्हें चंगा करोगी और उधर वे एक-दूसरे का गला काटना शुरू कर देंगे। उन्हें हमारे हवाले कर दो, तुम्हारी ओर से हम उनका इलाज कर देंगे। ज़रा चलकर देखो कि मिल में क्या हो रहा है।"

हमने जल्दी ही मिल में अपना वातावरण क़ायम कर लिया, – ज़िन्दादिली, आह्लाद और चुस्ती से पूर्ण, अनुशासन, निःशब्द डगों से, चुपचाप इधर से उधर गश्त लगाता और, अगर कोई उसके कड़े नियमों का उल्लंघन करता नज़र आता, तो उपयुक्त चौकसी के साथ उसके पकड़ ठीक-ठिकाने लगा दिया जाता।

जुलाई में हमने ग्राम-सोवियत के पुनर्निर्वाचन का संगठन किया। लूका सेम्योनोविच और उसके हमजोलियों ने बिना किसी संघर्ष के अपने पद ख़ाली कर दिए। पावेल पावलोविच निकोलायेन्को अध्यक्ष और कोलोनीवासियों में से देनीस कुदलाती ग्राम सोवियत के लिए चुना गया।

६. चौथा मिश्रित दस्ता

जुलाई के अन्त में चौथे मिश्रित दस्ते के पचास सदस्य बुरून के कमान में काम करने लगे। बुरून चौथे मिश्रित दस्ते का माना हुआ कमाण्डर था, और इस कठिन किन्तु सम्मानपूर्ण पद के लिए अन्य कोई भी कोलोनीवासी दावा नहीं करता था।

चौथा मिश्रित दस्ता पौ फटने से लेकर सुरज छिपने तक काम करता था। लड़कों का बहुधा कहना था कि वे 'बिना सिगनलों' के

काम करते हैं, कारण चौथे मिश्रित दस्ते के सदस्यों को काम पर बुलाने या उनके काम के ख़त्म होने की घोषणा करने के लिए कोई बिगुल नहीं बजाए जाते थे। बुरून का चौथा मिश्रित दस्ता फिलहाल अनाज फटकने का काम कर रहा था।

सुबह के चार बजे जागने की बिगुल-ध्वनि और कलेवा के बाद श्वेतगृह के मुख्य फाटक के सामने फूलों की क्यारी के किनारे चौथा मिश्रित दस्ता पंक्तिबद्ध हो जाता। तमाम शिक्षक कोलोनीवासियों के दाहिनी ओर आ जमते। चौथे दस्ते के काम में हिस्सा लेने के लिए वस्तुतः वे बाध्य नहीं थे, अपवाद रूप में उन दो को छोड़कर जिनकी काम करने की ड्यूटी लगी होती थी। लेकिन चौथे मिश्रित दस्ते के साथ काम करना बहुत दिनों से कोलोनी में शिष्टता का सूचक बन गया था। फलत: आत्म प्रतिष्ठा से युक्त कोई भी व्यक्ति चौथे मिश्रित दस्ते में संगठित होने का आदेश ग्रहण करने से नहीं चूकता था। शेरे, कालीना इवानोविच, सिलान्ती ओत्चेनाश, धुलाई-घर की हमारी दो कार्यकर्त्रियां, ओक्साना और राखिल, मंत्री स्पिरिदोन और मिल का सीनियर रोलर जो इस समय छुट्टी पर था, पहियासाज़ी का काम सिखानेवाला कोज़िर, लाल बालोंवाला उदास-सा हमारा बाग़वान मिज़-याक, उसकी सुन्दर बीवी नादेन्का, जुरबिन की स्त्री तथा कुछ और – मैं सब को जानता तक नहीं था – वहां खड़े होते।

और फिर कोलोनीवासियों की पांतों में से कितने ही स्वयंसेवक के रूप में काम करनेवाले सदस्य जो संयोगवश उस समय अपने विभिन्न कार्यों से मुक्त होते – वहां मौजूद रहते।

अकेली मारिया कोन्द्रातियेवना बोकोवा ही ऐसी थी जो मुंह अंधेरे उठने का कष्ट करती, और एक पुराना सूती सराफ़ान पहने बाहर निकल आती थी। पांतों में अपना स्थान नहीं ग्रहण करती, बल्कि बर-साती की सीढ़ियों पर बैठकर बुरून से बतियाती रहती। इधर कुछ दिनों से मारिया कोन्द्रातियेवना ने मुझे भी चाय या आइसक्रीम के लिए बुलाना बंद कर दिया था, लेकिन मेरे साथ वह उतने ही अच्छे ढंग से पेश आती थी जितने कि औरों के साथ। उसके प्रति ज़रा से भी क्षोभ का मैं अनुभव नहीं करता था। बल्कि मैं उसे पहले से ज़्यादा पसंद करता था। उसकी आंखें अधिक गम्भीर और अधिक कठोर हो

गई थीं। उसकी हंसी-ठठोली अब अधिक सहृदय हो चली थी। इस बीच मारिया कोन्द्रातियेवना कितने ही नन्हे लड़कों और लड़कियों के साथ घुल-मिल गई थी। सिलान्ती से उसने मित्रता कर ली थी, और हमारे कठिन-प्रकृति लड़कों में से कई उसके क़ाबू में आ गए थे। मारिया कोन्द्रातियेवना एक मोहक, आह्लादपूर्ण जीव थी, लेकिन यह सब होने पर भी मैं उसके पास जाकर धीमी आवाज़ में कहता :

"मारिया कोन्द्रातियेवना, जाइये और पंक्ति में खड़ी होइये। काम करनेवालों की पंक्ति में आपके खड़े होने से सभी को ख़ुशी होगी।"

मारिया कोन्द्रातियेवना सुबह की आभा पर मुसकराती, अपनी गुलाबी उंगलियों से एक विद्रोही, किरन-चुम्बित लट को संवारती, अपनी गहरी भरी-पूरी आवाज़ में थोड़ा फुसफुसाते हुए जवाब देती :

"धन्यवाद, क्या काम करना होगा मुझे आज, – पटकने का, क्यों?"

"पटकने का नहीं, बल्कि फटकने का," बुरून ने कहा। "आप बस अनाज का परिमाण लिखती जाना।"

"क्या मैं यह अच्छी तरह कर सकूंगी?"

"मैं आपको बता दूंगा कि कैसे क्या करना होगा।"

"क्या आप मेरे लिए यह एक ऐसा काम नहीं खोज निकाला है जो ज़रूरत से ज़्यादा आसान है?"

बुरून मुसकराया।

"हमारा सारा काम एक जैसा है। इस बारे में शाम को बताना, जब चौथा मिश्रित दस्ता ब्यालू के लिए आता है।"

"ओह। कितना सुहावना है यहा। शाम को भोजन, काम के बाद।"

मैंने मारिया कोन्द्रातियेवना की भावुकता को लक्षित किया, और अपनी मुसकान छिपाने के लिए एक ओर को मुंह कर लिया। मारिया कोन्द्रातियेवना, जो अब दाहिने बाज़ू की पांत में खड़ी हुई थी, इस या उस चीज़ पर संगीतमय ध्वनि के साथ हंस रही थी, और कालीना इवानोविच – सबसे ज़्यादा बहादुर जीव – उसका हाथ दबा रहा था, और साथ ही हंस भी रहा था।

आठ ढोलची एक हल्की गत बजाते दौड़ते हुए आए, और दाहिने

ओर की पंक्ति में खड़े हो गए। चार बिगुलवादक, अपने बालसुलभ लचकीले आकारों को थोड़ा झुमाते हुए निकट आए और तैयारी की मुद्रा में खड़े हो गए। कोलोनीवासियों ने अपने-आपको चौकस किया और गम्भीर हो उठे।

"झण्डे की सलामी। सावधान!"

पांतों के समूचे विस्तार में नंगी, कोमल बांहें तेज़ी से ऊपर उठीं, – सलामी। नास्त्या नोचेवनाया जो उस दिन कोलोनी मोनीटर थी, अपने सबसे अच्छे कपड़ों में सजी और बांह में लाल पट्टी कसे, ढोलों की गड़-गड़ाहट और तुरहियों के रुपहले अभिनन्दन की छाया में, रेशमी गोर्की पताका को दाहिने बाज़ू की ओर ले चली, अग़ल-बग़ल दो स्थिर संगीनों की निर्मम चमचमाती इस्पात से रक्षित।

"चार-चार की पांत – दाहिने। बढ़ चलो।"

वयस्कों की पांतों में एक हल्की-सी हलचल हुई, मारिया कोन्द्रा-तियेवना अचानक चिचिया उठी, उसने घबराकर मेरी ओर देखा, लेकिन ढोलचियों की मार्च ने हरेक को चौकस कर दिया। चौथा मिश्रित दस्ता काम के लिए रवाना हो गया।

बुरून ने लपककर दस्ते को पकड़ा, क़दम से क़दम मिलाने के लिए अपना पांव उठाया और आगे राह दिखाता उस ओर ले चला जहां सिलान्ती द्वारा निर्मित गेहूं का एक ऊंचा साफ़-सुथरा अम्बार देर से खेत को सुशोभित किए था। उसकी बग़ल में अन्य कई छोटे-छोटे रई, जौ और जई के अम्बार लगे थे जो उतने साफ़ नहीं थे। ये अम्बर कराबानोव, चोबोत और फ़ेदोरेन्को ने बनाए थे। यह मानना होगा कि लड़कों ने चाहे कितना श्रम और पसीना क्यों न खपाया हो, वे सिलान्ती को मात करने में असमर्थ थे।

पड़ोस के एक गांव से किराए पर लाए गए पावर-इंजन की बग़ल में, तेल के दाग़ लगे मिस्त्री – मेकेनिक – गम्भीरता के साथ चौथे दस्ते के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। फटकने की मशीन हमारी अपनी थी, अभी बसन्त में ही किश्तों पर उसे खरीदा गया था। हमारे जीवन की हर अन्य चीज़ की भांति वह भी नयी थी।

बुरून तेज़ी के साथ अपने दस्ते का निर्माण कर लेता। कारण, हर चीज़ की एक दिन पहले से ही योजना तैयार होती थी, – यह योंही,

बेकार के लिए चौथे मिश्रित दस्ते का पुराना कमाण्डर नहीं था। हमारी पताका जई के उस अम्बार पर फहरा दी जाती जिसे सबसे बाद में फटका जानेवाला था।

दिन के भोजन के समय तक गेहूं का काम ख़त्म हो जाता। फटकने की मशीन का ऊपरी प्लेटफ़ार्म सबसे ज़्यादा चहल-पहल तथा अत्यन्त जमघट की जगह होता। यहां लड़कियां होतीं, गेहूं की भूरी-सुनहरी भूसी से आच्छादित, आंखों में चमक लिए, लापोत के साथ जो लड़कों का एकमात्र प्रतिनिधि होता। वह जैसे थकना नहीं जानता था, एक क्षण के लिए भी अपनी कमर या ज़बान को आराम नहीं देता था। सबसे अधिक महत्व तथा ज़िम्मेदारी की जगह पर सिलान्ती का गंजा सिर और उसकी माशा-अल्लाह मूंछें नज़र आतीं, उसी भूसी में पगी हुई।

इसी समय लापोत का ध्यान ओक्साना पर केन्द्रित था।

"केवल मज़ाक़ में कोलोनीवासियों ने तुमसे कहा कि वह गेहूं है। वह गेहूं नहीं, मटर है।"

ओक्साना ने गेहूं के अधखुले पूले को अपने हाथों में लिया और उसे लापोत के सिर पर रख दिया, लेकिन इसने उत्साह की उस लहर को ज़रा भी कम नहीं किया जो लापोत के शब्दों से लहरा उठी थी।

अनाज फटकने का समय मुझे बड़ा अच्छा लगता है। और सांझ को तो वह ख़ास तौर से मोहक हो उठता है। मशीन की एकरस धड़कन अब एक संगीत का रूप धारण कर लेती है और कान इस संगीत के विचित्र स्वरों के अभ्यस्त हो जाते हैं जो क्षण-प्रतिक्षण अनन्त विविधता से युक्त होने पर भी प्रत्येक अपने पहलेवाले क्षण से अभिन्न होता है। और एक बहुत ही आह्लादपूर्ण पार्श्वभूमि की यह संगीत रचना करता है, – उस पेचीदा गति के लिए जो इस समय तक थक जाने पर भी थकने का नाम लेने से जमकर इनकार करती है। बारी-बारी से एक-एक पांत में जैसे किसी जादू से संचालित हर घड़ी हम होते अम्बार से पूले उठते और कोलोनीवासियों के हाथों के संक्षिप्त कोमल स्पर्श द्वारा अपनी अन्तिम यात्रा पर द्रुतगति से रवाना होते और कभी न तुष्ट होनेवाली मशीन के यन्त्रों में समा जाते, – अपने पीछे छितरे हुए कणों के बगूले और जानदार पूलों से विच्छिन्न उड़ते अनाज की

आहों-कराहों को छोड़ते हुए। और बगूलों के इस ऊहा-पोह में, अनगिनती पूलों की छटपटाहट के बीच, कोलोनीवासी हंसते और मज़ाक करते, थकान और विह्वलता से डगमगाते झुकते, दौड़ते और भारी बोझों के नीचे दोहरे हो जाते। भूसी से आच्छादित लेकिन साथ ही ग्रीष्म की शान्त संध्या की स्फूर्तिदायिनी शीतलता का भी अनुभव शुरू करते। ध्वनियों की इस सिम्फ़ोनी में, खनखनाती मशीन की एकरस धुनों में, ऊपरी प्लेटफ़ार्म की त्रासदायक बेसुरी आवाज़ों में वे एक आह्लादपूर्ण समय व्यतीत करते। नत्त्वतः मुख्य, स्वस्थ मानव को अलग-अलग पहचान-ना कठिन होता, लेकिन ठीक उतना ही कठिन फटकन – क्षेत्र के उस आदि-भौतिक सम्मोहन से अपने-आपको खींचकर अलग करना होता। कोलोनीवासियों की सुनहरी-भूरी आकृतियां पहचानी तक न जातीं। उन्हें देखकर फ़ोटो चित्रों की नेगेटिव प्लेटों की याद हो आती। लाल, काले और सुनहरे बालोंवाले, अब सब एक से मालूम होते। यह यक़ीन करना क़रीब-क़रीब असम्भव-सा लगता कि भूत-जैसी वह झुकी हुई आकृति, हाथ में नोटबुक लिए जो भोर से ही ठीक इस चक्रवात के बीच खड़ी है, मारिया कोन्द्रातियेवना हो सकती है। उसकी बग़ल में एक अन्य अटपटी, बेढब छाया को पहचानना कठिन था। केवल सदा की भांति उसकी शिष्ट और गूढ़ आवाज़ से ही मैं यह जान सका कि वह एडुअर्ड निकोलायेविच है।

"कामरेड बोकोवा, कितना जौ अब हमारे पास हो गया?"

मारिया कोन्द्रातियेवना ने सूर्यास्त की चमक की ओर अपनी नोटबुक का रुख़ किया।

"चार सौ पूड तो अब तक हो भी चुके हैं," अपने तेज़ कण्ठ से कुछ ऐसी थकी हुई आवाज़ में उसने जवाब दिया कि मैं सचमुच उसके लिए दुःख का अनुभव करने लगा। लापोत तो थकान की अति होने पर भी कोई रास्ता निकाल लेता था।

"गलातेन्को!" वह चिल्लाया, इतनी तेज़ आवाज़ में कि समूचे फटकन क्षेत्र में सुनाई दे। "गलातेन्को!"

गलातेन्को, जो अपने सिर भूसे के दो पूड बोझ को पंजिका की मदद से सन्तुलित कर रहा था, जवाब में चिल्लाते समय क्षण-भर के लिए बोझ के नीचे डगमगा गया:

"क्यों क्या है?"

"एक मिनट आओ, तुम्हारी ज़रूरत है।"

गलातेन्को लापोत में धार्मिकों-जैसी भक्ति रखता था। वह उसके मज़ाक़, उसकी प्रफुल्लता और स्नेह पर मुग्ध था। कारण लापोत ही एक ऐसा था जो गलातेन्को की क़द्र करता था और उसने ही हमें विश्वास दिलाया था कि वास्तव में वह कभी काहिल नहीं रहा।

गलातेन्को ने इंजन के सामने भूसे का बोझ धरती पर पटका और लपककर फटकने की मशीन के पास पहुंचा। अपनी पंजिका पर टिकते हुए वह मन-ही-मन खुश था कि इस सार्वभौम हल्ले-गुल्ले के बीच क्षण-भर विश्राम करने का एक बहाना तो मिला। उसने लापोत से बातचीत शुरू की:

"मुझे किसलिए तुमने आवाज़ दी थी?"

"सुनो, मित्र," ऊपर से नीचे को झुकते हुए लापोत ने कहा। इर्द-गिर्द सब के कान बातचीत की ओर लग गए। उन्हें आशा थी कि कोई मनोरंजक बात सुनने को अवश्य मिलेगी।

"हां तो, मैं सुन रहा हूं।"

"ज़रा हमारे सोने के कमरे में जाओ।"

"हां तो?"

"वहां, मेरे तकिए के नीचे..."

"क्या?"

"मेरे तकिए के नीचे, मैंने कहा..."

"लेकिन क्या?"

"मेरे तकिए के नीचे तुम्हें..."

"यह तो मैं समझ गया कि तुम्हारे तकिए के नीचे..."

"...एक जोड़ा अतिरिक्त हाथ।"

"हां तो, क्या करने को कहते हो तुम मुझे उन हाथों के साथ?" गलातेन्को ने पूछा।

"बस जितनी भी जल्दी हो उन्हें यहां ले आओ, देखो न, ये अब किसी काम के नहीं रहे," लापोत ने कहा, और सार्वजनिक हंसी के बीच अपने हाथों को फैलाकर दिखाने लगा।

"ओह, मैं समझा," गलातेन्को ने कहा।

उसने अब महसूस किया कि लापोत के शब्दों तथा सम्भवतः ख़ुद उस पर भी सब हंस रहे हैं। उसने पूरी कोशिश की थी कि कोई मूर्ख-तापूर्ण या हास्यास्पद बात उसके मुंह से न निकले। उसका ख़याल था कि इसमें वह सफल भी हुआ है। कारण, बोलने का काम केवल लापोत ने ही किया था। लेकिन हुआ यह कि सब और भी अधिक हंसी में बह चले। फटकने की मशीन की आवाज़ ने अलसाहट दिखाना और बुरून ने झिड़कना शुरू किया।

"यह सब क्या है? तुम लोगों ने काम करना क्यों रोक दिया? यह सब तुम्हारी बदौलत है गलातेन्को।"

"मैंने तो क़तई ..."

और सब चुप हो गए जब लापोत ने गुरु-गम्भीर आवाज़ में और थकान, उद्विग्नता तथा बुरून के प्रति मित्रतापूर्ण विश्वास का अद्भुत अभिनय करते हुए कहा:

"देखो न, ये हाथ किसी काम के नहीं हैं। सो गलातेन्को को जाने दो। वह मेरे अतिरिक्त हाथ वहां से उठा लाएगा।"

बुरून भी तुरन्त उसी रंग में रंग गया, और थोड़ा शिकायत-भरे लहजे में गलातेन्को से बोला:

"लेकिन सो तो ठीक। जाओ और उन्हें ले आओ। निश्चय ही यह कोई भारी मुसीबत का काम नहीं है। तुम भी कितने आलसी हो गलातेन्को।"

फटकाई का ताल-स्वर-युक्त संगीत समाप्त हुआ और उसकी जगह ठहाकों तथा कराहों के उच्च स्वरीय, बेदम कर देनेवाले, ताल-स्वर विहीन विशेष संगीत ने सिर उभारा। यहां तक कि शेरे भी हंस रहा था, इंजन को छोड़ मिस्त्री अपने चीकट घुटनों को पकड़े हुए हंसी में बह चले थे। गलातेन्को ने शयनागारों की ओर रुख़ किया, सिलान्ती ने उसकी पीठ की ओर देखा।

"सो यह बात है, मित्र।"

गलातेन्को स्थिर खड़ा हो गया। लगता था जेसे कुछ सोच रहा हो। भूसे के एक अम्बार की ऊंचाई पर से कराबानोव उस पर चिल्लाया:

"रुक क्यों गए? जाओ न।"

लेकिन गलातेन्को की पूरी बत्तीसी खिल उठी। वह अब समझा। धीरे-धीरे फटकाई क्षेत्र में लौट आया। वह अभी भी मुसकरा रहा था। लड़कों ने भूसे के अम्बार पर से पूछा :

"कहां खिसक गए थे?"

"लापोत ने मुझसे कहा कि जाओ, और कुछ अतिरिक्त हाथ ले आओ।"

"अच्छा, तो फिर तुम गए क्यों नहीं?"

"उसके पास अतिरिक्त हाथ-वाथ कुछ नहीं हैं। वह केवल मज़ाक़ कर रहा था।"

बुरून ने आदेश दिया :

"बस, बस, अतिरिक्त हाथों के बारे में अब और कुछ नहीं। काम चालू रखो।"

"बहुत हो चुका तो छोड़ो," लापोत ने कहा, "हमें पुरानों से ही काम लेना पड़ेगा।"

नौ बजे शेरे ने इंजन को बंद किया और बुरून के पास पहुंचा।

"लड़के थककर चूर हो गए हैं। और अभी आधे घंटे का काम और बाक़ी हैं।"

"चिन्ता नहीं," बुरून ने कहा। "हम इसे ख़त्म करेंगे।"

लापोत ऊपर चिल्लाया :

"साथी गोर्कीआइटो, अभी आध घंटे का काम बाक़ी है। और मुझे भय है कि यह आध घंटा हमें मारकर ही रहेगा। सो मैं सहमत नहीं।"

"तो फिर तुम क्या चाहते हो?" बुरून ने संदिग्ध भाव से पूछा।

"मैं विरोध करता हूं। आध घंटे में हमारी बधिया बैठ जाएगी। क्यों, ठीक है न, गलातेन्को?"

"अरे हां, सच। आध घंटा बहुत होता है।"

लापोत की बंधी हुई मुट्ठी हवा में उठी।

"आध घंटे तक हम नहीं रुक सकते। तो हर एक चीज़ को, इस समूचे ढेर को, पाव घंटे में ख़त्म करना होगा। आध-वाध घंटा कुछ नहीं।"

"यह ठीक है।" गलातेन्को चिल्लाया। हां, "यह ठीक है।"

हंसी की नई बाढ़ के बीच शेरे ने इंजन को चालू किया। बीस

मिनट के भीतर सारा काम ख़त्म हो गया। और अचानक भूसे पर लेटकर लम्बी तानने की इच्छा ने सबको अभिभूत कर लिया। लेकिन बुरून ने आदेश दिया : "फाल इन।"

बिगुल और ढोलवादक, जो देर से इस घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे, लपककर अगली पांत में आ गए। चौथा दस्ता पताका को उसके स्थान – श्वेतघर – की ओर ले चला। मैं वहीं फटकन-क्षेत्र में ही रह गया। श्वेतघर में झंडे की सलामी की आवाज़ तिरती हुई मुझे सुनाई दी। अंधेरे में एक आकृति जो अपने हाथ में एक लम्बी छड़ी लिए थी, मुझसे टकरा गई।

"कौन है?" मैंने पूछा।

"मैं हूं, अन्तोन सेम्योनोविच। फटकने की मशीन के बारे में बात करने मैं आपके पास आया हूं – वोलोवी गांव से, मेरा नाम वोलोविक है।"

"अच्छी बात है। चलो, घर चलें।"

हम भी श्वेतघर की ओर चल दिए। वोलोविक, जो प्रत्यक्षत एक वृद्ध आदमी था, अंधेरे में बुदबुदा रहा था :

"यहां अच्छा है, जैसे कि लोग यहां पहले करते थे।"

"सो कैसे?"

"हां तो, देखो न। क्रास और पताकाओं के साथ आप अनाज फटकने निकलते हैं, क़ायदे से।"

"क्रास आपको कहां दिखाई दे गए? वह तो केवल पताका है। और हमारे पास पादरी-वादरी भी कुछ नहीं हैं।"

वोलोविक थोड़ा आगे लपक गया, अपनी छड़ी को हवा में हिलाता हुआ।

"मुख्य चीज़ पादरी नहीं है," उसने चिल्लाकर कहा। "मुख्य चीज़ यह है कि लोग उत्सव मनाते हैं। यह एक तरह का उत्सव है। देखो न, लोगों के लिए फ़सल बटोरकर लाना उत्सवों का उत्सव है और हमारे लोग यह भूल गये हैं।"

श्वेतघर चहल-पहल से गूंज रहा था। कोलोनीवासी थके थे, लेकिन इतने नहीं कि नदी में डुबकी लगाने से मुंह मोड़ें। स्नान के बाद थकान जैसे छूमन्तर हो गई। बाग़ में मेज़ों पर चहल-पहल और

ख़ुशी छलक रही थी, और मारिया कोन्द्रातियेवना दुनिया-भर के कारणों से आंसू बहाने के लिए तैयार थी – इसलिए कि वह थकी थी, कि वह कोलोनीवासियों को प्यार करती थी कि मानवता का सच्चा विधान उसके जीवन में मूर्त हो उठा था कि उन्मुक्त काम करनेवाले सामूहिक आनन्द का उसने भी उपभोग किया था।

"हां तो," बुरून ने उससे पूछा, "क्या तुम्हारा काम बहुत आसान था?"

"कह नहीं सकती," मारिया कोन्द्रातियेवना ने कहा, "शायद वह कठिन बात यह नहीं है। जो हो, ऐसा काम ही आनन्द प्रदान करता है।"

भोजन की मेज़ पर सिलान्ती मेरी बग़ल में बैठा था। अपने अन्दाज़ में वह बोला।

"उन्होंने, आप जानो, आपको यह सूचना देने के लिए कहा है रविवार के दिन, जैसा कि कहते हैं, शादी की बात करनेवाले आएंगे, ओल्या के बारे में। सो, आप जानो, यह बात है।"

"निकोलायेन्को के यहां से?"

"आप जानो, पावेल इवानोविच की – मतलब कि उस बुढ़ऊ – की ओर से। और, अन्तोन सेम्योनोविच, आपको अपना श्रेष्ठतम चरण आगे रखना चाहिए। आप जानो, हाथ पोंछने के तौलिए वहां ज़रूर हों, और नमक, और रोटी। बस, यही रीति के अनुसार सब करना होगा।"

"सिलान्ती, पुराने साथी, यह सब तुम्हीं देखना।"

"सो तो मैं, सब देख लूंगा। लेकिन, आप जानो, जो है सो, ऐसे मौक़ों पर थोड़ा पीना-पिलाना भी चलता है, – घरेलू दारू या और कुछ, आप जानो।"

"दारू-वारू नहीं, सिलान्ती, लेकिन तुम मीठी मदिरा की दो बोतलें ख़रीद सकते हो।"

१०. विवाह

रविवार के दिन पावेल इवानोविच निकोलायेन्को के यहां से लोग हम से मिलने आए। वे ऐसे लोग थे जिन्हें हम जानते थे – कुज़्मा पेत्रोविच मोगोरिच, और ओसिप इवानोविच स्तोमूख़ा। कुज़्मा पेत्रोविच

को कोलोनी में सब ख़ूब जानते थे। कारण, वह हम से थोड़ी ही दूर, नदी के ठीक उस पार रहता था। वह बहुत ही बातूनी आदमी था, उसका चरित्र कोई दृढ़ नहीं था। उसके पास सरपतों से भरा एक रेतीला खेत था। उसमें वह विरले ही काम करता था। दुनिया-भर का कबाड़ उसमें उगाता था, मुख्यत खुद मालिक की मर्ज़ी से। खेत में अनगिनत पगडंडियां बनी थीं, जो हरेक के घर तक जाती थीं। कुज़्मा पेत्रोविच का चेहरा भी उसके खेत के ही समान था। काम की कोई चीज़ उसमें उग नहीं पाती थी, और उसकी श्यामल छितरी हुई दाढ़ी का प्रत्येक गुच्छा सरपत की भांति मालूम होता था जो अपने स्थायी हित-अहित की बिलकुल परवाह न कर बस सीधे उग आया था। उसके चेहरे पर अनगिनत पगडंडियों का जाल बिछा था: झुर्रियां, सिलवटें, लीकें। केवल एक चीज़ ऐसी थी जो कुज़्मा पेत्रोविच को उसके खेत से विशिष्ट बनाती थी। वह थी उसकी लम्बी पतली नाक।

ओसिप इवानोविच, इसके प्रतिकूल, देखने में बहुत अच्छा था। उसका चेहरा सुन्दरतम और उसकी आकृति इतनी अच्छी थी कि गोंचारोव्का में अन्य कोई उसकी होड़ नहीं ले सकता था। बड़ी-बड़ी लाल मूंछें, और बढ़िया, उद्धत और थोड़ी उभरी हुई आंखें। उसकी साज-सज्जा आधी शहरी और आधी फ़ौजी थी, और वह हमेशा चुस्त तथा कमनीय दिखता था। अधिक सम्पन्न किसानों में उसके कितने ही सम्बन्धी थे, लेकिन किसी कारण से वह खुद भूमिहीन था, और शिकार करना प्रत्यक्षत: उसका एकमात्र धंधा था। वह ठीक नदी के किनारे, एक एकाकी झोंपड़ी में रहता था, जो गांव से मुंह मोड़े मालूम होती थी।

हालांकि हम यह जानते थे कि मेहमान आनेवाले हैं, फिर भी जैसे अचानक ही वे हमारे यहां आ धमके। हालांकि हम तैयारियां पक्की तौर से नहीं कर पाये थे। और फिर हम यह कैसे जानते कि ऐसे अपरिचित व्यापार के लिए आवश्यक क्या तैयारियां करनी होती हैं। माना कि जब वे आए तब मेरे दफ़्तर में सभी कुछ ठोस, शान्त और रोबदार था। कमरे में कालीना इवानोविच और मेरे सिवाय और कोई नहीं था। आगन्तुकों ने प्रवेश किया, हमारे हाथों को दबाया

और सोफ़े पर बैठ गये। मैं समझ नहीं रहा था कि शुरूआत कैसे की जाए, सो मुझे ख़ुशी हुई जब ओसिप इवानोविच ने सरलता के साथ श्रीगणेश किया:

"पहले इस तरह के मामलों में वे शिकारियों के बारे में कहानियां सुनाते थे: 'हम एक बार शिकार पर गए, और एक लोमड़ी से हमारी मुठभेड़ हुई, और वह लोमड़ी एक सुन्दर लड़की थी...' लेकिन मैं समझता हूँ कि अब उस सबकी आवश्यकता नहीं, हालांकि मैं ख़ुद भी एक शिकारी हूं।"

"बिलकुल ठीक," मैंने कहा।

कुज़्मा पेत्रोविच ने सोफ़े पर बैठे-बैठे अपने पांव हिलाये। उसकी दाढ़ी भी हिल उठी।

"सब बकवास है, मुझसे पूछो तो।" उसने टोका।

स्तोमूख़ा उसकी बात का स्पष्टीकरण करते हुए बोला:

"बात यह नहीं कि यह बकवास है, बल्कि यह कि ज़माना अब वही नहीं रहा।"

"ज़माने भी तरह-तरह के होते हैं," कालीना इवानोविच ने नसीहत के अन्दाज़ में कहना शुरू किया। "एक समय लोगों के मस्तिष्क अंधकार में रहते थे, और यह उनके लिए काफ़ी नहीं होता, ख़ुद अपने को डराने के लिए दुनिया-भर के भूत-प्रेतों का वे आविष्कार करते थे, और मूर्खों की भांति जीवन बिताते थे, हर चीज़ से डरते हुए – बिजली से, चांद से, काली बिल्ली से। लेकिन अब हमारे पास सोवियत सरकार है, अब हमें किसी चीज़ का डर नहीं है। रास्ते में 'घर-दबोच दल' को छोड़कर।"

स्तोमूख़ा ने कालीना इवानोविच को टोका जो प्रत्यक्षत: भूल गया था कि हम दार्शनिक वार्तालाप के लिए इकट्ठे नहीं हुए हैं।

"जिस काम के लिए हम आए हैं, हम बिलकुल सीधे-सादे ढंग से उसे आपके सामने रखेंगे। हमें जिन लोगों ने भेजा है, उन्हें आप ज़ानते हैं – पावेल इवानोविच निकोलायेन्को और उनकी घरवाली येवदोकीया स्तेपानोवना ने। यहां, कोलोनी में, आप पिता की तरह हैं। इस नाते हम आपसे पूछते हैं कि क्या आप अपनी, लड़की ओल्या

वोरोनोवा का उनके लड़के पावेल पेत्रोविच के साथ, जो इस समय ग्राम-सोवियत के अध्यक्ष हैं, विवाह करने को राज़ी हैं ?"

"हम आपके उत्तर के प्रार्थी हैं," कुज़्मा पेत्रोविच ने सुर मिलाया। "अगर आप सहमत हों, तो जैसा कि पिता के राज़ी होने पर होता है, आप हमें तौलिए और रोटी अर्पित करें। अगर आप राज़ी नहीं हैं तो हमारा आप से अनुरोध है कि इस बात को अन्यथा न समझें कि हमने आपको कष्ट दिया।"

"ही-ही। इतना ही नहीं है," कालीना इवानोविच ने कहा। "आपके मूर्खतापूर्ण विधान का क़ायदा तो यह है कि आपको अपने साथ एक कद्दू लेकर घर जाना चाहिए।"

"कद्दुओं के लिए हम ज़ोर नहीं देंगे," ओसिप इवानोविच मुसकराया। "फिर, यह उसका मौसम भी नहीं है।"

"सो तो सच है," कालीना इवानोविच ने सहमति प्रकट की, "लेकिन पुराने दिनों में कुंवारी लड़की, अगर वह जन्म से घमण्डी हो तो, एक कमरा कद्दुओं से भरा रखती थी। हो सकता है कि उनकी ज़रूरत पड़ ही जाए। अगर विवाहार्थी नहीं आते थे – तो वह, हरामख़ोर, उनका दलिया रांधती थी। कद्दुओं का दलिया बढ़िया होता है, ख़ास तौर से अगर बाजरे के साथ बनाया जाए .."

"हां तो, को पिता के नाते, आप क्या जवाब देते हैं ?" ओसिप इवानोविच ने पूछा।

मैंने जवाब दिया :

"इस सम्मान के लिए, आपको और पावेल इवानोविच तथा येवदोकीया स्तेपानोवना को, बहुत-बहुत धन्यवाद। लेकिन , मैं पिता नहीं हूं, और मुझे पिता का अधिकार प्राप्त नहीं। ख़ुद ओल्या से पूछना चाहिए और, कहने की आवश्यकता नहीं, बाद की अन्य सब बातें कमाण्डरों की परिषद तय करेगी।"

"यह सब बताना हमारा काम नहीं कि आप कैसे क्या करें। नये रिवाजों के अनुसार जो ठीक हो, आप बस वैसा करें," ओसिप इवानोविच ने शान्त भाव से सहमति प्रकट की।

मैं दफ़्तर से बाहर निकला, और अगले कमरे में कोलोनी मोनीटर को पाकर मैंने उससे कहा कि कमाण्डरों की परिषद की बैठक

बुलाने का सिगनल दिलवा दें। कोलोनी में सरगर्मी और विह्वलता का एक असाधारण वातावरण व्याप्त था। नास्त्या भागी हुई मेरे पास आई और हंसते हुए पूछने लगी·

"तौलिए लेकर हम कहां आएं? यहीं, भीतर?" दफ़्तर की ओर सिर हिलाकर उसने इशारा किया।

"तौलियों के लिए इतनी उतावली न मचाओ। अभी शर्तें तय नहीं हुई हैं। तुम बस यहीं आस-पास चिपकी रहो, जैसे ही तुम्हारी ज़रूरत होगी, मैं बुला लूंगा।"

"और बांधना-बूंधना कौन करेगा?"

"बांधना क्या?"

"तौलियों को। उन्हें उन पर – भला क्या कहते हैं उन्हें – हां घटकों पर बांधा जाएगा।"

तोस्का सोलोवियोव गेहूं की एक बड़ी रोटी बग़ल में और हाथ में नमक का कटोरा थामे, जिसे वह नमक के कणों को उछलता देखने के लिए मगन भाव से हिला रहा था, मेरे बराबर में खड़ा था। सिलान्ती दौड़ते हुए आ गया।

"नमक-रोटी को तुम यह किसलिए उछाल रहे हो? इन्हें रकाबी में रखना चाहिए..."

अपनी हंसी को छिपाने का प्रयत्न करते हुए, जो उसे गुदगुदा रही थी, वह दोहरा हो गया।

"ओह, ये नन्हें फ़िने... और नाश्ते-वाश्ते का क्या हाल है?"

तभी येकातेरिना ग्रिगोरियेवना आ धमकी। मैंने गहरे सन्तोष का अनुभव किया।

"इस काम में ज़रा हाथ बंटाइये न।" मैंने उससे अनुरोध किया।

"ओह, एक मुद्दत से मैं इन्हें खोज रही थी। भोर से ही ये लोग इस रोटी को यहां से वहां सारी कोलोनी में घसीट रहे हैं। चलो, मेरे साथ चलो। आप चिन्ता न करें, हम सब संभाल लेंगे। हम लड़कियों के कमरे में रहेंगे। वहां से बुला लेना।"

कमाण्डर, नंगे पांव, भागते हुए दफ़्तर में आ गए। उस सुखद काल के कमाण्डरों की सूची भी मेरे पास मौजूद है वह इस प्रकार है:

पहले दस्ते (दर्ज़ियों के) का कमाण्डर – गुद।
दूसरे दस्ते (सईसों के) का कमाण्डर – ब्रातचेन्को।
तीसरे दस्ते (ग्वालों के) का कमाण्डर – ओप्रिश्को।
चौथे दस्ते (बढ़ईगीरों के) का कमाण्डर – तारानेत्स।
पांचवें दस्ते (लड़कियों के) की कमाण्डर – नोचेवनाया।
छठें दस्ते (लोहारों के) का कमाण्डर – बेलूख़िन।
सातवें दस्ते का कमाण्डर – वेत्कोवस्की।
आठवें दस्ते का कमाण्डर – कराबानोव।
नौवें दस्ते (मिलवालों के) का कमाण्डर – ओसादची।
दसवें दस्ते (सूअर-पालकों के) का कमाण्डर – स्तुपीत्सिन।
ग्यारहवें दस्ते (छुटकउओं के) का कमाण्डर – गेओर्गीयेवस्की।
कमाण्डरों की परिषद का मंत्री – कोल्या वेर्शनेव।
मिल का मैनेजर – कुदलाती।
भण्डारी – आल्योशा वोल्कोव।
सहायक कृषिविद् – ओल्या वोरोनोवा।

वस्तुत: कितने ही और भी कमाण्डरों की परिषद में जमा होते थे। कोमसोमोल संगठन के सदस्यों – ज़दोरोव, जोर्का वोल्कोव, वोलोख़ोव, बुरून – को इसका पूर्ण सम्मानित अधिकार प्राप्त था। साथ ही पुराने सदस्य – प्रीख़ोद्को, सोरोका, गोलोस, चोबोत, ओवचारेन्को, फ़ेदोरेन्को, कोरितो – भी उसमें शामिल होने के अधिकारी थे। इनके अलावा फ़र्श पर छोटे लड़कों का भी – जिन्हें दिलचस्पी होती थी – एक दल मौजूद रहता था। उनमें मित्का, वित्का, तोस्का और वान्का शेलापूतिन निश्चय ही मौजूद रहते थे। शिक्षक भी परिषद की बैठकों में हमेशा हाज़िर रहते थे, और साथ ही कालीना इवानोविच तथा सिलान्ती सेम्योनोविच भी। सो, कुर्सियां बराबर कम पड़ जाती थीं। लोग खिड़कियों की ओटकों पर बैठते या बाहर खड़े खिड़कियों में से भीतर झांकते रहते थे।

कोल्या वेर्शनेव ने बैठक का श्रीगणेश किया। सोफ़े पर बैठे घटक, क़रीब एक दरजन कोलोनीवासियों की भीड़ से घिरे हुए, नंगी बांहों और नंगे पांवों के झुरमुट के बीच अपने गुरुत्व को कुछ ज़्यादा क़ायम नहीं रख सके।

मैंने कमाण्डरों को बताया कि घटक आए हैं। कमाण्डरों की परिषद के लिए यह कोई नया समाचार नहीं था। कारण, पावेल पावलोविच तथा ओल्या की मित्रता से सभी एक लम्बे समय से अवगत थे। केवल औपचारिकता के नाते वेर्शनेव ने ओल्या से पूछा:

"क्या तुम पावेल से विवाह करने को तैयार हो?"

ओल्या ने, थोड़ा लजाते हुए कहा:

"बेशक, मैं तैयार हूं।"

लापोत ने होंठ फड़काए।

"यह भी कोई तरीक़ा है! तुम्हें ना-नुकर करना चाहिए जिससे हम तुम्हें मनाएं। नहीं तो फिर क्या मज़ा रहेगा?"

"मज़ा रहे चाहे नहीं," कालीना इवानोविच ने कहा, "हमें मतलब की बात करनी चाहिए। हां तो, हमें साफ़-साफ़ यह बताओ कि माल-वाल और इस सबके बारे में आपका क्या इरादा है?"

ओसिप इवानोविच ने अपनी मूंछों का स्पर्श किया।

"मामला यों है: अगर आप अपनी मजूरी देते हैं तो शादी की दावत और चर्च में विवाह का कार्य हमारे ज़िम्मे रहेगा, और इसके बाद युवा जोड़ी बड़े-बूढ़ों के साथ रहेगी। और क्योंकि वे एक साथ रहेंगे, इसलिए जायदाद भी साझे में रहेगी।"

"और वह नयी कुटिया किसके लिए बनाई गई है?" कराबानोव ने पूछा।

"वह कुटिया मिख़ाइल के नाम रहेगी।"

"लेकिन क्या पावेल सबसे बड़ा नहीं है?"

"वह सबसे बड़ा है। निस्संदेह, यह सच है। लेकिन बुढ़ऊ ने ऐसा ही करने का निश्चय किया है। आप तो जानते हैं कि पावेल कोलोनी की एक लड़की से विवाह कर रहा है।"

"सो तो ठीक, लेकिन इससे क्या अगर वह कोलोनी की लड़की से विवाह कर रहा है?" कोवाल क्षोभ से गुर्राया।

ओसिप इवानोविच की एकाएक समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे। कुज़्मा पेत्रोविच ने अपनी फटी आवाज़ में सुर अलापा

"बात कुछ यों है। पावेल इवानोविच कहता है: पत्नी को पति के पास जाना होता है, मिख़ाइल सेर्गेइ ग्रेचानी की लड़की से विवाह

कर रहा है। और आपकी लड़की पावेल पावलोविच के साथ आती है, पुत्रवधू के रूप में। ख़ुद पावेल पावलोविच इस पर राज़ी है।"

"इस रफ़्तार से तो शीघ्र ही कद्दुओं का व्यापार करते नज़र आएंगे," अपना हाथ हिलाते हुए कराबानोव ने कहा। "पावेल पावलोविच की रज़ामन्दी से हमें क्या वास्ता? इसका मतलब केवल यह हुआ कि उसमें कुछ दम नहीं है। बस, इतना ही। कमाण्डरों की परिषद ओल्या को इस तरह नहीं दे सकती। यह तो ऐसा होगा जैसा उस बूढ़े शैतान के यहां खेत-मज़दूर बनकर जाना।"

"सेम्योन ..." भौहें चढ़ाते हुए कोल्का ने कहा।

"अच्छा, अच्छा। मैं शैतान शब्द को वापस लेता हूं। यह एक बात हुई। दूसरी बात यह कि – चर्च में विवाह का नेग-चार क्या बला है जिसका आपने ज़िक्र किया।"

"सो तो क़ायदे की बात है, बिना पादरियों के कभी कोई नहीं ब्याहा गया। हमारे गांव में ऐसी बात कभी नहीं हुई।"

"अच्छा, तो अब यह भी होगा," कोवाल ने कहा।

कुज़्मा पेत्रोविच ने अपनी दाढ़ी को खुजलाया।

"कौन जानता है कि क्या होगा और क्या नहीं? हम लोगों में यह अच्छा नहीं समझा जाता। यह तो जैसे पाप में जीवन बिताना हुआ।"

परिषद में सन्नाटा छा गया। सब एक ही और उसी बात को सोच रहे थे शादी तय नहीं हो पाएगी। मुझे तो यह भी आशंका थी कि अगर मामला गड़बड़ा गया तो लड़के आव देखेंगे न ताव और घटकों को धता बता देंगे।"

"ओल्या, क्या तुम पादरी से शादी करवाना चाहती हो?" कोल्या ने पूछा।

"तुम्हें यह क्या हुआ है, – क्या कलेवा ढंग का नहीं मिला? या भूल गए कि मैं कोमसोमोल सदस्य हूं?"

"पादरियों की बात बेकार है," मैंने घटकों से कहा, "कोई और रास्ता निकालो। यह आप जानते थे कि आप कहां जा रहे हैं, क्यों जानते थे न? एक क्षण के लिए भी आप यह कैसे सोच सके कि हम गिरजावाली शादी के लिए राज़ी हो जाएंगे?"

सिलान्ती अपनी जगह से उठा और बोलने की अनुमति प्राप्त करने के लिए उसने अपनी उंगली उठा ली।

"सिलान्ती, क्या तुम कुछ कहना चाहते हो?" कोल्या ने पूछा।

"मैं कुछ पूछना चाहता हूं।"

"तो पूछो।"

"कुज़्मा, आप जानो, जैसा कि कहते हैं, सपनों में रहते हैं। सो ओसिप इवानोविच हमें बताएं कि उन्हें पादरी किसलिए चाहिए? इससे तो सूअरों को मोटा करना ज़्यादा अच्छा होगा।"

"भाड़ में जाएं वे।" स्तोमूखा हंसा "जब कभी उनमें से कोई मुझे दिखाई दे जाता है तो मैं अपना मुंह मोड़ लेता हूं, और शिकार के लिए नहीं जाता।"

"इसका मतलब यह कि कुज़्मा ही हैं जो यह सब चाहते हैं?"

कुज़्मा पेत्रोविच मुसकराया।

"ही-ही। सो बात नहीं। बात यह है, आप जानो, हमारे दादा, परदादा ऐसा करते आए हैं और पावेल इवानोविच का कहना है कि हम एक ग़रीब लड़की को विना किसी–दहेज-वहेज़ के ले रहे हैं।"

कालीना इवानोविच ने ज़ोरों से अपनी मुट्ठी को मेज़ पर पटका।

"यह सब क्या है?" वह चीखा। "यह सब ख़ुराफ़ात बकने का आपको क्या अधिकार है? यह कहां का धन्नासेठ है जो हमारे सामने अपने को इतना बड़ा गिनता है? क्या तुम सोचते हो कि क्योंकि तुमने और पावेल इवानोविच ने मिट्टी की एक झोंपड़ी खड़ी कर ली है, ठीक इसलिए तुम चाहे जहां शान बघारते घूम सकते हो? वह समझता है–हरामख़ोर कहीं का–कि चूंकि उसके पास एक मेज़, दो-चार बेंच तथा सन्दूक़ में रखा चमड़े का एक कोट है, केवल इसलिए वह लाखपति बन गया है?"

कुज़्मा पेत्रोविच ने घबराकर अपना सुर छेड़ा:

"शेखी कौन बघारता है? हमने तो केवल दहेज़ का यों ही ज़िक्र किया था।"

"क्या आप जानते हैं कि आप कहां हैं? यह सोवियत सरकार है। शायद आप नहीं जानते कि सोवियत सरकार कैसी होती है? सोवियत सरकार ऐसा दहेज़ दे सकती है कि तुम्हारे सारे सड़े-गले पुरखे

अपनी क़ब्रों में तीन बार करवट लेते नज़र आएं। हरामख़ोर कहीं के।"

कुज़्मा ने निर्बल विरोध का प्रयत्न किया

"हम तो केवल..."

लड़के हंसी से दोहरे हो गए और उन्होंने तालियां बजाकर कालीना इवानोविच की सराहना की। कालीना इवानोविच सचमुच गुस्सा हो उठा था।

"कमाण्डरों की परिषद इसपर पूरी तरह विचार करे," उसने कहा। "देखो न, यह हमसे शादी की बात तय करने आए हैं, लेकिन हमें सोचना होगा कि हम अपनी लड़की ओल्गा को निकोलायेन्को जैसे भिखारी को दे सकते हैं या नहीं, जिसे प्याज़ और आलू से अच्छी चीज़ कभी चखने को नहीं मिली और जो, हरामख़ोर कहीं का, रई की जगह झरबेरी उगाता है। लेकिन हम सम्पन्न लोग हैं। हमें हर चीज़ पर सावधानी से विचार करना होता है।"

कमाण्डरों की परिषद तथा अन्य सब उपस्थित व्यक्तियों की प्रसन्नता से साफ़ था कि वे इसे ऐसी कोई समस्या नहीं समझते थे जिस पर माथापच्ची की जाए। कुछ देर के लिए शादी की बात करनेवालों को दफ़्तर से बाहर भेज दिया गया, और कमाण्डरों की परिषद ने ओल्या के लिए दहेज़ पर विचार करना शुरू किया।

शादी की बातचीत ने लड़कों के मर्म को छू दिया था। सो उन्होंने ओल्गा के लिए ऐसा दहेज़ तय किया जिसे हर दृष्टि से शानदार कहा जा सकता था। शेरे को बुलाया गया, और इस बात का थोड़ा डर था कि वह इतनी बड़ी क़ुरबानी करने पर आपत्ति करेगा, लेकिन शेरे ने – सोचने का मौक़ा न दिये – कठोर आवाज़ में कहा:

"ठीक है। हमें चाहे जो भी कठिनाई उठानी पड़े, लेकिन वोरोनोवा को हमें अधिकतम सम्पन्न दुलहिन बनाना चाहिए – ज़िले में सबसे ज़्यादा सम्पन्न। जिससे उन कुलकों की बोलती बंद हो जाए।"

नतीजा इसका यह हुआ कि दहेज़ पर विचार करते समय अगर कोई आपत्तियां उठी थीं तो केवल इस तरह की:

"ऊंह, छौना, निरी बकवास। उसे घोड़ा देना चाहिए, छौना नहीं।"

एक घंटा बाद शादी की बात करनेवालों को, जो ताज़ी हवा में अपना सन्तुलन ठीक कर रहे थे, परिषद में बुलाया गया और कोल्या वेर्शनेव ने, मेज़ के पीछे खड़े होकर थोड़ा हकलाते हुए, रोब के साथ निम्न शब्दों में अपनी बात कही :

"कमाण्डरों की परिषद ने निम्न निश्चय किया है : ओल्या की पावेल से शादी की जाए, पावेल को एक अलग कुटिया में रखा जाए, और उसका बाप अपने ख़ुद के फ़ार्म में से जितना हो सके उसे दे। पादरी नहीं, शादी 'ज़ैग्स' में (रजिस्टर के दफ़्तर में) रजिस्टर कराई जाए। शादी का पहला दिन यहां मनाया जाए, और आपको जो करना ो इसके बाद करें। फ़ार्म को शुरू करने के लिए निम्न चीज़ें दी जाएं।

एक सीमेन्थाल गाय और बछड़ा,

एक घोड़ा छौने के साथ

पांच भेड़ें,

एक विलायती सूअर।

ओल्गा के दहेज़ की ख़त्म न होनेवाली सूची को पढ़ते-पढ़ते कोल्या का गला बैठ गया। खेती के औज़ार, बीज, चारा, कपड़े, चद्दरें आदि, मेज़-कुर्सियां, यहां तक कि सीने की एक मशीन भी सूची में शामिल थी। अन्त में कोल्या ने कहा :

"जब भी ज़रूरी होगा, हम ओल्या की हमेशा मदद करेंगे। वह तथा उसका पति आवश्यकता पड़ने पर कोलोनी को मदद देने के लिए बाध्य होंगे। पावेल को कोलोनीवासी की उपाधि प्रदान की जाएगी।"

शादी की बात करनेवाले उद्विग्नता से आंखें मिचमिचा रहे थे, और लगता था जैसे वे विधि के अपने हिस्से को निबटाने के लिए कसमसा रहे हों। लड़कियों की हँसी थामे नहीं थम रही थी। इस बात से ज़रा भी परेशान हुए बिना कि क्या सही है और क्या ग़लत, वे शादी की बात करनेवालों को तौलिए बांधने के लिए दौड़ी आईं। छोटे लड़कों ने – तोस्का की अगुवाई में – रूमाल से ढकी एक तश्तरी में उन्हें रोटी और नमक भेंट किया। शादी की बात करनेवालों ने, जो घबरा और अचकचा गए थे, रोटी ले ली, लेकिन उनकी समझ में नहीं आया कि उसका वे क्या करें। तोस्का ने तश्तरी को कुज़्मा

पेत्रोविच की बग़ल के नीचे से खींचा, और प्रसन्नता से छलछलाता बोला: "वाह। इसे वापस करो, नहीं तो मिल का मालिक मेरी जान को आ जाएगा। यह उसकी है... भला क्या कहते हैं इसे?.. ओह, तश्तरी।"

लड़कियों ने मेरी मेज़ पर एक कपड़ा बिछाया और, मधुर लाल मदिरा की तीन बोतलें उस पर जमा दीं। साथ में एक दरजन या ऐसे ही कुछ गिलास। कालीना इवानोविच ने हरेक के लिए एक-एक गिलास मदिरा उंडेली, और अपना गिलास ऊंचा उठाते हुए बोला:

"वह फले-फूले और आज्ञाकारी रहे।"

"किसकी आज्ञाकारी रहे?" ओसिप इवानोविच ने पूछा।

"सब जानते हैं कि किसकी – कमाण्डरों की परिषद की, सामान्य रूप में सोवियत सरकार की।"

हम सबने गिलास खनकाए, उन्हें ख़ाली किया, और मालपूए खाए। कुज़्मा पेत्रोविच ने माथा नवाया.

"धन्यवाद, हर चीज़ का इतना बढ़िया बन्दोबस्त करने के लिए धन्यवाद। इसका मतलब कि अब हम पावेल इवानोविच तथा येवदोकीया स्तेपानोवना को बधाई दे सकते हैं।"

"शुभ काम में देर क्यों, जाओ, और उन्हें बधाई दो।" कालीना इवानोविच ने कहा।

ओसिप इवानोविच ने हमारे हाथ दबाए।

"लाजवाब आदमी हैं आप लोग। आपकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।"

शादी की बात करनेवाले, स्कूली लड़कियों की भांति मुंहबंद और विनीत भाव से दफ़तर से बाहर निकले और गांव की ओर चल दिए। हम उन्हें आंखों से ओझल होते देखते रहे। अचानक कालीना इवानोविच ने अपनी आंखों को सिकोड़ा और नुमाइशी असन्तोष के साथ अपने कंधों को बिचकाया।

"सो नहीं चलेगा। भरे-पेट उल्लुओं की तरह टुरके जा रहे हैं। लपककर उनके पीछे जाओ, पेत्या, और उनसे मेरे कमरे में आने के लिए कहो। और तुम, अन्तोन, एक घंटे के भीतर घोड़ों को जोतकर गाड़ी तैयार करो, जिसमें उन्हें बैठाकर ले जाना है।"

एक घंटा बाद लड़कों ने हंसी-ठहाकों के साथ शादी की बात करने-वालों को गाड़ी में बिठाया। तौलिए अभी भी उन पर बंधे थे, लेकिन अधिकृत घटकों के अन्य कतिपय चिह्न वाक्-चातुर्य के साथ ग़ायब हो चुके थे। कुज़्मा पेत्रोविच, रोटी को नहीं भूला था, और बड़े चाव के साथ उसे अपने वक्ष से चिपकाए था। 'मोलोदेत्स' भारी गाड़ी को रेतीले पथ पर खींचकर ले आया, इस तरह जैसे वह पर-जितनी हल्की हो।

कालीना इवानोविच ने धरती पर थूका।

"उसने – हरामख़ोर कहीं का – जान-बूझकर ऐसे भुक्खड़ों को भेजा।"

"उसने किसने?"

"अरे, उसी निकोलायेन्को ने। वह हमें दिखाना चाहता था जैसी दुलहिन, वैसे घटक।"

"नहीं, ऐसा नहीं है," सिलान्ती ने कहा, "असल बात यह है। कितने ही लोग घटक बनकर आने के लिए तैयार नहीं होते। क्योंकि पुरोहित का झमेला यहां था नहीं, और ये पुरोहितों की परवाह नहीं करते – इनका भला पादरियों से क्या वास्ता। इसलिए उस बूढ़ी लोम-ड़ी ने (जानते ही हो कि मेरा मतलब किससे है) कहा – 'तुम लोग झूठ-मूठ ही दिखाना कि पादरी ज़रूर होने चाहिए, और जब वे इनकार करें तो उन्हें जहन्नुम रसीद करना' – "सो, तुम जानो, बात यह है।"

अगस्त के मध्य शादी करना तय हुआ। कमीशन उसकी तैयारी में जुटे। एक नाटक तैयार किया गया। परेशानियों का कोई हिसाब नहीं था। ख़र्च और भी मुंह बाए था। कालीना इवानोविच उदासी का अनुभव किए बिना नहीं रह सका।

"अगर हमें, अन्तोन सेम्योनोविच," उसने कहा, "इसी तरह अपनी सब लड़कियों की शादी करनी है तो अच्छा हो कि लड़कों को आप संभालें, और मैं ... यह बूढ़ा गंवार ... हम भीख मांगने निकलें ... लेकिन और कोई चारा नहीं, यह मैं जानता हूं।"

शादी के दिन कोलोनी के चारों ओर सन्तरी खड़े थे – चौकसी के लिए दो दस्तों को तैनात किया गया था। हमने बाक़ायदा छपे हुए निमंत्रण-पत्र भेजे थे। आमंत्रितों की संख्या सत्तर से ज़्यादा न होगी। निमंत्रण-पत्र इस प्रकार थे:

“मक्सिम गोर्की श्रम कोलोनी के कमाण्डरों की परिषद कोलोनिस्ट ओल्या वोरोनोवा की कोलोनी से विदाई तथा साथी पावेल पावलोविच निकोलायेन्को के साथ उसके विवाह के उपलक्ष्य में भोज और उसके बाद नाटकीय प्रदर्शन में सम्मिलित होने के लिए आप से अनुरोध करती है।

कमाण्डरों की परिषद।”

दोपहर के दो बजे तक कोलोनी में हर चीज़ तैयार थी। बग़ीचे में फ़ौवारे के इर्द-गिर्द दावत की मेज़ें सजी थीं। इस जगह की सजावट ज़िनोवी इवानोविच की कला-मंडली को देने थी,—छरहरे बांस, जिनके सहारे चतुराई के साथ हिलगे हुए बर्चवृक्ष की कोपलों के हार वड़ी कमनीयता से झूल रहे थे, एकदम खुले में स्थित भोजन के मण्डप के चारों ओर धरती में गड़े थे। और किसी ने भी, मंत्रमुग्ध हो उन्हें सराहते हुए, इस ओर ध्यान नहीं दिया कि लड़कों के लिए उन्हें वहां लटकाना कितना कठिन रहा होगा। ख़ुद मेज़ें भी सफ़ेद गुलाबों के—शेरे की ‘हिम-रानियों’ के—गुलदस्तों से सजी थीं।

कोलोनी के विकास का परिमाण तथा जिस हद तक उसकी बाह्य रूप-रेखा में सुधार हो चुका था वह आज अत्यन्त सुखद तथा अकाट्य रूप में मुखर हो उठा था। पार्क के प्रशस्त रेतीले पथों ने उद्यान खण्डों की सम्पन्नता को उभार दिया था। उनमें उगा प्रत्येक पेड़, प्रत्येक झाड़ी-समूह, फूलों की क्यारियों की प्रत्येक पंक्ति मिश्रित दस्तों के पसीने से सींचकर तथा क़ीमती पत्थर आदि बिछाकर प्रेम और सावधानी के साथ सम्पूर्ण सामूहिक द्वारा सुन्दर बनाई गई थी। नदी-तट के ऊबड़-खावड़ स्थलों को बड़े लेकिन प्रेमपूर्ण हाथों से नियंत्रित किया गया था। लकड़ी की सीढ़ियाँ, बर्च की लकड़ी का बाड़ा, फूलों की आयताकार क़ालीन, संकरे बल खाते हुए पथ, रेत छितराकर बनाया गया एक लघु बांध—ये सब प्रकृति पर मानव की—मानवता के हमारे जैसे नंगे-पांव प्रतिनिधियों तक की—श्रेष्ठता का अतिरिक्त प्रमाण प्रस्तुत करते थे। इस नंगे-पांववाले स्वामी के प्रशस्त आंगन में उसने—

पुरानी मानवता की सौतेली सन्तान – एक कलाकार की दक्षता के साथ अतीत के गहरे घावों को भरने में सफलता प्राप्त की थी। बहुत पहले, शरद में ही कोलोनीवासियों ने गुलाब की दो सौ झाड़ियों को यहां लगाया था, और अन्य पौधों की – ऐस्टर, कार्नेशन, स्टाक सिन्दूरी जिरानियम, नीलवर्ण वैण्टरबरी घंटिका तथा ज्ञात और अज्ञातनामी अन्य दुनिया-भर के फूलों की तो जैसे कोई गिनती नहीं थी। अहाता पक्की सड़कों से घिरा था जो व्यक्तिगत इमारतों के इर्द-गिर्द के क्षेत्रों को जोड़ती थीं। रईघास के चौरस और त्रिकोण भाग ख़ाली पड़ी जगहों को महत्व तथा ताज़गी प्रदान करते थे। बग़ीचे में बैठने के लिए जहां-तहां हरी बेंचें बिछी थीं।

कोलोनी में हर चीज़ आनन्दप्रद, घर-जैसी, सुन्दर तथा मुक्तियुक्त बन गई थी। यह सब देखकर इस भूमण्डल की शोभा में अपने निजी योगदान पर मैं गर्व का अनुभव करता था। लेकिन सौन्दर्य के सम्बन्ध में मेरी अपनी एक अलग कल्पना थी। न तो फूल, न पथ, न छायादार कोने, सफ़ेद क़मीज़ों तथा गहरे नीले जांघियों से सज्जित लड़कों की ओर से एक क्षण के लिए भी मेरा ध्यान हटा सकते थे। ये रहे वे – इधर से उधर लपकते हुए, मेहमानों के बीच ख़ामोशी के साथ हरकत करते हुए, मेज़ों के इर्द-गिर्द काम में जुटे हुए, अपने नियत स्थानों पर खड़े हुए, सैंकड़ों निठल्लों को बाहर रोकते हुए जो मुंह बाए इस असाधारण शादी को देखने के लिए एकत्रित हो गये थे। यह थे वे – हमारे गोर्कीआइट। कमनीय और सुगठित, सुन्दर लचकदार आकृतियां, पुट्ठेदार और स्वस्थ बदन जो कभी दवाइयों के मोहताज नहीं रहे, और ताज़ा तथा लाल होंठों से युक्त चेहरे। ये चेहरे कोलोनी से प्रस्फुटित हुए – ऐसे चेहरे गलियों और राहों से कोलोनी में नहीं लाये जाते।

इनमें से प्रत्येक के जीवन में अपना एक पथ है, और गोर्की कोलोनी का भी अपना एक पथ है। मैं इन पथों के प्रारम्भिक चिह्नों का आभास पा सकता हूं, लेकिन भविष्य को आच्छादित करनेवाली धुंधों के बीच से उनकी दिशा को, उनकी क्रमिकता और उनके अन्त को, देखना कितना कठिन है। वे तत्व जिनपर मानव अभी तक विजय नहीं पा सका, जो अभी तक आयोजना तथा अंकगणित की पकड़ से परे हैं

इन धुंधों के इर्द-गिर्द बगूलों की भांति उड़ रहे हैं। और इन तत्वों के बीच हमारी प्रगति का एक अपना सौन्दर्य है। इस हद तक कि फूलों और पार्कों का सौन्दर्य अब मुझे स्पर्श करने में समर्थ नहीं हो पाता।

इसका एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि मारिया कोन्द्रातियेवना इस सवाल के साथ मेरे पास आ मौजूद हुई :

"यहां, अपने-आप में एकदम अकेले बैठे, किस चिन्ता में डूब-उतरा रहे हैं, दद्दा ?"

"चिन्ता में ग़ोते लगाने से मैं भला कैसे बच सकता हूं जबकि सब ने – यहां तक कि तुमने भी – मुझे तज दिया है ?"

"आपका जी हल्का करके मुझे ख़ुशी होगी। मैं आपको खोज रही थी। बिना आपके शादी के उपहारों को देखना मुझे रुच नहीं रहा था। चलिए।"

ओल्या की सारी सम्पदा दो कक्षा-कमरों में सजा दी गई थी। प्रदर्शन के चारों ओर मेहमानों की भीड़ जमी थी। चिड़चिड़ी ईर्ष्यालु स्त्रियां अपने होंठों को कसकर भींचे और झुंझलाहट भरी संलग्नता के साथ मुझे घूर रही थीं। उन्होंने अपनी अहम्मन्यता में हमारी दुलहिन की उपेक्षा की थी और अपने लड़कों की गांव की बालाओं के साथ शादी की थी। अब उन्हें मालूम हुआ कि सम्पन्नतम दुलहिन उनकी पहुंच के भीतर थी। सो मुझसे क्षुब्ध होने का उनका अधिकार उचित ही था।

"अगर शादी करनेवालों ने दल बांधकर यहां धावा बोलना शुरू कर दिया तो आप क्या करेंगे ?" बोकोवा ने पूछा।

"मैं सुरक्षित हूं," मैंने जवाब दिया। "हमारी लड़कियां बहुत सावधान हैं।"

एक छोटा-सा लड़का, हक्का-बक्का और बेसुध, भागा हुआ आया। "वे आ रहे हैं।"

अहाता आम सभा के लिए आह्वान-ध्वनि से पहले ही गूंज उठा था। बरसाती के निकट, जैसा कि मौक़े का तक़ाज़ा था, कोलोनीवासियों की एक पांत तथा ढोलवादकों का एक दस्ता ध्वज के सामने आकर खड़ा हो गया था। मिलवाले मोड़ के पास हमें अपनी दम्पति

की झलक दिखाई दी। घोड़े लाल फ़ीतों से सजे थे, कोचवान की गद्दी पर ब्रातचेन्को विराजमान था। वह भी फ़ीतों से सज्जित था। हमने युवा दम्पति को सलामी दी। अन्तोन ने रासों को खींचा, और ओल्या ख़ुशी से छलछलाती मेरी गरदन से आ लिपटी। विह्वल, हंसते और क्रन्दन सा करते हुए बोली:

"देखो, आप मुझे छोड़ न देना, ओह, मुझे बड़ा डर लग रहा है।"

एक संक्षिप्त सभा हुई, मारिया कोन्द्रातियेवना ने 'जन-शिक्षा विभाग' की ओर से युवा दम्पति को कृषि सम्बन्धी पुस्तकों की एक लाइब्रेरी भेंट करके मुझे आर्द्र और चकित कर दिया। दो कोलोनीवासी फूलों से सजे तख़्तों पर पुस्तकों का भारी ढेर लगाए, उसके पीछे खड़े थे।

सभा के बाद युवा दम्पति को हमने ध्वज के नीचे खड़ा किया और बाक़ायदा मार्च करते हुए उन्हें मेज़ों की ओर लिवा ले आए। उनके लिए सम्मानपूर्ण जगह का आयोजन किया गया था। झंडावाहकों ने उनके पीछे स्थान ग्रहण किया। कोलोनी के मोनीटर ने गारद को बदला। बीस कोलोनीवासियों ने, बर्फ़ जैसी सफ़ेद जाकेट पहने, भोजन परोसना शुरू किया। तारानेत्स का विशिष्ट मिश्रित दस्ता मेहमानों की जेबों पर चौकस नज़र डालता और बिना किसी शोर-शराबे के, जादूगरों जैसी दक्षता तथा मेज़बानों जैसी शालीनता के साथ, घरेलू दारू की कितनी ही बोतलों को उनकी जेबों से तिड़ी कर उन्हें कोलोमाक के हवाले कर देता।

मैं युवा दम्पति की बग़ल में बैठा था। दूसरी तरफ़ पावेल इवानोविच – चमत्कारी सन्त निकोलाई जैसी दाढ़ी से युक्त कठोर जीव – गहरी सांसें भर रहा था, या तो इस परेशानी के कारण कि उसका बेटा स्वतंत्र हो गया था, या फिर इसलिए कि बीयर की बोतल पर नज़र डालना उसके लिए असह्य था। तारानेत्स अभी-अभी घरेलू दारू की एक बोतल उसकी जेब से उड़ा ले गया था।

सब कोलोनीवासी आज अद्भुत हो उठे हैं। उन्हें देखते एक घड़ी के लिए भी आंखें नहीं अघातीं। स्फूर्ति, मगनचित शोभायुक्त और व्यंग का एक पुट लिए जो सर्वथा उनका एक अपना गुण था। यहां

तक कि ग्यारहवां दस्ता भी जो मेज़ के दूसरे छोर पर रोब जमाए था, उन पांच मेहमानों को जो उनके ज़िम्मे थे, लम्बी और आह्लाद-पूर्ण बातों में लगाए था। मैं थोड़ा बेचैनी के साथ आश्चर्य कर रहा था कि कहीं वे कुछ ज़रूरत से ज़्यादा तो नहीं खुल रहे। मैं देखने गया। शेलापूतिन, जिसकी आवाज़ में बचपन का पुट अभी तक मौजूद था, कोज़िर के लिए बीयर उंडेल रहा था और कह रहा था:

"गिरजाघर में तुम्हारी विवाह हुआ था और देखो न उसका कितना चौपट नतीजा निकला।"

"चलो, तुम्हारा नये सिरे से ब्याह रचा दें।" तोस्का ने सुझाव दिया।

कोज़िर मुसकराया।

"भला इस उम्र में अब मैं क्या ब्याह रचाऊंगा, बेटो।"

उसने क्रास का चिन्ह बनाया और अपनी बीयर का गिलास ख़ाली कर दिया। तोस्का हंसा।

"तुम्हारे पेट में अब मरोड़ें उठने लगेंगी।"

"ख़ुदा ख़ैर करे। क्यों?"

"तो तुमने क्रास का चिन्ह क्यों बनाया फिर?"

उसकी बग़ल में एक गांववाला बैठा था। उलझी हुई भूरे रंग की दाढ़ी। वह पावेल इवानोविच का मेहमान था। कोलोनी में वह पहले कभी नहीं आया था। हर चीज़ जो वह देखता था, उसे चकित कर रही थी।

"लड़को, क्या यह सचमुच ठीक है कि तुम लोग यहां के स्वामी हो?"

"बेशक, हम स्वामी हैं।" शुर्का ने जवाव दिया।

"तुम्हें धरती जोतने की क्या ज़रूरत?"

तोस्का सोलोवियोव ने घूमकर उसकी ओर मुंह किया।

"अरे, यह भी नहीं जानते किस लिए? यदि कोलोनी का फ़ार्म न होता तो हमें खेत-मज़दूर बनना पड़ता और अब इसकी ज़रूरत नहीं।"

"तो तुम लोग क्या बनने जा रहे हो?"

"ओहो।" मांस के एक पकौड़े को हाथ में लिए तोस्का ने कहा। "मैं इंजीनियर बनने जा रहा हूं – अन्तोन सेम्योनोविच भी यही बनने के लिए कहता है – और शेलापूतिन वायुयान का चालक बनेगा।"

उसने व्यंग के साथ अपने मित्र शेलापूतिन की ओर देखा। वायुयान-चालक के रूप में उसके भविष्य को कोलोनी में अभी तक किसी ने भी मान्यता नहीं दी थी। शेलापूतिन ने, तेज़ी के साथ जुगाली करते हुए, कहा:

"हूं-आं, मैं चालक बनने जा रहा हूं।"

"अच्छा-अच्छा, और किसानी के बारे में तुम क्या कहते हो? क्या तुम लोगों में से कोई किसानी करना नहीं चाहता?"

"बेशक, चाहते हैं। हम में से कुछ चाहते हैं। लेकिन हमारे लड़के आपके किसानों से भिन्न होंगे," तोस्का ने अपने संवादी पर एक द्रुत नज़र डालते हुए कहा।

"ये क्या कहते हो? भिन्न से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"मतलब यह कि हम भिन्न होंगे, हमारे पास ट्रेक्टर होंगे। क्या तुमने कभी ट्रेक्टर देखा है?"

"नहीं, सो तो नहीं कह सकता कि देखा है।"

"हां तो हमने देखा है। वहां एक सोवख़ोज़ है। एक बार कुछ मादा सूअर लेकर हम वहां गए थे। उनके पास एक ट्रेक्टर है, – देखने में टिड्डे जैसा।"

मेहमानों की लम्बी पांत हमारे दस्तों से गुंथी थी। प्रत्येक दस्ते की बाह्य रेखाओं को मैं आसानी के साथ पहचान सकता था। उनकी आवाज़ों से पता लगा सकता था कि कौन दस्ता कहां केन्द्रित है। सबसे ज़्यादा चहल-पहल उस जगह थी जहां नौवां दस्ता था, क्योंकि लापोत वहां मौजूद था, और कोलोनी के वासी तथा मेहमान उसके इर्द-गिर्द हंस और कांख-कराह रहे थे। ख़ुद लापोत ने अपने मित्र तारानेत्स से सांठ-गांठ करके चक्की की मुख्य विभूतियों के ख़िलाफ़ बड़ी सावधानी के साथ धोखाधड़ी के एक खेल की रचना की थी। ये लोग नौवें दस्ते की मेज़ पर थे। उनकी देख-संभार के लिए ख़ास आदेश से उसे नियत किया गया था। इनमें मिल का मालिक था, – हृष्ट-पुष्ट और गावदुम, मुन्शी था – दुबला-पतला और नोक-नुकीला, और मिस्त्री जो एक बहुत ही विनीत जीव था। अपने दिनों में तारानेत्स जेब काटने का काम करता था। मिल के मालिक की जेब से घरेलू दारू की बोतल निकालकर

उसकी जगह एक अन्य कोलोमाक के पानी से भरी बोतल रख देना उसके लिए एक बाएं हाथ का खेल था।

मिल का मालिक और मुन्शी एक लम्बे अर्से तक संकोच के साथ मेज़ पर बैठे और रह-रहकर तारानेत्स के मिश्रित दस्ते पर नज़र डालते रहे। लेकिन लापोत आंख मारते हुए उन्हें दिलासा देता :

"आप तो अपने घर के आदमी हैं। घबराएं नहीं, मैं पूरी देख-भाल रखूंगा।"

तारानेत्स उधर से गुज़र रहा था। उसके सिर को नीचे अपनी ओर खींचते हुए फुसफुसाकर लापोत ने उसके कान में कुछ कहा। तारानेत्स ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"आप मेज़ के नीचे ओट में अपना गिलास भर लीजिए," लापोत ने खुफ़िया अन्दाज़ में सलाह दी, "और उसे थोड़ा बीयर के रंग का बना लीजिए। बस, फिर सब ठीक हो जाएगा।"

मेज़ की ओट में द्राविड़ी कसरत के फलस्वरूप हल्के रंग की बीयर के दो संदिग्ध गिलास प्यासों की बग़ल में प्रकट हुए, और उनके प्रसन्न स्वामी – चुपचाप देख रहे नौवें दस्ते की सावधान नज़र के नीचे – सहमे से अपने लिए खाद्य का जुगाड़ करने लगे। आखिर सब चीज़ टंच हो गई, और मिल के मालिक ने चालाकी के साथ लापोत की ओर आंख मारते हुए अपना गिलास दाढ़ी तक ऊंचा उठाया। मुन्शी और मिस्त्री अभी भी अपनी दाहिनी और बाईं तरफ़ चौकन्ने से देख रहे थे। लेकिन चारों ओर सब शान्त था। तारानेत्स पोप्लर के एक तने के सहारे उदासीन-सा टिका था। लापोत ने अपनी पलकें झुका ली थीं, उस आकस्मिक चमक को छिपाने के लिए, जो उसकी आंखों में छा गई थी।

"हां तो, इन सब के नाम पर।" मिल के मालिक ने कहा।

नौवां दस्ता, अपने सिरों को झुकाए तीनों मेहमानों को अपने गिलासों को ख़ाली करते देखता रहा। आख़िरी कुछ घूंटों में विश्वास के अभाव का एक आभास-सा अनुभव हुआ। मिल के मालिक ने अपने गिलास को मेज़ पर टिकाया, और लापोत की ओर सतर्क नज़र से देखा। लेकिन लापोत खोया-सा मुंह चला रहा था, और उसके विचार प्रत्यक्षत: कहीं दूर पहुंचे हुए थे। मुन्शी और मिस्त्री भरसक ऐसा

दिखाने का प्रयत्न कर रहे थे मानो कोई ख़ास बात न हुई हो, यहां तक कि अपने छुरी-कांटों मे उन्होंने अपने खाद्य पर धावा भी बोल दिया था।

मिल के अनुभवी मालिक ने मेज़ की ओट में अपनी बोतल का मुआयना किया, लेकिन तभी मुलायिमत के साथ किसी ने उसका हाथ थामा। उसने अपना सिर उठाया। तारानेत्स का रसीला, छुहारे-सा चेहरा उसके ऊपर झुका था।

"शर्म करो।" विक्षोभ से सचमुच लाल पड़ते हुए तारानेत्स ने कहा। "आप से कहा गया था कि घरेलू दारू यहां क़तई नहीं लानी चाहिए, लेकिन आप हमारे अपने ही आदमी। देखो न, आप इसे गटक भी गए। भला, और कोई भी पी रहा है?"

"शैतान ही जाने।" मिल के मालिक ने घबराकर कहा। "समझ में नहीं आता कि मैंने कुछ पिया भी है या नहीं।"

"समझ में नहीं आता? यह भी एक ही रही। ज़रा सांस तो छोड़कर दिखाओ। समझ में नहीं आता, क्यों? घरेलू दारू के पीपे की भांति तुम गंधा रहे हो। शर्म की बात है, ऐसी चीज़ कोलोनी में लेकर आए।"

"क्या बात है?" कालीना इवानोविच ने दूर से पूछा।

"घरेलू दारू" बोतल का प्रर्दशन करते हुए तारानेत्स ने कहा।

कालीना इवानोविच ने कण्टकित कर देनेवाली नज़र से मिल के मालिक की ओर देखा। नौवां दस्ता एक मुद्दत से क़रीब-क़रीब दम-तोड़ स्थिति में पहुंचा हुआ था, – बिला शक इसलिए कि लापोत गला-तेन्को के बारे में उन्हें कोई मज़ेदार चीज़ सुना रहा था। लड़के अपने सिरों को मेज़ पर टिकाए थे। और अधिक मज़ाक़ सुनने की अब उनमें शक्ति नहीं थी।

हंसी-मज़ाक़ भोजन के समूचे दौरान के लिए काफ़ी से ज़्यादा था। रह-रहकर लापोत मिल के मालिक से पूछता.

"क्या वह काफ़ी नहीं थी? और क्या अब और नहीं है? यह बहुत बुरा हुआ। और क्या वह अच्छी थी? बहुत अच्छी नहीं थी? काश, फ़्योदोर बीच में न आ कूदता। तुम क्यों इनके पीछे पड़े हो फ़्योदोर, आख़िर अपने ही लोग तो हैं।"

"अरे, नहीं।" तारानेत्स ने गम्भीरता से कहा। "ज़रा उनकी ओर देखो तो, वे अपनी जगह पर स्थिर बैठे नहीं रह सकते।"

लापोत को एक लम्बा कार्यक्रम अभी पूरा करना था। उसे मिल के मालिक को मेज़ पर से उठाना था। उसने बड़ी आत्मीयता से उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा:

"चलिए, हम आपको बग़ीचे से बाहर ले चलें, लोगों ने भांपना शुरू कर दिया है. "

करावानोव का आठवां दस्ता आज सन्तरी-ड्यूटी पर नियुक्त था, लेकिन वह ख़ुद मेज़ों के आस-पास चक्कर लगा रहा था, ठीक उस जगह जहां इस असाधारण शादी को लेकर उठ खड़ी हुई दार्शनिक बहस अधिकतम तीव्रता के साथ चल रही थी। यहां कोवाल, स्पिरिदोन, कालीना इवानोविच, ज़दोरोव, वेर्शनेव, वोलोखोव और लूनाचार्स्की कम्यून का डाइरेक्टर – बकरेनुमा अपनी लाल दाढ़ी युक्त बुद्धिमान नेस्तेरेन्को – जमा थे।

नदी के उस पार स्थित कम्यून कुछ ढंग से नहीं चल रहा था। खेतीबाड़ी के काम में वे सफल नहीं हुए थे, कामों का नियोजन, विशेष सुविधाओं का सन्तुलन तथा वितरण उनके बस की बात नहीं थी। उत्पाती महिला चरित्रों से पार पाना, वर्तमान के प्रति धीरज और भविष्य में विश्वास का संचार करना, उनके लिए टेढ़ी खीर बन गया था। नेस्तेरेन्को ने इस सबका सारतत्त्व प्रकट करते हुए उदास भाव से कहा:

"हमें नयी क़िस्म के लोगों को पकड़ने की ज़रूरत है... लेकिन उन्हें पकड़कर हम लाएं कहां से?"

"बात कहने का यह कोई ढंग नहीं, कामरेड नेस्तेरेन्को," कालीना इवानोविच ने तत्परता से कहा। "नहीं, यह कोई ढंग नहीं। वे नये लोग – हरामी कहीं के – कोई भी काम ठिकाने से करना नहीं जानते। यों कहो कि आपको पुरानों की ज़्यादा ज़रूरत है।"

मेज़ों पर चीज़ों की चहल-पहल ने और भी ज़ोर पकड़ा। हमारे अपने बग़ीचे के सेब और नाशपातियां लाई गईं। दूर आइसक्रीम के पीपों की झलक दिखाई पड़ती थी, जो आज के मोनीटरों का गौरव थी।

और तभी अचानक घर के पीछे से हथबाजे की घरघराहट और गांव की स्त्रियों के क्रन्दन ने, शादी सम्बन्धी रीति-रिवाजों के अभिशाप

ने – वायु को विदीर्ण कर दिया। पांच या छ: स्त्रियां, चुंधी आंखोंवाले तथा नशे में धुत्त हथबाजा-वादक के आगे फिरकी-सी घूमती और पांवों को पटकती, क्रमश: हमारे निकट आ रही थीं।

"ये दहेज़ के लिए आ रही हैं।" तारानेत्स ने कहा।

एक लाल गालोंवाली, गाठ-गंठीली स्त्री ख़ास तौर से मेरी ख़ातिर पांवों को पटपटा रही थी, अपनी कोहनियों को निकालकर बड़े-बड़े, बेढब जूतों से रेत को छितरा रही थी।

"दादा प्यारे, दादा दुलारे, दे डालो अपनी बिटिया को प्याले के बदले, सजाओ अपनी बिटिया को..."

एक बोतल और एक भूरे रंग का और काफ़ी बेढंगा-सा गिलास – अचानक उसके हाथों में प्रगट हुए। नशे में धुत्त लापरवाही के साथ उसने धरती और अपने कपड़ों पर तरल पदार्थ को उंडेलते हुए गिलास को भरा। तारानेत्स आगे बढ़ा और मेरे तथा उसके बीच आ खड़ा हो गया। "बस, वस, इतना बहुत है," उसने कहा।

बोतल और गिलास को उसने आसानी के साथ अपने हाथों में ले लिया, लेकिन अब तक वह मुझे एकदम भूलकर नशे में धुत्त आह्लाद के साथ ललककर ओल्या से जा लिपटी थी।

"ओल्गा पेत्रोवना, मेरी रानी। यह क्या? तुम अब अपनी चोटि-यों को पीठ पर खुला नहीं छोड़ सकती। कल तुम्हारी सिरढंकौनी होगी, और तुम अन्य सभी ब्याहती स्त्रियों की भांति हो जाओगी।"

"मैं अपना सिर नहीं ढकूंगी।" अप्रत्याशित कड़ाई के साथ ओल्गा ने कहा।

"तुम नहीं ढकोगी? तुम अपनी चोटियों को लटकी रहने दोगी?"

"बिलकुल।"

सभी स्त्रियों ने ओल्या की ओर बढ़ते हुए चिचियाना और आई-ऊई करना शुरू कर दिया। वोलोख़ोव ने गुस्से और झुंझलाहट के साथ धकेलकर उन्हें अलग किया और उनकी अगुआ से मुंहफट आवाज़ में पूछा:

"और अगर वह टोपी नहीं पहने तो.. तो क्या करोगी तुम?"

"नहीं पहने तो न पहने। सो तुम जानो। जो हो, शादी का यह कोई ढंग नहीं है।"

नीति कुशल बड़े बूढ़े आए और उन्होंने टिटियाती, नशे में भीगी मित्रयों को चहुं ओर छितरा दिया। ओल्गा और मैं उद्यान से बाहर निकल आए।

"मैं उनसे नहीं डरती," ओल्गा ने कहा। "लेकिन दिक़्क़त काफ़ी उठानी पड़ेगी।"

कोलोनीवासी साज़-सामान और कपड़ों के बण्डल लिए हमसे रगड़ खाते निकल गए। गोगोलकृत 'शादी' का प्रदर्शन और इससे पहले 'विभिन्न जातियों में विवाह-प्रथा' पर जुरबिन का भाषण होने-वाला था। समारोह का अभी कोई अन्त नज़र नहीं आ रहा था।

११. एक सुमधुर विषकम्भक

ओल्गा की शादी के शीघ्र बाद ही चिर अपेक्षित दुर्दिन ने हमें आ घेरा — रबफ़ाक के उम्मीदवारों का हमसे विदा होने का समय आ गया। हम बहुत पहले से रबफ़ाक की तैयारी करते आ रहे थे। अन्य किसी चीज़ के बारे में हम इतनी तत्परता से लालायित नहीं थे जितना इस बात के, कि ख़ुद हमारे भी रबफ़ाक छात्र हों। समूचा मामला आह्लादपूर्ण तथा विजय का सूचक था, लेकिन जब विदा होने का दिन आया तो हरेक का गला रुंध गया और हरेक की आंखों में आंसू उमड़ आए। इस भयानक सत्य को कोई भी अंगीकार करना नहीं चाहता था। कोलोनी ने उन्हें जीवन दिया था, काम दिया था, हंसी दी थी, और अब अचानक उसके ख़ुद अपने ही सदस्य उसे छोड़कर जा रहे थे। यह तथ्य एकदम आकार ग्रहण कर ही लेगा, इसकी जैसे किसी को आशा नहीं थी। उस दिन मैं बेचैन हो उठा।

कलेवा के बाद हरेक ने साफ़-सुथरे कपड़े पहने और बग़ीचे में दावत की मेज़ें लग गईं। उधर मेरे दफ़्तर में, झण्डा-वाहकों ने झण्डे का ग़िलाफ़ उतारा और ढोलवादकों ने अपने ढोलों को अपने पेटों पर लटका लिया। लेकिन समारोह की ये तैयारियां भी उदासी की मर्मवेधी लपलपाहटों को शान्त नहीं कर सकीं। लिदोच्का भोर से ही रोते-रोते अपनी नीली आंखों को फोड़े डाल रही थी, लड़कियां

बिना किसी छिपाव के अपने चेहरों को सुजाए हुए थीं और येकातेरिना ग्रिगोरियेवना जिसके लिए ख़ुद अपने भावों को रोकना मुश्किल हो रहा था, उन्हें दिलासा देने का व्यर्थ प्रयास कर रही थी। लड़के गम्भीर और चुप थे। लापोत का सारा आकर्षण जैसे काफ़ूर हो गया था। नन्हें लड़के अपूर्व सीधी-सतर रेखाओं में बिजली के खम्भों के तारों पर बैठी कतिपय चिड़ियों की भांति स्थित थे। वे बेंचों और बाड़ों पर बैठे थे, गम्भीर मुद्रा में, अपने हाथों को घुटनों के बीच जोड़े हुए। उनकी आंखें ऐसी चीज़ों पर जमी थीं जो उनके सामान्य दृष्टि-विस्तार से कहीं अधिक ऊंची थीं – छतों पर, पेड़ों की चोटियों पर, आकाश पर। उनका नाक सुड़कना भी इतने अधिक परिमाण में पहले कभी नहीं हुआ था।

मैं उनके बाल-सुलभ त्रास को अनुभव कर रहा था। मैं उनके दुःख का साझीदार था – उन जीवों के दुःख का जिनके हृदय में न्याय की चेतना के लिए इतना अधिक मान है। मैं तोस्का सोलोवियोव से सहमत था – कल मात्वेई बेलूख़िन कोलोनी में क्यों नहीं होगा? क्या मामले को इतने युक्ति-युक्त ढंग से नहीं व्यवस्थित किया जा सकता कि न तो मात्वेई विदा हो और न तोस्का को अपना यह व्यापक, असाध्य और अन्यायपूर्ण शोक संजोना पड़े। लेकिन तोस्का ही तो एक अकेला गुइयां नहीं था जिसे मात्वेई छोड़कर जा रहा था, और मात्वेई ही एक अकेला ऐसा जीव नहीं था जो जा रहा था। बुरून, कराबानोव, ज़दोरोव, झाइनिक, वेर्शनेव, गोलोस, नास्त्या नोचेवनाया – वे सब जा रहे थे, और उनमें से प्रत्येक के दरजनों गुइयां थे, और मात्वेई, सेम्योन, बुरून जो असल इनसान थे – ऐसे इनसान जिनका अनुकरण करना आनन्द का विषय था और जिनकी अनुपस्थिति का अर्थ था जीवन को फिर नये सिरे से शुरू करना।

और अकेले ये भावनाएं ही नहीं थीं जो कोलोनी को ग्रस्त किए थीं। यह साफ़ था, ख़ुद मेरे लिए भी और कोलोनीवासियों के लिए भी, कि कोलोनी ने अपना सिर जल्लाद की टिकटिकी पर रख दिया है, और यह कि जल्लाद की कुल्हाड़ी उसकी गरदन पर गिरा ही चाहती है।

ख़ुद रबफ़ाक के उम्मीदवार भी ऐसे दिखते थे जैसे उन्हें 'आवश्यकता

तथा भाग्य के अनगिनत देवी-देवताओं की वेदी पर' बलि देने के लिए तैयार किया जा रहा हो। कराबानोव तो एक क्षण के लिए भी मेरे दामन से अलग नहीं हुआ। मुसकराता हुआ वह कहता रहा

"जीवन का यही ढंग है – हमेशा कोई न कोई चीज़ गड़बड़ रहती है। रबफ़ाक में जाना एक महानतम सौभाग्य है, कह सकते हैं कि एक सपना है, एक ऐसी चीज़ जिसके लिए हर कोई हमेशा ललकता है – खुदा जाने वह क्या है। लेकिन हो सकता है कि वास्तव में ऐसा कुछ भी न हो। हो सकता है कि हमारी ख़ुशी का वास्तव में आज अन्त हो रहा हो। कोलोनी को छोड़ते दुःख होता है, बहुत दुःख ... मैं धाड़े मारकर रो सकता था, अगर लोग मुझे न देखते होते ... ओह, कितना मैं रोता ... शायद मैं कुछ हल्का अनुभव करता अगर ऐसा कर सकता तो ... जीवन में सत्य जैसी कोई चीज़ नहीं है।"

वेर्शनेव, आंखों में झुंझलाहट भरे, दफ़्तर के एक कोने में से हमारी ओर नज़र डालता है:

"दुनिया में केवल एक ही चीज़ सच है – मानव-जीव।"

"भई ख़ूब!" कराबानोव हंसा। "तो तुम्हारा मतलब क्या यह है कि तुम सत्य की खोज बिल्लियों तक के बीच करते रहे?"

"न-न-न-नहीं, सो नहीं ... बात यह है कि लोगों को अच्छा बनना है, नहीं तो फिर सत्य और कि-कि-किस मर्ज़ की दवा है? देखो न, अगर एक आदमी सूअर है, तो वह समाजवाद में पहुंचने पर भी सिर दर्द पैदा करेगा। मैंन आज ही यह बात सीखी।

मैंने नज़र जमाकर निकोलाई की ओर देखा।

"आज ही क्यों?"

"आज तुम लोगों को आ-आ-आईने की भांति देख सकते हैं। मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों है – हर चीज़ बस निरा काम हुआ करती थी। हर दिन काम का दिन होता था और आज हर चीज़ जैसे अचानक स-स-साफ़ हो गई है। गोर्की ने सच बात लिखी थी, लेकिन मैं उसे पहले नहीं समझ सका, या यों कहिए कि समझता तो था, लेकिन अनुभव नहीं कर सकता था कि वह कितनी महत्वपूर्ण थी। इनसान – कोई ऐरा-ग़ैरा तलछीटया नहीं। और यह सच है – कुछ हैं जो निरे साधारण लोग होते हैं, और कुछ हैं जो असल इनसान होते हैं।"

इस तरह के शब्दों के सहारे रबफ़ाक के उम्मीदवार उन ताज़ा घावों को छिपाने का प्रयास कर रहे थे जो कोलोनी से उनकी विदाई से लगे थे। लेकिन उनकी व्यथा हमारी व्यथा से कम थी। कारण कि उज्जवल रबफ़ाक की उन्हें **आस** थी, जब कि हमें कोई आस नहीं थी।

इससे पहली रात शिक्षक मेरे निवास की बरसाती में जमा हुए। कुछ बैठे थे, कुछ खड़े थे। सब सोच में डूबे थे और लाज से कटते हुए एक-दूसरे से सटे जा रहे थे। कोलोनी नींद में डूबी थी। रात शान्त, कुनकुनी और तारों भरी थी। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे दुनिया अत्यन्त पेचीदा अंशों से युक्त एक तरह का जादुई घोल हो – सुमधुर और मोहक। लेकिन उसके अंशों को एक-दूसरे से अलग करना असम्भव था, और यह कोई नहीं बता सकता था कि कितनी तिक्तताएं उसमें घुली थीं। ऐसे क्षणों में दार्शनिक चिन्ताएं, अनबूझ को बूझने की आकांक्षाएं मानव को मथने लगती हैं। और अगर आगामी कल उन मित्रों को 'हमेशा के लिए' ले जानेवाला है जिनके सामाजिक विकास को, अराजकता के बीच से मूर्त करने में किसी व्यक्ति ने योग दिया है, तो यह बिलकुल सम्भव है कि वह व्यक्ति निर्वाक, स्थिर आकारा की टोह लेना शुरू कर दे और क़रीब-क़रीब, कुछ क्षणों में, यह विश्वास करने लगे कि आस-पास खड़े चिनार, बेद और लीपा के पेड़ फुसफुसाकर उसकी उलझनों का हल सुझा रहे हैं।

और हम क्षणभंगुर मानव-जीवधारियों का एक असहाय समूह, व्यक्तिगत रूप में हम में से प्रत्येक, और समष्टि रूप में हम सब एक साथ, मौन साधे अपने-अपने निजी विचारों में डूबे हुए पत्तों की फुस-फुसाहटों को सुन रहे थे और तारों की आंखों में झांक रहे थे। शिकार में असफल होने के बाद बर्बर लोग जैसे व्यवहार करते हैं, वैसे ही।

और मैं अन्य सबके साथ ख़ुद भी सोच रहा था। उस रात – स्नातकों के अपने पहले जीते-जागते जत्थे को प्रस्तुत करने की रात – दुनिया-भर की उल्टी-सीधी बातों में डूबता-उतराता रहा था। उस समय यह सब किसी पर भी मैंने प्रकट नहीं होने दिया, और मेरे सहयोगियों को सम्भवतः ऐसा मालूम हुआ जैसे अकेले वे ही थे जो कमज़ोर पड़े। उनका विचार था कि मैं बलूत की भांति अडिग, सुदृढ़ और गहराई के साथ अपनी जड़ें जमाए रहा। और शायद, मेरी मौजूदगी में,

अपनी कमज़ोरी को प्रकट करने में उन्होंने शर्म का भी अनुभव किया।

मैंने सोचा कि मेरा जीवन कठिनाइयों तथा अन्याय से कितना भरपूर था। किस प्रकार अपने जीवन के श्रेष्ठतम काल का मैंने होम किया – केवल इसलिए कि उंगलियों पर गिने जाने योग्य कुछ 'बाल अपराधी' रबफ़ाक में प्रवेश कर सकें। किस प्रकार वे रबफ़ाक में, और बड़े नगर में, नये प्रभावों के नीचे आएंगे, ऐसे प्रभावों के, जिन्हें मैं नियंत्रित नहीं कर सकता... और कौन जानता है कि किस प्रकार इन सबका अन्त होता? हो सकता है कि मेरा श्रम और मेरी कुरबानियां ग़लत जगह इस्तेमाल की गई शक्ति का एक बेकार पिण्डमात्र सिद्ध हों?

और यह भी बहुत कुछ मैंने सोचा – यह सब अन्याय क्यों? ख़ुद मैंने जो किया, क्या वह अच्छा काम नहीं था? क्या वह, क्लब-घर के संगीत-समारोह में तान अलापने, या किसी अच्छे नाटक में अभिनय करने – मास्को आर्ट थियेटर जैसी नाट्यशाला तक में अभिनय करने – से हज़ार गुना अधिक कठिन और अधिक उपयोगी काम नहीं था? तब फिर, ऐसा क्यों कि अभिनेता व्यापक श्रोताओं द्वारा सराहे जाएं, मानवीय सम्मान और कृतज्ञता की चेतना से अभिभूत अपने घरों में जाकर आराम करें, और खेतों के बीच इस परित्यक्त कोलोनी में रात के अंधेरे में मैं करवटें बदलता रहूं? क्यों नहीं किसी ने – यहां तक कि गोंचारोव्का के निवासियों ने भी – मेरी सराहना की? केवल इतना ही नहीं – रह-रहकर, बार-बार, उद्विग्नता के साथ यह तथ्य भी मेरे दिमाग़ में उभरता कि रबफ़ाक के अपने इन उम्मीदवारों की साज-सज्जा के लिए एक हज़ार रूबल मैंने स्वाहा कर दिए। इस कार्य के लिए बजट में कोई व्यवस्था नहीं थी। अर्थ-विभाग के इन्स्पैक्टर ने कड़ी और आलोचना की नज़र से मुझे देखा, और जवाब में कहा:

"आपकी मर्ज़ी, अगर चाहो तो धन ख़र्च कर सकते हो। लेकिन यह ध्यान रखना कि अगर घाटा पड़ा तो आपको अपने वेतन में से उसे पूरा करना होगा।"

इस वार्तालाप को याद कर मैं मुसकराया। मेरे मस्तिष्क में अचानक एक अच्छे-ख़ासे महकमे ने काम करना शुरू कर दिया। एक कमरे में फुर्ती के साथ, इन्स्पैक्टर के विरुद्ध कोई अभियोगों की रचना कर

रहा था, अगले कमरे में कोई दुस्साहसी ज़ोरों से चिल्लाकर कह रहा था "गोली मारो!" और अगले कमरे में, कई चाटुकार तलछटिया, मेज़ों पर झुके यह हिमाब लगा रहे थे कि मेरे वेतन में से घाटे को पूरा करने में कितने महीने लगेंगे। यह महकमा ज़्यादा सजगता से गतिशील था, बावजूद इसके कि अन्य महकमे भी मेरे दिमाग़ में चालू थे। पास की इमारत में एक गुरू-गम्भीर सभा हो रही थी। हमारे तमाम शिक्षक और रबफ़ाक के उम्मीदवार मंच पर मौजूद थे। सो वादकों का एक सशक्त आर्केस्ट्रा 'इंटर्नेशनेल' की गुंजार कर रहा था, और कोई धुरंधर शिक्षाविद् भाषण दे रहा था।

मैं एक बार फिर मुसकराया। यह धुरंधर शिक्षाविद् क्या कभी कोई तत्व की बात कर सकता था? उसने रिवाल्वर से लैस राजमार्ग पर छापा मारते कराबानोव को या किसी की खिड़की से अन्दर घुसते बुरून को नहीं देखा था – चपल चोर बुरून को जिसके साथी डाकेज़नी में गोली से उड़ा दिए गए थे। क्या उसने देखा था?

"इस सारे समय आप क्या सोचते रहे?" येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने मुझसे पूछा। "सोचते रहे और मुसकराते रहे।"

"मैं एक गुरु-गम्भीर सभा में व्यस्त हूं," मैंने कहा।

"सो तो प्रत्यक्ष है। लेकिन फ़िलहाल हमें यह बताइए कि बिना धुरी के कैसे क्या होगा?"

"ओह। भावी शिक्षा-विज्ञान के लिए एक और क्षेत्र – धुरी का क्षेत्र।"

"क्षेत्र क्या?"

"मैं धुरी के बारे में बात कर रहा हूं। अगर समूह है तो उसकी एक धुरी भी होनी चाहिए।"

"धुरी किस क़िस्म की हो, सब इस पर निर्भर करता है।"

"उस क़िस्म की जिसकी हमें आवश्यकता है। हमारे समूह के बारे में, येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, अपनी राय और अधिक ऊंची होनी चाहिए। यहां हम धुरी की चिन्ता में गले जा रहे हैं, और उधर समूह उसे पैदा भी कर चुका है, और आपको उसकी ख़बर तक नहीं। एक अच्छी धुरी विभक्त करने से बढ़ती ही है। भविष्य के शिक्षा-विज्ञान के लिए अपनी नोटबुक में इसे लिख लो।"

"अच्छी बात है, मैं लिख लूंगी," विनीत भाव से येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने सहमति प्रकट की।

अगले दिन शिक्षकों का समूह जैसे अपने आप में डूबा था। समारोह शुष्क, सरकारी ढंग से सम्पन्न हुआ। इस मन:स्थिति को और अधिक गम्भीर बनाने की मेरी इच्छा नहीं थी, सो नाटक के एक पात्र की भांति मैंने अभिनय किया—उस आह्लादपूर्ण व्यक्ति की भूमिका निबाहते हुए जो अपनी अत्यन्त प्रिय आकांक्षाओं की उपलब्धि का समारोह मना रहा हो।

दोपहर को हमने सजी-धजी मेज़ों पर भोजन किया और हंसी के उस समय के बाहुल्य ने एक हद तक हमें चकित कर दिया। लापोत ने अलग-अलग अभिनय करते हुए बताया कि सात या आठ साल में रबफ़ाक के हमारे उम्मीदवारों का क्या हश्र होगा। उसने इंजीनियर ज़दोरोव का दृश्य पेश किया, तपेदिक से दम तोड़ते हुए, और डाक्टर बुरून तथा वेर्शनेव उसके बिस्तरे के पास खड़े फ़ीस को आपस में बांटते हुए। तभी संगीतज्ञ क्राइनिक आता है और मातमी धुन बजाने के लिए फौरन मुआवज़ा अदा करने की मांग करता है, नहीं तो—वह धमकी देता है—कि वह धुन नहीं बजाएगा। लेकिन हमारी हंसी और लापोत के मज़ाक़ के विरुद्ध मनोरंजन इतना नहीं जितना कि सुप्रशिक्षित इच्छाशक्ति का प्राधान्य था।

तीन बजे हम पंक्तिबद्ध खड़े हो गए और झण्डे को बाहर निकाला गया। रबफ़ाक के उम्मीदवार दाहिनी ओर स्थित थे। अन्तोन 'मोलोदेत्स' को हांककर लाते हुए अस्तबल से बाहर निकला और लड़कों ने विदा होनेवालों की टोकरियों को गाड़ी में लाद दिया। कमान दिया गया, ढोल गरजे, और दस्ता स्टेशन के लिए रवाना हुआ। आध घंटे बाद हम कोलोमाक की खिसकती रेतीली घाटी से बाहर निकले और सन्तोष की सांस लेते हुए एक प्रशस्त राजमार्ग की कड़ी, छोटी घास पर हमने पांव रखा जिसके ऊपर से, सुदूर अतीत में, तातार और नीपर के कज़्ज़ाक गुज़रे थे। ढोलवादको ने अपने कंधों को चौरस किया, उनके हाथों में मंगूरियां अधिक हल्की तथा वेगवान हो उठीं।

"पंक्ति सीधी करो! सिर ऊंचे उठाओ!" कड़ी आवाज़ में मैंने कमान दिया।

करावानोव ने मुड़कर देखा – बिना रुके या बिना क़दमों में गड़बड़ी किए एक सरल मुसकान के द्वारा अपने गर्व, अपने उल्लास, अपने प्रेम, अपनी निज की शक्तियों में अपने विश्वास तथा ख़ुद अपने शानदार भविष्य को व्यक्त करने की अपनी निराली प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए। ज़दोरोव ने जो उसके बराबर में मार्च कर रहा था, उसकी हरकत के इस आशय को तुरन्त समझा और अविलम्ब सदा की भांति संकोच के साथ अपने भावों को छिपाने का प्रयास किया – उसने क्षितिज की ओर एक तेज़, चेतन नज़र डाली और सिर उठाकर झंडे की ओर देखा। अचानक करावानोव ने तेज़, आह्लादपूर्ण आवाज़ में गाना शुरू किया। दूसरों ने भी उल्लसित हो गीत को उठाया। मेरे अन्तर का एक-एक कोना, पलक झपकते ही मई दिवस की परेड की भांति उल्लास से भर गया। मुझे ऐसा अनुभव होता प्रतीत हुआ जैसे कोलोनीवासी भी मेरे मन के इस उल्लास में पगे हों। अचानक यह महान तथ्य हमारी आंखों के सामने उद्भासित हो उठा – गोर्की कोलोनी अपनी प्रथम और श्रेष्ठम संतानों को विदा करने जा रही थी। उनके सम्मान में ही हमारा यह रेशमी ध्वज फहरा रहा था, ढोल गरज रहे थे, दस्ता अपनी मार्च में हिलोरें ले रहा था। सूरज जो ख़ुशी से दमकता मालूम होता था, हमें रास्ता देने के लिए पश्चिम में इस प्रकार छिप जाता मानो हमारे साथ एक मधुर गीत गा उठा हो। एक चतुर गीत जो यों देखने में प्रेम में पगे किसी कज़्ज़ाक के बारे में था, लेकिन वस्तुत: रबफ़ाक के उम्मीदवारों के दस्ते के लिए था जो कमाण्डरों की परिषद द्वारा 'अलेक्सान्द्र ज़दोरोव के कमान में सातवें मिश्रित दस्ते' को कल दिए गए आदेश के अनुसार ख़ारकोव के लिए रवाना हो रहा था। लड़के ख़ुद अपने गाने के आनन्द में मगन थे, और रह-रहकर कनखियों से बराबर मेरी ओर देखते जाते थे – वे ख़ुश थे कि मैं उनके साथ आनन्द का अनुभव कर रहा था।

दूर पीछे की ओर धूल के बंवडर देर से चक्कर लगा रहे थे। शीघ्र ही उनके बीच से एक घुड़सवार प्रकट होता दिखाई दिया। यह ओल्या वोरोनोवा थी। नीचे कूदकर उसने अपना घोड़ा मुझे थमाया:

"इसपर सवार हो जाइए। बढ़िया ज़ीन है – असली कज़्ज़ाकी ज़ीन। ओह, मैं क़रीब-क़रीब लेट हो चली थी।"

"मैं सेनापति थोड़े ही हूं," मैंने कहा। "लापोत को इसपर सवार होने दो। वह अब क० प० म०* है।"

"ठीक।" लापोत ने कहा, और ज़ीन पर आसन जमाते हुए दस्ते के अग्रभाग की ओर कमर पर हाथ रखे और अपनी ग़ायब मूंछों पर ताव फेरता बढ़ चला।

'आराम करो' का कमान देना पड़ा, कुछ तो इसलिए कि ओल्या अपनी बात कह सके, और कुछ इसलिए कि लापोत की 'कलाबाज़ियों' के आगे टिके रहना लड़कों के बस की बात नहीं थी।

स्टेशन पर बेपरवाह प्रसन्नता व गम्भीर उदासी का वातावरण छाया रहा। छात्र अपनी गाड़ी में जा बैठे, और गर्व के साथ हमारी पांतों तथा प्लेटफ़ार्म पर अन्य लोगों की ओर—जो हमारे आगमन से किसी हद तक उद्विग्न हो उठे थे—देखने लगे।

दसरे सिगनल के हो जाने पर लापोत ने एक संक्षिप्त भाषण दिया :

"देखो, बेटो, हमारा नाम नीचा न करना। शूर्का, तुम इन्हें क़ायदे में रखना और देखो इस डिब्बे को अजायबघर में रखवाना न भूलना। और इसपर लिखावट होनी चाहिए: 'इस डिब्बे में सेम्योन कराबानोव रबफ़ाक के लिए रवाना हुआ था'।"

चरागाहों को पार करते, संकरी पगडंडियों से होते, नदियों पर बिछे तख़्तों को लांघते और बीच-बीच में छलछलाते नालों तथा खाइयों को छलांगते हम वापस लौटे। फलस्वरूप छोटी-छोटी मित्रतापूर्ण टोलियों में अब हम बंट गए थे, सांझ के घिरते हुए धुंधलके में अन्तर का आवरण हट गया था और आत्माएं, बिना किसी दम्भ के, अपने आपको प्रदर्शित कर रही थीं। गुद कह रहा था:

"मैं किसी रबफ़ाक में नहीं जाऊंगा। मैं जूते बनाने का काम करूंगा, और ख़ूब बढ़िया ज़ूते बनाऊंगा। क्या यह किसी से बुरा है? बिलकुल नहीं। लेकिन दु:ख होता है कि साथी हमें छोड़कर चले गए, है न?"

गांठ-गठीले, मुड़ी टांगोंवाले, भारी-भरकम कुदलाती ने कड़ी नज़र से गुद की ओर देखा।

---

* कमाण्डर-परिषद-मंत्री। सं०

"तुम मोची भी निकम्मे निकलोगे," उसने कहा। "पिछले हफ़्ते तुमने मेरे जूते में एक पेबन्द लगाया था और सांझ होते न होते वह अलग जा गिरा। ऐसा मोची डाक्टर से ज़्यादा गया-गुज़रा होता है। मोची अच्छा हो तो, फिर, वह डाक्टर से अच्छा हो सकता है।"

उस सांझ कोलोनी में एक अजीब निस्तब्धता छाई रही। सोने के सिगनल बजने से पहले ओसाद्‌ची – कमाण्डर, जिसकी उस दिन ड्यूटी थी, – गुद को लिये हुए आया। गुद नशे में था। या यूं कहिए कि नशे में इतना अधिक नहीं था, जितना कि भावुकता की तरंग में था। आम विक्षोभ की परवाह न करते हुए वह मेरे सामने आ खड़ा हुआ और मेरी दावात की ओर देखते हुए मृदु आवाज़ में बोला:

"मैंने पी है, क्योंकि ऐसा करना सही चीज़ है। भले ही मैं मोची हूं, लेकिन मैं भी एक आत्मा रखता हूं – रखता हूं न? हां, रखता हूं। मैं अपने आपको कैसे स्थिर रख सकता हूं जब ज़दोरोव और हमारे कितने ही दूसरे लड़के चले गए – शैतान ही जाने कि कहां? मैं इसे यूं ही सहन नहीं कर सकता। सो मैं गया और अपनी कमाई के पैसे से पी ली। क्या मैंने मिल के जूतों में तल्ले नहीं चढ़ाए थे? चढ़ाए थे। मैंने खुद अपनी कमाई के पैसे से पी। क्या मैंने किसी का गला काटा? क्या मैंने किसी का अपमान किया? क्या मैंने किसी लड़की को उंगली तक से छुआ? नहीं, मैंने नहीं छुआ। और वह है कि चिल्लाना शुरू कर देता है – 'चलो अन्तोन के पास!' चलें, बस चलें। और यह अन्तोन कौन है? क्या यह आप हो, अन्तोन सेम्योनोविच? कौन है यह? कोई जंगली दरिन्दा? नहीं, यह जंगली दरिन्दा नहीं है। किस तरह का आदमी है वह – शायद निकम्मा? नहीं, वह निकम्मा आदमी नहीं है। अच्छा तो यह लो। मैं आ गया हूं। मैं सामने मौजूद हूं। तुम्हारी आंखों के सामने यह गंवार मोची गुद खड़ा है।"

"क्या तुम इस हालत में हो कि मेरी बात सुन सको?"

"हां, हूं। मैं आपकी बात सुन सकता हूं।"

"अच्छा तो फिर सुनो। जूते बनाना, यह एक ज़रूरी और अच्छी बात है। तुम एक अच्छे मोची सिद्ध होगे और तुम जूते बनाने के

कारख़ाने के डाइरेक्टर बन जाओगे, बशर्ते कि तुम दारू को मुंह से नहीं लगाओ।"

"उस समय भी नहीं जब कि इतने सारे लोग हमें छोड़कर चले जाते हैं?"

"नहीं, उस समय भी नहीं।"

"सो, आपकी राय में, मैंने पीकर ग़लती की?"

"हां, तुमने ग़लती की।"

"और चूंकि इस सम्बन्ध में अब और कुछ नहीं किया जा सकता," कहते-कहते गुद का सिर लटक गया, "आपको मुझे सज़ा देनी होगी।"

"जाकर सोओ। इस बार मैं तुम्हें सज़ा नहीं दूंगा।"

"देखा, मैंने कहा था न?" गुद ने दर्शकों से कहा। फिर, चारों ओर एक तिरस्कारपूर्ण नज़र डालते हुए, कोलोनीवासी के ढंग से उसने सलाम किया

"बहुत अच्छा, साथी।"

लापोत ने उसे **बांह** से थामा और संलग्नता के साथ उसे शयनागार की ओर ले चला, इस तरह जैसे वह उसे कोलोनी के शोक का निचोड़ अनुभव कर रहा हो।

आधे घंटे बाद कुदलाती मेरे दफ़्तर में शरद् के वास्ते जूते बांटने के मसले निबटाने लगा। बड़े चाव के साथ नये जूतों को वह बक्से में से निकालता और अपनी सूची में दर्ज कोलोनीवासी के दस्तों के अनुसार उन्हें वितरित कर देता। चीख़-पुकार एक घड़ी के लिए दम न लेती।

"तुम इन्हें कब बदलने जा रहे हो? मेरे लिए ये तंग पड़ते हैं।"

कुदलाती बार-बार जवाब देता। आख़िर उसका धीरज जाता रहा और वह चिल्लाया·

"इतनी बार तो तुम्हें बता चुका हूं – मैं इन्हें आज नहीं बदलूंगा। कल इन्हें बदला जा सकता है। कुन्दज़ेहन!"

थका हुआ लापोत मेरी मेज़ पर बैठा था। अपनी आंखों को सिकोड़ते हुए कुदलाती से बोला:

"साथियो, ग्राहकों के साथ पारस्परिक नम्रता से पेश आना चाहिए।"

१२. शरद्

अपना चक्र पूरा कर जाड़ा फिर आ रहा था। अक्तूबर के आने तक चुकन्दरों से भरे अन्तहीन 'बुर्त्त' ढंक दिये गये। लापोत ने कमाण्डरों की परिषद में प्रस्ताव रखा:

"निश्चय हुआ – सन्तोष की सांस ली जाए।"

'बुर्त' गहरी खाइयां हैं, बीस मीटर लम्बी। जाड़ों के लिए शेरे ने इस तरह की एक दरजन खाइयां बनवाई थीं, और इसपर भी उसने कहा था कि ये अपर्याप्त हैं चुकन्दरों में हमें किफ़ायत बरतनी पड़ेगी।

प्रत्येक चुकन्दर को उसकी खाई में इस तरह मंगवा कर रखना था जैसे वह कोई कांच का बना यंत्र हो। सुबह से सांझ तक, बिना थके, शेरे मिश्रित दस्ते के सिर पर सवार रहता और बराबर उन्हें कोंचता-कुरेदता:

"ज़रा रहम करो, चुकन्दरों को इस तरह न फेंको, सथियो। यह तुम गांठ बांध लो कि अगर एक भी चुकन्दर सख़्ती से टकरा गई तो वह गलना शुरू हो जायेगी, इसके बाद वह सड़ने लगेगी, अन्य सब को भी अपने साथ ले डूबेगी। सो, मेहरबानी करके, ज़रा हो-शियारी से काम लो, साथियो।"

काम की एकरसता से चूर और चुकन्दरों से एकदम तंग कोलोनी-वासी शेरे की झिड़कियों के सहारे अपने आपको बहलाने तथा सुस्ताने के अवसर से कभी न चूकते। ढेर में से एक ख़ूबसूरत-सी, गोल, गुलाबी चुकन्दर को वे चुनते और समूचा दस्ता अपने कमाण्डर की अगुवाई में उसके इर्द-गिर्द जमा हो जाता। कमाण्डर उंगलियों को फैलाकर अपने हाथों को ऊंचा उठाता और रंगमंचीय ढंग से फ़ुसफुसाता हुआ कहता: "अरे, इतना नज़दीक न जाओ। दम लो। तुममें से किसके हाथ साफ़ हैं?"

डोली आ जाती। मिश्रित दस्ते का कमाण्डर अछुवाए-से हाथों से चुकन्दर को ढेर में से उठाता। कोई आशंका से चिचिया उठता:

"अरे, यह क्या कर रहे हो? यह क्या कर रहे हो?"

सब भय से जड़ हो जाते और अपने सिरों को हिलाते, जब कि वही आवाज़ जारी रहती:

"तुम्हें होशियारी से काम लेना चाहिए।"

जो भी लबादा पहले हाथ लगता उसे लपेटकर एक मुलायम, आरामदेह तकिया बना लिया जाता, तकिये को डोली में लगा दिया जाता और उसके सहारे टिका गुलाबी, गोल, हृष्ट-पुष्ट चुकन्दर वास्तव में एक हृदयस्पर्शी दृश्य पेश करता। अपनी मुसकान को छिपाने के लिए शेरे घास के तिनके को कुतरने लगता। डोली ज़मीन पर से उठाई जाती और मित्का फुसफुसाकर कहता: "हौले से, साथियो, हौले से। यह गांठ बांध लो, यह सड़ना शुरू हो सकता है..."

मित्का की आवाज़ शेरे की आवाज़ से कुछ मिलती हुई-सी जान पड़ती। सो एडुअर्ड निकोलायेविच तिनके को न फेंकने के प्रति सावधान रहता।

शरद् की जोताई ख़त्म हो चुकी थी। ट्रैक्टर का अभी हमने केवल स्वप्न देखना शुरू किया था। हल और दो घोड़ों के सहारे एक दिन में आधा हैक्टर से ज़्यादा जोताई करना बिलकुल असम्भव था। इसलिए, पहले और दूसरे मिश्रित दस्तों का काम देखते हुए, शेरे अत्यन्त चिन्तित हो उठा। इन दस्तों में पुरानी पीढ़ी के लोग काम करते थे, और उनके कमाण्डर फ़ेदोरेन्को, कोरितो तथा चोबोत जैसे मज़बूत लोग थे। सशक्त इतने अधिक कि उनमें और हल में जुतनेवाले दोनों घोड़ों की शक्ति में उन्नीस-बीस का अन्तर होगा। जोताई के काम की तमाम बातों के जानकार इन लोगों ने जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी जोताई के तरीक़ों का प्रयोग करने की दुर्भाग्यपूर्ण ग़लती की। समूह में, मित्रों के साथ अपने सम्बन्धों और अपने व्यक्तिगत जीवन में वे सीधी, गहरी लीकों और मिट्टी के वज़नी चमकदार ढोकों के शौक़ीन थे। और उनके मस्तिष्क का यंत्र उनके सिरों में नहीं, बल्कि अन्य जगहों में काम करता था – इस्पात की भांति मज़बूत उनके हाथों में, उनके बख़्तरबंद सीनों में, उनकी सुदृढ़ जंघाओं में। कोलोनी में रबफ़ाक के आकर्षणों के विरुद्ध वे जमकर खड़े होते और मौन तिरस्कार की भावना के साथ शिक्षा सम्बन्धी सभी विषयों की चर्चा से बचते थे। अपने विश्वासों के वे पक्के थे – अविचल, और कोलोनीवासियों में अन्य कोई भी इतने गौरवमण्डित भले हाव-भावों का, इतनी विश्वासपूर्ण संक्षिप्त वाणी का धनी नहीं था जितना कि वे।

पहले और दूसरे मिश्रित दस्तों के सक्रिय सदस्य होने के नाते वे कोलोनी में सबके गहरे सम्मान का उपभोग करते थे, बावजूद इसके कि कुछ मज़ाक़ पसन्द जीव उनपर छीटें कसने के अपने मोह का हमेशा संवरण नहीं कर पाते थे।

इस शरद् में, पहले और दूसरे मिश्रित दस्तों की होड़ ने एक अच्छा-ख़ासा तूफ़ान खड़ा कर दिया। उस समय तक होड़ सोवियत काम का प्रतीक नहीं बन पाई थी, और इसकी वजह से मुझे भी जन-शिक्षा विभाग में कष्ट उठाना पड़ा। मेरा एकमात्र औचित्य यह था कि होड़ हम लोगों के बीच अपने आप – सहज स्फूर्त रूप में – उदित हुई, और यह कि ख़ुद मेरा उसमें कोई हाथ नहीं था।

पहला मिश्रित दस्ता सुबह के छः बजे से दोपहर तक काम करता था, और दूसरा दोपहर से सांझ के छः बजे तक। मिश्रित दस्ते एक सप्ताह के लिए बनते थे। अगले सप्ताह मिश्रित दस्तों में कोलोनी की शक्तियों का तारतम्य हमेशा थोड़ा-बहुत बदल जाता था, हालांकि उसमें किसी हद तक विशेषीकरण का एक परिमाण रहता था।

प्रत्येक दिन, ठीक उस समय जब एक मिश्रित दस्ता अपना काम ख़त्म करता होता, हमारा सहायक कृषिविद् आल्योशा वोल्कोव अपना दो मीटरी पैमाना लिए बाहर खेत में जाता और मापकर देखता कि मिश्रित दस्ते ने कितने वर्ग मीटर जोताई की है।

मिश्रित दस्ते जोताई का काम जमकर करते लेकिन काम का परिमाण मिट्टी, घोड़ों, धरती में ढलवानों, मौसम तथा अन्य बाह्य तत्वों के अनुसार घटता-बढ़ता रहता था। सूचनाओं के लिए लटकी एक तख़्ती पर आल्योशा वोल्कोव खड़िया से आंकड़ों को लिख देता:

१६ अक्तूबर पहला मिश्रित कोरितो... १८५० वर्ग मीटर
१६ अक्तूबर पहला मिश्रित वेत्कोव्स्की .. २६०० वर्ग मीटर
१६ अक्तूबर दूसरा मिश्रित फ़ेदोरेन्को... २४१० वर्ग मीटर
१६ अक्तूबर दूसरा मिश्रित नेचीताइलो .. २२७० वर्ग मीटर

बिलकुल अनजान में लड़कों ने अपने काम के नतीजों की तुलना करने में दिलचस्पी लेनी शुरू की। प्रत्येक दस्ता अपने से पहलेवाले को मात करने का प्रयास करते। प्रकट हुआ कि श्रेष्ठतम रहने की

अत्यन्त सम्भावना थी – फ़ेदोरेन्को और कोरितो थे। दोनों में एक लम्बे अरसे से घनिष्ठ मित्रता थी। लेकिन इतनी घनिष्ठ मित्रता ने भी उन्हें एक-दूसरे के नतीजों का ईर्ष्या के साथ अनुसरण करने तथा एक-दूसरे के काम में हर तरह के दोष निकालने से नहीं रोका। और यहां आकर जिस रूप में फ़ेदोरेन्को ने एक नाटकीय घटना के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की, उससे साफ़ प्रकट हो गया कि वह भी कुछ दम-खम रखता है। कुछ दिनों से वह अन्य दस्तों से आगे बढ़ा था। दिन प्रतिदिन आल्योशा वोल्कोव की तख़्ती पर उसके काम का परिमाण २५०० से २६०० तक चल रहा था। कोरितो के दस्ते ने इन रिकार्डों को छूने की कोशिश की, लेकिन हमेशा चालीस या पचास वर्ग मीटर से पिछड़ा रहता और फ़ेदोरेन्को अपने मित्र का मज़ाक़ बनाता :

"बस भी करो, मित्र। हर कोई देख सकता है कि तुम अभी नौसिखिया हलवाहे हो।"

अक्तूबर के अन्त में 'जोर्का' नामक घोड़ी बीमार पड़ गयी, और शेरे ने केवल एक जोड़ा खेतों में भेजा। साथ ही कमाण्डरों की परिषद से यह अनुरोध किया कि काम की कुशलता को बढ़ाने के लिए फ़ेदोरेन्को को कोरितो के दस्ते में नियत कर दिया जाए।

शुरू में फ़ेदोरेन्को इस स्थिति में निहित नाटकीय सम्भावनाओं को हृदयंगम् नहीं कर सका। कारण, वह जोर्का की बीमारी और घोड़ों की केवल एक जोत के सहारे शरद् की जोताई को अनिवार्यत: जल्दी ख़त्म करने की समस्या से बहुत परेशान था। आपा भूलकर वह काम में खो गया और केवल तभी चेत में आया जब आल्योशा वोल्कोव ने तख़्ती पर यह लिखा :

२४ अक्तूबर दूसरा मिश्रित कोरितो ... २७३० वर्ग मीटर

गर्वीले कोरितो के माथे पर उसकी विजय का सेहरा बंधा और लापोत ने कोलोनी में घूम-घूमकर ऐलान किया :

"फ़ेदोरेन्को भला क्या खाकर कोरितो से मुक़ाबला करेगा? कोरितो बाक़ायदा कृषिविद् है, फ़ेदोरेन्को उसके मुक़ाबले में भला किस खेत की मूली है?"

लड़कों ने "हुर्रा' की आवाज़ों के साथ कोरितो को हवा उछाला

और फ़ेदोरेन्को – हाथों को अपनी पतलून की जेबों में खोंसे – ईर्ष्या के मारे फक पड़ गया।

"कोरितो – कृषिविद ?" वह गरजा। "ऐसा कृषिविद अब से पहले कभी देखने में नहीं आया।"

फ़ेदोरेन्को को निश्छल प्रश्नों से निरन्तर तंग किया जाता :

"कोरितो की जीत को मानते हो न ?"

लेकिन फ़ेदोरेन्को सोच-विचार में डूबा था। कमाण्डरों की परिषद में उसने कहा :

"कोरितो किसलिए इतनी शेखी बघारता है ? इस सप्ताह भी केवल एक ही टीम होगी। मुझे पहले मिश्रित दस्ते में कोरितो को दीजिए और मैं तीन हज़ार मीटर तुम्हारे सामने रख दूंगा।"

कमाण्डरों की परिषद फ़ेदोरेन्को की इस सूझ से खुश हुई और उसका अनुरोध पूरा कर दिया गया। कोरितो ने अपना सिर हिलाया :

"ओह, वह फ़ेदोरेन्को," उसने कहा, "वह बड़ा काइयां है !"

"और देखो," फ़ेदोरेन्को ने उसे झिड़का। "मैंने तुम्हारे लिए जी-जान से काम किया था, सो भला इसी में है कि तुम जी न चुराना।"

काम अभी शुरू भी नहीं हुआ था कि कोरितो को स्वीकार करना पड़ा, उसकी स्थिति विकट है।

"क्या किया जाए ? एक तो फ़ेदोरेन्को से निबटना है और फिर यह जोताई है। और अगर लड़कों ने यह कहना शुरू कर दिया कि मैंने काफ़ी मेहनत से काम न करके फ़ेदोरेन्को को नीचा दिखाया तो यह भी ठीक नहीं होगा।"

अगली सुबह खेतों में जाते समय फ़ेदोरेन्को हंसा, और कोरितो भी हंसा। फ़ेदोरेन्को ने हल के ऊपर एक भीमाकार बेंत रख छोड़ा था, जिसकी ओर उसने अपने मित्र का ध्यान खींचा :

"देख रहे हो न इसे," उसने कहा। "जानते हो, वहां खेतों में गोदी में लेकर मैं तुम्हें दुलारूँगा नहीं।"

कोरितो लाल हो उठा, पहले तो स्थिति की गम्भीरता से, फिर हंसी से।

जब आल्योशा अपना पैमाना लिए खेत से लौटकर आया और

जब उसने अपनी जेब में खड़िया के टुकड़े को टोहना शुरू किया तो समूची कोलोनी उससे मिलने बाहर निकल आई। अधीरता के साथ लड़कों ने पूछा :

"हां तो कैसा रहा ?"

आल्योशा ने धीरे-धीरे और ख़ामोशी के साथ तख़्ती पर लिखा :

२६ अक्तूबर पहला मिश्रित फ़ेदोरेन्को ... ३०१० वर्ग मीटर

"ओह, ज़रा सोचो तो ! फ़ेदोरेन्को – तीन हज़ार !"

फ़ेदोरेन्को और कोरितो खेत से वापस लौटे। विजेता के रूप में लड़कों ने फ़ेदोरेन्को का अभिनन्दन किया, और लापोत ने कहा :

"मैंने कहा था न कि कोरितो कभी फ़ेदोरेन्को से होड़ नहीं ले सकता ! अरे, फ़ेदोरेन्को बाक़ायदा कृषिविद् है !"

फ़ेदोरेन्को ने अविश्वास की मुद्रा में लापोत की ओर देखा, लेकिन लापोत के कुटिल व्यवहार के प्रति अपनी राय व्यक्त करने का साहस न कर सका। कारण, यह खेतों का नहीं, अहाते का मामला था, और इस समय फ़ेदोरेन्को उस विश्वास का अनुभव नहीं कर रहा था जो वह हल की गहराती, थरथराती मूठ को थामने के समय अनुभव करता था।

"यह कैसे हुआ कि कोरितो, तुम मात खा गए ?" लापोत ने पूछा।

"यह नियमविरुद्ध था, साथी कोलोनीवासी। मैं तुम्हें बताता हूं कि क्या हुआ – फ़ेदोरेन्को खेत में अपने साथ एक बेंत लेकर गया था। अब समझ गए न कि क्या हुआ ?"

"बेशक, मैं बेंत लेकर गया था," फ़ेदोरेन्को ने पुष्टि की। "हल को बराबर साफ़ करना पड़ता है।"

"और उसने कहा था – 'गोदी में लेकर मैं तुम्हें दुलारूँगा नहीं'।"

"और मैं तुम्हें दुलारुँगा क्यों ? मैं फिर कहता हूं – तुम्हें दुलारने से क्या लाभ – तुम कोई लड़की तो हो नहीं ?"

"और कितनी बार इसने बेंत से तुम्हारी मरम्मत की ?" लड़कों ने पूछा।

"ओह, बेंत से मैं इतना डर गया और जान लड़ाकर मैंने काम किया, सो उसका इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। और सुनो

फ़ेदोरेन्को, उस छड़ी को तुम हल साफ़ करने के काम में नहीं लाए।"

"वह तो यों ही एक फालतू छड़ी रख ली थी। खेत में एक बहुत ही सुविधाजनक – अर्र – डंडी मेरे हाथ लग गई।"

"अगर उसने तुम्हें एक वार भी नहीं मारा तो फिर शिकायत करने का तुम्हारे पास कोई आधार नहीं है," लापोत ने स्पष्ट किया। "तुमने, कोरितो, शुरू से ही ग़लत नीति अपनाई। तुम जानो, तुम्हें धीरे-धीरे काम करना और कमाण्डर को वाद-विवाद से तंग करना चाहिए था। तब वह बेंत से तुम्हें लंगड़ा बना देता और मामले का कुछ दूसरा ही रंग होता – कमाण्डरों की परिषद, कोमसोमोल ब्यूरो, आम सभा आदि वह सब . "

"मुझे यह मब नहीं सूझा," कोरितो ने कहा।

इस प्रकार फ़ेदोरेन्को ने, अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और सूझ-बूझ की बदौलत विजय प्राप्त की।

और इस प्रकार शरद् का – प्रचुर, खूब भरे-पूरे विश्वसनीय शरद् का – अन्य निकट आ चला। ख़ारकाव चले गए कोलोनीवासियों का अभाव हमें अखरा, लेकिन जीवित मानव और श्रम से भरे दिन पहले की भांति सांझ होने पर सन्तोषप्रद परिमाण में हंसी और उल्लास का संचार करते, यहां तक कि येकातेरिना ग्रिगोरियेवना को भी स्वीकार करना पड़ा:

"जानते हो न कि हमारा यह समूह अद्भुत है? लगता है जैसे कुछ हुआ ही न हो।"

मैं अब यह और भी अच्छी तरह समझता था कि तथ्यत: ऐसी कोई ख़ास घटना नहीं घटनेवाली थी। ख़ारकोव की परीक्षाओं में हमारे रबफ़ाक-उम्मीदवारों की सफलता ने, और इस निरन्तर भावना ने कि, यद्यपि वे एक दूसरे नगर में रह और अध्ययन कर रहे थे, फिर भी वे सातवें मिश्रित दस्ते के कोलोनीवासी तो थे ही, कोलोनी में आशावादिता के परिमाण में वृद्धि की। सातवें मिश्रित का कमाण्डर, ज़दोरोव नियमित रूप से साप्ताहिक रिपोर्ट भेजता था जिन्हें स्वीकृति-सूचक सुखद हुंकारों के बीच हमारी सभाओं में पढ़ा जाता था। ज़दोरोव विस्तार के साथ अपनी रिपोर्टों को तैयार करता था। उसमें उल्लेख

होता था कि कौन किस विषय में पिछड़ा है। साथ में वह अपनी टिप्प-णियां भी लिखता था।

> "सेम्योन चेर्नीगोववासी एक लड़की से प्रेम करने की सोच रहा है। उसे लिखो और उससे कहो कि इस जाल को तोड़ बाहर निकल आए। वेर्शनेव आसमान सिर पर उठाए है कि रबफ़ाक में डाक्टरी नहीं पढ़ाई जाती। कहता है कि व्याकरण सीखते उसकी नाक में दम आ गया है। उससे कहो कि ज़्यादा बके नहीं।"
> एक बार ज़दोरोव ने लिखा:
> "ओक्साना और राखिल अक्सर हमसे मिलने आते हैं। हम उन्हें चर्बी देते हैं, और वे भी कई बातों में हमारी मदद करती हैं – कोल्या को व्याकरण और गोलोस को गणित में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सो हम कमाण्डरों की परिषद से अनुरोध करना चाहते हैं कि ओक्साना और राखिल सातवें मिश्रित दस्ते की सदस्याएं बना ली जाएं। वे नियमों का पालन करती हैं।"
> और एक बार लिखा:
> "ओक्साना और राखिल के पास जूते नहीं हैं, न ही उन्हें ख़रीदने के लिए उनके पास धन है। हमें भी अपने जूतों की मरम्मत करानी पड़ी हैं। हम ख़ूब चलते हैं, हर घड़ी पत्थरों को नापते रहते हैं। अन्तोन सेम्योनोविच ने जो धन भेजा था वह सब चुक गया, क्योंकि हमें पाठ्य-पुस्तकें तथा ख़ुद मुझे अपने लिए नक़्शे बनाने के औज़ार ख़रीदने पड़े। ओक्साना और राखिल को जूते ख़रीदने हैं। बाज़ार में उनके दाम सात रूबल की जोड़ी हैं। यहां वे हमें खाना ठीक देते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से दिन में केवल एक ही बार देते हैं, और अपनी चर्बी हम सब ख़त्म कर चुके हैं। सेम्योन बहुत चर्बी खाता है। अगर हमें और अधिक चर्बी भेजो तो उसे लिखना और कहना कि वह इतना अधिक न खाए।"

आम सभा में कोलोनीवासियों ने उत्साह के साथ निश्चय किया – धन भेजा जाए, अधिक चर्बी भेजी जाए, ओक्साना और राखिल

को सातवें मिश्रित दस्ते की सदस्याएं बनाया जाए तथा उन्हें कोलोनीवासियों के बिल्ले भेजे जाएं। सेम्योन के चर्बी खाने के बारे में उससे कुछ न कहा जाए – उनका अपना कमाण्डर है, ख़ुद कमाण्डर उनके लिए चर्बी बांटा करे, जैसा कि एक कमाण्डर को करना चाहिए। वेर्शनेव को लिखा जाए कि ज़्यादा बक-भक न करे। सेम्योन को लिखा जाए कि वह चेर्नीगोववासी उस लड़की के बारे में सावधान रहे और लड़कियों के बारे में भावुकतापूर्ण बातों को अपने दिमाग़ में जगह न दे। अगर आवश्यक हो तो चेर्नीगोववासी लड़की ख़ुद कमाण्डरों की परिषद को लिख सकती है।

लापोत आम सभा को काम-काजी, गतिशील और सजीव बनाने का ढंग जानता था और अपने रबफ़ाक छात्रों के साथ पत्र-व्यवहार करने के लिए शानदार नुसख़े तजवीज़ कर सकता था। कमाण्डरों की परिषद में चेर्नीगोववासी लड़की से अपील करने का विचार सभी को अच्छा लगा। आगे चलकर वह और भी विकसित हुआ।

ख़ारकोव में सातवें मिश्रित दस्ते के जीवन ने हमारे स्कूल के वातावरण में आमूल परिवर्तन कर दिया। रबफ़ाक एक वास्तविकता है और इच्छा होने पर हर कोई उसमें प्रवेश कर सकता है, यह विश्वास हमारे हृदयों में गहरा जम गया। हमने देखा कि इस शरद् से स्कूल की पढ़ाई में स्फूर्ति का संचार हो गया। ब्रातचेन्को, गेओर्गीयेवस्की, ओसादची, श्नेइदर, ग्लेसेर और मारूस्या लेवचेन्को ने पूरी सचाई के साथ रबफ़ाक में जाने के लिए काम शुरू कर दिया।

मारूस्या ने अपने उन्माद से पूर्णतया अपना पिण्ड छुड़ा लिया था। इस काल में येकातेरिना ग्रिगोरियेवना के लिए उसके हृदय में प्रेम का संचार हो गया था। जहां भी वह जाती उसके साथ लगी रहती। ड्यूटी पर उसका हाथ बंटाती और चाव भरी नज़र से उसका अनुसरण करती रहती। मैं यह देखकर ख़ुश था कि मारूस्या कपड़े पहनने में सफ़ाई की भारी समर्थक बन गई है। उसने कड़े ऊंचे कालर तथा अत्यन्त बारीक काट के ब्लाउज़ पहनना सीख लिया है। मारूस्या ठीक हमारी आंखों के सामने सौन्दर्य की प्रतिमा के रूप में प्रस्फुटित हो रही थी।

छोटे लड़कों के दलों में भी सुदूर रबफ़ाक-गंध ने सरसराना शुरू

कर दिया था। उत्सुकता से भरे छोटे लड़के अकसर यह पूछते सुनाई देते थे कि उनके लिए कौन से रबफ़ाक को अपना लक्ष्य बनाना सबसे अच्छा होगा।

नताशा पेत्रेन्को ने जिस जोश के साथ अपनी पढ़ाई पर धावा किया वह उल्लेखनीय था। क़रीब सोलह वर्ष की उसकी आयु थी, लेकिन वह अभी तक अनपढ़ थी। हमारे स्कूल में अपने एकदम शुरू के दिनों से ही उसने असाधारण योग्यता का परिचय दिया, और मैंने उसे काम सौंपा कि पहली और दूसरी श्रेणी की अपनी पढ़ाई जाड़ों में वह पूरा कर दिखाए। नताशा ने अपनी पलकों को फरफराते हुए मुझे धन्यवाद दिया और संक्षेप में बोली:

"अच्छी बात!"

वह अब मुझे 'चाचा' कहकर नहीं पुकारती थी और तेज़ी के साथ कोलोनी में अपनी जड़ें जमा रही थी। अपने स्वभाव की अवर्णनीय सुन्दरता से, विश्वास से भरी अपनी नैसर्गिक मुसकान से, अपनी भाव-भंगिमा के माधुर्य से, उसने सब का मन मोह लिया था। चोबोत के साथ उसकी मित्रता अभी भी क़ायम थी और चोबोत चुपचाप तथा उदास भाव से अभी इस बहुमूल्य जीव की दुश्मनों से रक्षा करता था। लेकिन चोबोत की स्थिति दिन प्रतिदिन कठिन बनती जा रही थी। कारण, नताशा को अब दुश्मन नहीं दिखते थे–उलटे, लड़के और लड़कियों दोनों में उसने अपने मित्र बनाने शुरू कर दिए थे। ख़ुद लापोत ने भी नताशा के प्रति एकदम नया स्वर धारण कर लिया था–व्यंग्य या शैतानी से सर्वथा मुक्त, संलग्नता, स्नेह और उत्कण्ठा से पूर्ण। अतएव चोबोत हमेशा नताशा के अकेली होने की प्रतीक्षा करता जिससे उसके साथ बात कर सके, या उसके साथ किन्हीं अत्यन्त गुप्त मामलों के बारे में मौन सम्भाषण कर सके।

चोबोत के ढंग-ढर्रे में बढ़ती हुई चिन्ता के कुछ चिन्ह मुझे दिखाई देने शुरू हुए, और इसलिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ जब एक सांझ वह मेरे पास आया और कहने लगा:

"अन्तोन सेम्योनोविच, मुझे अपने भाई से मिलने जाना है। अनुमति दीजिये।"

"मैं नहीं जानता था कि तुम्हारा कोई भाई भी है।"

"हां, है। बोगोदुख़ोव के आस-पास कहीं उसका एक फ़ार्म है। मेरे पास उसका एक पत्र आया था।"

चोबोत ने पत्र मेरे हाथ में थमा दिया। उसमें लिखा था:

> "और अपनी परिस्थितियों के बारे में तुमने जो लिखा सो तुम, मेरे प्यारे भाई मिकोला फ़ेदोरोविच, बस यहां चले आओ और मेरे साथ रहो, क्योंकि मेरी कुटिया काफ़ी बड़ी है। बहुत कम लोगों के पास ऐसा फ़ार्म होगा जैसा कि मेरा है, और अपने भाई को पाकर मेरा हृदय ख़ुश होगा यदि तुम किसी लड़की को प्यार करते हो तो उसे भी अपने साथ लेते आना।"

"सो मैंने सोचा कि वहां जाऊं और देखूं कि कैसा क्या है।"

"क्या तुमने नताशा से बात की है?"

"हां, की है।"

"तो?"

"नताशा को भला क्या समझ है? मैं जाऊंगा और ख़ुद अपनी आंखों से देखूंगा। जब से मैंने घर छोड़ा, अपने भाई से नहीं मिला।"

"अच्छा तो तुम अपने भाई के पास जाओ, और ख़ुद अपनी आंखों से देखो। तुम्हारा भाई शायद कुलक है – क्यों, ठीक है न?"

"यह तो मैं नहीं कहूंगा कि वह कुलक है, केवल एक घोड़ा उसके पास था। बेशक, यह मैं नहीं जानता कि अब उसका क्या हाल है।"

चोबोत दिसम्बर के शुरू में गया और एक लम्बे अर्से तक ग़ायब रहा।

नताशा मुश्किल से ही उसके अभाव की ओर ध्यान देती प्रतीत होती थी – सदा की भांति शान्त और प्रसन्न, अडिग गति से अपनी पढ़ाई में वह जुटी रहती। मैंने अनुभव किया कि यह लड़की जाड़ों में तीन श्रेणियां पार कर सकती थी।

स्कूल के प्रति कोलोनीवासियों के नये रवैये ने ख़ुद कोलोनी के चरित्र में भी पूर्ण परिवर्तन कर दिया। वह अब कहीं अधिक सभ्य और शिष्ट बन गई थी, और अध्ययन सम्बन्धी आम संस्थानों के अब अधिक निकट मालूम होती थी। कोलोनीवासियों में अब एक भी ऐसे को खोज निकालना कठिन था जो अध्ययन की आवश्यकता तथा महत्व पर

सन्देह करता हो। इस मन:स्थिति को गोर्की के प्रति उस भावना ने और भी चेता दिया जो हम सब समान रूप में अपने हृदयों में संजोए थे। कोलोनीवासियों को लिखे गए अपने पत्रों में से एक में अलेक्सेई मक्सिमोविच ने लिखा था :

> "मैं चाहूंगा कि शरद् की शामों में कोलोनीवासी मेरे 'बचपन' का पाठ करें। इससे उन्हें मालूम होगा कि मैं ठीक उन जैसा ही था। केवल इतना है कि मुझे एकदम अपनी शुरू की किशोरावस्था से ही अध्ययन करने की अपनी इच्छा पर डटे रहने की चेतना थी, और काम से मैं कभी नहीं डरता था। मैं हमेशा यह विश्वास करता था कि डटे रहो, बेड़ा पार होगा।"

कोलोनीवासी काफ़ी दिनों से गोर्की के साथ पत्र-व्यवहार कर रहे थे। हमें आश्चर्य हुआ कि पहला पत्र जो अति संक्षिप्त पते – 'सोरेन्टो, मक्सिम गोर्की' नाम से भेजा गया था, उन्हें मिल गया था। अलेक्सेई मक्सिमोविच ने एक मित्रतापूर्ण, सहृदय पत्र के रूप में तुरन्त उसका जवाब भी दे दिया। उनके पत्रोत्तर को हमने इतनी बार पढ़ा कि एक ही हफ़्ते के भीतर वह छलनी हो गया। तब से हमारे बीच नियमित रूप से पत्र-व्यवहार जारी रहा। कोलोनीवासी दस्तों में गोर्की को पत्र लिखते, और अपने पत्रों को सम्पादन के लिए मेरे पास लेकर आते। लेकिन मैं समझता था कि सम्पादन की कोई ज़रूरत नहीं थी। और जितना ही अधिक स्वाभाविक वे होंगे उतना ही अधिक उन्हें पढ़ने में गोर्की को आनन्द आएगा। सो, सम्पादक के रूप में मेरा काम इस तरह की टिप्पणियों तक ही सीमित रहता :

"क्या तुम्हें काग़ज़ का इससे अच्छा टुकड़ा और कोई नहीं मिला?"

"सब के हस्ताक्षर कहां हैं?"

जब इटली से कोई पत्र आता तो प्रत्येक कोलोनीवासी एक क्षण के लिए उसे अपने हाथ में थामना चाहता – इस तथ्य पर आश्चर्य करने के लिए कि लिफ़ाफ़े पर ख़ुद गोर्की ने पता लिखा है, और टिकट पर छपी बादशाह की तस्वीर पर आलोचनात्मक नज़र डालने के लिए :

"ये इटली के लोग अब तक कैसे इसे सहन करते हैं? किस काम आता है उनका यह बादशाह?"

पत्र को खोलने की केवल मुझे ही इजाज़त थी, और कमाण्डरों की परिषद के मंत्री को उसे देने से पहले दो बार मैं उसे सस्वर पढ़कर सुनाता था। इसके बाद प्रशंसक जी भरकर उसे पढ़ते और लापोत केवल एक ही शर्त उनपर लगाता

"शब्दों के नीचे अपनी उंगलियां न फिराओ। तुम्हारे पास आंखें हैं, अपनी उंगलियों के बिना भी तुम उन्हें पढ़ सकते हो।"

लड़के गोर्की की प्रत्येक पंक्ति से जीवन का समूचा दर्शन उपलब्ध करते, इसलिए और भी अधिक विश्वास के साथ कि ख़ुद पंक्तियां, अपने आप में सन्देह की कैसी भी संभावना नहीं छोड़ती थीं। परन्तु पुस्तक का मामला बिलकुल दूसरा था। पुस्तक के बारे में बहस की जा सकती थी, अगर वह कोई ऐसी बात कहती जो ठीक न होती तो उसकी निन्दा की जा सकती थी। लेकिन यह कोई पुस्तक तो थी नहीं, बल्कि ख़ुद मक्सिम गोर्की का भेजा हुआ सचमुच का जीता-जागता पत्र था।

शुरू में लड़के गोर्की के प्रति क़रीब-क़रीब धार्मिकों जैसी श्रद्धा का भाव रखते और उन्हें अन्य सबसे श्रेष्ठ जीव समझते थे। और यह विचार कि उनका अनुकरण किया जा सकता है, उन्हें क़रीब-क़रीब ऐसा मालूम होता जैसे उनके इष्टदेव का अपमान किया जा रहा हो। वे विश्वास नहीं कर सके कि अपनी 'बचपन' नामक पुस्तक में उन्होंने ख़ुद अपने जीवन से ली गई घटनाओं का वर्णन किया है।

"वे तो महान लेखक हैं! देखो न, कितना ज़्यादा जीवन उन्होंने देखा है। देखा, और उसके बारे में लिख डाला। उस समय जब वे छोटे-से लड़के थे, वे औरों जैसे साधारण कभी नहीं हो सकते थे।"

कोलोनीवासियों को यह समझाने में कि गोर्की ने अपने पत्र में जो कुछ लिखा, वह सच था, और यह समझाने में कि एक प्रतिभाशाली आदमी को भी कड़ी मेहनत और अध्ययन करना पड़ता है – मुझे सर्वाधिक मुसीबत का सामना करना पड़ा। आल्योशा का जीवन कोलोनी के कतिपय निवासियों से इतना मिलता-जुलता था कि वे हमारे लिए क्रमश: अधिक परिचित, अधिक बोधगम्य होते गए। और तब अलेक्सेई मक्सिमोविच को देखने की लड़कों की आकांक्षा और भी ज़ोर पकड़ती गई। कोलोनीवासी उनके आगमन के सपने देखते, और – इसके साथ-

साथ – क्षण-भर के लिए भी इस बात का पूरा विश्वास न कर पाते कि कभी ऐसा हो सकता है।

"वे हमारी कोलोनी में आएंगे? जैसे तुम में कोई सुरख़ाब के पर लगे हों, अन्य सब से बढ़िया – क्यों? गोर्की के पास तुम्हारे जैसे हज़ारों हैं – नहीं, लाखों ..."

"तो इससे क्या? क्या तुम समझते हो कि वे उन सब को पत्र लिखते हैं?"

"और क्या तुम समझते हो कि नहीं लिखते? एक दिन में बीस पत्र वे लिख सकते हैं – ज़रा गिनो तो, महीने में कुल कितने हुए? छः सौ। देखा तुमने?"

इस मामले में बाक़ायदा खोजबीन की गई। लड़के ख़ास तौर से यह पूछने के लिए मेरे पास आए कि मेरी समझ में गोर्की एक दिन में कितने पत्र लिखते होंगे। मैंने जवाब दिया

"एक या दो, मेरी समझ में। और सो भी हर रोज़ नहीं।"

"ऐसा नहीं हो सकता! वे ज़रूर ही ज़्यादा लिखते होंगे!"

"नहीं, वे ज़्यादा नहीं लिखते। वे पुस्तकें लिखते हैं, और इसके लिए उन्हें समय चाहिए। कितने ही लोग उनसे मिलने आते और क्या ख़याल है तुम्हारा – क्या उन्हें आराम करने की ज़रूरत नहीं होती है?"

"तो आप की राय में अगर वे हमें लिखते हैं, तो हम उनके परिचित हैं – गोर्की के परिचित?"

"उनके परिचित नहीं," मैंने उन्हें बताया, "बल्कि गोर्कीआइट उनके अनुयायी। वे हमारे मुखिया हैं। और अगर हम उन्हें लिखते रहें, और इससे भी बढ़कर अगर हम उनसे मिलें, तो हम उनके मित्र बन जाएंगे। गोर्की के ऐसे मित्र ज़्यादा नहीं हैं।"

कोलोनी में गोर्की की छवि ने आख़िर स्वाभाविक आकार-प्रकार धारण कर लिया। तब एक बड़े आदमी के प्रति आतंक का नहीं, एक महान लेखक के प्रति उनके उपयुक्त श्रद्धा का नहीं, बल्कि अलेक्सेई मक्सिमोविच के प्रति एक वास्तविक, स्पन्दनशील प्रेम का, उस सुदूर, किंचित दुरूह, उल्लेखनीय, लेकिन इस सब के बावजूद तत्वत: मानवीय व्यक्तित्व के प्रति गोर्कीआइटों की वास्तविक कृतज्ञता का आभास मुझे उनमें दिखाई देना शुरू हुआ।

इस प्रेम को मूर्त करना कोलोनीवासियों के लिए अत्यन्त कठिन था। वे ऐसे पत्र लिखना नहीं जानते थे जो उनके इस प्रेम को व्यक्त करते। वे इसे व्यक्त करने से कतराते तक थे, अपनी उस कड़ी आदत के कारण जो हर प्रकार की भावुकता को – चाहे जैसी भी वह क्यों न हो – अभिव्यक्ति देने से इनकार करती थी। सिर्फ़ गुद तथा उसके दस्ते ने एक रास्ता खोज निकाला। एक पत्र में अलेक्सई मक्सिमोविच से अपने पांव की नाप भेजने का उन्होंने अनुरोध किया जिससे कि वे उनके लिए एक जोड़ा ऊंचे बूट भेज सकें। पहले दस्ते को पूर्ण विश्वास था कि गोर्की उनकी प्रार्थना को पूरी करेंगे, क्योंकि ऊंचे बूट हमेशा अपना एक मूल्य रखते हैं। हमारी दुकान में बहुत ही कम लोग ऊंचे बूटों के लिए आर्डर देते थे, पर जब देते थे तो उनसे अत्यधिक परेशानी होती थी। उपयुक्त सामग्री या अच्छे फ़र्मों के लिए बाज़ार में लम्बी खोज करनी पड़ती थी। साथ ही तल्लों तथा लाइनिंग के लिए भी चमड़ा ख़रीदना होता था। फिर ऐसे बूट तैयार करने के लिए जो पांव को न जकड़े और साथ ही चुस्त भी हों, एक अच्छे मोची की आवश्यकता थी। गोर्की के लिए ऊंचे बूट हमेशा काम के होंगे, इसके अलावा यह तथ्य जानकर वह ख़ुश होंगे कि उन्हें कोलोनीवासियों ने बनाया है, इटली के किसी ऐरे-ग़ैरे मोची ने नहीं।

शहर का एक परिचित जूते बनानेवाला, जो अपने क्षेत्र में भारी धुरंधर समझा जाता था, एक बोरी अनाज पिसवाने कोलोनी में आया। उसने कोलोनीवासियों के इस मत की पुष्टि की।

"इटली और फ़्रांस के लोग हमारे जैसे ऊंचे बूट नहीं पहनते और वे नहीं जानते कि उन्हें कैसे बनाया जाता है। लेकिन गोर्की के लिए तुम किस क़िस्म के बूट बनाना चाहते हो? तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि कैसे बूट-जूते वे पसन्द करते हैं – समूचे एक ही पीस के या दो पीसवाले? और किस तरह की एड़ी तथा ऊपरी भाग हो? अगर उन्हें मुलायम बनाना हो तो एक बात है, लेकिन कुछ लोग ऊपरी भाग कड़ा पसन्द करते हैं। और फिर चमड़ा कैसा हो – तुम्हें उन्हें किड के चमड़े से बनाना होगा और ऊपरी भाग बॉक्स-कॉफ़ का। रही लम्बाई, तो वह एक अन्य सवाल है।"

मामले की पेचीदगी से अभिभूत गुद ने मुझसे सलाह ली।

"मान लो कि बूट गये-गुज़रे सिद्ध हुए। यह तो बहुत बुरा होगा। और किस क़िस्म के हम बनाएंगे – किड के, या पेटेण्ट चमड़े के? और पेटेण्ट चमड़े को कौन खोजकर लाएगा? मैं? शायद कालीना इवानोविच ले आए। लेकिन वह है तिनककर कहता है – 'तुम, हराम-ख़ोर कहीं के, कौन होते हो गोर्की के लिए बूट बनानेवाले?' वह कहता है, 'गोर्की इटली में बादशाह के मोची से अपने बूट बनवाते हैं'।"

कालीना इवानोविच ने इस वक्तव्य की पुष्टि की।

"और क्या मैंने तुमसे ग़लत कहा? गुद एण्ड कम्पनी जैसी किसी फ़ार्म ने अभी जन्म नहीं लिया है। तुम ढंग के जूते बना भी नहीं सकते। ऐसे बूट चाहिएं जिन्हें मोज़ों पर पहना जा सके, और जिनसे गोखरू न निकल आएं। और देखो तुम्हारा काम किस तरह का होता है। पांव के इर्द-गिर्द चिथड़ों की तीन तह लपेटने पर भी दुःखता है – हरामी कहीं के। गोखरू – वाह, कितनी बढ़िया चीज़ देने चले हो तुम गोर्की को।"

गुद उदास हो गया और इन सब जटिलताओं पर सोचते-सोचते वह सचमुच में दुबला हो चला।

एक महीना बाद जवाब आ गया।

"मुझे बूटों की ज़रूरत नहीं है," गोर्की ने लिखा। "मैं क़रीब-क़रीब देहात में रहता हूं और यहां बिना बूटों के भी चल सकता है।"

कालीना इवानोविच ने अपना पाइप सुलगाया और गर्व के साथ अपने सिर को ऊंचा उछाला।

"इसे कहते हैं समझदार आदमी। वे समझते हैं कि तुम्हारे बूट पहनने से तो नंगे पांव रहना ज़्यादा अच्छा होगा। यहां तक कि सिलान्ती भी जो हर चीज़ का आदी है, जब तुम्हारे जूते पहनता है तो उस दिन को कोसता है जब उसने जन्म लिया था।"

गुद ने आंखें मिचमिचाई और कहा:

"बेशक, बूटों का एक अच्छा जोड़ा तैयार नहीं किया जा सकता, अगर मोची यहां हो और ग्राहक इटली में। लेकिन, चिन्ता नहीं, कालीना इवानोविच, अभी काफ़ी समय है। अगर वह कभी यहां हमारे पास आते हैं, तब देखना कि बूटों का कितना बढ़िया जोड़ा हम उनके लिए तैयार करेंगे "

शरद् ऋतु ने शान्ति के साथ अपना समय व्यतीत किया।

शिक्षा की जन-कमिसरियट से इन्स्पैक्टर ल्युबोव सावेलियेवना जुरिन्स्काया का आगमन एक घटना था। वह खारकोव से कोलोनी देखने आई थी। मैंने उसका स्वागत किया, जैसा कि आम तौर से इन्स्पैक्टरों का स्वागत मैं करता था – उस भेड़िये की भांति चौकस जो शिकारियों द्वारा पीछा किए जाने का आदी हो। गुलाबी कपोलोंवाली प्रसन्न मारिया कोन्द्रातियेवना उसके साथ थी।

"आइए, इस जंगलवासी से आपका परिचय करा दूं," मारिया कोन्द्रातियेवना ने कहा। मैं सोचा करती थी कि यह एक दिलचस्प आदमी है, लेकिन अब मैं जानती हूं कि यह निरा बैरागी है। इसे देखकर मैं जाने कैसा भय अनुभव करती हूं – मेरी आत्मा मुझे कोंचने लगती है।"

जुरिन्स्काया ने बोकोवा की कंधों से थामा, और बोली:

"तुम्हारे इस छिछोरेपन के बिना भी हम अपना काम चला लेंगे।"

"अच्छा।" मारिया कोन्द्रातियेवना ने अपने कपोलों में भंवर डालते हुए स्नेह से सहमति प्रकट की। "मेरा छिछोरेपन अपने प्रशंसकों से यहां वंचित नहीं रहेगा। तुम्हारे लड़के कहां हैं? नदी पर?"

"मारिया कोन्द्रातियेवना!" ठीक नदी-तट से शेलापूतिन की ऊंची तीव्र आवाज़ आई। "मारिया कोन्द्रातियेवना! इधर आओ, यहां इधर। देखो कितनी बढ़िया बर्फ़-गाड़ी है।"

"और क्या उसमें हम दो के लायक़ जगह है?" मारिया कोन्द्रातियेवना ने पूछा जो अब तक नदी की ओर बढ़ चुकी थी।

"अरे, बहुत! कोल्या भी आ रहा है। लेकिन तुमने तो घाघरा पहन रखा है। अगर गिर पड़ी तो अटपटा लगेगा।"

"चिन्ता न करो – मैं जानती हूं कि कैसे गिरना चाहिए" मारिया कोन्द्रातियेवना ने जुरिन्स्काया की ओर देखते हुए चिल्लाकर कहा।

बर्फ़ जमे ढलान की दिशा में जो कोलोमाक नदी तक जाता था, वह तेज़ी से बढ़ चली। जुरिन्स्काया ने प्रेम भरी नज़र से उसका अनुसरण करते हुए कहा:

"अजीब औरत है। तुम लोगों को जैसे पूर्णतया अपने घर का पंछी समझती है।"

"इससे भी बदतर," मैंने जवाब दिया, "लगता है, जल्दी मुझे ज़रूरत से ज़्यादा शोर करने के अपराध में सज़ा देनी पड़ेगी।

"आपने मुझे अपनी ड्यूटी की याद दिला दी। मैं यहां अनुशासन के बारे में आपसे बातें करने के लिए आई हूं। सो आप इससे इनकार नहीं करते कि आप सजा देते हैं... पर कहते हैं कि यहां कुछ और भी क़ायदे चालू हैं... गिरफ़्तारियां... क्या यह सच है कि तुम अपने छात्रों को रोटी और पानी पर रखते हो।"

जुरिन्स्काया एक लम्बे क़द की स्त्री थी। खुलता हुआ रंग और स्वच्छ, युवा आंखें। जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा कि उसके साथ कूटनीति जैसी चीज़ को व्यवहार में लाने की ज़रूरत नहीं।

"मैं किसी को रोटी और पानी पर नहीं रखता, लेकिन कभी-कभार मैं उन्हें भोजन से वंचित रहने के लिए ज़रूर बाध्य करता हूं। कभी-कभी मैं उन्हें गिरफ़्तारी में भी रखता हूं, लेकिन ताले में बन्द करके नहीं, बल्कि अपने दफ़्तर में। आपने जो सुना वह ठीक है।"

"लेकिन देखो न – यह सब वर्जित है।"

"यह क़ानून द्वारा वर्जित नहीं है, और हर क़लम घसीटनेवालों की चीज़ें मैं पढ़ता नहीं।

"आप शिक्षा-विज्ञान सम्बन्धी ग्रंथ नहीं पढ़ते? क्या यह आप सच कह रहे हैं?"

"तीन साल से मैंने उनको पढ़ना छोड़ दिया है।"

"आपको शर्म आनी चाहिए, क्या आप कुछ भी नहीं पढ़ते?"

"पढ़ता मैं बहुत हूं। और मैं शर्म का अनुभव नहीं करता – यह तुम गांठ बांध लो। मुझे अत्यन्त अफ़सोस है उन लोगों पर जो शिक्षा-विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ते हैं।"

"मुझे आपको शुद्ध करना होगा – सच, मुझे शुद्ध करना होगा। हमारे पास एक अपना सोवियत शिक्षा-विज्ञान होना ही चाहिए।"

मैंने विवाद को ख़त्म करने का निश्चय किया और ल्युबोव सावेलियेवना से कहा:

"इधर देखो, मैं बहस में पड़ने नहीं जा रहा हूं। मुझे गहरा विश्वास है कि यहां कोलोनी में वास्तविक सोवियत शिक्षा-विज्ञान है। इसके अलावा हमारी शिक्षा कम्युनिस्ट शिक्षा है। तुम्हें या तो

अनुभव क़ायल कर सकता है, या तद्विषयक गम्भीर खोज-कार्य। ऐसी चीज़ें निरे वार्तालाप से तय नहीं होंगी। क्या तुम यहां कुछ दिन टिकोगी?"

"दो दिन।"

"बहुत खूब। सभी तरह के तरीक़े तुम्हारे सामने हाज़िर हैं। तुम अपने इर्द-गिर्द नज़र डाल सकती हो, कोलोनीवासियों से बातें कर सकती हो, उनके साथ बैठकर खा सकती हो, काम और आराम कर सकती हो। फिर चाहे जो नतीजे तुम निकालना। चाहो तो मुझे पद से हटा देना। तुम अपने तमाम नतीजे काग़ज़ पर उतार सकती हो, और जो भी पद्धति चाहो मुझ पर लाद सकती हो। यह तुम्हारा अधिकार है। लेकिन मैं चीज़ों को उसी ढंग से करता रहूंगा जिस ढंग से मुझे ठीक लगेगा या जितना मेरे बस में होगा। मैं नहीं जानता कि बिना सज़ा के कैसे शिक्षा दी जाती है। यह कला अभी सीखना बाक़ी है।"

ल्युबोव सावेलियेवना दो दिन नहीं, चार दिन हमारे यहां रुकी। पर इस समूचे काल में शायद ही वह मुझे दिखाई पड़ी हो। लड़कों ने उसके बारे में कहा:

"ओह, वह एक कड़ी जान है – वह जानती है कि क्या ठीक है और क्या नहीं।"

कोलोनी में उसके रुकने के दौरान वेत्कोव्स्की मेरे पास आया।

"मैं कोलोनी छोड़ रहा हूं, अन्तोन सेम्योनोविच।"

"कहां जाओगे?"

"कहीं तो जाऊंगा ही। यहां अब जी ऊबने लगा है। रबफ़ाक में मुझे जाना नहीं है, और मैं बढ़ई बनना भी नहीं चाहता। बस, मैं यों ही यहां से वहां घूमूंगा और दुनिया को देखूंगा।"

"और इसके बाद?"

'सो भी देखा जाएगा। आप बस मुझे मेरे काग़ज़ दे दीजिए।"

"अच्छी बात है। शाम को कमाण्डरों की परिषद होगी। वह ही निश्चय कर सकती है कि वह तुम्हें जाने की अनुमति दे या नहीं।"

कमाण्डरों की परिषद में वेत्कोव्स्की ने वैमनस्यपूर्ण रवैया अपनाया। कोशिश थी कि अपने आपको औपचारिक जवाबों तक सीमित रखे।

"मुझे यहां अच्छा नहीं लगता। मुझे ज़बर्दस्ती कौन रोक सकता है? जहां जी चाहे मैं जाऊंगा। यह देखना मेरा काम है कि मैं क्या करूंगा ... हो सकता है कि मैं चोरी करूं।"

कुदलाती फुंकार उठा।

"क्या तुम कहना चाहते हो कि इससे हमारा कोई वास्ता नहीं? और अगर मान लो कि मैं उठकर खड़ा होऊं और इस तरह की बकवास के लिए तुम्हारा जबड़ा ढीला कर दूं, तो क्या तब भी तुम यही विश्वास करोगे कि इससे हमारा कोई वास्ता नहीं?"

ल्युबोव सावेलियेवना पीली पड़ गई और लगा जैसे वह कुछ कहना चाहती हो, लेकिन वह मौक़ा चूक चुकी थी। उत्तेजित कोलोनीवासी वेत्कोव्स्की पर चिल्ला रहे थे, वोलोखोव कोस्त्या के सामने डटा था।

"तुम्हें अस्पताल भेजना चाहिए। बस, और कुछ नहीं। इसके काग़ज़-पत्र दे दो – वाह! तुम हमें सच बात क्यों नहीं बताते? कहीं काम मिल गया है शायद?"

गुद सर्वाधिक क्रुद्ध था।

"रोक के लिए हमारे यहां कोई बाड़े नहीं लगे हैं – और तुम इतने निखट्टू हो – तो अच्छा ही है कि बला कटे। क्या तुम समझते हो कि हम 'मोलोदेत्स' को तुम्हारे पीछे दौड़ाएंगे? नहीं, हम तुम्हारी टोह में नहीं जाएंगे। जाओ जहां मन हो। यहां तुम आए ही किस लिए थे?"

लापोत ने बहस को बंद किया।

"बस, काफ़ी मत व्यक्त किए जा चुके हैं। यह साफ़ है, कोस्त्या, हम तुम्हें तुम्हारे काग़ज़-पत्र नहीं देंगे।"

कोस्त्या ने अपना सिर लटका लिया।

"मुझे काग़ज़-पत्र नहीं चाहिए – मैं काग़ज़-पत्रों के बिना चल दूंगा। रास्ते के लिए मुझे दस रूबल दे दो।" वह बुदबुदाया।

"क्या रूबल दिए जाएं?" लापोत ने पूछा।

सब चुप हो गए। जुरिन्स्काया ने कान लगा दिए, उसने सोफ़े की पीठ के सहारे अपना सिर टिकाते हुए, अपनी आंखें तक मूंद लीं। कोवाल बोला:

"इसने यहां इस मामले के बारे में कोमसोमोल संगठन से अपील की

थी। हमने इसे कोमसोमोल संगठन से दफ़ा कर दिया। लेकिन मेरी समझ में इसे हम दस रूबल दे सकते हैं।"

"बिलकुल ठीक।" दूसरी जगह से किसी ने कहा। "दस रूबल के लिए हम आपत्ति नहीं करेंगे।"

मैंने अपना मनोवेग निकाला।

"मैं इसे बीस रूबल दिए देता हूं, रसीद लिख डालो।"

आम ख़ामोशी के बीच कोस्त्या ने एक रसीद लिखी, धन को अपनी जेव में खोंसा और अपनी टोपी सिर पर रखी।

"विदा, साथियो!"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ़ लापोत उछलकर खड़ा हुआ और उसके पीछे चिल्लाया, ठीक उस समय जब कि वह बाहर जा रहा था:

"ए, सुना! जब बीस रूबल चुक जाएं तो शरमाना नहीं, कोलोनी में वापस चले आना। तुम इसे काम से चुकता कर सकते हो।"

कमाण्डर झुंझलाते हुए वहां से चले गए। तभी ल्युबोव सावेलियेवना अपने होश में आई और बोली:

"हाय, राम! इस लड़के को किसी को समझाना-बुझाना तो चाहिए था..."

क्षण-भर कुछ सोचकर उसने फिर कहा:

"लेकिन, कमाण्डरों की तुम्हारी यह परिषद कितनी भयानक शक्ति है। बाप रे, क्या लड़के हैं!"

वह अगली सुबह विदा हो गई। अन्तोन स्लेज ले आया। उसमें कुछ गंदे पुआल और काग़ज़ के टुकड़े छितरे थे। ल्युबोव सावेलियेवना स्लेज में बैठ चुकी थी। तभी मैंने अन्तोन से पूछा:

"स्लेज में यह सब कचरा क्या भरा है?"

"मुझे समय नहीं मिला..." लाल होते हुए अन्तोन बुदबुदाया।

"अपने आप को गिरफ़्तारी में रखो, जब तक मैं शहर से लौटकर न आऊं।"

"अच्छा।" अन्तोन ने कहा, और स्लेज से अलग हट गया। "दफ़्तर में?"

"हां।"

मेरी कड़ाई से क्षुब्ध अन्तोन दफ़्तर की ओर बढ़ चला, और हम चुपचाप कोलोनी से चल पड़े। केवल तब जब हम क़रीब-क़रीब स्टेशन के पास पहुंचे, ल्युबोव सावेलियेवना ने मेरी बांह थामते हुए कहा:

"इतनी कड़ाई किस लिए? इतना शानदार तुम्हारा समूह है। एक तरह का चमत्कार ही कहिए। मैं तो एकदम अभिभूत हो उठी... लेकिन मुझे यह बताओ – क्या आपको पक्का यक़ीन है कि वह लड़का – अन्तोन – अब गिरफ़्तारी में है?"

मैंने जुरिन्स्काया की ओर चकित भाव से देखा।

"अन्तोन भारी आत्मसम्मानी जीव है," मैंने कहा। "बेशक, वह गिरफ़्तार है। लेकिन कुल मिलाकर हैं सब वे भेड़ियों के ही बच्चे।"

"यह न कहिए। सब तुम्हारे उस कोस्त्या के कारण। मुझे पक्का विश्वास है कि वह लौट आयेगा। अद्‌भुत! अद्‌भुत है तुम्हारे यहां। और कोस्त्या सबसे बढ़िया।"

मैंने एक गहरी सांस छोड़ी और कोई जवाब नहीं दिया।

१३. प्रेम और कविता का दूसरा पहलू

१९२५ का वर्ष अप्रिय ढंग से शुरू हुआ।

कमाण्डरों की परिषद में ओप्रिश्को ने घोषित किया कि वह विवाह करना चाहता है। उसने कहा कि खूसट लुकाशेन्को अपनी बेटी की शादी उससे तभी करायेगा जब कोलोनी उसे उतना ही अच्छा दहेज़ देगी जितना कि ओल्या वोरोनोवा को दिया गया था। कहा कि इतनी भौतिक सम्पदा के साथ लुकाशेन्को उसे ख़ुद अपने घर में रखने को तैयार होगा और वे साथ-साथ मिलकर खेतीबाड़ी करेंगे।

कमाण्डरों की परिषद में ओप्रिश्को ने कुछ ऐसा अखर अन्दाज़ धारण किया जैसे वह लुकाशेन्को का उत्तराधिकारी और एक हैसियत-वाला आदमी हो।

कमाण्डर चुप हो गए। उनकी समझ में न आया कि इस समूचे मामले को कैसे निपटायें। आख़िर लापोत ने पेन्सिल की नोक के ऊपर से – जो वह अपने हाथ में थामे था – ओप्रिश्को की ओर देखते हुए शान्त भाव से कहा:

"सो तो ठीक है, द्मित्री, लेकिन तुम खुद क्या सोचते हो? अगर तुम लुकाशेन्को के साथ जा मिलते हो तो इसका मतलब यह कि तुम भी गांववालों में से एक बन जाओगे?"

ओप्रिश्को ने व्यंग्य से मुसकराते हुए अपने कंधे के ऊपर से लापोत की ओर देखकर कहा

"तुम ऐसा समझते हो तो यही सही – एक गांववाला।"

"और तुम क्या समझते हो?"

"यह समय आने पर मालूम हो जाएगा।"

"ठीक।" लापोत ने कहा। "अच्छा, और कौन बोलना चाहता है?"

छठे दस्ते का कमाण्डर, वोलोख़ोव बोलने के लिए खड़ा हुआ।

"बेशक, लड़कों को अपने निजी जीवन के बारे में सोचना होता है, अपनी सारी ज़िन्दगी कोलोनी से कोई भी चिपका नहीं रह सकता। और हमारे पास हुनर ही क्या हैं? छठे, चौथे या नौवें दस्ते में सब ठीक हैं – वे बढ़ई बन सकते हैं, लोहार या मिल के काम कर सकते हैं। लेकिन खेतीबाड़ी के दस्तों में काम करनेवालों के पल्ले किसी तरह का भी हुनर नहीं पड़ता। सो अगर ओप्रिश्को किसान बनना चाहता है तो बने। लेकिन, जाने क्यों ऐसे मामलों में दाल में कुछ काला होता है। तुम कोमसोमोल हो – क्यों, हो न?"

"इससे क्या, अगर मैं कोमसोमोल हूं तो?"

"मुझे लगता है," वोलोख़ोव कहता गया, "कि इससे कोई नुक़सान न होगा अगर इसपर पहले कोमसोमोल संगठन में बात कर ली जाए। कमाण्डरों की परिषद को मालूम होना चाहिए कि कोमसोमोल इस बारे में क्या सोचता है।"

"कोमसोमोल ब्यूरो की इस मामले में अपनी राय है," कोवाल ने कहा। "गोर्की कोलोनी का अस्तित्व इसलिए नहीं है कि वह कुलकों को पैदा करे। लुकाशेन्को कुलक है।"

"तुम उसे कुलक कैसे कहते हो?" ओप्रिश्को ने विरोध किया। "इससे कुछ सिद्ध नहीं होता कि उसके घर की छत लोहे से पटी है।"

"क्या उसके पास दो घोड़े नहीं हैं?"

"हां, हैं।"

"और एक खेत-मज़दूर?"

"नहीं, सो कुछ नहीं है।"

"सेर्गेई के बारे में क्या कहते हो?"

"जन-शिक्षा विभाग ने एक अनाथालय से सेर्गेई को उसके पास भेजा था – गोद लेने के लिए।"

"एक ही वात है," कोवाल ने कहा। "चाहे वह जन-शिक्षा विभाग से क्यों न आया हो, फिर भी है वह खेत-मज़दूर ही।"

"अगर वे देते हों..."

"देते हों। कोई भी भला आदमी स्वीकार नहीं करेगा।

ओप्रिश्को ने जिसे इस तरह के स्वागत की आशा नहीं थी, कहा

"इस तरह क्यों पीछे पड़े हो? ओल्या को भी तो तुमने दिया.."

कोवाल के पास उसके लिए इसका जवाब था:

"ओल्या का मामला बिलकुल भिन्न था। सबसे पहली बात तो यह कि उसने हमारे अपने ही लोगों में शादी की, वह और पावेल अब कम्यून में शामिल हो रहे हैं। और यह हमारे माल का अच्छा उपयोग होगा। दूसरी बात यह कि ओल्या, एक कोलोनीवासी के नाते, तुमसे बहुत भिन्न थी। और तीसरे हमारे लिए यह शोभा नहीं देता कि हम कुलकों की नसल बढ़ाए।"

"तो मुझे क्या करना चाहिए अब?"

"जो भी तुम्हें अच्छा लगे।"

"नहीं, इससे नहीं चलेगा।" स्तुपीत्सिन ने बीच में ही कहा। "अगर ये प्रेम करते हैं, तो इनकी शादी हो जाने दो। द्मित्री को भी दहेज़ मिल सकता है, जब तक कि वह लुकाशेन्को के पास नहीं, बल्कि कम्यून में जाता है। वहां नकेल ओल्या के हाथ में रहेगी।"

"मारूस्या का बाप उसे नहीं जाने देगा।"

"तो मारूस्या अपने बाप को धता बताए।"

"सो वह नहीं कर सकती।"

"इसका मतलब यह कि वह तुम से प्रेम नहीं करती. आखिर, है तो वह भी कुलक ही।"

"इस सबसे तुम्हें क्या वास्ता, चाहे वह मुझसे प्रेम करती है, या नहीं।"

"देखो न, यह एक ऐसी चीज़ है जिससे हमारा वास्ता है। इसका मतलब यह कि वह तुम से स्वार्थ की वजह से शादी कर रही है... अगर वह तुम से प्रेम करती होती..."

"शायद वह मुझसे प्रेम करती है, लेकिन वह अपने बाप का कहना मानती है और कम्यून में शामिल नहीं हो सकती।"

"ओह, वह शामिल नहीं हो सकती? तब कमाण्डरों की परिषद क्यों उसके लिए परेशान हो?" कुदलाती ने रुखाई से जवाब दिया। "तुम एक कुलक से गठबन्धन करना चाहते हो और कुलक को अपनी कुटिया में एक-धनी दामाद की दरकार है। सो हम क्यों परवाह करें? परिषद की बैठक को ख़त्म घोषित करो..."

प्रसन्नता से, लापोत की दंत-पंक्ति खिल उठी।

"मारूस्या के प्रेम की ढुलमुल स्थिति के कारण परिषद की बैठक ख़त्म की जाती है।"

ओप्रिश्को जैसे सन्न रह गया। वह घटा के बादल की भांति छोटे बच्चों को धकियाता, कोलोनी में मंडराता रहा। अगले दिन दारू पीकर आया और शयनागार में हंगामा खड़ा कर दिया।

नशाख़ोरी के अभियोग में ओप्रिश्को का निबटारा करने के लिए कमाण्डरों की परिषद की बैठक हुई। सबके चेहरे खिसियाए थे और ओप्रिश्को दीवार के सहारे झुंझलाया-सा टिका था। लापोत ने कहा:

"तुम कमाण्डर हो, इसमें शक नहीं, लेकिन इस समय एक निजी अभियोग तुम पर लगा है। सो तुम्हें बीच में खड़ा होना होगा।"

हमारी ऐसी ही प्रथा थी – अपराधी को निश्चय ही कमरे के बीच में खड़ा होना चाहिए।

ओप्रिश्को की खिजलाई नज़र अध्यक्ष के चेहरे पर घूमी, वह बुदबुदा उठा:

"मैंने कोई चोरी-चकारी नहीं की है। मैं बीच में खड़ा होने भी नहीं जा रहा हूं।"

"सो तो हम करेंगे," लापोत ने धीमे से कहा।

ओप्रिश्को ने परिषद पर एक नज़र डाली और वह समझ गया कि वे करेंगे। इसलिए अपने आप को दीवार से अलग कर वह कमरे के बीच में खड़ा हो गया।

"हां, तो फिर?"

"सीधे खड़े हो," लापोत ने आदेश दिया।

ओप्रिश्को ने अपने कंधों को बिचकाया और तिरस्कारपूर्ण ढंग से मुसकराया भी, लेकिन अपनी बांहों को उसने गिरा लिया और बदन को सीधा कर किया।

"अब बताओ कि दारू पीने और शयनागार में कुहराम मचाने का तुमने कैसे दुस्साहस किया – तुमने, कोमसोमोल के सदस्य, कमाण्डर और एक कोलोनीवासी ने? हां, बोलो?"

ओप्रिश्को हमेशा दो ढंगों का अभ्यासी था – अनुकूल मौक़ा देख, अत्यन्त वेपरवाही के अन्दाज़ में, वह भरसक डींग मार सकता था, लेकिन वस्तुतः वह हर समय एक चौकस तथा चतुर कूटनीतिज्ञ होता था। कोलोनीवासी उसे अच्छी तरह जानते थे। सो ओप्रिश्को की विनम्रता ने किसी को चकित नहीं किया। जोर्का वोल्कोव ने जो सातवें दस्ते का कमाण्डर था और केवल हाल ही में उस पद पर उसे नियुक्त किया गया था जिस पर पहले वेत्कोवस्की था। उसने ओप्रिश्को की ओर अपना हाथ फहराते हुए कहा:

"क्या करिश्मा है। एकदम अचानक सुधरा हुआ जीव बन गया है। इस समय यह मेमना है पर कल फिर डींग मारता नज़र आएगा।"

"ठहरो उसे बोलने दो।" ओसाद्ची ने गुर्राते हुए कहा।

"आप मुझसे क्या कहलाना चाहते हैं? मैंने ग़लती की – इससे ज़्यादा मैं और क्या कह सकता हूं?"

"नहीं, तुम हमें बताओ कि तुम्हें इसका साहस कैसे हुआ?"

ओप्रिश्को ने जिसकी आंखें स्निग्धता से चमक रही थीं, परिषद की ओर अपनी बांहें फैलाईं।

"इसमें साहस करने की क्या बात है? अपने दुःख को भूलने के लिए मैंने दारू पी, और जब आदमी नशे में होता है तो वह अपने कृत्यों के लिए जवाब नहीं दे सकता।"

"ओह, जवाब नहीं दे सकता, क्यों?" अन्तोन ने कहा। "लेकिन तुम्हें देना पड़ेगा। तुम भारी ग़लती में हो अगर यह समझते हो कि तुम्हें नहीं देना पड़ेगा। इसे कोलोनी से निकाल दो, और बस। हर

उस व्यक्ति को कोलोनी से निकाल बाहर करो जो नशा करता है। ढील देने की ज़रूरत नहीं।"

"लेकिन वह कहीं का नहीं रहेगा।" अपनी आंखों को चौड़ाते हुए गेओर्गीयेवस्की ने कहा। "वह बाहर सड़कों की धूल चाटता फि-रेगा।"

"इससे क्या?"

"तुम तो जानते हो कि शोक की वजह से उसने यह सब किया। एक जीव के साथ इतनी सख़्ती क्यों करते हो? वह तो शोक से सन्तप्त है, और तुम अपनी कमाण्डरों की परिषद से उसे परेशान करते हो!" ओप्रिश्को के मासूम बने चेहरे पर व्यंग्य से नज़र डालते हुए ओसादची ने कहा।

"और लुकाशेन्को, बिना कुछ माल-मत्ता के, इसे ग्रहण नहीं करेगा," तारानेत्स ने कहा।

"इससे हमें क्या मतलब?" अन्तोन चिल्लाया। "अगर लुकाशेन्को इसे ग्रहण नहीं करेगा तो ओप्रिश्को अपने लिए कोई दूसरा कुलक खोज लेगा।"

"इसे निकालते क्यों हो?" गेओर्गीयवेस्की ने ढुलमुल अन्दाज़ में कहना शुरू किया। "यह एक पुराना कोलोनीवासी है। यह सच है कि इसने ग़लती की, लेकिन यह सुधर सकता है। और हमें नहीं भूलना चाहिए कि वह और मारूस्या प्रेम करते हैं। जैसे हो, हमें उनकी मदद करनी चाहिए।"

"वह क्या है – लावारिस?" लापोत ने आश्चर्य के साथ पूछा। "और सुधार करने की बात क्यों? वह एक कोलोनीवासी है।"

श्नाइदेर बोलने के लिए खड़ा हुआ। वह आठवें दस्ते का कमाण्डर था और इस वीर दस्ते में कराबानोव के स्थान पर काम करनेवाला था। आठवें दस्ते को फ़ेदोरेन्को और कोरितो जैसे भीमों की शक्ति पर नाज़ था। कराबानोव की अगुवाई में उन्होंने सफलता के साथ एक दूसरे के साथ सांठ-गांठ कर रखी थी। कराबानोव उन्हें किसी भी काम में, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो, लगा सकता था। वे कोलोनी के सम्मानपूर्ण ध्वज को ऊंचा उठाए हुए कज़्ज़ाकी जोश के साथ उसे पूरा करते। शुरू-शुरू में श्नाइदेर दस्ते में बेमौज़ूं मालूम

होता था। छोटा क़द, सांवला और घुंघराले बालोंवाला। ओसाद्ची के साथ पुराने काण्ड के बाद यहूदी-द्वेष ने फिर कभी कोलोनी में अपना सिर नहीं उठाया था, लेकिन श्नाइदेर के प्रति उनका रवैया एक लम्बे समय तक व्यंग्यपूर्ण बना रहा। कभी-कभी रूसी शब्दों तथा रूपों की उसकी मिलावट वास्तव में हास्यास्पद होती थी और खेती के काम में वह बहुत ही कम दक्ष था। लेकिन समय बीता और क्रमशः आठवें दस्ते में नये सम्बन्धों ने स्वतः उभरना शुरू कर दिया – श्नाइदेर आठवें दस्ते का प्रिय बन गया और कराबानोव के वीर उस पर गर्व करने लगे। श्नाइदेर ने अपने आपको एक चतुर लड़का सिद्ध किया – गहरी और संवेदनशील आध्यात्मिक प्रकृति से सम्पन्न। उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखें दस्ते की कठिनतम उलझन को आलोक से युक्त कर देतीं और हमेशा सही हल खोज निकालतीं। कोलोनी में अपने आवास के दौरान उसके क़द में हालांकि एक इंच की भी वृद्धि नहीं हुई, लेकिन वह बहुत मज़बूत बन गया और उसके पुट्ठे इतने पुष्ट हो गए कि वह अब, बिना किसी झिझक के, गर्मियों की आस्तीनविहीन जाकेट पहने घूमता। जब हल की थरथराती हुई मूठ वह अपने हाथों में थामता तो उसकी देख-भाल करने की फिर किसी को ज़रूरत न होती। आठवें दस्ते ने, सर्वसम्मति से, उसे कमाण्डर के पद पर स्थापित किया। उसकी इस नियुक्ति की, कोवाल और मैंने, निम्न रूप में व्याख्या की: "दस्ते को एक साथ रखने का काम तो हम ख़ुद कर सकते हैं, लेकिन श्नाइदेर उसकी शोभा रहेगा।"

लेकिन कमाण्डर के रूप में अपनी नियुक्ति के बाद ठीक अगले ही दिन से श्नाइदेर ने यह सिद्ध कर दिया कि कराबानोव के स्कूल में वह यों ही दीक्षित नहीं हुआ है। उसने दस्ते की मर्यादा ही नहीं बढ़ाई बल्कि कड़ा अनुशासन भी क़ायम रखा। और फ़ेदोरेन्को जो कराबानोव की गरज और कड़क का आदी था, उन शान्त तथा बिरादराना क़समों-झिड़कियों का आदी होने में भी कुछ पीछे नहीं रहा जो कि नया कमाण्डर कभी-कभी उसे प्रतिकर देता था।

और अब श्नाइदेर ने बोलना शुरू किया:

"अगर ओप्रिश्को कोई नया लड़का होता तो उसे माफ़ किया जा सकता था। लेकिन अब इसे किसी तरह माफ़ नहीं करना चाहिए।

ओप्रिश्को ने दिखा दिया है कि वह समूह की तनिक भी परवाह नहीं करता। क्या तुम समझते हो कि वह फिर ऐसा नहीं करेगा? तुम सब जानते हो कि वह करेगा। मैं नहीं चाहता कि ओप्रिश्को दुःखी हो। हमें भला उससे क्या लाभ होगा? लेकिन वह हमारे समूह के बिना रहे, तब उसकी समझ में आएगा। और हमें दूसरों को भी यह जता देना चाहिए कि इस तरह की कुलक-चालों को हम सहन करने नहीं जा रहे हैं। आठवां दस्ता उसके निष्कासन की मांग करता है।"

आठवें दस्ते की मांग एक निर्णयात्मक तत्व थी – इस दस्ते में शायद ही कोई नये सदस्य थे। कमाण्डरों ने मेरी ओर देखा और लापोत ने मुझे बोलने के लिए बुलाया।

"यह एक साफ़ मामला है, अन्तोन सेम्योनोविच, हमें बताइए कि आप क्या सोचते हैं।"

"निकाल दो," मैंने संक्षेप में कहा।

ओप्रिश्को ने अनुभव किया कि अब उसके लिए कोई चारा नहीं, उसने कूटनीतिक संकोच का लबादा उसने उतार फेंका।

"मुझे बाहर निकाल दो! कहां जाऊं मैं? क्या तुम चाहते कि मैं चोरी करूं? क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे ऊपर और कोई अधिकारी नहीं है? मैं ख़ारकोव जाऊंगा..."

परिषद में हंसी गूंजी।

"यह अच्छा है! तुम ख़ारकोव जाओ। तुम्हें वे कोई काग़ज़ देंगे, तुम कोलोनी में लौट आओगे और पूर्ण सदस्य की भांति यहां रहेंगे। ख़ूब मज़े से तुम्हारा समय बीतेगा।

ओप्रिश्को ने महसूस किया कि उसकी बातें निरी बकवास थीं, वह चुप हो गया।

"सो केवल गेओर्गीयेवस्की ख़िलाफ़ है," लापोत ने कहा और उसकी आंखें परिषद के ऊपर घूम गईं। "कमाण्डर ऑन ड्यूटी!"

"हाज़िर हूं!" यह गेओर्गीयेवस्की था जिसने, सीधे-सतर होकर, फ़रमान का जवाब दिया।

"ओप्रिश्को को कोलोनी से बाहर निकाल दो।"

"अच्छा।"

गेओर्गीयेवस्की ने स्वीकृत ढंग से सलाम किया और ओप्रिश्को की ओर सिर हिलाकर दरवाजे की ओर जाने का इशारा किया।

एक दिन बाद हमें मालूम हुआ कि ओप्रिश्को लुकाशेन्को की कुटिया में रह रहा था। हमें कुछ गुमान नहीं था कि उन दोनों के बीच किन शर्तों पर समझौता हुआ। लेकिन लड़कों ने घोषित किया कि इस मामले में आखिरी फ़ैसला मारूस्या के शब्दों ने किया।

जाड़ा खत्म होने को आ रहा था। मार्च में लड़के तैरते हुए हिम-खण्डों के सहारे कोलोमाक नदी के साथ बहते। पूरे कपड़े पहने वे लड़के आरज़ी बेड़ों, हिम-खण्डों और ऊपर तक लटक आई पेड़ों की शाखाओं के साथ-साथ पानी में कलाबाज़ी खाते जाते। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वे सब इन्फ़्लुएन्ज़ा के शिकार हो जाते।

लेकिन इन्फ़्लुएन्ज़ा ठीक हो जाता, कुहासा उठने लगता और शीघ्र ही ऊन के जाकेट अहाते में इधर-उधर छितरे हुए नज़र आने शुरू होते। कुदलाती उन्हें देखता और पंचांग में नियत तिथि से पन्द्रह दिन पहले ही जांघिया तथा कालरविहीन क़मीज़ बांटने की धमकी देता।

१४. झींकना मना!

अप्रेल के मध्य में वसन्त की छुट्टियों के समय रबफ़ाक के हमारे छात्रों का हमारे यहां आना हुआ।

वे क्षीण और पीतवर्ण होकर आए थे। लापोत ने सिफ़ारिश की कि उन्हें मोटाने के लिए दसवें दस्ते के खुराक-विभाग के हाथों सौंप दिया जाए। मुझे इस बात से खुशी हुई कि उन्होंने कोलोनीवासियों के सामने अपने छात्रों के ढंग का प्रदर्शन नहीं किया। कराबानोव मुश्किल से हरेक का अभिनन्दन कर पाया होगा कि इससे पहले ही वह घरेलू-काम तथा वर्कशॉपों को देखने के लिए दौड़ता नज़र आने लगा। अपने चारों ओर एकत्रित लड़कों को बेलूखिन ने खारकोव तथा छात्रों के जीवन के बारे में बताया।

रात को वसंतकालीन आकाश के नीचे बैठे अपने पुराने व भले तरीक़े से कोलोनी की समस्याओं पर हमने विचार किया। कराबानोव हमारी नवीनतम घटनाओं सें अत्यन्त नाखुश हुआ।

"बेशक, ऐसा करना ठीक था," उसने कहा। "चूंकि कोस्त्या ने कहा कि उसे यहां अच्छा नहीं लगता, तब तुमने ठीक किया – जहन्नुम में जाए वह, अपने लिए कोई और अच्छी जगह खोज ले। पर यह साफ़ है कि ओप्रिश्को एक कुलक है और उसकी जगह कुलकों के बीच है। लेकिन फिर भी, सोचकर देखो तो, कहीं कोई गड़बड़ ज़रूर है। हमें इसपर सोचना चाहिए। ख़ारकोव में हमने दूसरा ही जीवन देखा है। दूसरी तरह का जीवन है वहां, और लोग भी दूसरी तरह के हैं।"

"और यहां कोलोनी में – क्या हमारे लोग बुरे हैं?"

"कोलोनी में अच्छे लोग हैं," कराबानोव ने कहा।

"बहुत अच्छे हैं। लेकिन ज़रा नज़र घुमाकर देखो, यहां हर जगह तुम्हें कुलक ही ज़्यादा नज़र आएंगे। कोलोनी की यहां कैसे गुज़र हो सकती है? या तो तुम बराबर दांत पैनाते और गुर्राते रहो या बोरिया-बिस्तर गोल कर कोई दूसरी जगह खोजो।"

"तत्व की बात यह नहीं है," विचारपूर्ण मुद्रा में बुरून ने विलम्बित स्वर में कहा। "हम सब को कुलकों से संघर्ष करना चाहिए। यह एक ख़ास विषय है। लेकिन इस समय विचार करने की बात यह नहीं है। विचार करने की बात यह है कि कोलोनी में अब कुछ करने को नहीं है। कुल मिलाकर कोलोनीवासियों की संख्या एक सौ बीस है – ढेर सारे काम करनेवाले – और काम क्या है? बोवाई और कटाई, बोवाई और कटाई। पसीने की नदियां, और नतीजा बहुत थोड़ा। यह सब इतना तुच्छ है... बस, इस तरह एक साल और बीत जाए तो लड़के ऊब जाएंगे और किसी अच्छी चीज़ के लिए ललकना-कसमसाना शुरू कर देंगे।"

"ग्रीशा ठीक कहता है," बेलूख़िन खिसककर मेरे और निकट आ गया। हम जैसे लावारिस सर्वहारा लोगों के लिए औद्योगिक काम की ज़रूरत है। यह ठीक है कि खेतों में काम करना अच्छा लगता है, लेकिन खेतों से हमें मिलता क्या है? अगर हम गांव में जाते हैं, तो इसका मतलब यह है कि निम्न बुर्जुआ वर्ग में मिल जाते हैं। यह एक शर्म की बात मालूम होती है, और फिर उनके पास ख़ाली हाथ नहीं जाया जा सकता, उत्पादन के साधनों का अपने पास होना ज़रूरी है –

झोंपड़ी, घोड़ा, हल और वह सब। और ओप्रिश्को की भांति किसी कुलक परिवार की गोद में जा बैठने से काम नहीं चलेगा। हम और कहां जाएं? इंजन-मरम्मत-वर्क्स के सिवा यहां और कुछ नहीं है, और वहां के मज़दूर खुद अपने बच्चों को लेकर असमंजस में पड़े हैं कि उनका क्या करें।"

सबके सब रबफ़ाक-छात्र, उल्लास के साथ, खेतों के काम में निमग्न हो गए और कमाण्डरों की परिषद ने विनम्र शालीनता के साथ उन्हें मिश्रित दस्तों का कमाण्डर नियत कर दिया। कराबानोव, खूब उत्साह से भरा हुआ प्रसन्नवदन खेत से लौटा।

"ओह, खेतों में काम करना कितना प्यारा मालूम होता है! कितने दुःख की बात है कि इस काम में कोई तत्व नहीं है, कम्बख़्त। कितना बढ़िया होता अगर तुम खेतों में काम करते, और फ़सल काटते। कपड़ों को उगता हुआ देखते, जूते पैदा करते, मशीनों के खेत होते, ट्रैक्टर, अकार्डियन, ऐनकें, घड़ियां और सिगरेटें हवा में लहराती हुई... आती... ओह, ओह! इस दुनिया को बनाते समय उन निखट्टुओं ने मुझसे सलाह नहीं ली!"

रबफ़ाक-छात्रों को पहली मई का दिन हमारे साथ बिताना था। इसने उत्सव के उस दिन में, जो वैसे ही अपने आप में हमारे लिए काफ़ी आह्लादपूर्ण था, और भी चार चांद लगा दिए।

सदा की भांति कोलोनी सुबह ही बिगुल की ध्वनि के साथ उठी और मिश्रित दस्ते क़ायदे से मार्च करते खेतों के लिए रवाना हुए। उन्होंने एक बार भी मुड़कर पीछे की ओर नहीं देखा या जीवन के विश्लेषण में अपनी शक्ति को नष्ट नहीं किया। अत्यन्त पिछड़े हुए – येवगेनीयेव, नज़ारेन्को, पेरेपेल्यात्चेन्को तथा अन्य कई लोग सबका साथ देने लगे थे। वे अब कोई परेशानी उत्पन्न नहीं करते थे।

१६२५ की गर्मियों तक कोलोनी ने एक पूर्णतया सुसम्बद्ध समूह का रूप धारण कर लिया था। एक बहुत ही स्वस्थ भावना उसमें अब नज़र आती थी – कम-से-कम बाहर से तो ऐसा ही मालूम होता था। लेकिन चोबोत हमारी प्रगति में बाधक था, और मैं उसे संभाल नहीं पाता था।

अपने भाई से मिलने के बाद मार्च में चोबोत लौटा। उसने हमें

बताया कि उसका भाई काफ़ी ख़ुशहाल है, लेकिन उसके पास खेत-मज़दूर कोई नहीं है – वह एक मझोला किसान है। चोबोत ने कोलोनी से कोई मदद नहीं मांगी, लेकिन नताशा का मसला उसने उठाया।

"मुझसे बात करने से क्या फ़ायदा," मैंने कहा। "ख़ुद नताशा को ही इसका निश्चय करना चाहिए।"

एक सप्ताह बाद वह फिर मेरे पास आया। वह अत्यन्त उद्विग्न था।

"मैं नताशा के बिना नहीं रह सकता। उससे आप बात करो – कहो कि मेरे साथ चली आये।"

"सुनो, चोबोत, तुम भी ख़ूब हो। उससे बात तुम्हें करनी चाहिए, न कि मुझे।"

"अगर आप उससे चलने को कहेंगे तो वह चली आये, लेकिन जब मैं कहता हूं तो, जाने क्यों कुछ नतीजा नहीं निकलता।"

"वह क्या कहती है?"

"वह कुछ नहीं कहती।"

"सो कैसे?"

"कुछ नहीं कहती, बस रोने लगती है।"

चोबोत अत्यन्त चौकस व्यग्रता के साथ मुझे देख रहा था। यह जानना उसके लिए महत्वपूर्ण था कि उसकी बात ने मुझपर क्या प्रभाव डाला है। मैं उससे नहीं छिपा सका कि उसका कितना दुःखद प्रभाव मुझपर पड़ा है।

"लक्षण अच्छे नहीं," मैंने कहा। "मैं उससे बात कर देखूंगा।"

चोबोत ने अपनी अंगार-सी आंखों से मुझे देखा, मेरे अस्तित्व के एकदम अन्तर्तम तक और भरभरी-सी आवाज़ में कहा :

"उससे बात करो। लेकिन यह ध्यान में रखना – अगर नताशा नहीं चलेगी तो मैं अपना अन्त कर दूंगा।"

"यह क्या बेवक़ूफ़ी की बात करते हो?" मैं उसपर चिल्लाया। "तुम आदमी हो या केवल पानी का एक बुलबुला मात्र हो? तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए।"

लेकिन चोबोत ने मुझे अपनी बात पूरी नहीं करने दी। वह बेंच पर ढह गया और अकथ शोक तथा निराशा के आंसू बहाने लगा। मैं

उसके जलते हुए माथे पर अपना हाथ रखे हुए चुपचाप उसे देखता रहा। अचानक वह उछलकर खड़ा हुआ। मेरी बांहों को उसने दबोचा और द्रुत, उलझे हुए शब्दों की झड़ी लगा दी :

"मुझे माफ़ करो ... मैं जानता हूं कि मैं आपको कष्ट दे रहा हूं ... लेकिन मैं और कर भी क्या सकता हूं ... आप देखते हैं कि मैं कैसा जीव हूं ... आप हर चीज़ देखते हैं, और हर चीज़ जानते हैं ... मैं पांव पड़ता हूं ... नताशा के बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता।"

मैंने सारी रात उससे बातें करते गुज़ारी और सारी रात मैं अपनी लाचारी का अनुभव करता रहा। मैंने उसे जीवन की महानता के, उज्जवल सम्भावनाओं और मानवीय ख़ुशहाली की विविधता के बारे में बताया। सावधानी और संयोजन, और नताशा के अध्ययन करने की आवश्यकता के बारे में मैंने उससे बातें कीं, उसके – नताशा के – उल्लेखनीय गुणों का मैंने ज़िक्र किया, यह कि किस प्रकार बाद में वह ख़ुद उसकी भी मदद करेगी, और यह कि उसे दूरस्थित बोगोदूख़ोव गाँव में दफ़न नहीं होने देना चाहिए जहां दुख के मारे वह मर जाएगी। लेकिन इन में से एक भी बात ने चोबोत की चेतना में प्रवेश नहीं किया। मुंह फुलाए मेरे शब्दों को उसने सुना और केवल फुसफुसाया :

"मैं कुछ भी करूंगा, वह केवल मेरे साथ चली आये।" उसकी उस पहलेवाली विमूढ़ स्थिति से मैं उसे निकाल नहीं सका। अपने को रोकने और क़ाबू में रखने के यंत्रों पर उसका कोई वस नहीं रहा था। अगली सांझ मैंने नताशा को मिलने के लिए बुलाया। उसने मेरे संक्षिप्त प्रश्न को सुनकर अपनी आंखों को मेरे चेहरे की ओर उठाया और एक ऐसी आवाज़ में कहा जो अत्यंत उज्जवल और पवित्र थी, शर्म की भावना का जिसमें ज़रा भी लेश नहीं था :

"चोबोत ने मुझे बचाया ... लेकिन अब मैं अध्ययन करना चाहती हूं।"

"सो तुम उससे विवाह करना और उसके साथ रहना नहीं चाहती ?"

"मैं अध्ययन करना चाहती हूं ... लेकिन अगर आप मुझे जाने के लिए कहेंगे तो चली जाऊंगी।"

मैंने एक बार फिर उसकी उन स्वच्छ, उन्मुक्त आंखों में देखा,

उससे यह पूछने की इच्छा से कि क्या वह चोबोत के मन की स्थिति से परिचित है। लेकिन, जाने क्यों, मे ऐसा नहीं कर सका।

"अच्छी बात है। तुम जाकर आराम करो।" मैंने उससे अन्ततः कहा।

"तो मुझे जाना नहीं होगा न?" बच्चों की भांति अपने सिर को थोड़ा एक ओर झुकाए हुए उसने पूछा।

"नहीं, तुम्हें जाना नहीं होगा। तुम अध्ययन करोगी," मैंने खोए से अन्दाज़ में जवाब दिया और सोच में डूब गया, इस हद तक कि मुझे यह भी पता नहीं चला कि वह कब चुपचाप दफ़्तर से बाहर खिसक गई।

अगली सुबह मैं चोबोत से मिला। वह श्वेतघर के मुख्य दरवाज़े पर खड़ा था, प्रत्यक्षतः मुझसे मिलने के इन्तज़ार में। सिर हिलाकर मैंने उसे दफ़्तर में चलने का इशारा किया। वह चुपचाप मेरी ओर देखता रहा और उस समय जब मैं कुंजियों और अपनी मेज़ की दराज़ों से उलझ रहा था, वह जैसे अपने आप से अचानक बोल उठा:

"सो नताशा नहीं जा रही है?"

मैंने सिर उठाकर उसकी ओर देखा, और अनुभव किया कि अपनी इस क्षति के सिवा अन्य किसी चीज़ का उसे भान नहीं है। दरवाज़े के सहारे अपना एक कंधा टिकाए और खिड़की के सबसे ऊपरवाले कोने के कांच पर अपनी नज़र जमाए, वह कुछ फुसफुसाया।

"चोबोत!" मैंने चिल्लाकर कहा।

लगा जैसे वह मुझे सुन नहीं रहा था। वह दरवाज़े से हटा और मुड़कर मेरी ओर देखे बिना चुपचाप और हल्के पांवों से, छाया की भांति बाहर निकल गया। मैं बराबर उसपर अपनी निगाह रखे हुए था। भोजन के बाद मिश्रित दस्ते में उसने अपना स्थान ग्रहण किया। सांझ को मैंने उसके कमाण्डर श्नाइदेर को बुलाया।

"चोबोत का क्या हाल है?"

"चुप्पी साधे हुए है।"

"उसने काम कैसा किया?"

"मिश्रित दस्ते के कमाण्डर नेचिताइलो का कहना है कि उसने अच्छा काम किया।"

"अगले कुछ दिनों तक उसपर से अपनी नज़र न हटने देना। अगर कोई ऐसी-वैसी बात दिखाई दे तो फ़ौरन मुझे बताना।"

"मैं जानता हूं – बेशक ख़बर दूंगा," श्नाइदेर ने कहा।

चोबोत कई दिन तक मौन साधे रहा लेकिन वह काम पर जाता और भोजन के कमरे में प्रगट होता। लगता जैसे वह मेरे संग-साथ से बचना चाहता हो। उत्सव से पहले दिन मैंने उसे काम सौंपते हुए आदेश दिया कि वह ख़ुद तमाम इमारतों पर नारे टांके। उसने सजग और सचेत होकर सीढ़ी निकाली और मेरे पास आकर विनती की:

"मुझे कीलों के लिए आर्डर दे दीजिए।"

"कितनी?"

उसने छत की ओर अपनी आंखें उठाईं, कुछ फुसफुसाया और जवाब दिया:

"एक किलोग्राम काफ़ी होगा, मेरी समझ में..."

मैंने जांच की। ईमानदारी और सावधानी के साथ वह नारों को एक सीध में लगा रहा था और अगली सीढ़ी पर चढ़े दूसरे साथी से शान्त भाव से कह रहा था:

"और ऊंचे... ज़रा और... बस ठीक... अब कील गाड़ दो।"

कोलोनीवासी उत्सवों की तैयारी बड़े चाव से करते थे, और पहली मई को तो वे सबसे ज़्यादा चाहते थे, क्योंकि यह वसन्त का त्योहार था। लेकिन इस वर्ष पहली मई का आगमन कुछ शुभ घड़ी में नहीं हुआ। एक दिन पहले भोर से ही बारिश हो रही थी। आधा-एक घंटे के लिए वह रुकती; और फिर झड़ी शुरू हो जाती – शरद् की भांति महीन, उबा देनेवाली, और अडिग। लेकिन सांझ को आकाश में तारे टिमटिमाने लगे, उदासी का एकमात्र स्थल पश्चिम के आकाश में एक मनहूस, गहरा नीला धब्बा था जो कोलोनी के ऊपर अपनी अमित्रतापूर्ण, अंधियारी छाया डाल रहा था। कोलोनीवासी इधर से उधर लपक रहे थे ताकि सभा से पहले ही विविध प्रकार के सारे कामों को निबटा सकें – जैसे, बाल बनाना, नहाना-धोना और कपड़े साफ़ करना आदि। श्वेतघर की सूखती हुई बरसाती में ढोलवादक अपने यंत्रों के पीतक को खड़िया से साफ़ कर रहे थे। कल इन्हीं के सिर सेहरा बंधना था।

हमारे ढोलवादक मामान्य वादकों से बहुत भिन्न थे। ये अनाड़ी वादक नहीं थे जो एक दूसरे से उलझी ध्वनियों की एक बाढ़-सी लगा देते हैं। गोर्की कोलोनी के ढोलवादकों ने छः महीने तक रेजीमेण्ट के वादकों से बेकार ही शिक्षा नहीं ली थी, और इवान इवानोविच के सिवा अन्य किसी ने इसका विरोध नहीं किया था।

"उनकी पद्धति, आप जानो, भयानक है, भयानक!" उसने मुझे बताया।

इवान इवानोविच ने भयभीत नेत्रों से मेरी ओर देखकर इस पद्धति का मुझसे वर्णन किया। यह एक अद्भुत भानमती का पिटारा था, जिसमें एक पतुरिया, तम्बाकू, पनीर और कोलतार तथा और अन्य शब्द शामिल थे जो अनुल्लेखनीय है, लेकिन जो ढोलवादकों की दुनिया में पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर का काम देता है। लेकिन इस भयानक पद्धति ने अपना काम अच्छी तरह किया और हमारे ढोलवादकों के मार्च ने अपने सौन्दर्य तथा अभिव्यक्तिशीलता के कारण विशेष ख्याति प्राप्त की। ये मार्च कितने ही प्रकार के थे – अभियान मार्च, प्रभात मार्च, झण्डा मार्च, परेड मार्च, लड़ाई मार्च – और इनमें से प्रत्येक अपनी ख़ास कम्पनध्वनियों, अपने तीव्र साफ़-सुथरे स्वरों, धुंधली मृदु गरगराहटों, आकस्मिक विस्फोटकीय टुकड़ों से युक्त था। हमारे ढोलवादक इतनी सुचारूता से अपना काम करते थे कि उन्हें सुनकर जन-शिक्षा विभाग के कई इन्स्पैक्टरों को भी यह मानने के लिए बाध्य होना पड़ा कि उन्होंने समाज शिक्षा के लक्ष्य में ऐसी कोई ख़ास ग़ैर-विचारधारा का समावेश नहीं किया।

सांझ को कोलोनीवासियों की सभा में उत्सव के लिए होनेवाली तैयारियों की हमने जांच की। केवल एक ही चीज़ ऐसी थी जिसे अन्तिम तौर से नहीं सुलझाया जा सका था। वह यह कि, क्या कल बारिश होगी? मज़ाक़ में प्रस्ताव आए कि कल दिन के आदेश-पत्र में शामिल किया जाए – मानीटर से आशा की जाती है कि वह अच्छे मौसम की गारंटी करे। मैंने कहा, मुझे यक़ीन है कि बारिश होगी। कालीना इवानोविच, सिलान्ती तथा अन्य मौसम-विशेषज्ञों का भी यही मत था। लेकिन कोलोनीवासियों ने हमारी आशंकाओं का प्रतिवाद किया, चिल्लाते हुए कहा:

"तो होने दो, इससे क्या?"

"तुम भीग जाओगे।"

"हम चीनी के नहीं बने हैं, क्यों, नहीं बने हैं न?"

मुझे वोट लेने के लिए बाध्य होना पड़ा कि अगर सुबह से बारिश होती रही तो क्या हमें शहर जाना चाहिए। तीन हाथ इसके खिलाफ़ उठे, जिनमें एक खुद मेरा था सभा विजयपूर्ण हंसी से गूंजी। और किसी ने चिल्लाकर कहा:

"हमारा पक्ष जीता!"

इसके बाद मैंने कहा:

"अब याद रखना – यह निश्चय किया गया है कि हम जाएंगे, चाहे पत्थर ही न बरसें।

"बरसने दो!" लापोत चिल्लाया।

"देखो, फिर झींकना नहीं! आज तुम बहुत बहादुर हो सकते हो, और कल अपनी दुम दबोचो और लगो झींकने – 'ओह, हम भीग गए, ओह, ठंड लगती है ..."

"क्या हम कभी झींकते थे?"

"तो यह तय रहा – झींकना मना।"

"अच्छा, झींकना मना।"

सुबह हुई, और हमने देखा – मेघों से घिरा आकाश, और हल्की, विश्वासघाती वर्षा, जो बढ़कर बौछारों में बरसती, धरती को प्लावित करती और इसके बाद फिर मौन झड़ी का रूप धारण कर लेती। धूप निकलने की क़तई कोई उम्मीद नहीं थी।

श्वेत घर में अभियान के लिए प्रस्तुत कोलोनीवासियों से मेरी भेंट हुई। कौतुक के साथ उन्होंने मेरे चेहरे में झांककर देखा, लेकिन मैं पत्थर का नक़ाब चढ़ाए था। इधर-उधर व्यंग्यमय संस्मरणों की ध्वनि सुनाई दी – "झींकना मना!"

झण्डावाहक को मेरे पास भेजा गया, प्रत्यक्षतः सुराग़ लेने के लिए:

"क्या हम ध्वज को साथ ले चलेंगे?"

"बिना ध्वज के हम कैसे जा सकते हैं?"

"आप जानें ... वर्षा ..."

"इसे तुम वर्षा कहते हो? शहर पहुंचने तक ग़िलाफ़ चढ़ा रहने देना।"

"अच्छा।" झण्डावाहक ने विनत भाव से कहा।

सात बजे बिगुल-ध्वनि हुई। ठीक नियत समय पर दस्ता शहर के लिए रवाना हुआ। शहर से चौक तक छः सात मील का रास्ता था और हर मील पर बारिश का ज़ोर बढ़ता जा रहा था। शहर के चौक में हमें कोई नज़र नहीं आया। साफ़ था कि प्रदर्शन रद्द कर दिया गया है। वापस लौटते समय वर्षा ने मूसलाधार रूप धारण कर लिया। लेकिन अब हमें कोई चिन्ता नहीं थी। हम सब के सब पहले ही पूरी तरह सराबोर हो चुके थे, और पानी मेरे बूटों में से इस तरह निकल रहा था जैसे ऊपर तक भरा डोल छलकता है। मैंने दस्ते को रोका और लड़कों से कहा:

"ढोल भीगे हैं, आओ, गीत शुरू करें। और सुनो, इस तथ्य की ओर तुम्हारा ध्यान खींचना ज़रूरी है कि कुछ पांतों में कोई व्यवस्था नहीं, बिना क़दम मिलाए मार्च कर रही हैं। एक चीज़ और–तुम्हें अपने सिरों को ऊंचा रखना चाहिए।"

कोलोनीवासी हंसी से खिलखिला उठे। वर्षा की धाराएं उनके चेहरों पर बह रही थीं।

"फ़ॉरवर्ड–मार्च!"

कराबानोव ने गीत की कड़ी उठाई जो इस स्थिति के इतना अत्यन्त उपयुक्त मालूम होती थी कि उसका भी हंसी से अभिनन्दन किया गया।

"होती जाती है बद से बदतर हालत।"

लेकिन हम हैं कि कुछ परवाह ही नहीं।" और गीत को दोहराने का नम्बर आने से पहले ही सबने उसे उठा लिया और जनशून्य, वर्षा-प्लावित सड़कों के ऊपर उसके स्वर तिरने लगे।

चोबोत पहली पांत में मेरे बराबर में मार्च कर रहा था। वह न तो गा रहा था, न वर्षा की ओर कोई ध्यान दे रहा था, बल्कि सामने की ओर–ढोलवादकों के उस पार किसी स्थल पर–दृढ़ता से नज़र जमाए ताक रहा था। उसे इसका भी क़तई भान नहीं था कि मैं बराबर में उसका निरीक्षण कर रहा हूं।

स्टेशन से आगे निकल जाने पर मैंने उन्हें पांतें भंग करने की

अनुमति दी। किसी के पास एक भी सूखी सिगरेट या तम्बाकू की टिकिया नहीं थी। सो हर कोई मेरे चमड़े के सिगरेट-केस पर झपटा। मुझे उन्होंने घेर लिया और गर्व के साथ याद दिलाया:

"फिर भी, कोई नहीं झींका!"

"ज़रा ठहरो, उस कोने से जैसे हम मुड़ेंगे, पत्थर पड़ना शुरू होगा – तब तुम क्या कहोगे?"

"बेशक, पत्थर कुछ अच्छे नहीं मालूम होंगे," लापोत ने कहा। "लेकिन पत्थर मशीनगनों से फिर भी बेहतर हैं।"

कोलोनी के अहाते में प्रवेश करने से पहले हम फिर पंक्तिबद्ध हो गए। दस्ते का हमने निर्माण किया और अपने गीत को फिर गाना शुरू कर दिया, हालांकि मूसलाधार वर्षा की बढ़ती हुई आवाज़ों को डुबोना गायकों के लिए अत्यन्त कठिन था। तभी एक सुखद आश्चर्य की भांति हमारी वापसी पर जैसे हमें सलामी देने के लिए, वर्षा की पहली गड़गड़ाहट गूंज उठी। गर्व से अपने सिरों को ऊंचा उठाए, तेज़ डगों से मार्च करते हुए। हमने कोलोनी में प्रवेश किया। सदा की भांति हमने झंडे को सलामी दी और केवल इसके बाद ही सबने शयनागारों की ओर प्रस्थान किया। लेकिन इतने ही में मैंने हांक लगाई:

"पहली मई ज़िन्दाबाद! हुर्रा!

लड़कों ने हवा में अपनी टोपियां उछालीं और कमान की प्रतीक्षा न कर भागकर मेरे पास आ गए। उन्होंने मुझे हवा में उछाला और पानी की ताज़ा धाराएं मेरे बूटों में से निकलकर मेरे ऊपर दौड़ चलीं।

एक घण्टे बाद क्लब में एक और नारा टांका गया। एक भीमाकार, लम्बी पट्टी पर केवल दो शब्द अंकित थे – झींकना मना!

१५. कठिन लोग

दूसरी मई की रात चोबोत ने अपने आपको फांसी पर लटका लिया।

रात की चौकसी करनेवाले दस्ते ने मुझे जगाया। खिड़की के पल्ले पर खटखट की आवाज़ जैसे ही मैंने सुनी, मैं भांप गया कि क्या हुआ है। रस्सी काटकर अभी-अभी उन्होंने चोबोत को नीचे उतारा

था, अस्तबल के निकट लालटेनों की रोशनी में वे उसे फिर से जिलाने की कोशिश कर रहे थे। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना तथा लड़कों के दीर्घ प्रयासों के बाद उसके सांसों को फिर से लाने में तो उन्हें सफलता मिली, लेकिन उसकी चेतना फिर लौटकर नहीं आयी। सांझ होते वह मर गया। शहर से बुलाए गए डाक्टरों ने हमें बताया कि चोबोत को बचाना असम्भव होता। अस्तबल के ऊपर टांड़ से उसने अपने आपको फांसी पर लटकाया था – इस टांड़ पर खड़े होकर, प्रत्यक्षतः, उसने अपनी गरदन में फंदा डाला और उसे कसकर वहां से कूद गया। गिरने के झटके से उसकी गरदन की रीढ़ टूट गई।

लड़कों ने चोबोत की आत्महत्या की खबर को सावधानी के साथ ग्रहण किया। किसी ने कोई खास दुःख व्यक्त नहीं किया। सिर्फ़ फ़ेदोरेन्को ने कहा:

"बेचारा कज़्ज़ाक – वह एक अच्छा बुदेन्नी सैनिक सिद्ध होता।"

लेकिन लापोत ने फ़ेदोरेन्को की अपत्ति की:

"वह कभी बुदेन्नी सैनिक नहीं बन सकता था। वह दहक़ान की भांति जिया और मरा। लालच के पीछे उसने अपनी जान दी।"

कोवाल ने तिरस्कारपूर्ण खिजलाहट के साथ क्लब की ओर देखा जहां उसका ताबूत रखा था। उसके गिर्द सम्मान-गारद में खड़े होने से इनकार कर दिया और उसके अन्तिम संस्कार में शामिल नहीं हुआ।

"चोबोत जैसे जीवों को मैं खुद फांसी पर लटका देता – जो अपने मूर्खतापूर्ण मामलों को लेकर लोगों की राह में आड़े आते हैं।"

केवल लड़कियों ने आंसू बहाए। उनमें भी मारूस्या लेवचेन्को ने अपने आंसुओं को सुखाया और ग़ुस्से से फुंकार उठी:

"मूर्ख, कठ दिमाग़! भला, कैसा लगता है तुम्हें यह – जाओ और उसके साथ घर संगवाओ – बेशक। नताशा के मानो भाग्य खुल जाते। अच्छा किया जो वह उसके साथ नहीं गई। दुनिया में चोबोतों की कमी नहीं है – उन सब को खुश करना सम्भव नहीं! अच्छा हो कि उनमें से कुछ और अपने आपको फांसी पर लटका लें।"

नताशा नहीं रो रही थी। उस समय जब मैं लड़कियों के पास उनके शयनागार में पहुंचा, उसने भयभीत आश्चर्य के साथ मेरी ओर देखा। धीमी आवाज़ में उसने मुझसे पूछा:

"मुझे अब क्या करना चाहिए?"

मारूस्या ने मेरी ओर से उसे जवाब दिया:

"शायद तुम्हारा मन भी जाकर अपने आपको फांसी पर लटकाने के लिए ललक रहा है? शुक्राना भेजो कि उस बेवक़ूफ़ में इतनी समझ थी कि रास्ते से हट गया। अगर वह जीवित रहता तो तुम्हें सारी उम्र यंत्रणा देता। वह अब क्या करे! जब तुम रबफ़ाक में होगी, तब सोचना..."

नताशा ने क्रोध भरी मारूस्या के चेहरे की ओर अपनी आंखें उठाईं और उससे सट गई।

"अच्छा तो ठीक।"

"मैं नताशा की संरक्षिका बनूंगी।" चुनौती के अन्दाज़ में अपनी दमकती हुई आंखों से मेरी ओर देखते हुए मारूस्या ने कहा।

मैंने माथा नवाया और मज़ाक़ के ढंग से उसकी दिशा में दोहरा हो गया।

"ओह, अवश्य, कामरेड लेवचेन्को," मैंने कहा, "और क्या मैं भी इसमें तुम्हारे साथ शामिल हो सकता हूं?"

"हाँ, केवल तभी, जब आप वचन दो कि अपने आपको फांसी पर नहीं लटकाओगे। आप जानो, कुछ संरक्षक एकदम निकम्मे होते हैं। संरक्षक न होकर वे अच्छा-ख़ासा बवाल बन जाते हैं।"

"अच्छा," सलामी झुकाते हुए मैंने जवाब दिया। "मैं फंदे से बचने का प्रयास करूंगा।"

नताशा छिटककर मारूस्या से अलग हो गई, अपने नये संरक्षकों की ओर देखकर मुसकराई, यहां तक कि थोड़ा लाल भी हो गई।

"चलो और थोड़ा कलेवा कर लो, बेचारी लड़की," मारूस्या ने प्रसन्नता से कहा।

मामले के इस पक्ष से मेरा हृदय कुछ हल्का हुआ।

सांझ को जांच-अधिकारी और मारिया कोन्द्रातियेवना आ गए। मैंने जांच-अधिकारी को समझाया कि वे नताशा से पूछ-ताछ न करें और उसने अपने आपको एक व्यवहार-कुशल जीव सिद्ध किया। उसने केवल एक छोटा-सा वक्तव्य तैयार किया और भोजन करने के बाद विदा हो गया। मारिया कोन्द्रातियेवना शोक प्रकट करने के लिए रुकं

रही। सब के सोने के बाद वह काफ़ी देर से कालीना इवानोविच के साथ मेरे दफ़्तर में आई और थकी-सी सोफ़े में ढह गई।

"तुम्हारे कोलोनीवासी पशु हैं। उनका साथी मर गया है और वे अपना हंसना जारी रखे हैं। तुम्हारा वह लापोत पहले की भांति ठिठोलियां करता घूम रहा है।

अगले दिन मैं रबफ़ाक-छात्रों को विदा करने गया। स्टेशन के रास्ते में वेर्शनेव ने अपने विचारों तथा भावों को प्रकट किया :

"ये लोग न-न-न-नहीं समझते कि मामला क्या है। एक आ-आ-आ-आदमी मरने का निश्चय करता है। मतलब कि जीवन अच्छा नहीं है। वे स-स-स-समझते हैं कि नताशा के कारण यह हुआ। इसका कारण ठीक उसका जीवन है जिसे वह बरदाश्त नहीं कर सका!

बेलूख़िन ने अपना सिर हिलाया :

"सो कुछ नहीं। चोबोत का जीवन कोई जीवन न था। वह आदमी नहीं था, वह दास था। अब मालिक तो रहे नहीं, सो उसने नताशा को ही एक तरह का ख़ुदा बनाने की कोशिश की।"

"तुम चीज़ों में ज़रूरत से ज़्यादा गहरी डुबकी लगा रहे हो, लड़को," सेम्योन ने कहा। "मैं यह पसन्द नहीं करता। एक आदमी अपने को लटका लेता है, बहुत ठीक, उसका नाम हाज़िरी में से काटकर अलग करो। हमें आनेवाली कल की फ़िक्र करनी चाहिए। मैं तुम्हें बताता हूं कि अच्छा हो कि कोलोनी इस जहन्नुम से बाहर निकले, इससे पहले कि तुम सब अपने आपको लटकाना शुरू करो।"

वापस लौटते समय मैं उन रास्तों के बारे में सोचता रहा जो हमारी कोलोनी के लिए खुले हुए थे। हमारे सामने पूर्णतया परिपक्व संकट का उदय हो गया मालूम होता था और कितनी ही चीज़ों का, जिनकी मैं अत्यधिक क़द्र करता था, अतल गर्त में समाने का ख़तरा पैदा हो चला था। वे ऐसी चीज़ें थीं जो उज्जवल और सजीव थीं, समूह द्वारा पांच साल के काम के दौरान क़रीब-क़रीब चमत्कारपूर्ण ढंग से उनकी रचना हुई थी। ये वे चीज़ें थीं जिनके भारी मूल्य को ख़ुद अपने से छिपाने के लिए मेरी विनम्रता भी प्रेरित नहीं कर सकती थी।

इस तरह के समूह में व्यक्तिगत पथों का स्पष्ट न होना संकट का रूप धारण नहीं कर सकता था। व्यक्तिगत पथ कभी भी सुस्पष्ट रूप

गे निर्धारित नहीं होते। सुस्पष्ट रूप से निर्धारित व्यक्तिगत पथ का मतलब क्या होता है? समूह से विलगता, केन्द्रित कूप-मंडूकता, पुरानी जानलेवा चिन्ता कि कल के लिए रोटी कहां से आएगी, उन धंधों का ऊहापोह जिन्हें चिरकाल से पोसा जा रहा है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। और धंधा भी कैसे? बढ़ई, मोची पिसानी ... नहीं, नहीं, मेरा पक्का विश्वास है कि हमारे सोवियत जीवन में युवा-जनों के लिए सबसे मूल्यवान धंधा है – संघर्ष करना तथा एक अच्छा मनुष्य बनना।

कोलोनीवासियों के समूह की शवित के बारे में मैंने सोचा और अचानक मैंने महसूस किया कि गड़बड़ क्या थी। अरे, यह कैसे हुआ कि इसका पता लगाने में इतनी देर मुझे लगी? यह सब इसलिए हुआ कि हम एक जगह स्थिर हो गए थे। समूह के जीवन में स्थिर हो जाना कभी भी गवारा नहीं किया जा सकता।

मैं एक बालक की भांति ख़ुश था। ओह, कितना आश्चर्यजनक! कितनी अद्‌भुत, सर्वव्यापी, द्वन्द्वात्मकता! एक आज़ाद काम करता समूह कभी हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा रह सकता। सामान्य विकास के सार्वभौम नियम ने अपनी सच्ची शक्ति की अभी केवल एक झलक ही दिखानी शुरू की थी। एक आज़ाद मानवीय समूह में जीवन का संचार करनेवाले रूपों का अर्थ था – प्रगति और मृत्यु का संचार करनेवाले रूपों की स्थिरता।

हां, क़रीब दो सालों से हम में एक स्थिरता आ गयी थी – वही खेत, वही फूलों की क्यारियां, वही बढ़ई-घर और वही वार्षिक चक्र।

कोलोनी में लौटने के लिए मैं उतावला हो उठा, कोलोनीवासियों की आंखों में झांकने और अपने इस आविष्कार की पुष्टि करने के लिए।

श्वेत घर की बरसाती में दो बग्घियां खड़ी थीं। लापोत ने आकर मुझे सूचना दी:

"ख़ारकोव से एक कमीशन आया है।"

"यह अच्छा है," मैंने सोचा। "मामले को सीधे अभी तय कर लेंगे।"

दफ़्तर में तीन व्यक्ति मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे – ल्युबोव सावेलियेवना जुरिन्स्काया, एक अन्य स्त्री – हृष्ट-पुष्ट, ढलती हुई

युवावस्था, लेकिन आंखें उजली और स्थिर। वह गहरे गुलाबी रंग की पोशाक पहने थी जिसकी पहली ताजगी विदा हो चुकी थी। उसके साथ एक अन्य महत्त्वहीन-सा जीव था, जिसका रंग न भूरा था और न सांवला (इन दोनों के बीच का), दाढ़ी एकदम नदारद थी या फिर बहुत ही सूक्ष्म थी। उमके एक हाथ में कागज़ रखने का बैग था, और नाक पर बहुत ही भद्दे ढंग से टिका चश्मा, जिसे वह अपने दूसरे हाथ से निरन्तर संभालते जा रहा था।

ल्युबोव सावेलियेवना ने चेहरे पर सप्रयास एक हार्दिक मुसकान लाते हुए अपने साथियों से मेरा परिचय कराया।

"और यह हैं कामरेड मकारेन्को। आइए, परिचय करा दूं— वारवारा विक्तोरोवना ब्रेगेल, सेर्गेई वासिलियेविच चाइकिन।"

वारवारा विक्तोरोवना का, जो मेरे ऊपर सबसे ऊंची अफ़सर थी, स्वागत करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन यह चाइकिन क्यों? शिक्षा-विज्ञान के एक प्रोफ़ेसर के रूप में मैंने उनके बारे में सुना था। तो क्या वे किसी अनाथालय का व्यवस्थापक थे?

"हम **खास** तौर से आपकी पद्धति का निरीक्षण करने के लिए आए हैं," ब्रेगेल ने कहा।

"मैं इसका ज़ोरों से विरोध करता हूं," मैंने कहा। "मेरी पद्धति जैसी कोई चीज़ नहीं है।"

"तो फिर कौनसी पद्धति को आप काम में लाते हैं?"

"सामान्य सोवियत पद्धति को।"

ब्रेगेल रोष से मुसकराई।

"यह सोवियत हो सकती है, लेकिन निश्चय ही यह ऐसी कुछ बहुत सामान्य नहीं है। जो हो, हमें इसका निरीक्षण करना है।"

एक ऐसे अत्यन्त अप्रिय वार्तालाप का सूत्रपात होनेवाला था, जिसमें लोग पारिभापिक शब्दों से खेल करते हैं, पूरी तरह विश्वास करते हुए कि यह शब्दावली वास्तविकता को व्यक्त कर सकती है। इसलिए मैंने कहा:

"मैं इस तरह से बातें करने नहीं जा रहा हूं। अगर आप चाहें तो मैं आपके सामने रिपोर्ट पेश कर सकता हूं, लेकिन यह जान लें कि उसमें तीन घंटे से कम नहीं लगेंगे।"

ब्रेग्रेल इसके लिए सहमत हो गई। हम वहीं दफ़्तर में जम गए, भीतर से हमने ताला बन्द कर लिया, और मैं पांच साल की अवधि के दौरान संचित प्रभावों, धारणाओं, सन्देहों और प्रयोगों को शब्दों में रखने के जानमार काम में जुट गया। मुझे ऐसा मालूम होता था जैसे मैं धाराप्रवाह बोल रहा था, अत्यन्त सूक्ष्म विचारों को ठीक शुद्ध रूप में व्यक्त कर रहा था, साहसपूर्ण सावधानी के साथ अब तक रहस्यमय बने क्षेत्रों में चीर-फाड़ के चाकू का प्रयोग करते, भविष्य के लिए निर्देशों की झलक देते, और आनेवाली कठिनाइयों की ओर इंगित करते हुए। जो हो मैं पूरी ईमानदारी के साथ मैं बोल रहा था। किसी के भी पूर्वाग्रहों को मैं बख़्श नहीं रहा था और इस बात को प्रकट करने से भय भी नहीं खा रहा था कि 'थयोरी' अपने कुछ पहलुओं से, मुझे तुच्छ और अजीब, दोनों ही मालूम होती है।

जुरिन्स्काया ने मेरी बात सुनी। उनके चेहरे ख़ुशी से चमक उठे। ब्रेगेल अभेद्य मुद्रा धारण किए रही, और रहे चाइकिन, उनकी मुझे कोई परवाह नहीं थी।

जब मैं अपनी बात ख़त्म कर चुका तो ब्रेगेल ने अपनी गावदुम उंगलियों को मेज़ पर पटका, और कुछ ऐसे अन्दाज़ में बोलीं, जिससे यह जानना कठिन था कि उसकी बात सच्चे हृदय से निकल रही है या वह व्यंग्य कर रही है:

"कहना चाहिए ... बहुत दिलचस्प, बेहद दिलचस्प। क्यों, ठीक है न, सेर्गेई वासिलियेविच ?"

चाइकिन ने अपने चश्मे को सीधा करने का प्रयास किया। लिखने के काग़ज़ो के अपने पैड के ऊपर झुककर बहुत ही शालीनता क साथ – जैसे कि एक विद्वान को करना चाहिए – चेहरे पर दुनिया-भर के बल और सिलवटें डालते तथा सम्मान के तार-तार हुए चोले को धारण करते हुए, निम्न भाषण दिया:

"निस्सन्देह, यह सब पूर्ण स्पष्टीकरण की अपेक्षा रखता है ... लेकिन एकदम ऊपर से देखने पर भी, कुछ थियोरमों के बारे में मन में सन्देह का अनुभव होता है, जिन्हें आपने कृपा कर उत्साह के साथ हमारे सामने प्रतिपादित किया है। यह उत्साह निस्सन्देह आपके विश्वास

का पोषक है। उदाहरण के लिए, एक चीज़ जिसे हम पहले जानते हैं और जिसे आप चुपचाप दरगुज़र कर गए प्रतीत होते हैं – एक तरह की, जैसे कि कहते हैं, प्रतियोगिता का यहां संयोजन किया जाता है, आपके छात्रों के बीच। जो सबसे ज़्यादा करता है प्रशंसा पाता है, और जो सबसे कम करता है निन्दा पाता है। आपने अपने खेतों में जोताई की और वहां इस तरह की प्रतियोगिता हुई – हुई न? आपने इसके बारे में कुछ नहीं कहा। सम्भवत: आपका इरादा ही नहीं था। मैं आपके मुंह से सुनना चाहता हूं कि क्या आपको ज्ञात है कि प्रतियोगिता को हम एक बुरी तरह बुर्जुआ पद्धति समझते हैं – वस्तुओं के प्रति प्रत्यक्ष रवैये की जगह वह अप्रत्यक्ष रवैये को स्थापित करती है। यह एक बात हुई। और फिर – आप अपने छात्रों को क्रान्तिकारी तिथियों के उपलक्ष्य में जेबखर्च देते हैं और उसमें धन का परिमाण हरेक के लिए समान नहीं होता। बल्कि – जैसा कि कहते हैं – उनकी पात्रता के अनुसार कमोबेश होता है। क्या आपको यह प्रतीत नहीं होता कि आप आन्तरिक प्रेरणा की जगह बाह्य प्रेरणा को स्थापित कर रहे हैं? और भी आगे बढ़कर – सज़ा, जैसा कि आप इसे कहते हैं। आपको ज्ञात होना चाहिए कि सज़ा दासों की नस्ल तैयार करती है, जब कि हम स्वतंत्र व्यक्तित्व की आकांक्षा रखते हैं, जिसका व्यवहार बेंत के भय तथा अन्य किसी दण्ड देने की कार्यवाही से नहीं, बल्कि अन्तर की प्रेरणा से और राजनीतिक चेतना से निर्धारित हो ..."

इन चाइकिन महोदय ने और भी बहुत कुछ कहा। उनकी बात सुनते समय मुझे चेख़ोव की एक कहानी याद हो आई। यह एक ऐसे आदमी के बारे में थी जिसने मेज़ पर रखे पेपरवेट से नाक में दम करनेवाली एक स्त्री को मार डाला था। इसे याद कर मैंने निश्चय किया कि चाइकिन को मारने की आवश्यकता नहीं – कुल जमा कसकर चमड़ी उधेड़ना ही इनके लिए काफ़ी होगा। बर्च-वृक्ष की टहनी या ऐसे ही पुराने निज़ाम में दण्ड देने क किसी अन्य औज़ार जैसे कोड़े आदि से नहीं, बल्कि एक मामूली पेटी से, जिसकी मदद से मज़दूर अपनी पतलूनों को ऊपर कसे रहते हैं। सिद्धान्त की दृष्टि से भी यह सही होगा।

ब्रेगेल ने चाइकिन को बीच में रोकते हुए मुझसे पूछा:

"आप मुसकरा क्यों रहे हैं? कामरेड चाइकिन ने जो कहा, क्या वह मजेदार बात है?"

"ओह, नहीं," मैंने कहा। "मज़ेदार वह ज़रा भी नहीं है..."

"तो क्या दुःखद बात है?" ख़ुद भी मुसकराते हुए ब्रेगेल ने पूछा।

"नहीं। निश्चय ही नहीं। यह दुःखद भी नहीं है। यह महज़ तलछट है।"

ब्रेगेल ने ध्यान से मेरी ओर देखा और एक उसास छोड़ी।

"हम तुम्हें कष्ट दे रहे हैं, है न?" उसने हंसी के ढंग में कहा।

"इसकी चिन्ता न करें – मैं ऐसे लोगों का आदी हूं जो मेरे लिए चीज़ों को कष्टकर बनाते हैं। कुछ तो और भी बदतर होते हैं।"

ब्रेग्रेल अचानक हंसी के मारे बल खाने लगी।

"आप तो हमेशा मज़ाक़ करते हैं, कामरेड माकारेन्को," शांत होने पर उसने कहा। "फिर भी, सेर्गेई वासिलियेविच के जवाब में क्या आप क़तई कुछ नहीं कह सकते?"

मैंने ब्रेगेल की ओर मनुहार भरी नज़र से देखा और कहा:

"मेरा ख़याल है, अच्छा हो अगर वैज्ञानिक शिक्षा-कमेटी इन सवालों को उठाए। वे वहां हर चीज़ ठीक ढंग से करते हैं, करते हैं न? और चलिए, हम इसके बजाय भोजन करें।"

"ठीक है," ब्रेगेल ने थोड़ा आहत होते हुए कहा। "ओह, याद आया, आपके छात्र ओप्रिश्को को निकालने के बारे में यह सब क्या मामला है?"

"नशा करने के कारण उसे निकाला गया है।'

"वह अब कहां है? निश्चय ही सड़कों पर?"

"नहीं, वह काफ़ी नज़दीक, एक कुलक के साथ रह रहा है।"

"आपका आशय यह है कि आपने उसे वहां दत्तक के रूप में भेजा है?"

"ऐसा ही कुछ समझिए", मैं मुसकराया।

"वह वहीं रह रहा है? क्या आपको इसका विश्वास है?"

"हां, मुझे बिलकुल विश्वास है। वह एक स्थानीय कुलक लुकाशेन्को के साथ रह रहा है। यह भला आदमी दो लावारिसों को और भी पहले से 'दत्तक' के रूप में रखे हुए है।"

"हमें इसकी जांच करनी होगी।"

"ज़रूर कीजिए।"

हम भोजन के लिए उठे। भोजन के बाद ब्रेगेल और चाइकिन ने खुद अपने आप इधर-उधर घूमने-देखने की इच्छा प्रकट की। मैंने अपनी टोपी उतारी और ल्युबोव सावेलियेवना के सामने माथा भुकाते हुए निम्न शब्दों में कहा:

"प्रिय, सुमधुर, आंखों की पुतली शिक्षा की जन-कमिसरियट! हमारा यहां दम घुटा जा रहा है, और जो कुछ हम कर सकते थे वह सब कर चुके हैं। छः महीने के भीतर हम सब यहां मानसिक रोगों के शिकार हो जाएंगे। हमें कोई बड़ी चीज़ दीजिए, ऐसी जो हमें काम से चकरघिन्नी बना दे। आपके पास दुनिया-भर की और भी चीज़ें हैं। आचार्य प्रवरों का ज़खीरा ही एकमात्र आपकी पूंजी नहीं है।"

ल्युबोव सावेलियेवना हंसी और उसने कहा:

"मैं आपकी बात बिलकुल समभती हूं। यह किया जा सकता है। चलिए, इसपर बातें कर लें... लेकिन ज़रा रुकिए – भविष्य के सिवा और कोई बात आपके मुंह से नहीं निकलती। क्या इस मुआइने से आपको बहुत बुरा लगा है?"

"ओह, बिलकुल नहीं। इसके सिवा और हो भी क्या सकता था?"

"और क्या चाइकिन के प्रश्न तुम्हें चिन्तित नहीं करते?"

"सो क्यों? वैज्ञानिक शिक्षा-कमेटी उनपर विचार करेगी – करेगी न? यह उनकी अन्त्येष्टि होगी।"

उसी रात सोने जाने से पहले ब्रेगेल ने मुझे अपने अनुभव बताए।

"आपका यह समूह शानदार है। लेकिन फिर भी आपके तरीक़े भयानक हैं।"

मैंने अपने अंन्तर्तम में खुशी का अनुभव किया – शुक्र है जो इसे यह नहीं मालूम कि अपने दोलवादकों को किस तरह हमने प्रशिक्षित किया था।

"अच्छा तो, शुभ रात्रि," ब्रेगेल ने कहा। "और हां याद आ-या – चोबोत की मृत्यु के लिए आपको दोष देने के बारे में कोई नहीं सोचता..."

गहरी कृतज्ञता के अन्दाज़ से मैंने माथा नवाया।

१६. द्नेप्र के शूरवीर

ग्रीष्म ने एक बार फिर रौंद लगाया। एक बार फिर, सूरज के साथ क़दम से क़दम मिलाकर, मिश्रित दस्तों में हम खेतों में गए, एक बार फिर चौथे मिश्रित पताका-दस्तों का सदा की भांति बुरून की अगुआई में। कार्यक्षेत्र के लिए आह्वान किया गया।

रवफ़ाक-छात्र जून के मध्य में कोलोनी में आए। परीक्षाओं में अपनी विजय के अलावा वे दो नयी सदस्याओं – ओक्साना और राखिल को भी अपने साथ लेकर आए। यों कोलोनीवासी होने के नाते उनके लिए और कोई चारा नहीं था, और वे कोलोनी में आने के लिए बाध्य थीं। उनके साथ चेर्नीगोववासी वह लड़की गाल्या पोदगोरना भी आई जो अद्‌भुत रूप में काली भौंहों और काली आंखों से युक्त थी। सेम्योन उसे लेकर कोलोनीवासियों की आम सभा में हाज़िर हुआ, हरेक को उसे दिखाया और उसने कहा :

"शूरा ने कोलोनी को लिखा था कि चेर्नीगोव की इस सुन्दरी ने मेरे मन में घर कर लिया है। यह सब – एक कोमसोमोल के शब्द इन्हें मानिए – निरी बकवास है, सच निरी बकवास है। बात यह है कि गाल्या के पास ऐसी कोई जगह नहीं जहां वह छुट्टियों में जा सके। अब, साथी कोलोनीवासियो, आप ख़ुद फ़ैसला कीजिए कि सही कौन है और ग़लत कौन।"

सेम्योन ज़मीन पर बैठ गया। सभा उद्यान में हो रही थी।

चेर्नीगोव युवती हमारे समाज को आश्चर्यचकित होकर देख रही थी। उसके पांव और बांहें नंगी थीं और पटे थोड़ा उघरा हुआ था। लापोत ने अपने होंठों को भींचा, आंखों को सिकोड़ा, बरौनियांविहीन अपनी बड़ी-बड़ी पलकों को मिचमिचाया और भरभरी-सी आवाज़ में कहा :

"कृपा कर, कामरेड चेर्नीगोवका, हमें बता ... अर्र ... हमें बता ... कि अर्र ..."

चेर्नीगोवका और समूची सभा ने अपने कानों को चौकस कर लिया।

"अर्र ... क्या "ओतृचेनाश" ('परम पिता') से परिचित हो?

चेर्नीगोव युवती थोड़ा सकपकाते हुए मुसकराई। उसके गालों पर लाली दौड़ी और हिचकिचाहट के साथ उसने जवाब दिया: "नहीं ."

"ओह, तुम नहीं जानती।" लापोत ने अपने होंठों को और भी ज़ोरों से भींचा और अपनी पलकों को फिर मिचमिचाया। "और क्या तुम 'मैं विश्वास करती हूं' प्रार्थना से अवगत हो?"

"नहीं, मैं अवगत नहीं हूं..."

"हूंह। और क्या तुम द्नेप्र को तैरकर पार कर सकती हो?"

चेर्नीगोव युवती ने सकपकाकर चारों ओर देखा।

"सो तो मैं नहीं कह सकती। यों मैं एक अच्छी तैराक हूं। मेरी समझ में मैं..."

लापोत सभा की ओर मुड़ा, कुछ उस तरह का भाव लिए हुए जो एक मूर्ख के चेहरे पर उस समय दिखाई देता है जब वह पूरा ज़ोर लगाकर कुछ सोचने की कोशिश करता है: होंठ आगे को निकाले, आंखें मिचमिचाते, एक उंगली उठी हुई, नाक हवा की गंध लेती – और यह सब मुसकराहट के ज़रा-से भी चिन्ह को प्रकट होने दिए बिना।

"तो कुल जोड़ इस प्रकार हुआ: ओत्चेनाश' – नहीं जानती, 'मैं विश्वास करती हूं' – पहले की भांति, द्नेप्र को पार कर सकती है, या शायद नहीं कर सकती?"

"पार कर सकती है!" सभा ने चिल्लाकर कहा।

"बिलकुल ठीक। और अगर वह द्नेप्र को पार नहीं कर सकती तो, कम-से-कम, क्या कोलोमाक को पार कर सकती है?"

"कर सकती है! कर सकती है!" लड़के हंसते हुए चिल्लाए।

"तो इसका मतलब यह कि वह हमारी कोलोनी के द्नेप्र के शूरवीरों के साथ चलेगी?"

"चलेगी।"

"किस दस्ते में?"

"पांचवें।"

"ऐसे में इसके सिर पर रेत रखो और इसको दस्ते में पहुंचा दो।

"अरे सुनो!" कराबानोव चिल्लाया। "ये तो केवल मुखिया थे जिनके सिरों पर रेत रख दिया जाता था..."

"ओह, कज़्ज़ाक, मुझे यह बताओ," सेम्योन को सम्बोधित करते हुए लापोत ने कहा, "क्या जीवन तरक़्क़ी करता है या नहीं करता?"

"बेशक, वह तरक़्क़ी करता है। लेकिन इससे क्या?"

"है क्यों नहीं। पहले केवल मुरितया अपने सिरों पर रेत छिड़कवाते थे, और अब हर कोई छिड़कवाता है।"

"ठीक," कराबानोव ने कहा, बिलकुल ठीक।"

जुरिन्स्काया का एक पत्र पाने के बाद ज़ापोरोज्ये जाने का ख़याल हमारे मस्तिष्क में आया था जिसमें उसने हमें सूचना दी थी कि होरतित्सा द्वीप में बच्चों की एक बड़ी कोलोनी का संयोजन करने के बारे में उड़ती हुई-सी अफ़वाहें सुनाई दे रही हैं, साथ ही उसने यह भी लिखा था कि सुनने आया है कि शिक्षा की जन-कमिसरियट गोर्की कोलोनी को उसकी धुरी बनाना पसंद करेगी।

इस योजना का नाक-नक़्शा तैयार करने का अभी तक कोई सिलसिला नहीं शुरू हुआ था। मेरी पूछ-ताछ के जवाब में जुरिन्स्काया ने लिखा कि अन्तिम निर्णय की अभी कुछ दिनों तक आशा नहीं की जाती, सब 'द्नेप्रोस्त्रोई' सम्बन्धी योजनाओं पर निर्भर करता है।

ख़ारकोव में क्या हो रहा था, इसका हमें कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं था, लेकिन कोलोनी में बहुत कुछ हो रहा था। यह कहना कठिन था कि कोलोनीवासी किस चीज़ का सपना देखते थे – द्नेप्र का, द्वीप का, प्रशस्त खेतों का या किसी फ़ैक्टरी का। कुछ इस बात से बहुत ख़ुश थे कि उनके पास उनका अपना निजी स्टीमर होगा। लापोत लड़कियों को यह कहकर चिढ़ाता था कि एक पुरानी परिपाटी के अनुसार लड़कियों को होरतित्सा द्वीप में नहीं जाने दिया जाता, सो उनके लिए द्नेप्र के तट पर कोई दूसरी व्यवस्था करनी पड़ेगी।

"चिन्ता न करो," लापोत उन्हें दिलासा देता। "हम तुमसे मिलने आया करेंगे और हम अपने को द्वीप में फांसी पर लटका सकते हैं – तुम्हारे लिए यह कहीं बढ़िया रहेगा।"

रबफ़ाक-छात्र ऐसे मज़ाक़ों और सपनों में हिस्सा लेते थे और खिलाड़ीपन की भावना में तत्परता के साथ अपने आपको बह जाने देते थे। यह आदत अभी एकदम उनके भीतर से गई नहीं थी। उस समय जब ज़ापोरोज्ये के जीवन की हास्यानुकृतियों का अभिनय किया जा-

ता, कोलोनीवासियों की आंखों में हंसते-हंसते आँसू उमड़ आते। इस उद्देश्य के लिए उनमें से अधिकांश ने 'तारास बूल्बा'* का सर्वांगपूर्ण अध्ययन किया था। नक़ल उतारने की लड़कों की शक्ति अपूर्व थी। कभी कराबानोव रंगमंच के पर्दे से बनी शलवार पहने प्रगट होता और भाषण देते हुए बताता कि इस तरह की शलवार कैसे बनाई जा सकती है जिसके लिए, उसके अनुसार, एक सौ बीस अरशीन** कपड़े की दरकार होती है। कभी एक कज़्ज़ाक को भयानक ढंग से मृत्युदण्ड दिए जाने का अभिनय किया जाता जिस पर बिरादरी ने चोरी का अभियोग लगाया था। किम्वदंतियों की परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिए वीरतापूर्ण प्रयास किए जाते – छड़ों द्वारा मृत्युदण्ड को अमल में लाया जाना था, और केवल वही जो पहले एक कुंड वोद्का चढ़ाए होता था, छड़ का इस्तेमाल करने का हक़ रखता था। जल्लाद के लिए एक कुंड वोद्का के अभाव में पानी के एक भीमाकार कुंड से काम चलाया जाता। दुनिया का सबसे ज़्यादा प्यासा जीव भी उसे पूरा नहीं पी सकता था। कभी-कभी चौथे मिश्रित दस्ते काम के लिए रवाना होते समय वुरून को एक भारी गदा और एक 'बुनचुक' लाकर देता। गदा कद्दू की बनी होती और बुनचुक पेड़ की छाल की। लेकिन वुरून को यह सब सामान आदर के साथ स्वीकार करना पड़ता और वह चारों दिशाओं में झुक-झुककर माथा नवाता।

इस प्रकार गर्मियां बीत गईं। ज़ापोरोज्ये योजना अभी तक केवल एक योजना ही थी और लड़के उससे खेल करते थक गए थे। अगस्त में रबफ़ाक-छात्र चले गए और अपने साथ एक नया दल लेते गए। पांच कमाण्डरों ने हमारी पांतों से विदा ली लेकिन उनमें से अन्य किसी ने इतना गहरा घाव नहीं छोड़ा जितना कि दूसरी टुकड़ी के कमाण्डर, मेरे घनिष्टतम मित्र और गोर्की कोलोनी के संस्थापकों में से एक, अन्तोन ब्रातचेन्को ने। वह भी रबफ़ाक के लिए रवाना हो ही गया। ओसाद्ची भी, जो मेरे लिए इतना महंगा सिद्ध हुआ था, चला गया। वह एक अत्यन्त दुष्ट लुटेरा रह चुका था, और अब खारकोव

* रूस के लेखक न० गोगोल की कृति। सं०

** एक अरशीन – पौन गज़

के तकनीकी संस्थान में जा रहा था। वह एक छरहरा और सुन्दर युवक था – लम्बा क़द, मज़बूत, अनबोला एक विचित्र स्फूर्ति तथा शक्ति से पूर्ण। उसके बारे में ही कोवाल ने यह कहा था:

"ओसाद्‌ची कितना बढ़िया कोमसोमोल सदस्य है! ऐसे कोमसोमोल से विलग होते दुःख होता है।"

और यह बिलकुल सच था। पिछले दो सालों से ओसाद्‌ची अपने कंधों पर पनचक्की टुकड़ी के कमाण्डर की पेचीदा ज़िम्मेदारियों को वहन किए हुए था – एक ऐसा काम जो अन्तहीन चिन्ताओं तथा गांव के लोगों और ग़रीब किसानों की कमेटियों से निरन्तर भुगतानों से भरा था।

इरकुत्स्क गवर्नर का पुत्र गेओर्गीयेवस्की भी जा रहा था, जो अपनी वंश वेलि के इस दाग़ को मिटाने में कभी समर्थ नहीं हो सका, हालांकि सरकारी काग़ज़ों के खाने में ये शब्द अंकित थे – 'नहीं मालूम कि इसके माता-पिता कौन थे'।

और श्नाइदेर, गौरवमण्डित आठवें दस्ते का कमाण्डर, और मारूस्या लेवचेन्को, पांचवें दस्ते की कमाण्डर, ये दोनों भी हमें छोड़कर जा रहे थे।

रबफ़ाक-छात्रों को जैसे ही हमने विदा किया, उसी क्षण हमने देखा कि गोर्कीआइटों का समाज कितना अधिक बचकाना बन गया है। खुद कमाण्डरों की परिषद में वे लड़के थे, जो अभी हाल तक नन्हों में शामिल थे – दूसरे दस्ते में वित्का बोगोयावलेन्स्की, तीसरे में ओप्रिश्को की जगह कोस्त्या शारोवस्की, पांचवें में नताशा पेत्रेन्को, नौवें में मित्का जेवेली, जब कि भीमाकार फ़ेदोरेन्को को आख़िर आठवें दस्ते की कमाण्डरी उपलब्ध हो गई। तीन साल के बेरोक नेतृत्व के बाद – नन्हों का दस्ता गेओर्गीयेवस्की तोस्का सोलोवियोव को सौंपा गया।

एक बार फिर हमने चुकन्दर तथा आलुओं के लिए खोदाई की, अस्तबल में भूसा फैलाया, वसन्त और जाड़े की बोवाई के लिए अनाज की छंटाई की और उसे अलग रख दिया। एक बार फिर पहले और दूसरे मिश्रित दस्ते जोताई के लिए रवाना हुए, इस बार बिना प्रतियोगिता के। और केवल तभी खारकोव में शिक्षा की जन-कमिसरियट से ज़ापोरोज्ये क्षेत्र पोपोव जागीर का निरीक्षण करने के लिए हमें एक अधिकृत अनुमति-पत्र प्राप्त हुआ।

कोलोनीवासियों की आम सभा ने मेरे सन्देश को सुनने के बाद शिक्षा की जन-कमिसरियट से आए काग़ज़ को एक के बाद दूसरे को हस्तान्तरित करते हुए अनुभव किया कि मामला गम्भीर है। कारण, हमारे पास एक पत्र और था जिस में शिक्षा की जन-कमिसरियट ने ज़ापोरोज्ये प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति से अनुरोध किया था कि पोपोव जागीर कोलोनी को अर्पित कर दी जाए।

उस समय हमने सोचा कि ये काग़ज़ इस मसले का अन्तिम हल प्रस्तुत करते हैं। सन्तोष की सांस लेने और परित्यक्त जागीरों, असफल हुई कोलोनियों, मृतप्राय मठों और अभिजात्यों के ग्रीष्मभवनों के बारे में – नये जीवन की चहल-पहल से जो अभी तक उपेक्षित पड़े थे – अपनी अन्तहीन बहसों को ताक़ पर रखने के सिवा अब हमें और कुछ नहीं करना था। अब हम होरतित्सा द्वीप की गाथा को भूल सकते थे और अपने साज-बाज को पैक कर एकदम रवाना हो सकते थे।

आम सभा ने मित्का जेवेली को मेरे साथ जाने के लिए चुना – कि हम जाकर पोपोव जागीर का मुआयना करें और उसे अपने क़ब्ज़े में ले लें। मित्का अब पन्द्रह वर्ष का था। नन्हों की पांत में, काफ़ी दिनों से, अन्य सबसे वह हाथ-भर ऊंचा था, मिश्रित दस्ते की कमाण्डरी की पेचीदा कला में उसे दक्षता प्राप्त थी, एक साल से भी अधिक अर्से से वह कोमसोमोल का सदस्य था, और हाल में ही उसे नौवें के कमाण्डर के ज़िम्मेदार पद के योग्य समझा गया था। मित्का गोर्कीआइटों की नवीनतम कोटि का प्रतिनिधि था – प्रन्द्रह वर्ष का होते न होते उसने भारी व्यावहारिक अनुभव, अन्दाज़ में लचकीलापन तथा संगठन-कार्य में सफलता प्राप्त कर ली थी। इसके साथ-साथ वह पुरानी, लड़ाकू पीढ़ी की परम्पराओं में भी पगा था। कोलोनी में पहले दिन से ही मित्का कराबानोव का अनुयायी बन गया था। ऐसा मालूम होता था जैसे अपनी अग्निमय काली आंखें तथा परिष्कृत, स्फूर्तिशील हाव-भाव उसने कराबानोव से विगमत में प्राप्त किए हों। लेकिन मित्का और सेम्योन में भारी अन्तर यह था कि मित्का पन्द्रह वर्ष की आयु में ही पांचवीं श्रेणी में था।

मित्का और मैं रवाना हुए। नवम्बर के अन्त का एक दिन था – निर्मल, हिमविहीन, पालेदार। चौवीस घण्टों में हम ज़ापोरोज्ये पहुंच

गए। अपनी मासूमियत में हमने कल्पना की थी कि गोर्की कोलोनी का नया और सुखद दौर कुछ इस प्रकार शुरू होगा – क्षेत्रीय कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष, सुहावने और क्रान्तिकारी चेहरे का आदमी, हार्दिकता के साथ हमसे भेंट करेगा और हमें देखकर ख़ुश होगा।

"पोपोव जागीर?" अपनी कल्पना में हम उसे कहते हुए सुनते। "गोर्की कोलोनी के लिए? बेशक, बेशक – मुझे इस बारे में सब मालूम है। ख़ुशी से! ख़ुशी से! यह लो जागीर के लिए आदेश-पत्र। बस, जाओ और उसपर क़ब्ज़ा कर लो।"

और हम अब केवल जागीर तक पहुंचने का रास्ता मालूम करते और तत्काल कोलोनी के लिए वापस लौट पड़ते – उन्हें यह बताने के लिए कि जल्दी करो, और जितना भी जल्दी हो अपना साज़-सामान पैक कर डालो।

यह हमारे दिमाग़ में कभी नहीं आया कि हम पोपोव जागीर को नापसन्द भी कर सकते हैं। शिक्षा की जन-कमिसरियट में रुक्ष ब्रेगेल तक ने भी, उस समय जब मित्का और मैं उससे मिलने के लिए खारकोव गए थे, कहा था:

"पोपोव जागीर? माकारेन्को के एकदम उपयुक्त। पोपोव अजीब जीव था और उसने इमारतें भी अजीब अच्छी खड़ी कीं। आप खुद देखना। बढ़िया जागीर है। आप उसे पसन्द करेंगे।"

जुरिन्स्काया ने भी बहुत कुछ ऐसा ही कहा था:

"प्यारी जगह है वह – इतनी सम्पन्न और सुन्दर। मानो उस जगह को एकदम बच्चों की कोलोनी के लिए ही बनाया गया हो।"

और मारिया कोन्द्रातियेवना ने कहा:

"बड़ी प्यारी जागीर है।"

मात्र यह तथ्य कि हर कोई इस जागीर से परिचित था, महत्वपूर्ण प्रतीत होता था, और मित्का तथा मैं – एक ऐसी मनःस्थिति में जो भाग्य के भरोसे अपने आपको अर्पित कर देती है – वहां पहुंचे – इस भावना के साथ कि यह जगह, प्रत्यक्षतः, खास तौर से हम गोर्कीआइटों के लिए बनाई गई है।

लेकिन हमारी अनेक आशाओं में से केवल एक सच निकली – क्षेत्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष का चेहरा सचमुच में सुहावना

और क्रान्तिकारी क़िस्म का था। उसके मुंह से फूटे एकदम पहले शब्दों से प्रारम्भ होकर अन्त तक बाक़ी सब बिलकुल भिन्न सिद्ध हुआ।

शिक्षा की जन-कमिसरियट से प्राप्त काग़ज़ को पढ़ने के बाद अध्यक्ष ने कहा:

"लेकिन वहां तो किसानों का एक कम्यून मौजूद है। और यह गोर्की कोलोनी क्या बला है?"

उसने खुलकर मेरी और मित्का की ओर ताका। लेकिन प्रत्यक्षत: मित्का उसे अपनी रुचि के कुछ अधिक अनुकूल प्रतीत हुआ। कारण, उसकी सतर्क काली आंखों को देखकर मुसकराते हुए उसने पूछा:

"और क्या इस जैसे लड़के वहां के सूत्रधार होंगे?"

मित्का का चेहरा तमतमा गया! उसने रुखाई से कहना शुरू किया:

"और क्यों, हमारे लड़कों में बुराई क्या है? मैं नहीं समझता कि वे चीज़ों को संभालने में तुम्हारे दहक़ानों से कुछ ज़्यादा बुरे सिद्ध होंगे।"

इन शब्दों को कहते-कहते मित्का का चेहरा और भी तमतमा उठा और अध्यक्ष की मुसकान और भी प्रशस्त हो चली।

"हमारे किसानों को क्या तुम यही कहते हो – दहक़ान?" उसने कहा और विश्वसनीय अन्दाज़ में उसने मंज़ूर करना शुरू किया, "वे चीज़ों को बुरी तरह संभालते हैं, यह सच है। लेकिन यह पन्द्रह सौ हैक्टर का मामला है। क्षेत्रीय कार्यकारिणी समिति के अधिकार-क्षमता से बाहर। सो तुम्हें कृषि की जन-कमिसरियट से इसका निबटारा करना होगा।"

मित्का ने अविश्वास के साथ अध्यक्ष की ओर देखकर अपनी आंखों को सिकोड़ा।

"आपकी ... भला क्या कहते हैं उसे ... अधिकार-क्षमता से बाहर ... आप कहते हैं? क्या मतलब होता है इसका?"

"देखो न, तुम्हारी भाषा को मैं जितनी अच्छी तरह समझता हूं उतनी अच्छी तरह तुम मेरी भाषा को नहीं समझते। कोई हर्ज नहीं, तुम्हारा डाइरेक्टर तुम्हें समझा देगा कि अधिकार-क्षमता का क्या मतलब होता है। हां तो, मैं तुम्हारे लिए और क्या कर सकता हूं? मैं तुम्हारे लिए एक मोटर मंगाए देता हूं, तुम उसमें जाकर नज़र

डाल सकते हो। और तुम, ऐन मौक़े पर, कम्यून से भी बात कर सकते हो, शायद कोई समझौता करने में समर्थ हो जाओ। लेकिन मामला खार्कोव में ही तय होगा, कृषि की जन कमिसरियट में।"

मुसकराते हुए अध्यक्ष ने मित्का से हाथ मिलाया।

"अगर तुम्हारे सब साथी ऐसे हैं तो मैं तुम्हारा साथ दूंगा।"

मित्का और मैंने पोपोव जागीर को देखा। उसके सौन्दर्य ने हमें मंत्रमुग्ध कर लिया।

विख्यात महान चरागाह के एकदम छोर पर, ठीक उसी जगह जहां – हमें ऐसा लगा – तारास बूल्बा की झोंपड़ी स्थित थी, द्नेप्र और कारा-चेकराक के कोण में स्तेपी के भीतर से अचानक पहाड़ियों की एक लम्बी शृंखला चली गई थी। उनके बीच से कारा-चेकराक तेज़ी से वह रहीं थी, तीर की भांति सीधी। नदी से अधिक वह नहर मालूम होती थी और द्नेप्र से जाकर मिलती थी। उसके ऊंचे तट पर – ओह, अद्भुत! उलटी रखी आरी जैसी ऊंची दीवारों के पीछे प्रासाद सिर ऊंचा किए खड़े थे। उनकी नोकदार छतें तथा गुम्बद कल्पनातीत आल-जाल की रचना कर रहे थे। कुछ बुर्जियों पर वायु की दिशा बतानेवाली उनकी पंखियां अभी तक मौजूद थीं, लेकिन उनकी अंधियाली कोटरनुमा खिड़कियां कठोर, सूनी आंखों से ताक रही थीं, और मूरिश, या शायद अरबी, रचनात्मक मस्तिष्क की कमनीय पेचीदगियां एक दुःखद विभिन्नता का संचार करती थीं।

दोमंज़िला चित्रमय बुर्ज के नीचे फाटक को पार कर हमने एक सुविस्तृत आंगन में प्रवेश किया, जिसका फ़र्श चौरस टाइलों से छाया था। टाइलों के बीच की दराज़ों में उदास उद्धतता के साथ, खुरदरी पाला मारी उक्राइनी घास उग आई थी, जिनके ऊपर गायों, सूअरों और बकरियों के घूमने के चिन्ह साफ़ नज़र आते थे। हमने पहले प्रासाद में पांव रखा। हवा के झोंकों और बुरी तरह गंधाते चूने के सिवा वहां और कुछ नहीं बचा था, और जिप्स की बनी वीनस डि मिलो की एक प्रतिमा, जिसकी बांहें ही नहीं, टांगें भी नदारद थीं, हॉल में लुढ़क रही थी। ऊंचे और शानदार, अन्य प्रासादो से भी समान रूप से क्रान्ति की गंध आ रही थी। पुनर्स्थापन के एक विशेषज्ञ की भांति मैंने इन सब पर नज़र डाली, और हिसाब लगाया

कि आवश्यक मरम्मतों में क्या कुछ ख़र्च होगा। सच पूछो तो घबराने की ऐसी कोई बात नहीं थी – दरवाज़ों और खिड़कियों की दरकार थी, चिकने काठ के फ़र्श की मरम्मत करनी थी, हर कहीं प्लास्टर चढ़ाना था। वीनस डि मिलो की मरम्मत करने की आवश्यकता नहीं थी, और ज़ीने, छतें तथा भट्टियां ठीक थीं।

मित्का मेरी भांति कवित्वशून्य नहीं था। विनाश का कोई भी चिह्न उसके सौन्दर्यानुभूतिपूर्ण उत्साह को ठण्डा नहीं कर सकता था। वह मुग्ध भाव से उद्गार प्रकट करता हुआ हॉलों, बुर्जियों, प्रवेश-द्वारों और छोटे-बड़े सहनों में घूम रहा था।

"भई ख़ूब! ज़रा यह देखो! सुन्दर, सच, बहुत सुन्दर! अद्भुत जगह है यह, अन्तोन सेम्योनोविच! देख लेना, यहां आकर वे फड़क उठेंगे। बढ़िया, सच, बहुत बढ़िया! भला, आपकी राय में, कितने लड़के यहां रह सकते हैं? एक हज़ार?"

मेरी गणना के अनुसार इसमें आठ सौ लड़के रह सकते थे।

"क्या हम उन्हें संभाल सकेंगे? आठ सौ, ज़्यादातर सड़क के जीव, और हमारे सारे कमाण्डर भी रबफ़ाक चले गए हैं..."

बिना इस वात को लेकर चकित हुए हम उन्हें संभाल सकेंगे या नहीं, हम आगे बढ़ चले। पीछे के सहन में कम्यून का आधिपत्य था और उसने चीज़ों की बुरी हालत कर रखी थी। लम्बा-चौड़ा अस्तबल लीद के ढेरों से अटा था और लीद के इन ढेरों के बीच बिना बिछावन के और उपेक्षित कुछ मरियल-से घोड़े खड़े थे – उनकी पसलियों की हड्डियां निकली हुईं और पृष्ठभाग गंदगी में सने हुए थे। उनमें से कई के गंज के चकते भी पड़े थे। भीमाकर सूअरघर छेदों से छलनी हो रहा था, इने-गिने सूअर उसमें नज़र आ रहे थे, सो भी निम्न कोटि के सहन के जाम हुए ढूहों पर उपेक्षित गाड़ियां, बोने की मशीन, पहिए और फालतू हिस्से निहायत बेतरतीबी से इधर-उधर बिखरे थे। इन सब के ऊपर एक बर्बर, जड़कर देनेवाली निर्जनता की परत छाई थी। केवल सूअरघर में एक जीव हमें दिखाई पड़ा – टेढ़ा-मेढ़ा-सा एक वृद्ध जिसकी दाढ़ी उलझी थी। उसने कहा:

"अगर आप लोग दफ़्तर की खोज में हों तो वह वहां है – उस झोंपड़ी में।"

"तुम अपने सूअरों को कहां रखते हो?" मित्का ने उससे पूछा।

"क्या? ओ... सूअर..."

वृद्ध ने अपने पांव का भार बदला, उंगलियों से अपनी मूंछों का स्पर्श किया और स्टालों की ओर नज़र फेंकी। यह साफ़ था कि मित्का के सवाल ने उसे चकरा दिया था। लेकिन उसने बहादुरी के साथ हवा में अपने हाथ को लहराया।

"ओह... वे उन्हें खा गए, बदमाश कहीं के, उन्हें खा गए, हरामी..."

"कौन?"

"कौन क्या? यही हमारे अपने लोग.. ये कम्यून..."

"और क्या तुम कम्यून में नहीं हो, दादा?"

"ही-ही, बेटा, मैं कम्यून में ऐसे हूं जैसे भेड़ों के बीच बछड़ा। जो सबसे ज़्यादा शोर मचाते हैं वे ही अब पंच बने हैं। उन्होंने बूढ़े को सूअर भी न दिया। पर तुम किस लिए आए हो?"

"हम काम से आए हैं।"

"ओ, काम से। अच्छा, अच्छा, आप काम से आए हो, तो भीतर चले जाओ। वे वहां एक सभा कर रहे हैं... सभा, आप जानो... उनकी हमेशा सभा जुटी रहती है... और यहां..."

लगता था वृद्ध अब अत्यन्त खुलकर बातें करने के लिए तैयार था, लेकिन हमारे पास समय नहीं था।

घिचपिच-से दफ़्तर में भूतपूर्व भूस्वामी की टूटी-फूटी कुर्सियों पर, जैसा कि वृद्ध ने कहा था, वे अपनी सभा जोड़े हुए थे। तम्बाकू के धुएं के मारे यह पता लगाना मुश्किल था कि कितने आदमी वहां मौजूद थे, लेकिन शोर-शराबे की भरमार को देखते हुए बीस ज़रूर रहे होंगे। दुर्भाग्यवश हम यह कभी नहीं मालूम कर सके कि उनके एजेण्डा में क्या था। कारण, जैसे ही हमने प्रवेश किया, घुंघराले बाल, काली दाढ़ी, और गोल लड़कियों जैसी भावुक आंखोंवाले एक आदमी ने हमसे पूछा कि हम कौन हैं।

वार्तालाप शुरू हुआ जो बारी-बारी से, पहले सरकारी चोला धारण करता, इसके बाद दुश्मनी का – गहरी आवेगपूर्ण दुश्मनी का,

और अन्त में – क़रीब दो घंटों के बाद उसने एकदम काम-काजी बाना धारण कर लिया।

लगा, मैं ग़लती पर था। कम्यून मृत्युशैय्या पर पड़ा सिसक रहा था, लेकिन अपनी प्रेतकाया को किसी तरह भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं था, और यह समझकर कि हम बिनबुलाए उसकी क़ब्र खोदने के लिए आए हैं, उसके ग़ुस्से का पारावार नहीं रहा। अपनी क्षीण होती हुई शक्ति को उसने बटोरा, और जीवन से चिपके रहने की एक अद्‌भुत लालसा का उसने प्रदर्शन किया।

एक बात साफ़ थी – पन्द्रह सौ हैक्टर क़म्यून के लिए ज़रूरत से ज़्यादा थे। उसकी निर्धनता के कारणों में से एक उसकी फालतू सम्पन्नता में निहित था। ज़मीन को बांटने की सम्भावना सम्बन्धी समझौता करने में हमें कोई कठिनाई नहीं हुई। प्रासादों, आरी सदृश दीवारों और बुर्जियों को मय वीनस डि मिलो के – देने के लिए कम्यून और भी तत्परता से तैयार था। लेकिन जैसे ही खेतीबाड़ी योग्य ज़मीन का मामला छिड़ा, कम्यून के सदस्यों और ख़ुद हमारे बीच भावनाओं का झंझावात शुरू हो गया। मित्का तर्क की नीति तक पर क़ायम नहीं रह सका और व्यक्तिगत हो गया।

"तुम्हारा चुकन्दर अभी तक खेतों में क्यों पड़ा है?"

अध्यक्ष ने जवाब दिया:

"और तुम, ज़रा-से छोकरे, चले हो मुझसे मेरे चुकन्दरों के बारे में सवाल-जवाब करने!"

केवल गई सांझ तक हम खेतीबारी लायक़ ज़मीन के बारे में एक समझौता कर सके।

"क्यों बेकार रेंक रहे हो, मूर्ख गधों की तरह?" मित्का ने कहा। "खेतीबारी लायक़ ज़मीन को हम दीवार से घेर सकते हैं।"

बात को हमने यहीं छोड़ दिया।

कुछ याद नहीं पड़ता कि किस वाहन के सहारे हम वापस गोर्की कोलोनी लौटे, लेकिन लगता था, जैसे हम उड़ते हुए पहुंच गए। आम सभा में हमारे विवरण का अभूतपूर्ण अभिनन्दन हुआ। मित्का को और मुझे हवा में उछाला गया, मेरी ऐनक क़रीब-क़रीब टूट गई और मित्का की नाक या माथा रगड़ खा गया।

कोलोनी के लिए वास्तव में एक सच्चे सुखद काल का श्रीगणेश हो गया। तीन महीने तक कोलोनीवासी दिन-रात योजनाओं में रमे रहे। ब्रेगेल ने जो फिर कोलोनी में आई हुई थी, मुझे झिड़का :

"यह किस तरह के लोग तुम तैयार कर रहे हो, माकारेन्को – सपनों में रमनेवाले ?"

इससे क्या अगर वे सपने देखते हैं तो ? खुद 'सपने' शब्द का मैं ऐसा कोई बहुत प्रेमी नहीं हूं। लड़कियों जैसी भावुकता की इससे गंध आती है, और हो सकता है कि यह इससे भी बदतर कोई चीज़ हो। लेकिन सपनों और सपनों में अन्तर होता है। सफ़ेद घोड़े पर सवार शूरवीर के सपने देखना एक बात है और बच्चों की एक कोलोनी में आठ सौ लड़कों तथा लड़कियों के सपने देखना बिलकुल दूसरी। उस समय जब हम तंग बैरकों में रह रहे थे, तब क्या हम ऊंचे, हवादार कमरों के सपने नहीं देखते थे ? पांवों के गिर्द चिथड़े लपेटे हुए हमने सचमुच के जूतों के सपने देखे थे। हमने रबफ़ाक और कोमसोमोल संगठन के सपने देखे थे। हमने 'मोलोदेत्स' घोड़े और सीमेन्थाल गायों के सपने देखे थे। और उस समय जब एक बोरी में विलायती नसल के दो शिशु-सूअर लेकर मैं आया था तो ऐसे ही एक स्वप्नदर्शी – उलझे हुए बालोंवाले वान्या शेलापूतिन ने, जो हाथों के बल एक ऊंचे बेंच पर बैठा अपनी टांगों को झुला रहा था, छत की ओर देखा और कहा था :

"इस समय हमारे पास केवल दो नन्हे सूअर हैं। लेकिन जल्दी ही इनकी संख्या काफ़ी बढ़ जाएगी, और वे अपनी संख्या में और भी अधिक वृद्धि करेंगे, और पांच साल के भीतर हमारे पास सौ सूअर हो जाएंगे। हो-हो ! हा-हा ! सुन रहे हो न, तोस्का – एक सौ सूअर !"

और स्वप्नदर्शी तथा तोस्का दोनों अनभ्यस्त हंसी की बाढ़ में बह चले और मेरे दफ़्तर में काम की जो बात चल रही थी, वह भी हंसी की उस बाढ़ में डूबने-उतराने लगी। अब हमारे पास तीन सौ से भी अधिक सूअर हैं, पर शेलापूतिन के सपनों की अब किसी को याद नहीं आती।

शायद हमारी शिक्षा प्रणाली तथा बुर्जुआ प्रणाली के बीच मुख्य भेद ठीक इस तथ्य में निहित है कि हमारे यहां बच्चों के समूह के लिए विकसित तथा सम्पन्न होना, आनेवाले अच्छे कल को लक्षित

करना, और उसे पाने के लिए आह्लादपूर्ण सामूहिक प्रयासों तथा प्रसन्न, अविचल सपनों को जन्म देना अनिवार्य है। सम्भवतः इसी में सच्ची शैक्षणिक द्वन्द्वात्मकता निहित है।

इसलिए कोलोनीवासियों के सपनों पर कोई रोक लगाने का मैंने प्रयास नहीं किया, बल्कि उनके साथ मिलकर उड़ानें भरीं, यहां तक कि ये उड़ानें शायद थोड़ा ज़रूरत से ज़्यादा ऊंची थीं। लेकिन कोलोनी के ये बहुत ही आनन्दपूर्ण दिन थे और मेरे सभी मित्र आज भी आनन्द के साथ उनका स्मरण करते हैं। ख़ुद अलेक्सई मक्सिमोविच भी, अपने मामलों के बारे में जिन्हें हम विस्तार से लिखा करते थे, हमारे साथ मिलकर सपने देखते थे।

कोलोनी में कुछ गिने-चुने लोग ही ऐसे थे जो ख़ुश नहीं थे और जो सपने नहीं देखते थे। कालीना इवानोविच इनमें से एक था। उसका मन युवा था, लेकिन सपने देखने के लिए, प्रत्यक्षतः, अकेला मन ही काफ़ी नहीं है। कालीना इवानोविच ने अपने बारे में कहा था:

"क्या तुमने देखा है कि एक अच्छा घोड़ा किस तरह मोटर से भड़कता है? यह इसलिए कि उसे जीवन से चिपके रहने का मोह है, हरामी कहीं का। इसके प्रतिकूल एक मरियल-सा घोड़ा है जो न केवल मोटर से, बल्कि ख़ुद शैतान से भी नहीं डरता। वह इस बात की कभी परवाह नहीं करता कि उसे चोकर मिलती है या पकवान, जैसा कि रूसी कहावत है।"

मैंने कालीना इवानोविच को समझाने की कोशिश की कि हमारे साथ चला चले, लड़कों ने भी ज़ोर लगाया, लेकिन वह दृढ़ता से अड़ा रहा।

"मैं अब किसी चीज़ से नहीं डरता, लेकिन मुझ जैसा मुफ़्तख़ोर अब आपके लिए आवश्यक नहीं। आपके साथ कुछ रास्ता मैंने पार कर लिया। बस इतना ही काफ़ी है! अब मैं पेन्शन लेकर चैन से बैठूंगा। सोवियत सरकार हम वृद्ध गंवारों पर मेहरबान है।"

ओसिपोव दम्पति ने भी शपथ ले रखी थी कि वे कोलोनी के साथ नहीं जाएंगे। इस पर वे यह भी जोड़ देते कि तूफ़ानी अनुभवों से उनका पेट भर चुका है।

"हम दीन-हीन लोग हैं", नतालिया मारकोवना ने कहा, "हम

नहीं समझ सकते कि आठ सौ लोगों को लेकर आप क्या करेंगे। सचमुच, अन्तोन सेम्योनोविच, इस झमेले में आप अपनी उंगलियां जला डालोगे।"

इसके जवाब में मैं गुनगुना उठा: "हम गाते हैं गीत वीरों के उन्माद के।"

लड़कों ने, गोर्की के गीत की इस पंक्ति को पहचानकर तालियां बजाईं और हंसे, लेकिन ओसिपोव इतनी आसानी से डिगनेवाले जीव नहीं थे।

लेकिन सिलान्ती ने मुझे दिलासा दिया:

"रहने दीजिये इन्हें पीछे। आप, अन्तोन सेम्योनोविच, हरेक को दौड़ के रथों में जोतना चाहते हैं, लेकिन एक गाय उसमें काम नहीं देगी, और आप हैं कि उसे जोतने पर तुले हैं।"

"लेकिन तुम तो, सिलान्ती?"

"मैं? मैं क्या?"

"तुम तो दौड़ के रथ के साथ जाओगे न?"

"मुझे आप जहां चाहे हांक ले चलिए। चाहें तो मुझपर ज़ीन तक कस लीजिए, और बुदेन्नी के नीचे मुझे रख दीजिए। देखो न, वे कुत्ते मुझे लद्दू जानवर की भांति इस्तेमाल करते थे। वे नहीं देख सके, हरामी कहीं के, कि मैं एक नम्बर का फ़ौजी घोड़ा हूं!"

सिलान्ती ने अपना सिर पीछे की ओर फेंका, पांव पटका और थोड़ा अलसाते हुए कहा:

"सो यह बात है।"

यह सच था कि क़रीब-क़रीब सभी शिक्षक, साथ ही सिलान्ती, कोज़िर, येलिसोव, लोहार गोदानोविच, सब की सब कपड़ा धोनेवालियों, रसोईदारिनों, यहां तक कि मिलवालों ने भी हमारे साथ जाने का निश्चय किया था, जिससे हमारा यह प्रयाण ख़ास तौर से सुरक्षित तथा अपनत्व से पूर्ण मालूम होता था।

लेकिन इस बीच खारकोव में मामला कुछ गड़बड़ चल रहा था, मुझे अक्सर वहां जाना पड़ता था। शिक्षा की जन-कमिसरियट हमारे पक्ष में थी। यहां तक कि ब्रेगेल भी हमारे सपनों के साथ खिंच आई थी, हालांकि उस समय मुझे ज़ापोरोज्ये डौन क्विजौट कहकर संबोधित करती थी।

और अन्त में कृषि जन-कमिसरियट ने भी, अपने होंठों को भींचते हुए, तिरस्कारपूर्ण ढंग से हमारा नाम भूलने के अन्दाज़ में कभी हमें गोर्की, कभी कोरोलेन्को और कभी शेवचेन्को कोलोनी कहते हुए हथियार डाल दिए, इन शब्दों के साथ: "अगर चाहो तो आठ सौ देस्यतीना और पोपोव जागीर ले लो – और बस, हमारी जान बख़्शो।"

लेकिन शीघ्र ही पता चला कि हमारे दुश्मन सामने मोर्चे की पांतों में नहीं थे बल्कि टट्टियों की ओट में छिपे थे। और आंख मूंदकर मैंने उनपर धावा किया था, मन में सोचते हुए कि यह अन्तिम, विजयी आघात था जिसके बाद हम फ़तह का अपना बिगुल बजा सकते थे। लेकिन छोटी जाकेट पहने एक छोटा-सा आदमी, मेरे आक्रमण का सामना करने झाड़ियों के पीछे से निकला। उसने कुछ शब्द कहे और मैं ढेर हो गया। – अपने हथियारों को फेंकते, अपनी पताकाओं को छोड़ते तथा विजयी अन्दाज़ में आगे बढ़ती हुई कोलोनिवासियों की अपनी पांतों को पीछे की ओर धकेलते हुए पीछे की ओर लपका।

"वित्तीय जन-कमिसरियट उस प्रासाद की मरम्मत के लिए, जिसे कोई नहीं चाहता, तुम्हें तीस हज़ार रूबल देकर इस तरह के फ़ग्वे का अनुमोदन नहीं कर सकती। ऐसी हालत में, जब कि तुम्हारे अपने अनाथालय जर्जर हो रहे हैं।"

"लेकिन यह सिर्फ़ मरम्मत के लिए नहीं है। इन तख़्मीनों में साज़-सामान और स्थानान्तरण का ख़र्च भी शामिल है।"

"वह भी हमें मालूम है। आठ सो देस्यतीना, आठ सौ लावारिस लड़के, आठ सौ गाएं। ऐसे फ़रेबों का समय बीत गया। शिक्षा की जन-कमिसरियट के लिए हमने लाखों स्वाहा कर दिए, लेकिन नतीजा कभी कुछ नहीं निकला। उन्होंने हर चीज़ पर हाथ साफ़ किया, हर चीज़ को तोड़ा-फोड़ा और इसके बाद भाग खड़े हुए।"

और उस छोटे-से आदमी ने हमारे सुन्दर जीवित सपने के वक्ष को रौंद डाला, जिसे उसने अप्रत्याशित रूप में धराशायी कर दिया था। न तो आंसू, न ये आश्वासन कि यह गोर्कीआइटों का सपना था, कारगर सिद्ध हुए। सपना काल-कवलित हो गया।

घर लौटते समय कंपकंपी के साथ याद आया कि हमारे पढ़ाई के कार्यक्रम में एक यह विषय भी शामिल था – 'ज़ापोरोज्ये क्षेत्र में हमारा

फ़ार्म'। शेरे दो बार पोपोव जागीर हो आया था। उसने खेती के काम की एक योजना तैयार की थी जिसे वह कोलोनीवासियों पर प्रकट कर चुका था – एक ऐसी योजना जिससे, हीरे, पन्ने और लाल जड़े थे, जिसमें ट्रैक्टरों के बेड़े, गायों के रेवड़, भेड़ों के झुंड, लाखों की संख्या में मुर्ग़े-मुर्ग़ियां, मक्खन और अण्डों का इंग्लैण्ड को निर्यात, अण्डे सेने और मक्खन निकालने की मशीनें और बाग़-बग़ीचे चमचमा और झिलमिला रहे थे, चौंधिया देनेवाली किरणों को विकीर्ण कर रहे थे।

केवल एक सप्ताह पहले, उसी यात्रा में ख़ारकोव से वापस लौटने पर लड़के मेरी ओर लपके और चहकते – चिल्लाते हुए उन्होंने मुझे गाड़ी में से बाहर खींच लिया:

"अन्तोन सेम्योनोविच, अन्तोन सेम्योनोविच! घोड़ी 'ज़ोर्का' ने बच्चा दिया है, अरे चलो, ज़रा चलकर देखो! चलो, और उसे देखो! चलो, अभी चलो!"

वे मुझे हाथों-हाथ अस्तबल लिवा ले चले और अभी तक नम, थरथराते, सुनहरे बच्चे के इर्द-गिर्द खड़े हो गए। वे ख़ामोशी के साथ मुसकरा रहे थे और एक आवाज़ भावावेश के साथ हवा में लहराये जा रही थी:

"हमने इसका नाम ज़ापोरोजेत्स रखा है..."

मेरे प्यारे बच्चे! महान चरागाह में हल के पीछे चलना, परियों के प्रासाद में रहना, मूरिश बुर्जियों की ऊंचाई से अपने बिगुलों को ध्वनित करना तुम्हारे लिए नहीं बदा है। बिलकुल बेकार ही तुमने इस नन्हे सुनहरे घोड़े का ज़ापोरोजेत्स नाम रखा।

१७. हिसाब फैलाना

वित्तीय जन-कमिमरियट के द्वारा दिया गया। आघात कुचल देनेवाला था। कोलोनीवासियों के हृदय दुःख रहे थे, हमारे दुश्मन मन-ही-मन हमारा उपहास कर रहे थे। मैं ख़ुद बुरी तरह गड़बड़ा गया था। लेकिन कोलोमाक में और अधिक टिकने की बात हम में से कोई भी अपने मन में नहीं लाता था। शिक्षा की जन-कमिसरियट तक विनीत हो हमारी इस हठीली दृढ़ता को महसूस करती थी और इस मामले

पर केवल एक ही दृष्टि से सोचती थी कि हमें कहां जाना होगा ?

१९२६ के फ़रवरी और मार्च महीने में हर चीज़ बहुत जटिल हो गई थी। ज़ापोरोज्ये की असफलता ने हमारी अन्तिम आशा पर भी तुषारापात कर दिया था, लेकिन समूह अभी भी आशा के कुछ अवशेषों से हठपूर्वक चिपका था। एक भी सप्ताह ऐसा नहीं बीतता था जिसमें कोलोनीवासियों की आम सभा में इस या उस सुझाव पर बहस न की जाती हो। सुविस्तृत उक्राइनी स्तेपी में अभी भी कितनी ही जगहें थीं जिनमें खेतीबाड़ी का कोई न कोइ काम किया जा रहा था। शिक्षा की जन-कमिसरियट में हमारे मित्रों, कोमसोमोल संगठनों, पास-पड़ोस के बहुतपुरान निवासियों तथा अर्थ-व्यवस्था से संबद्ध दूर के जान-पहचानवालों ने एक के बाद एक इन जगहों के बारे में हमें सुझाया था। इस काल में शेरे, लड़कों और मैंने रेलों, मोटरों, या 'मोलोदेत्स' जुती गाड़ियों और स्थानीय घोड़ों पर कितनी ही सड़कों तथा राजमार्गों की धूल छानी।

लेकिन सभी थकान से चूर होकर घर लौटते। आम सभाओं में भी कामकाजी चेहरों से कोलोनीवासी उन्हें सुनते और विसर्जित हो सब अपने-अपने काम की राह पकड़ते। वक्ता के उस कठोर प्रश्न के बाद जो सबसे पहले उनके मस्तिष्क में आता :

"कितने व्यक्ति उसमें रह सकते हैं ? एक सौ बीस ? बेकार !"

"कौनसा नगर – भला क्या बताया तुमने ? पिर्यातिन ? छिः !"

और ख़ुद वक्ता भी इस तरह की परिणति से ख़ुश होते। कारण, उनके अपने हृदय में निहित यह डर कि कहीं सभा मोह में आकर स्वीकार न कर ले।

इस प्रकार एक-एक कर वाल्की में स्तारित्स्की जागीर, पिर्यातिन मठ, लुबनी मठ, दिकान्का में राजकुमार कोचूबेई का प्रासाद और एकदम गयी-गुज़री कितनी ही अन्य जगहें हमारी आंखों के सामने से गुज़रीं।

इन से भी अधिक जगहों को, जिनका हमसे ज़िक्र किया गया, खोज-बीन के लिए अनुपयुक्त समझ हमने जहां का तहां रद्द कर दिया। इन्हीं में से एक ख़ारकोव के निकट बच्चों की एक कोलोनी कुरियाज

थी। यह चार सौ बच्चों से युक्त थी जिनके बारे में कहा जाता था कि वे एकदम चरित्रहीन बच्चों की संस्था है। इस की कल्पना से ही हमें इतनी घृणा हुई कि कुरियाज के विचार ने दो-एक ज़रा-ज़रा से क्षीण बुदबुदों के सिवा और कुछ उत्पन्न नहीं किया, जो उसी समय फूट गए।

एक बार मैं ख़ारकोव की अपनी एक यात्रा के दौरान बच्चों की सहायता कमेटी की एक सभा में पहुंचा। कुरियाज कोलोनी की स्थिति पर जो कमेटी के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत थी, विचार किया जा रहा था। जन-शिक्षा विभाग का एक इन्स्पैक्टर यूरियेव कोलोनी की स्थिति के बारे में गुस्से और रूखेपन से रिपोर्ट कर रहा था। उसके भाषण के उस नीरस तथा नियंत्रित रूप से मामले ने और भी मूर्खतापूर्ण तथा भयावह रूप धारण कर लिया! श्रोताओं को कुरियाज कोलोनी, अपने चालीस शिक्षकों तथा चार सौ छात्रों सहित संदिग्ध गाथाओं का एक जाल-सा प्रतीत होती थी। लगता था जैसे वह किसी विकारग्रस्त मानवद्रोही और झक्की आदमी के कुत्सित मस्तिष्क की उपज हो।

जी चाहता था कि मेज़ पर घूंसा पटकते हुए चिल्ला उठूं:

"यह नहीं हो सकता! यह निरी मनगढ़ंत है!"

लेकिन यूरियेव काफ़ी भरोसे का आदमी मालूम होता था। उसमें वक्ता की सप्रयासित गम्भीरता के नीचे शिक्षाविभागीय अधिकारी की गहरी-पैठी वेदना की झलक देखी जा सकती थी। उसकी उस वेदना को मैं अच्छी तरह महसूस कर सकता था। मेरी उपस्थिति यूरियेव को कुछ परेशान-सा कर रही थी। रह-रहकर वह मेरी ओर इस तरह देखता था जैसे अपने कपड़ों में कुछ अटपट अनुभव कर रहा हो। सभा के बाद वह मेरे पास आया और खुले हृदय से उसने कहा:

"सच, आपके सामने इस सारे जंगलीपन के बारे में बोलते समय मैं शर्म से कटा जा रहा था। कहते हैं कि आपके यहां अगर कोई कोलोनीवासी भोजन के लिए पांच मिनट भी देर से जाता है तो आप उसे सारे दिन रोटी और पानी पर गिरफ़्तारी में रखते हैं, और वह मुसकराता हुआ कहता है–'अच्छा'।"

"एकदम ऐसा तो नहीं है। पर अगर मैं इतने कारगर तरीक़े से काम न लेता तो गोर्की कोलोनी के बारे में भी आप बहुत कुछ आज जैसी शैली में अपने आपको रिपोर्ट देते हुए पाते।"

यूरियेव और मैंने विचारों का ख़ूब आदान-प्रदान किया। उसने मुझे भोजन के लिए आमंत्रित किया और भोजन की मेज़ पर मुझसे बोला :

"कुरियाज को आप क्यों नहीं ले लेते?"

"किस लिए? इसके अलावा वह पहले से ही भरी है।"

"भरी कहां है? हम आपके एक सौ बीस व्यक्तियों के लिए जगह ख़ाली करा सकते हैं।"

"मुझे यह पसन्द नहीं। गंदा काम है। और आप लोग नाक में दम किए रहेंगे..."

"सो नहीं करेंगे। आप हमसे इतना डरते क्यों हो? हम आपको पूरी छूट देंगे, जो चाहो–करो। कुरियाज की स्थिति भयावह है। ज़रा सोचिए तो, ठीक राजधानी की बग़ल में लुटेरों के ऐसे अड्डे का होना कितना भयानक है। आपने मेरी रिपोर्ट सुनी है। वे सड़क पर लोगों को लूटते हैं, चार महीने के भीतर ख़ुद कोलोनी में अठारह हज़ार रूबल की लागत का माल साफ़ कर दिया गया है।"

"फिर तो सारे कर्मचारियों को वहां से निकालना होगा।"

"ओह, नहीं... कुछ लोग तो वहां बहुत शानदार हैं।"

"ऐसे मामलों में मैं पूर्ण सफ़ाई के पक्ष में हूं।"

"अच्छी बात है उन्हें निकाल देना!"

"नहीं, नहीं। हम कुरियाज नहीं जाएंगे।"

"लेकिन आपने उसे देखा तक तो है नहीं।

"नहीं, मैंने नहीं देखा।"

"तो मेरी सुनो, कल तक रुको, हम ख़लाबूदा को अपने साथ लेंगे, और चलकर उसे देख आएंगे।"

मैं तैयार हो गया। अगले दिन हम तीनों गाड़ी में कुरियाज पहुंचे। मेरे मन में ज़रा भी सन्देह नहीं था कि वहां जाने का अर्थ अपनी कोलोनी को क़ब्रिस्तान के हवाले करना है।

सिदोर कारपोविच ख़लाबूदा, बच्चों की सहायता कमेटी का अध्यक्ष, हमारे साथ चला। ईमानदारी के साथ वह अपने विभाग का प्रशासन करता था जो उन दिनों दयनीय, आधे खंडहर, अनाथालयों और कोलोनियों, खाद्य की दुकानों, सिनेमाओं, बेंत के फ़र्नीचर के

स्टोरों, आमोद-प्रमोद के बाग़ों, दांव और मुनीमी के दफ़्तरों का पिटारा था। सिदोर कारपोविच कीड़ों के बीच – सौदागरों, एजेण्टों, जुआरियों, छलियों, बदमाशों, ठगों और जालसाज़ों के बीच – कसमसा रहा था। मैं अपने समूचे हृदय से चाहता था कि कीड़ा-मार ज़हर की एक बड़ी-सी बोतल उसे भेंट की जाए। दुनिया-भर के मुलाहिज़ों और चारों ओर से आनेवाले आर्थिक, शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक तथा अन्य सुझावों ने उसे बहुत पहले ही जर्जर कर दिया था। यह समझने की सारी आशा बहुत पहले ही दम तोड़ चुकी थी कि उसकी कोलोनियों में ग़रीबी क्यों है, क्यों वे सामूहिक पलायनों, चोरियों और गुण्डागर्दियों का शिकार रहती हैं। अब वह वास्तविकता के आगे माथा नवाए था। उसे गहरा विश्वास हो गया था कि लावारिस बच्चा दुनिया-भर के घातक गुनाहों का पुतला होता है। उसकी पहलेवाली अच्छाइयों का अब कुछ शेष नहीं रहा था – सिवा अपनी उस आस्था के जो वह अच्छे भविष्य और रई की फ़सल में रखता था।

इस आखिरी विशेषता का मुझे बाद में, आगे चलकर, पता चला। लेकिन इस समय, मोटर में बैठे हुए मैं उसके उद्‌गारों को सुन रहा था – बिना ज़रा-से भी वहम या गुमान के।

"लोगों के पास रई ज़रूर होनी चाहिए। जब तक लोगों के पास रई है, तब तक किसी चीज़ का खटका नहीं। आख़िर उसे गोगोल की पुस्तकें पढ़ाने से क्या फ़ायदा, जबकि उसके पास खाने के लिए रोटी नहीं है? उसे रई दो और उसके हाथ में पोथी थमाओ... और ये भी लुटेरे कहीं के – चोरी कर सकते हैं, लेकिन रई नहीं बो सकते।"

"गए-गुज़रे?"

"कौन? वे? बस, देखने लायक़। हमेशा मेरे पास आ धमकते हैं – 'सिदोर कारपोविच, हमें पांच रूबल दे दीजिए न, – सिगरेट के लिए मरे जा रहे हैं'। बेशक मैं उन्हें दे डालता हूं, और एक सप्ताह बाद वे फिर आ धमकते हैं – 'सिदोर कारपोविच, हमें पांच रूबल दे दीजिए।' – 'मैंने तुम्हें पांच रूबल दिए तो थे' मैं कहता हूं। 'वे तो सिगरेटों के लिए थे,' वे कहते हैं। 'अब कुछ वोद्‌का के लिए दे दीजिए।'"

तीन-चार मील तक एकरस, रेतीली सड़क को पार करने के बाद

हम एक नीची पहाड़ी पर चढ़े और मठ के ढहते हुए फाटक में से होकर भीतर पहुंचे। वृत्ताकार सहन के मध्य में विकट, प्राचीन लेकिन आकारहीन पिण्ड की भांति एक गिरजाघर खड़ा था। उसके पीछे एक तिमंज़िली इमारत थी और उसके इर्द-गिर्द, जर्जरित ओसारों से टिके, लम्बे नीचे प्रकोष्ठ थे। थोड़ा एक तरफ़ हटकर, एक गहरे ऊंचे टीले के छोर पर, अधूरी अवस्था में लकड़ी की एक दोमंज़िला सराय थी। विभिन्न कोटरों तथा कोनों में छोटे-छोटे घर, सायबान और रसोईघर दुबके थे। पता नहीं किन-किन चीज़ों को जोड़-तोड़कर यह सराय खड़ी कर दी गई थी। पहली चीज़ जिसकी ओर ध्यान गया वह कोलोनी में व्याप्त सड़ांध थी। पेशाबघरों, गोभी के शोरबे, गोबर और ... लोहबान की गंधों का एक जटिल मिश्रण। गिरजे में से गाने की आवाज़ आ रही थी और उसकी पैड़ियों पर कुछ बदनुमा, जर्जर, वृद्ध स्त्रियां बैठी थीं। बहुत सम्भव है कि वे उन ख़ुशहाल दिनों की याद में डूबी थीं जब कोई-न-कोई ख़ैरात देनेवाला मिल जाता था। लेकिन कोलोनीवासी कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे थे।

मैले-कुचैले, जीर्ण-शीर्ण-से मैनेजर ने उदास भाव से हमारी गाड़ी पर नज़र डाली, उसके मडगार्ड को थपथपाया और हमें कोलोनी में लिवा ले चला। यह पूर्णतया स्पष्ट था कि वह उसे दिखाने का इतना अधिक नहीं जितना कि आलोचना के लिए उसे बेनक़ाब करने का अभ्यस्त था और उसके दुःखों की गाथा जैसे उसके लिए ख़ूब जानी-पहचानी चीज़ थी।

"यह पहले समूह के शयनागार हैं," उसने एक जगह के पास से गुज़रते हुए कहा जिसमें पहले कभी दरवाज़ा रहा होगा, लेकिन अब चौपट पड़ा था – चूल तक ग़ायब थी। वैसी ही एक दूसरी देहली को हमने पार किया और बाईं ओर एक गलियारे में मुड़ गए जो बावजूद दमघोट होने के उतना ही ठंडा था जितना कि बाहर। दीवारों के सहारे हवा से उड़कर आए हिम-कणों के ढेर, जिन पर धूल चढ़ गई थी, इसका सबूत दे रहे थे।

"क्या यहां... दरवाज़े नहीं हैं?" मैंने पूछा।

मैंनेजर ने आगे बढ़ते हुए सप्रयास प्रदर्शित किया कि वह मुसकराना एकदम नहीं भूला है तभी यूरियेव ने सस्वर कहा:

"एक अर्सा हुआ उन्हें जला दिया गया। इतना ही नहीं – अब वे फ़र्श को उखाड़कर उसे जला रहे हैं। तहख़ानों की छाजन और यहां तक कि कुछ गाड़ियों को भी उन्होंने जला डाला है।"

"क्या उनके पास लकड़ी नहीं है?"

"ख़ुदा जाने कि उनके पास लकड़ी क्यों नहीं है! उन्हें लकड़ी के लिए धन दिया गया था।"

"बहुत सम्भव है कि उनके पास लकड़ी हो," अपनी नाक साफ़ करते हुए ख़लाबूदा ने कहा। "लेकिन उसे चीरे और काटे कौन, और किराये पर किसी को लाने के लिए उनके पास धन नहीं है। उनके पास लकड़ी है, सूअर कहीं के... आप जानो, कोलोनी के लोग लुटेरे हैं, सच, लुटेरे हैं वे!"

आख़िर हम एक वास्तविक दरवाज़े के पास पहुंचे जो बंद था। यह एक शयनागार का दरवाज़ा था। ख़लाबूदा ने उसपर ठोकर मारी। वह फ़ौरन निचली चूल पर झूल गया और हमारे सिरों पर गिरने की धमकी देने लगा। ख़लाबूदा ने हंसते हुए उसे अपने हाथों पर रोका।

"अरे, अरे, यह क्या, शैतान!" उसने कहा। "तुम्हारे इन तुच्छ छल-छन्दों को मैं जानता हूं..."

हमने शयनागार में प्रवेश किया। गंदे और टूटे पलंगों पर, आकारविहीन चिथड़ों के ढेरों पर लावारिस बालक बैठे थे। ठण्ड से बचने के लिए उन्होंने ऐसे ही चिथड़ों को ओढ़ भी रखा था। जीर्ण-शीर्ण भट्ठी की बग़ल में दो लड़के एक तख़्ते की छेपटियां उतार रहे थे जिस पर हाल ही में पीला रोग़न किया गया था। कोनों में, यहां तक कि बिस्तरों के बीच की जगहों में भी, गंदगी छितरी थी। यहां भी सहन में व्याप्त गंध मौजूद थी – सिर्फ़ लोबान की गंध को छोड़कर।

उनकी आंखें हमारा अनुसरण कर रही थीं, लेकिन सिर मोड़कर किसी ने हमारी ओर नहीं देखा। सभी लावारिस लड़के सोलह वर्ष से ऊपर के थे।

"क्या ये सबसे बड़े लड़के हैं?" मैंने पूछा।

"हां, यह समूह नम्बर एक है – बड़े लड़कों का," मैनेजर ने विनीत भाव से समझाया।

दूर के एक कोने से गहरी आवाज़ में कोई वोल उठा :

"इनकी बातों का यक़ीन न करना। ये सब के सब झूठों के सरदार हैं।"

एक अन्य कोने से मुक्त लहजे में, ज़रा-सा भी वल न देते हुए किसी ने कहा :

"आपको दिखाएंगे ... दिखाने के लिए यहां क्या है? उन चीज़ों को वे आपको क्यों नहीं दिखाते जिन्हें इन्होंने चुराकर रख छोड़ा है?"

इन उद्गारों के प्रति हमने कोई ध्यान नहीं दिया। यूरियेव केवल लाल हो गया और छिपी नज़र से उसने मेरी ओर देखा।

हम बाहर गलियारे में निकल आए।

"इस इमारत में छः शयनागार है," मैनेजर ने कहा। "क्या आप उन्हें देखना चाहेंगे?"

"मुझे वर्कशॉप दिखाइए," मैंने कहा।

ख़लाबूदा सजग हो उठा, और कुछ ख़रादों की सफल ख़रीद को लेकर उसने एक लम्बी गाथा सुनानी शुरू कर दी।

एक बार फिर हम बाहर सहन में निकल आए। एक छोटा-सा लड़का अपनी जाकेट में दुबका-सिमटा हमारी दिशा में आ रहा था—एक ढूह से दूसरे ढूह पर कूदता इस बात की कोशिश करता हुआ कि उसके नंगे, काले पड़े पांव बर्फ़ की परतों पर न पड़े। अन्य सब से अपने को पीछे रखते हुए मैंने उसे रोका।

"तुम कहां से आ रहे हो, बच्चे?"

वह रुका, और उसने अपना चेहरा उठाया।

"मैं यह मालूम करने गया था कि वे हमें भेज रहे हैं या नहीं।"

"कहां?"

"कहते हैं कि हमें कहीं भेजा जाएगा।"

"क्या तुम्हें यहां अच्छा नहीं लगता?"

"हम यहां नहीं रह सकते," उदास से उस नन्हे बालक ने जाकेट के छोर से अपने कान को रगड़ते हुए धीमे से कहा। "यहां हम जाम होकर मर जाएंगे ... इसके अलावा वे हमें पीटते हैं ..."

"कौन पीटता है तुम्हें?"

"सब कोई।"

वह एक सजग लड़का था और प्रत्यक्षत: सड़कों के अनुभव से अनभिज्ञ मालूम होता था। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और नीलवर्ण थीं, सड़कों पर सीखी चेष्टाओं ने उन्हें विकृत नहीं किया था। अगर उसे नहलाया-धुलाया गया होता तो वह एक बहुत ही प्यारा बच्चा नज़र आता।

"वे तुम्हें किस लिए पीटते हैं?"

"किसी भी चीज़ के लिए। अगर तुम उनके मन की कोई चीज़ उन्हें न दो। वे हमारा खाना हमसे छीन लेते हैं। हमारे साथी, एक अर्से से बिना खाने के रह रहे हैं। कभी-कभी, वे रोटी तक छीन ले जाते हैं... या उस समय जब वे कोई चीज़ चुराने के लिए कहें और तुम चोरी न करो... क्या आप जानते हो कि हमें भेजा जानेवाला है?"

"मैं नहीं जानता, बेटे।"

"कहते हैं कि जल्दी गर्मियां शुरू हो जाएंगी..."

"क्यों, गर्मियों में तुम क्या करोगे?"

"चल दूँगा..."

वे मुझे वर्कशॉपों के लिए पुकार रहे थे। इस नन्हे बालक को, बिना उसकी कोई मदद किए, छोड़ना मेरे लिए असम्भव था। लेकिन वह एक के बाद दूसरे ढूह पर फुदकता चल दिया, शयनागार की दिशा में। प्रत्यक्षत: बाहर सें वहां कुछ ज़्यादा गरमाई थी।

आख़िर हम वर्कशॉपों को नहीं देख सके—कुंजियां जाने किस रहस्यमय व्यक्ति के पास थीं, और बहुत खोज करने पर भी मैनेजर उस रहस्य का पता नहीं लगा सका। खिड़कियों में से झांककर हमने अपने आपको सन्तुष्ट किया। पंचिंग मशीनें, लकड़ी काटने-छीलने के यंत्र, दो टर्निंग लेथ, कुल मिलाकर बारह अदद हमारी नज़र में आए। मोची और दर्ज़ीघर, शिक्षा विज्ञान के दो परम्परागत चिन्ह पृथक इमारतों में स्थित थे।

"क्या आज यहां छुट्टी है?" मैंने पूछा।

मैनेजर ने जवाब नहीं दिया। यूरियेव ने एक बार फिर व्याख्या करने का कठिन काम अपने हाथों में लिया:

"आप आश्चर्य में डालते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच। अब तक आपको हर चीज़ समझ लेनी चाहिए थी। यहां कोई भी काम नहीं करता।

यह स्थिति है यहाँ की और इसके अलावा औज़ार चुरा लिए गए हैं, न यहां कोई सामग्री है न कोई स्फूर्ति और न कोई आर्डर – कुछ भी नहीं है। और फिर, इनमें कोई यह नहीं जानता कि काम कैसे किया जाए।"

कोलोनी का अपना बिजलीघर भी था, जिसके बारे में ख़लाबूदा न इतने गर्व से अभिमान प्रकट किया था, काम नहीं कर रहा था – उसकी कोई चीज़ टूट गई थी।

"ठीक – और स्कूल?"

इस सवाल का ख़ुद मैनेजर ने जवाब दिया:

"स्कूल तो है," उसने कहा। "लेकिन... हम अन्य झंझटों में फंसे रहते हैं..."

ख़लाबूदा हमें बराबर खेतों में चलने के लिए प्रेरित कर रहा था। जब हम कई फ़ुट मोटी दीवारों से घिरे वृत्त से निकलकर बाहर आए तो एक तलहटी पर हमारी नज़र पड़ी जहां किसी ज़माने में ताल रहा होगा। उसके दूसरी ओर जंगल तक खेतों का सिलसिला फैला था, खेतों पर बर्फ़ की एक महीन परत बिछी थी। ख़लाबूदा ने नेपोलियनी अन्दाज़ से अपनी बांह को फैलाया और विजेता की भांति चहक उठा:

"एक सौ बीस देस्यतीना! क़ारूं का ख़ज़ाना!"

"क्या जाड़ों की फ़सलें बोई जा चुकी हैं?" मैंने अनजान-सी मुद्रा में पूछा।

"जाड़ों की फ़सलें?" ख़लाबूदा ख़ुशी से चहका। "तीस देस्यतीना रई, समझो कि सौ पूड प्रति देस्यतीना – अकेले रई तीन हज़ार पूड! रोटियों का उन्हें कोई टोटा नहीं होगा। और रई भी कैसी! अगर लोग रई बोएं, तो फिर और किसी चीज़ की उन्हें जरूरत न रहे। गेहूं की भला क्या बिसात? रई की रोटी – आप जानो, जर्मन इसे नहीं पचा सकते, फ्रेन्च भी इसके सामने हाथ जोड़ते हैं – लेकिन हमारे लोग, जब तक उनके पास रई की रोटी..."

अब हम लौटकर अपनी कार के पास आ गए थे, लेकिन ख़लाबूदा अभी भी अपने रई-पुराण का बखान किए जा रहा था। शुरू में तो हम इससे झुंझलाए, लेकिन कुछ देर बाद वह दिलचस्प मालूम होने लगा – भला रई के बारे में इससे अधिक कोई और क्या कहेगा?

हम कार में सवार हुए और चल पड़े। एकाकी, उदास मैनेजर हमें जाता हुआ देखता रहा। ख़ोलोदनाया पहाड़ी तक हम ख़ामोश रहे। जब हम बाज़ार में से गुज़रे तो यूरियेव ने सड़क के लड़कों के एक दल की ओर सिर से इशारा करते हुए कहा :

"ये कुरियाज के लड़के हैं ... बोलो, क्या कहते हो – इन्हें अपने संरक्षण में लोगे ?"

"नहीं, मैं नहीं लूँगा।"

"आप डरते क्यों हैं ? गोर्की कोलोनी भी तो बाल-अपराधियों की ही एक संस्था है न ? कुछ भी हो, अखिल उक्राइनी कमीशन आपके पास दुनिया-भर की तलछट भेजता है। और हम आपको यहां नार्मल लड़के दे रहे हैं।"

ख़लाबूदा भी कार में बैठे हुए हंसे बिना नहीं रह सका।

"नार्मल ... भई ख़ूब !"

यूरियेव ने अपना सिलसिला जारी रखा :

"चलो, सीधे जुरिन्स्काया के पास चलें और बातें कर लें। बच्चों की सहायता कमेटी कोलोनी को शिक्षा की जन-कमिसरियट को सौंप देगी। ख़ारकोव ने आपके पास बाल-अपराधियों को भेजना उचित नहीं समझा और उसके पास अपनी कोई कोलोनी है नहीं। और यह हमारी अपनी कोलोनी हो जाएगी, और कोलोनी भी कैसी ! चार सौ बच्चे ! एक चीज़ होगी। वर्कशापें यहां की बुरी नहीं हैं ... सिदोर कारपोविच, क्या, आप कोलोनी दे देंगे ?"

ख़लाबूदा ने क्षण-भर सोचा।

"तीस देस्यतीना रई", उसने कहा। "इसका मतलब दो सौ चालीस पूड अनाज। और क्या आप दाम अदा करेंगे ? कोलोनी को भला हम क्यों न देना चाहेंगे ? हम दे डालेंगे।"

"चलो, जुरिन्स्काया के पास चलें," यूरियेव ने ज़ोर दिया। "कम उम्र के एक सौ बीस बच्चों को हम कहीं और स्थानान्तरित कर देंगे और आपके पास दो सौ अस्सी रहने देंगे। सरकारी तौर से वे बाल-अपराधी भले ही न हों, लेकिन कुरियाज में अपनी इस शिक्षा-दीक्षा के बाद वे बाल-अपराधियों से भी बदतर बन गए हैं।"

"इस जंजाल में भला मैं अपनी गरदन क्यों फंसाऊं ?" मैंने

16

यूरियेव से पूछा। "इसके अलावा, उस जगह को साफ़ करने की ज़रूरत है। इसमें बीस हज़ार रूबल से कम नहीं लगेंगे।"

"सिदोर कारपोविच आपको वह दे देंगे।"

ख़लाबूदा जैसे सोते से जगा: "बीस हज़ार रूबल? किस लिए?"

"ख़ून की क़ीमत," यूरियेव ने कहा, "अपराध की क़ीमत।"

"बीस हज़ार रूबल?" ख़लाबूदा ने आश्चर्य से दुहराया। "मरम्मतों, दरवाज़ों, औज़ारों, बिस्तरों, कपड़ों – हर चीज़ के लिए।"

ख़लाबूदा के होंठ लटक आए।

"बीस हज़ार!" वह चीख़ा। "बीस हज़ार में तो हम ख़ुद हर चीज़ कर सकते हैं।"

जुरिन्स्काया के यह भी यूरियेव ने अपना प्रचार जारी रखा। ल्युबोव सावेलियेवना चेहरे पर मुसकान लिए उसे सुनती रही, और कौतुहल से जब-तब मेरी ओर देखती रही।

"यह ज़रूरत से ज़्यादा महंगा प्रयोग होगा", उसने कहा। "हम गोर्की कोलोनी को इस तरह दांव पर नहीं लगा सकते। हमें केवल कुरियाज को बंद और लड़कों को और कोलोनियों में बांट देना चाहिए। इसके अलावा, कामरेड मकारेन्को कुरियाज जाएंगे नहीं।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा", मैंने कहा।

"तो क्या यह आख़िरी फ़ैसला है?" यूरियेव ने पूछा।

"मैं अपने कोलोनीवासियों से बात करूंगा, लेकिन मुझे निश्चित रूप से पता है कि वे इनकार करेंगे।"

ख़लाबूदा ने आंखें मिचमिचाईं।

"कौन इन्कार करेंगे?"

"कोलोनीवासी।"

"मतलब – आपके छात्र?"

"हां, वही।"

"वे यह सब क्या जाने?"

जुरिन्स्काया ने ख़लाबूदा की आस्तीन पर अपना हाथ रखा।

"सिदोर, प्यारे दादा," उसने कहा। "इस सब के बारे में वे तुमसे भी ज़्यादा जानते हैं। तुम्हारे कुरियाज को देखकर उनके चेहरे पर जो भाव प्रकट होंगे – काश, मैं उन्हें देख सकती।"

ख़लाबूदा का पारा चढ़ गया।

"जब देखो तब 'तुम्हारा कुरियाज' कहकर आप क्यों मेरे पीछे पड़ी रहती हैं? यह मेरा क्यों है? क्योंकि मैंने आपको पचास हज़ार रूबल दिए। एक इंजन, बारह ख़राद और शिक्षक तो आपके हैं... अब मैं क्या कर सकता हूं, अगर वे अपना धंधा नहीं जानते?"

शिक्षा क्षेत्र के इन कर्मचारियों को अपने घरेलू झगड़ों को सुलझाने के लिए मैंने वहीं छोड़ा और गाड़ी पकड़ने के लिए झटपट चल दिया। कराबानोव और ज़दोरोव मुझे स्टेशन पर विदा करने आए। कुरियाज के बारे में मेरी रिपोर्ट सुनकर उन्होंने अपनी आंखें रेल के डिब्बे के पहियों पर जमा लीं और चिन्ता में डूब गए। आख़िर कराबानोव ने कहा।

"दुनिया-भर के मैले को साफ़ करना गोर्कीआइटों के लिए कोई बहुत भारी गौरव का काम नहीं है, लेकिन कौन जानता है? इस पर सोचने की ज़रूरत है..."

"लेकिन हम पास ही होंगे–हम मदद करेंगे," ज़दोरोव ने अपनी दंतपंक्ति को झलकाते हुए कहा। "और क्या आप जानते हो, सेम्योन, हम जाएंगे और कल एक नज़र उसे देख आएंगे।"

कोलोनीवासियों की आम सभा ने इधर होनेवाली हमारी अन्य सभी सभाओं की भांति, सावधानी और गम्भीरता के साथ मेरी बातें सुनीं। और जब मैं अपनी रिपोर्ट दे रहा था तो जिज्ञासा के साथ न केवल सभा की ही, बल्कि ख़ुद अपने हृदय की भी मैं टोह ले रहा था। अचानक मैंने अनुभव किया जैसे मैं उदास भाव से मुसकराना चाह रहा हूं। यह क्या? उस समय क्या मैं बच्चा था जब चार महीने पहले अपनी कल्पना में ज़ापोरोज्ये में खड़े किए गए महलों को लेकर कोलोनीवासियों के साथ आनन्दातिरेक से मैं छलछला उठा था? क्या मैं अब बड़ा हो गया था या मेरा सारा उत्साह एकदम मारा गया था? मुझे लगा कि मेरे शब्दों में, मेरी आवाज़ के लहजे में, मेरे चेहरे की भाव-भंगिमा में, निश्चय ही त्रासदायक विश्वासहीनता झलक रही थी। पूरे एक साल से हम प्रशस्त, आलोकपूर्ण विस्तारों के लिए जी-जान एक किए थे। क्या हमारी आकांक्षाओं की परिणति कुरियाज जैसी बेहूदा, सड़ी हुई जगह के रूप में होने को थी? यह कैसे सम्भव हुआ कि मैं कोलोनीवासियों के साथ इस हद तक असह्य भविष्य के बारे

में विचार करने लगा? सो भी ख़ुद अपनी स्वतंत्र इच्छा से। कुरियाज में था क्या जो हमें आकर्षित करता? किन लाभों के लिए हम अपने फूलों, अपनी कोलोमाक नदी, चिकने काठ के अपने फ़र्शों और उस जागीर को तिलांजली दें जिसमें जान फूंककर ख़ुद हमने सजीव बनाया था?

पर यह सब होने पर भी उसमें एक कवित्व था, कठिनता और सचाई से भरा, जिसमें एक भी आह्लादपूर्ण शब्द की गुंजाइश नहीं थी, लेकिन जिसमें – और यह ख़ुद मेरे लिए भी आश्चर्यजनक था – एक कठोर, ऊंची चुनौती को मैं देख सकता था, और – कहीं बहुत दूर – एक सहमा-सा आनन्द झिलमिलाता हुआ नज़र आ रहा था।

कोलोनीवासी रह-रहकर, अपनी हंसी से मेरी गाथा को रोकते – ठीक उन जगहों पर जहां मैं आशा करता था कि वे निराशा का अनुभव करेंगे। फिर, अपनी हंसी का मुंह बन्द करते हुए, सवालों की वे मुझ पर बौछार करतें, और मेरे जवाब पाने पर और भी ज़ोरों से हंसने लगते। उनकी यह हंसी आशा आह्लाद की हंसी नहीं थी – यह उपहास की हंसी थी।

"वे चालीस शिक्षक क्या करते हैं?"

"क्या जाने क्या करते हैं।"

हंसी।

"अन्तोन सेम्योनोविच, क्या आपने वहां किसी का जबड़ा ढीला नहीं किया? मुझसे तो कभी न रहा जाता, यह मैं जानता हूं।"

हंसी।

"क्या वहां भोजन करने का कमरा है?"

"है, लेकिन वहां बच्चे सब नंगे-पांव हैं सो शोरबे के बरतनों को शायनागारों में ले जाया जाता है और वे वहीं खाते हैं।"

हंसी।

"उन्हें कौन वहां ले जाता है?"

"यह तो मैंने नहीं देखा। शायद, ख़ुद लड़के ले जाते हों..."

"बारी-बारी से – या कैसे?"

"बारी-बारी से, मेरी समझ में।"

"ओह। तब तो वे संगठन करना भी जानते हैं।"

हंसी।

"क्या वहां कोमसोमोल संगठन है ?"

यहां मेरे जवाब का इन्तज़ार किए बिना ही हंसी क़हक़हों में गूंज उठती है।

यह सब होने पर भी, उस समय जब मैंने अपनी रिपोर्ट को ख़त्म किया, गम्भीर व्यग्रता के साथ सब की आंखें मुझ पर टिक गईं।

"आपकी क्या राय है ?" किसी ने पूछा।

"मैं वहीं निश्चय करूंगा जो आप ..."

लापोत ने ध्यान से मुझे देखा। प्रत्यक्ष था कि मेरी भाव-भंगिमा से वह कुछ पता नहीं लगा सके।

"बस, बहुत हुआ, अब – मुंह खोलो। हां तो ? अरे, तुम कुछ कहते क्यों नहीं ? मैं जानना चाहूंगा कि तुम्हारी यह ख़ामोशी तुम्हें कहां ले जाकर पटकनेवाली है ?"

देनिस कुदलाती ने अपना हाथ उठाया।

"ओह, देनिस। तुम जो कहना चाहते हो वह दिलचस्प है।"

देनिस ने अपनी जातीय आदत के अनुसार अपने सिर के पिछले भाग को खुजलाया, लेकिन याद करके कि उसकी इस कमज़ोरी का कोलोनीवासी हमेशा मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं, उसने अनचाहे ही अपने हाथ को नीचे गिर जाने दिया। लेकिन लड़के जिन्होंने उसकी इस हरकत को ताड़ लिया था, हंस पड़े।

"हां तो, सच पूछो तो मुझे ऐसी कोई ख़ास बात नहीं कहनी है। बेशक, यह ख़ारकोव के ज़्यादा नज़दीक है, यह सच है ... लेकिन इस तरह की चीज़ को लेना ... हमारे पास अब कौन है ? सब कोई तो रबफ़ाक में चले गए हैं।"

उसने अपना सिर हिलाया, जैसे वह मक्खी सटक गया हो।

"सच पूछो तो, कुरियाज शायद इस योग्य नहीं कि उसकी चर्चा तक की जाए। हम वहां क्यों अपनी जान फंसाएं ? और फिर, यह याद रखो – वे दो सो अस्सी हैं, और हम एक सौ बीस, हम ज़्यादातर नये हैं, तोस्का अब एक कमाण्डर है, नताशा कमाण्डर है, और पेरेपेल्यात्चेन्को, और, सुखोइवान, और गलातेन्को .."

"गलातेन्को क्या ... क्या कहा उसके बारे में ?" एक उनींदी भुनभुनाती आवाज़ ने कहा – "जहां कहीं गड़बड़ हो, बस गलातेन्को !"

"मुंह बन्द करो तुम!" लापोत ने कहा।

"मैं क्यों मुंह बन्द करूं? अन्तोन सेम्योनोविच ने हमें बताया कि वहां के लोग कैसे हैं। और मैं – क्या मैं काम नहीं करता?"

"अच्छा तो फिर," देनिस कहता गया। "मुझे माफ़ करना – लेकिन हमारे थोबड़ों की ख़ैर नहीं, यह तुम देख लेना।"

मित्का जेवेली ने अपना सिर उठाया:

"ऐ, धीमे से, थोबड़ेवालो!"

"क्यों, क्या करोगे तुम?"

"इसकी फ़िक्र छोड़ो कि हम क्या करेंगे।"

कुदलाती अपनी जगह पर बैठ गया। इवान इवानोविच बोलने के लिए खड़ा हुआ।

"साथी कोलोनीवासियों, मेरा कहीं जाने का इरादा नहीं है। तुम कह सकते हो कि मैं बाहर रहकर चीज़ों को देखता हूं, और उन्हें ज़्यादा साफ़ तौर से देखना जानता हूं। कुरियाज क्यों जाना चाहिए? वे हमारे सिर पर एकदम गए-बीते तीन सौ लड़कों को थोप देंगे – सो भी ऐसे-वैसे नहीं, ख़ारकोव के लड़कों को..."

"और क्या वे ख़ारकोव के लड़कों को यहां नहीं भेजते?" लापोत ने पूछा।

"वे भेजते हैं। लेकिन ज़रा सोचो तो – पूरे तीन सौ! और अन्तोन सेम्योनोविच कहते हैं कि लड़के काफ़ी बड़े हैं। एक बात और – तुम उनके पास जाओगे, जब कि वे अपने ही घर में होंगे। उन्होंने अठारह हज़ार मूल्य के अकेले कपड़े ही साफ़ कर दिए हैं, ज़रा सोचो तो, तुम्हारा वे क्या कुछ न कर डालेंगे।"

"हम भून डालेंगे!" किसी ने चिल्लाकर कहा।

"वे हमें भूनने की भी परेशानी नहीं उठाएंगे – कच्चा ही खा जाएंगे!"

"और वे कई लड़कों को भी चोरी में ख़ूब पक्का कर देंगे," इवान इवानोविच कहता गया। "क्या हमारे यहां उस तरह का कोई है?"

"ओह, ढेर-से हैं," कुदलाती ने कहा। "हमारे यहां नन्हे बच्चों में कोई चालीस आवारा हैं जो केवल इसलिए चोरी नहीं करते कि वे डरते हैं।"

"तो देखा तुमने।" इवान इवानोविच ने खुशी से हुमकते हुए कहा। "अब हिसाब लगाकर देखो। तुम लोग अस्सी होगे, लड़कियों और नन्हे बच्चों को मिलाकर, और वे तीन सौ बीस ... और यह सब किस लिए? भला, गोर्की कोलोनी को क्यों इस खड्ड में पटका जाए? तुम अपना नाश करने जा रहे हो, अन्तोन सेम्योनोविच!"

विजयी अन्दाज़ से अपने चारों ओर देखते हुए इवान इवानोविच बैठ गया। कोलोनीवासी जैसे मर्यादित अनुमोदन के अन्दाज़ में भुनभुनाए, लेकिन ध्वनि में ऐसी कुछ निश्चयात्मकता नहीं थी।

कालीना इवानोविच, अपना वही पुराना लबादा पहने लेकिन दाढ़ी बनाए और सदा की भांति अपने आपको खूब संवारे, आम उत्साह के बीच बोलने के लिए खड़ा हुआ। कालीना इवानोविच कोलोनी से विलग होने के खयाल से दुखी था, और उसकी हल्की नीली आंखों में, जो आयु की अनिश्चित ज्योति से झिलमिला रही थीं, भारी मानवीय उदासी मैं देख सकता था।

"सो मामला यों है," कालीना इवानोविच ने सहूलियत के साथ कहना शुरू किया। "मैं भी तुम्हारे साथ नहीं जा रहा हूँ। मैं समझता हूं कि मैं भी बाहर का आदमी हूं, लेकिन मन से तुम्हारे साथ हूं। तुम कहां जाते हो, और जीवन तुम्हें कहां ले जाता है, ये दोनों अलग-थलग चीज़ें हैं। पिछले महीने तुमने कहा था – हम इंग्लैण्ड को मक्खन भेजेंगे। अब मुझे, इस बूढ़े को, तुम यह बताओ कि इन हरामियों के लिए हम क्यों काम करें? मैंने देखा कि तुम सब के सब कितने विह्वल थे – 'चलो चलें, चलो चलें! इससे क्या अगर तुम चले जाते? बेशक, सिद्धान्त रूप से तुम ज़ापोरोज्ये में होते, लेकिन अमल में तुम केवल गायों को चराते होते, और बस। इससे पहले कि तुम्हारा मक्खन इंग्लैंड पहुंचता, तुम्हें कितना पसीना बहाना पड़ता – कभी यह भी तुमने सोचा? चराना, गोबर की ढुलाई करना, गायों को नहलाना-धुलाना और इसपर भी कहीं उन हरामियों को तुम्हारा मक्खन पसंद न आया तो? तुमने यह सब कभी नहीं सोचा, बुद्धू कहीं के। बस, एक ही धुन थी – 'चलो चलें, चलो चलें!' और यह अच्छा हुआ कि तुम बिलकुल नहीं गए – उन हरामियों को सूखी रोटी ही खाने दो। और अब कुरियाज का नम्बर आता है। तुम मिलकर बैठते और सोचते हो। लेकिन इसमें

सोचने की क्या बात है? तुम प्रगतिशील व्यक्ति हो, ज़रा देखो तो – तुम्हारे तीन सौ भाई धूल में मिल रहे हैं, – जैसे कि तुम ख़ुद हो। अन्तोन सेम्योनोविच ने हमें उनके बारे में बताया, और तुम लगे हंसने लेकिन इसमें हंसने की ऐसी क्या बात है? सोवियत सरकार इस बात से कैसे अपना मेल बैठा सकती है कि ठीक राजधानी के बीच, ख़ार-कोव में ख़ुद ग्रिगोरी इवानोविच की ठीक नाक के नीचे चार सौ लुटेरे बढ़ें-पलें? और अब सोवियत सरकार तुम से कहती है – तुम आगे बढ़ो और काम करो, भला आदमी बनने में उन्हें मदद दो – तीन सौ लोग, ज़रा सोचो तो! और तुम पर निगाह रहेगी – किसी ऐरे-ग़ैरे नत्थू-ख़ैरे की नहीं – किसी लूका सेम्योनोविच की नहीं – बल्कि ख़ारकोव के समूचे सर्वहारा वर्ग की। और तुम इन्कार करते हो! अरे, अंग्रेज़ों के गले में लिना मक्खन अटकने दो। तुम अपनी गुलाब की झाड़ियों को नहीं छोड़ सकते। तुम डरते हो – कि हम इतने हैं, और वे इतने सारे हैं – हरामी कहीं के। इसके बारे में तुम क्या सोचते हो, कि अन्तोन सेम्योनोविच और मैंने, केवल हम दोनों ने, इस कोलोनी को शुरू किया था? क्या हमने आम सभा बुलाई थी भाषण किए थे? यह तुम्हें वोलोख़ोव और तारानेत्स, और गुद बताएंगे कि क्या हम उनसे – हरामी कहीं के – डरते थे? यह एक राजकीय काम होगा, ऐसा जिसकी सोवियत सरकार को ज़रूरत है। मैं तुम से कहता हूं – जाओ, बस, और कुछ नहीं। मक्सिम गोर्की कहेंगे – देखो, ये हैं मेरे गोर्कीआइट – हरामी कहीं के – भय से दुम दबाकर नहीं भागे!"

जितनी अधिक देर तक कालीना इवानोविच बोला, उतना ही अधिक लाल उसके गाल रंगते गए, और उतना ही अधिक को-लोनीवासियों की आंखें दमकीं। फ़र्श पर बैठे लोगों में से कितने ही हमारे और निकट खिसक आए। कुछ ने अपने पासवालों के कंधों पर अपनी ठोड़ियां टिका लीं और नज़र जमाकर देखने लगे – कालीना इवानोविच के चेहरे पर नहीं, बल्कि कहीं दूर, किसी भावी मुहिम की ओर। और जब कालीना इवानोविच ने गोर्की का उल्लेख किया, तब ऐसा मालूम हुआ जैसे कोलोनीवासियों की जोश भरी आंखों से अब लपटें निकलना चाहती हों। लड़के किलकार उठे, वे कूके, झूमे, और तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। लेकिन तालियां बजाने का समय

नहीं था। मित्का जेवेली उन लोगों के बीच खड़ा था जो फ़र्श पर बैठे थे। वह पिछली पांतों पर चिल्ला रहा था – प्रत्यक्षत: वहां से प्रति-रोध किए जाने की आशंका से।

"हम जाएंगे, ज़रूर जाएंगे, हरामी कहीं के!"

लेकिन पीछे की पांतें भी, अपने चेहरों पर अत्यन्त दृढ़ता के भाव लिए, मित्का की दिशा में सभी रंगों की लपटें छोड़ रही थीं, और तब मित्का कालीना इवानोविच की ओर मुड़ा, जो लड़कों के उमड़ते हुए समूह से घिरा था। इन लड़कों के लिए इस क्षण किलकारियां मारने के सिवा और कुछ कर सकना सम्भव नहीं था।

"कालीना इवानोविच, जब मामला ऐसा है तो क्या तुम भी हमारे साथ नहीं चलोगे?"

कालीना इवानोविच वेदना के साथ अपने पाइप को भरते हुए मुसकराया।

लापोत एक भाषण दे रहा था:

"वह देखो, वहां क्या लिखा है, – पढ़ो!"

सब चिल्लाए, एक आवाज़ में: "भौंकना मना!"

"हां तो – इसे एक बार फिर पढ़ो!"

लापोत की बंधी हुई मुट्ठी नीचे आ गई, और सब ने दोहराया, कड़ी आवाज़ में, गूंज के साथ:

"भौंकना मना!"

"और तुम भौंकते हो। गणितज्ञ कहीं के! गिनती करते हो – अस्सी और तीन सौ बीस। इस तरह कहीं गिना जाता है! जब हमने ख़ारकोव के चालीस लड़कों को लिया था, तो क्या हमने उनकी गिनती की थी? किधर हैं वे?"

"यहां हैं, यहां हैं हम!" नन्हे बच्चों ने चिल्लाकर कहा।

"हां तो, फिर?"

छोटे लड़के चिल्लाए:

"बढ़िया!"

"तो फिर यह गिनती किस लिए? अगर मैं इवान इवानोविच होता तो इस तरह गिनता – हमारे यहां जूंएं नहीं हैं, और उनके पास दस हज़ार हैं। सो जहां हैं, वहीं भले।"

ख़ुशी से उमड़ती सभा ने इवान इवानोविच की ओर देखा, जो शर्म से लाल हो गया था।

"तो निचोड़ यह है," लापोत ने कहा – "कि हमारे पक्ष में गोर्की कोलोनी है, और उनके पक्ष मे? कोई नहीं।"

लापोत ने अपना भाषण ख़त्म किया। कोलोनीवासी चिल्लाए –

"ठीक हम जाएंगे! सौ बात की एक बात। अन्तोन सेम्योनोविच शिक्षा की जन-कमिसरियट को लिखें!"

"ठीक कहते हो," कुदलाती ने कहा। "तो, हम जाएंगे। लेकिन इसके लिए हमें अपने दिमाग़ से काम लेना चाहिए। कल पहली मार्च है। हम एक क्षण भी नष्ट नहीं कर सकते। हमें लिखना नहीं, तार भेजना चाहिए। नहीं तो हम साग-भाजी नहीं उगा सकेंगे। और एक बात और – हम बिना धन के नहीं जा सकते। बीस हज़ार, या जो कुछ भी वह हो, लेकिन धन होना चाहिए।"

"तो क्या वोट ली जाए?" लापोत ने मुझसे सलाह लेने का प्रयास करते हुए पूछा।

"अन्तोन सोम्योनोविच भी हमें बताएं कि वह क्या सोचते हैं" – समूह में से आवाज़ें आईं।

"क्या तुम इतना भी नहीं देख सकते? लापोत ने कहा। "फिर भी, क़ायदे की ख़ातिर, हमें यह करना चाहिए। अन्तोन सेम्योनोविच अब बोलेंगे।"

मैं सभा के सामने खड़ा हुआ और संक्षेप में मैंने कहा:

"गोर्की कोलोनी ज़िन्दाबाद!"

आध घण्टे बाद मित्का बोगोयावलेन्स्की, जिसे हाल में ही मुखिया साईस और दूसरी टुकड़ी के कमाण्डर के पद पर नियुक्त गया था, घोड़े के पीठ पर शहर के लिए रवाना हो गया।

वह अपने साथ एक तार लेता गया:

"ख़ारकोव शिक्षा की जन-कमिसरियट, जुरिन्स्काया।

सविनय प्रार्थना है कि जितनी जल्दी हो हमें कुरियाज को दे दिया जाए ताकि बोवाई का समय रहते वहां पहुंच जाएं। तख़्मीना भेज देंगे। कोलोनीवासियों की आम सभा।

मकारेन्को।"

१८. अनुसंधान

जुरिन्स्काया ने अगले ही दिन मुझे तार द्वारा बुलाया। कोलोनीवासियों ने विश्वास के साथ तार को भारी महत्त्व प्रदान किया।

"देखा आपने, यह काम कैसे हो रहा है – किट-किटा-किट-किटा – एक तार के बाद दूसरा..."

लेकिन, जैसा कि प्रकट हुआ, चीज़ें बिना किसी ऐसी तड़ाक-फड़ाक के विकसित हुईं। हालांकि यह सभी सार्वभौमिक रूप से मानते थे कि कुरियाज को और अधिक सहन नहीं किया जा सकता। अगर और किसी लिए नहीं तो केवल इसी लिए कि आस-पास के बंगलों, गांवों और बस्तियों ने 'चोरों के इस अड्डे' को ख़त्म करने की सच्चे हृदय से विनय की थी। फिर भी कुछ लोग थे जो उसके लिए अड़ गए। सच पूछो तो जुरिन्स्काया और यूरियेव के सिवा अन्य कोई हमारी कोलोनी को बिना शर्त कुरियाज स्थानान्तरित नहीं करना चाहता था। केवल यूरियेव ही प्रस्तावित अभियान की अहमियत का वास्तव में क़ायल था, जुरिन्स्काया केवल इसलिए इस पर राज़ी हो गई थी कि उसका मुझ में विश्वास था।

"जो हो, मैं काफ़ी घबराहट का अनुभव कर रही हूँ, अन्तोन सेम्योनोविच," वह रह-रहकर कहती। "मैं डरती हूँ।"

ब्रेगेल स्थानान्तरण के पक्ष में थी, लेकिन उसने ऐसी शर्तों के सुझाव रखे जिन्हें मानना मेरे लिए सम्भव नहीं था। वह इस समूचे अभियान को कार्यान्वित करने के लिए तीन जनों की एक ख़ास कमेटी बनाना, नये समूह क्रमश: गोर्की परम्पराओं का अनुसरण करना और मेरी मदद करने के लिए ख़ारकोव से पचास कोमसोमोल सदस्यों को एक महीने के लिए वहां भेजना चाहती थी।

ख़लाबूदा, उन चार सौ बीस लोगों में से किसी एक के भी इशारे पर, जिनसे कि वह घिरा रहता था, बीस हज़ार रूबल की मदद देने की बात नहीं सुनता था, और केवल यही दोहरा सकता था –

"बीस हज़ार रूबल से हम ख़ुद उसका बन्दोबस्त कर सकते हैं।"

अप्रत्याशित दुश्मनों ने ट्रेड यूनियन से हम पर आक्रमण किया। क्ल्यामेर नाम का काले बालोंवाला एक जोशीला आदमी जो अपने

आपको जनता का मित्र कहता था, ख़ास तौर से ज़हर में बुझा था। मैं अभी तक नहीं जानता कि गोर्की कोलोनी से वह क्यों इतना चिढ़ा था, लेकिन जब कभी वह उसका उल्लेख करता, उसका चेहरा ग़ुस्से से विकृत हो जाता, थूक की वह पिचकारी छोड़ता और मेज़ पर घूंसा पटकता:

"जिसे देखो सुधारक बना है! यह मकारेन्को कौन है? ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी है जो हम इस या उस मकारेन्को के लिए क़ानून को तोड़ें, और मेहनतकश लोगों के हितों का उल्लंघन करें? गोर्की कोलोनी के बारे में ही हम क्या जानते हैं? उसे किसने देखा है? जुरिन्स्काया ने देखा है–तो फिर, इससे क्या? क्या जुरिन्स्काया हर चीज़ समझती है?"

मेरी जिन मांगों ने क्ल्यामोर को इतना अधिक झुंझला दिया था, वे ये थीं–

१. बिना किसी भी प्रकार की बहस के कुरियाज के सारे कर्मचारियों को अलग किया जाए।

२. गोर्की कोलोनी में शिक्षकों में संख्या पन्द्रह हो (जब कि को-टा चालीस समझा जाता था)।

३. शिक्षकों को चालीस नहीं, अस्सी रूबल प्रति मास दिया जाए।

४. स्टाफ़ का चुनाव ख़ुद मेरे द्वारा हो, ट्रेड यूनियन का आपत्ति उठाने का अधिकार क़ायम रहे।

इन विनम्र मांगों ने क्ल्यामेर को इतना चिढ़ा दिया कि वह क़रीब-क़रीब रो उठा।

मैं देखना चाहूंगा कि इस उद्धत चुनौती पर विचार तक करने का कोई कैसे साहस करता है। इसका प्रत्येक शब्द सोवियत क़ानून का उपहास करता है। उसे पन्द्रह शिक्षकों की दरकार है, सो पच्चीस को निकाल बाहर किया जाए। वह अपने शिक्षकों से बन्दी-गुलामों की भांति काम लेना चाहता है, और चालीस उसके मार्ग में बाधक होंगे..."

क्ल्यामेर के साथ मैं वादविवाद में नहीं पड़ा, मैं कुछ समझ भी नहीं पा रहा था कि असल में उसकी दलील क्या है।

कुल मिलाकर मैंने तर्क-वितर्कों से बाहर रहने का प्रयास किया। कारण, अपने हृदय में मैं सफलता के प्रति निश्चित नहीं था। और मैं

किसी को ऐसा ख़तरा उठाने के लिए बाध्य नहीं करना चाहता था जिसका वह ख़ुद अपने मन से अनुमोदन न कर सकता हो। सच पूछो तो मेरे पास केवल एक ही तर्क था – गोर्की कोलोनी। लेकिन कितने ही लोगों ने उसे नहीं देखा था, और उसके बारे में बताना मेरा काम नहीं था।

इतने अधिक व्यक्ति, अनुराग-विराग, और निजी सम्बन्ध कोलोनी के स्थानान्तरण के सवाल के साथ आ जुड़े थे कि मैं बहुत जल्दी जैसे अथाह जल में डूबने-उतराने लगा, और इस तथ्य ने कि मैं ख़ारकोव में कभी एक दिन से ज़्यादा नहीं रुका, कभी किसी सभा में शामिल होने का मुझे मौक़ा न मिला, चीज़ों को मेरे लिए और भी ज़्यादा कठिन बना दिया। फिर भी, कारण चाहे जो हो, अपने दुश्मनों की ईमानदारी में मुझे विश्वास नहीं था, और यह सन्देह किए बिना मैं नहीं रह सकता था कि उनके प्रकट तर्क अपनी ओट में बहुत ही भिन्न कारणों को छिपाए हैं।

शिक्षा की जन-कमिसरियट में वास्तव में गहरे आवेगपूर्ण मानवीय विश्वास से युक्त केवल एक प्राणी मुझे नज़र आया, जो मुझे अच्छा लगा। वह एक स्त्री थी, पर यौनविहीन मालूम होती थी: छोटा क़द, घोड़े जैसा चेहरा, क्षीण वक्ष और भीमाकार बेढंगी टांगें। वह अपने हाथों को बराबर लहरा रही थी, या तो कोई भाव जताने के लिए, या फिर अपने सीधे सन के रंग के बालों के गुच्छों को ठीक करने के लिए। हर कोई उसे कामरेड ज़ोया कहकर संबोधित कर रहा था। ब्रेगेल के दफ़्तर में वह अपना कुछ असर भी रखती मालूम होती थी।

कामरेड ज़ोया को जैसे मेरी शकल से चिढ़ थी, इसे वह छिपाकर नहीं रखती थी, न बात कहने के अत्यन्त तीव्र ढंग का इस्तेमाल करने से हिचकिचाती थी।

"तुम शिक्षाविद नहीं हो, मकारेन्को, तुम डंडाशाह हो। मैंने सुना है कि तुम पहले फ़ौजी कर्नल थे, और यह सच मालूम होता है। मैं समझ तक नहीं सकती कि तुम्हें लेकर लोग क्यों इतना हल्ला मचाते हैं। मैं तो तुम्हें बच्चों के पास तक न फटकने दूं।"

कामरेड ज़ोया का सुस्पष्ट राग-द्वेष मुझे अच्छा लगा, और उसे दिए गए अपने जवाबों में मैंने अपनी इस भावना को नहीं छिपाया –

"कामरेड ज़ोया, तुम बराबर मुझे प्रभावित कर रही हो। केवल, तुम जानो, मैं करनल कभी नहीं रहा।"

कामरेड ज़ोया को यक़ीन था कि कोलोनी का स्थानान्तरण विनाशकारी सिद्ध होगा। क़रीब-क़रीब चीख़ते हुए उसने ब्रेगेल की मेज़ पर अपना घूंसा मारा:

"तुम इसपर बहुत मुग्ध हो! मैं भी तो जानूं, ऐसा क्या जादू डाला है इस..." कहते हुए उसने मेरी ओर देखा।

"...इस कर्नल ने," गंभीरता के साथ मैंने उसके वाक्य को पूरा किया।

"हां, इस कर्नल ने... मैं तुम्हें बताती हूं कि इसका हश्र क्या होगा – हत्याकाण्ड। वह अपने एक सौ बीस लड़कों को लेकर वहां जाएगा, और हत्याकाण्ड होगा। बोलो, इस बारे में तुम क्या कहते हो, कामरेड मकारेन्को?"

"तुम्हारा तर्क मोहनेवाला है, लेकिन यह तो बताओ कि कौन किसकी हत्या करने जा रहा है?"

ब्रेगेल ने इस वाग्युद्ध पर ठंडा पानी छिड़कने का प्रयास किया –

"ज़ोया, तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए। वहां कोई हत्याकाण्ड क्यों होगा? और तुम, अन्तोन सेम्योनोविच, तुम भी हर चीज़ का मज़ाक़ उड़ाने लगते हो।"

हमारे इन झगड़ों और वाद-विवादों की भनक पार्टी के उच्चतम हल्कों तक पहुंचनी शुरू हो गई। मैं इससे ख़ुश था। मैं इससे भी ख़ुश था कि कुरियाज ने, भयानक रूप से सड़ना शुरू कर दिया था, और फ़ौरी तथा उग्र कार्रवाई करना ज़रूरी हो गया था। ख़ुद कुरियाज अब निर्णय की मांग कर रहा था, हालांकि उसके अपने शिक्षक विरोध करते कि हमारी कोलोनी को वहां स्थानान्तरित करने की यह सारी चर्चा ही कुरियाज के मनोबल को पूर्णतया ध्वस्त कर रही है।

ये शिक्षक अत्यन्त गोपनीय ढंग से लोगों से कहते फिरते कि कुरियाज के लड़के गोर्कीआइटों के स्वागत की तैयारी के लिए अपने छुरों को पैना रहे हैं। कामरेड ज़ोया ने इसे उगलते हुए कहा:

"यह बात है, देख रहे हो न?"

"देख रहा हूं," मैंने जवाब दिया। "सो अब हम जानते हैं कि

ये वे हैं जो हमारा गला काटने जा रहे हैं, न कि यह कि हम उनका गला काटने जा रहे हैं।"

"हां, अब हम जानते हैं... ज़रा चौकस रहना, वारवारा! हर चीज़ के लिए तुम ज़िम्मेदार ठहराई जाओगी। पहले कभी ऐसी बात सुनने में नहीं आई। लावारिसों के एक दल को दूसरे के ख़िलाफ़ भड़काना!"

आख़िर एक ऊंची संस्था के दफ़्तर में मुझे बुलाया गया।

एक सफ़ाचट आदमी ने काग़ज़ों के ऊपर से अपना सिर उठाया, और कहा:

"बैठो, कामरेड मकारेन्को।"

जुरिन्स्काया और क्ल्यामेर भी वहां उपस्थित थे।

मैं बैठ गया।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम और तुम्हारे छात्र कुरियाज की सड़ांध को रोकने में समर्थ हो सकेंगे?" सफ़ाचट आदमी ने निश्चल भाव से मुझसे पूछा।

निश्चय ही मैं कुछ पीला पड़ गया क्योंकि सच्चे हृदय से पूछे गए सवाल का मुझे झूठा जवाब देना था:

"हां, मैं यक़ीन करता हूं।"

सफ़ाचट आदमी ने स्थिर नज़र से मेरी ओर देखा, और कहता गया:

"अब एक विशुद्ध तकनीकी प्रश्न मुझे तुमसे पूछना है – कामरेड क्ल्यामेर, ध्यान रखो, सिद्धान्त का प्रश्न नहीं, – हां तो, भरसक संक्षेप में, मुझे यह बताओ कि तुम केवल पन्द्रह शिक्षक क्यों चाहते हो, चालीस क्यों नहीं, और उनके लिए चालीस रूबल वेतन के ख़िलाफ़ तुम्हें क्या आपत्ति है?"

सोचने के बाद मैंने जवाब दिया:

"हां तो, संक्षेप में यह कि – चालीस शिक्षक और प्रति शिक्षक चालीस रूबल न केवल लावारिसों के समूह का बल्कि दुनिया में किसी भी समूह का नैतिक ह्रास करने में ही समर्थ होंगे।"

सफ़ाचट आदमी ने कुर्सी की पीठ की ओर अपने आपको फेंका, हंसी से बल खाते हुए, और फिर, क्ल्यामेर की ओर इशारा करते हुए, अवरोधित लहजे में कहा:

"क्ल्यामेरों से सज्जित समूह भी?"

"निश्चय," मैंने गम्भीरता से जवाब दिया।

उसका पदजन्य अलगाव जैसे हवा के एक झोंके के साथ विलीन हो गया। ल्युबोव सावेलियेवना की ओर उसने अपनी बांह फैलाई और कहा:

"ठीक यही तो मैंने तुमसे कहा था – 'संख्या में अधिक लेकिन क़ीमत में कम'।"

अचानक जैसे ऊबकर उसने अपना सिर हिलाया, और फिर अपना चौकस अन्दाज़ धारण करते हुए जुरिन्स्काया से कहा:

"इसे सब सौंप दो। और देखो, ज़रा जल्दी।"

"बीस हज़ार," मैंने उठते हुए कहा।

"मिल जाएगा। लेकिन क्या यह कुछ ज़्यादा नहीं है?"

"यह भी काफ़ी नहीं होगा।"

"ठीक। अच्छा तो, नमस्कार। तुम जहां भी पहुंचो, लेकिन ध्यान रखना – इस चीज़ को पूर्ण सफल बनाना है।"

गोर्की कोलोनी में आवेगपूर्ण निश्चयात्मकता की प्राथमिक अवस्था ने अब क्रमशः शान्त, यथातथ्य और फ़ौजी तैयारियों का रूप धारण कर लिया था। लापोत अब कोलोनी का वास्तविक प्रशासक था। नाज़ुक क्षणों में मदद के लिए कोवाल उसके साथ था। लेकिन कोलोनी के प्रशासन का काम कठिन नहीं था। मित्रतापूर्ण एकता और सामूहिक ज़िम्मेदारी की गहरी चेतना का जैसा वातावरण अब था, वैसा पहले कभी नहीं था। ज़रा-सा भी अल्लंघन शुद्ध आश्चर्य की सृष्टि करता था, और कारगर झिड़की को जन्म देता था:

"और तुम कुरियाज जाने का हौसला करते हो!"

समस्या की वास्तविक प्रकृति के बारे में अब कोलोनी में किसी को भी कोई सन्देह नहीं था। कोलोनिस्ट इतना अधिक जानते नहीं थे, जितना अधिक वे हवा में अनुभव करते थे कि हर चीज़ को समूह की आवश्यकताओं के अधीन रखना कितना ज़रूरी है, और सो भी बिना किसी त्याग की भावना को मन में लाए। यह एक आनन्द था – सम्भवतः सर्वाधिक गहरा आनन्द, जो इस दुनिया में उपलब्ध हो सकता था – मानवीय संबंधों की आत्म-निर्भरता, शक्ति और लचकी-

ंगठन की सामूहिक भावना, जीवन की शान्त, विराट सामर्थ्य की भावना, जो खुद अपनी सबलता से अनुप्राणित वायुमण्डल में स्पन्दशील थी। इसे कोलोनीवासियों की आंखों में, उनकी हरकतों में, उनकी भाव-भंगिमाओं, उनकी चाल-ढाल और उनके काम में पढ़ा जा सकता था। सारी आंखें उत्तर की ओर उन्मुख थीं जहां ग्लानि में डूबा, ग़रीब, अराजकता और उबा देनेवाले हठ द्वारा संयुक्त एक गिरोह मोटी दीवारों के पीछे अपनी बनैली जीभों को लपलपाता, हमारी बाट देख रहा था।

मैं ने देखा कि कोलोनीवासियों के रवैये में शेख़ी का लेश मात्र भी अंश नहीं था। कहीं गहराई में हरेक के भीतर एक गुप्त भय तथा अनिश्चितता समाई थी, जिसे इस तथ्य ने और भी विकट बना दिया था कि दुश्मन को अभी तक किसी ने भी नहीं देखा था।

शहर से मेरे लौटने की हमेशा उत्सुकता से बाट देखी जाती। कोलोनीवासी सड़कों पर, पेड़ों पर और छतों पर धरना देते, और मेरी खोज-बीन में रहते। जैसे ही मेरी गाड़ी कोलोनी में प्रवेश करती, बिगुलवादक बिगुल बजाकर आम सभा का आह्वान करता। इसके लिए मुझसे पूछा तक नहीं जाता। मैं विनीत भाव से सभा में जाता। उन दिनों, जैसे मैं कोई जन-अभिनेता हूं, मेरा अभिवादन-अभिनन्दन करना एक रिवाज बन गया था। यह अभिनन्दन निस्संदेह मेरा इतना अधिक नहीं होता था जितना कि हमारे सामान्य लक्ष्य का।

आख़िर मई के शुरू में हस्ताक्षर हुए एक समझौते को हाथ में लिए ऐसी ही एक सभा में मैंने पांव रखा।

इस समझौते के अन्तर्गत शिक्षा की जन-कमिसरियट के आदेशानुसार मक्सिम गोर्की कोलोनी को कुरियाज में स्थानान्तरित किया जाना था – अपने तमाम छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों, चल-सम्पत्ति, पशु-धन और साज़-सामान के साथ। कुरियाज कोलोनी को बंद घोषित कर दिया गया था। उसके दो सौ अस्सी छात्रों तथा उसकी सारी सम्पत्ति को गोर्की कोलोनी के प्रबन्ध में अर्पित कर दिया गया था। कुरियाज कोलोनी का समूचा कर्मचारी, कुछ तकनीकी कर्मचारियों को छोड़कर, गोर्की कोलोनी के हाथों में कुरियाज कोलोनी की व्यवस्था आने के क्षण से बरख़ास्त घोषित कर दिया गया था।

मुझसे कहा गया था कि पांच मई तक चार्ज ले लिया जाए और पन्द्रह मई तक स्थानान्तरण को पूरा कर लिया जाए।

जब मैं उन्हें समझौता और आदेश पढ़कर सुना चुका तो कोलो-नीवासियों ने 'हुर्रा' की ध्वनि नहीं की, और न ही किसी को हवा में उछाला। आम ख़ामोशी के बीच लापोत ने कहा·

"इसके बारे में हमें गोर्की को लिखना चाहिए। और, लड़को, याद रखना – झींकना मना।"

"अच्छा – झींकना मना!" एक छोटा लड़का चिचिया उठा।

कालीना इवानोविच ने हवा में अपना हाथ लहराया और कहा: "क़दम बढ़ाओ, लड़को, डरो नहीं!"

तीसरा भाग

१. कील-कांटे

कुरियाज कोलोनी को अपनी सुपुर्दगी में लेने का काम दो दिन
मुझे शुरू करना था, लेकिन इससे पहले कुछ मामले थे जिन्हें कमाण्ड-
की परिषद में मुझे निबटाना था। उनसे मुझे कहना था, कोलो-
नीवासी इस योग्य हो जाएँ कि वे, बिना मेरी मदद के, उस कठिन
काम का – कुरियाज रवाना होने के पहले अपनी समूची ज़मीन-जायदाद
के प्रबन्ध के कठिन काम का – संयोजन कर सकें।

आशंकाओं, आशाओं, व्यग्रताओं, चमकती आंखों, घोड़ों, गाड़ियों, दुनिया-भर की खटर-पटरों, भूल से कहीं की कहीं रखी गई रस्सियों, आवश्यक सामान की सूची में दर्ज होने पर भी विस्मृत चीज़ों की बाकायदा एक बाढ़ कोलोनी में आ गई थी। इसने सुलझ न सकनेवाले मामले का रूप धारण कर लिया था। मुझे विश्वास नहीं होता था कि लड़के इससे पार पा सकेंगे।

कुरियाज जाने के क़रारनामे को हाथ में आए केवल एक रात अभी बीती थी, और इस अर्से में ही अभियान की भावना ने कोलोनी का, प्रत्येक की मन:स्थिति, आकांक्षाओं और गति को अपने रंग में रंग लिया था। कुरियाज से अगर कोलोनीवासी भयभीत नहीं थे तो उसका कारण यह हो सकता है कि उन्होंने उसे असली रूप में देखा नहीं था। लेकिन मैं इसके प्रतिकूल, कुरियाज की उस कल्पना से पीछा नहीं छुड़ा पा रहा था जो मेरे अन्तर में स्थित थी। यह कि वह एक भयानक, विकटाकार लाश है जो बावजूद इसके कि उसे बहुत पहले ही अधिकृत रूप में मृत घोषित किया जा चुका था, अभी भी गला दबोचने की क्षमता रखती थी।

कमाण्डरों की परिषद ने केवल नौ कोलोनीवासियों और एक शिक्षक को मेरे साथ कुरियाज भेजने का निश्चय किया। मैंने अधिक की मांग की। मैंने उन्हें बताया कि इतनी अल्प शक्ति के साथ गोर्की कोलोनी की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचाने के सिवा हम और कुछ नहीं कर पाएंगे। साथ ही यह कि कुरियाज का समूचा स्टाफ़ बरख़ास्त कर दिया गया है, और यह कि वहां के अधिकांश लोग हमारे काफ़ी ख़िलाफ़ हैं।

कुदलाती ने व्यंग्य और नम्रतापूर्ण अन्दाज़ में मुसकराते हुए मुझे जवाब दिया:

"सच पूछो तो चाहे आप अपने साथ दस लेकर जाएं या बीस, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। जो हो, दोनों ही हालतों में आप कर कुछ नहीं पाएंगे। जब सब चलें तब... तब की बात दूसरी है। तब इसका अच्छा ही नतीजा हो सकता है। यह न भूलो कि वे तीन सौ हैं। फिर एक-एक चीज़ का पक्का बन्दोबस्त हमें यहां करना है। ज़रा सोचो तो तीन सौ बीस सूअरों को गाड़ियों में लादने के क्या मानी होते हैं। इसके अलावा, आपने देखा होगा – क्यों, देखा है न – हर रोज़ नये लड़के वे हमारे यहां भेजते रहते हैं – पता नहीं ख़ारकोव में वे पगला गए हैं, या शायद हमें तंग करने के लिए वे जान-बूझकर ऐसा कर रहे हैं।"

नये आगन्तुकों को लेकर मैं ख़ुद भी पस्त था। वे, हमारे समूह को फीका बनाते थे। गोर्की कोलोनी की शक्ति को, उसकी विशुद्धता और लचकीलेपन को, अपने पूर्ण रूप में क़ायम रखना हमारे लिए कठिन हो गया था। सो भी उस हालत में जबकि हमें, अपनी अल्प टुकड़ी के सहारे, तीन सौ की एक पूरी भीड़ को अपने क़ाबू में करना था।

कुरियाज से संघर्ष की अपनी तैयारियों में एकबारगी विद्युत् आघात का – एक ही धावे में उसे सर करने का – विचार मैंने अपने सामने रखा था। ज़रा-सा भी विलम्ब, विकासवाद और 'क्रमशः प्रभाव' में ज़रा-सी भी आशा हमारे अभियान के नतीजे को खटाई में डाल सकती थी। मैं अच्छी तरह जानता था कि न केवल ख़ुद हमारी परम्पराएं, स्वरूप और तौर-तरीक़े बल्कि कुरियाज अराजकता की परम्पराएं भी हमारे भीतर वैसे ही 'क्रमशः प्रभाव' डाल सकती हैं। 'क्रमशः

प्रभाव' पर बल देनेवाले ग्रारकोव के दूरद्रष्टा चिर-सम्मानित विद्वान उस धारण का विश्वास के साथ प्रतिपादन करते थे कि अच्छे लड़कों का बुरे लड़कों पर भला प्रभाव पड़ेगा। लेकिन मैं खूब अच्छी तरह जानता था कि एक ऐसा समूह जिसका संगठनात्मक ढांचा चरमरा रहा हो, श्रेष्ठतम लड़कों को भी वनैला जीव बना देता है। इन 'दूरद्रष्टाओं' से पटेबाज़ी में उलझना बेकार था, और शुद्ध हिसाबी गणना के साथ मैंने तय किया कि 'क्रमशः प्रभाव' को शुरू होने का समय मिलने से काफ़ी पहले ही निर्णयात्मक आघात होगा। लेकिन नवागन्तुक मेरी राह में बाधक थे। बुद्धिमान कुदलाती ने अनुभव किया कि कुरियाज जाने के लिए उन्हें भी हमें उसी संलग्नता के साथ तैयार करना होगा जैसे किसी अन्य चीज़ को जो हमारे सुपुर्द थी।

और सो, 'अग्रिम मिश्रित दस्ते' का अगुआ बनकर जब मैं कुरियाज के लिए रवाना हुआ, तो तरह-तरह की चिन्ताओं के साथ पीछे की ओर नज़र डाले बिना मैं नहीं रह सका। कालीना इवानोविच जिसने वायदा किया था कि एकदम आखिरी क्षण तक हमारे मामलों की वह देख-संभाल रखेगा, आसन्न जुदाई के ख़याल से इतना अभिभूत और उदास हो उठा था कि वह केवल काठ की भांति कोलोनीवासियों के बीच घूम सकता था। बड़ी मुश्किल से काम के ओर-छोर को याद करता और उन्हें फिर तुरन्त ही भूल जाता था – वृद्ध के हृदय में गहरे शोक का आवेग उमड़ पड़ता था। सम्मानपूर्ण स्नेह के साथ कोलोनीवासी उसके आदेशों को ग्रहण करते, आह्लादपूर्ण 'अच्छा' कहकर बेलाग सलामी के साथ जवाब देते, लेकिन काम करते वक़्त वृद्ध के प्रति तरस की भावना को झटककर वे अलग कर देते और काम को अपने ढंग से सम्पन्न करते।

कोलोनी की बागडोर कोवाल के हाथों में मैंने सौंपी। उसे एक बात का जितना अधिक डर था उतना और किसी बात का नहीं – ऐसा न हो कि लूनाचार्स्की कम्यून उसे ठग ले जाए। जागीर, बोए हुए खेत और मिल लूनाचार्स्की कम्यून को हमें सौंपने थे। कम्यून के प्रतिनिधियों ने गोर्की कोलोनी के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगट होना शुरू कर दिया था, और उनका अध्यक्ष – लाल दाढ़ीवाला नेस्तेरेन्को – बहुत पहले से ही अविश्वास के साथ कोवाल की ओर देखता रहा था। ओल्या वोरोनोवा

इन दोनों के वीच कुटनीतिक रस्साकशी को नापसन्द करती थी और नेस्तेरेन्को को वहां से टरकाने का प्रयास करती थी:

"घर जाओ, नेस्तेरेन्को! तुम्हें डर क्या है? यहां कोई ठग नहीं वैठे हैं। जाओ, घर जाओ अब!"

नेस्तेरेन्को चालाकी के साथ केवल अपनी आंखों से शर्म से लाल होते हुए चिड़चिड़े कोवाल की ओर सिर हिलाकर इशारा करता:

"ओल्या, क्या तुम जानती हो कि वह कैसा आदमी है? वह कुलक है! उसके रोम-रोम में कुलकपन भरा है..."

कोवाल शर्म से और भी लाल हो उठता, बड़ी कठिनाई से वल्कि ज़िद्द के साथ बोल उठता:

"और तुम क्या सोचते थे? कि हम हर चीज़ तुम्हें सौंप देंगे – निःशुल्क – बावजूद इसके कि लड़कों ने अपने ख़ून-पसीने से इसे सींचा है? भला क्यों, ज़रा मुझे भी तो मालूम हो? क्या केवल इसलिए कि तुम लूनाचार्स्की कम्यून के सदस्य हो? ज़रा अपनी इस तोंद को तो देखो – क्या मटके-सी फूली है, और तुम ग़रीव वनने का ढोंग करते हो! तुम्हें पैसा देना होगा!"

"लेकिन ज़रा सोचो तो! मैं तुम्हें पैसा कहां से दूंगा?"

"यह सब सोचना मेरा काम नहीं! उस समय तुमने क्या सोचा था जब इन खेतों में बोवाई करने के लिए मैं तुमसे पूछने गया था? एकदम सातवें आसमान पर चढ़कर तव तुमने कहा था – करो बोवाई! और अब, मेहरवानी कर गांठ ढीली कीजिए! गेहूं के लिए, रई के लिए और चुकन्दरों के लिए..."

अपने सिर को एक ओर झुकाते हुए नेस्तेरेन्को ने तम्वाकू के अपने बटुवे की डोरी खोली, कोमलता से उसकी तह को टटोला, और अपराधी की भांति मुसकराया।

"ठीक, बिलकुल ठीक... बीज के लिए... बिला शक... लेकिन काम के लिए तुम क्यों मुआवज़ा मांगते हो? लड़के तो समाज के लिए भी काम कर सकते हैं..."

भारी झुंझलाहट के साथ कोवाल कुर्सी से उछला, बाहर जाने के लिए मुड़ा और ग़ुस्से से अंगारा बना चिल्लाकर वोला:

"क्यों भला यह तुम कैसे कहते हो, कमबख़्त कामचोर! तुम्हारा

दिमाग़ तो ठिकाने है – या नहीं ? अपने को तुम कम्यून कहते हो और बाल-श्रम से लाभ उठाना चाहते हो... अगर तुम दाम अदा नहीं करोगे तो मैं सब कुछ गोंचारोव्का के लोगों को दे दूंगा!"

ओल्या वोरोनोवा खदेड़कर जैसे-तैसे नेस्तेरेन्को को विदा करती और इसके पंद्रह मिनट ही बाद वह बग़ीचे में कोवाल के साथ फुस-फुसाती नज़र आती – और जैसा कि केवल एक स्त्री ही कर सकती है, अपने अन्तर में कोलोनी तथा कम्यून के लिए एक दूसरे से टकरानेवाली सहानुभूतियों में मेल कराने के प्रयत्न करते हुए। कोलोनी ओल्या के लिए जैसे मां के समान थी, लेकिन कम्यून में वह एकच्छत्र स्वामिनी थी। पुरुषों को, शेरे से उपलब्ध कृषि-विज्ञान संबंधी अपने अनुभव के व्यापक विस्तार से और स्त्रियों को नारी-मुक्ति की अपनी सशक्त तथा बहुधा चुभती हुई व्याख्याओं से प्रभावित करती थी। संकटों तथा दुनिया-भर के अन्य मौक़ों के लिए बीस लड़के-लड़कियों का एक लड़ाकू दस्ता वह सुरक्षित रखती थी, जो इस तरह उसका अनुसरण करते थे मानो वह जोन ऑफ़ आर्क हो। अपने निहित सौजन्य, अपनी शक्ति-स्फूर्ति तथा अपनी सीमाहीन आशावादिता से उसने सब का मन मोह लिया था। गर्व के साथ कोवाल उसपर नज़र डालता और सूत्ररूप में कहता

"यह हमारी कारीगरी है!"

गोर्की कोलोनी द्वारा लूनाचार्स्की कम्यून को, छः खेतों की प्रणाली से युक्त सुव्यवस्थित जागीर के रूप में, प्रदान की गयी उदार भेंट से ओल्या बहुत गौरव महसूस करती थी। लेकिन हमारे लिए यह भेंट नितान्त दुःखद थी। विगत प्रयासों का भारी अनुभव अन्य किसी क्षेत्र में इतना अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होता जितना कि कृषि के क्षेत्र में। हम जानते थे कि निराने, फ़सलों की हेरी-फेरी का संयोजन करने, हर चीज़ को क़ायदे में लाने साज़-सामान को पूरी तरह चौकस बनाने तथा धीमी, अन्तहीन और क़रीब-क़रीब अदृश्य प्रक्रिया के प्रत्येक तत्त्व की देख-भाल तथा उसे सुसम्बद्ध बनाए रखने के लिए हमें क्या नहीं करना पड़ा था। हमारी वास्तविक सम्पदा धरती के गर्भ में, पौधों की आपस में उलझी-गुंथी जड़ों में, सुविधाजनक वैज्ञानिक ढंग से निर्मित पशुशालाओं में, और पहियों, गाड़ियों के बमों, चालन-चक्रों

आदि मामूली चीज़ों में निहित थी। और अब जबकि इतना सब कुछ छोड़ना तथा इतना सब कुछ अपने सुव्यवस्थित स्थान से उखाड़कर मालगाड़ियों के संकरे दमघोट डिब्बों में लादकर ले जाना पड़ रहा था, यह समझना कठिन नहीं था कि शेरे इतना उदास क्यों दिखाई देता था। उसकी तमाम हरकतें उस व्यक्ति के समान क्यों मालूम होती थीं जिसके सिर पर जैसे कोई गाज गिरी हो।

लेकिन अपनी इस उदास मनःस्थिति के बावजूद एडुअर्ड निकोलायेविच ने सदा की भांति अपनी उसी शान्त नियमितता के साथ यात्रा के लिए अपनी निधियों को सहेजा। मैं अग्रिम मिश्रित दस्ते के साथ ख़ारकोव के लिए रवाना हो गया। उसकी झुकी हुई आकृति का ख़याल अपने मन से हटाने में मुझे ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई, कारण कि कोलोनीवासी, परी-लोक के छौनों की भांति, आनन्द और विह्वलता से उमगे चारों ओर थिरक रहे थे, उदास विचारों से सर्वथा मुक्त।

मेरे जीवन के सुखदतम क्षण बीत रहे थे। अब कभी-कभी खेद होता है कि उस समय अधिक लगाव और सावधानी के साथ मैंने उनपर नहीं सोचा-विचारा, कि अधिक दृढ़ता और स्थिरता के साथ शानदार जीवन को देखने के लिए मैंने अपने आपको बाध्य नहीं किया, कि प्रत्येक क्षण, प्रत्येक हरकत और प्रत्येक शब्द की आभा, रेखाओं और रंगों को हमेशा के लिए अपनी स्मृति में टांककर नहीं रखा।

लेकिन इस बात की अनुभूति उस समय भी मुझे थी कि ये एक सौ बीस कोलोनीवासी केवल एक सौ बीस लावारिस जीव नहीं थे जिन्होंने अपने लिए एक घर और काम प्राप्त कर लिया था। नहीं, ये हैं सैंकड़ों नैतिक प्रयास, सुसंगत रूप में समन्वित शक्ति की सैंकड़ों इकाइयां और कल्याणकारी वर्षा की बौछारें जिनके लिए वह मनमानी, पाखंडी प्रकृति भी उल्लासपूर्ण अधीरता के साथ ललकती थी।

उन दिनों ऐसा कोई कोलोनीवासी मुश्किल से ही नज़र आता था जो साधारण क़दमचाल से चलता हो। एक जगह से दूसरी जगह दौड़कर लपकने की जैसे सबों की आदत थी – अबाबीलों की भांति सर्र से निकल जाते, काम-काज की बोली में चहचहाते हुए, साफ़-सुथरे आह्लादजनक अनुशासन और गति में कमनीयता लिये हुए। और सच, एक क्षण लगा जैसे सुखी लोगों के ऊपर किसी भी अधिकारी को बैठाने

की अवश्यकता नहीं होती। कारण, अधिकारी का स्थान एक ऐसी आह्लादपूर्ण नयी मानवीय अन्तःप्रेरणा ले लेती जो हरेक को बता देती है कि उसे क्या करना है, कैसे करना है और किस लिए करना है।

ऐसे क्षण सचमुच में आते। लेकिन यूं कहें कि आल्योशा वोल्कोव की आवाज़ इन अराजकतावादी ऊंचाइयों से मुझे तुरन्त नीचे पटक देती जब वह अपने चितले चेहरे को किसी क़सूरवार के ऊपर झुकाते हुए चिल्लाता :

"यह तुम क्या कर रहे हो, कठदिमाग़! ज़रा देखो तो उस बक्से के लिए कैसी कीलें तुम इस्तेमाल कर रहे हो। शायद तुम समझते हो कि तीन इंची कीलों को यूं ही सड़क पर से बटोरा जा सकता है।"

फुर्तीले और लाल पड़ते हुए लड़के ने निराशा के साथ अपनी हथौड़ी को नीचे किया और सकपकाकर अपनी नंगी एड़ी को उससे रगड़ने लगा।

"तो फिर किस साइज़ की कीलें होनी चाहिएं?"

"इसके लिए तुम पुरानी कीलें इस्तेमाल कर सकते हो, वे जो पहले इस्तेमाल हो चुकी हैं। लेकिन ज़रा ठहरो! तुम ये तीन इंची कीलें लाए कहां से?"

और तब ... आग को जैसे घी की आहुति मिली। वोल्कोव ने ननकऊ को आड़े हाथों लिया और नयी तीन इंची कीलों के बारे में अपने आपको इतना कच्चा साबित करनेवाले चरित्र की धज्जी-धज्जी उड़ाकर रख दी।

हां, दुखान्त घटनाएं अभी इस दुनिया से विदा नहीं हुई थीं।

यह बहुतों को मालूम न होगा कि इस्तेमाल की हुई कील क्या चीज़ होती है!

इसे, पूरी चतुराई के साथ, पुराने तख़्तों तथा टूटी-फूटी बेकार पड़ी चीज़ों में से निकालना पड़ता है, और उनमें से यह प्रकट होती है टेढ़ी-मेढ़ी, गांठ-गठीली, ज़ंग लगी, सिर ऐंचाताना, नोक खुट्टल, बहुधा दो या तीन मोड़ खाए हुए और बहुधा बलों से इतनी विकृत कि दुनिया का दक्षतम फ़िटर भी उसमें वैसे बल नहीं डाल सकता। उसे लोहे की एक पटिया पर रखकर हथौड़ी से सीधा करना होता है—एड़ियों के बल बैठकर—अपनी उंगलियों पर भी क़रीब-क़रीब उतनी

ही बार हथौड़ी बरसाते हुए जितनी बार कि कील पर। और, अन्त में, जब पुरानी कील किसी नयी चीज़ में ठोकी जाती है, तो वह मुड़-तुड़ जाती है, छिटकती है, और जहां उसे जाना चाहिए वहां न जाकर अन्य किसी भी जगह पहुंच जाती है। शायद इन्हीं सब चीज़ों की वजह से गोर्की कोलोनी के लड़के पुरानी कीलों से इतना भन्नाते और नयी कीलों को पाने के लिए दुनिया-भर की संदिग्ध कार्रवाइयां करते थे – ऐसी कार्रवाइयां जो जांच-पड़ताल के लिए सीढ़ी के डण्डों का काम देती थीं और हमारे महान तथा आह्लादपूर्ण कुरियाज अभियान पर काली छाया डालती थीं।

और अकेले कीलें ही नहीं। बिना रोग़न की हुई मेज़ें, टुटपुंजिया बेंचें, सभी प्रकार के अनगिनत स्टूल, पुराने पहिए, मोचियों के जूता कसने के फ़रमे, जर्जर फ़ाइलें फटी हुई किताबें – दुनिया-भर की अन्य छुट-पुट चीज़ें जो क़ायमी रिहाइश तथा किफ़ायतशारी के फलस्वरूप जमा हो जाती हैं – हमारे वीरतापूर्ण अभियान की गरिमा की खिल्ली उड़ाती-सी मालूम होती थीं . लेकिन उन्हें फेंका जाए, यह हमसे बन नहीं रहा था।

और फिर नवागन्तुक! उनके ढीले-ढाले और अपरिचित आकार जब भी सामने पड़ते, तो उनकी ओर देखना तक मैं मुश्किल से ही सहन कर पाता। क्या यह अच्छा न होगा कि उन्हें यहीं छोड़ दिया जाए, उन्हें किसी ज़रूरतमन्द अनाथालय के हवाले कर दिया जाए – साथ में बतौर घूस, एक जोड़ी शिशु-सूअरों या एक डोलची आलुओं की भेंट चढ़ा दी जाए। मैं हर घड़ी उनकी जांच-पड़ताल करता, दलों में उन्हें बांटता, सामाजिक-मानवीय मूल्यों के अनुसार उनका वर्गीकरण करता। अब तक मेरी आंख काफ़ी सध गई थी। बाह्य चिन्हों की अनेकरूपता, मुखाकृति की क़रीब अदृश्य-सी भी अभिव्यंजना, बोलने के लहजे, चाल-ढाल तथा व्यक्तित्व की अन्य कतिपय छुट-पुट वक्रताओं – यहां तक कि गंध से भी, पहली नज़र में ही, काफ़ी शुद्धता के साथ मैं यह जान लेता था कि प्रस्तुत कच्ची सामग्री का यह नमूना पककर क्या रूप धारण करेगा।

मिसाल के लिए ओलेग ओग्नेव को लीजिए। क्या वह इस योग्य है कि उसे कुरियाज ले जाया जाए या उसे यहीं छोड़ देना ठीक होगा?

जो हो, मुझे लगा कि उसे नहीं छोड़ना चाहिए। वह एक असाधारण और दिलचस्प नमूना था। ओलेग ओग्नेव – दुस्साहसी, घुमक्कड़ और एक ढीठ जीव। सम्भवत: प्राचीन नॉरमनों का वंशज, उन्हीं की भांति लम्बा, छरहरा और सफ़ेद बालोंवाला। शायद ओलेग और उसके नॉरमन पूर्वजों के बीच उत्कृष्ट रूसी बुद्धिजीवियों की कई पीढ़ियों का व्यवधान था। क्योंकि उसका ललाट ऊंचा और चिकना था और सुन्दर, आनन्द-पूर्ण, भूरी आंखों द्वारा सन्तुलित उसके चौड़े चहरे से चतुराई झलकती थी। पोस्टल आर्डरों के किसी मामले में वह फंस गया था और इसलिए दो मिलीशियामैनों की निगरानी मे वह कोलोनी में लाया गया था। मगन भाव और नम्रता से वह उन दाना के बीच चला आ रहा था, और कौतुक के साथ अपने अनिश्चित भविष्य की ओर देख रहा था। अन्त में, उनकी निगरानी से मुक्त होने पर, मेरे प्रारम्भिक वचनों को सलीक़े और ध्यान के साथ उसने सुना, वयस्क कोलोनीवासियों से परिचय कराए जाने पर खुशी प्रकट की आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता के साथ छोटे लड़कों पर उसने नज़र डाली। वह अहाते के बीच में अपनी छरहरी टांगों को चौड़ा फैलाए खड़ा था। हंसते हुए वह बोला:

"तो ऐसी है यह कोलोनी! मक्सिम गोर्की कोलोनी! भई खूब! चलो, इसका भी रंग देख लिया जाए..."

उसे आठवें दस्ते में लगा दिया गया। फ़ेदोरेन्को ने अपनी एक आंख सिकोड़ी और संदिग्ध भाव से उसकी ओर देखते हुए बोला:

"कामकर तो तुम ऐसे कुछ मालूम नहीं होते... क्यों, नहीं हो न? और फिर, तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारी यह जाकेट भी अधिक उपयुक्त नहीं..."

ओलेग ने मुसकराते हुए अपनी ठाठदार जाकेट पर नज़र डाली, उसके छोरों को कई बार उठाकर मुआयना किया और प्रसन्नता के साथ कमाण्डर के चेहरे की ओर देखा।

"सो कुछ नहीं, साथी कमाण्डर! मेरी जाकेट काम में बाधक नहीं होगी। चाहे तो इसे आप ले सकते हैं।"

फ़ेदोरेन्को ने क़हक़हों की बाढ़ लगा दी, आठवीं सेना के अन्य वीरों ने भी इसमें योग दिया।

"अच्छा तो फिर देखें, मेरे बदन पर यह कितनी फिट बैठती है!"

फ़ेदोरेन्को संध्या तक ओलेग की लघु जाकेट में एक ऐसे ठाट-बाट से घूमता हुआ, जो पहले कभी हमारे बीच नहीं देखा गया था, कोलोनीवासियों का मनोरंजन करता रहा। लेकिन रात होने पर उसने जाकेट उसके मालिक को दी, कड़ी आवाज़ में यह कहते हुए लौटा दी :

"इसे उठाकर अलग रखो, और यह अधबंहिया क़मीज़ अपने बदन पर डालो। कल तुम्हें बोने की मशीन के पीछे लदफद चलना है।"

ओलेग ने अचरज के साथ कमाण्डर की ओर देखा और अपनी जाकेट पर एक द्वेषपूर्ण नज़र डाली।

"तो आपका मतलब यह कि यहां के लिए यह पोशाक उपयुक्त नहीं है?"

अगली सुबह वह अधबंहिया क़मीज़ में प्रगट हुआ, व्यंग्य के साथ मन-ही-मन बुदबुदाते हुए :

"सर्वहारा! बोने की मशीन के पीछे लदफद चलना है। है न यह एक नयी चीज़!"

इस नये धंधे में ओलेग के साथ हर चीज़ गडबड़ होती गई। इस या उस, जो भी कारण हो, बोने की मशीन के साथ उसकी पटरी नहीं बैठी। बुझे मन से वह उसके पीछे चल रहा था, ढूहों पर ठोकरें खाता और रह-रहकर, जब-तब, पांव में घुसी फांस निकालने के प्रयत्न में अटपटे ढंग से एक टांग पर नाचता रहता। बोने की मशीन के फल्के–जब वे हरकत में आते थे–उससे संभाले नहीं संभलते थे, और हर तीन मिनट बाद अपने अगुआ से गुहारकर कहता था :

"श्रीमान, ज़रा अपने जानवरों को रोको, यहां कोई चीज़ अटकी है!"

फ़ेदोरेन्को ने ओलेग का काम बदल दिया और उसे दूसरी जोड़ी को चलाने के लिए भेजा–हेंगा चलाने के लिए। लेकिन आधा घंटा बाद ओलेग फिर फ़ेदोरेन्को से आ चिपका और विनम्रता के साथ उसने सूचित किया :

"साथी कमाण्डर, आप जानते हैं कि क्या? मेरीवाली बैठ गयी।"

"तुम्हारीवाली क्या?"

"घोड़ी। मेहरबानी करके ज़रा चलिये और देखिये–वह बैठ

गयी, और अभी तक बैठी है। ज़रा चलकर उसका हाल-चाल मालूम कीजिये।"

फ़ेदोरेन्को लपककर ज़मीन पर पसरी 'मेरी' के निकट पहुंचा और गुस्से से उबल पड़ा:

"ओह शैतान... यह तुमने क्या किया? सब गड़बड़ कर दिया। और यह बम यहां क्या कर रहा है?"

ओलेग ने, जितना भी उससे बन सकता था, किसान का चोला धारण करने का प्रयत्न किया।

"देखो न, यहां कुछ मक्खियां – या जाने क्या – भनभना रही थीं। सो यह बैठ गई, जबकि इसे काम करना चाहिए – करना चाहिए न?"

'मेरी' ने गुस्सा भरे अन्दाज़ से गलबन्द के नीचे से जो क़रीब-क़रीब उसके कानों में गड़ रहा था, ओलेग की ओर देखा। फ़ेदोरेन्को भी गुस्से से उमड़ा था।

"बैठी है! घोड़ी कभी नहीं बैठती! उठाओ इसे!"

ओलेग ने रासों को थामा और चिल्लाया: "ऐइओ!"

फ़ेदोरेन्को हंसा।

"ऐइओ चिल्लाने से क्या फ़ायदा? क्या तुम कोचवान हो?"

"देखो न, साथी कमाण्डर..."

"तुम मुझे बार-बार साथी कमाण्डर क्यों कहते हो?"

"तो फिर और क्या कहूं?"

"मेरा एक नाम है – क्यों, है न?"

"ओह-हां! तो, साथी फ़ेदोरेन्को, आप तो जानते ही हैं, मैं कोचवान नहीं हूं, और सच मानो, इससे पहले भी कभी किसी 'मेरी' से मेरी घनिष्ठता नहीं रही। मेरी एक मित्र थीं जो 'मेरी' भी कहलाती थी... लेकिन वे बिलकुल दूसरे प्रकार की थीं... वहां न तो ये 'बम' थे, न 'गलबंद'..."

शान्त तथा शक्तिपूर्ण आंखों से फ़ेदोरेन्को ने इस नॉरमन जीव की ज़ंग लगी कमनीयता पर एक कड़ी नज़र डाली और इसके बाद थूक की पिचकारी छोड़ी।

"बस, अब अपना वह तोबड़ा बंद रखो और इसकी जोत ठीक करो।"

सांझ को अपने हाथों को फैलाते हुए फ़ेदोरेन्को ने बिना किसी उतावली के अपना फ़ैसला दिया :

"यह किसी काम का जीव नहीं, शैतान उठा ले जाए इसे! यह मालपूए गटक सकता है और लड़कियों के साथ पटरी बैठा सकता है... लेकिन हमारे साथ इसकी पटरी नहीं बैठ सकती। अगर मुझसे पूछो तो इसे कुरियाज नहीं ले जाना चाहिए।"

व्यग्र और गम्भीर नज़र से आठवें दस्ते के कमाण्डर ने मेरी ओर देखा – इस प्रतीक्षा में कि मैं उसके फ़ैसले की पुष्टि करूंगा। मैंने महसूस किया कि यह सारे आठवें दस्ते का सुझाव था जो अपने विश्वासों की दृढ़ता के लिए सरनाम थी। लेकिन मैंने फ़ेदोरेन्को को निम्न जवाब दिया :

"हम ओग्नेव को कुरियाज ले जाएंगे। तुम अपने दस्ते में यह समझा दो कि उन्हें ओलेग को मेहनतकश जीव बनाना है। अगर तुम यह नहीं करोगे तो फिर और कोई नहीं करेगा और ओलेग सोवियत सरकार का दुश्मन और एक आवारा बनकर रह जाएगा। समझते हो न?"

"हां, समझता हूं।" फ़ेदोरेन्को न कहा।

"तो तुम उन्हें दस्ते में समझा देना..."

"अच्छी बात है, हम समझा देंगे," फ़ेदोरेन्को ने तत्परता के साथ सहमति प्रकट की, लेकिन उसी तत्परता के साथ अपना एक हाथ उठाकर उसने अपने सिर के पिछले हिस्से को खुजलाना भी शुरू किया – जैसा कि हमारे स्लाव भाई आदतन उस समय करते हैं जब कोई चीज़ उनकी समझ में नहीं आती।

और सो ओलेग ओग्नेव जाएगा। और ऊजिकोव? आखिरी तौर से और गुस्से के साथ मेरा जवाब है कि ऊजिकोव को नहीं ले जाना चाहिए – आखिर ऊजिकोव जैसे जहन्नुमी जीव से मेरा क्या वास्ता हो सकता है? अन्य किसी उद्योग में अगर इस तरह का घटिया कच्चा माल किसी के सिर पर थोपा जाता तो वह एक दरजन कमीशनों की रचना करेगा, इतने ही ऐक्ट बनाएगा, घरेलू मामलों की जन-कमिसरियट या अन्य किसी अधिकारी के सामने अपील करेगा, अन्तिम उपाय के रूप में 'प्राव्दा' तक को लिखेगा और इस या उस तरीक़े से अपराधी को बेनक़ाब करेगा। पुराने डोल-डोलचियों से इंजन, या

आलू के छिलकों से डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थ तैयार करने की कभी किसी से आशा नहीं की जाती। और मुझसे आशा की जाती है – इंजन, या डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थ को छोड़िए – कि मैं ऊजिकोव से एक खरे सोवियत नागरिक का निर्माण करूं? किससे? आरकादी ऊजिकोव से?

आरकादी का समूचा जीवन, यदि एकदम बचपन से शुरू किया जाए तो वह राजमार्गों पर बीता था और इतिहास तथा भूगोल के तमाम रथों के भारी-भरकम पहिए उसके वक्ष के ऊपर से गुज़र चुके थे। उसका बाप परिवार को उसी समय छोड़कर चला गया था जब कि ऊजिकोव बहुत ही छोटी उम्र का था। फिर घर की वेदी पर उसकी जगह एक दूसरे नये बाप का उदय हो गया था जो देनीकिन की सरकार-रूपी सर्कसी तमाशे की एक कठपुतली था। इस सरकार के साथ ऊजि-कोव के नये पिता ने परिवार सहित विदेश प्रस्थान करने का निश्चय किया। भाग्य की कलाबाज़ियों ने – न जाने क्यों – उन्हें येरूशलम जैसे अनुचित स्थान में ले जाकर पटक दिया। इस नगर में ऊजिकोव अपने सब प्रकार के माता-पिता से वंचित हो गया। कारण कि वे मर गए, बीमारी से इतना नहीं जितना कि मानवीय अकृतज्ञता से। अरबों और अन्य अल्पसंख्यक जातियों के अपरिचित भंवरे में आरकादी ऊजिकोव अकेला-असहाय रह गया। इसके बाद समय ने फिर करवट ली। आरकादी के असली बाप ने अचानक अपनी सन्तान के प्रति अपने रवैये को बदलने का निश्चय किया। 'नेप' (नयी अर्थिक नीति) की पेचीदगियों में दक्षता प्राप्त करने के बाद वह अब किसी कम्बाइन का सदस्य बन गया था। उसने अपने अभागे बेटे का अता-पता लगाया और इतनी दक्षता के साथ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का फ़ायदा उठाया कि आरकादी को, वयस्क संरक्षण में, ओदेस्सा के लिए एक जहाज़ पर सवार करा दिया गया – बिछड़े हुए पिता और उसके बेटे को एक-दूसरे के आलिंगन में गूंथने के लिए। लेकिन मुश्किल से दो महीने बीते होंगे कि पिता का माथा ठनका-विदेशों में प्राप्त अपने बेटे की शिक्षा के अनेक उजागर 'गुण' उसकी आंखों के सामने मूर्त्त हो उठे। व्यापक रूसी मनोरथ और अरबी कल्पना के मेल ने सोने में सुहागे का काम किया था। सो पापा पर ऊजिकोव ने पूरी तरह साफ़ किया। न केवल घड़ी, चांदी की चम्मचों और गिलास के होल्डरों जैसी पारिवारिक

निधियों और कोट-पतलूनों तथा नीचे पहनने के कपड़ों को ही, बल्कि कुछ फ़र्नीचर तक को उसने बाज़ार-घाट उतारने में सफलता प्राप्त की। और तो और, उसने अपने पिता के दफ़्तर की चैकबुक तक को नहीं बख़्शा – उसके युवा हस्ताक्षरों में और उसके पिता के सुविस्तारित दस्तख़तों में हृदयस्पर्शी पारिवारिक समानता थी।

वे सबल हाथ जो अभी हाल में आरकादी को उस तीर्थ-धाम से निकाल लाए थे, अब दूसरी बार फिर हरकत में आए। और ठीक उस समय जबकि चलने की हमारी सरगर्म तैयारियां अपने उच्चतम शिखर पर पहुंची हुई थीं, ऊजिकोव का पिता मेरे सामने आ मौजूद हुआ। यूरोपीय चिकनाहट और पेशेवरी प्रतिष्ठा की झलक के साथ-साथ टूट-फूट और छीजन के चिन्ह भी उसमें स्पष्ट प्रकट होते थे। वह मेरे सामने जम गया, विस्तार के साथ आरकादी की जीवनी उसने मुझे सुनाई और अन्त में मुश्किल से पकड़ में आनेवाले कम्पन के साथ उसने कहा:

"एक तुम्हीं हो जो मेरे बेटे को मुझे लौटा सकते हो!"

मैंने बेटे की ओर देखा जो सोफ़े पर बैठा था उसे देखकर इतनी अधिक घृणा का मैंने अनुभव किया कि मैंने उसे उसी क्षण उसके व्यथित पिता की गोद में सौंप देना चाहा। लेकिन अपने बेटे के अलावा वह अपने साथ कुछ दस्तावेज़ें लेकर भी मेरे पास आया था और दस्तावेज़ों के साथ मैं तर्क नहीं कर सकता था। आरकादी कोलोनी में ही रहा। लम्बा क़द, दुवला-पतला और बेडौल, लाल-भभूका सिर जिसके दोनों ओर दो भीमाकार पारदर्शी गुलाबी कान छाज-से लटके थे, उसका चेहरा न मालूम-सी भौंहों तथा बड़ी-बड़ी झाइयों से युक्त था। ऐसा मालूम होता था जैसे उसकी वज़नी झुकी हुई नाक उसे नीचे की ओर खींच रही हो – उसकी नाक में और चेहरे के अन्य हिस्सों में कोई अनुपात नहीं था। आरकादी हमेशा अपनी भौंहों के नीचे से देखता था। उसकी धुंधली और निष्प्रभ आंखें और पीलापन लिए इन आंखों की सफ़ेदी हृदय में घृणा का संचार करती थीं। इसके साथ लार चुआता हर घड़ी भट्टा-सा खुला उसका मुंह और चिर-मनहूस मुद्रा को इसमें और जोड़ लीजिए। बस, चित्र पूर्ण हो जाएगा!

मुझे पक्का यक़ीन था कि कोलोनीवासी अंधेरे ओनों-कोनों में

उसकी छितनी करेंगे, मिलने पर उसे धकियाएंगे, कि कोई भी उसे अपने शयनागार में नहीं सोने देना चाहेगा, एक ही मेज़ पर बैठकर उसके साथ खाना नहीं खाएगा। वे उसके प्रति उसी स्वस्थ मानवीय-घृणा व्यक्त करेंगे जिसे मैं, केवल शिक्षक के नाते, दबाए रखने में समर्थ हो सका था।

ठीक पहले दिन से ही ऊजिकोव ने अपने साथियों पर हाथ साफ़ करना तथा अपने बिस्तरे को भिगोना शुरू कर दिया। मित्का जेवेली अपनी काली भौंहों में बल डाले हुए, मेरे पास आया और गम्भीरता से बोला:

"अन्तोन सेम्योनोविच, ज़रा मुझे यह तो समझाइए कि ऐसे जीव को हमें क्यों लेना चाहिए। देखिए न – येरूशलम से ओदेस्सा, ओदेस्सा से ख़ारकोव, ख़ारकोव से हमारे यहां और यहाँ से कुरियाज? आख़िर इस पुच्छल्ले को क्यों इधर से उधर लादे घूमा जाए? लादने के लिए क्या हमारे पास काफ़ी बोझ नहीं हैं? ज़रा समझाइए!"

मैं चुप्पी साधे रहा। मित्का ने धीरज के साथ मेरे जवाब का इन्त-ज़ार किया – मुस्कराते हुए लापोत की ओर भौंहें सिकोड़कर देखते हुए। इसके बाद उसने फिर कहना शुरू किया:

"ऐसा जन्तु मैंने पहले कभी नहीं देखा। इसे... थोड़ा... संखिया देने की ज़रूरत है, या फिर हमें रोटी की एक गेंद बनानी चाहिए, जिसके भीतर पिनें खोंसी हुई हों और वह उसे खिलानी चाहिए।"

"वह उसे नहीं खाएगा," लापोत ने हंसते हुए कहा।

"कौन नहीं खाएगा? ऊजिकोव? मज़ाक़ के लिए ही सही – चलो, कोशिश करके देखें – वह एकदम गटक जाएगा... जानते ही हो, कितना लालची है वह! और कितने घिनौने ढंग से वह खाता है! छि:, मुझे तो सोचते हुए भी उबकाई आती है।"

मित्का ने नफ़ासती अन्दाज़ में एक थरथरी-सी ली। लापोत ने बलि के बकरे की भांति अपनी आंखों को ऊपर उठाते हुए उसकी ओर देखा। मन में मैं भी उनके साथ था और अपने आपसे पूछ रहा था:

"क्या किया जाए? ऊजिकोव ऐसी दस्तावेज़ अपने साथ लेकर आया है "

लकड़ी के मोफ़े पर बैठे हुए लड़के स्थिति की थाह ले रहे थे। अचानक वास्का अलेक्सेयेव के साफ़-सुथरे, मुसकराते हुए चेहरे ने कमरे में झांककर देखा तो मित्का तुरन्त खिल उठा।

"देखो, इस तरह के लड़के चाहे जितना जी में आए ले चलो!" उसने कहा। "यहाँ आओ, वास्का!"

वास्का का चेहरा एकदम लाल रंग गया। सलज्ज मुसकान तथा मुग्ध दृष्टि से मित्का की ओर देखते हुए उसके घुटनों पर दोहरा हो गया। भावों से अभिभूत एक ऐसी अवर्णनीय ध्वनि उसने अपने मुंह से निकाली जिसमें उसास का भी पुट मिला हुआ था तथा कराह और हंसी का भी।

वास्का अलेक्सेयेव ख़ुद अपनी इच्छा से कोलोनी में आया था– आंसुओं से भीगा, जीवन की क्रूरताओं से तोड़ा-मरोड़ा हुआ। वह सीधे कमाण्डरों की परिषद में चला आया। सांझ का वह समय था, वर्षा और बवंडरों से घिरा हुआ। लेकिन हवा-पानी की यह प्रकट प्रतिकूलता वास्का के लिए सौभाग्यपूर्ण सिद्ध हुई जिसे, हो सकता है कि अच्छा मौसम होने पर कभी घर में घुसने तक न दिया जाता। लेकिन उस हालत में सन्तरियों के मिश्रित दस्ते का कमाण्डर उसे लिये हुए दफ़्तर में आया और बोला:

"बताइए, इसका क्या किया जाए? यह दरवाज़े पर खड़ा रो रहा था और बाहर बारिश हो रही है।"

कमाण्डरों ने चालू मामलों पर अपनी बहस को रोका और नवागन्तुक की ओर अपनी नज़रें उठाकर देखा। उसने, देखते ही देखते शोक के सारे चिन्हों को मिटाने में उन सभी साधनों से काम लिया जो उसके पास मौजूद थे–आस्तीनों से, उंगलियों से, मुट्ठियों से, अपनी जाकेट के छोरों तथा टोपी से,–और अपनी नम आंखों को मिचमिचाते हुए वान्या लापोत की ओर देखा। यह पहचानने में उसे ज़रा भी देर नहीं लगी कि लापोत ही अध्यक्ष है। सुन्दर गुलाब-सा उसका चेहरा था, पांवों में साफ़-सुथरे देहाती जूते पहने था। केवल उसकी छोटी, जीर्ण-शीर्ण, ऊनी जाकेट ही ऐसी थी जो उसके सुडौल आकार-प्रकार के साथ मेल नहीं खाती थी। वह क़रीब तेरह साल का था।

"तुम क्या चाहते हो?" लापोत ने कड़ी आवाज़ में पूछा।

"मैं कोलोनी में रहना चाहता हूं," नन्हे लड़के ने गम्भीर भाव से कहा।

"क्यों?"

"मेरा बाप हमको छोड़कर कहीं चला गया है, और मेरी मां कहती है – जा, जहां तेरे सींग समाएं..."

"क्या? एक मां कभी ऐसा नहीं कह सकती।"

"वह मेरी असली मां नहीं है..."

इस नये विवरण ने, केवल क्षण-भर के लिए ही सही, लापोत को अस्त-व्यस्त कर दिया।

"ज़रा ठहरो... यह क्या? हां तो, वह तुम्हारी असली मां नहीं है। लेकिन तब तुम्हारे पिता को तुम्हें अपनाना चाहिए। उसे ऐसा करना है – समझे कुछ?"

नन्हे लड़के की आंखों में आंसू तिर आए और एक बार फिर – जवाब देना शुरू करने से पहले – उसने उनके तमाम चिन्हों का सफ़ाया किया। कमाण्डरों की तीक्ष्ण आंखें प्रार्थी के तौर-तर्ज़ से पिघल चलीं। अन्त में, एक स्वाभाविक उसास के साथ, नन्हे लड़के के मुंह से निकला:

"मेरा बाप – मेरा बाप भी मेरा असली बाप नहीं है।"

क्षण-भर के लिए परिषद निस्तब्ध हो गई और इसके बाद हंसी की एक ज़ोरदार, तेज़ बाढ़ फूट पड़ी। लापोत ने, इस हद तक हंसते हुए कि उसकी आंखों में आंसू उभर आए, कहा:

"अच्छे गोरखधंधे में तुम फंसे हो, भाई... हमें बताओ कि बात क्या है?"

प्रार्थी ने सरलता के साथ, बिना किसी रत्ती-भर भी बनावट के और बिना लापोत के प्रसन्न चेहरे से अपनी आंखें हटाए, बताया कि उसका नाम वास्का और पूरा नाम अलेक्सेयेव है। उसका पिता कोचवान था। परिवार को छोड़कर वह 'कहीं ग़ायब हो गया,' और उसकी मां ने किसी दर्ज़ी से शादी कर ली। इसके बाद उसकी मां ने खांसना शुरू किया और पिछले साल वह मर गई। दर्ज़ी ने 'किसी अन्य से शादी कर ली' और अब 'ठीक ईस्टर के दिनों' में वह कोनग्राद चला गया। वहां से उसने संदेशा भेजा कि वह अब कभी लौटकर

नहीं आएगा। उसने यह भी लिखा: 'जैसे बने तुम अपना इन्तज़ाम कर सकते हो'।"

"हमें इसे कोलोनी में लेना ही होगा," कुदलाती ने कहा। "लेकिन, कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम भूठ बोल रहे हो, क्यों? तुम्हें यहां आने की सीख किसने दी?"

"सीख? एक आदमी ने... जो वहां रहता है... उसने मुझे सीख दी। उसने कहा कि वहां लड़के रहते हैं, खेतों में बोवाई करते हैं।"

और सो वास्का अलेक्सेयेव को हमने कोलोनी में ले लिया। देखते ही देखते वह सबका प्रिय बन गया और वास्का को कुरियाज से दूर रखने का सवाल हमारी निजी बातचीत तक में किसी ने कभी नहीं उठाया। इसके अलावा इसलिए भी कि वास्का को कमाण्डरों की पीरषद ने स्वीकार किया था। फलत: वह 'श्रेष्ठकुलीन राजकुमार' समझा जाने का पूर्ण अधिकारी था।

नवागन्तुकों में मार्क शेइनहौस था और वेरा बेरेज़ोव्स्काया भी।

मार्क शेइनहौस को बाल-अपराधियों के ओदेस्सा कमीशन ने भेजा था। जैसा कि उसकी दस्तावेज़ से प्रकट था, वह चोरी का अपराधी था। वह एक मिलीशियामैन की हिरासत में आया था, लेकिन एकदम पहली नज़र में ही मैंने यह जान लिया कि कमीशन ने उसके बारे में ग़लती की है – उसकी जैसी आंखोंवाला कोई भी व्यक्ति चोर नहीं हो सकता। मार्क की आंखों का वर्णन करने का प्रयास मैं नहीं कर सकता। वास्तविक जीवन में ऐसी आंखें बिरले ही नज़र आती हैं। उन्हें केवल नेस्तेरोव, कौलबाख़, रफ़ैल जैसे चित्रकारों की कृतियों में देखा जा सकता है, उन कृतियों में जो सन्तों को – और भी अधिक यह कि मैडोनाओं के चेहरों को – चित्रित करती हैं। यह समझना कठिन था कि ओदेस्सा के एक ग़रीब यहूदी के चेहरे में वे आंखें कैसे आ प्रकट हुई। मार्क शेइनहौस ग़रीबी का प्रत्येक चिन्ह प्रकट करता था – उसका दुबला-पतला सोलहवर्षीय शरीर चिथड़ों से ढंका था और अपने पांवों में जूतों के बहुत ही गए-बीते अवशेष वह पहने था जिनके तले छेदों से छलनी हो रहे थे। लेकिन उसका चेहरा चिकना और साफ़-सुथरा था और उसके घुंघराले बाल कंघी से संवारे हुए थे। उसकी बरौनियां

इतनी घनी और गुम्फिल थीं कि हर बार जब भी वह उन्हें झपकता था, तब लगता था जैसे वे हवा झल रही हों।

"दस्तावेज़ में लिखा है कि तुमने चोरी की है," मैंने कहा। "क्या यह वाक़ई सच है?"

मार्क की बड़ी-बड़ी, काली, सन्तों जैसी उदास आंखों से जैसे प्रकाश की एक धारा प्रवाहित हो उठी – एक ऐसी धारा जिसके स्पर्श का अनुभव तक किया जा सकता था। उसने प्रयास के साथ अपनी पलकों को उठाया और उसका उदास, क्षीण, पीतवर्ण चेहरा झुक आया:

"यह सच है... मैंने... हां, मैंने चोरी की।"

"भूख के मारे?"

"नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकता कि भूख के मारे। नहीं, मैंने चोरी भूख के मारे नहीं की।"

मार्क की गम्भीर, उदासी में डूबी, अडिग नज़र अभी भी मुझपर जमी थी।

मैंने शर्म का अनुभव किया। एक थके हुए उदासी में डूबे लड़के से मैं क्यों जिरह कर रहा हूं? मैंने अपनी मुसकान को यथासम्भव हार्दिक बनाने का प्रयास किया और कहा:

"छोड़ो, मैं तुम्हें उसकी याद नहीं दिलाऊंगा। अगर तुमने चोरी की तो की। दुनिया-भर की चीज़ें लोगों के साथ हो जाती हैं। उन्हें भूल जाना चाहिए... क्या तुम किसी स्कूल में पढ़े हो?"

"हां, मैं स्कूल में पढ़ता था। पांच दर्जे मैं पास कर चुका हूँ, और भी करना चाहता हूं।"

"बहुत ठीक! तुम तारानेत्स के चौथे दस्ते में रहोगे। लो, यह पुर्ज़ा लेते जाओ और चौथे दस्ते के कमाण्डर तारानेत्स को खोज निकालो। जो आवश्यक होगा, वह सब कर देगा।"

मार्क ने काग़ज़ के पुर्जे को अपने हाथ में लिया, लेकिन दरवाज़े की ओर बढ़ने की बजाय अनिश्चित-सी भावना के साथ वह मेज़ के पास ही खड़ा रहा।

"साथी मैनेजर, एक बात है जो मैं आपसे कहना चाहता हूं, ज़रूर कहना चाहता हूं। यहां आते समय मैं बराबर यह सोचता रहा कि उस बात को कैसे आपसे कहूंगा और अब मुझसे नहीं रहा जाता..."

मार्क उदासी से मुसकराया और मनुहार भरी नज़र से सीधे मेरी आंखों में उसने देखा।

"क्या बात है? बोलो, क्या कहना चाहते हो तुम?"

"मैं पहले भी एक कोलोनी में रह चुका हूं। यह मैं नहीं कह सकता कि वहां कुछ इतना ज़्यादा बुरा था। लेकिन मैंने महसूस किया कि मेरे चरित्र को क्या होता जा रहा था। देनीकिन पंथियों ने मेरे पिता को मार डाला। मैं एक कोमसोमोल सदस्य हूं। मैं मोम बनता जा रहा हूं, यह ग़लत है। मैं ख़ुद यह जानता हूं। बोल्शेविक जैसा मेरा चरित्र होना चाहिए। रह-रहकर यह बात मेरे हृदय को कुरेदती है। अगर मैं आपको सब बातें बताऊं तो क्या आप वायदा करते हैं कि मुझे ओदेस्सा वापस नहीं भेजेंगे?"

मार्क ने अपनी बड़ी-बड़ी और सुन्दर आंखों से संदेह के साथ मेरी ओर देखा।

"तुम कुछ भी मुझे बताओ, मैं तुम्हें यहां से कहीं नहीं भेजूंगा।"

"ओह, शुक्रिया, साथी मैनेजर, इसके लिए शुक्रिया। मैंने भी यही सोचा था कि आप यह जवाब देंगे, और मैंने अपने मन में तय भी कर लिया था। मैंने ऐसा इसलिए सोचा कि 'वेस्ति'* पत्र में एक लेख मैंने पढ़ा था। यह लेख आपकी कोलोनी के बारे में था। इसका शीर्षक था – 'वह जगह जहां नया इन्सान ढाला जा रहा है'। बस मैंने फ़ौरन समझ लिया कि मुझे कहां जाना है, और यहां भेजे जाने के लिए मैं विनती करने लगा। लेकिन चाहे जितनी भी विनती मैं करता, कोई नतीजा न निकलता। वे मुझसे कहते: 'वह तो बाल-अपराधियों की कोलोनी है। तुम वहां क्यों जाओगे?' सो मैं कोलोनी से भाग खड़ा हुआ, और सीधा ट्राम में पहुंचा। वह सब इतनी आनन-फानन में हो गया कि आप सोच तक नहीं सकते। एक आदमी की जेब में मैंने हाथ डाला ही था कि तभी किसी ने मुझे पकड़ लिया और मुझे पीटने को हुए। और इसके बाद वे मुझे कमीशन के पास लिवा ले गए।"

---

* समाचार।

"और क्या कमीशन ने तुम्हारे ख़िलाफ़ अभियोग पर यक़ीन कर लिया?"

"यक़ीन क्यों नहीं करते? वे तो न्यायप्रिय लोग हैं। वहां गवाह मौजूद थे, रिपोर्ट और हर चीज़ ठीकोठाक थी जैसी कि उसे होना चाहिए। मैंने कहा कि मैं पहले भी जेबें काट चुका हूं।"

मैं खुलकर हंसा। मुझे यह जानकर सन्तोष हुआ कि कमीशन के निष्कर्ष में मेरा अविश्वास सही था। मार्क आश्वस्त हुआ और अपनी व्यवस्था करने के लिए चौथे दस्ते की टोह में चल दिया।

वेरा बेरेज़ोव्स्काया का स्वभाव इससे बिलकुल भिन्न था।

जाड़ों के दिन थे। मारिया कोन्द्रातियेवना बोकोवा को विदा करने मैं स्टेशन गया था। साथ ही ख़ारकोव के लिए एक बहुत ज़रूरी सन्देश भी मुझे उसके हाथ भेजना था। मैं जब वहां पहुंचा तो मारिया कोन्द्रातियेवना प्लेटफ़ार्म पर खड़ी रेलवे की ड्यूटी पर तैनात सन्तरी से ज़ोरों के साथ तर्क-वितर्क कर रही थी। सन्तरी क़रीब सोलह वर्ष की एक लड़की का हाथ दबोचे था। लड़की अपने नंगे पांवों में गैलोश डाले और एक छोटा, पुरानी चाल का छोटा चोग़ा पहने थी जो, सम्भवतः किसी सहृदय बूढ़ी आत्मा ने उसे भेंटकर दिया था। लड़की का उघड़ा हुआ सिर अत्यन्त बुरी हालत में था। उसके सुनहरे, उलझे बाल अब सुनहरे नहीं रह गए थे, थक्के की भांति जमे उसके एक कान के पीछे से बाहर निकल आए थे और भूरी चिपचिपी घास-फूस के रूप में उसके गालों तथा भौंहों के ऊपर चिपके थे। वह अपना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न कर रही थी और मोहनेवाले अन्दाज़ में बराबर मुसकरा रही थी। वह बहुत ही सुन्दर थी। लेकिन उसकी उजली, हंसती हुई आंखों में एक ऐसी धुंधली चमक नज़र आई जो एक कमज़ोर पशु की निस्सहाय निराशा में दिखाई देती है। उसकी मुसकान ही मात्र उसके बचाव का एक साधन थी। वही उसकी एकमात्र कूटनीति थी।

"तर्क करना आपके लिए आसान है, साथी," सन्तरी मारिया कोन्द्रातियेवना से कह रहा था। "आप नहीं जाननीं कि उनकी वजह से हमें कितनी मुसीबत उठानी पड़ती है।"

वह लड़की की ओर मुड़ा

"बोलो, पिछले हफ़्ते भी तुम गाड़ी पर थी? और तुमने दारू पी रखी थी या नहीं, पी रखी थी?"

"मैंने? दारू? यह सब इसकी अपनी मनगढ़न्त है!" लड़की ने कहा और सन्तरी को अपनी मोहक मुसकान से अपनी ओर खींचा, लेकिन साथ ही झटका देकर अपना हाथ उससे छुड़ा लिया। उसने उंगलियों को अपने होंठों से छुवाया, जैसे वे दुख रही हों।

"देखो, मैंने हाथ छुड़ा लिया न!" लाज के साथ तुनकते हुए उसने कहा।

सन्तरी उसकी ओर बढ़ा, लेकिन वह तीन डग पीछे खिसक गई, ज़ोरों से खिलखिलाते और उस भीड़ की ओर ज़रा भी ध्यान न देते हुए जो हमारे इर्द-गिर्द जमा होना शुरू हो गई थी।

मारिया कोन्द्रातियेवना ने परेशानी के साथ अपना सिर मोड़ा और मुझपर उसकी नज़र पड़ी।

"अन्तोन सेम्योनोविच! ओह, अन्तोन सेम्योनोविच!"

उसने मुझे एक ओर खींचा और व्यग्रता के साथ फुसफुसाई:

"सुनो, यह एकदम भयानक है। ज़रा सोचो तो! देखो न, वह एक स्त्री है, सुन्दर स्त्री! लेकिन मैं केवल इसी लिए नहीं कह रही थी कि वह सुन्दर है... बेशक... यह बन्द होना चाहिए!"

"मारिया कोन्द्रातियेवना, तुम चाहती क्या हो?"

"चाहती क्या हूं? बस रहने दो, दानव बनने का अभिनय न करो!"

"अच्छा, जी!"

"हां, दानव! जब देखो तब अपना हित, जब देखो तब वही हिसाब-किताब – क्यों? अरे, सन्तरी को यह सब कुछ करने दो, है न?"

"लेकिन सुनो तो, वह वेश्या है... एक ऐसे समूह में जिसमें लड़के हैं?"

"अपने इन तर्कों को अपने पास ही रखो, तुम कमबख़्त... शिक्षा-विद!"

इस अपमान से मैं पीला पड़ गया। भन्नाकर कहा:

"अच्छी बात है। यह इसी क्षण मेरे साथ कोलोनी जाएगी।"

मारिया कोन्द्रातियेवना ने मेरे कंधों पर हाथ रखा:

"प्रिय मकारेन्को, ओह, तुम कितने अच्छे हो! शुक्रिया, बहुत शुक्रिया!"

लपककर वह लड़की के पास पहुंची, कंधों से उसे थामा, फुसफुसाकर उसके कानों में कुछ कहा। सन्तरी दर्शकों पर चिल्लाया:

"यहां मुंह बाए क्यों खड़े हो? क्या समझते हो कि यहां सिनेमा हो रहा है? जाओ और अपना काम देखो!"

इसके बाद उसने थूका, अपने कंधों को बिचकाया और वहां से चल गया।

मारिया कोन्द्रातियेवना लड़की को मेरे पास लिवा ले गई जो इस समय भी मुसकरा रही थी।

"आओ, तुम्हारा परिचय करा दूं – वेरा बेरेज़ोव्स्काया। यह कोलोनी में जाने को राज़ी है... वेरा, यह तुम्हारे संचालक हैं। बहुत भले आदमी हैं। वहां तुम बिलकुल ठीक रहोगी।"

वेरा ने मुझपर भी मुसकान न्योछावर की।

"मैं चली चलूंगी..."

मारिया कोन्द्रातियेवना से हमने विदा ली और बर्फ़-गाड़ी में बैठ गए।

"तुम्हें ठंड लगती होगी," सीट के नीचे से घोड़े का कम्बल निकालते हुए मैंने कहा।

वेरा ने अपने आपको घोड़े के कम्बल में लपेट लिया, और छलछलाते हुए पूछा:

"मैं वहां कोलोनी में क्या करूंगी?"

"तुम पढ़ोगी और काम करोगी।"

वेरा काफ़ी देर तक मौन साधे रही। फिर अचानक स्त्रियों जैसी मनमौजी आवाज़ में फूट पड़ी:

"ओ, भगवान! मैं पढ़ूँगी-वढ़ूंगी नहीं। आपने भी क्या सोचा!"

रात घिरती आ रही थी – घटाटोप, अंधियारी, अशुभ की सूचना देती। अब हम खेत की बटिया पर से गुज़र रहे थे, चिकनी सतह पर से फिसलते हुए। मैंने धीमे से – इस तरह की कोचवान की गद्दी पर बैठा सोरोका न सुन सके – वेरा से कहा:

"हमारे सभी लड़के और लड़कियां पढ़ते हैं, और तुम भी पढ़ोगी।

तुम एक बहुत अच्छी छात्रा बनोगी और एक अच्छे जीवन की तुम्हारे लिए शुरुआत होगी।"

वह मेरी ओर झुक आई, और ज़ोरों से बोली

"एक अच्छा जीवन... ओह, अंधेरा कितना घना होता जा रहा है! मुझे डर लगता है... कहां ले जा रहे हो तुम मुझे?"

"चुप बैठी रहो!"

वह चुप हो गई। हमने वनखंडे में प्रवेश किया। सोरोका धीमी आवाज़ में किसी को कोस रहा था—सम्भवतः जिस किसी ने भी इस अंधेरे और जंगल के तंग रास्तों का आविष्कार किया था, उसे।

"मैं तुम्हें एक बात बताऊं .." वेरा फुसफुसाई।

"कह डालो।"

"आप जानते हैं कि क्या? मैं गर्भ से हूं.. "

कुछ क्षण बाद मैंने कहा:

"यह सब अपने मन से तो गढ़कर नहीं कह रही हो क्यों?"

"नहीं... मन से गढ़ने की भला मुझे क्या ज़रूरत है? यह सच है, वाक़ई सच है।"

दूर कोलोनी की रोशनियां टिमटिमा रही थीं। हमने फिर फुस-फुसाना शुरू किया।

"तुम्हारे लिए हम इसे रफ़ा-दफ़ा कर देंगे" मैंने कहा, "कितने महीने का है?"

"दो।"

"हम इसे रफ़ा-दफ़ा कर देंगे।"

"वे हंसी उड़ा देंगे!"

"कौन हंसी उड़ा देगा?"

"तुम्हारे... लडके..."

"किसी को पता नहीं चलेगा।"

"वे सब पता लगा लेंगे।"

"नहीं। केवल मुझे मालूम होगा, और तुम्हें। और किसी को नहीं।"

वेरा बेशर्मी के साथ हंसी।

"ओह, तो फिर चलो!"

मैंने कुछ नहीं कहा। क़दमचाल से हम ढलवान पर चढ़े जो कोलोनी तक जाता था। सोरोका बर्फ़-गाड़ी पर से उतर आया और घोड़े के सिर से लगा हुआ, सीटी बजाता पैदल चलने लगा। वेरा अचानक मेरे घुटनों पर दोहरी हुई और फूट-फूटकर रोने लगी।

"इसे क्या हुआ?" सोरोका ने पूछा।

"मुसीबत में है।"

"घर के लोगों की वजह से, शायद," सोरोका ने अटकल लगाई। "ओह, इन घरवालों के होने से बुरी और कोई भी चीज़ नहीं होती!"

वह फिर अपनी गद्दी पर जा बैठा और अपने चाबुक को उसने गरसराया।

"दुलकी चाल से, साथी 'मेरी', दुलकी चाल से, हां ठीक, इस तरह!"

अपने कोलोनी के अहाते में हमने प्रवेश किया।

मारिया कन्द्रातियेवना तीन दिन में ख़ारकोव से लौट आई। वेरा की मुसीबत का मैंने उससे कोई ज़िक्र नहीं किया। कोई एक सप्ताह बाद हमने कोलोनी में प्रकट किया कि वेरा को अस्पताल भेजना होगा, उसके गुर्दे में तकलीफ़ है। विनम्र और उदास वह अस्पताल से लौटी और धीमी आवाज़ में उसने मुझसे कहा:

"अब मुझे क्या करना होगा?"

मैंने एक क्षण सोचकर विनम्र अन्दाज़ में जवाब दिया:

"अब हम जीना शुरू करेंगे।"

उसकी परेशान और सूनी नज़र कहती प्रतीत होती थी कि उसके लिए सबसे ज़्यादा कठिन या विमूढ़ बना देनेवाली अगर कोई चीज़ तो वह थी – जीना।

निस्संदेह, वेरा वेरेज़ोवस्काया हमारे साथ कुरियाज जाएगी। और जैसा कि प्रकट हुआ, सभी हमारे साथ जानेवाले निकले – वे बीस नवागन्तुक भी जिन्हें शिक्षा की जन-कमिसरियट ने, मेरी रणनीति संबंधी योजनाओं का ज़रा-सा भी ख़याल किए बिना, अभी हाल ही मेरे सिर थोप दिया था। कितना अच्छा होता अगर अन्य कोई नहीं बल्कि गोर्की कोलोनी के कसे-परखे हुए ग्यारह दस्ते मेरे साथ कुरियाज जा सकते। ये दस्ते हमारे कठिन इतिहास के छः वर्षों में कंधे से कंधा

भिड़ाकर आगे बढ़े थे। वे समान विचारों, परम्पराओं, अनुभवों, आदर्शों और परिपाटियों से प्रचुर मात्रा में लैस थे। उनके सम्पर्क में मैं अनुभव करता था कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं। कितना अच्छा होता अगर ये नवागन्तुक यहां न होते – जो, दस्तों में घुले-मिले होने पर भी, हर कहीं और हर जगह नज़र आते तथा मुझमें बेचैनी का संचार करते थे – उनके चलने, बोलने और देखने का ढंग ठीक नहीं था। उनके चेहरे अभी भी 'निम्न कोटि' के थे।

लेकिन चिन्ता नहीं – मेरे ग्यारह दस्ते तो इस्पात के बने थे। लेकिन कितनी बड़ी दुर्घटना हो अगर ये ग्यारह छोटे कुरियाज में जाकर बण्टाधार हो जाएं! अग्रिम मिश्रित की रवानगी के पहले मेरा हृदय रंज और विमूढ़ता में डूबा था। और सांझ की गाड़ी से जुरिन्स्काया आ मौजूद हुई। दफ़्तर में मेरे साथ वह दाखिल हुई, दरवाज़े को उसने वंद किया, और कहने लगी:

"अन्तोन सेम्योनोविच! मुझे डर लगता है! अभी भी ज़्यादा देर नहीं हुई है। आप अभी भी अपना हाथ खींच सकते हैं!"

"क्यों, क्या कोई घटना घटी है, ल्युवोव सावेलियेवना?"

"मैं कल कुरियाज गई थी। भयानक है वह! बरदाश्त से बाहर! मैंने जेल देखी है, आप जानो, और मोरचे पर भी मैं रही हूँ लेकिन अपने जीवन में इतनी पीड़ा कभी नहीं अनुभव की जितनी कि अब।"

"लेकिन बात क्या हुई?"

"मैं नहीं जानती, मेरी समझ में नहीं आता कि शब्दों में कैसे प्रगट करूं। ज़रा सोचने की कोशिश कीजिये – तीन सौ लड़के, अत्यन्त पतित, कड़ुवाहट भरे, काहिली में गले तब डूबे – जीवन का, आप जानो, एक तरह का वन्य, पाशविक ह्रास... अराजकता भी इसे नहीं कहा जा सकता... और ग़रीबी, दुर्गन्ध, जुएं! आपको नहीं जाना चाहिए। यह पागलपन होगा!"

"एक मिनट ठहरो। कुरियाज ने इतनी भयानक छाप तुम्हारे हृदय पर छोड़ी है, और ठीक इसी लिए उसके बारे में कुछ करना और भी ज़रूरी है।"

ल्युबोव सावेलियेवना ने एक भारी उसास छोड़ी।

"ओह, इसे एक वाक्य में नहीं टाला जा सकता। बेशक, कुछ

करना चाहिए। यह हमारा कर्त्तव्य है। लेकिन आपके समूह को बलि का बकरा नहीं बनना चाहिए। आप, अन्तोन सेम्योनोविच, उसकी क़दर नहीं जानते। वह संजोकर रखने की, विकसित करने और बेहतर बनाने की चीज़ है, उसे यों ही चाहे जिस सनक में लाकर खाई में नहीं झोंका जा सकता।"

"किसकी सनक में?"

"मैं नहीं जानती कि किसकी," ल्युबोव सावेलियेवना ने ऊब के साथ कहा। "मेरा मतलब आपसे नहीं है – आपकी स्थिति अपनी एक ख़ास अहमियत रखती है। लेकिन मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि आपके दुश्मनों की संख्या उससे कहीं अधिक है जितना कि आप जानते हैं।"

"हां तो फिर – इससे क्या?"

"ऐसे लोग हैं जो आपको कुरियाज में चौपट होते देख घी के दिये जलाएंगे।"

"यह मैं जानता हूं।"

"वही तो! सो हमें समझ से काम लेना चाहिए। अच्छा हो कि इसे छोड़ दें। अभी ज़्यादा देर नहीं हुई है।"

जुरिन्स्काया के प्रस्ताव पर मैं केवल मुसकरा सकता था।

"तुम हमारी मित्र हो। तुम्हारे स्नेह और देख-संभार की हम इतनी क़दर करते हैं कि उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। लेकिन, माफ़ करना, क्या तुम्हारा यह रवैया पुराने शिक्षाविदों जैसा नहीं है?"

"मैं कुछ समझी नहीं।"

"कुरियाज में संघर्ष न केवल कुरियाज तथा मेरे दुश्मनों के लिए आवश्यक है, बल्कि वह हमारे लिए भी आवश्यक है, हमारे कोलोनी-वासियों में से प्रत्येक के लिए आवश्यक है। यह संघर्ष तत्त्वतः महत्त्वपूर्ण है। ज़रा कोलोनीवासियों के बीच जाकर देखो, तो तुम्हें पता चल जाएगा कि पीछे पांव हटाना असम्भव है।"

अग्रिम दस्ता अगली सुबह ख़ारकोव के लिए रवाना हो गया। ल्युबोव सावेलियेवना भी उसी डिब्बे में हमारे साथ विदा हुई।

२. अग्रिम मिश्रित

वोलोखोव अग्रिम मिश्रित का मुखिया था। वह मितभाषी था, कभी हाव-भाव नहीं जताता था, और उसके चेहरे पर विरले ही कोई परिवर्त्तन दिखाई देता था। लेकिन वह घटनाओं या व्यक्तियों के प्रति अपना रुख व्यक्त करना जानता था। उसका यह रुख हमेशा अपने भीतर अलस व्यंग्य तथा अचल आत्मविश्वास का पुट संजोये होता था। यों ये गुण अपने आदिम रूप में, सभी आत्मसम्मानी लफ़ंगों में निहित होते हैं, लेकिन समूह के भीतर ढल तथा निखरकर वे व्यक्तित्व को एक तरह की शुभ्रता तथा संयमित गरिमा से, शान्त और अजेय शक्ति के गहरे संचरण से मंडित कर देते हैं। संघर्ष में ऐसे ही कमाण्डरों की ज़रूरत होती है। उनकी साहसिकता तथा आत्मसंयम पर भरोसा किया जा सकता है। यह तथ्य कि वोलोखोव कुरियाज तथा कुरियाजवासियों को लेकर क्षण-भर के लिए भी परेशान नहीं होता था, मेरे लिए भारी सन्तोष का विषय था। जब-तब, कभी न चुकनेवाली चिचियाहट से लड़के जब उसे मजबूर करते, तो अनमनेपन से वह कह देता :

"कुरियाज लड़कों को लेकर क्यों बेकार कुलाबे मिलाते हो। देख लेना, अन्य लोगों की भांति वे भी ऐसे ही हाड़-मांस के बने हुए नज़र आएंगे।"

लेकिन इससे अग्रिम मिश्रित दस्ते की बनावट के प्रति अत्यन्त गम्भीरता बरतने में उसने कोई रुकावट अनुभव नहीं की। सचेत भावना और ख़ामोशी के साथ प्रत्येक उम्मीदवार को उसने निरखा-परखा, और संक्षेप में अपने निर्णय को प्रकट किया·

"नहीं चलेगा। उसमें जीवट नहीं है।"

अग्रिम मिश्रित का संगठन बड़ी सूझ-बूझ के साथ किया गया। उनमें हर कोई कोमसोमोल सदस्य था। इसके अलावा कोलोनी में उपलब्ध सभी मुख्य धाराओं तथा विशेष दक्षताओं का उसमें प्रतिनिधित्व था। उसके सदस्य इस प्रकार थे :

१ वित्का बोगोयावलेन्स्की, जिसे कमाण्डरों की परिषद ने एक नया नाम प्रदान किया था—और नाम भी कितना शानदार था वह!

उन्होने उसका नया नामकरण किया – गोर्कोवस्की। गोर्कोवस्की दुबला-पतला और कुरूप, लेकिन फ़ॉक्स-टैरियर कुत्ते की भांति चतुर था। बहुत ही बढ़िया ढंग से अनुशासित, काम में कूदने के लिए हमेशा तैयार, हर चीज़ के बारे में अपनी एक राय तथा दूसरे लोगों को तुरन्त और निश्चयात्मक ढंग से परखने की क्षमता से सम्पन्न। गोर्कोवस्की की भारी प्रतिभा उसकी इस क्षमता में निहित थी कि वह, चाहे कैसा भी लड़का हो, उसके आर-पार देख सकता था। पहली ही नज़र में – कभी न चुकनेवाली शुद्धता के साथ – उसके बारे में एक निष्कर्ष पर पहुंच जाता था। साथ ही, आवश्यक तत्त्वों को वह कभी आंखों की ओट नहीं देता था। वह जानता था कि व्यक्ति के बारे में अपनी धारणा को समूह की परिभाषा में किस प्रकार सम्मिलित किया जाए। इस प्रकार समूह के बारे में अपनी जानकारी को वह समृद्ध बनाता और प्रवृत्तियों, विशिष्टताओं तथा टिपीकल प्रक्रियाओं को नोट करता था।

२. मित्का जेवेली – हमारा पुराना मित्र, सच्ची गोर्की भावना का अत्यन्त सफल तथा मुग्धकारी प्रवर्त्तक। मित्का का विकास सुखद हुआ था और वह एक कमनीय युवक बन गया था। उसका माथा सुघड़ था और उसकी थोड़ी तिर्छी, कोयले-सी काली आंखें ख़ूब चमकती थीं। मित्का का अनुकरण करनेवाले छोटे लड़कों की कोलोनी में कभी कमी नहीं होती थी। वे उसके बोलने के प्रेरणादायक ढंग का, साथ ही उसके संक्षिप्त तथा अप्रत्याशित अंग संचालन का, उसके कपड़ों के साफ़-सुथरेपन और क़ायदे से उन्हें पहनने का, उसकी चाल-ढाल और कोलोनी के प्रति उसकी गहरी, साथ ही प्रफुल्ल तथा मौज भरी आज्ञाकारिता का अनुसरण करने का भी प्रयास करते थे। कुरियाज के लिए हमारा प्रस्थान, मित्का के अनुसार, एक महत्त्वपूर्ण मामला था जिसकी भारी राजनीतिक अहमियत थी। उसका पक्का विश्वास था कि हमने 'बच्चों का संगठन' करने के सही रूपों का आविष्कार किया था। वह समझता था कि सर्वहारा जनतंत्र की भलाई के लिए हमारे इस आविष्कार को बाहर दूर-दूर तक प्रसारित होना चाहिए।

३. मिख़ाइल ओवचारेन्को – जो प्रतिभा का ऐसा ख़ास धनी नहीं था, लेकिन वह एक शानदार कमकर था, कोलोनी और उसके हितों

के प्रति अत्यन्त उत्साहपूर्ण। मिशा का अतीत अत्यन्त पेचीदा था जिसे सुलझाकर पेश करना खुद उसके बूते से भी बाहर था। सोवियत संघ के क़रीब-क़रीब सभी नगरों में वह रह चुका था, लेकिन इनमें से एक भी नगर ने उसकी जानकारी या विकास में कोई योग दिया नहीं मालूम होता था। कोलोनी से वह पहले दिन से ही प्रेम करने लगा था, और शायद ही कभी ऐसा हुआ हो जब उसके नाम पर काला धब्बा लगा हो। मिशा दुनिया-भर के काम करना जानता था, लेकिन वास्तव में माहिर वह किसी चीज़ का नहीं था। कारण, वह किसी एक विषय-वस्तु पर काम नहीं कर सकता था या अधिक दिनों तक किसी एक जगह नहीं टिक सकता था। लेकिन इस कमी को उसकी एक अन्य विशेषता पूरा कर देती थी – प्रबन्ध-कार्य की उसमें वास्तविक प्रतिभा थी। वह दस्ते के काम का संयोजन कर सकता था, सामान पैक करने तथा लाने-ले जाने के काम का संगठन कर सकता था। सदा तेज़ गति से, तुर्त-फुर्त और सफलतापूर्वक वह काम करता था। काम करते समय, बीच-बीच में काम-काजी अन्दाज़ से गुर्राता और फ़तवे जारी करता रहता। केवल इसलिए कोई उनका बुरा नहीं मानता, क्योंकि वे हमेशा मिशा की सद्भावनापूर्ण मूर्खता तथा उसके कभी न चुकनेवाली दयालुता की सुखद चाशनी में पगे होते थे। मिशा ओवचारेन्को कोलोनी के लड़कों में सबसे ज़्यादा मज़बूत था – सिलान्ती ओत्चेनाश से भी ज़्यादा मज़बूत। मिशा को दस्ते के लिए चुनते समय वोलोखोव के ध्यान में निश्चय ही उसका यह गुण प्रमुख रूप से रहा होगा।

४. देनिस कुदलाती – कुरियाज अभियान की अवधि में कोलोनी में सबसे प्रबल व्यक्तित्व। कुदलाती आम सभा में बोलने खड़ा होता और जैसे ही किसी कोलोनीवासी का नाम लेता तो उसका रक्त सुन्न पड़ जाता। दुष्कर्मी को वह कीचड़ में रौंदकर रख देता – अत्यन्त प्रचंडता और अत्यन्त सम्पूर्णता के साथ, और विश्वसनीय अन्दाज़ में कोलोनी से उसके विष्कासन की मांग करता। यह तथ्य उस भयानकता में और भी ज़्यादा वद्धि कर देता कि वह वास्तव में एक चतुर जीव था। उसके तर्क इतने वज़नी होते थे कि बहुतों को कुचलकर रख देते थे। उसका गहरा और अडिग विश्वास था कि कोलोनी एक उपयोगी चीज़ है, मज़बूती के साथ ढली हुई और दृढ़ता के साथ प्रतिष्ठित। शायद

कोलोनी उसकी कल्पना में ख़ूब तेल दी हुई तथा दुरुस्त किसान-गाड़ी के समान थी जिसमें बैठकर आराम के साथ हज़ारों मील की यात्रा की जा सकती थी। और इसके बाद थोड़ा ठोक-पीटकर और तेल देकर उसे अगले एक हज़ार मील तक और ले जाया जा सकता था। हालांकि कुदलाती का बाह्य आकार-प्रकार असली कुलक जैसा दिखता था, और हमारे नाटक-घर में हमेशा वह केवल कुलक का अभिनय करता था, लेकिन हमारी कोमसोमोल इकाई का वह एकदम पहला संगठन-कर्त्ता तथा अत्यन्त सक्रिय कार्यकर्त्ता था। वह एक सच्चा गोर्कीआइट था। बेकार के शब्दों में कभी अपनी शक्ति ख़र्च नहीं करता था। वक्ताओं को वह मौन उपेक्षा से देखता था और लम्बे भाषणों से वास्तव में घिन्नाता था।

५. येवगेनीयेव – कमाण्डर ने उसे इसलिए चुना था कि उत्पातियों से वह ठीक तरह से निपट सकेगा। वह एक अच्छा कोमसोमोल सदस्य था, मज़बूत और ज़िन्दादिल साथी। लेकिन उसके बोलने का ढंग और उसके सारे तौर-तरीक़े सड़कों और 'सुधारगृहों' में उसके तूफ़ानी दिनों की याद दिलाते थे और एक कुशल अभिनेता की भांति, जो कि वह था, ज़रूरत पड़ने पर, प्रतिपक्षी से ख़ुद उसकी बोली में बात करने में वह किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करता था।

६. जोर्का वोल्कोव – कोमसोमोल संगठन में कोवाल का दाहिना हाथ, हमारे मिश्रित दस्ते में राजनीतिक मिशन की भूमिका अदा करने-वाला और नये विधान का रचयिता। जोर्का जन्मजात राजनीतिज्ञ था – जोशीला, विश्वासी, सुदृढ़। उसके बारे में कोवाल ने कहा :

"जोर्का उनके राजनीतिक स्नायुओं की निगरानी करेगा। लगता है जैसे वे – कमबख़्त कहीं के – अभी भी साम्राज्यवादी काल में रह रहे हैं? अगर लड़ने की नौबत आई तो जोर्का उसमें भी पीछे नहीं रहेगा।"

७ और ८. तोस्का सोलोवियोव और वान्का शेलापूतिन – नयी पौध के प्रतिनिधि। दोनों बड़ी चुस्ती से संवारे हुए लहरीले बालों से लैस। तोस्का के बाल सुनहरे, और वान्का के भूरे थे। तोस्का देखने में सुन्दर था, किशोरपन की ताज़गी लिए। वान्का की नाक पिचकी हुई और चेहरे से ज़िन्दादिली और द्वेष झलकता हुआ।

नौवां और सबसे अन्तिम ... कोस्तिया वेत्कोवस्की था। कोलोनी में उसका पुन: आगमन अत्यन्त द्रुत, कावीत्वहीन और काम-काजी ढंग से हुआ था। हमारे रवाना होने से तीन दिन पहले कोस्तिया कोलोनी में लौटकर आया – क्षीण, पीतवर्ण और सकपकाया-सा। मुंह-बन्द अन्दाज़ से सबने उसे ग्रहण किया। केवल एक लापोत ही ऐसा था जिसने उसे चिढ़ाया:

"कहो, काकेशस की ख़तरनाक जगह की सैर कर आए – 'मुझे उस पार ले चलो'?"

कोस्तिया आत्मगौरव से मुसकराया।

"दुत्त! मैं वहां नहीं गया था।"

"यह बुरा हुआ!" लापोत ने कहा। "बेकार ही वह वहां खड़ी की गई!"

वोलोख़ोव ने घनिष्ठता के अन्दाज़ में अपनी आंखों को कोस्तिया की ओर सिकोड़ा।

"सो तुम दुनिया-भर की नियामतों को बटोरने में जुटे रहे – क्यों?"

कोस्तिया ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया.

"सो तो है।"

"अच्छा तो बोलो, किस चीज़ से तुम अब अपना मुंह मीठा करना पसन्द करोगे?"

कोस्तिया ज़ोरों से हंसा:

"इसके लिए कमाण्डरों की परिषद का मैं इन्तज़ार करूंगा," उसने कहा। "जानते ही हो, मीठी चीज़ें तैयार करने में वे कितने दक्ष हैं – और कड़ुवी भी ..."

"तुम्हारे लिए पकवानों की सूची खोलकर बैठने का हमारे पास समय नहीं है," वोलोख़ोव ने संजीदगी से कहा। "लेकिन एक बात मैं तुम्हें बताता हूं – आल्योशा वोल्कोव की एड़ी मोच खा गई है। अग्रिम दस्ते में तुम उसकी जगह ले सकते हो। क्यों लापोत, तुम्हारी क्या राय है?"

"ख़याल अच्छा है, मेरी समझ में।"

"और परिषद?"

"इस समय हमने मार्शल लॉ घोषित कर रखा है – बिना परिषद के हम इसका निर्णय कर सकते हैं।"

और सो, खुद उसके और हमारे लिए भी अप्रत्याशित रूप में, बिना किसी कार्यवाही या मनोविज्ञान के, कोस्तिया अग्रिम मिश्रित दस्ते में शामिल हो गया और अगले ही दिन कोलोनी की पोशाक पहने वह जहां-तहां दिखाई देने लगा।

एक नया शिक्षक इवान देनिसोविच किरगीज़ोव भी हमारे साथ रवाना हुआ। इवान इवानोविच हमें छोड़कर जा रहा था और उसकी जगह पर इस आदमी को मैंने लिया था। पिरोगोव्का में शिक्षण-विज्ञान की बलि-वेदी से उबारकर मैं उसे अपने साथ ले आया था। अनजान दर्शक को, बाहर से देखने पर, वह एक निरा देहाती शिक्षक मालूम होता, लेकिन वास्तव में वह ठीक उसी कोटि का नेक हीरो था जिसे रूसी साहित्य इतने दिनों से और इतने अध्यवसाय के साथ खोजने में जुटा था। वह तीस वर्ष का था – सहृदय, समझदार, शान्त और सबसे बढ़कर यह कि मेहनती। उसका यह आखिरी गुण ऐसा था जिसका, रूसी साहित्य का कोई भी हीरो – नेक नायक या खल नायक – दावा नहीं कर सकता था। ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसे इवान देनिसोविच न कर सके। हर घड़ी वह कुछ न कुछ करता रहता था, हालांकि थोड़ी दूर से देखने पर हमेशा ऐसा लगता था जैसे अभी कुछ और काम भी उसे दिया जा सकता है। लेकिन निकट से जांचने पर मालूम होता कि उसकी व्यस्तता में और वृद्धि करने की ज़रा भी गुंजाइश नहीं है, लेकिन इससे पहले कि आप अपनी ज़िह्वा को रोकने में समर्थ हों, आपकी अचकचाहट की परवाह न कर वह हकला पड़ती:

"इवान देनिसोविच, वह ... भौतिक विज्ञान का पूरा साज़-सामान पैक करना है . ."

और इवान देनिसोविच जो अभ्यास की कापियों या किसी बक्से से उलझा हुआ होता, अपने आपको सीधा करता और मुस्कराते हुए कहता:

"भौतिक विज्ञान का साज़-सामान? हां .. बिल्कुल ठीक! कुछ लड़कों को मैं पकड़ लूंगा, और वह भी हो जाएगा . "

उलझन का अनुभव करते हुए आप वहां से खिसक आते हैं और

इवान देनिसोविच जो आपके अशिष्ट व्यवहार को अब तक भूल भी चुका है, मधुर आवाज़ में किसी से कहता है:

"जाओ, और ज़रा कुछ लड़कों को तो ले आओ..."

सुबह का समय था, जब हम खारकोव पहुंचे। जन-शिक्षा विभाग का इंस्पेक्टर यूरिएव हमें लेने आया था। उसका खिला हुआ चेहरा, मई की उजली सुबह, हमारे अभियानी उत्साह से पूर्णतया मेल खा रहे थे। वह कंधों को थपथपाता तथा चहकता हुआ इधर से उधर घूम रहा था:

"तो ये हैं गोर्कीआइट। बहुत ख़ूब! बहुत ख़ूब! ओह, ल्युबोव सावेलियेवना भी यहां मौजूद हैं! बहुत खूब! जानते हो मेरे पास कार है, खलाबूदा को साथ लेकर हम सीधे कुरियाज पहुंच सकते हैं। क्या आप भी चलेंगी, ल्युबोव सावेलियेवना? बहुत ख़ूब! और लड़के रिजोव के लिए लोकल ट्रेन पकड़ सकते हैं। रिजोव से कुछ ज़्यादा दूर नहीं है – केवल एक-डेढ़ मील है। चरागाहों को पार करते हुए जा सकते हैं। लेकिन... मैं समझता हूँ, पहले कुछ दाना-पानी हो जाना चाहिए – या कुरियाज पहुंचने तक इसके लिए इन्तज़ार किया जाए?"

लड़कों ने उत्कण्ठा के साथ मेरी ओर देखा और व्यंग्य के साथ यूरियेव की ओर। साहसिकता की भावना ने उन्हें अत्यन्त स्पन्दनशील बना दिया था। उनके विद्युत-संचारित स्पर्श-सूत्र, खारकोव से आए उनकी दिलचस्पी के इस पहले पदार्थ – यूरियेव – की ओर उत्सुकता के साथ फैले थे।

"देखिये न," मैंने कहा, "हमारी अग्रिम मिश्रित दस्ता एक तरह से गोर्की कोलोनी का पहला दस्ता है। अगर हमें मोटर में जाना है, तो वे भी मोटर में ही चलेंगे। मैं समझता हूं, हम दो मोटर हासिल कर सकते हैं।"

यूरियेव ख़ुशी से उछल पड़ा:

"भई ख़ूब! सच, बहुत ख़ूब! वे हर चीज़... अपने ढंग से करते हैं। है न यह शानदार? और आप जानते हैं कि जन-शिक्षा विभाग के ख़र्च से मैं मोटर किराये पर ले आऊंगा। और सुनो, मैं उनके साथ... लड़कों के साथ चलूंगा..."

"तो चलिये फिर," अपने दांतों को झलकाते हुए वोलोखोव ने कहा।

'शानदार! बहुत शानदार! अभी जाते हैं हम! चलिए, किराये पर मोटर ले आएं!"

वोलोखोव ने आदेश दिया:

"तोस्का, तुम इनके साथ जाओ।"

"अच्छा!" थोड़ा झुकते हुए तोस्का चहचहाया। यूरियेव जो तोस्का पर अपनी उत्साहपूर्ण नज़र जमाए था, अपने हाथों को मलते हुए नाच-सा उठा।

"क्या ख़ूब! क्या ख़ूब!" वह दो बार चहका।

लपककर वह चौक की ओर चल दिया, मुड़कर तोस्का की ओर देखते हुए जो स्वभावत: स्टेशन पर कूद-फांद न करके अग्रिम मिश्रित का सदस्य होने की अपनी गरिमा को आंखों की ओट नहीं कर सकता था।

हमारे लड़कों ने नज़रों का आदान-प्रदान किया। गोर्कोवस्की ने धीमे से पूछा:

"कौन है... यह मसख़रा जीव?"

एक घंटा बीतने से पूर्व ही तीन मोटरें कुरियाज पहाड़ी पर पहुंच गईं और पुराने गिरजे की ख़स्ताहाल दीवार की ओट में जाकर खड़ी हो गईं। कुछ झबरीली, गंदी आकृतियां हमारी मोटरों की ओर बढ़ीं, अपनी लम्बी चिथड़ा हुई पतलूनों को अपने पीछे लथेड़ती हुई। देवपुत्रों की भांति कमनीय और न्यायाधीशों की भांति कठोर गोर्कीआइटों की छवि उनमें किसी ख़ास उत्कण्ठा का संचार करती मालूम नहीं होती थी।

दो शिक्षक हमारे निकट आए, उन्होंने नज़रों का आदान-प्रदान किया जिनमें उनका वैरभाव साफ़ झलक रहा था।

"इन्हें रखा कहां जाएगा?" उन्होंने पूछा। फिर मेरी ओर मुड़े: "आपके लिए हम शिक्षकों के कमरे में बिस्तरा लगा देंगे, और लड़के शयनागारों में अपने लिए जगह खोज लेंगे।"

"हमें इसकी चिन्ता नहीं। हम कहीं भी जगह निकाल लेंगे। तुम्हारे मैनेजर कहां हैं?"

मालूम हुआ कि मैनेजर शहर गया हुआ था। लेकिन एक महानु-

भाव जो चिकनाई के दाग़ों से सज्जित हल्के भूरे रंग की पतलून पहने थे, इस अन्याय को नज़र-अन्दाज़ करते हुए कि बारी न होने पर भी उन्हें ड्यूटी बजानी पड़ रही है, हमें कोलोनी का दर्शन कराने के लिए राज़ी हो गए। मेरे लिए यहां कोई नवीनता नहीं थी, न ही यूरियेव दृश्यदर्शन के लिए ऐसा कोई खास लालायित था। जुरिन्स्काया उदास मौन साधे थी। लेकिन लड़के अधिकृत पथप्रदर्शक के बिना ही कोलोनी को देखने के लिए लपक गए। इवान देनिसोविच ने भी फ़ुरसती अन्दाज़ में उनका अनुसरण किया।

अपनी छड़ी से विभिन्न स्थलों की ओर इंगित करते और अपने संगठनात्मक कृतित्व का बखान करते हुए खलाबूदा ने कुरियाज सम्पदा के तत्वों को गिनाना शुरू किया जो, अन्त में, एक सामान्य वस्तु—रई के—इर्द-गिर्द केन्द्रित होकर रह गई। लड़के दौड़ते हुए लौट आए। उनके चेहरों पर विमूढ़ता के भाव थे। कुदलाती की आंखें कहती प्रतीत होती थीं। "आपको भी, अन्तोन सेम्योनोविच, यह क्या सूझा जो इस जंजाल में अपने आपको फंसा लिया?"

मित्का जेवेली की आंखें ग़ुस्से से चमक रही थीं। हाथों को अपनी जेबों में खोंसे वह बराबर कंधे के ऊपर से इर्द-गिर्द देख रहा था। उसकी इस हरकत में हिक़ारत का भाव था जो जुरिन्स्काया से छिपा नहीं रह सका।

"क्यों, लड़को, तुम्हें यह जगह अच्छी नहीं लगी?" उसने पूछा।

मित्का ने कोई जवाब नहीं दिया। अचानक वोलोख़ोव हंसी से दोहरा हो गया।

"आज या कल यहां मुष्टिका-युद्ध होकर रहेगा।"

"क्या मतलब?" ल्युबोव सावेलियेवना ने पीली पड़ते हुए पूछा।

"इन लोगों से हमें सुलझना होगा," वोलोख़ोव ने दो उंगलियों से गले का कालर दबोचते और काले बालोंवाले एक़ छोटे से लड़के को जुरिन्स्काया की आंखों के सामने धकेलते हुए बताया। लड़का नंगे पांव और नंगे सिर था और बदन पर एक लम्बी जाकेट पहने था।

"ज़रा इसके कानों पर नज़र डालकर देखो।"

छोटा लड़का आज्ञाकारी के साथ घूम गया। सचमुच, उसके कान देखने लायक़ थे—केवल यही नहीं कि वे काले-कलूटे थे कि जीवन

की टूट-फूट और छीजन ने धूल की एक चमकीली पपड़ी उनके ऊपर जम जाने दी थी, बल्कि ये काम ख़ून रिसते घावों के क्षुब्ध चकत्तों, अध-भरे खुजली के ज़ख़्मों और अंभौरियों की बन्दनवार सजाए थे।

"तुम्हारे कानों को यह क्या हुआ?" जुरिन्स्काया ने पूछा।

छोटा लड़का दबा-सा मुसकराया और अपनी एक टांग को दूसरी से रगड़ने लगा। उसकी टांगों की हालत भी उसके कानों की हालत से होड़ लेती मालूम होती थी।

"ये फोड़े हैं," लड़के ने फुसफुसी आवाज़ में जवाब दिया।

"तुम कितने दिनों में मर जाओगे?" तोस्का ने पूछा।

"क्यों, बहुतों का यही हाल है, और अभी तक उन में से कोई मरा नहीं!"

जाने क्यों, मुश्किल से ही कोई कोलोनीवासी वहां नज़र आ रहा था। गंदगी से अटे क्लब में, थूक के थक्के जमी पैड़ियों और मैले छितरे पथों पर कुछ उदास आकृतियां मंडरा रही थीं। अनसंवारे और बदबूदार शयनागार, जहां सूरज की किरणें भी मक्खियों के दाग़ लगी खिड़कियों के पल्लों को बेधकर भीतर प्रवेश नहीं कर पाती थीं, उसी प्रकार सूने पड़े थे।

"कोलोनीवासी सब कहां हैं?" मैंने पूछा।

जो व्यक्ति उस समय ड्यूटी पर था, उसने उद्दण्डता के साथ अपना मुंह दूसरी ओर किया और अपने दांतों के बीच से बुदबुदाया:

"एकदम बेकार का प्रश्न।"

क़रीब पन्द्रह वर्ष का गोल मुंहवाला एक लड़का हम लोगों के साथ आ हिलगा था।

"हां तो, लड़के, तुम्हारे जीवन का यहां क्या तौर-तरीक़ा है?" मैंने उससे पूछा।

उसने अपना समझदार चेहरा मेरी ओर उठाया जो कुरियाज के अन्य सभी चेहरों की भांति अनधुला था।

"जीवन?" उसने जवाब दिया। "जीवन क्या ऐसा होता है? लेकिन कहते हैं कि जल्दी ही अब अच्छा हो जाएगा – क्या यह सच है?"

"कौन कहते हैं?"

"लड़के कहते हैं कि जल्दी ही सब कुछ बदल जाएगा। बस एक

बात है – वे कहते हैं – अगर कुछ भी ऐसा-वैसा हुआ तो बेंत से हमें उधेड़ा जाएगा।"

"बेंत से? सो क्यों?"

"वे चोरों को पीटेंगे। और यहां चोर ख़ूब ढेर सारे हैं।"

"अच्छा, यह तो बताओ, तुम अपना मुंह क्यों नहीं धोते?"

"हम कैसे धो सकते हैं? पानी हो तो न? बिजलीघर बिगड़ा पड़ा है। पम्पों से पानी नहीं निकलता। और फिर तौलिए-अंगोछे कुछ नहीं हैं, साबुन भी नहीं है..."

"क्या वे तुम्हें कुछ नहीं देते?"

"देते थे... लेकिन हर चीज़ चुरा ली जाती थी। यहां हर चीज़ चोरी चली जाती है। और अब भंडारघर में कुछ भी नहीं बचा है..."

"सो कैसे?"

"एक रात भंडारघर पर छापा मारा गया। ताले-अरगल तोड़ डाले गए और कुछ बाक़ी नहीं छोड़ा। मैनेजर गोली दाग़नेवाला था..."

"हां तो फिर?"

"फिर क्या... उसने गोली नहीं चलाई। 'मैं गोली दाग़ता हूं,' उसने कहा, और लड़कों ने कहा – 'तो चलाओ गोली!' लेकिन उसने गोली नही चलाई, बस मिलीशिया को बुला भेजा..."

"हां तो, मिलीशिया ने फिर क्या किया?"

"सो नहीं मालूम।"

"क्या तुमने भी भंडारघर की किसी चीज़ पर हाथ साफ़ किया?"

"नहीं, मैंने नहीं किया। मैं एक जोड़ी पतलून लेना चाहता था, लेकिन वहां बड़े लड़के मौजूद थे, और जब मैं वहां पहुंचा तो कुल जमा दो कुंजियां मुझे मिलीं जो फ़र्श पर पड़ी थीं।"

"यह कब की घटना है?"

"जाड़ों की।"

"ठीक... और तुम्हारा नाम क्या है?"

"मालिकोव प्योत्र।"

हम स्कूल की दिशा में मुड़ चले। यूरियेव हमारी बातचीत का

चुपचाप सुन रहा था, ख़लाबूदा, जो कुछ पीछे रह गया था, गोर्की-आइटों से घिरा था जो दिलचस्प व्यक्तियों को ढूंढ़ लेने की आश्चर्यजनक प्रतिभा से सम्पन्न है। ख़लाबूदा अपनी लाल दाढ़ीवाले मुंह को हवा में उठाए और मोटी गांठ-गठीली लकड़ी को अपने पीछे घसीटते हुए लड़कों को फ़सलों के बारे में बता रहा था।

हमने स्कूल में प्रवेश किया। पहले यह मठ था। बाल सहायता समिति ने इसे फिर से बनवाया था। कोलोनी में एक यही इमारत ऐसी थी जिसमें शयनागार नहीं थे – एक लम्बा गलियारा जिसके दोनों ओर लम्बे, संकरे, कक्षा-कमरे बने थे। स्कूल के लिए भला इसे क्यों चुना गया? ये कमरे शयनागारों के अलावा और किसी काम के नहीं थे।

हमें एक कक्षा-कमरा दिखाया गया जिसकी दीवारें पोस्टरों तथा बच्चों के बनाए कमज़ोर चित्रों से छाई थीं। यह पायोनियरों का कमरा था। प्रत्यक्षतः यह कमरा ख़ास तौर से मुआयना कमीशनों और राजनीतिक दिखावे के लिए रखा गया था – कुंजी की खोज में हमें आध घंटे तक इन्तज़ार करना पड़ा।

सुस्ताने के लिए हम एक बेंच पर बैठ गए। मेरे लड़कों का उद्वेग अब शान्त हो गया था। वित्का सावधानी के साथ मेरे कंधे की ओट में से फुसफुसाया :

"अन्तोन सेम्योनोविच! हम इस कमरे में सोएंगे। सब एक साथ। इतना है कि उनके बिस्तरे न लेना। आप जानो, वे जुओं से ... हे भगवान!"

जेवेली मेरी ओर झुका, वित्का के घुटनों के ऊपर से :

"लड़कों में कुछ तो यहां बिलकुल ठीक हैं। लेकिन बाप रे, अपने शिक्षकों से वे कितनी नफ़रत करते हैं! वे यूं काम नहीं कर सकते जब तक ..."

'जब तक क्या?"

"जब तक कि उनकी टांगें न घसीटी जाएं!"

कोलोनी को अपने चार्ज में लेने की विधि के बारे में तय करना था। संचालक एक बग्घी में शहर से लौट आया था। उसके कुंद, बेरंग चेहरे की ओर देखते हुए मैंने सोचा – ऐसे जीव को अदालत के हवाले

करना भी बेकार है! कौन है वह जिसने संचालक जैसे पवित्र पद पर ऐसे मनहूस जीव को नियुक्त किया?

संचालक ने हमलावरी चोला धारण किया और यह सिद्ध करने में जुट गया कि जितनी भी हो सके कोलोनी का हस्तान्तरण हो जाना चाहिए, और यह कि वह किसी भी चीज़ के लिए ज़िम्मेदार नहीं है।

यूरियेव ने पूछा:

"क्या मतलब है तुम्हारा – तुम ज़िम्मेदार नहीं होगे?"

"केवल इतना ही कि लड़के ख़तरनाक मूड में हैं। किसी तरह का भी अतिक्रमण हो सकता है। उनके पास हथियार भी तो हैं।"

"और उनका मूड इतना ख़तरनाक क्यों है? कहीं यह आपकी करतूत तो नहीं है, शायद?"

"मेरी करतूत? वे ख़ुद देख सकते हैं कि हवा का रुख़ किधर है। क्या आप समझते हैं कि वे नहीं जानते? वे सब कुछ जानते हैं।"

"क्या जानते हैं?"

"वे जानते हैं कि उनके साथ क्या बीतनेवाली है," संचालक ने अर्थसूचक अन्दाज़ में कहा, और इससे भी अधिक अर्थसूचक अन्दाज़ में उसने खिड़की की ओर रुख़ किया, मानो यह जताने के लिए कि हमारी उपस्थिति मात्र में कोलोनीवासियों के लिए अशुभ निहित है।

वित्का मेरे कान में फुसफुसाया:

"एकदम जंगली है यह। एकदम जंगली!"

"चुप रहो, वित्का!" मैंने कहा, और संचालक की ओर मुड़ा। "जितने भी अतिक्रमण होंगे – चाहे वे कोलोनी के हस्तान्तरित होने से पहले हों या बाद में – उनके लिए अगर कोई जवाबदेह होगा – तो फिर भी जितनी भी जल्दी हो इन सारी औपचारिकताओं को जल्दी-से-जल्दी निबटाने से अधिक अच्छी चीज़ हमारे लिए और कुछ नहीं हो सकती।"

तय हुआ कि हस्तान्तरण कल दिन में दो बजे होगा। समूचा स्टाफ़ – अकेले शिक्षक ही चालीस थे – बर्ख़ास्त घोषित कर दिया गया और लोगों से कहा गया कि तीन दिन के भीतर अपने कमरों को ख़ाली करके सौंप दें। साज़-सामान निबटाने के लिए मियाद पांच दिन और बढ़ा दी गई।

"और आपका सम्पत्ति-प्रबंधक कब आ रहा है?" संचालक ने पूछा।

"हमारे यहां कोई सम्पत्ति-प्रबंधक नहीं है। सामान लेने के लिए अपने छात्रों में से किसी एक को हम नियत कर देंगे!"

"छात्रों के हाथों में मैं कोई चीज़ सौंपने नहीं जा रहा हूं," संचालक ने अपने काटे खड़े करते हुए कहा।

मूर्खताओं के इस पिटारे से मैं अब झल्ला चला। और फिर, सच पूछो तो, सौंपने के लिए उसके पास था भी क्या?

"मैं परवाह नहीं करता कि काग़ज़ी कार्रवाई पूरी होती है या नहीं। मैं एक ही चीज़ चाहता हूं – वह यह' कि तीन दिन का अन्त होने तक तुम लोगों में से एक भी यहां नज़र नहीं आना चाहिए।"

"मतलब कि आप डरते हैं कि हम आपकी राह में आड़े आएंगे!"

"बिलकुल!"

अपमान से आहत संचालक उछलकर खड़ा हुआ और झटपट दरवाज़े की ओर लपका। ड्यूटी पर नियत व्यक्ति ने भी उसका अनुसरण किया। दरवाज़े के बीच में रुककर संचालक ने अपना विदाई वाण छोड़ा: "आड़े हम नहीं आएंगे – इसके लिए और हैं।"

लड़के हंसे। जुरिन्स्काया ने उसास छोड़ी। यूरियेव अपनी परेशानी को छिपाने के लिए खिड़की के दासे का मुआयना करने लगा। अकेला ख़लाबूदा दीवार पर लगे पोस्टरों का शान्त भाव से अध्ययन कर रहा था।

"अब चलना चाहिए, मेरी समझ में," यूरियेव ने कहा। "हम कल फिर आऐंगे – क्यों ठीक है न, ल्युबोव सावेलियेवना?"

जुरिन्स्काया ने उदास नज़र से मेरी ओर देखा।

"नहीं आना!" मैंने उनसे अनुरोध किया।

"क्यों?"

"भला आपके आने में तुक क्या है? आप मेरी मदद तो कर नहीं सकेंगी, और केवल खराब होगा।"

यूरियेव ने थोड़ा विक्षोभ के साथ विदा ली। ल्युबोव सावेलियेवना ने लड़कों से और मुझसे विदा कहते और हमारे हाथों को हार्दिकता से दबाते हुए पूछा: "आपको डर नहीं लगता वाक़ई?"

वे नगर की ओर चल दिए।

हम अहाते में निकल आए। प्रत्यक्ष ही दिन का खाना परोसा जा रहा था – शोरबे के देग रसोई से शयनागारों में ले जाए जा रहे थे। कोस्तिया वेत्कोवस्की ने हंसते हुए मेरी आस्तीन को खींचा, मित्का और वित्का ने दो लड़कों का रोके रखा था जो एक परात लिए जा रहे थे।

"काम करने का यह कौनसा तरीक़ा है?" मित्का झिड़कते हुए कह रहा था। "अजीब लोग हैं! क्या तुम्हें इससे अच्छा तरीक़ा और कोई नहीं आता? तुम आदमी हो कि जंगली?"

शुरू में तो मैं कुछ समझ नहीं सका कि यह हो क्या रहा है। कोस्तिया कुरियाज के रोटी-वाहकों में से एक को उसकी आस्तीन पकड़े उधर उठा रहा था। लड़का अपनी दूसरी बग़ल में एक पाव-रोटी दबोचे था जिसकी पपड़ी का आधा भाग झड़कर अलग हो गया था। कोस्तिया शर्म से जकड़े लड़के की आस्तीन झटक रहा था। उसकी समूची आस्तीन रस से तर थी और गोभी तथा चुकन्दर के कतले कंधे तक उसकी आस्तीन पर चिपके थे।

"ज़रा देखो तो!" हंसी के मारे कोस्तिया को हाल बेहाल था। हम सब भी अपने को क़ाबू में नहीं रख सके। कारण, लड़का अपनी एक मुट्ठी में मांस की बोटी कसकर दबोचे हुए था।

"और दूसरा?"

"दूसरा भी!" मित्का ने अपनी हंसी के बीच कहा। "बोटियां ये लोग रास्ते में ही तिड़ी कर लेते हैं... तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए, मुर्खाधिराजो! कम-से-कम अपनी आस्तीन को तो ऊपर चढ़ा लिया होता!"

"ओह, अन्तोन सेम्योनोविच, क्या कुछ न हमें यहां करना पड़ेगा!" कोस्तिया ने कहा।

मेरे लड़के विभिन्न दिशाओं में निकल गए। मठ की पहाड़ी पर मई का मधुर दिन तिर आया था, लेकिन पहाड़ी ने मुस्कान के साथ उसका अभिनन्दन नहीं किया। ऐसा मालूम होता था जैसे एक पारदर्शी, समानान्तर पट्टी ने दुनिया को दो अर्द्धभागों में विभाजित कर दिया हो – ऊपर के अर्द्धभाग में आकाश था, उजली नीलिमा, सुगंधित

वायु, सूरज, पक्षियों की उड़ान और शान्त, ऊंची बदलियों की कलगियां। दूर, जहां आकाश झुककर धरती को छूता था, झोंपड़ियों और मनोरम वन-खण्डों के समूह थे और एक चक्करदार नदी चमकदार फ़ीते की भांति झिलमिला रही थी। खेत – काले, हरे और कत्थई, बड़ी सुघराई के साथ सूरज की धूप में फैले थे – मानो किसी उत्सव की तैयारी कर रहे हो। कौन जाने, यह अच्छा था या बुरा, लेकिन देखने में सुहावना मालूम होता था – सरल और आकर्षक, हृदय में मई के स्वच्छ दिवस के साथ एकाकार होने की ललक का संचार करता हुआ।

और मेरे पांव के नीचे कुरियाज की गन्दी भूमि थी, पुरानी दीवारें – पसीने, लोहबान, खटमलों की दुर्गन्ध में पगी हुई। पुराने पापों से लदे पादरी और ख़ून तथा गंदगी के धब्बों से भरे लावारिस जीव। ओह, यह दुनिया नहीं थी, यह कोई और चीज़ थी, किसी शैतान की उपज!

मैं कोलोनी में मंडरा रहा था। मेरी ओर किसीन रुख़ नहीं किया। लेकिन अब कोलोनीवासी कुछ अधिक नज़र आ रहे थे। वे दूर से मेरी ओर देख रहे थे। मैं शयनागारों में गया। शयनागारों की संख्या बहुत अधिक थी। मुझे, सच, एक भी जगह ऐसी नज़र नहीं आई जो शयनागार न बनी हो – कतिपय घर, झोंपड़ियां और साथ के कोठरे-कोठरियां। शयनागारों में अब कोलोनीवासी भारी संख्या में थे। वे चिथड़ों के ढेरों पर, या नंगे तख़्तों और पलंगों की लोहे की पटरियों पर बैठे थे। और अपने हाथों को खुरदरे घुटनों के बीच खोंसे भोजन हज़म कर रहे थे। कुछ अपनी जुओं को मार रहे थे। कोनों में ताश की मंडलियां जमी थीं। कुछ कालिख लगे पतीलों में से शोरबा सुड़क रहे थे। मेरी ओर किसी ने ध्यान तक नहीं दिया। इस दुनिया में जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं था।

एक शयनागार में यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि लड़कों का एक दल 'नेवा'* के पुराने अंक में छपी तस्वीरों को उलट-पलट रहा था।

---

* क्रान्ति से पहले का एक सचित्र साप्ताहिक पत्र। सं०

"यह तो बताओ, लड़को," मैंने पूछा, 'तुमने अपने तकियों का क्या किया?"

सब के चेहरे मेरी ओर घूम गए। एक लड़के ने जिसकी नाक नोकदार थी, बिना किसी संकोच के मेरी ओर व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से देखा।

"तकिए? साथी मकारेन्को आप ही हैं, शायद? क्यों, हो न अन्तोन सेम्योनोविच?"

"हां।"

"और आप रौंद लगा रहे हैं, मुआयना करने के लिए?"

"हां, है तो ऐसा ही।"

"और कल दिन के दो बजे..."

"हां, कल दिन के दो बजे," मैंने बीच में ही कहा। "लेकिन तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया—तुम्हारे तकिए कहां हैं?"

"सो भी बताएंगे! यही न?"

मधुर अन्दाज़ से उसने सिर हिलाया और पैबन्द लगी गंदी तोशक पर मेरे लिए जगह कर दी। मैं बैठ गया।

"तुम्हारा नाम क्या है?" मैंने पूछा।

"वान्या ज़ाइचेन्को।"

"क्या तुम पढ़ना-लिखना जानते हो?"

"पिछले साल मैं चौथे दर्जे में था और इस साल जाड़ों में... शायद आप जानते हों—स्कूल बन्द रहा।"

"सो तो हुआ... अब यह बताओ, तकिए और चादरें कहां हैं?"

वान्या की भूरी आंखों में परिहास की चमक तैर गई। अपने साथियों की ओर द्रुत नज़र से उसने देखा, और मेज़ पर उसने आसन जमाया। चिथड़ा हुआ उसका बदरंग जूता मेरे घुटने से अड़ा था। बिस्तरे पर लड़के सटकर बैठ गए। उनके बीच, अचानक, मालिकोव का गोल चेहरा मैंने पहचाना।

"अरे, तुम भी यहां हो?"

"हूं—ऊं! यह हमारी टोली है। यह तिम्का ओदारियुक है, और वह इल्या... फ़ोनारेन्को!"

तिम्का के बाल लाल थे और चेहरा झाईंदार। उसकी पलकों

में बरौनियां नहीं थीं और उसकी मुसकान में कोई पूर्व-द्वेष नज़र नहीं आता था। इल्या का चेहरा गोल-मटोल, पीतवर्ण और फुंसियों से भरा था। लेकिन आंखें थीं असल – भूरे रंग की, और पलकें जैसे सांचे में ढली हुईं। वान्या ज़ाइचेन्को ने अपने साथियों के सिरों को लांघते हुए, क़रीब-क़रीब सूने शयनागार पर एक नज़र डाली, और दबी हुई, षड्यन्त्रपूर्ण आवाज़ में कहना शुरू किया:

"आप जानना चाहते हैं कि तकिए कहां हैं–यही न? मैं आपको साफ़-साफ़ बताता हूं – यहां कोई तकिए नहीं हैं, और बस!"

अचानक अपने हाथों को फैलाते हुए, जिनकी उंगलियां पंखे की भांति खुली थीं, उसने एक ठहाका लगाया। और दूसरे लोग भी हँस पड़े।

"यहां बस मौज ही मौज है," ज़ाइचेन्को ने कहा, "क्योंकि यहां हर चीज़ मज़ेदार है। तकियों-वकियों का यहां नाम न लो। कभी हुआ करते थे, और इसके बाद – फूह ... सब छू-मन्तर हो गए!"

वह फिर हंसा।

"रीजी* एक रात तकिए लगाकर सोया और अगली सुबह जब उठा तो छूंछा। फूह तकिए सब उड़न-छू!"

ज़ाइचेन्को ने अपनी प्रसन्न आंखों से ओदारियुक की ओर देखा। और हंसते-हंसते – अपने जूते को मेरे घुटने में और भी ज़ोरों से गड़ाते हुए पीछे की ओर चित हो गया।

"आप कहेंगे, अगर हमें तकिए चाहिए तो हर चीज़ दर्ज होनी चाहिए। है न, अन्तोन सेम्योनोविच? हर चीज़ की गिनती होनी चाहिए, और उसे दर्ज होना चाहिए। होना चाहिए न? कब वह दिया गया, और किसे दिया गया, सब दर्ज होना चाहिए। लेकिन यहां तो लोगों तक की सूची कोई नहीं रखता, तकियों की बात छोड़ो ... न, कोई नहीं! और उनकी गिनती नहीं करता ... कोई नहीं!"

"यह भला कैसे हो सकता है?"

"होने को इसमें क्या बात है? क्या आप समझते हैं कि किसी ने कभी यह दर्ज किया कि इल्या फ़ोनारेन्को यहां रहता है? न, किसी

---

* लाल बालोंवाला (उपनाम)।

ने नहीं दर्ज किया। कोई यह जानता तक नहीं। और न ही मुझे कोई जानता है। और आप जानते हैं क्या? यहां ढेर सारे लोग ऐसे हैं– जो यहां रहते हैं। इसके बाद वे चले जाते हैं और कहीं और रहते हैं, इसके बाद वे फिर लौटकर यहां आ जाते हैं। क्या आप समझते हैं कि तिम्का को यहां किसी ने बुलाया था? न, किसी ने नहीं बुलाया। बस, वह आया, और उसने यहां रहना शुरू कर दिया।"

"सो उसे यहां अच्छा लगता है?"

"नहीं। दो हफ़्ते हुए उसे यहाँ आये हुए। वह बोगोदुख़ोव कोलोनी से भाग आया था। आप जानें वह गोर्की कोलोनी में रहना चाहता था।"

"बोगोदुख़ोव में क्या वे इसके बारे में जानते हैं?"

"भला क्यों नहीं! सब जानते हैं। बेशक जानते हैं।"

"तो वह अकेला ही यहां क्यों आया?"

"सो तो, आप जानें, यह अपनी-अपनी पसंद की बात है। कुछ लोग कड़ाई पसंद नहीं करते। कहते हैं कि आपकी कोलोनी में कड़ाई है–कमांड है, बिगुल बजता है–सब को दौड़कर आना पड़ता है, सीधे सतर–एक, दो, तीन! सो देखा आपने? और फिर–काम! हमारे लड़के तो यह सब नहीं चाहते..."

"वे भाग खड़े होंगे," मालिकोव ने राय दी।

"कुरियाज लड़के?"

"हूं-ऊं। वे भाग खड़े होंगे। सर पर पांव रखकर! वे कहते हैं–'तुम मकारेन्को को नहीं जानते! उसे पदक पाना है और हमें काम करना। सो क्यों? वे सब भाग खड़े होंगे।"

"कहां!"

"ओह, जगहों की क्या कुछ कमी है? जिस कोलोनी में भी चाहो, जा सकते हो।"

"और तुम लोग?"

"हमारी तो टोली है," ज़ाइचेन्को ने प्रसन्न भाव से तुरन्त कहा। "चार जने हैं हम। और आप जानते हैं कि क्या? हम चोरी नहीं करते। हमें यह पसंद नहीं। और बस! हां तिम्का... अपने लिए वह कभी कोई चीज़ नहीं लेगा, टोली के लिए .."

तिम्का मगन भाव से बिस्तरे पर बैठा था। वह लाल रंग गया। उसकी पलकें लाज से झुक आईं। उनकी ओट में से उसने मेरी ओर देखने का प्रयास किया।

"अच्छा तो, नमस्कार समूची टोली को!" मैं ने कहा, "हमारी पटरी निभेगी।"

सबने मुसकराते हुए जवाब दिया:

"नमस्कार!"

मैं आगे बढ़ गया। सो चार मेरे साथ हैं। लेकिन दो सौ छिहत्तर – शायद इससे भी ज़्यादा – अभी और थे। ज़ाइचेन्को ठीक ही कहता था – लोग यहां ऐसे थे, जिन्हें न किसीने गिना, न किसी रजिस्टर में दर्ज किया। इस अनगिनी संख्या की कल्पना कर मैं अचानक भय से सिहर उठा। मेरी बुद्धि को क्या हो गया था जो हर पहलू से इस झंझट में मैंने अपनी गरदन फंसा ली? यह कैसे हुआ कि मैंने, न केवल अपनी सफलता को ही, बल्कि समूचे समूह को दांव पर लगा दिया? '२८०' की यह संख्या जब तक काग़ज़ पर टंके तीन अंकों से अधिक और कुछ नहीं थी, तब तक, मेरी शक्ति अजेय मालूम होती थी, लेकिन आज – उस समय जबकि ये दो सौ अस्सी अपनी समूची गंदगी के साथ – मेरे लड़कों की छोटी टुकड़ी के इर्द-गिर्द छा गए थे – मुझे लगा जैसे मेरा हृदय किसी अतल गर्त में गिरता जा रहा हो। अपने घुटनों में एक अरुचिकर तथा कंपा देनेवाली कमज़ोरी का मैंने अनुभव किया।

अहाते को पार करते तीन जने मेरी ओर आ रहे थे। वे क़रीब सत्रह वर्ष के मालूम होते थे। उनके बाल भी छंटे थे, पांवों में वे अच्छे जूते पहने थे। उन में से एक बादामी रंग की काफ़ी नयी जाकेट पहने था, हालांकि इसके नीचे, एक चुरी-मुरी, भोजन के दाग़ लगी, क़मीज़ झांक रही थी। दूसरा चमड़े का एक कुरता और तीसरा एक साफ़-सुथरी सफ़ेद क़मीज़ पहने था। जाकेटवाला लड़का हाथों को अपनी पतलून की जेबों में खोंसे और अपने सिर को एक बाजू तिर्छा किए हुए था। अचानक सीटी बजाते हुए वह 'ओदेस्सा' के एक बाज़ारू रसिया की धुन मेरे सामने छेड़ने लगा। उसके मोती जैसे सफ़ेद दांतों की एक सुन्दर पांत मेरी आंखों के सामने झलक उठी। उसकी बड़ी-बड़ी धुंधली आंखों और लाली मायल झबरीली भौंहों पर मेरी नज़र

गई। अन्य दो उसकी बग़ल में खड़े थे, अपनी बांहों को एक-दूसरे के कंधों पर डाले और अपने होंठों में सिगरेटें खोंसे हुए, जिन्हें वे रह-रहकर अपनी जीभ के सहारे मुंह के एक छोर से दूसरे छोर पर खिसका लेते थे। कुछ और भी कुरियाज आकृतियां हमारे इस समूह की दिशा में तिरती आ रही थीं।

लाल बालोंवाले युवक ने अपनी एक आंख को सिकोड़ा और ज़ोरों से कहा :

"सो मकारेन्को हैं – क्या ?"

मैं उनके आगे जा खड़ा हुआ, शांति के साथ। इस बात का विशेष प्रयास करते हुए मेरे चेहरे से किसी तरह का कोई भाव प्रकट न हो, मैंने जवाब दिया :

"हां, यह मेरा नाम है। और तुम्हारा नाम क्या है ?"

लाल बालोंवाले व्यक्ति ने, बिना कोई जवाब दिए, फिर सीटी की ध्वनि की, अपनी सिकुड़ी हुई आंख से एकटक मेरी ओर देखा और एक पांव को हिलाता रहा। अचानक एड़ी के बल घूमकर उसने अपने कंधों को उचकाया, और लम्बे डग भरते तथा अपनी जेबों की गहराई में टटोलते हुए वहाँ से चल दिया। उसका सीटी बजाना अभी भी जारी था।

उसके साथी भी उसके पीछे चल दिए, अपनी बांहों को अभी भी एक-दूसरे के कंधों में डाले तथा कानफोड़ आवाज़ में अलापते हुए·

रंग रंगीला रसिया,
लड़का, लड़का, लड़का ...

इर्द-गिर्द खड़ी आकृतियां मेरा पर्यवेक्षण कर रही थीं। तभी मेरे कानों में टीका-टिप्पणी की भनक पड़ी :

"नया संचालक ..." और उसका जवाब, उतनी ही दबी आवाज़ में, "हुआ करे, क्या फ़र्क़ पड़ता है !"

"आप कहां से शुरुआत करना चाहते हैं, साथी मकारेन्को ?"

मैंने घूमकर देखा – एक कृष्णनयना युवा स्त्री मेरी ओर देखकर मुसकरा रही थी। हिम-सा सफ़ेद उसका ब्लाउज़ और उसका काला गुलूबंद यहां के वातावरण में एक अनहोनी-सी चीज़ मालूम होती थी।

"मेरा नाम गुल्यायेवा है।"

मैंने उसके बारे में सुना था। वह दर्ज़ी-घर में निर्देशिका का काम करती थी। वह कुरियाज में एकमात्र पार्टी की सदस्या थी। उसे देखकर जी खुश होता था – वह कुछ मांसल हो चली थी, लेकिन उसकी कमर अभी भी कमनीय थी और उसके बाल काले, चमकते हुए और घुंघराले थे। उसका मुख-मण्डल अभी तक आत्मिक शक्तियों के तेज से दीप्त था।

"क्यों न हम दोनों मिलकर शुरुआत करें," मैंने हुलसते हुए जवाब दिया।

"ओह नहीं, मुझसे भला क्या बनेगा! कैसे-क्या होता है, मैं नहीं जानती।"

"मैं आपको सिखा दूंगा।"

"तब ठीक है... मैं आपको लड़कियों के पास चलने का बुलावा देने आई थी। आप अभी तक उनके पास नहीं गए। वे आपकी बाट देख रही हैं... सच, आपको देखने के लिए वे बस ललक रही हैं। मैं उनपर थोड़ा गर्व भी कर सकती हूं – मेरे प्रभाव में वे रही हैं। और उनमें तीन कोमसोमोल सदस्याएं तक हैं। बस, चले चलिये!"

हम दोमंज़िला केन्द्रीय इमारत की ओर चल दिए।

"आपने बहुत अच्छा किया," गुल्यायेवा ने कहा, "समूचे स्टाफ़ को बरखास्त करने की मांग करके। उन्हें, प्रत्येक को – बिना अपवाद के – निकाल दें! साथ में मुझे भी!"

"नहीं, तुम्हारे बारे में पहले ही तय हो चुका है। और तुम्हारी मदद का भरोसा करता हूं।"

"फिर से सोच लें – हो सकता है कि आपको पछताना पड़े।"

लड़कियों का शयनागार काफ़ी बड़ा था, साठ बिस्तरों से युक्त। देखकर चकित रह गया – प्रत्येक बिस्तरे पर एक कम्बल था – यह सच है कि वे जीर्ण और शीर्ण थीं। प्रत्येक कम्बल के नीचे चादरें थी। उनके पास तकिए तक थे।

लड़कियां सचमुच हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। वे छींट की घिसी-पिटी फ़्रॉक पहने थीं, प्रायः सब-की-सब पैबन्द लगी। उन में सब से बड़ी पन्द्रह-एक साल की थी।

"अच्छी तो हो, लड़कियो!" मैं ने कहा।

"यह लो," गुल्यायेवा ने कहा। "अन्तोन सेम्योनोविच को मैं तुम्हारे पास ले आई। तुम उन्हें देखना चाहती थीं।"

लड़कियों ने फुसफुसाकर अभिनन्दन-ध्वनि की और बिस्तरों के पास से गुज़रते समय अपने कम्बलों को ठीक करते हुए चुपचाप हमारी ओर बढ़ आईं। जाने क्यों, इन लड़कियों के लिए तरस की एक गहरी भावना मैंने अनुभव की। मेरी इच्छा हुई कि अगर मैं इनके लिए – थोड़ी ही सही – कोई-न-कोई ख़ुशी उपलब्ध कर सकता तो कितना अच्छा होता। वे हमारे इर्द-गिर्द अपने बिस्तरों पर बैठ गईं, और सहमी-सी मेरी ओर देखने लगीं। मैं कुछ समझ नहीं सका कि उनके प्रति इतने अधिक तरस की भावना का क्यों मैंने अनुभव किया। क्या इसलिए कि वे इतनी पीतवर्ण थीं, उनके होंठ रक्त की गरिमा से इतने शून्य थे, और इतनी बची-बची नज़रों से वे देख रही थीं? या इसका कारण यह था कि वे थेगलियां लगे कपड़े पहने थीं? मैंने सोचा – लड़कियों को ऐसे चिथड़े नहीं पहनने देना चाहिए, जीवन-भर के लिए यह दुख बना रह जाएगा।

"कहो, कैसी हो, लड़कियो?" मैंने पूछा।

लड़कियों ने बिना कुछ कहे मेरी ओर देखना जारी रखा और होंठों ही होंठों में मुसकराती रहीं। अचानक मैंने समझा – वे मात्र अपने होंठों से मुसकराना जानती हैं। ये लड़कियाँ नहीं जानती कि वास्तविक मुसकान किसे कहते हैं। उनके चेहरों पर से मेरी नज़र तैरी और गुल्यायेवा के चेहरे पर जाकर जम गई।

"देखिये, मैंने बहुत कुछ देखा-सुना है," मैंने कहा, "लेकिन यहाँ कुछ ऐसा है जो मेरी समझ में नहीं आता।"

गुल्यायेवा ने अपनी भौंहों को उठाया:

"क्या चीज़ है वह?"

गुलाबी रंग का छोटा-सा स्कर्ट पहने अचानक एक सांवली लड़की ने, जो ठीक मेरे सामने बैठी थी, – बिना पलक झपकाए मेरी ओर देखते हुए कहा:

"अपने गोर्कीआइटों को जल्दी यहां बुला लीजिये। बड़ा भयावह है हम लोगों के लिए यहां रहना।"

अचानक मैं समझ गया कि गड़बड़ कहाँ थी। इस सांवली लड़की

के चेहरे पर, उसकी स्थिर नज़र और उसके होंठों में पड़ रहे अनायास बलों में भय का आभास था – वास्तविक, निरे भय का।

"ये आतंक से ग्रस्त हैं," मैंने गुल्यायेवा से कहा।

"इनका जीवन दूभर है, अन्तोन सेम्योनोविच, बहुत ही दूभर..."

गुल्यायेवा की आंखें गुलाबी हो चलीं, वह तेज़ी के साथ खिड़की के पास चली गई।

"तुम्हें किस चीज़ का डर है?" साथ ही मैंने लड़कियों से अनुरोधपूर्वक पूछा। "मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ।"

पहले कुछ दबे-दबे रूप में, एक-दूसरे को खोदते तथा बीच-बीच में टोकते हुए, और फिर अधिक खरेपन तथा भयावह विवरण के साथ, लड़कियों ने मुझे अपने जीवन के बारे में बताया।

केवल शयनागार में ही वे अपने आपको कुछ सुरक्षित अनुभव करती थीं। अहाते में जाते वे डरती थीं, क्योंकि लड़के उन्हें सताते-तंग करते थे – चिकोटियां काटते थे, गंदी भाषा की उनपर बौछार करते थे, संडास में झांकते थे, और जब वे वहां होती थीं, तो दरवाज़ा खोल देते थे। लड़कियां बहुधा भूखी रहती थीं, क्योंकि भोजन के कमरे में उनके लिए कुछ बाक़ी नहीं बचता था। लड़के भोजन पर झपटते थे और उसे अपने शयनागारों में उठा ले जाते थे। शयनागारों में भोजन ले जाने पर यों पाबन्दी थी, और रसोई-घर के लोग उसकी इजाज़त नहीं देते थे, लेकिन लड़के उन्हें नज़रअन्दाज़ कर पतीलों और रोटियों को शयनागारों में उठा ले जाते। लड़कियां ऐसा न कर पातीं। वे भोजन के कमरे में जातीं और वहां इन्तज़ार करती रहतीं। अन्त में पता चलता कि लड़के हर चीज़ उठा ले गए, और अब खाने के लिए कुछ नहीं रहा। कभी-कभी थोड़ी रोटी उनके पल्ले पड़ जाती। फिर, भोजन के कमरे में भी टिके रहना उनके लिए ख़तरनाक था। कारण, लड़के उन्हें पीटते, उन्हें वेश्या कहते तथा और भी बुरे नाम उनके धरते। तरह-तरह की बुरी बातें उन्हें सिखाने का प्रयत्न करते। इसके अलावा लड़के बेचने के लिए दुनिया-भर की चीज़ें उनसे मांगते और जब लड़कियाँ नहीं देतीं तो उनके शयनागार पर धावा करते, कम्बल या तकिया या कोई और चीज़ हथियाते और बेचने के लिए उन्हें शहर ले जाते। लड़कियां केवल रात में ही अपने कपड़ों को धोने का

साहस करतीं, लेकिन अब रात में भी यह ख़तरनाक हो गया था। लड़के धुलाई-घर की ताक में रहते और ऐसी हरकतें करते जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। वाल्या गोरोदकोवा और मान्या वासिलेन्को कोई चीज़ धोने गईं, जब वे वहां से लौटीं तो रात-भर रोती रहीं और अगली सुबह वे कोलोनी से जाने कहां चली गईं। एक लड़की ने संचालक से शिकायत की, इसके बाद अगले दिन जब वह शौच के लिए गई तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और... मैले से.. उसका मुंह सान दिया। हर कोई कहता है कि अब बहुत कुछ बदल जाएगा, लेकिन कुछ लड़कों का कहना है कि कुछ नहीं होगा, क्योंकि, जो हो, गोर्कीआइट मुट्ठी-भर हैं, उन्हें खदेड़कर बाहर किया जाएगा।

गुल्यायेवा ने अपनी आंखों को बराबर मेरे चेहरे पर टिकाए लड़कियों की बातों को सुना। मैं मुसकराया, उसपर इतना अधिक नहीं, जितना कि उसके उन आंसुओं पर, जो कि उसने अभी ढुरकाए थे।

जब लड़कियां अपनी दु:खद गाथा को पूरा कर चुकीं तो उनमें से एक ने, जिसे लोग स्मेना कहकर संबोधित करते थे, गम्भीरता के साथ मुझसे पूछा:

"आप ही बताइए, क्या ऐसी चीज़ों के लिए एक सोवियत देश में छूट दी जाती है?"

"तुमने जो कुछ मुझे बताया," जवाब में मैंने कहा, "वह एक भारी कालिख है, और ऐसी कालिख की, सोवियत शासन के रहते न तो छूट दी जानी चाहिए और न ही दी जाएगी। कुछ ही दिनों में यहां हर चीज़ बदली हुई दिखाई देगी। तुम सुखी जीवन बिताओगी, तुम्हें कोई चोट नहीं पहुंचा सकेगा, और इन कपड़ों को हम उतार फेंकेंगे।"

"कुछ ही दिनों में?" सन जैसे बालोंवाली एक लड़की ने, जो खिड़की के दासे पर बैठी थी, सोच की मुद्रा में कहा।

"हां, ठीक दस दिनों में," मैंने उसे बताया।

अंधेरा होने तक मैं कोलोनी में अत्यन्त उदास विचारों में डूबा हुआ मंडराता रहा।

प्राचीन वृत्ताकार स्थल, तीन सौ वर्ष पुरानी और कई फ़ुट मोटी

दीवारों से बन्द, बीच में औघढ़, पपड़ियां – उतरा गिरजा, चप्पे-चप्पे पर छितरा हुआ मैला और हर जगह घास-पात की भांति व्याप्त शैक्षणिक समस्याओं के खड़े हुए काँटे। कानों तक लीद-गोबर से अटे ख़स्ताहाल अस्तबल में, गौशाला में जो क़रीब एक दरजन ढचरा गायों का अनाथालय बने गौशाला में, अहाते के समूचे विस्तार में, एक मुद्दत से ध्वस्त बग़ीचे के टूटे-फूटे बाड़े और इर्द-गिर्द फैले समूचे प्रदेश में, समाज-शिक्षा के सूखे हुए डण्ठल निकले थे। और कोलोनी-वासियों के शयनागारों में, कर्मचारियों के ख़ाली कमरों में, तथाकथित क्लब-घरों में, रसोई-घर और भोजन के कमरे में, इन डण्ठलों से लगे हुए बोझिल, विषैले फल झूल रहे थे – जिन्हें अगले कुछ दिनों में मुझे गले के नीचे उतारना था।

मेरे विचार ग़ुस्से को उकसा रहे थे। क़रीब-क़रीब वैसे ही ग़ुस्से को जिसे १६२० में मैंने अनुभव किया था। अचानक अनियंत्रित घृणा का मोहक दानव मेरे पीछे आ खड़ा हुआ। मेरा मन उमड़ने-घुमड़ने लगा कि अभी, इसी क्षण, बिना इस जगह से हिले, जो भी हाथ लगे उसका गला दबोच लूं, बुरी तरह गंधाते इन ढेरों और चहबच्चों में उसकी नाक रगड़ूं और फ़ौरन हाथ-पांव हिलाने की उससे मांग करूं – शिक्षण-विज्ञान की नहीं, समाज-शिक्षा शास्त्र की नहीं, क्रांतिकारी दायित्व या कम्युनिस्ट जोश की नहीं – नहीं, यह सब कुछ नहीं – बल्कि सीधी-सादी आम समझ की मामूली, हेय, भोंडी ईमानदारी की उससे मांग करूं। ग़ुस्से की बाढ़ ने विफलता के मेरे डर को ख़त्म कर दिया। लड़कियों को मैंने वचन दिया था, और इस वचन ने क्षणिक अनिश्चितता के मेरे मूड को जड़-मूल से उखाड़ फेंका। कोई दरजन के क़रीब भय से त्रस्त, मुंहबंद और पीतवर्ण ये लड़कियाँ जैसे अब मेरी आत्मा की प्रतीक बन गई थीं। बिना कुछ आगा-पीछा सोचे, दस दिन के भीतर मानवीय जीवन की मैं उन्हें गारण्टी दे चुका था।

क्रमशः अंधेरा घना हो चला। कोलोनी में कोई रोशनी नहीं थी। उदास, कवित्वविहीन परछाइयां मठ की दीवारों पर उतर आईं और गिरजे की ओर बढ़ने लगीं। ओनों-कोनों और दरारों में हर कहीं, गृहविहीन कुलबुलाते, ब्यालू पर हाथ साफ़ करते और रैन-बसेरे के लिए प्रबन्ध करते लोग दिखाई पड़े। न हंसने की आवाज़ आई, न

गाने की, न आनन्दपूर्ण बातों की। रह-रहकर, जब-तब, एक दबी हुई भनभनाहट या लड़ने-झगड़ने की आवाज़ें सुनाई दे जातीं। दो व्यक्ति नशे में धुत्त एकरस भाव से कोसते, शयनागार के सीढ़ी-विहीन ओसारे पर चढ़ने का प्रयत्न कर रहे थे। अंधेरे में से कोस्तिया वेत्कोवस्की और वोलोखोव मौन हिक़ारत के साथ उनकी ओर देख रहे थे।

३. दैनिक जीवन

अगले दिन दो बजे कुरियाज के संचालक ने कोलोनी के हस्तान्तरण तथा समूचे स्टाफ़ की बरख़ास्तगी के रुक़्क़े पर गर्व के साथ हस्ताक्षर कर दिये और घोड़ा-गाड़ी में सवार होकर विदा हो गया। इस आदमी के उजले भाग्य पर मुझे ईर्ष्या हो रही थी। वह अब पक्षी की भांति आज़ाद था। कंकर-पत्थरों की बौछार तो दूर, किसी ने उसे छुआ तक नहीं था।

और मैं, जिसके पास वैसे पंख नहीं थे, हृदय में हर घड़ी एक जानमार वेदना लिए, कुरियाज की इस मृत्युलोकीय आबादी के बीच घिसटने के लिए रह गया।

वान्का शेलापूतिन पर मई की धूप थिरक रही थी। वह हीरे की भांति चमचमा रहा था, लाज और मुसकानों की बन्दनवार बना हुआ था। गिरजे की दीवार में लगा घंटा भी उसके साथ चमचमाने के लिए कसमसा रहा था। लेकिन घंटा पुराना था और उसपर काई जमी थी। सूरज की रोशनी में वह केवल खीसें निपोड़ सकता था। इसके अलावा वह तड़का हुआ था, और अपने तमाम प्रयासों के बावजूद वान्का उसमें से कोई उपयोगी ध्वनि हासिल नहीं कर सका। आम सभा का आह्वान करने के लिए वान्का उसे बजाना चाहता था।

ज़िम्मेदारी की अरुचिकर, बोझिल और भूत की भांति पीछा न छोड़नेवाली चेतना अपनी प्रकृति मात्र से बेतुकी होती है। वह बात-बात पर वावैला मचाती है, जहां ज़रा-सी दरार दिखती है सरसरा जाती है और वहां दुबककर गुस्से तथा उद्विग्नता से थरथराती है। और उस समय जब शेलापूतिन घंटे बजा रहा था, तब ज़िम्मेदारी की चेतना इस घंटे से चिपकी हुई थी। ओह, ऐसी बेहूदा आवाज़ों को कोलोनी के वायुमण्डल में भला कैसे तैरने दिया जा सकता है?

वित्का गोर्कोवस्की मेरी बग़ल में खड़ा था और पूरी संलग्नता के साथ मेरी चेष्टा का अध्ययन कर रहा था। मठ के फाटक पर घंटे की बुर्जी की ओर अब उसकी नज़र घूमी, उसकी आंखों की पुतलियां गहराकर फैलीं। ऐसा मालूम हुआ जैसे उनके भीतर बीसियों नन्हे-नन्हे फितने उचक-उचककर बाहर की ओर झांक रहे हों। निःशब्द हंसी हँसते हुए वित्का ने अपने सिर को पीछे की ओर फेंका, उसके गालों पर लाली की हल्की परत चढ़ उठी। फिर भरभरी-सी आवाज़ में वह बोला:

"इसकी भी नब्ज़ ठीक की जाएगी, ज़रूर की जाएगी!"

वह घंटे की बुर्जी की ओर लपका, रास्ते में वोलोखोव के साथ जल्दी में विचार-विमर्श करने लगा। वान्का, जो पुराने घंटे को दो बार बैठी आवाज़ में खखियाने के लिए बाध्य कर चुका था, हंसते हुए बमक रहा था:

"क्या वे समझते नहीं? मैं बजा रहा हूं, बजा रहा हूँ और उनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती!"

क्लब पुराने गिरजे के भीतर था। यह ऊँची खिड़कियों से लैस था जिनके अगले हिस्से में सींकचे लगे थे। दो भट्टियाँ भी इसमें बनी थीं। अर्द्धवृत्ताकार वेदी के जर्जर मंच पर चरमर करती एक छोटी-सी मेज़ लगी थी। चीनियों की यह कहावत कि 'खड़े रहने से बैठना अच्छा हैं', कुरियाज पर लागू नहीं होती थी। क्लब में ऐसी कोई चीज़ नहीं थीं जिसपर बैठा जा सके। जो हो, कुरियाजवासी बैठने के पक्ष में नहीं थे। यदा-कदा उलझे बालोंवाला कोई सिर भीतर झांककर देखता और फिर इतनी ही जल्दी विलीन हो जाता। तीन-तीन और चार-चार के दल, खाने के लिए कलपते, अहाते में मंडरा रहे थे। सन्तरणकाल होने के कारण खाना मिलने में आज देर थी। लेकिन ये असली आत्माएं नहीं थीं, कुरियाज सभ्यता की असल प्रेरक आत्माएं कहीं ओट में छिपी थीं।

शिक्षक कहीं नज़र नहीं आते। मैं अब जानता था कि क्या गड़बड़ है। पायनियरों के कमरे में बिछे सख़्त तख़्तों पर हम बहुत अच्छी तरह नहीं सो सके थे। लड़के मुझे कुरियाज जीवन की मर्मवेधी कहानियां सुना रहे थे।

चालीस शिक्षक कोलोनी में चालीस कमरों को घेरे हुए थे। अठारह महीने पहले विजयी उल्लास के साथ इन कमरों को उन्होंने संस्कृति की देनों – बुने हुए मेज़पोशों और प्रान्तीय क़रीने के सोफ़ों से भर दिया था। लेकिन इनके पास अधिक उपयुक्त अन्य क़ीमती चीज़ें भी थीं, और यही क़ीमती चीज़ें देखते न देखते कुरियाज कोलोनीवासियों के क़ब्ज़े में पहुंचने लगीं – सो भी अत्यन्त सरल तरीक़े से। उस तरीक़े से जो अनादिकाल से चोरी के नाम से विख्यात है। आधिपत्य के इस क्लासीकल रूप का कुरियाज में इतना व्यापक प्रचलन था कि एक-एक करके सभी शिक्षकों ने अविलम्ब संस्कृति के बचे-खुचे पदार्थों को शहर पहुंचा दिया। केवल अत्यन्त मामूली क़िस्म का साज़-सामान अब उनके कमरों में बच रहा था – अगर, सचमुच, फ़र्श पर बिछे समाचारपत्र 'इज़्वेस्तिया' के उस अंक को साज़-सामान कहा जा सके, जो ड्यूटी के काल में, शिक्षाविदों के विश्राम करने के काम आता था।

लेकिन चूंकि कुरियाज शिक्षकों की रूह को कांपने की आदत पड़ गई थी, चूंकि अपने जीवन और अपने शरीर की सलामती के लिए भी वे उसी मात्रा में भयभीत रहते थे जितनी कि अपनी सम्पदा के लिए, – इसलिए चालीस शिक्षकों के कमरों ने बहुत ही थोड़े समय में युद्धकालीन गढ़ों का रूप धारण कर लिया था। उन कमरों की दीवारों के भीतर शिक्षकों का स्टाफ़ ड्यूटी के अपने घंटों को ईमानदारी के साथ गुज़ारता था। दरवाज़ों और खिड़कियों के चौखटे भीमाकार हुकों, लोहे के मोटे बोल्टों, धातु के सरियों और भारी-भरकम अरगलों से लैस थे। ऐसी चीज़ें मैंने न अपने जीवन में इसके पहले कभी देखी थीं और न बाद में ही देख सका।

अग्रिम मिश्रिम दस्ते के आगमन के क्षण से शिक्षक नामधारी एक भी जीव मुझे नज़र नहीं आया। उनकी बरखास्तगी ऐसी हालत में एक लाक्षणिक कृत्य मात्र थी। उनके कमरे भी मुझे स्मारकों की भांति मालूम हुए – केवल वोद्का की खाली बोतलें और खटमल ही अब यह याद दिलाने के लिए बाक़ी बचे थे कि इन कमरों में कभी मानव जीव रहा करते थे।

बहुत ही अनिश्चित शक्ल-सूरत तथा आयु का एक जीव जिसका नाम लोजकिन था मेरे सामने चला आया। शिक्षाविद के रूप में अपनी

सामर्थ्य और कोलोनी में बने रहने की अपनी इच्छा को मेरे सामने प्रदर्शित करने का उसने प्रयास किया, "ताकि आपके निर्देशन में युवा समुदाय को प्रगति के पथ पर और आगे बढ़ाया जा सके"। आध घंटे तक वह मेरे इर्द-गिर्द मंडराता और शिक्षा-शास्त्र की कतिपय सूक्ष्मताओं के बारे में चिचियाता रहा।

"अराजकता! विशुद्ध अराजकता! आप घंटी बजाते रहिये पर वे सरकने का नाम नहीं लेते। और क्यों नहीं सरकते भला? शैक्षणिक नज़रिये की दरकार है – निर्देशित व्यवहार। लेकिन निर्देशित व्यवहार की भला कैसे आशा की जा सकती है जबकि – मुझे माफ़ करना – लड़के चोरी करते हैं और उन्हें चोरी करने से कोई रोकनेवाला नहीं है? मेरा रवैया उनके प्रति ठीक है और वे हमेशा मेरे पास आते हैं, मेरा मान करते हैं, लेकिन यह सब होने पर भी . दो दिन के लिए मैं अपनी सास के यहां गया था – वह बीमार पड़ी – और आप सोच सकते हैं कि क्या – वे मेरी खिड़की का शीशा निकाल ले गए और एकदम कोई चीज़ उन्होंने नहीं छोड़ी – सब उड़ा ले गए। उन्होंने मुझे एकदम नंगा-बूचा बना दिया – नवजात शिशु की भांति। उस क़मीज़ के सिवा जो मेरे बदन पर पड़ी थी, कुछ भी उन्होंने नहीं छोड़ा। और क्यों, आप पूछ सकते हैं? बिलकुल ठीक – उस आदमी पर आप हाथ साफ़ कीजिये जो आपका भला नहीं चाहता, लेकिन उस आदमी पर क्यों छापा मारते हैं जो सदा आपके साथ मेहरबानी करता रहा है? शैक्षणिक रवैये की दरकार है हमेशा यही मैंने कहा है। जब भी संभव होता है मैं लड़कों को अपने पास बुलाता हूँ, उनसे बातें करता हूँ। मैं उनके दिलचस्पी जगाता हूँ। मैं उनके सामने एक पहेली रखता हूं। एक जेब में दूसरी से सात कोपेक ज़्यादा है, और कुल कोपेकों का जोड़ा तेईस है। तो प्रत्येक जेब में कितने कोपेक हुए? है न, मौलिक, क्यों?"

लोजकिन ने बुत्ता देने के अन्दाज़ में मेरी ओर देखकर अपनी आंख बिचकाई।

"हां तो फिर?" शिष्टता को बनाए रखने का प्रयास करते हुए मैंने कहा।

"नहीं, नहीं, मुझे बताइये – कितने?"

"कितने क्या?"

"मुझे बताइये कि प्रत्येक जेब में कितने?"

"यह क्या... आप मुझसे बताने को कहते ?"

"हां, हां, मुझे बताइये कि प्रत्येक जेब में कितने थे?"

"इधर सुनिये, साथी लोजकिन," मैंने विक्षोभ के साथ कहा। "क्या आप कहीं पढ़े भी हैं?"

"बेशक। लेकिन अपना अधिकांश ज्ञान मैंने आत्मशिक्षा द्वारा अर्जित किया है। मेरा जीवन एक सुदीर्घ आत्मशिक्षा रहा है और, कहने की आवश्यकता नहीं, शैक्षणिक तकनीकी स्कूलों या संस्थानों में मैंने कभी पांव नहीं रखा। मैं आपको बताता हूं – यहां कुछ लोग विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्राप्त थे, और उनमें से एक तो संकेत-लिपि का कोर्स पूरा कर चुका था और दूसरा वकालत का। अब ज़रा उनके सामने इस तरह की कोई पहेली रखने की कोशिश तो करो! या मिसाल के लिए – दो भाइयों ने विरासत में..."

"क्या... दीवार पर संकेतलिपिक ने ही लिखा था?"

"हां, यह उसी ने लिखा था... वह बराबर इसी धुन में रहता है कि एक संकेत-लिपि-मण्डल का निर्माण करे, लेकिन जब लड़कों ने उसे नंगा-बूचा कर दिया तो बोला – 'ऐसी असभ्यता के बीच मैं काम नहीं करूंगा', और उसने किसी मण्डल का संगठन नहीं किया, केवल शिक्षा-कार्य करता रहा।"

क्लब में भट्टी की बग़ल में गत्ते का एक टुकड़ा लटका हुआ था। उसपर निम्न शब्द अंकित थे:

संकेतलिपि – समाजवाद की
कुंजी है।

लोजकिन काफ़ी देर तक चिचियाता रहा। फिर जाने कब विलीन हो गया और मेरी समृति में केवल वही शब्द बचे रहे जोकि वोलोखोव ने अपनी बत्तीसी को भींचते हुए विदाई के रूप में प्रकट किए थे:

"मनहूस कहीं का!"

क्लब में हमें इस अप्रिय तथा पस्त कर देनेवाले तथ्य का सामना करना पड़ा कि कुरियाजवासियों का सभा में आने का इरादा नहीं

है। वोलोखोव ने खिन्न भाव से क्लब-घर की नंगी ऊंची दीवारों पर नज़र डाली। कुदलाती गुस्से से भरा और अपनी बत्तीसी को कसे हुए अपने आप में कुछ फुसफुसा रहा था। मित्का संकोच और हिक़ारत से मुस्करा रहा था। एक मिशा ओवचारेन्को ही ऐसा था जो शांत और भले मूड में था। वह अपनी पुरानी, पहले शुरू की गई बात को जारी रखने में जुटा था:

"...सब से बड़ी चीज़ है अब हल चलाना... और बोना। ज़रा सोचो तो, मई का महीना आ गया। घोड़े खड़े-खड़े अलसा रहे हैं।"

"और शयनागारों में कोई नहीं है," वोलोखोव ने कहा। "सब शहर गए हैं।" और उसने मेरी उपस्थिति से ज़रा भी संकुचित न होते हुए उन्हें खुलकर कोसा।

"जब तक वे न आएं, उन्हें खाना-वाना कुछ नहीं दिया जाए," कुदलाती ने सुझाव दिया।

"नहीं," मैंने कहा।

"नहीं?" कुदलाती चीखा। "हम यहां क्यों बैठे रहें? खेत घास-पात से अटे हैं, जोते तक नहीं गए – इसे आप क्या कहते हैं? और वे हैं कि अपना खाना गटक जाते हैं। ऐसे काहिल जीवों को – आप ही बताइये – क्या जो चाहें करने दिया जा सकता है?"

वोलोखोव ने अपने सूखे, गुस्से से भरे होंठों को नम किया, कंधों को इस तरह उचकाया जैसे उसे बुख़ार चढ़ा हो और कहा:

"अन्तोन सेम्योनोविच, हमारे साथ चलिये। कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

"और खाना?"

"वे इन्तज़ार कर सकते हैं, कमबख़्त! फिर, वे शहर गए हुए हैं।"

"क्या जोताई करनी है और क्या बोवाई? और वे बोएंगे भी क्या जबकि उनके पास कुछ नहीं है – आलू तक नहीं है! जहन्नुम में जाएं वे, हम ख़ुद बोवाई कर लेंगे लेकिन कोई चीज़ हो तब न! और... हर जगह कितनी गंदगी और दुर्गंध है। हम अपने साथियों के सामने, जब वे यहाँ आयेंगे, अपनी आंखें तक नहीं उठा सकेंगे। कोई भी तो जगह यहां ऐसी नहीं, जहां एक साफ़-सुथरा आदमी अपना

डग तक रख सके। और शयनागार, तोशकें, बिस्तरे, तकिए? और कपड़े? वे सब नंगे पांव घूमते हैं और उनके नीचे पहनने के कपड़े कहां हैं? न यहां तश्तरियां हैं, न चम्मच, न और कुछ! और किससे हम शुरुआत करें? शुरुआत तो किसी चीज़ से करनी ही चाहिए।

लड़कों ने उत्सुक आशा के साथ मेरी ओर देखा, मानो वे अनुभव करते हों कि मुझे यह निश्चय ही मालूम होगा कि कहां से शुरुआत करनी चाहिए।

कुरियाज लड़कों को लेकर मैं इतना अधिक चिन्तित नहीं था, जितना कि निरी माली प्रकृति की अनगिनती मदों को लेकर जिनके अम्बार ने एक पेचीदा तथा उलझे हुए आल-जाल का रूप धारण कर लिया था जिसमें तीन सौ कुरियाजवासी आंखों की ओट हो सकते थे।

बाल सहायता समिति के साथ हुए समझौते के अनुसार कुरियाज को क़ायदे में लाने के लिए मुझे बीस हज़ार रूबल की रक़म मिलनी थी। लेकिन यह अभी भी साफ़ था कि जो कुछ किया जाना था, उसकी तुलना में यह रक़म सागर में एक बूंद के समान सिद्ध होगी। लड़कों ने आवश्यकताओं की अपनी सूची तैयार करने में अतिरंजना से काम नहीं लिया था। लेकिन कुरियाज के अतल दैन्य का वास्तव में केवल उस समय पता चला जब कुदलाती ने उसकी सम्पत्ति का चार्ज लेना शुरू किया। संचालक की यह परेशानी व्यर्थ थी कि रुक़्क़े पर अयोग्य व्यक्ति के हस्ताक्षर होंगे। वह बहुत ही ढीठ था; अत्यंत संक्षेप में ही रुक़्क़ा पूरा हो गया। वर्कशापों में गिने-चुने ख़राद थे और अस्तबल में मरियल-से दिखनेवाले कुछ जीव। बस, कुल जमा इतना ही। न औज़ार थे न सामग्रियां थीं न खेती का साज़-सामान था। आधा दरजन मनहूस सूअर रौंदे हुए बाड़े के अन्दर मैले में कांख-कराह रहे थे। लड़कों ने जब उन्हें देखा तो अपनी हंसी न रोक सके। भारी सिर, तकुए-सी टांगें। अंग्रेज़ी नसल के हमारे सूअरों के सामने ये पासंग-भर भी नहीं थे। अहाते के किसी दूरतम कोने से कुदलाती ने एक हल बरामद किया। उसे देखकर वह इतना ख़ुश हुआ जैसे उसे उसका भाई ही मिल गया हो। पुरानी ईंटों के एक ढेर में से हेंगी को पहले ही खोज लिया गया था। स्कूल में मेज़ों और कुर्सियों की टांगों तथा ब्लैकबोर्ड

के अवशेषों के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगा – और ऐसा होना एकदम स्वाभाविक भी था, क्योंकि जाड़ों की ऋतु का हर साल अन्त होता ही है। किसी भी गृहस्थ के भंडारे में वसन्त आने तक थोड़ी बहुत लकड़ी की ईंधन की बचत कोई अनहोनी चीज़ नहीं थी।

हर चीज़ को ख़रीदना, बनाना और नये सांचे में ढालना था। सबसे पहला काम संडासों को खड़ा करना था। शिक्षा-विज्ञान की प्रणाली में उनका कभी ज़िक्र नहीं किया जाता। निस्सन्देह यही कारण था जो इन अत्यन्त आवश्यक संस्थाओं को इतने अनुत्तरदायित्व के साथ एक पहाड़ी पर बनाया गया था। चारों ओर गहरे ढलवान थे। केवल दक्षिणी ढलवान की ओर दीवार नहीं थी और इस ऊंचे स्थल से, मठ के दलदली तालाब के उस पार, पोदवोर्की गांव की फूस की छतें नज़र आती थीं। बहुत ही प्यारा दृश्य था – सोलहों आना उक्राइनी – ऐसा जो किसी कवि के हृदम में अनगिनत उपयुक्त कविताओं की निर्झरिणी प्रवाहित करने की क्षमता रखता था। इस सुन्दर दृश्य के बदले में – कुरियाज-वासियों की घिनौनी अकृतज्ञता ही इसे कहिये – ढलवान के कगारे पर उकड़ूं बैठी हुई आकृतियों की पांतें नज़र आती थीं – समाज-शिक्षा के लाखों रूबल से ख़रीदी गई चीज़ों को उनकी अन्तिम अवस्था में परिवर्तित करने की क्रिया में व्यस्त।

इस समस्या से, जिसका अभी ज़िक्र किया गया, हमारे लड़के अत्यन्त परेशान थे। मिशा ओवचारेन्को ने, अत्यन्त संजीदगी और आग्रह के साथ इस सम्बन्ध में अपनी शिकायत प्रस्तुत की :

"अब, हद है यह तो। हम क्या करें! ख़ारकोव जाएं, या क्या? और हम वहां जाएंगे भी कैसे?"

सो हमारी सभा के ख़त्म होते न होते, पायनियरों के कमरे की ड्योढ़ी पर पोदवोर्की गांव के दो बढ़ई आ खड़े हुए। इनमें से बड़े ने, जो ख़ाकी टोपी पहने था, और जिसकी सैनिक जैसी शकल-सूरत थी, गर्मजोशी के साथ मेरी बातों का समर्थन किया

"ठीक, बहुत ठीक – यह शर्म की बात है! लोगों को खाना पड़ता है, सो उन्हें.. और पटरे – सो हम भंडारघर से ला सकते हैं। आप फ़िक्र न कीजिये। यहां सब मुझे जानते हैं। बस, आप मुझे आवश्यक रक़म दे दें और हम आपके वास्ते बहुत बढ़िया चीज़ बना

देंगे – मठ के महन्तों से भी बढ़िया। बेशक, अगर आप सस्ता काम चाहते हैं तो प्लाईवुड या पतले तख़्ते लगवा सकते हैं, हम एक हल्का घरौंदा बना देंगे, लेकिन अगर आप चाहें तो मेरी समझ में डेढ़ या दो इंच मोटे तख़्ते चाहिए – यह टिकाऊ होगा और सुविधाजनक भी – हवा-आंधी ज़्यादा नहीं जाएगी, जाड़ों में बचाव रहेगा और गरमियों में तड़केंगे नहीं।"

मुझे ऐसा लगा जैसे जीवन में पहले कभी किसी चीज़ ने मुझे इतना प्रभावित नहीं किया था जितना कि इस शानदार आदमी ने जो जाड़े और गरमियों, हवा और 'बचाव' को ध्यान में रखकर निर्माण करता था। उसका नाम बोरोवोय था। यह बड़ा ही प्यारा-सा नाम था। मैंने उसे नोटों की एक गड्डी थमाई और उसकी उत्साह भरी आवाज़ को सुनकर दूसरी बार ख़ुशी से नाच उठा। वह अपने सहायक को, जो एक गुलाबी गुलगुले गालोंवाला युवक था – निर्देश दे रहा था:

"मैं लकड़ी लेने जाता हूं, वान्या और तुम काम शुरू कर सकते हो। दौड़कर जाना और अपना और साथ में मेरा फावड़ा उठा लाना। काम तो शुरू किया ही जा सकता है। इनमें से कोई साथ चला चलेगा, और बता देगा कि किस जगह बनाना है, और कैसे ..."

किरगीज़ोव और कुदलाती मुसकराते हुए चल दिए, वान्या को "कहां और कैसे" बताने। उधर बोरोवोय ने कपड़े के एक टुकड़े में रक़म को खोंसा, और एक बार फिर मुझे अपना नैतिक सहारा प्रदान किया:

"हम इसे कर डालेंगे, साथी संचालक! हम पर भरोसा रखो!"

मैंने उसका भरोसा किया। अब मैंने हल्कापन अनुभव किया – संभाले न संभलनेवाले, मोरीबंद, संक्रमण दौरे के प्रभाव से। मैं अब कुरियाज में शैक्षणिक कार्य का श्रीगणेश कर सकता था।

दूसरी समस्या जो उस सांझ सफलतापूर्वक हमने हल की – चम्मचों और रक़ाबियों की – वह भी आए दिन के जीवन से सम्बन्ध रखती थी। गुम्बददार विश्रान्तिगृह में जहां काली गम्भीर आंखोंवाले सन्त तथा मैडोनाएं, आशीर्वाद की मुद्रा में अपनी उंगलियों को उठाए, प्लास्टर की परतों के नीचे से झांक रही थीं, मेज़ें और बेंच बिछे थे, लेकिन न वहां चम्मच थे और न ही रक़ाबियां। कुरियाजवासियों

के पास ये चीजें नहीं रहीं। आध घंटे तक इधर से उधर मंडराने और अस्तबल में कूटनीतिक आवेदन-निवेदन करने के बाद वोलोख़ोव ने येवगेनीयेव को एक पुरानी बग्घी में सवार किया और उसे शहर भेजा। इस मक़सद से कि वहां से आठ सौ रक़ाबियां तथा इतने ही लकड़ी के चमचे ख़रीद लाए।

येवगेनीयेव की बग्घी फाटक पर पहुंची। तभी एक आह्लादपूर्ण, चहकती-कूकती, गलबहियां डालती भीड़ ने उसे घेर लिया। हमारे लड़के, मस्त हवा के परिचित झोंके की गंध पाकर, फाटक की ओर लपके। मैं भी दौड़ा और देखते ही देखते कराबानोव की बांहों ने मुझे जकड़ लिया। इधर कुछ दिनों से मेरे वक्ष के सहारे अपनी शक्ति प्रदर्शित करने की उसे लत पड़ गयी थी।

यह सातवाँ मिश्रित दस्ता था जो, अपने पूरे सदस्यों के साथ, ज़दोरोव के कमान में आ मौजूद हुआ था। और उस क्षण से कुरियाज टिड्डी-दल के भुतहा भय की समस्या ने सिकुड़-सिमटकर एक इतनी नगण्य पहेली का रूप धारण कर लिया कि ख़ुद लोजकिन भी उसे उपेक्षा से देखता।

यह अत्यन्त आह्लादपूर्ण था – रबफ़ाक-छात्रों का हमसे आकर मिलना – सो भी ऐसे कठिन तथा विमूढ़ बना देनेवाले क्षणों में। वे सब के सब वहां मौजूद थे – ठोस और भारी-भरकम बुरून, सेम्योन कराबानोव जिसकी आवेग-उद्वेगमयी प्रकृति के धरातल पर शिक्षा के चिन्हों का प्रारम्भिक उभार बड़ा सुहावना मालूम होता था, अन्तोन ब्रातचेन्को जिसकी प्रशस्त प्रकृति, पशु-चिकित्सा विज्ञान के संकरे चौखटे में अपने आपको फिट कर सकती थी, मात्वेई बेलूखिन – नैसर्गिक आनन्द में पगा, ओसाद्‌ची – गम्भीर और इस्पात की भांति मज़बूत, वेर्शनेव – बुद्धिजीवी और सत्य का खोजी, मारूस्या लेवचेन्को – काली आंखों की धनी और समझदार, नास्त्या नोचेवनाया, गेओर्गीयेवस्की – 'इरकूत्स्की गवर्नर का पुत्र,' श्नाइदेर, क्राइनिक, गोलोस और सबसे अंत में मेरा प्रिय और धर्मपुत्र अलेक्सान्द्र ज़दोरोव, सातवें मिश्रित का कमाण्डर। सातवें मिश्रित के वयस्क सदस्य शीघ्र ही रबफ़ाक के स्नातक हो जाएंगे, और हमें इसमें ज़रा भी सन्देह न्हीं था कि उच्च शिक्षा-संस्था में भी वे अच्छे रहेंगे। लेकिन यह सब होने पर भी, कोलोनी-

वासी के रूप में हम उन्हें जितना देखते थे उतना छात्र के रूप में नहीं, और इस समय विद्या के क्षेत्र में उनकी विजयों की पताका फहराने का कोई मौक़ा नहीं था। प्रारम्भिक अभिवादनों की बाढ़ के हल्का पड़ने पर हम पायनियरों के कमरे में लौट आए। कराबानोव मेज़ के पास आराम के साथ कुर्सी पर बैठा और कहने लगा:

"हम समझते हैं, अन्तोन सेम्योनोविच – यह दिन की रोशनी की भांति साफ़ है। मरो या करो। और इसी लिए हम आए भी हैं!"

अपने इस पहले दिन के बारे में रबफ़ाक-छात्रों को हमने बताया। उन्होंने अपनी भौंहों में बल डाले, चिन्ता के साथ उनकी नज़र घूमीं, उनकी कुर्सियां फ़र्श पर चरमराईं। ज़दोरोव ने विचारपूर्ण मुद्रा में खिड़की से बाहर की ओर देखा और आंखें सिकोड़ते हुए कहा:

"नहीं... यह बल द्वारा नहीं किया जा सकता। ढेर सारे हैं वे।"

बुरून ने अपने चौड़े कंधों को बिचकाया और मुस्कराते हुए कहा

"ऐसे कुछ ज़्यादा नहीं, साशा, सच! बात यह नहीं है कि वे ढेर सारे हैं – कमबख़्त कहीं के – बल्कि यह कि... कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे पकड़ा जा सके। ढेर सारे, तुम कहते हो, लेकिन वे हैं कहां? कहां हैं वे? कौन है यहां जो उन्हें पकड़ा सके? उन्हें हमें सामूहिक रूप में पकड़ना होगा। और यह तुम कैसे करोगे?"

गुल्यायेवा ने प्रवेश किया, हमारी बातों को सुना, कराबानोव की संदिग्ध नज़र का प्रत्युत्तर मुस्कान से दिया और कहा:

"तुम उन्हें कभी एक साथ नहीं पा सकोगे। नहीं, कभी नहीं!"

"ओह, क्या सचमुच?" सेम्योन ने गुस्से से गरमाते हुए कहा, 'क्या मतलब है तुम्हारा – 'नहीं, कभी नहीं'? हम उन्हें एक साथ ही पकड़ेंगे। अगर पूरे दो सौ अस्सी को नहीं तो एक सौ अस्सी को – तब देखेंगे। यहां बैठे रहने से क्या फ़ायदा?"

कैसे क्या किया जाए, इसकी एक योजना तैयार की गई। अब हम उन्हें खाना देंगे। कुरियाजवासी, भूख से अब वास्तव में व्याकुल हो चले थे, सब के सब शयनागारों में भोजन की बाट देख रहे थे। मरने दो उन्हें, कमबख़्त कहीं के! और जब वे खाना खा रहे हों, हम सब शयनागारों में घूम-घूमकर प्रचार करें। और उनसे कहें – सूअर कहीं के – चलो, सभा में चलो! तुम आदमी हो, या नहीं?

चलो! यह ख़ुद तुम्हारे भले की बात है, जंगली कहीं के! एक नया जीवन तुम्हारे लिए शुरू हो रहा है, और तुम तिलचट्टों की तरह दूर भागते हो। अगर अकड़ना शुरू करें तो गरम होने की ज़रूरत नहीं। बस, कहना – शोरबे के देग की बग़ल में बैठकर कोई भी अकड़ सकता है – तुम सभा में चलो और सब कुछ बताओ जो जी में आये... और बस। भोजन के बाद हम सभा के लिए घंटी बजाएंगे।

कई दरजन ऐसे ही कुरियाजवासी भोजन की प्रतीक्षा में रसोई-घर के दरवाज़े के सामने बैठे थे। मिशा ओवचारेन्को ड्योढ़ी पर खड़ा हुआ लाल बालोंवाले उस युवक को जिसने कल मेरा नाम पूछा था नैतिकता का पाठ पढ़ा रहा था:

"चाहे कोई हो, जो काम नहीं करता उसे क़तई भोजन पाने का अधिकार नहीं है। और तुम मुझसे कहते हो कि है अधिकार! नहीं, तुम्हें कुछ पाने का अधिकार नहीं है। आया कुछ समझ में, बड़कऊ? अगर तुम्हारे कंधों पर सिर जैसी कोई चीज़ है तो तुम्हारी समझ में यह अच्छी तरह आ जाना चाहिए। मैं तुम्हें कुछ दे सकता हूं, लेकिन यह मेरी सदेच्छा पर निर्भर है, समझे मुनुआ! क्योंकि तुमने कुछ अर्जित नहीं किया इसलिए – समझे, साथी? हर कोई काम करता है, लेकिन तुम – मेरे बड़कऊ – तुम बिलकुल कामचोर हो, इसलिए तुम्हें कुछ भी नहीं मिलना चाहिए। मैं तुम्हें भीख दे सकता हूं – बस, और कुछ नहीं।"

लाल बालोंवाला युवक फनफनाए हुए जंगली जीव की-सी आंख से मिशा की ओर देख रहा था। दूसरी आंख पट थी। बेशक, लाल बालोंवाले युवक का चेहरा एक दिन पहले से बहुत बदला हुआ था। उसके चेहरे की कुछ-एक चीज़ें आकार में काफ़ी बड़ी नज़र आ रही थीं। उन में एक नीलापन-सा छाया था। ऊपर का होंठ और दाहिना गाल ख़ून से सने थे। इन सब ने मुझे मिशा ओवचारेन्को से एक बहुत ही संजीदा सवाल पूछने का अधिकार प्रदान कर दिया:

"यह सब क्या है? किसने इसके चेहरे को इस तरह सजाया है?"

मिशा गम्भीरता से मुसकराया। ऐसा मालूम हुआ जैसे उसे सवाल के इस ढंग से पूछे जाने के सही होने में सन्देह हो।

"यह आप मुझसे क्यों पूछते हो, अन्तोन सेम्योनोविच? यह मेरा

नहीं, खोवराख़ का चौखटा है। मैं अपना काम जानता हूं। मैं आपको हमारा संचालक होने के नाते अपने काम की पूरी रिपोर्ट दे सकता हूं। वोलोखोव ने कहा, 'दरवाज़े पर जाकर खड़े हो और देखो कि कोई रसोई-घर में न घुसने पाए!' मैं दरवाज़े पर जम गया, और वही मैं इस समय भी कर रहा हूं। क्या मैं इसकी ओर लपका, क्या मैं इसे खदेड़ते हुए शयनागार में गया, क्या मैंने इसे झिड़कियां पिलाईं? यह खुद खोवराख़ से ही पूछ लो। वे सब यहां आ धमकते हैं, बिना किसी काम के–शायद किसी चीज़ से टकरा गया होगा?"

खोवराख़ जिसने अब अचानक झींकना शुरू कर दिया था, मिशा की ओर सिर हिलाया और अपना विचार समझाया:

"बहुत ठीक! तुम समझते हो कि तुम्हें हमें भूखों मारने तथा धक्का-मुक्की करने का अधिकार है–क्यों, यही न? तुम मुझे नहीं जानते? अच्छी बात है, समय आने पर जान जाओगे!"

उन दिनों हमलावर की स्थिति की कोई स्पष्ट व्याख्या उपलब्ध नहीं थी। सो मामला विचाराधीन था। इतिहास में इस तरह की पेचीदा घटनाएं हुई हैं, उनका निबटारा करना हमेशा अत्यन्त कठिन रहा है। राजकुमार अंगियन की हत्या के बाद नेपोलियन के ये शब्द मुझे याद आए–"यह एक अपराध हो सकता है, लेकिन ग़लत वह निश्चय ही नहीं था।"

मैंने सतर्कता के साथ मध्यम मार्ग अपनाया।

"तुम्हें उसे मारने-पीटने का क्या अधिकार था?"

अभी भी मुस्कराते हुए मिशा ने मेरी ओर एक 'फ़िन्का' (फ़िन्निश चाकू) बढ़ाया।

"यह देखिये–यह 'फ़िन्का' है। क्या सोचते हैं आप कि यह कहां से मेरे पास आया? शायद आप सोचते हों कि मैंने इसे ख़ोवराख़ से चुराया? काफ़ी वाद-विवाद हुआ। वोलोख़ोव ने कहा था कि रसोईघर में कोई न जाने पाए। मैं इस जगह से नहीं हिला। और वह अपने 'फ़िन्का' को ताने मेरे पास आया और बोला, 'मुझे भीतर जाने दो!' बेशक, मैंने उसे भीतर नहीं जाने दिया, अन्तोन सेम्योनोविच। और उसने फिर कहा–'मुझे जाने दो', और मुझे धकियाकर जाने लगा।

सो मैंने उसे झटका दिया, यूं ही मामूली-सा झटका, मुलायमियत से। और वह, मूर्ख कहीं का, लगा अपना 'फ़िन्का' फहराने। बिलकुल नहीं जानता कि अनुशासन किसे कहते हैं। लकड़ी का कुन्दा .. "

"फिर भी तुमने उसे मारा। देखो न – एकदम लहू से रंगा हुआ है। क्या यह तुम्हारे मुक्कों की करामात है?"

मिशा ने अपनी मुट्ठियों का मुआयना किया और शर्मा गया।

"बेशक, मेरी नहीं तो भला और किसकी हो सकती है? लेकिन मैं इस जगह से क़तई नहीं हिला। वोलोख़ोव ने यहां जमे रहने के लिए कहा था और मैं जमा रहा। और ख़ोवराख़ ने – मूर्ख कहीं का – चाकू भांजना शुरू किया।"

"और तुमने?"

"हाथों को भांजने के लिए कोई मना कर सकता है? जब तक मैं अपनी चौकी पर डटा हूं, तब तक अपने पांव का भार मैं बदल सकता हूं, या मान लीजिये कि मेरा एक हाथ उलट गया है, तो क्या मैं उसे सीधा नहीं कर सकता? और अगर कोई उससे आ टकराता है तो इसमें मेरा क्या दोष? तुम्हें ख़ोवराख़, चौकस रहना चाहिए कि तुम कहां जा रहे हो! मान लो कि एक गाड़ी आ रही है... तुम देख सकते हो कि गाड़ी आ रही है, सो एक ओर हट जाओ, और इन्तज़ार करो। और अगर तुम बीच पटरियों में खड़े होंगे, अपने 'फिन्का' को भांजते हुए, तो बिला शक गाड़ी अपना रास्ता नहीं छोड़ेगी, और मलीदे के सिवा तुम्हारा कुछ नहीं बचेगा। या मान लो कि एक मशीन चालू है, सो तुम्हें उसके पास जाते समय चौकस रहना चाहिए – तुम बच्चे नहीं हो!"

मिशा यह सब भले स्वभाव से ख़ोवराख़ को समझा रहा था, एक ऐसी आवाज़ में जिसमें दुलार तक का पुट मिला था। अत्यन्त विश्वसनीय अन्दाज़ में वह अपने दाहिने हाथ को लहरा रहा था – यह बताते हुए कि गाड़ी किस प्रकार आ सकती है, उसके आ जाने पर कहां ख़ोवराख़ को खड़े होना चाहिए। ख़ोवराख़ ने मौन एकाग्रता के साथ उसे सुना। उसके गालों का रक्त मई के सूरज की किरणों से जम चला था। रबफ़ाक-छात्रों का दल गम्भीरता के साथ मिशा ओवचारे-

न्को का सम्भाषण सुन रहा था। मिशा की स्थिति की कठिनाई तथा उसके तर्कों की सरल बुद्धिमानी का मन-ही-मन अनुभव कर रहा था।

बातों के दौरान कुछ अन्य कुरियाजवासी भी वहां आ गए थे। उनके चेहरों से साफ़ पता चलता था कि मिशा के तर्कों ने उन्हें मुग्ध कर लिया है। ये तर्क, उनकी दृष्टि में, इसलिए और भी अधिक विश्वसनीय थे कि एक विजेता ने उन्हें प्रकट किया था। और मुझे ख़ुशी थी कि मैं अब उनके चेहरे पर के भावों को पढ़ सकता था। कुत्सित आनन्द की एक न मालूम-सी दमक जो, फटे-फटे तार के अक्षरों की भांति, गंदगी और शोरबे के दाग़-धब्बों की परतों के नीचे झिलमिल रही थी, मुझे खास तौर से दिलचस्प मालूम हुई। केवल एक चेहरे पर, वान्या ज़ाइचेन्को के चेहरे पर यह कुत्सित आनन्द उत्सव के नारों की भांति लचकदार अक्षरों में अंकित था। वान्या अपनी टोली के आगे खड़ा था, हाथों को अपनी पतलून की पेटी में खोंसे हुए और अपने नंगे पैरों को चौड़ाए। गहरी और हंसती हुई एकाग्रता के साथ वह ख़ोवराख़ के चेहरे को पढ़ रहा था। अचानक उसने अपना पांव पटका, अपनी कोमल, बचकानी कमर को पीछे की ओर फेंका और कहने के बजाय सुरीली आवाज़ में गुनगुना उठा:

"ख़ोवराख़! सो तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता जब कोई तुम्हारा थोबड़ा ढीला करता है? तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता – क्यों?"

"चुप रहो, चमगादड़!" ख़ोवराख़ ने उदास भाव से कहा। उसकी आवाज़ में आवेग का चिन्ह तक नहीं था।

"ओहो! इसे यह अच्छा नहीं लगता!" ख़ोवराख़ की ओर इशारा करते हुए वान्या ने कहा। "उन्होंने इसके थोबड़े पर जड़ दिया। बस, इतनी-सी बात है!"

ख़ोवराख़ ज़ाइचेन्को की ओर झपटा, लेकिन कराबानोव ने ख़ोवराख़ के कंधे पर अपना हाथ रखा, और ख़ोवराख़ का कंधा तथा शहरी वेश-भूषा से सज्जित उसका समूचा ढांचा उसके स्पर्शमात्र से लचलचा गया। वान्या ज़रा भी भयभीत नहीं हुआ। वह केवल मिशा ओवचारेन्को के और भी नज़दीक खिसक आया। ख़ोवराख़ ने अपने चेहरे को ऐंठा और छिटककर अलग हो गया। सेम्योन सहृदयता से मुसकराया। ख़ोवराख़ की अप्रिय भूरी आंखें अपने कोटरों में घूमीं और फिर से वान्या

की आंखों पर जा टिकी जो अब भी प्रसन्नता और सजगता से परिपूर्ण थीं। ख़ोवराख़, प्रत्यक्षतः, विमूढ़ता का अनुभव कर रहा था। विफलता और अकेला पड़ जाना, गाल पर के रक्त की सूखी धारियां, मिशा के ताज़ा उद्गार और कराबानोव की मुसकान – ये सब ऐसी चीजें थीं जिनपर सोचने के लिए कुछ समय की ज़रूरत थी और इस घिनौने द्वेषपूर्ण वान्या को नज़रअन्दाज़ तथा अपनी उद्दण्डता की आदी और झुलसा देनेवाली नज़र को थोड़ा मुलायम करना उसे कठिन मालूम हो रहा था। लेकिन वान्या ने, व्यंग्यपूर्ण चेहरा बनाकर, उसकी इस नज़र को धराशायी कर दिया :

"बाप रे, कितने भयानक दिखते हो तुम! निश्चय ही रात को मुझे नींद नहीं आएगी। डर के मारे मेरी तो घिग्घी बंध रही है, सच!"

गोर्कीआइट और कुरीयाजवासी – दोनों ज़ोरों से हंस पड़े।

"सूअर!" ख़ोवराख़ ने फुंकार छोड़ी और अपने बदन को पीछे की ओर ताना, टूट पड़ने के लिए एकदम प्रस्तुत।

"ख़ोवराख़!" मैंने कहा।

"क्यों, क्या है?" उसने अपने कंधे के ऊपर से पूछा।

"मेरे पास आओ!"

मेरे आदेश का पालन करने के लिए वह कोई ख़ास व्यग्र नहीं मालूम हुआ बल्कि हस्बमामूल अपनी जेबों को टटोलता रहा, अपनी आंखों को मेरे बूटों पर गड़ाए। मैंने अपनी आवाज़ में इस्पाती खनक जाने दी।

"और भी नज़दीक आओ, सुनते नहीं?"

चारों ओर पूर्ण ख़ामोशी थी। केवल एक आवाज़ – धीमी भयभीत-सी 'ओहो!' – पेत्या मालिकोव के मुंह से प्रकट हुई।

ख़ोवराख़ अपने होंठों को आगे की ओर निकाले, मेरी ओर बढ़ा, अपनी पैनी नज़र से मुझे आतंकित करने का प्रयास करते हुए। दो डग दूर वह रुक गया, अपनी टांगों को झुलाते हुए, जैसा कि उसने कल किया था।

"सावधान!" मैं चिल्लाया।

"सावधान – क्या मतलब है इसका?" ख़ोवराख़ बुदबुदाया, लेकिन

अपने बदन को उसने सीधा कर लिया, हाथों को भी अपनी जेबों से बाहर निकाला, हालांकि दाहिने हाथ को, उकसानेवाले अन्दाज़ में, अपने कूल्हे पर टिका लिया। हाथ की उंगलियां फैली हुई थीं।

कराबानोव ने कूल्हे पर से उसका हाथ हटा दिया।

"सुनो, मुनुआ, जब 'सावधान' का आदेश दिया जाए, तो तुम्हें होपक नाच नहीं दिखाना चाहिए। अपना सिर ऊंचा रखो!"

ख़ोवराख़ ने अपनी भौंहें सिकोड़ी लेकिन मैं देख सकता था कि वह सीधा-सतर होता जा रहा है।

"अब तुम गोर्कीआइट हो," मैंने उससे कहा। "तुम्हें अपने साथियों का आदर करना चाहिए। और नन्हों को अब तुम नहीं धकियाओगे — क्यों, नहीं धकियाओगे, न?"

ख़ोवराख़ ने गम्भीरता के साथ आंख मिचमिचाई और अपने निचले होंठ को नाममात्र को फरकाते हुए मुसकराने का आभास दिया। मेरे उस प्रश्न में कोमलता से अधिक धमकी का पुट था, और मैं देख सकता था कि यह तथ्य ख़ोवराख़ के हृदय में उतर गया है। उसका जवाब संक्षिप्त था:

"ठीक!"

"नहीं, ठीक नहीं, बल्कि अच्छा, काठ के उल्लू!" बेलूख़िन की प्रसन्न आवाज़ गूंजी।

बिना किसी औपचारिकता के मात्वेई ने ख़ोवराख़ के कंधों को पकड़ उसे घुमाया, ढीले लटके हुए उसके दोनों हाथों पर फटाक से एक साथ प्रहार किया, बड़ी सफ़ाई के साथ हाथ को सलामी के अन्दाज़ में ऊंचा उठाया और शब्द-प्रतिशब्द उच्चारित करते हुए कहा

"अच्छा — नन्हों को नहीं धकियाऊंगा! अब कहो, इस तरह!"

ख़ोवराख़ का मुंह लटक आया।

"तुम क्यों मेरे पीछे पड़े हो, लड़को? आख़िर मैंने किया क्या है? मैंने ऐसी कोई ख़ास बात नहीं की। उसने ही मेरे जबड़े पर प्रहार किया — हां, उसने। और मैंने कुछ नहीं किया..."

कुरियाजवासी मंत्र-मुग्ध हो गये और निकट खिसक आए। कराबानोव ने ख़ोवराख़ के कधे पर अपना हाथ रखा और हार्दिकता के साथ कहा:

"सुनो, साथी! तुम एक समझदार जीव हो! मिशा ड्यूटी पर है। वह अपने नहीं, सबके हितों की रक्षा कर रहा है। चलो, मेरे साथ उस झुरमुट की ओर चलो। मैं तुम्हें समझा दूंगा ..."

वे झुरमुट की ओर चल दिए। नैतिक समस्याओं के कुछ शौक़िया माहिरों का एक दल उनके साथ हो लिया।

वोलोख़ोव ने भोजन परोसने का आदेश दिया। रसोइया जिसका चेहरा लम्बी मूंछों से सजा था और जिसके सिर पर एक सफ़ेद टोपी सुशोभित थी, काफ़ी देर से मिशा की ओट में खड़ा ऊपर-नीचे उचक रहा था। उसने अब, मित्रतापूर्ण अन्दाज़ में, वोलोख़ोव की ओर अपना सिर हिलाया और ओझल हो गया। वान्या ज़ाइचेन्को ने अपनी टोली की आस्तीनों को ज़ोरों से खींचते हुए फुसफुसाहट में कहा:

"अरे देखो, वह सफ़ेद टोपी पहने है! भला सोचो तो, क्या मतलब हो सकता है इसका? तिम्का! बोलो, क्या कहते हो तुम?"

तिम्का ने लाल पड़ते हुए अपनी आंखें झुका लीं और कहा:

"यह उसकी अपनी टोपी है – मैं जानता हूं!"

पांच बजे एक आम सभा की गई। रबफ़ाक-छात्रों द्वारा किए गए प्रचार की वजह से या फिर अन्य किसी वजह से, काफ़ी संख्या में कुरियाजवासी क्लब में जमा हुए। और उस समय जब ओसाद्ची तथा शेलापूतिन ने मिशा ओवचारेन्को को दरवाज़े पर तैनात करने के बाद वहां उपस्थित लोगों के नाम लिखना शुरू करके अनिवार्य शैक्षणिक प्रक्रिया का और छात्रों की सूची बनाने की प्रक्रिया का – सूत्रपात किया तो देर से आनेवाले धक्कम-धुक्की से भीतर प्रवेश करते हुए व्यग्र भाव से पूछने लगे:

"क्या उन्हें शाम का खाना नहीं मिलेगा जिनके नाम लिखने से रह गए हैं?"

अनगढ़ मानवता का यह सारा समूह भूतपूर्व गिरजे के आकार में मुश्किल से अट पा रहा था। देव-मंच की पैड़ियों से लावारिस जीवों के इस समुदाय पर मैंने नज़र डाली। उसके परिमाण और भयावह कोरेपन ने मुझे स्तब्ध कर दिया। बहुत ही कम स्थल ऐसे थे जहां, भीड़ के बीच दिलचस्प तथा कुछ जानदार चेहरों का उभार दिखाई देता था। केवल जब-तब ही एकाध मानवीय शब्द, बचपन की उन्मुक्त

हंसी सुनी जा सकती थी। लड़कियां पीछेवाली भट्टी की बग़ल में भय से मौन दुबकी-सिमटी खड़ी थीं। भावनाशून्य आदिम चेहरे, मुंह बाए, और चुंधी आंखों तथा विजबिज मांसपेशियों से युक्त, जाकेटों, उलझे-बिखरे और सड़ी हुई गंधों के इस अंधियाले सागर में जीवनविहीन धब्बों की भांति मालूम होते थे।

संक्षेप में मैंने उन्हें गोर्की कोलोनी के बारे में बताया, उसके जीवन और काम के बारे में, उन समस्याओं का वर्णन करते हुए जोकि हमने अपने सामने रखी थीं – सफ़ाई, काम, अध्ययन, एक नया जीवन, नयी मानवीय ख़ुशहाली। और यह कि वे एक भाग्यशाली देश के निवासी थे जहां न ज़मींदार थे और न पूंजीपति, जहां मानव आज़ादी के साथ पनप और आह्लादपूर्ण श्रम में विकसित हो सकता था। लेकिन मैं जल्दी ही ऊब गया – मन लगाकर सुनने और जवाब में हुंकारे भरनेवाले श्रोताओं के अभाव में। ऐसा मालूम होता था जैसे अलमारियों, पीपों और बकसों के समूह के सामने भाषण दे रहा हूं। मैंने घोषणा की कि दस्तों के रूप में कोलोनीवासियों को संगठित करना होगा, एक दस्ते में बीस जनों के हिसाब से और अपने श्रोताओं से चौदह कमाण्डर चुनने का अनुरोध किया। वे चुप बने रहे। मैंने उनसे सवाल पूछने के लिए कहा। वे फिर भी चुप रहे। कुदलाती देव-मंच की पैड़ियों पर आया, और उसने कहा:

"इधर देखो, तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिए। तुम रोटी, आलू और शोरबा सब गटकते हो। भला बताओ तो, किसके सिर पड़ी है जो तुम्हें यह सब दे? बोलो, किसके सिर पड़ी है? मान लो, अगर मैं कल तुम्हें दिन का खाना न दूं तो? क्या होगा तब?"

इस प्रश्न का भी कोई जवाब नहीं आया।

कुदलाती झुंझला उठा:

"तो मैं प्रस्ताव करता हूं कि कल से हर व्यक्ति छः घंटे काम करेगा। बोवाई करनी है! बोलो, क्या तुम काम करोगे?"

दूरतम कोने से एक अकेला आवाज़ सुनाई दी:

"हम काम करेंगे!"

समूचे समूह के सिर उस आवाज़ की दिशा में अलस भाव से घूमे और भावशून्य चेहरे फिर अपनी पांत में आ गए।

मैंने ज़दोरोव की ओर देखा। मेरे संकोच के जवाब में वह हंसा और मेरे कंधे पर उसने अपना हाथ रखा :

"चिन्ता न करो, अन्तोन सेम्योनोविच, यह सब रहनेवाला नहीं है।"

४. "सब ठीक है।"

कुरियाजवासियों को संगठित करने के हमारे प्रयास रात को काफ़ी देर तक चलते रहे। रबफ़ाक-छात्रों ने शयनागारों के चक्कर लगाए, कोलोनीवासियों के नामों को एक बार फिर दर्ज किया, दस्ते बनाने की दृष्टि से। मैं भी शयनागारों में गोर्कोवस्की को अपने साथ लिए हुए घूमा। चाहे केवल मोटे तौर से ही सही, लेकिन यह आवश्यक था कि समूह के कैसे भी प्राथमिक चिन्हों को जांचा और पकड़ा जाए। उन चिन्हों का आविष्कार किया जाए जो एक प्रकार से समाज को एक सूत्र में बाँधनेवाले सक्षम सीमेण्ट का काम दे सकें। गोर्कोवस्की शयनागारों के अंधियारे की गंध लेता और पुकार उठता :

"अरे, इधर आओ, अब! मालूम तो हो, यहां कौनसी टोली मौजूद है?"

और बहुतकर शयनागरों में न तो कोई टोली प्रकट होती, और न ही कोई व्यक्ति। ख़ुदा ही जाने कि वे, कुरियाजवासी कहां लोप हो गए थे। आस-पास खड़े लोगों से हम पूछ-ताछ करते। यह कि शयनागारों के वासी कौन हैं, किसकी किसके साथ ज़्यादा घुटती है, उन में बुरे कौन हैं और अच्छे कौन, लेकिन जवाबों से हमें बहुत ही कम सन्तोष होता। अधिकांश कुरियाजवासी अपने पड़ोसियों को नहीं जानते थे, यहां तक कि उन्हें उनके नाम तक नहीं मालूम थे, बहुत हुआ तो वे हमें केवल उनके उपनाम बता सकते थे – ऊख़ों, पदमेत्का, शोफ़ेर* – या फिर उनकी बाह्य निशानियों की याद कर सकते थे :

"इस बिस्तरे पर एक चेचक के दाग़वाले मुंह का लड़का सोता है और उसपर वाल्की गांव का एक लड़का।"

---

* 'कान, जूते का बल्ला, ड्राइवर'। सं०

कई जगह समाज को जोड़नेवाले पदार्थ के भी कुछ चिन्ह हमें दिखाई दिए। लेकिन जिस चीज़ को उसने जोड़ा था वह उस चीज़ से भिन्न थी जिसकी हम खोज कर रहे थे।

लेकिन रात के घिर आने तक कुरियाजवासियों के बारे में मुझे अन्दाज़ हो गया कि वे किस प्रकृति के जीव हैं।

निस्संदेह, वे असल लावारिस जीव थे, लेकिन ठीक परम्परागत कोटि के नहीं। जाने क्यों या कैसे, हमारे साहित्य और हमारे बुद्धिजीवियों के मस्तिष्क में लावारिस आवारा लड़कों ने एक तरह के बायरनी हीरो की छवि का रूप धारण कर लिया है। दार्शनिक और प्रत्युत्पन्नमति, अराजकतावादी और विध्वंसक, लफ़ंगे और तमाम नैतिक प्रणालियों के – चाहे वे कैसी भी क्यों न हों – दुश्मन के रूप में उसकी कल्पना की जाती है। भयभीत और आंसुओं के पुतले शिक्षाविदों ने समाजशास्त्र, प्रति-छायालाजी तथा हमारे अन्य सभी ठाठदार सगे-सम्बन्धियों की दुमों से नोचे हुए कम-ो-बेश थोड़े-बहुत भड़कीले परों को खोंसकर इस छवि को सजा दिया था। वे निश्चित रूप से विश्वास करते थे कि ये लावारिस आवारा संगठित थे, कि वे अपने नेताओं और अनुशासन से, चोर-कार्यों की एक बाक़ायदा रणनीति और अपने नियम-क़ायदों से सज्जित थे। वे उन्हें एक ख़ास क़िस्म की वैज्ञानिक शब्दावली से भी – 'स्वयंस्फूर्त समूह' तथा इसी तरह के अन्य शब्दजाल से – सम्मानित करते थे।

लावारिस आवारा लड़कों की इस छवि को अज्ञानाचार्यों ने – रूसी और विदेशी दोनों ने – अपनी कृतियों में और भी अधिक निखारा-संवारा। समूचे लावारिस समुदाय को चोर, पियक्कड़, लम्पट, अफ़ीमची और सिफ़लिस के घर की उपाधि दे दी। दुनिया के समूचे इतिहास में केवल पीटर महान ही एक ऐसा था जिसे एक साथ इतने घातक अभिशापों से लादा गया था। और, कहने की आवश्यकता नहीं, यह सब कुछ पश्चिमी युरोप के गप्पियों के लिए हमारे जीवन के बारे में मूर्खतापूर्ण तथा कुत्सित क़िस्सों को फैलाना आसान बना देता था।

वास्तव में... जीवन इन क़िस्सों से लेशमात्र भी नहीं मिलता था।

इस धारणा को कि लावारिस आवारा लड़कों का एक स्थायी समाज – न केवल अपने 'भयावह दुष्कृत्यों' तथा चित्रमय वेश-भूषा

बल्कि अपनी 'विचारधारा' के साथ हमारी सड़कों पर दख़ल जमाए है, दृढ़ता के साथ रद्द करने की ज़रूरत है। सड़कवासी सोवियत अराजकतावादियों से सम्बन्धित रोमांटिक गप्प हांकनेवाले यह देखने में विफल रहे कि गृह-युद्ध और अकाल के बाद, लाखों को, समूचे देश के वीरतापूर्ण संयुक्त प्रयासों द्वारा, अनाथालयों में जीवित रखा गया। ये लड़के बहुत संख्या में बढ़ और पलकर सोवियत कारख़ानों तथा सोवियत संस्थानों में एक लम्बे समय से काम कर रहे हैं। यह बात दूसरी है कि इन बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में शैक्षणिक प्रक्रिया कितनी सुचारुता के साथ चली।

और बड़ी हद तक इन रोमांटिकों की बदौलत ही अनाथालयों का काम बहुत कठिनाई से चल रहा था। उसका नतीजा, जब-तब, कुरियाज क़िस्म की संस्थाओं के रूप में प्रकट हुआ। ऐसी हालत में अगर कई लड़के (केवल लड़के ही यहां हमारे विचार का विषय हैं) सड़कों पर जाते थे तो इसका कारण यह क़तई नहीं था कि वे स्थायी रूप से सड़कों पर बसना चाहते थे, या यह कि सड़कों को वे अपना प्रकृति-दत्त घर समझते थे। उनके ख़याल में जगत की विचारधारा जैसी कभी कोई चीज़ नहीं रही। वे केवल किसी दूसरी, अधिक अच्छी, कोलोनी या अनाथालय में प्रवेश करने की आशा से भागते थे। दुनिया-भर की बाल-समितियों तथा कमीशनों की ड्योढ़ियों पर वे छाए रहते थे, लेकिन सर्वोपरि वे आकांक्षा यही करते थे कि किसी ऐसी जगह पहुंच जाएं जहां हमारे निर्माण-कार्यों में हिस्सा लेने का उन्हें अवसर मिल सके, और साथ ही जहां वे शैक्षणिक प्रतिबंधों के वरदानों से छुटकारा पा सकें। लेकिन इसमें उन्हें बहुधा सफलता नहीं मिलती थी। शिक्षाविदों की बिरादरी, आत्मविश्वासी और हठधर्मी, इतनी आसानी के साथ अपने शिकार को अपने पंजे में से नहीं निकलने दे सकती थी। इसके अलावा उसके लिए किसी ऐसे मानवीय जीवन की कल्पना तक करना कठिन था जो समाज-शिक्षा की चक्की में से न गुज़रा हो। नतीजा इसका यह कि आम तौर से, किसी अन्य कोलोनी में एक बार फिर शैक्षणिक चक्की में से गुज़रना पड़ता था जिससे, कहने की आवश्यकता नहीं, पीछा छुड़ाकर वे फिर भाग सकते थे। एक कोलोनी से दूसरी कोलोनी के बीच के प्रतीक्षा-काल में ये किशोर नागरिक,

निस्संदेह, अपना जीवन सड़कों पर बिताते थे और सैद्धान्तिक तथा नैतिक मसलों पर विचार करने के लिए आवश्यक अवकाश, दक्षता या दफ़्तरी मेज़ों के अभाव में वे, बहुत ही प्राकृतिक ढंग से, नैतिकता या सिद्धान्तों का सहारा लिए बिना, खाद्य जैसी समस्याओं को हल करते थे। अन्य क्षेत्रों में भी, सड़कों के ये निवासी, नैतिकता के औपचारिक सिद्धान्तों के साथ अपने कृत्यों का कोई घनिष्ठ नाता नहीं जोड़ते थे – लावारिस आवारा, अक्सर औपचारिकता से बहुत ही कम लगाव रखते थे। उन्हें उचित-अनुचित का थोड़ा अनुभव हो चला था इसलिए वे अपने हृदय की गहराइयों में विश्वास करते थे कि वे सीधे धातु-उद्योग के कामगार या ड्राइवर बनने जा रहे हैं। और इसके लिए केवल दो चीज़ों की ज़रूरत थी – एक तो इस धरती पर मज़बूती से पांव टिकाए रखने की, भले ही इसके लिए उन्हें स्त्रियों के दस्ती बटुओं तथा पुरुषों के बैगों को पकड़कर अपना संतुलन ठीक रखना पड़े, और दूसरे जहां तक भी हो सके, किसी गैरेज या मरम्मतख़ाने के निकट पहुंचने की।

मानवीय चरित्रों के वर्गीकरण की सन्तोषप्रद प्रणाली तैयार करने के लिए धुरंधर ग्रंथों में अनेक प्रयत्न किए गए। लावारिस आवारा लड़कों को अनैतिक तथा विकार-ग्रस्त कोटि में स्थान देने में कोई कसर नहीं उठा रखी गई। इन सारे वर्गीकरणों में सबसे अच्छा मुझे वह लगा जिसे ख़ारकोव के द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून ने व्यावहारिक उपयोग के लिए तैयार किया था।

कम्यून की कामचलाऊ स्थापना के अनुसार लावारिस जीवों को तीन कोटियों में विभाजित किया गया था। 'पहली कोटि' के सदस्य अपनी भाग्य कुण्डली ख़ुद तैयार करने में सक्रिय हिस्सा लेते और मुसीबत तथा ख़तरे से मुंह नहीं मोड़ते, धातु-कामगार बनने की अपनी खोज में यात्रियों के डिब्बे के किसी भी हिस्से से चिपकने के लिए तैयार रहते थे। वे एक्सप्रेस गाड़ियों की तूफ़ानी गति के असाधारण रूप से शौक़ीन थे लेकिन भोजन करने के डिब्बों, सोने की सुविधाओं तथा रेलवे-कर्मचारियों की शिष्टता के आकर्षण के कारण नहीं। इन यात्रियों के बारे में कुछ लोगों का यह कहना उन्हें लांछित करना था कि क्रीमिया की हवा या सोची के खनिज झरनों की धुन में वे गाड़ियों का

पीछा नहीं छोड़ते थे। यह सच नहीं है। मुख्यतः द्नेप्रोपेत्रोव्स्क, दोनेत्स्क और ज़ापोरोज्ये के भीमाकार कारख़ाने, ओदेस्सा और निकोलायेव के जहाज़, मास्को तथा ख़ारकोव के औद्योगिक संस्थान बरबस उन्हें अपनी ओर खींचते थे।

लावारिस जीवों की 'दूसरी कोटि', अनेक विशेषताओं से सज्जित होने पर भी, नैतिक गुणों के उतने उदार मेल का दावा नहीं कर सकती थी जोकि 'पहली कोटि' की शोभा बढ़ाते थे। ये भी खोजी थे, लेकिन सूती कपड़े की मिलों तथा चमड़े के कारख़ानों के प्रति नाक-भौंह सिकोड़कर मुंह फेरने की परेशानी नहीं उठाते थे, बढ़ई-घर से ही सन्तोष कर लेते थे, गत्तेसाज़ी को गले लगाते थे – और उनमें कुछ तो इतने गए-बीते होते थे कि जड़ी-बूटियां बटोरने तक का धंधा करते थे।

'दूसरी कोटि' के लावारिस जीव भी यात्रा करते थे, लेकिन अधिकतर ट्रामों के पिछले हिस्सों पर लटककर। ज़्मेरिन्का शानदार स्टेशन या मास्को के कड़े नियम-क़ायदे उनके लिए बेगाने थे।

द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून के स्दस्य अपने कम्यून में हमेशा 'पहली कोटि' के नागरिकों को लेना पसंद करते थे। इसलिए, मुख्यतः, एक्सप्रेस गाड़ियों में किए गए प्रचार द्वारा वे अपनी पांतों में रंगरूटों को भरती करते थे। कम्यून के सदस्य 'दूसरी कोटि' के जीवों को अत्यन्त निम्न स्तर का समझते थे।

लेकिन कुरियाज में 'पहली', यहां तक कि 'दूसरी' भी कोटि का नहीं, बल्कि 'तीसरी' का प्राधान्य था। सड़कवासी आवारा, लावारिसों में, ठीक वैसे ही जैसे कि आलिम-फ़ाज़िलों में, 'पहली कोटि' के अधिक नहीं थे, और 'दूसरी कोटि' में भी उन्नीस-बीस का ही फ़र्क़ था – 'पहली' से कुछ ही ज़्यादा। उनकी बहुल संख्या 'तीसरी कोटि' की थी। इस बहुल संख्या के सदस्य न तो भागते थे, न किसी चीज़ की खोज करते थे, बल्कि अपनी बचकाना आत्मा की कोमल पंखुरियों को समाज-शिक्षा संयोजनी प्रभाव की वेदी पर अर्पित कर देते थे।

कुरियाज में 'तीसरी कोटि' की समृद्ध खेप मुझे दिखाई दी। अपने छोटे-से जीवन-काल में ये बच्चे तीन या चार अनाथालयों तथा कोलोनियों में रह चुके थे। उनमें से कुछ तो ग्यारह की बानगी देख

चुके थे। लेकिन ये अच्छे भविष्य के लिए उनकी आकांक्षाओं का नतीजा नहीं था, बल्कि जन-शिक्षा विभाग के कार्यकर्त्ताओं की मौलिक आकांक्षाओं का नतीजा था – ऐसी आकांक्षाओं का जो सधी हुई आंखों को भी बहुधा इतना धुंधला मालूम होता था कि उन सीमा-रेखाओं को पहचानना कठिन हो जाता था जो पुनःसंगठन, एकीकरण, अनेकीकरण, नवीनीकरण, प्रभावीकरण, अभिनिष्क्रमण, पुनःअभिनिष्क्रमण आदि-आदि को एक दूसरे से अलग करती थीं।

और चूंकि मैं भी पुनःसंगठन के अभिप्राय से कुरियाज आया था, इसलिए मुझे भी उसी उदासीन रवैये का सामना करना पड़ा जोकि प्रत्येक लावारिस आवारा का एकमात्र रक्षात्मक साधन था – एक ऐसा साधन जिसे वह उस समय काम में लाता था जब जन-शिक्षा विभाग अपने अनंत शैक्षणिक प्रक्रिया की देन – एक हद तक शिक्षाशास्त्र की व्यापक शक्ति का प्रदर्शन करती थी।

ज़्यादातर कुरियाजवासी तेरह से पन्द्रह वर्ष तक की आयु के बीच के थे, लेकिन इस उम्र में ही पुरखों जैसे अनेक चिन्ह उनके चेहरों में दिखाई देने लगे थे। सबसे पहली चीज़ जो नवागन्तुक की नज़र से टकराती थी, वह थी ज़रा-सी भी सामाजिक चेतना का पूर्ण अभाव, बावजूद इसके कि वे अपने जन्म से ही समाज-शिक्षा के फरहरे के नीचे बढ़े और पले थे। एक तरह की आदिम, स्वाभाविक सरलता उनकी प्रत्येक हरकत में चिन्हित थी, लेकिन यह वह सरलता नहीं थी जो बालकों में पाई जाती है – जीवन की हर गोचर अभिव्यक्ति के प्रति अल्हड़पन के साथ ललकना। वे नहीं जानते थे कि जीवन क्या था, उनका दृष्टि-क्षेत्र खाद्य-पदार्थों की सूची तक सीमित था जिसकी ओर वे उनींदे, उदास और बरबस खिंचते थे। उनके जीवन की समस्या ख़ुद उन जैसे जंगली पशुओं की भीड़ को वेधकर शोरबे के कड़ाह तक पहुंचने में निहित थी। कभी यह अधिक सफलता के साथ हल हो जाती थी और कभी कम सफलता के साथ। उनके जीवन का पेण्डुलम अन्य किसी हरकत से परिचित नहीं था। कुरियाजवासी केवल उन्हीं चीज़ों को चुराते थे जिनपर कि, बिना किसी प्रयास के, वे हाथ डाल सकते थे, या जिनपर उनकी भीड़ टूट पड़ती थी। इन बच्चों की इच्छाशक्ति को वयस्क लड़कों की धींगा मुश्ती और गाली-

गलौज ने दबा दिया था। ये वयस्क लड़के सम्बन्धित अनहस्तक्षेप तथा 'स्व-अनुशासन' की धरती पर फूले-फले थे।

लेकिन, साथ ही, ये बच्चे कुंद किसी तरह भी नहीं थे। वे साधारण लड़के थे जिन्हें भाग्य ने अत्यन्त बेहूदा परिस्थितियों में ला पटका था – एक ओर तो मानवीय विकास के तमाम वरदानों से वंचित, दूसरी ओर रोज़ी रोटी के संघर्ष तक के स्वास्थ्यप्रद प्रभाव से विलग – अरुचिकर ही सही, लेकिन खाना रोज़ मिल जाता था।

इस सामान्य पृष्ठभूमि में असामान्य प्रकृति के कुछ दल अलग उभरे हुए नज़र आते थे। वह शयनागार जिसमें ख़ोवराख़ रहता था, प्रत्यक्षतः 'बिज्जुओं' का हैडक्वार्टर था। हमारे लड़कों ने बताया कि वे पन्द्रह हैं, कोरोत्कोव नाम का कोई जीव उनका सरगना है। उसे अभी तक मैंने नहीं देखा था। सामान्यतः ये कोलोनीवासी अपना अधिकांश समय नगर में बिताते थे। येवगेनीयेव के कुछ पुराने परिचित उनमें निकल आए थे। उसने मुझे बताया कि वे मामूली नगर-चोर हैं, और यह कि कोलोनी उनके लिए केवल सोने की एक जगह का काम देती है। वित्का गोर्कोवस्की येवगेनीयेव से सहमत नहीं हुआ।

"उन्हें तुम चोर कहते हो? वे निरे लफ़ंगे हैं!"

वित्का ने कहा कि कोरोत्कोव, ख़ोवराख़, पेरेत्स, चुरिलो, पोदनेवेस्नी और अन्य सब, खुद कोलोनी में ही अपना व्यापार करते थे। शुरू में उन्होंने शिक्षकों के कमरों पर हाथ साफ़ किया, वर्कशॉपों और भण्डारघरों को ख़ाली किया। खुद कोलोनीवासियों के पास भी एक-दूसरे की चोरी करने लायक़ कुछ-न-कुछ चीज़ें मिल जाती थीं। उनमें से कितनों को मई दिवस के लिए नए जूते दिए गए थे। गोर्कोवस्की के कहने के मुताबिक़ जूते उनकी गतिविधि का लक्ष्य होते थे। इसके अलावा वे गांव में भी चोरी करते थे, उनमें से कुछ राजमार्ग पर भी धावा करते थे। कोलोनी बड़े आख़िर राजमार्ग पर स्थित थी।

अचानक वित्का ने अपनी आंखें सिकोड़ीं और हंसते हुए कहा

"क्या आप जानते हो कि वे – सूअर कहीं के – आज-कल किस फ़िराक़ में हैं? नन्हे लड़के उनसे डरते हैं, उनके सामने एकदम थरथर कांपने लगते हैं। और सो – ज़रा सोचो तो – वे संगठनकर्त्ता बन गए

हैं! नन्हों को वे अपना 'पिल्ला' कहते हैं। उनमें से प्रत्येक कई 'पिल्ले' रखता है। सुबह होते ही वे उनसे कहते हैं – 'चाहे जहां तुम जाओ, लेकिन शाम तक यह या वह चीज़ मुझे मिल जानी चाहिए'। उनमें से कुछ चोरी करते हैं – गाड़ियों में या बाज़ार में, लेकिन ज़्यादातर चोरी करना नहीं जानते, वे केवल भीख मांगते हैं। वे सड़कों में, पुल पर, और रिजोव में खड़े हो जाते हैं। कहते हैं कि हर रोज़ वे दो या तीन रूबल ले आते हैं। चुरिलो के 'पिल्ले' सब से अच्छे हैं – वे पांच-पांच रूबल तक ले आते हैं। और उनके हिस्से बंधे हैं – तीन चौथाई मालिक के लिए, एक चौथाई 'पिल्ले' के लिए। शयनागारों में कुछ नहीं है, केवल इससे आप कोई अन्दाज़ नहीं लगा सकते। उनके पास सूट हैं, धन है, लेकिन वह सब कहीं छिपा है। पोदवोर्की में अड्डों की कमी नहीं है। अपनी सारी शामें वे उनमें बिताते हैं।"

दूसरे दल में ज़ाड्चेन्को और मालिकोव जैसे लड़के थे। कोलोनी के और अधिक निकट सम्पर्क में आने पर मालूम हुआ कि उनकी संख्या काफ़ी थी – क़रीब तीस के। इसे एक चमत्कार ही कहिये जो उन्होंने, बावजूद जीवन की कठिनाइयों के, अपनी चमकती हुई आंखों, अपनी आह्लादपूर्ण बाल-सुलभ आक्रमणकारिता तथा अपनी मौलिक विश्लेषणात्मक प्रतिभा को क़ायम रखा था। इस सब की बदौलत वे जीवन की तमाम अभिव्यक्तियों को एक सच्चे लड़ाकू जोश के साथ देखते थे। मानवता का यह अंश मुझे बहुत प्रिय लगता है। इसकी गहरी भावना मुझे मुग्ध करती है। यहां तक कि मैं इसे इसलिए भी पसंद करता हूं कि यह विशुद्ध रूप में पक्के कुमारों तथा स्त्रियों से घृणा करनेवाले लड़कों से बना है। हमारे अग्रिम मिश्रित दस्ते के पहले क़दमों पर इन लड़कों ने अपने सिर उठाए, नथुनों को फैलाकर हवा के ताज़े झोंकों को अपने फेफड़ों में भरा और शयनागरों में भाग-दौड़ करने लगे। उपर्युक्त विश्लेषणात्मक प्रतिभा तुरन्त क्रियाशील हो उठी। खुलकर मेरी ओर आने से वे अभी भी डरते थे, लेकिन इस सब के बावजूद उनका समर्थन निश्चित रूप से था।

सामाजिक तत्त्वों के तीसरे समूह से, बिलकुल आकस्मिक रूप में, वित्का और मैं टकराए। वित्का शिकारी कुत्ते की भांति इस तरह ठिठक गया मानो ख़रगोश पर उसकी नज़र पड़ गई हो। अहाते के एक

दूरतम कोने में, पुरानी दीवार के सहारे टिका हुआ, एक एकाकी प्रकोष्ठ स्थित था – लकड़ी के एक बरामदे से लैस जिसमें खोदाई का काम किया हुआ था। वान्या ज़ाइचेन्को ने इस इमारत की ओर इशारा करते हुए बताया :

"कृषिविद यहां रहते हैं।"

"कृषिविद? कितने हैं वे?"

"चौदह।"

"चौदह कृषिविद? इतने ज़्यादा किस लिए?"

"उन्होंने रई बोई थी, अब वे वहां रहते हैं।"

मुझे ख़लाबूदा की याद हो आई, और मेरी शंकाओं ने ज़ोर पकड़ा।

"तो, मेरी समझ में, तुमने यूं ही उनका यह नाम रख दिया है?"

लेकिन वान्या बहुत गम्भीर दिख रहा था। प्रकोष्ठ की ओर और भी अधिक निश्चयात्मकता के साथ उसने अपना सिर हिलाया।

"नहीं, वे असली कृषिविद हैं। आप ख़ुद देख लेना! उन्होंने जोताई की और रई बोई। और देखो – वह लहलहा रही है! ओह, कितनी ऊंची हो गई है!"

वित्का ने विक्षोभ के साथ ज़ाइचेन्को की ओर देखा।

"वही न ... जो नीली क़मीज़ पहने हैं? तो क्या वे मात्र कोलोनी-वासी नहीं हैं? बस रहने दो, तुम भी क्या बकवास करते हो!"

"यह बकवास नहीं है!" वान्का तेज़ आवाज़ में चीखा, "नहीं, यह बकवास नहीं है! वे सनदों की बाट देख रहे हैं। सनदों के मिलते ही वे यहां से चल देंगे ..."

"अच्छा, तो चलो, चलकर तुम्हारे इन कृषिविदों को भी देख लें!"

प्रकोष्ठ में सोने के दो कमरे थे। बिस्तरों पर जो अपेक्षाकृत अधिक साफ़ कम्बलों से ढके थे, युवा बैठे थे। वे नीली सूती क़मीज़ पहने थे, बाल ख़ूब संवारे हुए और चेहरों पर कुछ अजीब-सा नेक भाव धारण किए। दीवारों पर, बड़ी सुघराई के साथ, तस्वीरी पोस्टकार्ड तथा पत्र-पत्रिकाओं में से काटे हुए चित्र टंके थे। लकड़ी के चौखटों में

छोटे-छोटे आइने भी वहां मौजूद थे। खिड़की के दासे से साफ़ काग़ज़ के झालर-कटे कगारे फहरा रहे थे।

धीर-गम्भीर किशोरों ने कुछ रुखाई के साथ मेरे अभिवादन को ग्रहण किया। न ही वे उस समय कसमसाए जब उत्साह के साथ वान्या ने उनका परिचय कराया :

"देखो , यह सब कृषिविद हैं, जैसा कि मैंने आपसे कहा था! और वह – वोस्कोबोयनिकोव – इनका मुखिया है!"

वित्का गोर्कीवस्की ने कुछ इस तरह मेरी ओर देखा जैसे कृषिविदों से नहीं, बल्कि जंगल की रूहों तथा जल के फ़रिश्तों से परिचित होने के लिए हमें आमंत्रित किया गया हो, जिनके अस्तित्व में विश्वास करने में वित्का अपने आपको एकदम असमर्थ पा रहा था।

"बुरा न मानना, लड़को," मैंने कहा, "लेकिन मुझे यह बताओ कि वे तुम्हें कृषिविद किसलिए कहते हैं?"

वोस्कोबोयनिकोव जिसका क़द लम्बा था और जिसका चेहरा अपने अति पीलेपन तथा आत्म-महत्त्व की अपनी भावना के कारण उल्लेखनीय था – हालांकि इन दोनों गुणों में से एक भी उसकी मूढ़ता को छिपाने में असमर्थ था – अपने बिस्तरे पर से उठा, अपनी पतलून की संकरी जेबों में मुश्किल से अपने हाथों को उसने खोंसा और कहा

"हम कृषिविद हैं। जल्दी ही हमें अपनी सनदें मिल जाएंगी. "

"तुम्हें सनदें कौन देगा?"

"कौन क्या? संचालक देगा।"

"कौनसा संचालक?"

"पुराना संचालक।"

वित्का हंसी में फूट पड़ा :

"तब तो शायद मुझे भी एक मिल जाए!"

"खीसें निपोड़ने की इसमें क्या बात है," वोस्कोबोयनिकोव ने कहा। "अच्छा यही है कि उन चीज़ों के बारे में मुंह बंद रखो जिनके बारे में तुम कुछ नहीं जानते। तुम क्या जानो कि यह क्या है?"

वित्का गरमा गया :

"मैं इतना जानता हूं कि तुम सब बछिया के ताऊ हो। साफ़-साफ़ बताओ, यह किसकी मूर्खता का प्रसाद है?"

"हो सकता है कि यह तुम्हारी मूर्खता का प्रसाद हो," वोस्कोबोयनिकोव ने पलटकर चुटकी ली, लेकिन वित्का इस ख़ुराफ़ात को अब और अधिक नहीं सह सका।

"बस, बहुत हुआ। बोलो, हमें साफ़-साफ़ बताओ!"

हम बिस्तरों पर बैठ गए, क्षोभ से भरे और अनाड़ी, बिखरे-छितरे वर्णन के बीच-बीच में आशंका तथा अविश्वास के साथ अपने चेहरों को बिचकाते और मोड़ते-तोड़ते हुए। अन्त में कृषिविदों ने अपने आत्म-विश्वास तथा सदाचार को इतने परिमाण में क़ाबू में कर लिया कि ख़लाबूदा की रई के रहस्यों तथा ख़ुद अपने स्तब्धकारी जीवन-वृत्तों को प्रकट कर सके। पिछली शरद् में ख़लाबूदा ने रई बोने के ख़ास उद्देश्य से एक प्रतिनिधि कुरियाज भेजा था। पन्द्रह वयस्क लड़कों को उसने अपने काम के लिए तैयार कर लिया। उदारता के साथ उसने उनकी जेब गर्म की – अलग प्रकोष्ठ में उन्हें रखा, उनके लिए बिस्तरे, चादरें, कम्बल, सूट और कोट ख़रीदे। उनमें से हरेक को पचास रूबल दिए। और वायदा किया कि काम के ख़त्म होने पर उन्हें कृषि-विद की सनदें दी जाएंगी और चूंकि सभी शर्तें पूरी कर दी गई थीं – बिस्तरे तथा अन्य वस्तुएं एक अकाट्य वास्तविकता थीं – सो कोई कारण नहीं था जो लड़के सनदों की वास्तविकता में संदेह करते, इसलिए और भी कि वे सब के सब कम पढ़े-लिखे लोग थे, उनमें से एक भी प्राथमिक स्कूल के दूसरे दर्जे से आगे नहीं बढ़ा था। सनदों का मामला वसन्त के लिए स्थगित कर दिया गया था। लेकिन इस स्थिति ने लड़कों को कुछ ज़्यादा परेशान नहीं किया। यद्यपि ख़लाबूदा का प्रतिनिधि बालकों की सहायता-समिति सम्बन्धी किसी संस्था में विलीन हो गया था पर कोलोनी के संचालक ने उदारता के साथ उसकी ज़िम्मेदारी को अपने ऊपर ले लिया था। कल जाते समय उसने उन्हें बताया कि सनदें बिलकुल तैयार हैं, केवल उन्हें कुरियाज भेजना और कृषिविदों को उन्हें धूम-धाम से प्रदान करना-भर बाक़ी है।

"लड़को, यह तो तुम्हें एकदम बेवक़ूफ़ बनाया गया है!" मैंने उन्हें बताया। "कृषिविद यूं ही नहीं बना जाता। इसके लिए पहले तुम्हें बहुत-बहुत पढ़ना पड़ेगा। कई साल तक अध्ययन करना होगा। विद्यालय और तकनीकल स्कूल इसके लिए क़ायम हैं। उनमें से किसी

एक में भर्ती होने के लिए कई साल तक तुम्हें साधारण स्कूल में पढ़ना होगा। और तुम ... ज़रा बताओ तो कि सात अट्ठे कितने होते हैं?"

एक काले बालोंवाले सजीले लड़के ने जिसे लक्ष्य कर मैंने यह सवाल किया था, थोड़ा अचकचाते हुए जवाब दिया:

"अड़तालीस।"

वान्या ज़ाइचेन्को का मुंह खुला का खुला रह गया, उसकी निश्छल आंखें फैल गईं।

"छि:! कृषिविद! अड़तालीस! क्या ख़ूब! वाह!"

"तुम क्यों बीच में टांग अड़ाते हो? तुम्हें इससे मतलब?" वोस्कोबोयनिकोव वान्या पर चिल्लाया।

"लेकिन यह छप्पन होता है, छप्पन!" विश्वास के आवेग से वान्या क़रीब-क़रीब चिट्टा पड़ गया था। "छप्पन!"

"हां तो क्या?" एक चौड़े कंधोंवाले नोक-नुकीले युवक ने कहा जिसे सब स्वात्को कहते थे। "सोवख़ोज़ में जगह दिलाने का हमसे वायदा किया गया है – सो बोलो, अब क्या कहते हो?"

"यह किया जा सकता है," मैंने कहा, "सोवख़ोज़ में काम करना एक अच्छी बात है। लेकिन तुम कामकर होगे, कृषिविद नहीं।"

कृषिविद विक्षोभ के आवेग में अपने बिस्तरों पर उछले। स्वात्को ग़ुस्से से ज़र्द पड़ गया·

"क्या आप समझते हो कि न्याय इस धरती से उठ गया है? हम समझते हैं, हम सब समझते हैं। संचालक ने हमें चेता दिया था – हां, चेता दिया था। आप जोताई कराना चाहते हो अब, और कोई यह नहीं करना चाहता! इसी लिए आप यह सब योजना बना रहे हो! और साथी ख़लाबूदा को आपने पटा लिया है। लेकिन आप मनमानी नहीं कर सकोगे, यह जान रखो!"

वोस्कोबोयनिकोव ने एक बार फिर अपने हाथों को अपनी जेबों में खोंसा, और लम्बे बदन को क़रीब-क़रीब छत तक खींचा।

"क्या आप यहां हमें धोखा देने आए हो? जानकार लोगों ने हमें आगाह कर दिया था। हमने ढेर सारी ज़मीन में बोवाई की है और अपने हाड़ गलाए हैं। और आप हमारा शोषण करना चाहते हैं? सो नहीं चलेगा!"

"मूर्ख!" वित्का ने शान्त भाव से उच्चारित किया।

"अभी एक जड़ दूं तो जबड़ा ढीला हो जाए! ऊंह, गोर्कीआइट! दूसरों को अपने हाथ का खिलौना बनाना चाहते हैं?"

मैं बिस्तरे से उठा। कृषिविदों के क्षुब्ध, भावशून्य चेहरे हमारी ओर घूमे। मैंने भरसक शान्त भाव से उनसे विदा-लेने का प्रयास किया।

"जैसा तुम चाहो, लड़को! अगर तुम चाहो, लड़को! अगर तुम कृषिविद बनना चाहते हो तो–यह अच्छा है... फ़िलहाल हमें तुम्हारे काम की दरकार नहीं। तुम्हारे बिना भी हम काम चला लेंगे।"

हम जाने के लिए मुड़े। लेकिन वित्का अपने आपको नहीं रोक सका, दरवाज़े में खड़े-खड़े ही हठपूर्वक कह उठा:

"लेकिन हो तुम मूर्खाधिराज!"

इस टिप्पणी से कृषिविद इतना बौखला उठे कि वित्का को ओसारे से उड़न-छू हो जाना पड़ा।

पायनियरों के कमरे में जोर्का वेल्कोव उन कुरियाजवासियों का अवलोकन कर रहा था जो, जैसे-तैसे कमाण्डर नियत कर लिए गए थे। मैं पहले ही जोर्का से कहता था कि इससे कुछ नहीं होगा, कि हमें ऐसे कमाण्डर नहीं चाहिए। लेकिन जोर्का इसकी सचाई को अनुभव से सिद्ध किए बिना भला कैसे मान सकता था।

उम्मीदवार बेंचों पर बैठे थे, और अपनी उघड़ी हुई टांगों को, कतिपय मक्खियों की भांति, एक दूसरे से रगड़ रहे थे। जोर्का इस समय बाघ के समान मालूम होता था। उसकी आंखों से चिंगारियां छूट रही थीं। उम्मीदवार कुछ ऐसा भाव धारण किए थे जैसे किसी नये, पेचीदा नियम-क़ायदों से लैस, खेल में शामिल होने के लिए उन्हें बुलाया गया हो, और वे पुराने खेल को इससे कहीं अच्छा महसूस कर रहे हों। गहरी लगन के साथ जोर्का ने उन्हें सब समझाया, जवाब में शिष्टता के साथ मुस्कराने का भी उन्होंने प्रयास किया, लेकिन अपनी वाक्-शक्ति के प्रभाव को इस रूप में व्यक्त होते देख जोर्का कुछ ज़्यादा प्रसन्न नहीं हुआ।

"ए, तुम लोग दांत क्यों दिखा रहे हो? किस लिए तुम दांत दिखा रहे हो? कुछ समझते भी हो या नहीं? एक मुद्दत हो गई तुम्हें

हराम के टुकड़े खाते हुए। क्या तुम जानते हो कि सोवियत शासन क्या है?"

कमाण्डर अपने गालों पर हिलगी मुसकान के अवशेषों को मेमनों की भांति शान्त करते हुए गम्भीर हो गए।

"मैं तुम्हें समझा रहा हूं – चूंकि तुम कमाण्डर हो, इसलिए तुम्हारे आदेशों का निश्चित रूप से पालन होना चाहिए।"

"और मान लो, अगर वे पालन न करें तो?" एक सुनहरे बालों और चौड़े ललाटवाले लड़के ने मुसकराते हुए पूछा। उसका नाम पेत्रुश्को था, और एक बार में ही देखा जा सकता था कि वह कामचोर और बातूनी जीव है।

आमन्त्रितों में स्पिरिदोन ख़ोवराख़ भी था। बेलूख़िन और कराबानोव के साथ उसकी हाल की बातचीत ने उसे कुछ नरम बना दिया था, लेकिन इस समय वह खिन्न था – अपने साथियों के संग अप्रिय तथा अलाभप्रद पेचीदगियों में हाथ डालने की उससे आशा की जा रही थी।

उसी सांझ जोर्का के उत्साहपूर्ण सम्भाषणों तथा कुरियाजवासियों की मुसकराती उदासीनता के बावज़ूद हमने कमाण्डरों की परिषद का निर्माण किया, कोलोनी के तमाम निवासियों के नामों को दर्ज किया, यहां तक कि कल के काम के लिए आदेश भी जारी कर दिए। वोलोख़ोव और कुदलाती अगले दिन खेतों में काम करने के लिए साज़-सामान जुटाने में व्यस्त थे। कमाण्डरों की परिषद और साज़-सामान – दोनों ही दयनीय थे। थकान और विफलता की चेतना के साथ हम सोने चले गए।

बोरोवोय और उसके सहायक ने अपना काम शुरू कर दिया था। और मिट्टी के अत्यन्त काले ढेरों के इर्द-गिर्द ताज़ा चमकती हुई खपचियां नज़र भी आने लगी थीं। लेकिन कुरियाज की आम समस्या अभी भी अंधकार से आच्छादित थी – ऐसी कोई चीज़ दिखाई देती मालूम नहीं होती थी जिसे थामकर सम्यक् शुरुआत की जा सके।

अगली सुबह तड़के ही रबफ़ाक-छात्र ख़ारकोव लौट गए। जैसा कि कमाण्डरों की परिषद में तय हुआ था, छः बजे जागने की घंटी बजी। लेकिन इस तथ्य के बावजूद कि गिरजे की दीवार से अब एक नया सुरीली आवाज़वाला घंटा लटका था, कुरियाजवासियों पर इसके

आवाहन का लेशमात्र भी असर नहीं पड़ा। कोलोनी-मानीटर इवान देनिसोविच किरगीज़ोव ने, अपनी बांह में एक नया लाल फ़ीता बांधे हुए, कुछ शयनागारों में ताक-झांक की। लेकिन बुझे हुए हृदय के सिवा और कुछ उसके हाथ नहीं लगा। पूरी कोलोनी सो रही थी, जीवन के एकमात्र चिन्ह अस्तबल के पास नज़र आते थे, जहां हमारे अग्रिम मिश्रित दस्ते के सदस्य खेतों में जाने की तैयारियों में जुटे थे। बीस मिनट बाद वे तीन जोड़े घोड़ेवाले हलों तथा हेंगियों के साथ रवाना हुए। कुदलाती ने गाड़ी संभाली और बीज-आलू लाने के लिए शहर का रुख़ किया। शहर से लौट रही कुछ पीतवर्ण, नम आकृतियों से उसकी भेंट हुई। मुझमें इतनी शक्ति नहीं थी कि उन्हें रोकता, उनकी तलाशी लेता, विगत रात की घटनाओं के बारे में उनसे बातें करता। बिना किसी रोक-टोक के वे शयनागारों में रेंग गए। इस प्रकार सोनेवालों की संख्या में वस्तुतः और भी वृद्धि हो गई।

पिछली सांझ तैयार किए गए तथा कमाण्डरों की परिषद द्वारा सर्वसम्मति से पुष्ट आदेशों के अनुसार कोलोनी में हरेक को शयनागारों तथा अहाते की सफ़ाई करने, पौधाघरों के लिए जगह साफ़ करने, साग-भाजी के खेतों के लिए मठ की दीवारों के इर्द-गिर्द खोदाई करने, और खुद दीवार को भी गिराने का काम सौंपा गया था। आशावाद की झोंक में मैं शक्ति की एक सुखद चेतना का अनुभव करने लगा। आर्किमेडीज़ भी ख़ुशी से निहाल हो जाता अगर उसके पास चार सौ कोलोनीवासियों की शक्ति होती। शायद वह दुनिया को उलटने के लिए जिस आलम्ब की खोज़ में था, उसकी खोज छोड़ देता। दो सौ अस्सी कुरियाजवासी भी – एक सौ बीस गोर्कीआइटों के बाद – केन्द्रित शक्ति का असाधारण पुंज मालूम हो रहे थे।

लेकिन इस केन्द्रित शक्ति के प्रतीक दुर्गंध और गन्दगी से अटे बिस्तरों में सोए पड़े थे, और कलेवा तक के लिए उनमें चेतना नहीं दौड़ी थी। रक़ाबियां और चम्मच क़ायदे के साथ विश्रन्तिघर की मेज़ों पर सजा दिए गए थे। शेलापूतिन पूरे घंटे भर से अपने घंटे को टनटना रहा था। तब कहीं जाकर पहली आकृतियों ने विश्रन्तिघर में टपकना शुरू किया। दस बजे तक कलेवा घिसटता रहा। भोजन के कमरे में रह-रहकर मैंने कई भाषण दिए, बीसियों बार दोहराया कि कौन किस

दस्ते से सम्बद्ध है, कौन किस दस्ते का कमाण्डर है और प्रत्येक दस्ते के लिए क्या काम नियत किया गया है। लड़कों ने रक़ाबियों से अपने सिरों को उठाए बिना मेरे भाषणों को सुना। भुतने कहीं के! उन्हें यह तक भान नहीं था कि अत्यन्त पुष्ट तथा रुचिकर शोरबा उनके लिए तैयार किया गया है और रोटी के प्रत्येक कतले पर मक्खन की टिक्की मौजूद है। एकदम भावशून्य शोरबे और मक्खन को उन्होंने निगला, रोटी के टुकड़ों को अपनी जेबों में खोंसा, और भोजन के कमरे से अपनी मैली उंगलियों को चाटते और आर्किमिडियन आशा से उमगती मेरी नज़रों की उपेक्षा करते हुए बाहर चले गए।

मिशा ओवचारेन्को के निकट कोई नहीं फटका। वह गिरजे की सीढ़ियों पर खड़ा था, जहाँ नये फावड़े, पंजे और बुहारियाँ सजी थीं – जिन्हें कल ख़रीदा गया था। मिशा के हाथों में एक नई कापी थी। यह भी कल ख़रीदी गई थी। इस कापी में मिशा को लिखना था कि किस दस्ते को कितने औज़ार दिए गए। अपने सामान से घिरा वह निपट बुद्धू की भांति खड़ा था – कारण, एक भी जीव उसके पास नहीं फटका। यहां तक कि दसवें दस्ते, जो उसके मित्रों का बना था – का कमाण्डर वान्या ज़ाइचेन्को जिससे मैं ख़ास उम्मीद बांधे था – वह भी औज़ारों को लेने नहीं आया, न ही कलेवा के समय वह मुझे दिखाई दिया। नये कमाण्डरों से केवल ख़ोवराख आगे बढ़ा और मेरी बग़ल में आकर खड़ा हो गया और हमारे पास से गुज़रती भीड़ को उदण्डता के साथ देखता रहा। उसके चौथे दस्ते को मठ की दीवार गिराने का काम शुरू करना था। मिशा के पास उसके लिए छड़ें तैयार थीं। लेकिन ख़ोवराख़ ने, और तो और, उस काम का आभास तक नहीं दिया जोकि उसे सौंपा गया था। सदा की भांति निःसंकोच बोलनेवाले ख़ोवराख उन चीज़ों के बारे में मुझसे बातें करता रहा जिनका मठ की दीवार से कोई सरोकार नहीं था।

"क्या यह सच है कि गोर्की कोलोनी की लड़कियां सुन्दर हैं?"

मैंने उसकी ओर से मुंह मोड़ा, दरवाज़े की ओर बढ़ा, लेकिन वह मेरे साथ लगा रहा, मेरे चेहरे पर अपनी नज़र डालते हुए अपना सुर उसने जारी रखा

"कहते हैं कि आपकी शिक्षिकाओं में भी कुछ ... ख़ूब गरमागरम .

ओह, बड़ा मज़ा रहेगा जब वे आ जाएंगी। यहां भी कुछ थीं जो बुरी नहीं थीं . लेकिन जानते हैं आप कि क्या – वे मेरी नज़र से डरती थीं! जैसे ही मैं उनकी ओर देखता, वे एकदम चुकन्दर बन जातीं! और क्यों, मैं आपसे पूछता हूं, मेरी यह नज़र इतनी ख़तरनाक क्यों है? आप ही बताइये!"

"तुम्हारा दस्ता काम पर क्यों नहीं गयी?"

"मुझे इस सब खुराफ़ात से क्या लेना? मैं ख़ुद भी तो नहीं गया ..."

"क्यों?"

"जी नहीं चाहा – हा-हा!"

उसने गिरजे के ऊपर क्रॉस की ओर अपनी आंखों को सिकोड़कर देखा।

"पोदवोर्की में भी कुछ नाज़-नख़रेवालियां मौजूद हैं। हा-हा! अगर आप चाहो तो उनसे आपको मिलवा सकता हूं!"

पिछले दिन से, क़रीब-क़रीब इतर मानवीय प्रयास द्वारा, मैं अपने ग़ुस्से को दबाए हुए था। सो मेरे अन्तर में कोई चीज़ बरबस उमड़ने-घुमड़ने लगी, लेकिन बाहर से उसका कोई भी चिन्ह दिखाई नहीं पड़ता। मेरे मस्तिष्क में किसी ने कमान दिया – 'सावधान!" और भावनाएं, विचार और मस्तिष्क से सम्बन्धित एक-एक शिरा ढीली पड़ती रेखाओं को तुरन्त सीधा-सतर करने में जुट गई। उसी 'किसी' ने कड़ाई के साथ चेताया "ख़ोवराख़ को गोली मारो! और फ़ौरन यह मालूम करो कि वान्या ज़ाइचेन्को का दस्ता काम पर क्यों नहीं गया, और क्यों वान्या कलेवा करने नहीं आया?"

इन तथा अन्य कारणों से मैंने ख़ोवराख़ से कहा

"जहन्नुम रसीद हो यहां से! तुम "

मेरे शब्दों से अत्यन्त चकित ख़ोवराख़ तुरन्त नौ दो ग्यारह हो गया। मैं ज़ाइचेन्को के शयनागार की ओर लपका।

वान्का एक तोशक पर अपने हमजोलियों से घिरा हुआ पड़ा था। उसका हाथ उसके सिर के नीचे था, उसका यह हाथ – पीतवर्ण और क्षीण – गंदे तकिए से सटा – उसकी तुलना में – बड़ा साफ़ मालूम हो रहा था।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

उसके साथियों ने चुपचाप मेरे लिए रास्ता छोड़ दिया। ओदारियुक ने मुसकराने का प्रयास किया और अस्पष्ट-सी आवाज़ में बोला

"उन्होंने उसे मारा!"

"किसने मारा?"

तकिए से वान्या की अप्रत्याशित रूप में गूंजदार आवाज़ आई

"किसी ने, आप जानो, मेरी ठुकाई कर दी! ज़रा सोचो तो! वे रात में आए, कम्बल से मुझे ढक दिया और इतना मारा कि भुरकस ही निकल गया होता! मेरा सीना दर्द कर रहा है!"

वान्या ज़ाइचेन्को की गूंजती हुई आवाज़ उसके क्षीण, पीतवर्ण चेहरे से बिलकुल मेल नहीं खा रही थी।

मैं जानता था कि कुरियाज में एक प्रकोष्ठ है जो अस्पताल कहलाता है। वहां गंदे, सूने कमरों में से एक में एक बुढ़िया कम्पोडरनी रहती थी। उसे बुलाने के लिए मैंने मालिकोव को रवाना किया। दरवाज़े में वह शेलापूतिन से टकरा गया।

"अन्तोन सेम्योनोविच, वहां कई लोग एक बार में आए हैं और आपको खोज रहे हैं!"

काले रंग की एक बड़ी कार की बग़ल में ब्रेगेल, साथी ज़ोया और क्ल्यामेर खड़े थे। ब्रेगेल राजसी अन्दाज़ से मुस्कराई

"तो यह कहो, आपने चार्ज ले लिया?"

"हां, ले लिया!"

"क्या हाल-चाल है?"

"सब ठीक है!"

"सब बिलकुल ठीक है?"

"ठीक ही है!"

साथी ज़ोया ने अविश्वास के साथ मेरी ओर देखा। क्ल्यामेर ने अपने इर्द-गिर्द चारों ओर नज़र डाली। निस्संदेह, वह मेरे सौ रूबली शिक्षकों की एक झलक देखना चाहता था। कम्पोडरनी अपनी लड़खड़ाती-सी बूढ़ी चाल से हमारे सामने से वान्या ज़ाइचेन्को की ओर चली गई। अस्तबल से वोलोख़ोव के क्षेभ भरे उद्गार सुनाई दिए

"सूअर कहीं के! आदमियों का नाश किया! घोड़ों का नाश किया!

एक भी जोड़ा किसी क़रतब का नहीं। सूअर कहीं के! ये घोड़े नहीं बेसवा हैं!"

साथी ज़ोया झेंपी, थोड़ा उछली और अपने बड़े भोंडे सिर को उसने हिलाया

"यह है समाज-शिक्षा!"

मैं हंसी से दोहरा हो गया।

"नहीं यह समाज-शिक्षा नहीं है। यह महज़ एक ऐसा जीव है जिसे अपने भावों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिलते।"

"क्या सचमुच?" विषैली मुसकान के साथ क्ल्यामेर ने कहा। "बल्कि मैं कहूंगा कि एक यही चीज़ तो वह कर सकता है!"

"अरे, हां, शुरू में उसे नहीं मिले, फिर मिल गए!"

लगा जैसे ब्रेगेल कुछ कहने जा रही थी, स्थिर दृष्टि से उसने मेरी ओर देखा और चुप रह गई।

५. सपनों का लोक

अगले दिन कोवाल को मैंने निम्न तार भेजा:

> "गोर्की कोलोनी, कोवाल। कोलोनी की रवानगी में जल्दी करो। सारे शिक्षक पहली गाड़ी से कुरियाज चले आएं।"

दूसरे दिन शाम को मुझे जवाब मिला:

> "डिब्बों की वजह से विलम्ब। शिक्षक आज रवाना हो रहे हैं।"

कुरियाज में केवल एक बग्घी थी। वह रात के दो बजे रिजोव स्टेशन से येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, लीदिया पेत्रोवना, बुत्साई, जुरबिन और गोरोविच को ले आई। भूतपूर्व शिक्षकों के अनगिनत गढ़ों में हमने उनके रहने का प्रबंध किया, सोने के लिए, जैसे-तैसे कुछ बिस्तरे जमा दिए—तोशकें हमें शहर से ख़रीदकर लानी पड़ीं।

मिलन आह्लाद से पूर्ण था। शेलापूतिन और तोस्का ने—पन्द्रह वर्ष के थे तो क्या—स्कूली लड़कियों की भांति गले से लिपटकर और

मुंह चूमकर अपनी ख़ुशी प्रकट की, प्रसन्नता से चहकते और एक दूसरे की गरदनों से लटककर अपनी टांगों को अधर हवा में झुलाते हुए। गोर्कीआइट ताज़ादम और आनन्द से छलछला रहे थे और कोलोनी के हाल-चाल की रिपोर्ट उनके चेहरों से व्यक्त थी। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने संक्षेप में इसकी पुष्टि की:

"वहां हर चीज़ तैयार है। हर चीज़ पैक हो चुकी है। केवल डिब्बों का इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"और लड़कों का क्या हाल-चाल है?"

"लड़के पेटियों पर बैठे हैं और अधीरता के मारे व्याकुल हैं। मैं अपने लड़कों को सुखी जीव समझती हूँ। सच, हम सब सुखी हैं – क्यों हैं न? और आपका क्या हाल है?"

"मैं भी सुखी हूं – इतना कि कहा नहीं जा सकता," मैंने गम्भीरता से कहा। "लेकिन मैं नहीं समझता कि कुरियाज में कोई और भी सुखी जीव है..."

"सो क्यों?" लिदोच्का ने व्यग्रता से पूछा।

"ऐसी कोई भयानक बात तो नहीं हुई," वोलोख़ोव ने भिन्नाते हुए कहा। "इतना ही है कि हम काफ़ी नहीं हैं। खेतों में काम का अम्बार लगा है। हम ही पहला मिश्रित हैं, हम ही दूसरा मिश्रित हैं और हम ही वह सब कुछ हैं जो तुम कहना चाहो।"

"और कुरियाजवासी – उनका क्या हुआ?"

लड़के हंसे:

"ज़रा रुको, अपनी आंखों से सब देख लेना..."

प्योत्र इवानोविच गोरोविच ने अपने सुन्दर होंठों को भींचा, लड़कों की ओर, अंधियाली खिड़कियों और फिर ख़ुद मेरी ओर उसकी नज़र घूमी।

"तो लड़कों की सख़्त ज़रूरत है?"

"हां," मैंने कहा। "बहुत ज़रूरत है। कोलोनी को भरसक जल्दी मदद के लिए आना चाहिए। अन्यथा हम ढेर हो जाएंगे।"

प्योत्र इवानोविच ने अपना गला साफ़ किया।

"तो क्या किया जाए? आपको कोलोनी जाना पड़ेगा, हालांकि

हमें काफ़ी दिक़्क़त होगी। रेलवे के लोग डिब्बों के लिए बुरी तरह मुंह फाड़ रहे हैं। वे कोई छूट देनेवाले नहीं। कुल मिलाकर अड़ंगा ही लगा रहे हैं। एक दिन के लिए आपको वहां जाना होगा .. कोवाल रेलवे अधिकारियों से झगड़ बैठा है।"

हम चुप हो गए। वोलोखोव ने अपने कंधों को वृद्ध आदमी की भांति खखारते हुए हिलाया.

"कोई बात नहीं," उसने कहा। "जितना हो, आप चले जाइये। किसी-न-किसी तरह हम यहां संभाल लेंगे... इतना तो है ही कि जो है, उससे ज़्यादा ख़राब नहीं होगा। केवल साथियों से कहना देर न करें।"

इवान देनिसोविच ने जो खिड़की के दासे पर बैठा था अविचलित भाव से अपनी बत्तीसी झलकाई और अपनी घड़ी की सूइयों पर नज़र डाली।

"दो घंटों में एक गाड़ी जाएगी। आपकी आख़िरी वसीयत क्या है?"

"मेरी वसीयत? वसीयत से भला क्या होगा? निस्संदेह, तुम्हें बल प्रयोग हर्गिज़ नहीं करना चाहिए। तुम लोग अब छः हो। अगर तुम दो या तीन दस्तों को अपनी ओर कर सको तो अच्छा होगा! लेकिन उन्हें दस्तों में ही पकड़ने की कोशिश करना, व्यक्तिगत रूप में नहीं!"

"इसका मतलब यह कि प्रचार, मेरी समझ में," गोरोविच ने उदास भाव से कहा।

"प्रचार, लेकिन बहुत प्रकट नहीं। जितना तुम से बने, उन्हें बताना – कोलोनी के बारे में, व्यक्तिगत मामलों के बारे में निर्माण सम्बन्धी काम के बारे में। लेकिन यह सब तुम्हें सिखाने की ज़रूरत नहीं। बेशक, तुम एकाएक उनकी आंखें खोलने में समर्थ नहीं हो सकोगे, लेकिन फिर भी सुड़कने-सूंघने के लिए थोड़ा-बहुत तो तुम उन्हें दे ही सकते हो!"

मेरे मस्तिष्क में एक अच्छा-ख़ासा बवण्डर मचा था। दुनिया-भर के विचार और छाया-चित्र मेरे मस्तिष्क के भीतर उछलते, बल खाते, रेंगते-सरसराते, यहां तक कि मूर्छित होते भी मालूम होते, और अगर

उनमें से कोई एक संयोगवश आशा का स्वर छेड़ता भी तो मैं तुरन्त सन्देह करने लगता कि हो न हो, यह नशा चढ़ाए हुआ हो।

शिक्षणशास्त्र का भी अपना एक यन्त्र-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रेखागणित है। यहाँ तक कि वह अपने एक शैक्षणिक अतिभौतिकवाद जैसी चीज़ से भी लैस होता है। पूछा जा सकता है कि उन छः मिशनरियों को अंधेरी रात में मैंने किस लिए कुरियाज में अकेला छोड़ा? प्रचार के बारे में मैंने उनसे बातें कीं, लेकिन सच पूछो तो छः सुसंस्कृत, गम्भीर और सदाशय लोगों के कुरियाज में आगमन पर मुझे भरोसा था। निश्चय ही यह कोलतार के भरे-पूरे पीपे में एक चम्मच शहद पर भरोसा करना जैसा था.. लेकिन क्या वह सचमुच में कोलतार था? मेरा रसायन-विज्ञान नाममात्र को भी चमत्कारी नहीं था। जो भी रासायनिक प्रतिक्रिया में प्राप्त करता, वह केवल निरीहता की हद तक शिथिल तथा अपूर्ण ही हो सकता था। अगर रसायन-विज्ञान की यहां दरकार थी, तो उसे भिन्न प्रकार का होना चाहिए – डिनामाइट और नाइट्रो-ग्लिसरीन के – विस्फोटों के – अचानक, भयकारी, प्रचंड विस्फोट की भांति जो गिरजे की दीवारों, 'जाकेटों', बालआत्माओं, 'बिज्जू' और सनदयाफ़्ता कृषिविदों की आकाश में चिन्दियां उड़ा दें!

मन-ही-मन में अपने आपको, और अपने अग्रिम मिश्रित दस्ते को, एक अच्छे पीपे में रखने के लिए तैयार था – हम सब में निश्चय ही काफ़ी विस्फोट शक्ति थी। मुझे सन् १९२० की याद ताज़ा हो आई। उस समय हमने काफ़ी ज़ोरों के साथ शुरुआत की थी, विस्फोटों का कोई अभाव नहीं था। गोगोल के वाकूला* की भांति मैं ख़ुद बादलों के बीच तैरता था। मजाल जो कोई चीज़ मुझे तक डरा सकती। लेकिन अब मेरा मस्तक भांति-भांति के फ़ीतों से भरपूर था। ऐसे फ़ीतों से जिनसे दुनिया के पवित्रतम पाखण्ड – शिक्षा-शास्त्र – को मानो सजाना ज़रूरी होता है। "Grand maman" बस एक छोटा-सा पटाखा मुझे छोड़ लेने दीजिये" – "बेशक," वह जवाब देती, "बस, इतना ध्यान रखना कि लड़कों की भावनाओं को चोट न पहुंचे।"

---

* न० गोगोल (१८०९–१८५१) की कहानी 'बड़ा दिन' का नायक।

विस्फोटों की यहां कोई आशा नहीं थी!

"वोलोख़ोव, घोड़ों को जोतो! मैं जाऊंगा!"

घंटा-भर बाद मैं रेल के डिब्बे की खुली खिड़की के सामने खड़ा तारों की ओर देख रहा था। गाड़ी क्या थी, छकड़ा थी, बैठने की कोई जगह नहीं।

क्या यह लज्जास्पद ढंग से कुरियाज से मेरा पलायन नहीं था? क्या मैं ख़ुद अपनी विस्फोटक कोतल शक्ति से घबरा नहीं उठा था? मुझे अपने आपको स्थिर करना था। डिनामाइट एक भयानक चीज़ थी। उसे छेड़ना ठीक नहीं, जबकि शानदार गोर्कीआइटों की कोतल शक्ति मौजूद थी। चार घंटों के भीतर इस दमघोट, गंदे अमित्रतापूर्ण रेल के डिब्बे को पीछे छोड़ मैं अपने मनचाहों के बीच पहुंच जाऊंगा।

एक बग्घी में मैं कोलोनी पहुंचा, उस समय जबकि ख़ुद सूरज गरमाई के लिए हांफ रहा था। कोलोनीवासी सब दिशाओं से मेरी ओर दौड़ आए। कोलोनीवासी – अरे नहीं – वे रेडियम की किरणों के समान थे। गलातेन्को ने भी जो कभी परिवहन के एक साधन की भांति दौड़ने से इनकार करता था, लोहार-घर के भीतर से झांककर देखा और अचानक पथ पर धमक के साथ दौड़ पड़ा – अपने पांवों के नीचे धरती को कंपाता हुआ, शाह दारा की सेना के हाथी की भांति। अभिवादनों, आश्चर्य और अधीर प्रश्नों की बाढ़ में उसका स्वर भी योग दे रहा था:

"क्या हाल है वहां का, अन्तोन सेम्योनोविच – सब ठीक-ठाक है न?"

गलातेन्को – यह वीरतापूर्ण, साफ़-सुथरी मुसकान तुमने कहां पाई? इतनी सुन्दर मांस-पेशियां, जो अपनी पलकों के निम्न भाग को इतनी नफ़ासत के साथ सिकोड़तीं, तुमको कहां से मिलीं? अपनी आंखों को किस चीज़ से तुमने पखारा जो वे इतना चमक रही है? किसी जादुई लोशन से, या केवल झरने के स्वच्छ पानी से? और हालांकि मोटी जिह्वा अभी भी कठिनता से हरकत करती है लेकिन भावों को व्यक्त करना वह जान गई है। हां, भावों को!

"अरे, तुम सब इतने नफ़ीस क्यों दिख रहे हो?" मैंने पूछा। "क्या कोई नृत्य का समारोह चल रहा है?"

"हां-हां!" लापोत ने जवाब दिया। "वास्तविक समारोह! यह पहला दिन है जबकि हम काम नहीं कर रहे हैं। सांझ को हम 'पिस्सू' का प्रदर्शन करने जा रहे हैं – गांववालों से विदा लेने से पहले हमारा आखिरी प्रदर्शन... लेकिन छोड़िये, हमें यह बताइये, वहां कैसा हाल-चाल है?"

नये जांघियों तथा मखमल की टोपियां पहने हुए, जिन्हें ख़ास तौर से कुरियाजवासियों पर प्रभाव डालने के लिए बनाया गया था, कोलोनी-वासी उत्सव की भावना से उमगे थे। छठे मिश्रित दस्ते के सदस्य, प्रदर्शन के लिए अपनी तैयारियां करते, कोलोनी में इधर से उधर लपक रहे थे। सोने के कमरे, स्कूल, वर्कशॉप, क्लब-घर कील-ठुके बक्सों, बोरियों में सिली गांठों, तोशकों और बण्डलों से अटे थे। सब जगह झाड़-पोंछकर साफ़ कर दी गई थी – लक़दक़, जैसा कि उत्सव के लिए ज़रूरी होता है। ग्यारहवां दस्ता शूरा जेवेली के नेतृत्व में, मेरे कमरे में डेरा डाले था। नानी भी अपने ट्रंकों से घिरी बैठी थी लेकिन लड़कों ने उदारतापूर्वक उसके लिए एक तहानेवाला पलंग रख छोड़ा था और शूरा को इस उदारता पर भारी गर्व था।

"नानी हमारी तरह थोड़े ही कर सकती है। क्या आपने देखा? तमाम लड़के अब खलिहान में सूखी घास पर सोते हैं। सूखी घास.. बिस्तरों की निस्बत यह कहीं अच्छी है! लड़कियां गाड़ियों पर सोती हैं। और जानते हैं कि क्या – नेस्तेरेन्को ने कल ही तो चार्ज लिया और आज वह हमारे पीछे पड़ा है। सूखी घास देना नहीं चाहता। देखो न – हमने तो उसे समूची कोलोनी दे डाली। वह है कि ज़रा-सी सूखी घास देने में भी उसकी जान सूखती है! और जिस ढंग से हमने नानी का सामान पैक किया है – कहिए, कैसा लगता है आपको? ज़रा आप ही इन्हें बताइये, नानी!"

नानी मृदुता से लड़कों की ओर देखकर मुसकराई, लेकिन कुछ नुक़्ते ऐसे भी थे जिन्हें नानी ने उनके सामने रखा।

"सामान तो तुमने बढ़िया पैक किया है। लेकिन यह तो बताओ अपने कोलोनी संचालक को अब तुम कहां सुलाओगे?"

"वह सब हो जाएगा, नानी!" शूरा कूका। "हमारे ग्यारहवाँ दस्ते के पास सबसे बढ़िया सूखी घास है। एडुअर्ड निकोलायेविच ने तो

हमें झिड़का तक – उसने कहा कि इतनी शानदार घास पर सोना गुनाह है। लेकिन हम उसी के ऊपर सोए, और इसके बाद 'मोलोदेत्स' के आगे उसे डाल दिया। वह उसे ऐसे चट कर गया कि बस! चिन्ता न कीजिये, नानी, अन्तोन सेम्योनोविच के लिए हम जगह निकाल लेंगे!"

कितने ही कोलोनीवासी शिक्षकों के कमरों में जमे थे। उन्होंने अपने आपको बाक़ायदा पैक तथा चौकसी करनेवाले अंगों के रूप में गूंथ लिया था। लिदोच्कावाला कमरा कोवाल तथा लापोत का हैडक्वार्टर था। कोवाल गुस्से और थकान से निढाल खिड़की के दासे पर बैठा अपनी मुट्ठियों को पहरा रहा था और रेलवे अधिकारियों को कोस रहा था।

"निरे नौकरशाह! नासखेत कहीं के! हम उनसे कहते हैं कि यह बच्चों के लिए है, और वे हमारा यक़ीन नहीं करते! 'आखिर आप चाहते क्या हैं?' मैं उनसे पूछता हूं। 'क्या आप नहीं जानते कि हमारे साथियों के जन्म का किसी ने लेखा-जोखा नहीं रखा – कभी नहीं रखा!" लेकिन उनसे बात करने से क्या फ़ायदा, जब वे कुछ समझते नहीं? 'एक वयस्क आदमी के साथ एक बच्चा बिना टिकट सफ़र कर सकता है। यदि सिर्फ़ बच्चे...' बच्चे! बच्चे – काठ के कुन्दे, बच्चे! क्या तुम नहीं समझते कि यह श्रम-कोलोनी है? इसके अलावा, हम मालगाड़ी के डिब्बे मांग रहे हैं! आदमी से नहीं, जैसे गोबर के ढूहों से बात कर रहे हों! वे बस गिनती के चौखटे की गोलियों को खिसकाना जानते हैं – क्लिक, क्लिक – 'माल की लदाई, डियरेज, भाड़ा...' फिर दुनिया-भर के नियम-क़ायदों को खोदकर एक ढेर लगा देता है – घोड़ों और घरेलू साज़-सामान के लिए एक रेट, और बोवाई के तामझाम के लिए दूसरा रेट! 'भाड़ में जाओ आप और आपका यह घरेलू साज़-सामान!' मैंने कहा। 'आप हमें क्या समझते हैं – कोई बुर्जुआ परिवार जो अपना घर बदल रहा है – क्यों?' वे इतने बददिमाग़ हैं, आप जानो – नौकरशाही क्लर्क – इतने बददिमाग़! वहां बैठा रहता है। बस अड़ंगे लगाता है – 'हमें इससे क्या कि तुम क्या हो – बुर्जुआ हो, या कि तुम किसान हो,' वह कहता है। 'हमारे लिए ये सब मुसाफ़िर हैं या माल भेजनेवाले। मैं उसे वर्ग सम्बन्धी

बातें बताता हूं वह सीधे मेरे चेहरे की ओर देखता है और कहता है – 'रेट की बात करो – वर्गों की बात से हमें कोई मतलब नहीं!' "

लापोत इस सब की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था – न तो रेलवे अधिकारियों के बारे में कोवाल के विलाप पर और न कुरियाज के बारे में मेरी शोकपूर्ण गाथाओं पर। बातचीत के सिलसिले को वह बराबर आह्लादपूर्ण स्थानीय विषयों की ओर मोड़ रहा था, मानो कुरियाज जैसी कोई चीज़ नहीं थी, मानो कुछ ही दिन बाद ख़ुद उसके भाग्य में कमाण्डरों की परिषद के साथ अध:पतन के इस केन्द्र में दाखिल होना नहीं बदा था। उसके इस हल्केपन से शुरू में तो मैं कुछ खिन्न हुआ, लेकिन अपने बिल्लौरी हास-परिहास से देखते ही देखते उसने मेरी खिन्नता की चिन्दियां उड़ा दीं और मैं भी कुरियाज के बारे में सब कुछ भूल अन्य सब के साथ हंसी में बहता दिखाई देने लगा। अब काम के घिसे-पिटे चक्कर से मुक्त लापोत की मौलिक प्रतिभा पनप और खिल उठी थी। ऐसा मालूम होता था जैसे वह चुम्बकीय शक्ति से लैस हो। वह हमेशा एक भीड़ से घिरा रहता – उन लोगों की भीड़ से जो उसे प्यार करते थे, उसपर विश्वास करते और श्रद्धा रखते थे। मूर्ख, सनकी, पागल और रौंदे, कुचले हुए लोगों की भीड़। लापोत उन्हें चुनना-छांटना, विभिन्न कोटियों में उन्हें रखना, उन्हें संवारना-संजोना और उनमें रस लेना जानता था। उसके हाथों का स्पर्श पाकर वे सौन्दर्य के मृदुतम भेदों को प्रकट करते तथा मानवता के अत्यन्त दिलचस्प नमूने प्रतीत होते।

विवर्ण और मौर विमूढ़ गुस्तोइवान से वह भावपूर्ण अन्दाज़ में कह रहा था: "हां तो, अहाते के ठीक बीचोंबीच वहां जो एक गिरजा है न, उसके लिए हमें पादरी रखने की ज़रूरत नहीं होगी–तुम पादरी वन सकते हो।"

गुस्तोइवान ने अपने गुलाबी होंठों को फरफराया। कोलोनी में उसके आने से पहले ही किसी ने उसकी कमज़ोर आत्मा में विष भर दिया था और उससे वह अब तक ग्रस्त था। शयनागार के अंधेरे कोनों में रात को वह प्रार्थना करता हुआ देखा जाता और शहीदी के साथ कोलोनीवासियों के उपहास को उसने सहा था। लेकिन कोज़िर, पहिया-साज़, इतना विश्वासी नहीं था।

"तुम यह क्या मुंह से निकालते हो, साथी लापोत – ख़ुदा तुम्हें माफ़ करे। गुस्तोइवान पादरी कैसे बन सकता है? इसने प्रभु की वरदानी दीक्षा कहां प्राप्त की है?"

"ऊह, वरदानी दीक्षा – उससे क्या होता है!" उसने कहा। "हम इसे पादरी का चोग़ा पहना देंगे, और, ओह – कितना बढ़िया पादरी यह मालूम होगा!"

"वरदानी दीक्षा का होना ज़रूरी है!" अपनी संगीतमय आवाज़ में कोज़िर ने ज़ोर दिया। "बिशप का वरदहस्त इसके सिर पर रखा जाना चाहिए।"

लापोत एड़ियों के बल कोज़िर के सामने बैठ गया और अपनी बरौनियांविहीन गुलगुली पलकों को उसने उसकी ओर मिचमिचाया:

"सुनो, दादा!" उसने कहा। "क्या बिशप के पास शक्ति है?"

"हां, बिशप के पास शक्ति है..."

"और कमाण्डरों की परिषद – क्या तुम्हारी समझ में उसके पास कोई शक्ति नहीं है? और कमाण्डरों की परिषद उसके सिर पर अपना वरदहस्त रखे – तो इससे बढ़कर भला और क्या होगा?"

"कमाण्डरों की परिषद यह नहीं कर सकती, मेरे मुनुआ। उसके हाथ में वरदान नहीं है," अपने सिर की एक बाज़ू झुकाए हुए कोज़िर ने कहा। बहस ने उसे मुग्ध कर लिया था।

कोज़िर के दोनों घुटनों पर अपने हाथों को रखते हुए मित्रतापूर्ण अन्दाज़ में भक्तिभाव से लापोत ने कहना जारी रखा:

"कर सकती है, लापोत, वह कर सकती है! कमाण्डर की परिषद ऐसी वरदानी दीक्षा दे सकती है कि तुम्हारे बिशप एकदम मिमियाकर रह जाएं।"

वृद्ध, दयाल कोज़िर ने लापोत के मधुर शब्दों को ध्यान से सुना और उन्हें अपने अन्तरतम में समा जाने दिया। उनके अदम्य तर्क के सामने आत्मसमर्पण करने की स्थिति के बहुत ही निकट वह पहुंच गया था। बिशपों और तमाम सन्तों ने क्या कभी उसके लिए कुछ किया? नहीं, कुछ नहीं। लेकिन कमाण्डरों की परिषद ने उसे ठोस बरकतें प्रदान की थीं – उन्होंने उसकी पत्नी से उसकी रक्षा की थी, उसे साफ़-

सुथरा और हवादार कमरा दिया था – एक पलंग सहित। उन्होंने उसके पांव में मज़बूत और खूब चुस्त बूट पहनाए थे जिन्हें गुद के पहले दस्ते ने बनाया था। हो सकता है कि जब वृद्ध कोज़िर मरकर स्वर्ग में जाए तो, आख़िर, ख़ुदा से भी कुछ मुआवज़ा पाने की उम्मीद बंध आए लेकिन इस धरती पर उसके जीवन का जहां तक सम्बन्ध था, कमाण्डरों की परिषद उसके लिए एकदम अनिवार्य थी।

"लापोत, क्या तुम यहां हो?" गलातेन्को का उदास चेहरा खिड़की में से झांक रहा था।

"हां, मैं यहां हूं। क्यों, क्या बात है?" वरदानी दीक्षा की बहस से पीछा छुड़ाते हुए लापोत चिल्लाया।

गलातेन्को कसमसाकर खिड़की के दासे पर उचका और क्षोभ से भरा उसका चौखटा जिसमें से मानवीय वेदना के भभकारे चक्कर काटते हुए धीमी गति से ऊपर की ओर उठ रहे थे, अब लापोत को दिखाई दिया। गलातेन्को की बड़ी-बड़ी आंखों में आंसू की बड़ी-बड़ी बूंदें दिखाई पड़ रही थीं।

"उससे कहो, लापोत, उससे कहो... मुझे फिर दोष न देना अगर उसका थोबड़ा..."

"किसका?"

"तारानेत्स का।"

गलातेन्को मुझे देखते ही मुसकराया और अपने आंसुओं को उसने पोंछा।

"क्या बात है, गलातेन्को?"

"उसे क्या अधिकार है? चौथे दस्ते का कमाण्डर हुआ तो क्या, बस सोचता है। ...'मोलोदेत्स' के लिए एक कटघरा बनाने के लिए उससे कहा गया है, और उसने कहा--'एक 'मोलोदेत्स' के लिए और एक गलातेन्को के लिए।'"

"यह उसने किससे कहा?"

"अपने बढ़ई लड़कों से!"

"हां, तो?"

"'मोलोदेत्स' के लिए एक कटघरा, ताकि वह डिब्बे में से बाहर न कूद पड़े, बल्कि उन्होंने मुझे पकड़ा और मेरा नाप लिया।

तारानेत्स ने उनसे कहा – 'मोलोदेत्स' बाईं ओर रहेगा और गलातेन्को दाहिनी ओर।"

"क्या मतलब ?"

"कटघरा !"

लापोत ने सोचपूर्ण मुद्रा में अपनी गुद्दी को खुजलाया, और गलातेन्को स्थिर धीरज के साथ प्रतीक्षा करने लगा कि देखो, लापोत इस बारे में क्या कहता है।

"लेकिन क्या तुम तो डिब्बे में से नहीं कूदोगे ?"

खिड़की की दूसरी ओर गलातेन्को ने अपने पांव का भार बदलाकर नीचे उनकी ओर देखा।

"मैं भला कूदता ? कूदकर मैं कहां जाऊंगा ? और वह कहता है – 'मज़बूत-सा कटघरा बनाना, नहीं तो वह डिब्बे को चकनाचूर कर देगा !'"

"कौन कर देगा ?"

"उसका मतलब है कि मैं ..."

"लेकिन तुम ऐसा थोड़े ही करोगे – नहीं करोगे न ?"

"यह भी कोई यक़ीन करने की बात है !"

"तारानेत्स सोचता है कि तुममें भयानक ताक़त है। तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए।"

"सो तो ठीक है कि मुझमें ताक़त है। लेकिन यह कटघरा किस लिए ?"

लापोत खुली खिड़की से बाहर कूदा और बढ़ई-घर की ओर बढ़ चला, गलातेन्को भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

लापोत के संग्रह में आरकादी ऊजिकोव भी शामिल था। लापोत आरकादी को एक अत्यन्त विरल नमूना समझता था, और सच्चे उत्साह के साथ ज़िक्र करता था।

"आरकादी जैसा जीव जीवन में केवल एकाध बार ही दिखाई देता है। वह हर घड़ी मेरे साथ ही चिपका रहता है – लड़कों से डरता है। मेरे साथ ही वह खाता और सोता है।"

"क्या तुम उसे इतने भा गए हो ?"

"हां ! लेकिन जब मेरे पास कुछ धन था – रस्सी ख़रीदने के

लिए कोवाल ने मुझे दिया था – आरकादी ने उसे साफ़ कर दिया!"

अचानक लापोत ज़ोरों से हंस पड़ा और आरकादी की ओर घूम गया, जो उसकी बग़ल में बक्से पर बैठा हुआ था।

"ज़रा बताओ तो, मेरे पटबीजने, तुमने उसे कहां छिपाया था?"

अपनी मुद्रा को बदले बिना और बिना किसी सकपकाहट के आरकादी ने निश्चेतनता के साथ जवाब दिया:

"मैंने उसे तुम्हारी पुरानी पतलून की जेब में रख दिया था।"

"और फिर क्या हुआ?"

"तुमने उसका पता लगा लिया।"

"मैंने पता नहीं लगाया, गधे, मैंने तुम्हें रखते हुए पकड़ा। क्यों, पकड़ा था न?"

आरकादी की धुंधली आंखें एक क्षण के लिए भी लापोत के चेहरे से नहीं डिगीं, लेकिन वे मानवी आंखें नहीं थीं, बल्कि निम्नकोटि के, निर्जीव, कांच के बने उपकरण जैसी मालूम होती थीं।

"वह, अन्तोन सेम्योनोविच, आपको भी नहीं बख़्शेगा – सच, नहीं बख़्शेगा। क्यों, ठीक है न?"

ऊजिकोव ने कुछ नहीं कहा।

"नहीं बख़्शेगा!" लापोत उत्साह से चहका। ऊजिकोव ने उसके प्रभावपूर्ण अंग-विक्षेप का अपने उसी खोए-से अन्दाज़ में अनुसरण किया।

नित्सेन्को भी लापोत के मज़ेदार जीवों में से एक था। लम्बी मरियल-सी गरदन, घेंटुवा निकला हुआ, और कंधों पर हंडिया-सा छोटा सिर, ऊंट जैसी मूर्ख उद्दण्डता के साथ उठा हुआ। उसके बारे में लापोत ने बताया:

"इस कठदिमाग़ को मोड़-तोड़कर आप चाहे जो चीज़ बना सकते हैं – गाड़ी के बम, चमचे, नांद, कुदाल। तिस पर भी यह अपने आपको जीवट का असामी समझता है!"

मैं ख़ुश था कि इस अटपटे समूह को लापोत अपने साथ हिलगा रहा था। इससे मुझे गोर्कीआइटों की आम पांतों से उन्हें अलग करने में मदद मिली। लापोत की सूक्तियों की अक्षय धारा एक तरह का

क्रीड़ा-सार पदार्थ थी जो कोलोनी के काम-काजी प्रबन्ध तथा सुचारुता के बारे में मेरी छाप को गहरी बनाने में मदद देती थी। इस समय, यह छाप मुझे बहुत ही सुस्पष्ट और – कारण जो हो – एकदम नयी मालूम हो रही थी।

कुरियाज के बारे में सभी कोलोनीवासियों ने मुझसे पूछ-ताछ की लेकिन मैं साफ़ देख सकता था कि वे केवल शिष्टतावश पूछ रहे हैं, जैसे कि लोग उस समय कहते हैं जब वे एक-दूसरे से मिलते हैं – 'कहो, अच्छे तो हो!' कुरियाज में दिलचस्पी हमारे समूह के किसी दूरतम कोने में धकेल दी गई थी, जहां पड़ी-पड़ी वह सूख और हवा में विलीन हो गई थी। अन्य समस्याओं तथा अनुभवों का अब प्राधान्य था – मालगाड़ी के डिब्बे, 'मोलोदेत्स' और गलातेन्को के लिए कटघरे, और कोलोनीवासियों की निगरानी में रखे साज़-सामान से अटे शिक्षकों के कमरे, सूखी घास के बिस्तर और 'पिस्सू' नामक प्रदर्शन, नेस्तेरेन्को की कंजूसी, बण्डल, बक्से, लारियां, नयी मखमली टोपियां, गोंचारोव्का की विभिन्न लड़कियों के उदास चेहरे – प्रेम के कोमल अंकुर जिनके भाग्य में छिन्न-भिन्न होना बदा था – ये सब कोलोनीवासियों की चिन्ता और व्याकुलता के विषय थे। समूह के ऊपरी स्तर मज़ेदार कहानियों और चुटकुलों, हंसी के क़हक़हों और अल्हड़ बोली-ठिठोलियों के विविध रंगों में रंगे थे। वे उन लहरों के समान थे जो पके गेहूं के खेतों की सतह पर हिलोरें लेती हैं, इस तरह कि दूर से देखने पर खेत निश्चिंत और खेलते-झूमते मालूम होते हैं। लेकिन वस्तुतः प्रत्येक बाल में शक्ति सोई होती है और दुलार भरे हवा के झोंकों में मृदु भाव से झूमते समय एक भी कण तक छिटककर नहीं गिरता। उन्हें कोई चिन्ता नहीं। और जिस तरह बाल को रौंदे-फटके जाने की चिन्ता नहीं करनी होती, उसी तरह कोलोनीवासियों को कुरियाज की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं थी। यथा समय रौंदना-फटकना होगा और यथा समय कुरियाज में काम करने का नम्बर आएगा।

कोलोनीवासियों के नंगे पांव इतराहट भरी कमनीयता के साथ सुहावने पथों पर थिरकते और पेटी-कसे उनके शरीर मृदु हिलोरें-सी लेते चलते थे। उनकी आंखें शान्त भाव से मेरी ओर मुसकरातीं। उनके होंठ मित्रतापूर्ण अभिवादन में न मालूम-से फरफराते। उद्यान

में, बग़ीचे में, उदासी भरे परित्यक्त बेंचों पर, घास पर, नदी के तट पर – हर कहीं आकृतियों के समूह नज़र आते। अनुभवी लड़के अपने अतीत की कहानियां सुनाते – अपनी माताओं की, मशीनगनों की, स्तेपीय और वन्य प्रदेशों की टुकड़ियों की। ऊपर पेड़ों के छत्र होते, – निस्तब्ध। मधु-मक्खियां उड़तीं, 'हिम-रानियों' और बबूल के सफ़ेद फूलों की सुगंधि तैरती।

और, कुछ उलझन के साथ, मुझे लगता जैसे यह सब सपनों का लोक हो। सब कुछ इतना असम्भव मालूम होता।

व्याजक्रीडा से युक्त छवियां – ग्वाल-बाल, पवन-सुत, काम-देव – मेरे मस्तिष्क को अपना क्रीड़ा-क्षेत्र बनाए थे। लेकिन जीवन भी कभी-कभी मज़ाक़ करता है। उसके मज़ाक़ कभी-कभी बहुत ही उद्धत होते हैं। लाइलेक की एक झाड़ी की ओट में पिद्दी-सी नाकवाला एक सुख-चड़ी-सा छोटा लड़का दुबका था। उसे सब मोप्सिक* कहते थे। उसका चेहरा सिकुड़-सिमटकर छुहारा बन जाता था जब वह बिना किसी टीमटाम के बांसुरी बजाता था। उसे केवल बांसुरी नहीं कहा जा सकता। उसे बीन कहना चाहिए। उसका चेहरा शैतानी से खिला था, खेल में रत छौने की भांति। और चरागाह में लड़कियां हार गूंथ रही थीं। नताशा पेत्रेन्को सिर पर नीले फूलों का हार डाले थी। उसके इतर-मानवीय सौन्दर्य से मैं द्रवित हो उठा। और तभी एल्डर की एक झाड़ी की गुदगुदी दीवार के पीछे से कालीना इवानोविच प्रगट हुआ, हलकी नीली आंखों को सिकोड़ते, मूंछों को नचाते और मुस्कराते हुए।

"आपको खोजते-खोजते मैं तो हैरान हो गया! उन्होंने बताया कि आप शहर गए हैं। हां तो, इन हरामखोरों को आपने कुछ ठीक-ठाक किया? देखो न, चलने का समय हो गया, और ये हैं कि देर पर देर किए जा रहे हैं – मूर्ख कहीं के!"

"सुनो, कालीना इवानोविच," मैंने कहा, "अभी लड़के यहां हैं। अच्छा हो कि उनके रहते तुम अपने बेटे के पास शहर चले जाओ। हमारे विदा हो जाने पर तुम्हारे लिए जाना और भी कठिन हो जाएगा।"

---

* पिल्ला।

कालीना इवानोविच के हाथ जाकेत की गहरी जेबों में उसके पाइप की टोह लेने लगे।

"मैं सबसे पहले यहां आया था, और सबसे बाद में मैं जाऊंगा। गांव के लोग मुझे यहां ले आये थे। वे ही अब मुझे यहां से लेकर जाएंगे, हरामखोर कहीं के! मैंने तय कर लिया है। मेरे जाने में कोई दिक़्क़त नहीं होगी। पुस्तकों में शायद आपने पढ़ा होगा कि कितने दिनों से यह दुनिया क़ायम है। तब से लेकर आज तक मुझ जैसे जाने कितने पापी ठिकाने लगा दिए गए। सो वे मुझे भी ठिकाने लगा देंगे, ही-ही!"

कालीना इवानोविच और मैंने वीथिका में टहलना शुरू किया। अपने पाइप का कश लेते हुए उसने झाड़ियों की फुनगियों, कोलोमाक की चमकती सतह, सरं पर हार डाले हुए लड़कियों, मोप्सिक और उसकी बांसुरी का मुआयना किया।

"अगर मैं भी झूठ के ढेर लगाना जानता – जिस तरह कि कुछ हरामखोर लगाते हैं – तो कहता कि किसी दिन आकर मैं भी कुरियाज के दर्शन करूंगा। लेकिन मैं साफ़-साफ़ कहता हूं – मैं नहीं आऊंगा। आदमी, आप जानो, एक दयनीय चीज़ है, एक कोमल बूटा। अपने दिनों में चाहे उसने कोई काम किया हो या न किया हो, लेकिन है वह एक निरी खुराफ़ात चीज़, किसी काम का नहीं, सिवा इसके कि उबालकर उसकी लेई बना ली जाए। जब लोग समझदार होंगे तो वे बूढ़ों से लेई बनाया करेंगे। बहुत बढ़िया लेई बनाई जा सकती है..."

निद्राविहीन रात और शहर की दौड़-धूप के बाद मेरी हालत काफ़ी कड़कड़ा गई थी – ऐसा मालूम होता था जैसे ब्रह्मांड मृदु झंकार कर रहा हो, चमकदार वृत्तों में घूम रहा हो। कालीना इवानोविच दुनिया-भर की बीती घटनाओं की याद ताज़ा कर रहा था, लेकिन मैं उसे केवल आज की वृद्धावस्था में ही देख सकता था, उसके लिए अफ़सोस कर सकता था।

"तुम्हारा जीवन ऐसा कुछ बुरा तो नहीं रहा, कालीना..."

"मैं बताता हूं कि क्या," अपने पाइप की राख झाड़ने के लिए रुकते हुए उसने कहा। "मुझे कोई बहका नहीं सकता। मैं जानता हूं

कि कौन क्या है। यों सोचकर देखो तो जीवन एक झमेला है। तुम खाते हो, जो खाया है उसे पचाते हो, सोते हो, इसके बाद फिर खाते हो – रोटी, या हो सकता है कि मांस ..."

"ज़रा ठहरो! और काम के बारे में क्या हुआ?"

"काम की तुम्हारे कौन परवाह करता है? देखो न, किस तरह यह चक्का चलता है – जिन्हें काम की ज़रूरत है वे ऐसे लोग हैं जो खुद काम नहीं करते, हरामखोर! और जिन्हें ज़रा भी ज़रूरत नहीं होती, उन्हें बैल की भांति खटना पड़ता है।"

हम चुप हो गए।

"दु:ख होता है कि इतने थोड़े समय मैं बोल्शेविकों के मातहत रहा," कालीना इवानोविच कहता गया। "वे हर चीज़ अपने निजी ढंग से करते हैं – शैतान कहीं के – और वे अशिष्ट लोग हैं, निस्संदेह अशिष्टता मुझे पसंद नहीं। फिर भी, उनके राज में जीवन दूसरी तरह चला गया। एक ही चीज़ की वे चिन्ता करते हैं – तुमने अपना काम किया या नहीं – और किसी चीज़ से उन्हें कोई मतलब नहीं! है न एकदम नयी बात, जो पहले कभी नहीं सुनी? अब हरेक को काम की ज़रूरत है। थोड़े-बहुत मेरे जैसे सठियाए हुए लोग भी हैं जो कुछ नहीं समझते। जो काम करने और खाना खाने तक को भूल जाएं अगर उनकी बीवियां उन्हें याद न दिलाएं। क्या आपको याद है कि किस प्रकार एक दिन मैं आपके पास आया था, और मैंने कहा था – 'क्या आप भोजन कर चुके?' और तो जानते हैं, कि उस समय सांझ हो गई थी। फिर आपने – ही-ही – सिर खुजलाते हुए याद करना शुरू किया कि भोजन किया है या नहीं। 'लगता है कि किया था, लेकिन शायद यह कल की बात है।' तुम भूल गए, ही-ही ... है न एकदम नयी बात, जो पहले कभी नहीं सुनी?"

कालीना इवानोविच और मैं अंधेरा घिर आने तक उद्यान में टहलते रहे। दिन की रोशनी के आकाश में गुल होने पर कोस्तिया शारोवस्की भागा हुआ आया, मच्छरों को भगाने के लिए एक टहनी को अपनी नंगी टांगों पर फटकारते तथा क्षोभ के साथ चिल्लाते हुए:

"उन्होंने वहां मेक-अप करना शुरू कर दिया है और आप हैं कि अभी टहलते जा रहे हैं, इधर से उधर, उधर से इधर! लड़के कहते

हैं कि आप को वहां पहुंचना चाहिए। ज़रा चलकर देखिये तो कि ज़ार कितना मज़ेदार बना है! ज़ार का अभिनय लापोत कर रहा है। ओह, उसने ऐसी नाक लगाई है कि बस!"

गांव के हमारे सभी मित्र नाटक-घर में जमा थे। लूनाचार्स्की कम्यून अपने पूरे दलबल सहित वहां मौजूद था। नेस्तेरेन्को पर्दे के पीछे एक सिंहासन पर बैठा था, लड़कों को दुतकारने का प्रयास कर रहा था जो उसपर कंजूसी, अकृतज्ञता तथा निर्दयता का अभियोग लगा रहे थे। ओल्या वोरोनोवा जो आईने के सामने खड़ी ज़ार की कन्या की अपनी साज-सज्जा को संवार रही थी, परेशान हो रही थी:

"वे हमारे नेस्तेरेन्को की जान लेकर छोड़ेंगे..."

"पिस्सू' का कोलोनी में यह पहली बार प्रदर्शन नहीं हो रहा था। लेकिन इस बार काफ़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। कारण, मेक-अप करनेवाले हमारे दो मुख्य आदमी – बुत्साई और गोरोविच – कुरियाज में थे। फलतः मेक-अप अत्यन्त भड़कीली हुई थी। लेकिन यह किसी को अखरा नहीं – प्रदर्शन विदा के लिए जमा होने का एक बहाना मात्र था। औपचारिक विदाइयों में पड़ने की यहां क़तई दरकार नहीं थी। पिरोगोव्का और गोंचारोव्का की लड़कियों को जैसे प्रागैतिहासिक काल में पटका जा रहा था – कारण, उनके मस्तिष्क में इतिहास का प्रारम्भ कोलोमाक नदी के तट पर शानदार गोर्कीआइटों के आगमन से होता था। मिल के कोनों में, भट्टियों की बग़ल में जिन्हें मार्च से नहीं गरमाया गया था, मंच के पीछे अंधेरी राहों में, किसी भी बेंच पर जो सामने दिखाई दिया, पेड़ों के ठूंठों पर, नाटक में काम आनेवाली भांति-भांति की चीज़ों पर लड़कियां बैठी थीं। उनके फूलदार रूमाल खिसककर कंधों पर आ गिरे थे। शोक के भार से झुके उनके सुनहरे सिर उघड़ गए थे। न शब्द, न दैवी स्वर-लहरियां, न आहें, अब इनके सुकुमार हृदयों में ख़ुशी का सचार कर सकती थीं। उदासी में पगी कोमल उंगलियां घुटनों पर उनके रूमाल के छोरों से खेल रही थीं, लेकिन यह भी अब बेकार था – कमनीयता का एक अलस प्रदर्शन मात्र। कोलोनीवासी लड़कियों के बराबर खड़े ऐसा दिखाने का प्रयास कर रहे थे मानो उनके हृदय शोक से भारी हों। रह-रहकर, जब-तब, अभिनेताओं के श्रृंगार-कक्ष

में से लापोत झांककर देखता, प्रेम की पीड़ाओं के प्रति व्यंग्यमय सहानुभूति के साथ अपनी नाक को सिकोड़ता तथा वेदना से भरी कोमल आवाज़ में कहता :

"पेत्या, भले आदमी! तुम्हारे बिना भी मारूस्या चुपचाप बैठी रहेगी – जाओ और अपनी साज-सज्जा करो। क्या तुम भूल गए कि तुम्हें घोड़े का अभिनय करना है?"

पेत्या दक्षता के साथ सन्तोष की अपनी उद्धत सांस को विदाई की एक कोमल उसास में परिवर्तित कर मारूस्या को अकेला छोड़ चल पड़ा। मारूस्याओं के लिए यह अच्छा है कि उनके हृदय खुलने-जुड़नेवाले हिस्सों से बने हैं। दो महीने बीतने से पूर्व मारूस्या पेच खोलकर पेत्या की ज़ंग लगी छवि को अलग करेगी और आशा के पालिश से अपने हृदय को चमकाएगी, चमचमाता हुआ एक नया हिस्सा पेच से कस देगी – स्तोरोजेवोय गांव के किसी पनास की छवि को जो इस क्षण कोलोनीवासियों के एक दल से उदासी के साथ विदा ले रहा है और मारूस्या के ख़ाली हृदय में जगह पाने के लिए मन-ही-मन अपने आपको तैयार कर रहा है। मतलब यह कि दुनिया का हाल सब ठीक है, पेत्या अपनी भूमिका से – बोस प्लातोव की त्रोईका-गाड़ी में जुतनेवाले घोड़े की भूमिका से भी प्रसन्न है।

कार्यक्रम का गम्भीर, विदाईवाला हिस्सा शुरू हुआ। भले और हृदय से निकले शब्दों के बाद – उपदेश, कृतज्ञता, काम की एकजुटता से भरे शब्दों के बाद – परदा खिंचा और अपने जीर्ण-शीर्ण जनरलों से घिरा ज़ार मंच पर दिखाई दिया – निरा बुद्धू और नगण्य। रह-रहकर 'कचरे' के उन टुकड़ों को छिटकाता हुआ जिन्हें विचित्र मन्दगति दरबान झाड़न से उड़ा रहा था। मिल के भंडारघर के पिछले दरवाज़े से त्रोईका-गाड़ी – गलातेन्को, कोरितो और फ़ेदोरेन्को – मंच पर दौड़ आई। जोत को चबाते, अपने भारी सिरों को हिलाते, साज़-सामान को तोड़ते-फोड़ते, अपने कोचवान तारानेत्स के हाथों में कसी रासों को तानते, पांवों से खड़खड़ आवाज़ करते और नीचे बिछे जर्जर तख़्तों को चरमराते, वे एकदम मंच पर आ धमके। तारानेत्स की पेटी को पकड़े हुए एक विचित्र आकृति दिखाई दे रही है। यह बोस प्लातोव है। एक उदीयमान अभिनेता – ओलेग ओग्नेव – उसका अभिनय कर

रहा है। दर्शक अपने शोक के आख़िरी चिन्हों को मिटाते हुए नाटकयि छलना तथा सौन्दर्य में अपने आपको निमग्न कर देते हैं। कालीना इवानोविच अगली पांत में बैठा झुर्रियां पड़ी पीली उंगली से अपने आंसुओं को पोंछ रहा है – नाटकीय आनन्द ने इस हद तक उसे अभिभूत कर लिया है!

अचानक कुरियाज का छाया-चित्र मेरी आंखों के सामने घूम गया।

नहीं, लोग अब दया के लिए दुआ नहीं करते, और इस प्याले को मेरे होंठों से कोई अलग नहीं कर सकता! अचानक मैंने अनुभव किया कि मैं निःसत्व – पूरी तरह थककर चूर हो गया हूं।

अभिनेताओं का श्रृंगार-कक्ष काफ़ी आरामदेह था और ज़िन्दादिली से गुंजायमान था। अपनी शाहाना पोशाक में और अपने ताज को सिर के एक ओर खिसकाए लापोत येकातेरिना ग्रिगोरियेवना की गहरी बांहदार आराम-कुर्सी में बैठा गलातेन्को को विश्वास दिला रहा था कि उसने घोड़े का अभिनय बहुत ही शानदार ढंग से किया।

"नाटक की बात छोड़ो, ऐसा घोड़ा अपने जीवन में भी मैंने पहले कभी नहीं देखा!"

"अरे, उठो, उठो!" ओल्या वोरोनोवा ने लापोत से कहा। "अन्तोन सेम्योनोविच को बैठने दो!"

और इस आरामदेह बांहवाली कुर्सी में नाटक के ख़त्म होने की प्रतीक्षा किए बिना मैं सो गया। नींद में ग्यारहवें दस्ते के लड़कों की कानफोड़ आवाज़ मुझे सुनाई दी। वे बहस कर रहे थे:

"उठा ले चलें, उठा ले चलें!"

लेकिन सिलान्ती उन्हें रोकने का प्रयास करते हुए फुसफुसाया:

"इतना न चिल्लाओ! आदमी जब सोया है तो उसे पूरी नींद सोने दो। बस, और कुछ नहीं। सो यह बात है, आया समझ में?"

६. पांच दिन

अगले दिन मृदुतम भावनाओं के साथ कालीना इवानोविच, ओल्या और नेस्तेरेन्को से मैंने विदा ली और वहां से चल दिया। कोवाल को ज़िम्मेदारी सौंपी गई कि वह अत्यन्त पाबन्दी के साथ हमारे साज़-

सामान को गाड़ी में लदवाने की योजनाओं को पूरी करे और पांच दिन के भीतर समूची कोलोनी के साथ खारकोव के लिए रवाना हो जाए।

मैं धुंधले सन्देहों से घिरा था। मेरे मस्तिष्क का सन्तुलन डगमगा गया था, और मैं आशंकाओं में डूब-उतरा रहा था। रिजोव स्टेशन से दिन के एक बजे वहाँ पहुँचा था, मठ के फाटक में पाँव रखते ही मुझे मुसीबत का सामना करना पड़ा।

एक जाँच-पड़ताल कमीशन – ब्रेगेल, क्ल्यामेर, यूरियेव और एक अभियोक्ता – वहां बैठा था। साथ ही, जाने क्यों, भूतपूर्व संचालक भी उनके बीच इधर से उधर मंडरा रहा था। ब्रेगेल ने कठोर स्वर में मुझे संबोधित किया :

"तो इन्होंने एक-दूसरे को पीटना भी शुरू कर दिया!"

"कौन किस को पीट रहा है?"

"दुर्भाग्यवश यह हम नहीं जानते कि किसकी यह करतूत है और किसके उकसाने से यह हुआ..."

अभियोक्ता ने जो एक हट्टा-कट्टा चश्माधारी व्यक्ति था, छिपी नज़र से ब्रेगेल की ओर देखा और धीमे स्वर में कहा :

"मैं समझता हूं कि मामला... साफ़ है.. हो सकता है कि कोई उकसावा न हो। कोई पुराना वैर या ऐसी ही कुछ और, आप जानो... सच पूछो तो यह ऐसी कोई बहुत गम्भीर बात नहीं कि किसने यह किया। अब संचालक भी यहां मौजूद है... हो सकता है कि आप इस मामले में कुछ और ज़्यादा पता लगा सकें और हमें बता सकें।"

ब्रेगेल अभियोक्ता के व्यवहार से, प्रत्यक्षतः, असंतुष्ट थी। मुझसे एक शब्द भी और कहे बिना वह कार में सवार हो गई। यूरियेव मेमने की भांति मेरी ओर देखकर मुस्कराया। कमीशन विदा हो गया।

कोलोनीवासी दोरोश्को को अहाते में पीटा गया था। शयनागारों से आधा-एक दरजन काफ़ी नये जूतों पर उसने हाथ साफ़ किया और उन्हें लिए हुए फाटक की ओर जा रहा था। तभी उसपर मार पड़ी। रात की यह घटना थी, और इसकी तमाम परिस्थितियां यह सिद्ध करती मालूम होती थीं कि आक्रमण तैयारी के साथ किया गया था।

जूते चुराते समय उसपर ताक रखी गई, और घंटे की बुर्जी के पास पहुंचते समय सन्नद्ध प्रकोष्ठ की बग़लवाली बबूल की झाड़ियों के पीछे से उसके ऊपर कम्बल डाला गया, उसे नीचे गिरा दिया गया और मारा गया। गोर्कोवस्की ने जो अभी अस्तबल से बाहर निकल रहा था अंधेरे में देखा कि कुछ लघु आकृतियां सब दिशाओं में भागी जा रही हैं। दोरोश्को को उन्होंने वहीं छोड़ दिया था लेकिन कम्बल को अपने साथ लेती गई थीं। अपराधियों की टोह में शयनागारों की तुरन्त तलाशी ली गई, लेकिन कुछ पल्ले नहीं पड़ा – सब लम्बी ताने थे। दोरोश्को खरोंचों-चोटों से भरा था। उसे कोलोनी के अस्पताल में रखना पड़ा। डाक्टर को बुलाया गया। तब उसने देखा कि ऐसी कोई ख़ास गहरी चोट नहीं आई है। लेकिन, इस सबके बावजूद गोरोविच ने घटना की रिपोर्ट यूरियेव के पास फ़ौरन भेज दी।

जांच-पड़ताल कमीशन ने ब्रेगेल की अध्यक्षता में सरगर्मी के साथ शुरू कर दिया। हमारे अग्रिम मिश्रित को खेतों से बुलाया गया। इसके सदस्यों से एक-एक करके जिरह की गई। क्ल्यामेर ख़ास तौर से चिन्तित था – कोई ऐसा सबूत पाने के लिए जिससे सिद्ध हो कि इस मार-पीट के लिए गोर्कीआइट ज़िम्मेदार हैं। शिक्षकों में एक से भी पूछ-ताछ नहीं की गई बल्कि – सच पूछो तो – उनके साथ हर तरह कन्नी काटी गई, इस या उस व्यक्ति को बुलाकर ही कमीशन सन्तुष्ट हो गया। कुरियाजवासियों में से केवल पेरेत्स और ख़ोवराख़ को उनकी जांच करने के लिए एक पृथक कमरे में बुलाया गया। उसका कारण शायद यह था कि वे खिड़की के पास आकर चिल्ला रहे थे :

"हमसे पूछो! उनसे पूछ-ताछ करने से क्या फ़ायदा? वे हमें पीटेंगे और हम किसी से शिकायत तक नहीं कर सकते।"

दोरोश्को सोलह वर्ष का एक बेडौल-सा लड़का था। वह अस्पताल में पड़ा था। अपनी रूखी आंखों से उसने मुझे देखा। फुसफुसाते हुए बोला :

"जाने कितनी देर से मैं आपको बताने के लिए छटपटा रहा हूं..."

"तुम्हें किसने मारा?"

"क्या वे यहां आए? इससे क्या अगर कोई मुझे पीटता है तो?

वे आपके लड़के नहीं थे जिन्होंने मुझे मारा, मैं कहता हूं, और वे साबित करना चाहते थे कि वे ही थे। अगर आपके लड़के न होते तो वे मुझे जान से ही मार डालते। वह... जो कमाण्डर है न... वह पास से गुज़रा और वे सब भाग खड़े हुए.. "

"कौन?"

"यह मैं नहीं बताऊंगा. मैंने अपने लिए चोरी नहीं की। उसने सुबह मुझसे कहा था "

"खोवराख ने?"

खामोशी।

"खोवराख ने?"

दोरोश्को ने तकिए में अपना मुंह गड़ा लिया और रोने लगा। उसकी सुबकियों की बाढ़ में उसके शब्दों को मैं कुछ पकड़ नहीं सका।

"वह मालूम कर लेगा... मैंने सोचा... आखिरी बार... मैंने सोचा.. "

उसके स्थिर होने तक मैं रुका रहा। इसके बाद मैंने पूछा.

"सो तुम नहीं जानते कि तुम्हें किसने मारा?"

अचानक वह अपने बिस्तरे पर बैठ गया। वह सिर को अपने हाथों में थामे था और शोक के आवेग में बाईं से दाहिनी ओर को झकोला खा रहा था। फिर, अपने सिर को अभी भी थामे और अपनी आंखों में अभी भी आंसू डबडबाते हुए वह मुसकराया:

"नहीं, नहीं, निस्संदेह नहीं। वे गोर्कीआइट नहीं थे। वे इस तरह से नहीं मारते..."

"तो किस तरह से?"

"यह तो मैं नहीं जानता कि किस तरह, लेकिन वे कम्बल का इस्तेमाल न करते . वे कभी कम्बल का इस्तेमाल नहीं करते.. "

"तुम रोते क्यों हो? क्या दर्द हो रहा है?"

"नहीं, दर्द नहीं हो रहा है, केवल... मैंने सोचा यह आखिरी बार... और आपको कभी पता नहीं लगेगा..."

"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "तुम अच्छे हो जाओ, हम यह सब भूल जाएंगे..."

"ओह, अन्तोन सेम्योनोविच, सच, इसे आप भुला देना "

आखिर वह शान्त हुआ।

मैंने निजी तौर से पूछ-ताछ शुरू की। गोरोविच और किरगीज़ोव ने अपनी बांहें फैलाईं और आपे से बाहर होने लगे। इवान देनिसोविच ने क्रोधपूर्ण चेहरा बनाने का प्रयास किया और अपनी भौंहों को तोड़ा-मरोड़ा, लेकिन वह इतना खुशमिज़ाज जीव था कि उसकी इन चेष्टाओं को देखकर मैं हंस पड़ा:

"तुम इतने उद्विग्न क्यों नज़र आते हो, इवान देनिसोविच?"

"मैं? यह मैं कैसे जान सकता हूं कि वे क्यों एक-दूसरे का गला काटना चाहते हैं? हो सकता है, कोई पुराना बैर हो..."

"बैर ऐसे कुछ बहुत पुराना तो नहीं मालूम होता!"

"क्यों, पुराना क्यों नहीं मालूम होता?"

"मुझे लगता है कि यह काफ़ी नया बैर है। अरे हां – क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि वह गोर्कीआइटों में से कोई नहीं था?"

"अरे नहीं, खुदा न करे!" इवान देनिसोविच ने विस्मय से कहा। "भला हमारे लड़कों में से कोई ऐसा क्यों करने लगा?"

वोलोखोव ने वन्य नज़र से मेरी ओर देखा:

"कौन? हमारे? ऐसे नन्हे-मुन्ने-से मेमने को? उसे पीटते? कौन है हम में जो ऐसी हरकत करता? अगर वह खोवराख या चुरिलो या कोरोत्कोव होता – मैं उनकी अभी, इसी समय मरम्मत कर सकता हूं, अगर आप इजाज़त दें तो! उसने जूते चुरा लिए? हर रात वे कोई-न-कोई चीज़ चुराते हैं। और जूते अब बचे भी कितने हैं? जो हो, हमारे साथियों के आने तक कुछ बाक़ी नहीं बचेगा। भाड़ में जाएं वे – चुराएं जितना चुरा सकें! हमें इसकी बिलकुल चिन्ता तक नहीं। लेकिन वे काम करना नहीं चाहते – यह बिलकुल दूसरा मामला है..."

येकातेरिना ग्रिगोरियेवना और लिदोच्का अपने खाली कमरे में थीं – एकदम विमूढ़। जांच-पड़ताल कमीशन के आगमन ने उन्हें इतना अधिक घबरा दिया था उतना और अन्य किसी चीज़ ने नहीं। लिदोच्का खिड़की के पास बैठी स्थिर नज़र से गंदे अहाते में देख रही थी। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने उदास भाव से मेरे चेहरे की ओर देखा।

"क्या आप सन्तुष्ट हैं?" उसने पूछा।

"किस चीज़ से?"

"हर चीज़ से – इस मठ से, लड़कों से, अपने अफ़सरों से ?"

क्षण-भर के लिए मैंने सोचा – क्या मैं सन्तुष्ट था ? और, सच पूछो तो, मेरे सन्तुष्ट न होने के ऐसे कोई ख़ास कारण हो भी क्या सकते थे ? अब तक हर चीज़, थोड़े-बहुत रूप में, जैसी मैं आशा करता था वैसी ही प्रकट हुई थी।

"हां, मैं सन्तुष्ट हूं," मैंने कहा। "और जो हो, पर तुम जानती ही हो कि मैं उनमें से नहीं हूं जो झींकते हैं।"

"लेकिन मैं झींक रही हूं।" येकातेरिना ग्रिगोरियेवना ने कहा, बिना किसी मुस्कराहट या लेशमात्र भी बिना किसी ज़िन्दादिली के। "हां, मैं झींक रही हूं ! मेरी समझ में नहीं आता कि हम इतना एकाकी क्यों हैं। यहां की स्थिति भयावह है, वास्तव में एक मानवीय ट्रेजेडी। जाने कहां के नवाब यहां आ धमकते हैं, अपने दम्भ का प्रदर्शन करते तथा हमें हेय नज़रों से देखते हुए। ऐसे एकाकीपन में टिकने की हम में सामर्थ्य नहीं है। नहीं, मैं नहीं टिक सकती ... मैं नहीं टिकूंगी ..."

खिड़की के दासे पर अपनी उंगलियों को धीरे-धीरे ठकठकाते हुए लिदोच्का ने येकातेरिना ग्रिगोरियेवना को संभालने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन यह साफ़ था कि ख़ुद उसके लिए भी अपनी सुबकियों पर क़ाबू पाना कठिन हो रहा था।

"मेरी जैसे कोई गिनती नहीं है !" वह चीख़ उठी। "लेकिन मैं काम करना चाहती हूं, मैं काम करने के लिए ललकती हूं – यहां तक कि कोई वीरतापूर्ण कार्य करने की भी मुझमें सामर्थ्य हो सकती है ... लेकिन मैं ... इनसान हूं, केवल एक सिफरमात्र नहीं हूं।"

वह फिर खिड़की की ओर घूम गई। मैं दरवाज़ा कसकर बन्द करते हुए ऊंचे, डगमगाते ओसारे में निकल आया। वान्या ज़ाइचेन्को और कोस्तिया वेत्कोवस्की वहां खड़े थे। कोस्तिया हंस रहा था :

"हां तो, क्या चट कर गए ?"

वान्या ने रईसाना अन्दाज़ में हाथ फहराते हुए क्षितिज-रेखा का अनुसरण किया।

"बिलकुल , जूठन तक नहीं छोड़ी।" उसने कहा। "उन्होंने अलाव जलाए, उन्हें भूना, और गटक गए। और बस ! सो देखा

तुमने? और इसके बाद वे लम्बे पसर गए, सोने के लिए। और बाप रे, सोए भी खूब! हमारा दस्ता बग़ल में ही काम कर रहा था। हम तरबूज़ बो रहे थे। हम हंसे और उनका कमाण्डर पेत्रुश्को भी हंसा... और बस! उसने कहा – 'बहुत मज़ेदार भोजन किया उन्होंने भुने हुए आलुओं का!"

"तो तुम्हारा मतलब यह कि वे एकदम सारे के सारे आलू खा गए? चालीस पूड थे।"

"हां, सब के सब! भूना, और चट कर गए! या तो जंगल में छिपा दिए, या खेत में इधर-उधर फेंक दिए। और इसके बाद लम्बी तानकर सो गए। भोजन के लिए भी नहीं आए। पेत्रुश्को ने कहा, 'भोजन को गोली मारो। हमने आलुओं को रोपा है।' ओदारियुक ने उससे कहा, 'तुम निरे सूअर हो!' और उनमें लड़ाई हुई। आपका मिशा शुरू में वहां था। वह उन्हें समझा रहा था कि आलू कैसे बोने चाहिए। लेकिन तभी कमीशन ने उसे बुला लिया।"

वान्या अब लम्बी, चिथड़ा हुई पतलून नहीं बल्कि जेबोंवाला जांघिया पहने था। ऐसा जांघिया जो केवल गोर्की कोलोनी में ही बनाया जाता था। निश्चय ही शेलापूतिन तथा तोस्का ने वान्या को अपने कपड़ों में साझीदार बना लिया था। अपने हाथों को लहराते और अपनी सुडौल टांगों पर हिलते-डुलते हुए वान्या वेत्कोवस्की से बातें कर रहा था, साथ ही कनखियों से मेरी ओर भी देखता जाता था, और रह-रहकर – जब-तब – उसकी मोहक आंखें बालसुलभ क्रीड़ा से चमक उठती थीं।

"अब तो तुम बिलकुल चंगे हो न, इवान?" मैंने पूछा।

"हां!" अपने वक्ष को थपथपाते हुए वान्या चहका। "बिलकुल ठीक! मेरा दस्ता आज '१–त०' मिश्रित में था। 'त०' – याने हमने तरबूज़ बोए हैं। शुरू में देनिस हमारे साथ काम करता रहा, लेकिन जब कमीशन ने उसे बुला लिया तो हम अपने आप काम करते रहे। देखना, कितने बढ़िया तरबूज़ उगेंगे! गोर्कीआइट कब आ रहे हैं? पांच दिन के भीतर? बड़ा मज़ा आएगा उन्हें देखकर – कैसे हैं – वे सब! क्यों, है न?"

"तुम्हारा क्या ख़याल है, वान्या – दोरोश्को को किसने मारा?"

अचानक वान्या का आतुर चेहरा मेरी ओर घूमा, और मेरे चश्मे पर उसकी आंखें टिक गईं। उसके गालों में बल पडे, वे मिटे और उनमें फिर बल पड़े। उसने अपना सिर झटकाया और अपने पास उंगली हिलाते हुए मुसकराया।

"मुझे नहीं मालूम!" उसने कहा।

और निश्चयात्मक अन्दाज़ में उसने खिसकना शुरू किया।

"ज़रा रुको, वान्या! तुम्हें मालूम है – और तुम्हें मुझे बताना होगा!"

गिरजे की दीवार के पास वान्या रुका, दूर से मेरी ओर देखा, क्षण-भर के लिए कुछ सकपकाया, और इसके बाद एक बड़े आदमी की भांति प्रत्येक शब्द को उभारते हुए सहज भाव और ठंडे दिमाग़ से बोला·

"मैं आप से सच कहता हूं – मैं वहां था, लेकिन और कौन वहां था यह मैं आपको नहीं बताऊंगा। उसे चोरी नहीं करनी चाहिए!"

हम दोनों चुप हो गए। कोस्तिया वहां से पहले ही खिसक चुका था। हम सोचते रहे, सोचते रहे। आख़िर वान्या से मैंने कहा:

"तुम गिरफ़्तार किए जाते हो। पायनियरों के कमरे में जाओ। वोलोख़ोव को रिपोर्ट दो कि तुम सोने के लिए बिगुल बजने तक गिरफ़्तारी में रहोगे।"

वान्या ने आंखें उठाकर देखा, बिना एक शब्द कहे सिर हिलाया, और पायनियरों के कमरे की ओर दौड़ गया।

ये पांच दिन एक सुदीर्घ शून्य की भांति मेरी चेतना में स्थित हैं – निरे शून्य की भांति, और कुछ नहीं। इस काल में अपनी गतिविधि के विवरण की याद ताज़ा करना मेरे लिए कठिन है। सम्भवतः वह गतिविधि जैसी चीज़ इतनी अधिक नहीं थी जितनी कि एक तरह की आन्तरिक हलचल थी, या शायद वह क़वायद से लैस और एकजुट सेनाओं की शक्ति थी। यों उस समय मुझे लगता ऐसा ही था जैसे मैं अत्यन्त सक्रिय था। मैं चीज़ों का विश्लेषण और उन्हें तय करने में जुटा रहता था। लेकिन वास्तव में मैं गोर्कीआइटों के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

लेकिन यह सब होने पर भी हमने कुछ उपलब्धियां प्राप्त कीं।

याद आता है – सवेरे पांच बजे हमारा नियमित रूप से उठना, और हमारे दृष्टान्त का अनुकरण करने से कुरियाजवासियों के निपट इन्कार का दृश्य देखकर नियमित रूप से हमारे धीरज का विक्षुब्ध हो उठना। अग्रिम मिश्रित दस्ता इस काल में मुश्किल से ही कभी सो पाता था, क्योंकि हर समय कोई-न-कोई अत्यन्त फ़ौरी काम सिर पर आ धमकता था। शेरे मेरे लौटने के एक दिन बाद आ गया था। दो घंटे तक वह खेतों, अहातों, आउट-हाउसों और चबूतरों की सूक्ष्म नाप-जोख करने में जुटा रहा। फ़ौजी मार्च के डगों से वह उन्हें नाप रहा था – एकदम मुंह बन्द, और वानस्पतिक जगत से तोड़ी हुई जाने किस-किस तरह की घास-पात को कुतरते हुए। सांझ को संवलाए हुए, क्षीण और धूल से अटे गोर्कीआइटों ने – उस जगह की सफ़ाई शुरू की जहां हमारे सूअरों का भारी रेवड़ रखा जाना था।

पौधाघरों के लिए गड्ढों की खोदाई शुरू की गई। कमाण्डर और संयोजक के रूप में वोलोखोव की दक्षता का जैसे कोई अन्त नहीं था। एक आदमी को वह खेत में छोड़ देता – घोड़ों की दो जोड़ियों को संभालने के लिए, और बाक़ी को अन्य काम में लगाता। प्योत्र इवानोविच गोरोविच सुबह-सुबह बाहर निकलता, खास तरीक़े से अपनी कुदाली को फहराता और कुरियाजवासियों के एक कुतूहली दल को लक्ष्य कर हांक लगाता हुआ कहता· "चलो, बहादुरो, खुदाई के लिए चलो!"

लेकिन 'बहादुर' मुंह फेर लेते और अपनी-अपनी राह थामते। राह में बुत्साई से उनकी भेंट होती – रात की भांति काला और जांघिया पहने हुए बुत्साई से – और उसके बुलाने को भी वे उतने ही बेमन से सुनते। गहरी आवाज़ में वह कहता.

"ऐं, काहिलों की औलाद! कब तक मैं तुम लोगों के बदले खटता रहूंगा?"

सांझ होते ही रबफ़ाक-छात्रों में से भी कुछ कुदाली थामने आ जाते। लेकिन मैं उन्हें, जितनी जल्दी होता, लौटा देता। वे वसन्तकालीन परीक्षाएं दे रहे थे और उनके साथ खेलवाड़ नहीं किया जा सकता था – रबफ़ाक-छात्रों का हमारा पहला दल इस वसन्त में उच्च शिक्षासंस्था में जानेवाला था।

याद आता है – उन पांच दिनों में सभी प्रकार का काफ़ी काम सम्पन्न किया गया और काफ़ी काम का श्रीगणेश किया गया। बोरोवोय, जो बड़ी तेज़ी के साथ ऐसे आरामदेह टट्टीघर बना चुका था, जिन में बाहर से सर्द हवा न घुसने पाए, अब अपने दस्ते के साथ अन्य विविध प्रकार के घर बना रहा था, जैसे तहखाने, स्कूल, रिहाइशी कमरे और पौधा घर। बिजली के तीन कारीगर बिजलीघर को ठीक करने में जुटे थे। अन्य तीन धरती के नीचे की खोज-बीन कर रहे थे – कारण, पोदवोर्की के निवासियों से पता चला था कि मठ के दिनों में कुरियाज में पानी के पाइप लगे हुए थे, और सचमुच – घंटाघर के ऊपरी तल्ले पर पानी की एक मज़बूत टंकी का पता लगा, और धरती के भीतर छिपे पाइपों को भी हम खोज निकालने में सफल हुए।

कुरियाज का अहाता तख़्तों, छेप्टियों और कुन्दों से छितरा तथा खाइयों से खिंचा था – पुनर्स्थापन काल अपने पूरे उभार पर था।

कुरियाजवासियों की सफ़ाई-धुलाई सम्बन्धी स्थिति सुधारने की दिशा में उन दिनों हम बहुत ही कम आगे बढ़े, और सच पूछो तो हम ख़ुद भी बिरले ही अपने आपको पखार पाते थे। तड़के सुबह, डोलचियां लिए शेलापूतिन और सोलोवियोव पहाड़ी के तल में 'चमत्कारी' झरने की दिशा में रवाना होते। लेकिन इससे पहले कि वापसी में गहरे ढलवान पर चढ़ पाते – वे लड़खड़ा जाते और क़ीमती पानी को छलकाते हुए – अपने विविध मोर्चों की ओर – काम की जगहों की ओर – लपकते होते। लड़के खेतों में पहुंच जाते, और पानी पायनियरों के ऊमस भरे कमरे में बेकार रखा गर्म हो जाता। कुछ अन्य क्षेत्रों में – सफ़ाई के निकट सीमावर्ती क्षेत्रों में – स्थिति इससे कुछ अच्छी नहीं थी। वान्या ज़ाइचेन्को के दसवें दस्ते ने जो समूचे हृदय से हमारी ओर आ गया था, बिना नाममात्र की भी सूचना दिए और बिना किसी आदेश-निर्देश के – हमारे कमरे में अधिकार जमा लिया। वहां वे अपने कम्बलों में, फ़र्श पर सोते थे। और बावजूद इसके कि इस दस्ते के लड़के प्रसन्न और आह्लादपूर्ण थे, अपने साथ-साथ जुओं की कई पीढ़ियां भी हमारे कमरे में ले आए थे।

सार्वभौम शिक्षाशास्त्र की दृष्टि से, हो सकता है कि इसे कोई बहुत दुर्भाग्य न कहा जाए, लेकिन लिदोच्का और येकातेरिना ने हमसे

गुहार की कि जब तक अत्यन्त आवश्यक न हो, हम उनके कमरे को पवित्र करने की कृपा न करें, और अगर करें भी तो उनके फ़र्नीचर को इस्तेमाल न करें, उनकी मेज़ों, बिस्तरों तथा अन्य ग्रहणशील पदार्थों के पास न जाएं। मेरे लिए यह कहना कठिन है कि किस प्रकार वे अपने आपको और अपने सामान को गन्दगी और जुओं से बचाए रख सकीं और हमसे इस तरह क्यों पेश आती रहीं। हमारे कोमसोमोल संगठन द्वारा ख़ास तौर से तैयार की गई योजना के अनुसार, वे दिन-भर कोलोनीवासियों के शयनागारों में बितातीं और कुरियाज जीवन की जांच-पड़ताल करती थीं।

कोलोनी की सभी इमारतों की पूर्णतया पुनर्व्यवस्था करने का मेरा इरादा था। भूतपूर्व वासालय के लम्बे कमरों को जिन्हें कुरियाजवासी स्कूल कहते थे, मैंने शयनागार बनाने का निश्चय किया था, और पूरे चार सौ कोलोनीवासियों को अकेले इस इमारत में रखने का मेरा इरादा था। स्कूली साज-सज्जा के अवशेषों को यहां से साफ़ करने और पलास्टरसाज़ों, बढ़इयों, रंगसाज़ों और शीशे लगानेवालों से इसे भरने में देर नहीं लगी। स्कूल के लिए मैंने उस दरवाज़ेविहीन इमारत को स्थिर किया जिसमें 'पहला समूह' आबाद था। लेकिन, कहने की आवश्यकता नहीं, इसकी मरम्मत करने का सवाल ही नहीं उठता था जब तक कि कुरियाजवासी इस में अपना पड़ाव डाले हुए थे।

हां, क्रियाशीलता की कोई कमी नहीं थी, लेकिन यह शैक्षणिक क्रियाशीलता नहीं थी। कोलोनी में एक भी कोना ऐसा नहीं था जहां लोग काम नहीं कर रहे थे। हर चीज़ मरम्मत, चिकनाए जाने, रंग-रोग़न और पखारे जाने के क्रम में थी। हम अपना भोजन तक अहाते में करते थे – दीवारों पर अंकित पुरुष तथा नारी सन्तों के चेहरों को रंगने का काम दृढ़ता के साथ शुरू किया जा रहा था। पुनर्स्थापन की लहर ने केवल शयनागारों को अभी तक नहीं पखारा था।

इनमें पहले की भांति कुरियाजवासी सोते थे, लेटकर अपने भोजन पचाते थे, जुओं को पालते-पोसते थे, एक-दूसरे की चीज़ों पर हाथ साफ़ करते थे। मेरे तथा मेरी गतिशीलता के बारे में, अपने अन्तरतम में, गुह्य विचारों की रचना करते थे। मैंने वहां जाना छोड़ दिया था, छठे कुरियाज समूहों के आन्तरिक जीवन में आम तौर से दिलचस्पी

लेना बन्द कर दिया था। कुरियाजवासियों के साथ हमारे सम्बन्ध की विधि सुस्पष्टता और कड़ाई के साथ निर्धारित थी – भोजन का कमरा सुबह के सात बजे, दोपहर के बारह और शाम के छः बजे खुलता था। हमारे लड़कों में से एक घंटी बजाता था। कुरियाजवासी खाने के लिए निकलने लगते थे। फिर स्पष्ट ही, अलसाहट दिखाना उनके लिए फ़ायदेमंद नहीं था। यह केवल इसलिए नहीं कि भोजन का कमरा एक निश्चित समय पर बन्द हो जाता था, बल्कि इसलिए भी कि जो जल्दी आ जाते थे वे न केवल अपने ही, बल्कि देर से आनेवाले अपने साथियों के हिस्सों को भी हड़प जाने का तरीक़ा जानते थे। देर से आनेवाले मुझे, रसोई-घर के कर्मचारियों और सोवियत शासन को कोसते, लेकिन इससे ज़्यादा ज़ोरदार क़दम उठाने से हिचकते। कारण, हमारे भोजन-केन्द्र का कमांडर मिशा ओवचारेन्को था।

अव्यक्त कुत्सित आनन्द के साथ मैं देखता कि भोजन के कमरे की ओर सुगमता से जाना और भोजन करने के बाद लौटना अब कुरियाजवासियों के लिए कितना कठिन हो गया था। कारण, लकड़ी के लट्ठे, खाइयां, दो हत्थेवाले आरे, ऊपर उठी हुई कुल्हाड़ियां, अर्द्धतरल गारे के गढ़े, चूने के ढेर, और.. ख़ुद उनकी आत्माएं – अब उनकी राह में आड़े आती थीं। तमाम चिन्हों से साफ़ पता चलता था कि उनके अन्तर दुःखान्त नाटकों के रंगमंच बने हुए हैं। नाटक भी ऐसे-वैसे नहीं, वास्तविक शेक्सपीरियन। 'जिएं या मरें ..' इस कांटे पर उनका जीवन झूल रहा था।

वे छोटे-छोटे दलों में इधर-उधर – जहां काम हो रहा होता – खड़े होते, और फिर, कंधों के ऊपर से छिपी नज़र से अपने साथियों की ओर देखते। अपराधी तथा विचारपूर्ण डगों से शयनागारों की ओर चल देते। लेकिन शयनागारों में अब ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो उनके मन को रमा पाती – यहां तक कि चोरी करने के लिए भी अब कोई चीज़ वहां बाक़ी नहीं रही थी। वे फिर बाहर निकल आते, उस जगह के निकट पहुंचने के लिए जहां काम हो रहा था। सफ़ेद झंडी दिखाने, और भी कुछ नहीं तो कम-से-कम किसी एक चीज़ को यहाँ से उठाकर वहां तक ले जाने में उन्हें शर्म मालूम होती थी। लगता था कि ऐसा करने से अपने साथियों की नज़रों में उनका मान गिर

जाएगा। गोर्कीआइट तेज़ नौकाओं की भांति उनके पास से सरसरा जाते, किसी भी और प्रत्येक बाधा को उछलकर लांघने के लिए कमर कसे हुए। कुरियाजवासी उनकी इस उद्देश्यपरकता से अभिभूत फिर हैमलेट या कोरियोलानस का चोला धारण करते। उनकी स्थिति शायद और भी ज़्यादा दु:खद थी। कारण, हैमलेट से किसी ने भी कभी आवेग-पूर्ण शब्दों में चिल्लाकर यह नहीं कहा था: "हट जाओ रास्ते से! भोजन में अभी दो घंटे की देर है!"

और उतने ही अनुचित कुत्सित आनन्द के साथ मैं देखता कि गोर्कीआइटों का नाम लेने पर कुरियाजवासियों के हृदय किस प्रकार धक से रह जाते हैं। अग्रिम मिश्रित दस्ते के सदस्यों के मुंह से जब-तब ऐसे उद्‌गार प्रकट होते जिन्हें यदि वे किसी शिक्षक-कालेज के स्नातक होते तो कभी नहीं प्रगट करते।

"ज़रा ठहरो! हमारा दल-बल भी अब आने ही वाला है। तब तुम्हें पता चल जाएगा कि दूसरों के बूते जीने का क्या मतलब होता है .."

वयस्क तथा अधिक नि:संकोच कुरियाजवासियों में से कुछ आसन्न घटनाओं के महत्त्व पर सन्देह करने का साहस करते और व्यंग्य का पुट लिए हुए पूछते: "तो इससे क्या? यह ऐसी कौन भयानक बात है?"

देनिस कुदलाती इस तरह के सवाल का जवाब देता

"तो तुम यह जानना चाहते हो? ओ-हो! वे तुम्हारा हुलिया इतना संवार देंगे कि तुम्हारी ख़ुद अपनी मां भी तुम्हें नहीं पहचान पाएगी।"

मिशा ओवचारेन्को धुंधली तथा अस्पष्ट बातों का शौक़ीन नहीं था और वह अधिक सटीक रूप में अपने आपको व्यक्त करता:

"कितने हो तुम कामचोर लोग – दो सौ अस्सी! बस, उतने ही मार पड़ने के चिन्ह नज़र आएंगे! ओह, देखने लायक़ होंगे तुम्हारे चौखटे उस समय! एकदम भयानक!"

ख़ोवराख़ भी इस तरह के शब्दों को सुनता और अपने दांतों के बीच से बोलता।

"मार के चिन्ह ... यह गोर्की कोलोनी नहीं है, तुम्हें ख़ारकोव से लोहा लेना पड़ेगा!"

मिशा इस बात को इतना महत्त्व देता कि क्षण-भर के लिए अपना काम रोक देता और मृदु आवाज़ में कहता :

"भले आदमी! भला, यह क्या कहा तुमने? गोर्की कोलोनी नहीं, बल्कि खारकोव ... लेकिन, मेरे मुनुआ, यह तो बताओ कि तुम्हें बेकार कोई क्यों रखेगा? खुद अपने से ही पूछो – कौन तुम्हारे लिए सिरदर्द मोल लेगा?"

मिशा फिर अपने काम की ओर रुख़ करता और फिर अपने औज़ार को अपने हाथ में चौकस थामता।

"तुम्हारा नाम क्या है?" वह कहना जारी रखता।

ख़ोवराख़ चकित हो चौंकता।

"क्या?"

"है क्या तुम्हारा नाम? सूस्लिकोव*? या हो सकता है कि योजिकोव**?"

ख़ोवराख़ सकपकाहट और चिढ़ से लाल हो जाता।

"तुम्हें इससे क्या वास्ता?"

"अपना नाम भी नहीं जानते?"

"ख़ोवराख़ है ..."

"ओ-ओ-ह, ख़ोवराख़ ... ठीक, यही नाम है! मैं तो एकदम भूल ही गया था। मैं भी तो कहूं कि लाल बालोंवाला कौन है जो यहाँ मंडराता रहता है और किसी काम का नहीं। अब, तुम्ही देखो, अगर तुम काम करते होते तो कभी इस काम से और कभी उस काम से रह-रहकर तुम्हें पुकारना पड़ता – 'ख़ोवराख़, ज़रा मुझे वह देना! ख़ोवराख़, क्या तुम अभी तक तैयार नहीं हुए? ज़रा इसे तो थामो, ख़ोवराख़, भाई!' लेकिन अब जैसा है, निस्संदेह तुम्हें कोई याद रखे भी तो कैसे ... हां, तो जाओ घूमने-फिरने! यह देखो, इस पीते की मैं मरम्मत कर रहा हूं। वे अब शोरबा, चाय और धोने-मांजने का पानी, सब एक ही बरतन में लाते हैं। फिर तुम्हें खाना देना ज़रूरी है। अगर तुम्हें न खिलाया जाए तो, तुम जानो, तुम भी

---

* 'सुस्लिक' का मतलब रूसी में 'स्तेपी मूष' होता है। सं०

** 'योजिक' का मतलब रूसी में 'कांटा – चूहा' होता है। सं०

बोल जाओगे और इसके बाद सड़ोगे। यह कुछ अच्छा नहीं लगता। तुम्हारे लिए फिर एक ताबूत बनाना पड़ेगा – काम पर फिर काम ..."

ख़ोवराख़ अन्त में मिशा से जैसे-तैसे पीछा छुड़ाता और वहां से खिसक जाता। मिशा मृदु आवाज़ में उससे कहता :

"जाओ, ताज़ी हवा में थोड़ा सांस ले आओ ... इससे तुम्हें लाभ होगा, बहुत-बहुत लाभ होगा!"

मालूम नहीं कि ख़ोवराख़ तथा कुरियाज के तमाम रईसों को ताज़ी हवा के लाभों में विश्वास है या नहीं। जो हो, इधर उन्होंने आंखों से ओझल रहना शुरू कर दिया था। लेकिन इस बीच कुरियाज के रईसी ख़ून की शाखा से मैं परिचित हो चुका था। कुल मिलाकर ये लोग कुछ इतने बुरे नहीं थे। आख़िर इतना तो था ही कि उनमें से प्रत्येक का एक अपना व्यक्तित्व था। यह एक ऐसी चीज़ थी जो मुझे सदा अच्छी लगती थी। पेरेत्स मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द था। यह सच है कि अकड़ के साथ वह इधर से उधर मंडराता, अपने आगे के बालों को ठीक भौंहों तक साधे रहता, एक आंख के ऊपर अपनी टोपी को झुकाए रहता, केवल निचले होंठ से अपनी सिगरेट को थामे रहता और बड़ी दक्षता के साथ थूक की पिचकारी छोड़ता। लेकिन मैं देख सकता था कि चेचक के दाग़ से भरा उसका चेहरा मेरे प्रति कौतूहल धारण किए रहता – एक चपल और चतुर लड़के का कौतूहल।

एक सांझ मैं उनकी मण्डली में जा पहुंचा। उस समय वे सब उन पत्थरों पर बैठे थे जिनसे सुअरों के लिए धूपघर बनाया जानेवाला था। वे लापरवाही के साथ बतिया और धूम्रपान कर रहे थे। मैं उनके सामने जाकर रुक गया और समाचार-पत्र के काग़ज़ में तम्बाकू लपेटकर अपने लिए एक सिगरेट बनाने लगा। उसके बाद मैंने उनसे सिगरेट सुलगाने के लिए कहना चाहा। पेरेत्स ने मगन और मित्रतापूर्ण भाव से मेरी ओर देखते हुए ज़ोरों से कहा :

"आप इतनी मेहनत करते हैं, साथी संचालक, लेकिन यह घटिया सिगरेट आपको पीनी पड़ती है। क्या सोवियत सरकार आप के लिए भी अच्छी सिगरेट नहीं बना सकती?"

मैं पेरेत्स के पास पहुंचा, उसके हाथ के ऊपर झुकते हुए अपनी सिगरेट को मैंने सुलगाया। इसके बाद मैंने उससे उतने ही मगन भाव

से और अपनी आवाज़ में अधिकारत्व का एक न मालूम-सा डोरा छोड़ते हुए ज़ोर से कहा

"हां, अपनी यह टोपी तो उतारो!"

पेरेत्स की आंखों की मुसकान आश्चर्य में परिवर्तित हो गई, लेकिन उसके होंठ पूर्ववत मुसकराते रहे।

"क्यों, क्या बात है?"

"अपनी टोपी उतारो – सुनते नहीं क्या?"

"अच्छा, उतार लूंगा..."

उसके माथे की लट को मैंने अपने हाथ से पीछे की ओर धकेला, नज़र गड़ाकर उसके थोड़ा भयभीत चेहरे में मैंने देखा और कहा:

"ठीक..."

पेरेत्स ने सिर उठाकर स्थिर नज़र से मेरी ओर देखा, लेकिन मैंने दो-चार कश छोड़े, मुड़ा और बढ़इयों की ओर चल दिया।

उस समय अपने शैक्षणिक दायित्व का मैं भरपूर अनुभव कर रहा था। शब्दशः अपनी प्रत्येक हरकत में जो मैं करता था और अपनी साज़-सज्जा तथा रूप-रेखा की प्रत्येक बारीकी में – अपनी पेटी की न मालूम-सी दमक तक में – मैं उसका ध्यान रखता था। मैं इसपर तुला था कि ये लड़के मुझे पसन्द करें। बरबस अपनी ओर खींचनेवाली सहानुभूति से मैं उनके हृदयों को छूना चाहता था। उसके साथ-साथ यह भी मैं उनके हृदयों की गहराई में अनुभव करा देना चाहता था कि उनकी सहानुभूति की मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं कि वे मुझसे नाराज़ हो सकते थे, कि वे मुझे कोस सकते थे, अपने दांतों को पीस सकते थे, लेकिन मेरे लिए इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ सकता था।

बढ़इयों का काम ख़त्म हो चला था, और बोरोवोय ने पूरी लगन के साथ घटिया तेल की निस्बत बढ़िया तेल की श्रेष्ठता पर तुलनात्मक सम्भाषण करना शुरू कर दिया था। इस नयी समस्या ने इतनी गहरी दिलचस्पी मुझमें जगाई कि मैं यह तक नहीं जान सका कि पीछे से कोई मेरी आस्तीन खींच रहा है। एक झटका और लगा। मैंने घूमकर देखा। पेरेत्स मेरी ओर देख रहा था।

"हां तो?"

'सुनिये – आपने किस लिए उस तरह मेरी ओर देखा था?"

"किसी ख़ास वजह से नहीं ... हां तो बोरोवोय, तुम तो जानते हो हमें सही क़िस्म का तेल लाना होगा "

बोरोवोय ने प्रसन्नता के साथ सही क़िस्म के तेल पर अपना सम्भाषण जारी रखा। मैंने देखा कि पेरेत्स गुस्से के साथ उसकी ओर देख रहा है और उसका सम्भाषण ख़त्म होने की प्रतीक्षा कर रहा है। आख़िर बोरोवोय ने भारी खटर-पटर के साथ अपना बक्सा उठाया, और हम घंटे की बुर्जी की ओर चले। पेरेत्स भी हमारे साथ हो लिया, अपने ऊपरवाले होंठ को नोचते हुए। बोरोवोय नीचे अपने गांव की ओर चला गया और मैं अपने हाथ को कमर के पीछे किए हुए पेरेत्स की ओर उन्मुख हुआ।

"तुम क्या चाहते हो?"

"आपने क्यों मेरी ओर देखा? मुझे जवाब दीजिये।"

"क्या तुम्हारा नाम पेरेत्स है?"

"आ-हुम!"

"और तुम्हारा पहला नाम – स्तेपान?"

"आपने कैसे जाना?"

"और तुम स्वेंदलोवस्क के रहनेवाले हो न?"

"हां ... आपने कैसे जाना कि मैं वहां का रहनेवाला हूं?"

"मैं हर चीज़ जानता हूं। मैं जानता हूं कि तुम चोरी और फ़साद करते हो, केवल एक बात मैं नहीं जानता था – यह कि तुम मूर्ख हो, अथवा चतुर।"

"हां तो?"

"तुम्हारा सिगरेटों के बारे में वह सवाल मूर्खतापूर्ण था ... इतना मूर्खतापूर्ण जितना कि वह हो सकता था। मुझे दुःख है अगर तुम्हें चोट पहुंची ..."

सांझ के धुंधलके में भी मैं देख सकता था कि पेरेत्स शर्म से कितना लाल हो उठा था, किस प्रकार रक्त उसकी कनपटियों में दौड़ रहा था, कितना वह गरमा गया था ... उसने अपने पांव का भार बदला और पीछे की ओर देखा।

"सो ठीक है। यह दुःख करने की बात नहीं लेकिन उसमें ऐसी क्या मूर्खता थी?"

"यह बिलकुल साफ़ है। तुम जानते हो कि मुझे बहुत काम करना पड़ता है। शहर जाकर सिगरेट ख़रीदने के लिए मेरे पास समय नहीं है। यह तुम जानते हो। और मेरे पास समय नहीं है, इसलिए कि सोवियत शासन ने मुझे एक काम सौंपा है—तुम्हारे जीवन को अच्छा तथा सुखी बनाने का काम, समझ रहे हो न—तुम्हारे जीवन को। शायद तुम नहीं समझ रहे? तब जाओ और अपने बिस्तरे पर लम्बी तानो!"

"मैं समझ रहा हूं," पेरेत्स ने अपने जूते की नोक से धरती को कुरेदते हुए भारी आवाज़ में कहा।

"सचमुच?"

घृणा के साथ मैंने उसकी आंखों में—ठीक उसकी पुतलियों के मध्य देखा... कि किस प्रकार मेरा भाव और मेरी इच्छाशक्ति उसकी पुतलियों में गहरे पैठती जा रही है। पेरेत्स ने अपना सिर झुका लिया।

"तुम समझ रहे हो, कद्दू की औलाद, और फिर भी तुम सोवियत शासन में छेद निकालते हो। तुम मूर्ख हो—असली मूर्ख!"

मैं पायनियरों के कमरे की ओर मुड़ा। पेरेत्स ने अपनी फैली हुई बांह से मेरा रास्ता रोका।

"ठीक, बिलकुल ठीक, कह दीजिये कि मैं मूर्ख हूं... लेकिन इससे क्या?"

"इससे यह कि मैंने तुम्हारे चेहरे पर एक नज़र डाली। मैं यह जानना चाहता था कि वास्तव में तुम मूर्ख हो या नहीं।"

"और आपने जान लिया?"

"हां।"

"सो क्या?"

"जाओ और जाकर आईने में ख़ुद अपने चेहरे पर एक नज़र डालकर देखो।"

पेरेत्स के मन की अगली प्रतिक्रियाओं पर ध्यान दिए बिना मैं अपने डेरे पर लौट आया।

कुरियाजवासियों के चेहरों से अब मैं अधिक परिचित हो चुका था, और उन परिवर्तनों को पहचान सकता था जो उनकी मुख-मुद्राओं में होते जा रहे थे। उनमें से कितने ही उन्मुक्त सहानुभूति से मेरी

ओर देखते थे। उनके चेहरे आनन्दपूर्ण मुस्कान से खिल जाते, एक ऐसी मुस्कान से जो केवल लावारिस जीवों के चेहरों पर ही दिखाई देती है – निश्छलता और व्यग्रता का पुट लिए हुए। उनमें से कितनों के ही नामों से भी मैं अब परिचित था, और कुछ की तो आवाज़ों से ही मैं उन्हें पहचान सकता था।

चिपटी नाक और गुलाबी गालोंवाला ज़ोरेन जिसकी आंखों के इर्द-गिर्द पेशियों की मृदु थिरकन को युगों की धूल और मैल की परत भी छिपा सकने में असमर्थ थी, अक्सर राह में टकरा जाता। वह लगभग तेरह वर्ष का था, हाथों को हमेशा अपनी कमर के पीछे रखता था, कम बोलता था, लेकिन निरन्तर मुसकराता रहता था। वह एक प्रियदर्शी नन्हा-मुन्ना लड़का था। अपनी काली टेढ़ी बरौनियों से सज्जित आंखों को धीरे-धीरे उठाता। भीतर की जाने किस गहराई में से चमक की एक रेखा उसकी काली आंखों पर तिर आती, अपने सिर को वह पीछे की ओर धीरे-से फेंकता, मुंह से एक शब्द न कहता और मुस्कराता रहता।

"कुछ तो कहो, ज़ोरेन," मैं उससे मनुहार करता। "यह जानने के लिए मैं ललक रहा हूँ कि तुम्हारी आवाज़ कैसी लगती है।"

वह लाल रंग जाता, मुड़ता, आहत होते और एक सुदीर्घ फुसफुसाहट छोड़ते हुए कहता.

"हां-आं-आं-आं – तो ..."

ज़ोरेन का एक मित्र था – गुलाबी गोल-मटोल चेहरा, उतना ही प्रियदर्शी जितना कि वह ख़ुद, मित्का निसिनोव – भले स्वभाव का एक निश्छल जीव। पुराने निज़ाम में ऐसे जीव मोचियों के चेले और कहवाख़ानों के छोकरे बनते थे। मैं उसे देखता और सोचता: "मित्का, मित्का, अब तुम क्या बनोगे? सोवियत धरातल में कौनसा नया आकार तुम ग्रहण करोगे?"

मित्का भी लाल होकर मुंह फेर लेता। लेकिन वह अधमरी फुसफुसाहट नहीं छोड़ता था – बस, अपनी सीधी-सतर काली भौंहों में बल डालता, और होंठों को बुदबुदाता। लेकिन मित्का की आवाज़ से मैं परिचित था – स्त्रियों जैसी गहरी मन्द आवाज़ – सुन्दर, ख़ूब संवरी हुई, और इतराहट भरी स्त्रियों की भांति लहरियों में थिरकती और

कोयल की भांति आकस्मिकता के साथ कूकती हुई। मित्का जब कुरियाज के निवासियों के बारे में मुझसे बातें करता तो उसकी इस आवाज़ को मैं मुग्ध भाव से सुनता रहता।

"वह देखो उधर... वह जो दौड़ रहा है... ओह, कम्बख़्त, जाने कहां लपका जा रहा है? वोलोद्या, देखो, अरे देखो – वह बुरियाक है... क्या? आप बुरियाक को नहीं जानते? वह एक बार में तीस गिलास दूध गटक सकता है। वह गौशाला की ओर गया है.. और वह... वह चूहा है... वह जो खिड़की से बाहर झांक रहा है... ओह वह चूहा है! एकदम ख़ुशामदी-बच्चा... ओह, आप सोच तक नहीं सकते... इतना चिकना-चुपड़ा जितना कि तेल। शर्त बद लो, वह आपको भी न बख़्शता होगा!"

"यह वान्का ज़ाइचेन्को है," ज़ोरेन ने कहा, आहत भाव से अपना मुंह फेरते और अचानक .. लाल रंगते हुए।

मित्का एक चतुर जीव है। वह लज्जित है कि ज़ोरेन यह सब कह बैठा। उसकी नज़र अपने मित्र की इस अव्यवहारिकता के लिए माफ़ी-सी मांगती मालूम होती है।

"नहीं!" वह कहता है। "मेरा मतलब वान्का से नहीं है! उसकी एक अपनी लाइन है.."

"क्या है उसकी यह लाइन?"

"उसकी लाइन.. "

मित्का अपने पैर के अंगूठे से धरती में कुछ खींचने लगता है।

"बोलो, बताओ न!"

"बताने को उसमें है क्या? वान्का जब से कोलोनी में आया, उसने अपनी एक टोली बटोरनी शुरू कर दी। क्यों, ठीक है न, वोलोद्या? हां तो, उन को भी पीटकर रख दिया गया। लेकिन फिर भी उनकी एक लाइन थी..."

निसिनोव के इस गहन दर्शन को मैं पूर्णतया समझता था – एक ऐसा दर्शन जिसकी 'हमारे धुरंधरों ने सपने में भी कभी कल्पना नहीं की होगी'।

लाल गालोंवाले लड़कों की यहां कमी नहीं थी। इनमें कुछ देखने में सुन्दर थे। कुछ उतने सुन्दर नहीं थे – ऐसे जिन्हें अपनी लाइन का

धनी होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं था। चौकस और अभी तक वैमनस्य में डूबे चेहरों के बीच, अधिकाधिक परिमाण में, ऐसे बच्चों को मैंने देखना शुरू किया जिनका जीवन दूसरों द्वारा निर्धारित लाइनों पर घिसट रहा था। पुराने दिनों का यह एक पूर्णतया प्रकृत दृश्य था – तथाकथित आश्रित जीवन।

ज़ोरेन और निसिनोव, तीक्ष्ण और भबरीला सोबचेन्को, उदास और गम्भीर वास्या गर्दीनोव, सांवले चेहरेवाला कोमल सेर्गेई ख़्राब्रेन्को – उदास भाव से मुसकराते हुए मेरे इर्द-गिर्द रहते, अपनी भौंहों को सिकोड़ते, लेकिन सीधे मेरे पक्ष में आने में वे असमर्थ थे। वान्या ज़ाइचेन्को और उसकी चौकड़ी को तीखे रश्क की नज़र से वे देखते। नये जीवन की दिशा में उनकी साहसपूर्ण उड़ानों का उदासी के साथ अनुसरण करते। ख़ुद उनका जहां तक सम्बन्ध था, वे केवल बाट जोह सकते थे ...

हर कोई बाट देख रहा था। यह इतना साफ़ और सहज ही समझ में आ जाता था। वे गोर्कीआइटों के आगमन की बाट देख रहे थे – जो उन्हें इतने रहस्यात्मक ढंग से अपार्थिव, इतने अनबूझ और इतने पकड़ में न आनेवाले आकर्षक मालूम होते थे। हर घड़ी वह क्षण निकट आता जाता था जो, कौन जाने, आह्लाद वाहक होगा अथवा विपत्ति का। यहां तक कि लड़कियों में भी प्रत्येक दिन नवीनता और आह्लाद को लेकर अवतरित होता था। ओल्या लापोवा ने अपने छठे दस्ते को एकजुट कर लिया था। शक्ति और स्फूर्ति जैसे उनमें उमड़ी पड़ती थी। उनका शयनागार क्रियाशीलता से गूंजता – बनाना-सुधारना, धोना, सफ़ेदी करना, यहां तक कि संध्या को गाना भी। गुल्यायेवा, हर घड़ी व्यस्तता से छलछलाती, दौड़ती हुई बार-बार भीतर जाती और अपने मुड़े-तुड़े ब्लाउज़ को मेरी नज़रों से छिपाने का प्रयास करती। कुदलाती अक्सर शाम को वहां जाता, और खुले तौर से संरक्षणात्मक भावना के साथ उनमें दिलचस्पी लेता। लेकिन छठा दस्ता बाहर खेतों में न जाता, इस डर से कि कुरियाज परम्पराओं का इस प्रकार अनादर करने का विस्फोट कहीं उन्हें ज़मींदोज़ न कर दे।

कोरोत्कोव भी इन्तज़ार कर रहा था। कुरियाज परम्परा की वह मुख्य धुरी था। वह एक शानदार कूटनीतिज्ञ था। शब्द, कृत्य या

तौर-तर्ज़ से वह कभी अपने आपको पकड़ में नहीं आने देता था। उसे अन्य सबकी निस्बत कुछ ज़्यादा दोषी नहीं ठहराया जा सकता – बस, इतना ही कि वह काम करने नहीं जाता था, और कुछ नहीं। अग्रिम मिश्रित उससे खार खाए था। वे उससे नफ़रत करते थे, और बिना किसी संदेह के वे पक्का विश्वास करते थे कि कोरोत्कोव कुरियाज में उनका प्रमुख शत्रु था।

आगे चलकर मुझे मालूम हुआ कि वोलोखोव, गोर्कोवस्की और जोर्का वोल्कोव ने एक छोटी-सी सभा द्वारा इस स्थिति का अन्त करने का प्रयास किया था। रात को तालाब के किनारे बातचीत के लिए उन्होंने कोरोत्कोव को बुलाया और उसके सामने सुझाव रखा कि वह कोलोनी का पीछा छोड़े, जहां जी चाहे चला जाए। लेकिन कोरोत्कोव ने इस सुझाव को ठुकरा दिया। कहा: "फिलहाल मेरे कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। मैं जहां हूं, वहीं रहूंगा।"

और सभा ने मामले को जहां का तहां छोड़ दिया। कोरोत्कोव मुझसे कभी बात नहीं करता था और मेरे व्यक्तित्व में किसी तरह की कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता था। जब कभी हम राह में टकरा जाते, शिष्टता के साथ वह अपनी झलबेली, हल्के रंग की टोपी को उठाता, सौहार्दपूर्ण आवाज़ में अभिवादन करता:

"नमस्ते, साथी संचालक!"

उसका खूबसूरत चेहरा, कमनीय बरौनियों से सजी उसकी काली आंखें, शालीनता के साथ मेरी ओर उन्मुख होतीं, बिना किसी सन्देह के जैसे इन अनकहे शब्दों को सूचित करती प्रतीत होतीं:

"आप जानो, हमें एक दूसरे की राह में नहीं आना चाहिए। आप अपनी राह पर जमे रहिये और मैं अपनी पर। सादर अभिवादन, साथी संचालक!"

लेकिन पेरेत्स से सांझ के समय मेरी उस बातचीत के अगले दिन नाश्ते के दौरान रसोई की खिड़की पर कोरोत्कोव मुझसे मिला, मेरे कुछ कहने पर शिष्टता के साथ एक ओर हट गया और इसके बाद अचानक मुझे संबोधित करते हुए गम्भीरता से बोला:

"माफ़ करना, साथी संचालक, क्या गोर्की कोलोनी में हवालात है?"

"नहीं कोई हवालात नहीं है।" समान गम्भीरता के साथ मैंने जवाब दिया।

और मेरी ओर इस तरह देखते हुए जैसे मैं कोई नुमाइशी चीज़ हूं, वह शान्त भाव से कहता गया :

"लेकिन कहते हैं कि आप लड़कों को गिरफ़्तारी में रखते हैं।"

"तुम्हें ख़ुद अपने लिए कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए," रुखाई के साथ मैंने उसे आश्वस्त किया। "मैं केवल अपने मित्रों को गिरफ़्तार करता हूं।" और उसके चेहरे के सूक्ष्म उतार-चढ़ावों में और अधिक दिलचस्पी न दिखाते हुए मैं तुरन्त दूसरी ओर मुड़ गया।

पन्द्रह मई को मुझे एक तार मिला :

"कल शाम को सब गाड़ी से रवाना हो रहे हैं। लापोत।"

ब्यालू के समय मैंने तार के मज़मून का एलान किया और साथ में कहा :

"परसों हम अपने साथियों से भेंट करेंगे। मैं अत्यन्त चिन्तित हूं, बेहद चिन्तित हूं, कि मित्र के रूप में हमें उनसे मिलना चाहिए। देखो न, सबको साथ मिलकर ही अब रहना ... और काम करना है।"

लड़कियां अचानक चुप हो गईं, तूफ़ान से पहले पक्षियों की भांति। कितने ही लड़कों ने, तिरछी नज़रों से, अपने साथियों के चेहरों की ओर देखा, कुछ चेहरों मुंह का भट्टा काफ़ी खुला था, और पूरे एक सेकंड तक वैसे ही खुला रहा।

खिड़की के पासवाले कोने में, जहां मेज़ के इर्द-गिर्द बेंच नहीं थे, बल्कि कुर्सियां लगी थीं, कोरोत्कोव और उसके मित्र अचानक असाधारण रूप से मगन हो उठे, ज़ोरों से हंसते और प्रत्यक्षतः हास-परिहास का आदान-प्रदान करते हुए।

उसी रात गोर्कीआइटों के स्वागत की रूप-रेखा के बारे में अग्रिम मिश्रित ने बहस का आयोजन किया और कोमसोमोल संगठन द्वारा जारी की गई विशिष्ट घोषणा के प्रत्येक नुक़ते पर विचार किया गया। कुदलाती का हाथ सामान्य से अधिक बार उसकी खोपड़ी के पिछले भाग की ओर यात्रा कर रहा था।

"आप जानो, बड़ी शर्म मालूम होती है यह सोचकर कि साथी यहां आ रहे हैं!"

दरवाज़ा धीरे से खुला, और जोर्का वोल्कोव ने कठिनाई से भीतर प्रवेश किया। मेज़ों का सहारा लेते हुए वह बेंच पर बैठा, एक आंख से उसने हमारी ओर देखा जो सूजे हुए मांस के बीच एक अटपटी फांकमात्र मालूम होती थी।

"यह क्या?"

"उन्होंने मुझे मारा," जोर्का फुसफुसाया।

"किन्होंने मारा?"

"भगवान जाने। कोई गांववाले होंगे... मैं स्टेशन से लौट रहा था... चौराहे पर... मुझे मिले, और मुझे मारा..."

"ज़रा रुको!" वोलोख़ोव चिल्लाया। "तुम्हें मारा! तुम्हारा भुर्ता बना दिया! यह तो हम ख़ुद भी देख सकते हैं... लेकिन हुआ क्या? क्या कुछ कहा-सुनी हुई या क्या हुआ?"

"कोई ख़ास कहा-सुनी नहीं हुई," जोर्का ने उदास मुद्रा के साथ जवाब दिया। "उनमें से एक ने कहा 'ओह, कोमसोमोल!' और इसके बाद उसने मेरे जबड़े पर जड़ दिया।"

"और तुमने क्या किया?"

"निस्संदेह, मैंने भी वही किया, लेकिन वे चार थे।"

"तो क्या तुम उनके चंगुल से छूटकर भाग आए?" वोलोख़ोव ने पूछा।

"नहीं, मैं नहीं छूटा," जोर्का ने जवाब दिया।

"तो फिर, तुमने क्या किया?"

"क्या तुम देखते नहीं? मैं अभी भी चौराहे पर खड़ा हूं।"

लड़के ठहाका मारकर हंस पड़े, लेकिन वोलोख़ोव ने अपने मित्र की वेदनापूर्ण मुस्कान पर नज़र डाली। उसकी नज़र में झिड़की का पुट था।

७. तीन सौ तिहत्तर बी०

सत्रह की सुबह तड़के ही गोर्कीआइटों को लिवाने मैं ल्युबोतिन स्टेशन गया। स्टेशन ख़ारकोव से कोई पच्चीस मील दूर था। दीन-हीन-से अंधियाले स्टेशन पर ऊमस थी। सफ़र से चूर, निढाल और

उदास आकृतियां प्लेटफ़ार्म पर इधर से उधर डोल रही थीं, तेल के दाग़ लगे वेडौल रेलवे-कर्मचारियों के भारी-भरकम बूट चरमर की आवाज़ करते खटपटा रहे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे हर चीज़ मेरी रेशमी पोशाक को, जिसमें अपनी आत्मा को मैं सजाए था, अटपटा सिद्ध करने की साज़िश कर रही थी। लेकिन शायद वह रेशमी नहीं थी – फ़क़त 'एक फ़ौजी टोपी और ख़ाकी वर्दी...'

महान लड़ाई का वह दिन था। कोई वात नहीं, अगर वे वेढव कुली, अकस्मात मुझे धकियाते हुए आगे वढ़ गए और अपने इस कृत्य से भयभीत होना तो दूर रहा, उन्होंने मेरी ओर उलटकर देखा तक नहीं। कोई वात नहीं, अगर छोटे स्टेशन-मास्टर ने काफ़ी सम्मान का भाव मेरे प्रति न दिखाया, वल्कि वस्तुतः सात सौ तिहत्तर वी० गाड़ी का ठौर-ठिकाना पूछने पर, वेअदवी से मेरे साथ पेश आया। ये अदना-से लोग जैसे यह न समझने पर अड़े हुए थे कि तीन सौ तिहत्तर वी० मेरी मुख्य सेनाओं का मूर्त रूप थी, कि वे मार्शल लापोत तथा कोवाल की शानदार सेनाएं थीं, कि उनका स्टेशन ल्युवोतिन आज कुरियाज पर मेरे आक्रमण की छावनी बनने जा रहा था। ऐसे लोगों को मैं यह किस प्रकार समझा सकता था कि जो चीज़ आज दांव पर लगी है वह किसी भी औस्तेरलित्ज़ से अधिक वड़ी और महत्त्वपूर्ण है? ख़ुद नेपोलियन का सूरज भी आज मेरी गरिमा को आच्छादित नहीं कर सकता था। फिर मेरी तुलना में नेपोलियन के लिए युद्ध करना ज़्यादा आसान था। नेपोलियन की कारगुज़ारी तो उस समय देखने लायक़ होती जव वह भी मेरी तरह समाज-शिक्षा की बेड़ियों से जकड़ा होता।

मैं प्लेटफ़ार्म को इधर से उधर, उधर से इधर नाप रहा था, कुरियाज की दिशा में देखता जाता था। तभी मुझे याद आया कि दुश्मन के मनोबल में आज कुछ कमज़ोरी के लक्षण दिखाई दिए थे।

तड़के ही मैं उठा था। लेकिन उस समय भी कोलोनी में हलचल नज़र आती थी। कारण जो हो, पायनियरों के कमरे की खिड़कियों के आस-पास लोगों की एक अच्छी-ख़ासी भीड़ जमा हो रही थी। कुछ लोग अपने डोल-डोलचियों को खड़काते 'चमत्कारी' झरने की ओर जा रहे थे। ज़ोरेन और निसिनोव घंटे के वुर्जों के पास खड़े थे।

"गोर्कीआइट कब आ रहे हैं? आज सुबह?" मित्का ने संजीदगी के साथ पूछा।

"हां। आज तुम बहुत जल्दी उठ गए।"

"आ-हुम ... ऐसे ही कुछ आंख नहीं लगी। क्या वे रिजोव से आ रहे हैं?"

"हां। लेकिन तुम यहीं उनसे भेंट करना।"

"क्या वे जल्दी ही आ जाएंगे?"

"नहाने-धोने का अभी समय है।"

"तो चलो, मित्का!" ज़ोरेन मेरे सुझाव को तुरन्त अमल में उतारने के लिए चल दिया।

मैंने गोरोविच को बताया कि गोर्कीआइटों से मिलने तथा झंडे को सलामी देने के लिए कुरियाजवास्यिों को अहाते में पांतों में खड़ा करे, लेकिन इसके लिए उनपर कोई दबाव न डाले।

"केवल उनसे अनुरोध-भर करे।"

आखिर, ल्युबोतिन स्टेशन के व्यूह में से गार्ड के रूप में एक भली आत्मा प्रकट हुई और उसने घंटी बजाई। जब वह घंटी बजा चुका तो इस लाक्षणिक कृत्य का भेद उसने मुझपर प्रकट किया।

"तीन सौ तिहत्तर बी० ने सिगनल दिया है। बीस मिनट में यहां आ लगेगी।"

लेकिन मिलने की हमारी योजना अप्रत्याशित रूप में जटिल हो गई। लड़कों की खुशी की बाढ़ में सभी कुछ बह चला। तीन सौ तिहत्तर बी० आने से पहले खारकोव से एक लोकल गाड़ी आई। उसके डिब्बों में से कोमसोमोल-रबफ़ाक की ताज़गी से उमगती एक धारा मेरे ऊपर उमड़ पड़ी। बेलूखिन अपने हाथ में फूलों का गुल्दस्ता लिए था।

"यह पांचवें दस्ते को भेंटने के लिए – ठीक जैसे बेगमों को भेंट किए जाते हैं। मेरा जैसा वरिष्ठ आदमी यह कर सकता है।"

भीड़ के बीच सुनहरी बालोंवाली, ओक्साना की आह्लादपूर्ण कूक मैंने पहचानी, और राखिल की शान्त मुसकान की एक झलक मुझे दिखाई दी। ब्रातचेन्को अपनी बांहों को ऐसे लहरा रहा था जैसे वह उनमें चाबुक लिए हो। यूं ही खास किसी को लक्षित न कर चहक रहा था:

"ओ-हो! अब मैं निर्वन्ध कज़्ज़ाक हूं। 'मोलोदेत्स' पर आज मैं ज़ीन कसूंगा!"

तभी कोई दौड़ता हुआ आया। वह चिल्लाकर कह रहा था:

"अरे, गाड़ी को आए तो एक मुद्दत हो गई! दसवें प्लेटफ़ार्म पर खड़ी है..."

"क्या सचमुच?"

"कहता तो हूं, दसवें प्लेटफ़ार्म पर खड़ी है! सच एक मुद्दत से खड़ी है!"

होश चौकस कर देनेवाली इस सूचना के असर से हम अभी उबर भी नहीं पाए थे कि तभी, तीसरे प्लेटफ़ार्म पर खड़े मालगाड़ी के एक डिब्बे के नीचे से चतुर लापोत ने झांका। अपनी घनी पलकों की झिलमिल में से व्यंग्य के साथ वह हमारे दल का पर्यवेक्षण कर रहा था।

"वह देखो!" कराबानोव चहका। "हो न हो, वह डिब्बे के नीचे लापोत रेंग रहा है!"

समूची भीड़ उसकी ओर लपकी। लेकिन वह डिब्बे के नीचे और पीछे खिसक गया, संजीदगी के साथ एलान करते हुए:

"बारी-बारी से! और ध्यान रखना – केवल ओक्साना और राखिल चुम्बन की हक़दार हैं, बाक़ी सब लोग हाथ मिलाकर सन्तोष करें!"

कराबानोव ने टांग खींचकर लापोत को डिब्बे के नीचे से निकाला, इस तरह कि उसकी एड़ी हवा में कौंध गई।

"हां तो, तुम अब चुम्बन ले सकते हो!" धरती पर गिरते और अपना झाइयांदार गाल सामने की ओर करते हुए लापोत ने कहा।

ओक्साना और राखिल ने सचमुच चुम्बन की रस्म अदा की। बाक़ी सब डिब्बों के नीचे लपके।

लापोत ने देर तक मेरा हाथ दबोचा। उसका चेहरा सच्चे, सरल आह्लाद से चमक रहा था – एक ऐसी चीज़ जो उसके लिए असामान्य थी।

"कहो, यात्रा कैसे गुज़री?"

"जैसे मेले की सैर करने जा रहे हों" लापोत ने कहा। "केवल 'मोलोदेत्स' ने शैतानी की। सारी रात गाड़ी में दुलत्तियां झाड़ता

रहा। क़रीब-क़रीब सब चकनाचूर करके रख दिया। यहां और कब तक चिपके रहेंगे? मैंने सबको तैयार होने को कह दिया है। अगर यहां अभी देर तक रुकना हो तो लगे हाथ नहाने-धोने आदि से भी निवृत हो जाएं..."

"तो जाओ और इसका पता लगाओ।"

लापोत स्टेशन की दिशा में दौड़ गया और मैं गाड़ी की ओर लपका। उसमें पैंतालीस डिब्बे थे। उनके चौड़े-खुले दरवाज़ों और ऊपरी खोखलों में से गोर्कीआइटों के सुन्दर चेहरे झांक रहे थे—हंसते हुए, कूकते हुए और अपनी टोपियों को फहराते हुए। गुद पास के एक खोखले में से कसमसाकर कमर तक बाहर निकल आया था। भावावेश में अपनी आंखों को मिचमिचाते हुए बुदबुदा रहा था:

"अन्तोन सेम्योनोविच, प्रिय अन्तोन सेम्योनविच, क्या यह उचित है? नहीं, यह उचित नहीं है। क्या यह जायज़ हैं? नहीं, यह जायज़ नहीं है।"

"नमस्ते गुद, यह क्या बड़बड़ा रहे हो?"

"शैतान कहीं का—वह तुम्हारा लापोत! उसने कहा, सिगनल से पहले अगर किसी ने गाड़ी से बाहर पांव रखा तो उसका सिर क़लम कर दिया जाएगा। बस, जल्दी कीजिये, और अब आप ही कमान संभाल लीजिये। लापोत से तो हम परेशान हैं। भला, लापोत कैसे कमान कर सकता है? वह नहीं कर सकता—नहीं कर सकता है, न?"

लापोत ने जो मेरे पीछे आकर खड़ा हो गया था, स्वेच्छा से गुद के, सूत्र को पकड़ा:

"ज़रा सिगनल से पहले गाड़ी से बाहर निकलने की कोशिश तो करो! ज़रा करो न कोशिश! क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे जैसे पाजियों को लतियाने में मुझे आनन्द आता है? हां तो, आओ बाहर!"

"बाहर आए बिना जैसे मेरी जान थोड़े ही निकली जा रही है!" गुद दयनीय भाव से कहता गया। "मैं यहीं ठीक हूँ, बिलकुल ठीक! यह सिद्धान्त की बात है!"

"अब आ गये रास्ते पर!" लापोत ने कहा। "सिनेन्की को इधर भेजो!"

एक मिनट बाद सिनेन्की का प्यारा, बचकाना चेहरा गुद के कंधे के पीछे से प्रकट हुआ – अपनी चकित उनींदी आंखों को टिमटिमाता हुआ। उसका लचकदार लाल मुंह खुला था।

"अन्तोन सेम्योनोविच ..."

"ऐसे नहीं, मेरे बुद्धू मुनुआ! पहले 'नमस्ते' कहो! क्या सब क़ायदे भूल गए?" गुद ने झिड़की दी।

लेकिन सिनेन्की ने केवल मेरी ओर देखा, उसके गालों का रंग गहराया और सकपकाते हुए वह बुदबुदाया:

"अन्तोन सेम्योनोविच ... यह क्या है? अन्तोन सेम्योनोविच ... नहीं? सचमुच?"

अपनी आंखों को उसने मुट्ठियों से मला और गुद के विरुद्ध अचानक ग़ुस्से से सचमुच विफर पड़ा।

"तुमने कहा था कि मुझे जगा दोगे! तुमने वायदा किया ... तुम कमाण्डर नहीं हो, गुद कहीं का ... तुम ख़ुद उठ खड़े हुए ... क्या हम कुरियाज आ गए? क्या हम सचमुच आ गए? क्या यह कुरियाज है?"

लापोत हंसा।

"यह कुरियाज नहीं है। यह ल्युबोतिन है। अपनी आंखें खोलो और सिगनल दो!"

सिनेन्की एकदम गम्भीर हो गया। अब वह पूर्णतया जाग गया था।

"सिगनल? अच्छा!"

अब पूरी तरह सजग, वह मेरी ओर देखकर मुसकराया और स्नेह के साथ बोला:

"आप अच्छी तरह तो हैं, अन्तोन सेम्योनोविच?" और बिगुल लेने के लिए सीट पर चढ़ गया।

दो क्षण बाद वह हाथ में बिगुल थामे था। एक बार फिर उसने फ़रिश्तों जैसी मुस्कान से मेरी ओर देखा, होंठों को अपने हाथ से साफ़ किया, और कमनीय अन्दाज़ से उन्हें बिगुल के मुंह से सटाया। स्टेशन हमारी चिर-परिचित प्रभातध्वनि से गूंज उठा।

कोलोनीवासी डिब्बों में से बाहर कूद आए, और मैं चारों ओर

घूम-घूमकर हाथ मिलाने में व्यस्त हो गया। लापोत डिब्बे की छत पर पहुंच गया था, और क्षोभ के साथ हम सब पर मुंह बिचका रहा था।

"किस लिए तुम यहां आए हो? क्या प्रेम जताने? भला, मुंह-हाथ कब धोओगे, कब डिब्बों को साफ़ करोगे? शायद तुम सोचते हो कि तुम उन्हें ऐसे ही गंदा छोड़ दोगे – ओह भाड़ में जाओ तुम! बस, जल्दी करो अब, नहीं तो तुम्हारी ख़बर ली जाएगी। और अपने नये जांघिये पहनो! कमाण्डर ऑन ड्यूटी कहां है – कुछ पता तो चले, कहां है वह?"

तारानेत्स ने पासवाले ब्रेक-प्लेटफ़ार्म से उचककर देखा। एक मुड़े-तुड़े, रंग-उड़े जांघिये के सिवा वह और कुछ नहीं पहने था। उसकी उघड़ी बांह पर एक नया लाल फ़ीता बंधा था।

"यहाँ हूं मैं!"

"क्या यही तुम्हारा प्रबंध है?" लापोत गरजा। "पानी कहां है? कुछ मालूम है तुम्हें? कितनी देर हम यहां पड़े रहेंगे – कुछ ख़याल है? कलेवा कब तैयार होगा – कुछ सुध है? ज़रा बताओ तो!"

तारानेत्स भी लापोत के बराबर में छत पर चढ़ गया, और प्रत्येक जवाब को अपनी उंगलियों पर गिनते हुए बोला – गाड़ी यहां चालीस मिनट रुकेगी, वे वहां उस बुर्ज के पास नहा-धो सकते हैं, फ़ेदोरेन्को के पास नाश्ता तैयार है, जब जी चाहे – कर सकते हैं।

"सुना तुमने? लापोत ने कोलोनीवासियों से कहा। "और अगर तुम सुन रहे हो तो फिर वहां खड़े आसमान की ओर क्या ताक रहे हो?"

कोलोनीवासियों की साँवलाई हुई टांगें ल्युबोतिन स्टेशन की पटरियों पर जहां देखो वहीं चमचमाने लगीं। डिब्बों को झाड़ुओं से बुहारा जाने लगा। चौथा 'ऊ' मिश्रित दस्ता प्रत्येक डिब्बे के सामने जाता और कूड़ा बटोर लेता। वेर्शनेव और ओसादची, अभी तक सोए कोवाल को आख़िरी डिब्बे में से उठाकर बाहर ले आए थे, और रेलवे के एक सिगनल-खम्भे पर सावधानी के साथ उसे बैठाने की कोशिश कर रहे थे।

"अभी जनाब नहीं जागे क्या!" कोवाल के सामने बैठते हुए लापोत ने कहा।

कोवाल खम्भे पर से नीचे आ गिरा।

"अब जनाब जाग गए!" उसने टिप्पणी की।

"तुमने तंग कर दिया, रीजी!" कोवाल ने संजीदगी से कहा। "इस आदमी के नकेल डालना मुश्किल है," मेरी ओर अपना हाथ फैलाते हुए उसने कहा। "छत पर, कभी इंजन पर, कभी सूअरों के डिब्बे पर – इसके दिमाग़ का कीड़ा फुदकता है कि वहां कोई गड़बड़ है। इस लापोत के बच्चे ने पिछले दिनों से एक घड़ी चैन नहीं लेने दिया हां तो, नहाना-धोना कहां होगा?"

"हम जानते हैं!" ओसाद्‌ची ने कहा। "चलो इसे ले चलें, कोल्का!"

कोवाल को अपनी बांहों में उठाए वे बुर्ज की ओर ले चले। लापोत ने कहा:

"इसे सन्तोष नहीं है... अन्तोन सेम्योनोविच, आप जानते हों कि क्या? अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा तो कोवाल सप्ताह-भर में यह पहली बार सोया है।"

आधा घंटा बीतने से पूर्व डिब्बे साफ़ हो गए, और कोलोनीवासी गहरे नीले रंग के चमचम करते जांघिये तथा सफ़ेद क़मीज़ों में कलेवा के लिए आ जमे। मुझे भी खींचकर स्टाफ़ के डिब्बे में ले जाया गया, और 'मारिया इवानोवना' का – यह हमारी एक मादा-सूअर का नाम था – एक कतला मेरे हाथों में भी थमा दिया गया। नीचे पटरियों पर से किसी ने ज़ोरों से चिल्लाकर कहा:

"लापोत, स्टेशन-मास्टर का कहना है कि गाड़ी क़रीब पांच मिनट में चल पड़ेगी!"

एक परिचित आवाज़ सुनकर मैंने झांका। मार्क शेइनहौस की बड़ी-बड़ी आंखें गम्भीरता के साथ मेरी ओर देख रही थीं, और गहरे अनु-राग की लहरियां उनमें उठ और गिर रही थीं।

"मार्क, मज़े में तो हो? अब तक तुम कहां थे, दिखाई नहीं दिए!"

"मैं झंडे के पास ड्यूटी पर था," मार्क ने कड़े अन्दाज़ में कहा।

"कहो, कैसे चल रहा है? क्या तुम अब अपने चरित्र से सन्तुष्ट हो?"

मैं कूदकर नीचे पटरियों पर आ गया। मार्क ने लपककर मुझे पकड़ लिया और मौक़ा पाकर आवेग के साथ फुसफुसाते हुए बोला:

"नहीं, अन्तोन सेम्योनोविच, अपने चरित्र से मैं अभी एकदम सन्तुष्ट नहीं हूं। हां, एकदम सन्तुष्ट नहीं हूं। मैं आपको धोखा नहीं देना चाहता।"

"तो फिर?"

"आप जानो – वे सारे रास्ते गीत गाते रहे, वे एकदम ख़ुश हैं। लेकिन मैं सोचता हूं कि मैं उनके साथ मिलकर गा नहीं सकता। इसे क्या आप चरित्र कहेंगे – क्यों?"

"और तुम सोचते क्या रहे?"

"सोचता क्या रहा? वे निडर क्यों हैं, और मुझे डर क्यों लगता है?"

"क्या ख़ुद अपने लिए?"

"ओह नहीं, ख़ुद अपने लिए डर नहीं है। अपने लिए मुझे क़तई कोई डर नहीं है। मुझे डर लगता है आपके लिए और सबके लिए। मेरा यह डर एक आम डर है। जीवन कितना अच्छा था उनके लिए। शायद कुरियाज में वह उतना अच्छा नहीं होगा। कौन जाने, ऊंट किस करवट बैठे!"

"लेकिन वे संघर्ष में उतर रहे हैं। यह एक भारी सुख है, मार्क – जीवन को अच्छा बनाने के संघर्ष में हिस्सा लेना!"

"यही तो मैं अपने से बार-बार कहता हूं। वे सुखी लोग हैं, और सो वे गीत गा सकते हैं। लेकिन मैं क्यों उनका साथ नहीं दे पाता, क्यों मैं हर घड़ी सोचता रहता हूं?"

सिनेन्की ने ठीक मेरे कान के पास सबको जमा करने के लिए बिगुल बजाया – परदे फाड़े देनेवाली आवाज़ में!

"रण-भेरी!" मैंने मन-ही-मन सोचा, और अन्य सबके साथ डिब्बे की ओर लपका। कंधे के ऊपर से मैंने देखा कि कितने सहज भाव से अपनी एड़ियों को हवा में झलकाते हुए, मार्क अपनी गाड़ी की ओर दौड़ रहा था। मैंने सोचा – आज इस युवा को विजय या हार के मानी मालूम होंगे। और तब यह बोल्शेविक बन जाएगा।

इंजन ने सीटी दी। लापोत किसी लेट लतीफ़ पर गरजा, गाड़ी चल दी।

चालीस मिनट बाद गाड़ी ने धीमी गति से रिजोव स्टेशन में प्रवेश किया और तीसरे प्लेटफ़ार्म पर खड़ी हो गई। प्लेटफ़ार्म पर येकातेरिना ग्रिगोरियेवना, लिदोच्का और गुल्यायेवा मौजूद थीं। उनके चेहरे ख़ुशी से थिरक रहे थे।

कोवाल मेरे पास आया।

"देर क्यों की जाए? क्या सामान उतारना शुरू कर दें?"

दौड़कर वह स्टेशन-मास्टर के पास पहुंचा। मालूम हुआ कि सामान को प्लेटफ़ार्म पर उतारने के लिए गाड़ी को पहले प्लेटफ़ार्म पर लाया जाएगा। लेकिन इसके लिए कोई इंजन नहीं था। हमारा इंजन खारकोव गया था, और शंटिंग के लिए जाने कहां से कोई खास इंजन आनेवाला था। रिजोव में पहले इस तरह की गाड़ी कभी नहीं आई थी, और उनके पास शंटिंग के लिए कोई इंजन नहीं था।

इस सूचना को शुरू में तो हमने शान्ति के साथ ग्रहण किया। लेकिन आध घंटा, और फिर एक घंटा बीतने के बाद, गाड़ी के साथ टंगे-टंगे हम तंग आ गए। और 'मोलोदेत्स' जो आकाश में सूरज के ऊंचा होने के साथ-साथ अधिकाधिक उत्पाती बनता जा रहा था, हमें परेशान करने लगा। डिब्बे की दीवारों को रात में उसने चिथड़ा बना ही दिया था। और बाक़ी बचे-खुचे को ठिकाने लगाने पर तुला था। उसके डिब्बे के सामने विविध अधिकारी इधर से उधर घूमकर अपनी चीकट नोटबुकों में कुछ दर्ज कर रहे थे। स्टेशन-मास्टर पटरियों पर लपक-झपक रहा था, मानो वे घुड़दौड़ के मैदान हों, और मांग कर रहा था कि लड़के डिब्बों से बाहर न निकलें, और प्लेटफ़ार्म पर मटरगशती न करें जिनपर यात्री-गाड़ियां, लोकल-गाड़ियां तथा माल-गाड़ियां निरन्तर आती रहती हैं।

"लेकिन इंजन कब तक आ रहा है?" तारानेत्स बराबर उनसे पूछ रहा था।

"मैं भी उससे अधिक कुछ नहीं जानता जितना कि तुम जानते हो," स्टेशन-मास्टर ने अचानक गर्म होते हुए कहा। "शायद कल।"

"कल? तब तो मैं आपसे कुछ ज़्यादा जानता हूं!"

"ज़्यादा क्या? ज़्यादा क्या?"

"मैं आपसे ज़्यादा जानता हूं।"

"मतलब ?"

"मतलब यह कि अगर इंजन का कुछ पता नहीं चला तो हम ख़ुद गाड़ी को शंट करके पहले प्लेटफ़ार्म पर ले आएंगे।"

स्टेशन-मास्टर बेचैनी से हाथ हिलाकर तारानेत्स के पास से खिसक गया। इसके बाद तारानेत्स ने मेरी जान खानी शुरू की।

"क्यों न हम ख़ुद उसे शंट कर लें, अन्तोन सेम्योनोविच! देखिये, हम इसे शंट कर सकते हैं। हां, कर सकते हैं। गाड़ियों को बड़ी आसानी से हरकत में लाया जा सकता है, उनमें माल लदा हो तब भी। और एक डिब्बे के लिए हम तीन हैं। चलिये, चलकर स्टेशन-मास्टर से इस बारे में बात करें।"

"बस, बस, अपनी यह बकवास रहने दो, तारानेत्स!"

कराबानोव ने भी अपनी बांहें फेंकीं:

"ज़रा इसकी सुनो, समझता है कि यह गाड़ी को शंट कर सकता है! इसे ठीक सिगनल तक शंट करके ले जाना होगा।"

लेकिन तारानेत्स अड़ा रहा, और कितने ही लड़कों ने उसका समर्थन किया।

"बहस से क्या फ़ायदा?" लापोत ने कहा। "चलो, काम के लिए सिगनल है, और कोशिश कर देखें – इसमें कोई नुक़सान तो होगा नहीं! अगर हम शंट कर ले जाते हैं – तो कहना ही क्या है, और अगर नहीं कर पाते, तो न सही, रात हम गाड़ी में ही बिताएंगे।"

"और स्टेशन-मास्टर?" कराबानोव ने पूछा जिसकी आंखों में अब चमक तैर चली थी।

"स्टेशन-मास्टर!" लापोत ने जवाब दिया। "स्टेशन-मास्टर के पास दो हाथ हैं, और एक ज़बान। सो वह अपने हाथों को लहराए और ज़बान की कसरत करे! इससे और भी मज़ा रहेगा!"

"नहीं," मैंने कहा। "हम ऐसा नहीं कर सकते! अगर हम किसी गाड़ी से कुचल गए तो. तब गड़बड़ होगा!"

"वह सब हम समझते हैं। पहले सिगनल को उठाना होगा।"

"नहीं, लड़को, सो कुछ नहीं!"

लेकिन लड़कों ने क़रीब-क़रीब मुझ पर अधिकार कर लिया। जो पीछे थे, वे ब्रेक-प्लेटफ़ार्मों पर चढ़ आए, कुछ डिब्बों की छतों

पर पहुंच गए और एक स्वर से उन्होंने मुझे पटाना शुरू किया। उन्होंने अनुरोध किया – केवल एक चीज़ की इजाज़त दे दीजिए – गाड़ी को दो मीटर खिसकाने की।

"केवल दो मीटर, और बस। इसमें कोई नुक़सान नहीं। हम किसी को हाथ नहीं लगाएंगे। केवल दो मीटर और तब आप ख़ुद देख लीजिये!"

आख़िर मैंने स्वीकृति दे दी। सिनेन्की ने फिर बिगुल बजाया – इस बार काम के लिए – और कोलोनीवासी जो अब पूर्णतया समझते थे कि उन्हें क्या करना है, डिब्बों की बग़ल में जम गए। कहीं आगे लड़कियां चहक रही थीं। लापोत कूदकर प्लेटफ़ार्म पर आ गया, और उसने अपनी टोपी को लहराया।

"ठहरो! ठहरो!" तारानेत्स चिल्लाया। "मैं स्टेशन-मास्टर को ले आता हूं। वह मुझसे ज़्यादा जानता है।"

स्टेशन-मास्टर अपनी बांहों को अपने सिर से ऊंचा उठाए प्लेटफ़ार्म पर लपका हुआ आया।

"यह तुम क्या कर रहे हो? क्या कर रहे हो यह तुम?" वह चिल्ला रहा था।

"केवल दो मीटर!" तारानेत्स ने कहा।

"क़तई नहीं! किसी तरह नहीं! भला ऐसा भी कभी हो सकता है?"

"केवल दो मीटर, मैं कहता हूं!" कोवाल चिल्लाया। "क्या आप इतना भी नहीं समझ सकते?"

स्टेशन-मास्टर की खोई हुई-सी आंखें कोवाल पर स्थिर हो गईं और उसके हाथ हवा में उठे-के-उठे रह गए। लड़के डिब्बों की बग़ल में खड़े हंस रहे थे। लापोत ने एक बार फिर अपने हाथ को ऊंचा उठाया जिसमें वह टोपी लिये हुए था और सबने अपना भार डिब्बों पर लगा दिया, अपने नंगे पांवों को रेत में गड़ाया और होंठों को दांतों से दबाते हुए लापोत की दिशा में देखा। उसने टोपी लहराई उसकी हरकत के अनुसरण में स्टेशन-मास्टर ने अपना सिर हिलाया और अपना मुंह खोला। पीछे से कोई चिल्लाया·

"हइया!"

एक या दो क्षण तक मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे इससे कुछ नहीं होगा – गाड़ी निश्चल खड़ी थी, लेकिन पहियों की ओर देखते हुए, अचानक मुझे लगा कि वे धीरे-धीरे घूम रहे थे, और अगले ही क्षण मैंने देखा कि गाड़ी भी हरकत में आ रही थी। लेकिन लापोत ने चिल्लाकर जाने क्या कहा, और लड़कों ने धकेलना रोक दिया। स्टेशन-मास्टर ने मेरी ओर देखा, अपनी खोपड़ी के खल्वाट भाग को पोंछा और एक मधुर, दन्तविहीन, वृद्ध मुस्कान से उसने मुझे सींचा।

"अच्छी बात है, इसे ले जाओ... केवल यह ध्यान रखना, कोई कुचल न जाए..."

उसने अपना सिर हिलाया और अचानक हंसी में फूट पड़ा।

"शैतान कहीं के! भला, क्या कहेंगे आप इसे! अच्छी बात है, धकेल ले जाइये इसे!"

"और सिगनल – उसका क्या होगा?"

"उसकी चिन्ता मत कीजिये!"

"तै-या-या-र!" तारानेत्स चिल्लाया, और लापोत ने एक बार फिर अपनी टोपी को ऊंचा उठाया।

और क्षण-भर बाद ही गाड़ी सिगनल की ओर लुढ़क चली, मानो कोई शक्तिशाली इंजन उसे धकेल रहा हो। ऐसा मालूम होता था जैसे लड़के डिब्बों की बग़ल में महज़ चल रहे हों। और जैसे चमत्कार हो, लड़के ब्रेक-प्लेटफ़ार्मों पर भी मौजूद थे, ज़रूरत पड़ने पर ब्रेक लगाने के लिए।

बाहरी सिगनल से शंट करके गाड़ी को दूसरे प्लेटफ़ार्म पर ले जाना था – स्टेशन की दूसरी ओर, ताकि वहां से लौटाकर उसे प्लेटफ़ार्म पर लाया जा सके। ठीक उस समय जबकि गाड़ी प्लेटफ़ार्म के सामने से गुज़र रही थी और मेरा रोम-रोम स्थिति के नाज़ुकपन को गहराई के साथ अनुभव कर रहा था, किसी ने मुझे प्लेटफ़ार्म से पुकारा:

"साथी मकारेन्को!"

मैंने घूमकर देखा। ब्रेगेल, खलाबूदा और साथी ज़ोया वहां खड़े थे। ब्रेगेल अपने ढीले भूरे फ़ाक में जैसे समूचे प्लेटफ़ार्म पर छाई थी। उसे देखकर मुझे केथरीन महान की एक प्रतिमा की याद हो आई – इतनी राजसी मालूम होती थी वह!

और तदनुकूल राजसी ऊंचाई से उसने मुझे पुकारा :

"साथी मकारेन्को – क्या ये आपके छात्र हैं?"

अपराधी की भांति ब्रेगेल की ओर मैंने अपनी आंखें उठाईं, लेकिन उसी क्षण उसकी स्वामित्वपूर्ण आवाज़ मेरे कानों से टकराकर झनझना उठी :

"प्रत्येक कटी हुई टांग के लिए आप जवाबदेह होंगे।"

ब्रेगेल की आवाज़ में इस्पात जैसा बल था, जिसपर कोई भी सम्राज्ञी ईर्ष्या कर सकती थी। मानो समानता को और भी अधिक कारगर बनाने के लिए वह अपनी छोटी उंगली से हमारी गाड़ी के पहियों में से किसी एक की ओर इशारा कर रही थी।

मैं कुछ ऐसा ही जवाब देने की तैयारी कर रहा था कि लड़के काफ़ी सावधान हैं, और यह कि मामले के सही-सलामत गुज़र जाने की मैं आशा करता हूं, लेकिन विनम्रता की मेरी इस खड़ी भावना को साथी ज़ोया ने रोक दिया। वह तेज़ी से प्लेटफ़ार्म के किनारे की ओर लपकी, द्रुतगति से बुदबुदाते और अपने शब्दों की ताल के साथ अपने बेडौल सिर को हिलाते हुए।

"वे दिन-रात राग अलापते हैं कि साथी मकारेन्को अपने छात्रों को इतना चाहता है... अब हरेक को दिखाना चाहिए कि किस प्रकार वह उन्हें चाहता है!"

लगा जैसे कोई चीज़ मेरे वक्ष में उमड़ी, और कंठ की ओर बढ़ चली। लेकिन उस समय मैंने अनुभव यही किया कि अत्यन्त शान्ति और विनम्रता के साथ मैंने जवाब दिया था :

"ओह, साथी ज़ोया, आपको बड़ी बेरहमी के साथ गुमराह किया गया है! मैं कुछ इतना काठ आदमी हूं कि अत्यन्त अनुराग भरे प्रेम की जगह साधारण बुद्धि मुझे ज़्यादा अच्छी लगती है।"

साथी ज़ोया प्लेटफ़ार्म की ऊंचाई से मुझपर टूट ही पड़ती और शिक्षा-विरोधी मेरी गतिविधियों के इस महाकाव्य का शायद वहीं अन्त हो जाता, अगर ख़लाबूदा के मुंह से निपट सरलता के साथ एक कामगार की भांति यह न प्रकट हुआ होता :

"देखिये न, गाड़ी को चलाने में क्या मज़ा आ रहा है इन्हें,

शैतान कहीं के! देखिये, ब्रेगेल, ज़रा उस फ़ितने को तो देखिये! बन्दर कहीं का!"

ख़लाबूदा अब वास्का अलेक्सेयेव के साथ – कितने ही बापोंवाले अनाथ के साथ – डग बढ़ा रहा था। वास्का के साथ एक या दो शब्दों का उसने आदान-प्रदान किया, और इससे पहले कि हम अपने ग़ुस्से का बुख़ार उतार पाते, ख़लाबूदा गाड़ी की किसी चीज़ से सटा, कसकर ज़ोर लगा रहा था। केथरीन की प्रतिमा की प्रस्तरीय गरिमा पर मैंने एक नज़र डाली, और साथी ज़ोया के गिर्द व्याप्त क्षुब्ध वातावरण से निकलकर गाड़ी की ओर लपक गया।

बीस मिनट बाद 'मोलोदेत्स' अर्द्ध नष्ट डिब्बे में से उतारा गया और अन्तोन ब्रातचेन्को उसपर सवार हो कुरियाज की ओर उड़ चला – धूल के एक बादल और रिजोव के कुत्तों के झंकृत स्नायुओं को बहुत पीछे छोड़ते हुए।

ओसाद्ची के कमान में प्लेटफ़ार्म पर मिश्रित दस्ते को छोड़कर स्टेशन के छोटे-से चौरस में फ़ौरन अपनी पांतों को हमने साधा। ब्रेगेल और उसकी सहेली एक मोटर में सवार हो रही थीं। हमारे बिगुल की आवाज़ सुनकर उनके चेहरों को हरा पड़ते देखने का मुझे एक बार फिर सौभाग्य प्राप्त हुआ। बिगुल की आवाज़ से ही नहीं, बल्कि हमारे ढोलों की गरज से भी जो झंडा-सलामी के समय बजे। रेशमी ग़िलाफ़ से ढंका झंडा हमारी धीर-गम्भीर पंक्तियों के सामने से अपनी जगह पर ले जाया गया। मैंने भी अपना स्थान संभाला। कोवाल ने आदेश दिया और स्टेशन के छोटे लड़कों की एक भीड़ के साथ गोर्कीआइट कुरियाज के लिए रवाना हुए। ब्रेगेल की कार पीछे से हमारे निकट आई और पास से गुज़रते समय ब्रेगेल ने मुझसे कहा :

"आओ, यहां आ जाओ!"

अचरज से मैंने अपने कंधे उचकाए, और हाथ से अपने हृदय को दबाया।

वायुमण्डल शांत और गरम था। हमारा रास्ता एक चरागाह में से होकर, और एक संकरी नदी के छोटे-से पुल के ऊपर से होकर जाता था। हम छः-छः की पंक्तियों में चल रहे थे। सबसे आगे चार बिगुलवादक और आठ ढोलची थे, उनके बाद कमाण्डर ऑन ड्यूटी

तारानेत्स और मैं ख़ुद। हमारे बाद झंडाधारक थे। झंडा अभी भी ग़िलाफ़ के भीतर था और उसका सुनहरा फुन्दना उसके चमकते शिखर से झूलता हुआ लापोत के सिर के ऊपर लहरा रहा था। लापोत के पीछे सफ़ेद क़मीज़ों और कोलोनीवासियों की पांतों की चमक-दमक दिखाई पड़ती थी। उनकी उघड़ी हुई टांगें यौवनपूर्ण समगति के साथ हिलोरें ले रही थीं। लड़कियों की चार पांतें नीले घाघरे पहने हुए बीच में मार्च कर रही थीं।

क्षण-भर के लिए पंक्तियों से थोड़ा हटकर मैं देख सकता था कि कोलोसीवासियों की आकृतियां अचानक किस प्रकार अधिक कठोर तथा अधिक लचकदार हो गई थीं। वीरान चरागाह पर से गुज़रने के बावजूद अपनी पांतों को वे सख़्ती के साथ क़ायम रखे थे। ज़रा भी बेक़दम हो जाने पर चट अपने आपको ठीक कर लेते थे। ढोलों की गरज के सिवा अन्य कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। उसकी गूंज कुरियाज की दूरस्थित दीवारों से टकराकर लौट रही थी। लेकिन ढोलों की आवाज़ में सजगता की अपनी आज की भावना को हमने डूबने नहीं दिया था। इसके प्रतिकूल, जितना ही अधिक हम कुरियाज के निकट पहुंचते जाते थे, उतने ही अधिक उत्साह तथा जमाव के साथ ढोलों की आवाज़ गरज के साथ गूंज उठती थी। न केवल हमारे पांवों को ही, बल्कि हृदय की प्रत्येक धड़कन को भी वह अपने कड़े अनुशासन में गुंजा रही थी।

दस्ते ने पोदवोर्की में प्रवेश किया। निवासी अपने बेड़ेदार दरवाज़ों और टट्टर के बाड़ों के पीछे खड़े थे। ख़ूंख़्वार कुत्ते – उन कुत्तों के वंशज जो कभी मठ की सम्पदा की रक्षा करते थे – अपने पट्टों को खींच-तान रहे थे। इस गांव के लोग, और कुत्ते मठ के इतिहास की समृद्ध चरागाहों पर पले जीव थे। वे सब के सब तांबे के उन सिक्कों के बूते जन्मे, पले और बढ़े थे जो आत्माओं की मुक्ति, कष्टों के निर्वाण, मां मरियम के आंसुओं और फ़रिश्ते जिब्रील के पंखों के परों के एवज़ में उन्हें प्राप्त होते थे। पोदवोर्की में तरह-तरह की काट-छांट के लोग आ टकराए थे – भूतपूर्व पादरी, साधु-सन्यासी, भिक्षु, साईस, मठों के बावर्ची, माली और वेश्याएं।

और इस गांव में से गुज़रते समय टट्टर के बाड़ों के पीछे खड़े

दलों के बीच वैमनस्यपूर्ण नज़रों तथा फुसफुसाहटों के आदान-प्रदान का मैंने तीक्ष्णता के साथ अनुभव किया। हमारी ओर लक्षित उनके विचारों, शब्दों तथा मनौतियों का मैं काफ़ी हद तक सही अन्दाज़ लगा पाया।

और यहीं, पोदवोर्की की सड़कों पर अचानक मैंने अनुभव किया कि हमारी इस मार्च का कितना व्यापक ऐतिहासिक महत्व है। साथ ही इस तथ्य के प्रति भी मैं पूर्णतया सचेत था कि यह मार्च हमारे युग के एक अत्यन्त क्षणिक दौर का प्रतिनिधित्व करती है। गोर्की कोलोनी की मेरी कल्पना ने अचानक अपनी बाह्य टीमटाम तथा शैक्षणिक रंगों को उतार फेंका। कोलोमाक नदी के मोड़, पुरानी त्रेपके जागीर की सुविस्तृत इमारतें, दो सौ गुलाब की झाड़ियां, कंकरीट का सूअरघर–सब ग़ायब हो गए। शिक्षा-सम्बन्धी सूक्ष्म समस्याएं चुरमुराकर जाने कहां सड़क पर बिखर गईं। कुछ भी बाक़ी नहीं रहा–सिवा मानवीय जीवों के, ऐसे मानवीय जीवों के, जो नये अनुभव के धनी तथा इस धरती पर एक नयी जगह के मालिक थे। अचानक मैंने अनुभव किया कि हमारी कोलोनी एक ऐसा काम कर रही थी, जो नगण्य होने पर भी, महत्त्वपूर्ण राजनीतिक–सच्चे मानी में समाजवादी कार्य था।

पोदवोर्की की सड़कों पर से गुज़रना ऐसे ही था जैसे शत्रु के देश में से गुज़रना। वहां के लोग, उनके हित, मकड़ियों के जाले जैसे उनके बन्दोबस्त, उनका ढंग-ढर्रा–बावजूद इसके कि उसमें अभी भी जीवन के कुछ कांपते हुए चिह्न दिखाई देते थे–अतीत से कसकर चिपके थे।

और मठ की दीवारों के भीतर, विचारों और अंधविश्वासों का एक ऐसा पंचमेल जमा था, जिससे मैं घृणा करता था–बुद्धिजीवियों का-सा भावुकतापूर्ण आदर्शीकरण, नीरस औपचारिकता, सहज आंसू और अधिकारी-जगत की कल्पनातीत मूढ़ता और उसका अज्ञान। बस, यही था उन दीवारों के भीतर। गंदगी के इस सीमाहीन अम्बार का व्यापक क्षेत्र मेरी कल्पना में मूर्त हो उठा–कई सालों से हम इसे पार करते आ रहे थे, हज़ारों मील हम चल चुके थे, फिर भी वह हमारे सामने गंधा रहा था, चारों ओर से हमें घेरे था। और इस

सब की वजह से ही गोर्की कोलोनी – जो अपने सभी माली सूत्रों से अब वंचित थी – परिवहन के अपने साधनों, आधार और वन्धु-बान्धुवों से विच्छिन्न – नगण्य, लघु मालूम होती थी। त्रेपके जागीर सदा के लिए छूट गई थी, और कुरियाज को अभी जीता नहीं गया था।

ढोलवादकों की पंक्तियां पहाड़ी ढलवान पर चढ़ने लगीं। मठ का फाटक अब दिखाई देने लगा था। वान्या ज़ाइचेन्को दौड़ता हुआ इसमें से प्रकट हुआ। उसने जांघिया पहन रखा था। क्षण-भर के लिए वह जैसे वहीं का वहीं जाम हो रहा, और फिर तीर की भांति ढलान पर से हमारी ओर लपका। मैं एकदम कांपा यह सोचकर कि ज़रूर कोई-न-कोई गड़बड़ हो गई है। लेकिन वान्या तेज़ी से मेरे सामने आकर रुका, और गालों पर ढुरकते आंसुओं को अपनी उंगली से पोंछते हुए उसने मुझसे अनुरोध किया :

"अन्तोन सेम्योनोविच, मैं भी आपके साथ चलूंगा। मैं वहां खड़े रहना नहीं चाहता।"

"तो चलो फिर!"

वान्या मेरी बग़ल में क़दम से क़दम मिलाकर चलने लगा। मेरी स्थिर दृष्टि से उसकी आंखें मिलीं। अपने आंसुओं को सुखाकर वह उन्मुक्त भाव से मुस्करा उठा – सन्तोष के साथ उसास छोड़ते हुए।

घंटे की बुर्जी के सुरंगनुमा फाटक में ढोल कानफोड़ आवाज़ में गरज रहे थे। कुरियाज समूह अनेक पांतों में खड़ा था, उनके आगे गोरोविच खड़ा था – निश्चल। उसके हाथ सलामी की मुद्रा में ऊपर उठे हुए थे।

८. होपक-नृत्य

गोर्कीआइटों की पांतें और कुरियाजों की भीड़ आमने-सामने, सात या आठ मीटर के अन्तर पर खड़ी थीं। कुरियाजवासियों की पांतें, जिन्हें प्योत्र इवानोविच ने उतावली में बटोरा था, बिला शक, ढीली-ढाली थीं। हमारे दस्ते के रुकते ही वे बिखर गईं और फाटक से गिरजे तक फैल गईं। छोरों पर मुड़ी हुई, वे हमारे वाजुओं को ढंकने, यहां तक कि हमें घेरने का भी खतरा पैदा कर रही थीं।

कुरियाजवासी और गोर्कीआइट – दोनों ख़ामोश थे। कुरियाजवासी निरी विमूढ़ता के कारण, और गोर्कीआइट उस अनुशासन के कारण जो झंडे के नीचे पांत से खड़े होने से उन पर लागू होता था। अब तक अग्रिम मिश्रित में ही कुरियाजवासियों ने हमारे कोलोनीवासियों को देखा था – हमेशा काम के कपड़े पहने हुए, थकान से चूर, धूल से लद-फद और गंदे। अब उनकी आंखों के सामने संजीदा और शान्त चेहरों, चमचमाती पेटियों और धूप में संवलाई टांगों के ऊपर लक़दक़ जांघियों की क़ायदेबंद पांतें आ टकराई थीं।

क्षण के भी अत्यल्पांश में क़रीब-क़रीब इतरमानवीय प्रयास द्वारा अपने आपको केन्द्रित करके मैंने यह जानने और उसे अपनी चेतना में अंकित करने की कोशिश की कि कुरियाज चेहरों के भावों में क्या तथ्य निहित है, लेकिन मैं ऐसा करने में असमर्थ रहा। कुरियाज में मेरे पहले दिनवाली वह बदरंग, आकृतिविहीन भीड़ अब वहां नहीं थी। एक से दूसरे दल की ओर नज़र घूम-घूमकर बराबर नये भावों से, नयी भंगिमाओं से टकरा रही थी। उनमें से कुछ तो नितान्त अप्रत्याशित थीं। बिरले ही कोई ऐसा हो जो उदासीन, तटस्थ भाव धारण किये हो। छोटों में से अधिकांश उत्साह से उमगे थे। मानो उनका मनचाहा खिलौना उनके सामने आ गया हो, इतना उत्कृष्ट खिलौना जिसे देखकर ईर्ष्या या स्वाभिमान के भाव तिरोहित हो जाते हैं। निसिनोव और ज़ोरेन, एक-दूसरे के गले में बांहें डाले, गोर्कीआइटों को देख रहे थे। उनके सिर एक-दूसरे के कंधों पर टिके थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे सपना देखा रहे हों, शायद उस समय का सपना जबकि वे खुद भी ऐसे ही आकर्षक पांत में स्थान ग्रहण करेंगे और उन्हीं की तरह नन्हे दर्शक उन्हें भी मुग्ध भाव से देखेंगे। बहुत-से चेहरे अप्रत्याशित गम्भीर तनाव से चिन्हित थे। और उनकी आंखें किसी ऐसी चीज़ को टोह रही थीं, जिस पर कि वे टिक सकें। ये चेहरे प्रचंड भावों का केन्द्र थे – अत्यन्त तेज़ गति से, लपकने-झपकने से भी तेज़ गति से, एक के बाद एक, वे अपने भावों को सूचित और व्यक्त कर रहे थे – कभी अनुमोदन के, कभी सन्तोष के, कभी सन्देह, और कभी ईर्ष्या के। लेकिन पहले से तैयार व्यंग्यमय चेष्टाएँ, निन्दा और खिल्ली की भावना में पगी हुई क्रमश विलीन होती जा रही थीं।

इन चेष्टाओं के सूत्रधारों ने दूर से ही, हमारी ढोलों की गूंज सुनकर, हाथों को अपनी जेबों में खोंसा, और आश्रयदाताओं के अन्दाज़ में खड़े हो गये – अपने बदन को ढीला छोड़ते हुए। उनमें से कितनों को, पहली पांतवाले गोर्कीआइटों – फ़दोरेन्को, कोरितो, नेचिताइलो – के शानदार डील-डौल तथा भुजदंडों ने चित्त कर दिया। उनके आकार-प्रकार के सामने उनके अपने आकार-प्रकार सिकुड़-सिमट गये। अन्य थोड़ा बाद में कसमसाए – उस समय जब उनके सामने यह ज़रूरत से ज़्यादा प्रत्यक्ष हो गया कि इन एक सौ बीस लड़कों में से किसी एक को भी निष्कण्टक होकर हाथ नहीं लगाया जा सकता। और वह जो उनमें सबसे छोटा था – वान्का सिनेन्की – सबसे आगे खड़ा था, अपने बिगुल को घुटने पर टिकाये, अपनी आंखों से निडरता की किरणें प्रसारित करते हुए। ऐसा मालूम होता था जैसे वह कल का लावारिस नहीं, बल्कि कोई सैलानी राजकुमार था जिसके पीछे, मानो अपनी जगह पर जाम हुए, उसके विनम्र अंगरक्षक खड़े थे जिन्हें उसके शाही पिता ने उसके साथ कर दिया था।

यह मौन पर्यवेक्षण केवल कुछ क्षणों तक ही चला। दोनों ख़ेमों के बीच सात मीटर की दूरी तथा एक दूसरे के उनके पारस्परिक निरीक्षण को एक ही आघात में नष्ट करना ज़रूरी था।

"साथियो!" मैंने कहा। "इस क्षण से हम सब – चार सौ के चार सौ – एक ही समूह के अंग हैं जिसका नाम गोर्की श्रम-कोलोनी है। तुम में से किसी को एक क्षण के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए, और तुम में से प्रत्येक को, अपने आपको, एक गोर्कीआइट मानना तथा दूसरे गोर्कीआइट को अपना घनिष्ठ साथी तथा श्रेष्ठतम मित्र समझना चाहिए, जिसकी इज़्ज़त करने, रक्षा करने, मदद की ज़रूरत पड़ने पर हर तरह से उसकी मदद, और ग़लती करने पर उसे ठीक करने के लिए तुम में से प्रत्येक बाध्य है। हमारा अनुशासन बहुत सख़्त होगा। अनुशासन हमारे लिए ज़रूरी है, इसलिए कि हमारा काम कठिन है, और बहुत कुछ हमें करना है। बिना अनुशासन के हम इसे अच्छी तरह से नहीं कर सकेंगे!"

मैंने उन्हें उन समस्याओं के बारे में बताया जो हमारे सामने मौजूद थीं। मैंने उन्हें बताया कि हमें सम्पन्न बनना है, कि हमें अध्ययन करना

है, कि हमें खुद अपने और भावी गोर्कीआइटों के लिए रास्ते को साफ़ करना है, कि हमें ठीक ढंग से सच्चे सर्वहारा की भांति जीना और सच्चे कोमसोमोल की भांति कोलोनी से विदा होना है ताकि, कोलोनी से बाहर भी, हम सर्वहारा-राज्य का निर्माण कर सकें, उसे और मज़बूत बना सकें।

अप्रत्याशित एकाग्रता के साथ कुरियाजवासियों ने मेरे शब्दों को सुना। गोर्कीआइट ही थोड़ी अन्यमनस्कता से सुन रहे थे शायद इसलिए कि मेरे शब्द उनके लिए कोई नयापन नहीं प्रकट कर रहे थे। यह सब उनके अस्तित्व के एक-एक रेशे में दृढ़ता से समाया हुआ था।

लेकिन यह क्या बात थी कि इन्हीं कुरियाजवासियों ने, पन्द्रह दिन पहले, मेरी उन गुहारों को जो कहीं अधिक अनुराग भरी तथा क़ायल करनेवाली थीं, अनसुना कर दिया था। यह शिक्षा-शास्त्र कितना कठिन विज्ञान है! निश्चय ही इसका कारण मात्र यही नहीं था, कि गोर्की सेना का बल मुझे प्राप्त था, या यह कि हमारा झंडा रेशमी ग़िलाफ़ में लिपटा, दाहिने बाज़ू ऊंचा उठा था – निश्चल और कठोर। निश्चय ही यह इसका कारण नहीं हो सकता – क्योंकि इस तरह का स्पष्टीकरण शिक्षा-शास्त्र की तमाम मान्यताओं और धारणाओं पर पानी फेर देता।

अन्त में मैंने एलान किया कि आधे घंटे के बाद गोर्की कोलोनी की एक आम सभा होगी, और यह कि बीच के इस आधे घंटे में कोलोनीवासियों को एक दूसरे से परिचित होने, हाथ मिलाने, और सभा में इकट्ठा होकर आने का मौक़ा मिल जाएगा। और अब हम, अपने आम क़ायदे के अनुसार, झंडे को इमारत में ले जाएंगे

"पांतें भंग!"

मेरी यह आशा कि गोर्कीआइट कुरियाजवासियों के पास जाएंगे और उनसे चारों ओर हाथ मिलाते नज़र आएंगे, पूरी नहीं हुई। बन्दूक़ के छूटे छर्रों की भांति वे पांतों में से निकले और द्रुत गति से शयनागारों, क्लब-घरों और वर्कशॉपों की ओर लपके। कुरियाजवासी भी इस अवहेलना से बुरा न मानकर उनके पीछे दौड़ गए। अकेला कोरोत्कोव अपने पिछलग्गुओं के बीच खड़ा था और उनके साथ फुसफुसा

रहा था। ब्रेगेल और साथी ज़ोया गिरजे की दीवार के पास क़ब्र के पत्थरों पर बैठी थीं। मैं उनके पास पहुंचा।

"तुम्हारे लड़के पूरे ठाट-बाट-से हैं," ब्रेगेल ने कहा।

"लेकिन क्या शयनागार उनके लिए तैयार हैं?" साथी ज़ोया ने पूछा।

"बिना शयनागारों के भी हम गुज़र कर लेंगे," मैंने जवाब दिया और उतावली के साथ एक नये दृश्य की ओर घूम गया।

स्तुपीत्सिन के दस्ते के सदस्यों की निगरानी में सूअरों के हमारे रेवड़ ने मठ के फाटक में प्रवेश किया था। सूअर धीमे, बोझिल डगों से चल रहे थे। वे तीन दलों में थे – सबसे आगे मादा थीं। फिर बच्चे, और सबसे आख़िर में पितृ समुदाय। वोलोख़ोव मुस्कराते हुए अपने सहायकों के साथ उन्हें भेंटने के लिए आगे बढ़ा, अधर देनिस कुदलाती चैम्बेरलेन को – हम सबके प्रिय पांच मास बड़े शिशु-सुअर को – कान के पीछे से दुलराना शुरू भी कर दिया था। चैम्बेरलेन के – उस राजनयिक के – सुप्रसिद्ध अल्टीमेटम की याद में इसका यह नाम रखा गया था।

रेवड़ को, ख़ास तौर से उसके लिए बनाए गए बाड़ों में, पहुंचा दिया गया। तभी स्तुपीत्सिन, शेरे और ख़लाबूदा ने फाटक के भीतर प्रवेश किया। वे किसी अत्यन्त रोचक वार्तालाप में डूबे थे। ख़लाबूदा अपनी एक बांह को लहराते हुए कुछ जता रहा था, और दूसरी से सबसे छोटे और सबसे गुलाबी शिशु-सूअर को अपने वक्ष से सटाए था।

"ओह, ज़रा इनके सूअरों को देखो!" हमारे दल के निकट आते हुए ख़लाबूदा चहका। "अगर इनके आदमी उतने अच्छे हों जितने कि इनके सूअर हैं, तो रंग जमेगा, यह मैं कहे देता हूं!"

ब्रेगेल क़ब्र के पत्थर पर से उठी, और कठोर स्वर में उसने कहा: "मैं समझती हूं कि साथी मकारेन्को लोगों पर पहले ध्यान देते हैं!"

"मुझे इसमें शक है," साथी ज़ोया ने कहा, "कारण, मैं देखता हूं कि सूअरों के लिए जगह तैयार है, और जहां तक बच्चों का सम्बन्ध है – 'वे गुज़र कर लेंगे'.."

मामले की इस असामान्य स्थिति ने अचानक ब्रेगेल की दिलचस्पी जगा दी।

"ज़ोया की टिप्पणी बहुत ही उचित है," उसने कहा। "देखना चाहिए कि साथी मकारेन्को इस बारे में क्या कहते हैं, बेशक एक शिक्षक के नाते ही, सूअर-पालक के नाते नहीं!"

इस उद्‌गार से – वैमनस्य की उस प्रकट भावना से जिसे यह उद्‌गार व्यक्त करता था – मैं चकित हुआ। लेकिन समान उद्दण्डता के साथ जवाब देकर मैं आज के दिन को ख़राब नहीं करना चाहता था।

"अगर इजाज़त हो तो सामूहिक रूप से, मतलब यह कि इन दोनों अधिकारियों की ओर से जवाब देने का मैं साहस करूं?" मैंने पूछा।

"ख़ुशी से!"

कोलोनीवासी यहां मालिक हैं, और सूअर उनके संरक्षितों में से हैं।"

"और आप किन में हो?" मेरी ओर न देखते हुए ब्रेगेल ने पूछा।

"मेरा ख़याल है कि मैं मालिकों के निकट अधिक हूं।"

"लेकिन, अगर मैं ग़लती नहीं करती तो आपके पास सोने के लिए कमरा है?"

"मेरी भी उसके बिना गुज़र हो सकती है।"

ब्रेगेल ने तुनककर अपने कंधों को बिचकाया।

"अच्छा हो कि इस वार्तालाप को अब बंद किया जाए," साथी ज़ोया की ओर मुड़ते हुए उसने ठंडे स्वर में कहा। "साथी मकारेन्को चीज़ों को अति तक ले जाना पसंद करते हैं।"

ख़लाबूदा ज़ोरों से हंसा।

"इसमें बुराई क्या है? वह बिलकुल ठीक करते हैं – चीज़ों को भला क्यों नहीं उनकी अति तक ले जाया जाए?"

मैं बरबस मुसकराया, इस बात ने एक बार फिर ज़ोया को मुझपर टूट पड़ने के लिए उकसा दिया। वह बोली:

"मैं नहीं जानती, शायद आपको यह मज़ेदार मालूम होता हो कि सूअर-पालन मानवीय जीवों को शिक्षित करने के एक आदर्श के रूप में पेश किया जाए!"

साथी ज़ोया ने ग़ुस्से के अपने इंजन को चालू कर दिया था, उसकी बाहर को निकली हुई आंखें मेरे अस्तित्व मात्र को प्रतिक्षण बीस हज़ार

चक्करों के हिसाब से बींधती-छेदती मालूम होती थीं। मैं क़रीब-क़रीब आतंकित हो उठा। लेकिन ठीक तभी सिनेन्की, गुलाबी चेहरा लिए और विह्वल, दौड़ा हुआ आया। हाथ में बिगुल थामे और बहुत कुछ उतनी ही तेज़ गति से बोलते हुए :

"लापोत कहता है ... लेकिन कोवाल कहता है – 'ठहरो!' और लापोत गुस्साता है और कहता – 'करो जो तुमसे कहा गया, बस और कुछ नहीं ... और वह यह भी कहता है – 'अगर तुमने इस चीज़ को खींचा ...' और लड़के भी ... और ओह, क्या शयनागार हैं, ओह, ओह! और लड़के कहते हैं कि हम यह सब सहन नहीं करेंगे, और कोवाल कहता है कि वह आपसे पूछेगा ..."

"लड़के क्या कहते हैं, और कोवाल क्या कहता है, यह तो मैं समझा, लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आया कि तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो।"

सिनेन्की हतप्रभ-सा हुआ।

"मैं आपसे कुछ कहना नहीं चाहता, लेकिन लापोत कहता है ..."

"तो?"

"और कोवाल कहता है – हमें इसपर बात करनी चाहिए "

"लेकिन लापोत ने ठीक कहा क्या? वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, साथी सिनेन्की।"

संबोधित करने के मेरे इस ढंग से सिनेन्की इतना ख़ुश हुआ कि मैं जो कहना चाहता था, उसका आशय वह नहीं पकड़ सका।

"तो?"

"तो यह कि लापोत ने क्या कहा?"

"अरे, हां! उसने कहा – 'जमा होने के लिए सिगनल दो!'"

"सबसे पहले यही बात तुम्हें मुझे बतानी चाहिए थी।"

"लेकिन मैंने बताई तो थी न!"

साथी ज़ोया ने सिनेन्की के गुलाबी गाल को अपनी उंगली तथा अंगूठे के बीच थामा, इस तरह उसके होंठों ने हज़ारा गुलाब का रूप धारण कर लिया।

"ओह, कितना प्यारा बच्चा है!"

सिनेन्की ने नाराज़ी से ज़ोया के दुलार भरे हाथों से अपना पीछा

छुड़ाया, मुंह को अपनी आस्तीन से साफ़ किया, और क्षोभपूर्ण मुद्रा बनाते हुए टेढ़ी नज़र से ज़ोया की ओर देखा।

"बच्चा! बहुत ख़ूब! मान लो, अगर मैं भी आपके साथ ऐसा करूं तो! मैं बच्चा नहीं हूं... मैं कोलोनीवासी हूं..."

ख़लाबूदा ने सिनेन्की और उसके बिगुल को बिना किसी प्रयास के उठा लिया।

"भई ख़ूब, बहुत ख़ूब, सच, बहुत ख़ूब! लेकिन तुम जानो, हो तुम नन्हे सूअर ही!"

सिनेन्की ने स्थिरता के साथ इस उपाधि को ग्रहण किया – नन्हा सूअर कहलाने में उसे कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन ज़ोया ने इसे भी नहीं बख़्शा।

"मालूम होता है कि सूअर यहां की सबसे ज़्यादा सम्मानपूर्ण पदवी है!"

"बस, बहुत हुआ!" ख़लाबूदा ने जल्दी से कहा और सिनेन्की को ज़मीन पर टिका दिया।

गर्म बहस भभका ही चाहती थी, केवल कोवाल और उसके तुरन्त बाद लापोत के आगमन से टल गई।

कोवाल अधिकारियों से देहातियों की भांति शर्माता था। ब्रेगेल के कंधे की ओट से असने मेरी ओर अपनी आंख से इशारा किया इस उम्मीद में कि मैं एक ओर हटकर उससे बातें कर लूं। लेकिन लापोत अधिकारियों से शर्माता नहीं था।

"कोवाल यह सोचता था कि यहां इसके लिए परों का बिस्तरा तैयार मिलेगा। लेकिन मैं समझता हूं कि चीज़ों को टालने में कोई तुक नहीं है। हम तुरन्त सभा करेंगे, और उन्हें अपना एलान पढ़कर सुना देंगे!"

अधिकारियों के सामने बोलने के लिए बाध्य होने से कोवाल का चेहरा लाल हो गया – सो भी महिला-अधिकारियों के सामने, जिन्हें वह अपने हृदय के अन्तर्तम में बहुत ही निम्न कोटि का समझता था। लेकिन अपनी स्थिति को प्रकट किए बिना वह नहीं रह सका।

"मुझे तुम्हारे परों के बिस्तरों से कुछ नहीं लेना-देना! अपनी यह बकवास अपने पास ही रखो। मैं जानना चाहता हूं कि क्या हम

उन्हें अपने एलान का पालन करने के लिए बाध्य कर सकते हैं? और अगर ऐसा है तो किस तरह हम इसकी शुरुआत करें? किस तरह हम उन्हें अपने वश में करें – उनके गले दबोचकर, या उनकी क़मीज़ के पल्ले खींचकर?"

कोवाल ने घबराहट के साथ ब्रेगेल की ओर देखा, लेकिन ख़तरा दूसरी ओर से झांक रहा था।

"उनके गले दबोचकर?" साथी ज़ोया ने आतंकित मुद्रा में दोहराया।

"ओह, यह तो केवल मेरा कहने का ढंग है," कोवाल ने कहा, और उसका चेहरा और भी लाल हो गया। "उनके गलों से मुझे क्या लेना, भाड़ में जाएं वे! मैं कल नगर-समिति से प्रार्थना करूंगा कि वे मुझे गांव भेज दें..."

"तुमने अभी कहा – 'हम उन्हें बाध्य करेंगे'। सो किस तरह तुम उन्हें बाध्य करोगे?"

खीज के आवेग में अधिकारियों के प्रति कोवाल का आदरभाव अचानक तिरोहित हो गया, और वह एकदम दूसरे छोर पर जा पहुंचा। "हूंह... यहां काम करना है या कतरनी-सी ज़बान चलानी है... जहन्नुम में जाए सब कुछ!"

इसके बाद वह दूसरी ओर मुड़ा, और मठ की ईंटों की पटरियों के अन्तिम अवशेषों को अपने धूल-अटे बूटों से ठोकर मारते क्लब की दिशा में चल दिया।

ज़ोया की ओर उन्मुख होकर लापोत ने हाथ नचाते हुए कहा:

"मैं आपको बताता हूं कि बाध्य करने के क्या मानी होते हैं। इसके मानी हैं.... इसके मानी हैं... हां तो, इसके मानी हैं, बस उन्हें बाध्य करना..."

"देखा आपने!"

साथी ज़ोया चीख उठी। वह अपने पांवों पर उछलकर खड़ी होकर ब्रेगेल से भिड़ गईं।

"बोलिए, अब आप क्या कहती हैं?"

"सिनेन्की, जमा होने के लिए सिगनल दो," मैंने कहा।

सिनेन्की ने ख़लाबूदा के हाथों में से अपना बिगुल छीना, गिरजे के

गुम्बदों पर लगे क्रॉसों की ओर उसका भोंपू किया, और स्पष्ट, पुरजोश, अशंकनीय ध्वनि से निस्तब्धता भंग हो उठी। साथी ज़ोया ने हाथों से अपने कानों को ढंक लिया।

"ओह, भगवान! ये बिगुल! कमाण्डर! फ़ौजीकरण!"

"इन्हें छोड़ो!" लापोत ने कहा। "तत्त्व की बात यह कि इसका आशय आपकी समझ में आ गया!"

"घंटी की आवाज़ ज़्यादा अच्छी रहती," ब्रेगेल ने मृदु प्रतिवाद किया।

"ओह, नहीं! घंटी नहीं! घंटी बिलकुल बेकार होती है – हमेशा एक-सा राग अलापती है। लेकिन यह... यह एक अर्थसूचक सिगनल है – इसका अर्थ है – सब जमा हो जाएं। और 'कमाण्डरों की सभा' के लिए, 'सोने के लिए' और ख़तरे की सूचना देने के लिए अलग-अलग सिगनल हैं। ओह-हो! अगर वान्या ख़तरे का सिगनल दे तो – तो कुछ न पूछो, – मुर्दे भी उठ खड़े हों – और आप दौड़े हुए चले आएं!"

प्रकोष्ठों, कोठरियों और मठ की दीवारों के पीछे से कोलोनी-वासियों के दल क्लब-घर की ओर उमड़ रहे थे। छोटे लड़के रुक-रुककर दौड़ रहे थे पर तरह-तरह के चलते प्रभावों को ग्रहण करने के लिए बीच-बीच में ठिठक जाते थे। गोर्कीआइट और कुरियाजवासी अब एक-दूसरे से घुलने-मिलने लगे थे, और जहां-तहां बातें करते नज़र आते थे। लेकिन अधिकांश कुरियाजवासी अभी भी अपने आपको अलग रखे थे।

सब लोग क्लब के ठंडे, ख़ाली कमरे में जमा हो रहे थे। वेदीय-मंच के आस-पास गोर्कीआइटों की सफ़ेद क़मीज़ों का उभार था, और मैंने महसूस किया कि तारानेत्स के निर्देश से ऐसा किया गया था। वह, प्रत्यक्षतः अपनी "शक्तियों' को केन्द्रित रखने का निश्चय किए हुए था। कौन जाने क्या ज़रूरत पड़ जाए!

गोर्कीआइटों की संख्यात्मक कमज़ोरी पूरी स्पष्टता के साथ प्रकट थी। कारण – दूसरा, तीसरा और दसवाँ दस्ते रेवड़ की देख-भाल में व्यस्त थे। कोई बीस जने – रबफ़ाक दल को छोड़कर – ओसाद्ची के साथ अभी रिजोव स्टेशन पर थे। इसका मतलब यह कि चार सौ की कुल संख्या में केवल क़रीब पचास गोर्कीआइट यहां मौजूद थे।

इनमें हमारी लड़कियां शामिल नहीं थीं। हृदयस्पर्शी स्नेह, चुम्बनों और स्वागती उद्‌गारों के साथ कुरियाज लड़कियों ने उनसे भेंट की, और अपने शयनागार में उनके लिए जगह कर दी, जिसे अत्यन्त दुलार भरी संलग्नता के साथ ओल्या लापोवा ने सजा-धजा रखा था।

सभा के शुरू होने का एलान करने से पहले जोर्का वोल्कोव ने फुसफुसाकर मुझसे पूछा: "तो हम एकदम सीधे शुरू करें न?"

"हां, एकदम सीधे!" मैंने जवाब दिया।

जोर्का वेदीय-मंच पर चढ़ा और उस चीज़ को पढ़कर सुनाने की तैयारी करने लगा जिसे हम मज़ाक़ में अपना घोषणा-पत्र कहते थे। यह एक प्रस्ताव था। उसे हमारे कोमसामोल संगठन ने पास किया था, और जोर्का, वोलोख़ोव, कुदलाती, जेवेली तथा गोर्कोवस्की ने हाज़िर-जवाबी के अपने अन्तहीन कोष से योगदान देकर इसे गूंथा था। इतना ही नहीं, इसमें व्यापक रूसी दृष्टिकोण तथा अत्यन्त सूक्ष्म गणना का भी पुट मिला था। साथ ही इस में प्रचुर मात्रा और परिमाण में गोर्कीआइटों के अपने मिर्च-मसाले, बिरादराना प्रेम और दुलार भरी बिरादराना क्रूरता की बुकनी भी पड़ी थी।

'घोषणा-पत्र' अब तक एक गुप्त दस्तावेज़ समझा जाता था, हालांकि इसपर बहस करने में काफ़ी लोगों ने हिस्सा लिया था। कुरियाज में ब्यूरो की बैठकों में बार-बार इसपर बहस की जा चुकी थी, और कोलोनी में मेरी वापसी पर कोवाल तथा हमारे कोमसोमोल के सक्रिय सदस्यों ने मिलकर एक बार फिर इसे जांचा-परखा था।

जोर्का ने कुछेक शब्दों में भूमिका पेश की:

"साथी कोलोनीवासियों! हम बेकार इधर-उधर की बातें नहीं करेंगे! समझ में नहीं आ रहा कि शुरू कहां से करना चाहिए। मैं तुम्हें कोमसोमोल संगठन का प्रस्ताव पढ़कर सुना दूं। और तुम्हें पता चल जाएगा कि कहां से हमें शुरू करना है, और किस तरह हर चीज़ चलेगी। हां तो, अब, तुम काम नहीं करते और तुम कोमसोमोल या पायनियर, कुछ भी नहीं हो। तुम बस – शैतान उठा ले जाए तुम्हें – धूल में लोटते हो। मैं जानना चाहता हूं कि तुम क्या हो? किस रोशनी में हम तुम्हें देखें? फ़क़त खटमलों, जुओं, तिलचटों, पिस्सुओं और दुनिया-भर के कीड़ों के लिए खाद्य-केन्द्र हो तुम लोग!"

"तो क्या यह हमारा दोष है?" कोई चिल्लाया।

जोर्का ने तत्परता के साथ इस चुनौती को पकड़ा।

"बेशक, यह तुम्हारा दोष है! यह तुम्हारा – अधिकतर तुम्हारा दोष है! निकम्मा, निठल्ला और कामचोर बनने का तुम्हें क्या अधिकार है? क़तई कोई अधिकार नहीं है! तुम्हें कोई अधिकार नहीं है, और बस! ज़रा इस गंदगी को तो देखो! ऐसी गंदगी में लोटने का भला किसे अधिकार है? हम अपने सूअरों को हर हफ़्ते साबुन से नहलाते हैं – तुम देखना! क्या तुम समझते हो कि एक भी सूअर ऐसा है जो यह चाहता हो कि उसे नहलाया न जाए, या जो यह कहे – 'भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा यह साबुन!' नहीं, सो कुछ नहीं। वे माथा नवाते हैं और कहते हैं – 'धन्यवाद!' और तुम – महीनों से तुमने साबुन की शक्ल तक नहीं देखी!"

"हमें किसी ने दिया हो तब न!" कोई भीड़ में से तीव्र विषाद के साथ चिल्लाया।

जोर्का का गोल-मटोल चेहरा, वर्ग शत्रु के साथ अंधेरे में भिड़न्त के नीले निशान से, जो अभी भी अटा था, गम्भीर हो गया।

"और किसी को क्या ग़रज़ पड़ी है जो तुम्हें साबुन दे? तुम मालिक हो यहां! तुम्हें ख़ुद यह तय करना चाहिए कि किस चीज़ की तुम्हें दरकार है!"

"तुम्हारा मालिक कौन है? शायद मकारेन्को?" किसी ने पूछा, और तुरन्त भीड़ में छिप गया।

आवाज़ की दिशा में सभी के सिर घूम गये, लेकिन जिस जगह से आवाज़ आई थी, वहां घूमते हुए सिरों से बने भंवरों के सिवा और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। हॉल के बीच में, कुछ इने-गिने चेहरे सन्तुष्ट उपहास के चिन्ह प्रकट कर रहे थे।

जोर्का का चेहरा व्यापक मुस्कान से खिला हुआ था।

"बिलकुल गधों के झुंड हो तुम! हम अन्तोन सेम्योनोविच का भरोसा करते हैं, इसलिए कि वह हमारे अपने हैं, और हम सब एक साथ मिलकर काम करते हैं। तुममें से जिसने भी यह सवाल पूछा है, वह निरा गधा है! लेकिन कोई बात नहीं, उस जैसे गधे को भी हम सिखा

सकते हैं। ऐसे जीव मुंह बनाकर मिमियाने के सिवा और कुछ नही कर सकते – "मेरा मालिक कहां है?"

हॉल हंसी की बाढ़ से गूंज उठा। हर जगह अपने मालिक की टोह करनेवाले चेहरे की जोर्का ने इतनी मज़ेदार नक़ल उतारी कि उसने बांध तोड़ दिए।

जोर्का कहता गया:

"सोवियत देश में सर्वहारा और मज़दूर मालिक हैं, लेकिन तुम – तुम सरकार द्वारा प्रदत्त टुकड़ों पर जी रहे हो, और अपने नीचे की धरती को गंदा करने के सिवा तुम और कुछ नहीं कर सकते। तुममें उतनी ही राजनीतिक चेतना है जितनी कि काठ के एक उल्लू में होती है।"

मैं मन-ही-मन एक बेचैनी का अनुभव कर रहा था – कहीं ऐसा तो नहीं कि जोर्का कुरियाजवासियों के साथ ज़रूरत से ज़्यादा सख़्ती से पेश आ रहा हो? क्या उनके साथ थोड़ा और मुलायमियत से पेश आना अच्छा न होता? और तभी पकड़ में न आनेवाली उसी आवाज़ ने फिर चिल्लाकर कहा:

"अब देखना है कि तुम इस धरती पर कौन गुलाबजल छिड़कते हो!"

एक दबी हुई, कुत्सा भरी हंसी की लहर हॉल में लहरा गई।

"तुम यह कर सकते हो, अगर चाहो तो," जोर्का ने गम्भीर हार्दिकता से कहा। संडास की बग़ल में एक आराम-कुर्सी डलवा दूंगा, तुम वहां बैठकर देखते रह सकते हो। तुम्हारे लिए यह बहुत अच्छा होगा। तुम यह भी नहीं जानते कि संडास का कैसे इस्तेमाल किया जाता है। यह कोई बड़ी कला नहीं, फिर भी हरेक को इसे सीखना होता है।"

कुरियाजवासियों के चेहरे लाल हो गए, लेकिन वे अपनी हंसी को नहीं रोक सके। एक-दूसरे पर टिके वे ख़ुशी से दोहरे हो रहे थे। लड़कियों ने चिहुंककर मंच की ओर अपनी पीठें मोड़ लीं, वक्ता पर यह प्रकट करने के लिए कि उसने उनकी कोमल भावनाओं की अवहेलना की है। एक गोर्कीआइट ही ऐसे थे जो, जोर्का की ओर गर्व के साथ देखते हुए, नफ़ासत का खयाल कर अपनी मुसकानों को दबाए थे।

जी भरकर हंसने के बाद कुरियाजवासी अब जोर्का को पहले की अपेक्षा ज़्यादा अच्छी व सम्मानपूर्ण नज़रों से देख रहे थे, मानो उसके मुंह से अभी जो कुछ उन्होंने सुना, वह वास्तव में उनके लिए एक ग्राह्य तथा उपयोगी कार्यक्रम था।

मानव के जीवन में एक कार्यक्रम का तात्त्विक महत्त्व होता है। मूढ़ से मूढ़ जीव भी अपनी आंखों के सामने केवल पहाड़ियों, खाइयों, दलदलों तथा झाड़-झंखाड़ों की विविधता से युक्त अस्पष्ट भू-क्षेत्रों के स्थान पर आगे बढ़ने की राह का हल्का-सा भी संकेत पाता है तो वह अधिक आह्लाद के साथ सामने की ओर देखने लगता है। भले ही यह पगडंडी हो या फिर मोड़ों, पुलों, अग़ल-बग़ल बाग़ानों तथा मील के पत्थरों से पूर्णतया लैस कोई सड़क। वह उससे अनुप्राणित होता है, और अपनी गतिविधि की सुनिश्चित मंज़िलें तय करना शुरू कर देता है। खुद प्रकृति भी अब उसकी आंखों में अधिक अर्थपूर्ण मालूम होने लगती है। वह समझने लगता है कि यह बायां बाज़ू है, यह दाहिना बाज़ू है, यह लम्बा रास्ता है और यह छोटा रास्ता है। दूरदर्शिता को – उसे हम जान-बूझकर भारी महत्त्व देते थे, और इसी भावना के साथ कोमसोमोल संगठन का यह एलान तैयार किया गया था, जिसे जोर्का ने आखिर सभा के समने पढ़ना शुरू किया:

'प्रस्ताव जिसे गोर्की श्रम-कोलोनी के लेनिन तरुण कम्युनिस्ट लीग के संगठन ने २५ मई १९२६ को पास किया।

१. मूल गोर्कीआइटों के, और साथ ही कुरियाजवासियों के भी, तमाम दस्तों को विघटित समझा जाए, और बीस नये दस्तों को तुरन्त संगठित किया जाए जिसके सदस्य इस प्रकार हों... (यहां जोर्का ने प्रत्येक दस्ते में कोलोनीवासियों की सूची पढ़कर सुनाई, और कमाण्डरों के अलग-अलग नाम बताए।)

२. लापोत को कमाण्डरों की परिषद का मंत्री रहने दिया जाए, देनिस कुदलाती संपत्ति-प्रबन्धक हो और अलेक्सेई वोल्कोव भण्डारी का कार्य करें।

३. कमाण्डरों की परिषद प्रस्तुत प्रस्ताव के तमाम नुक़्तों को अपनी देख-संभार में पूरा कराए और नवान्न के दिन – जिसे सम्यक् रूप में मनाया जाए – कोलोनी को, पूर्णतया व्यवस्थित रूप में, शिक्षा की जन-कमिसरियट तथा ज़िला कार्यकारिणी समिति के प्रतिनिधियों के हवाले कर दे।

४. फ़ौरन, अर्थात् १७ मई की शाम तक तमाम कपड़ों, अन्दर पहनने के कपड़ों, बिस्तरे की चादरों, कम्बलों, तोशकों, तौलियों, आदि को, चाहे वे निजी हों या सरकारी, भूतपूर्व कुरियाज कोलोनी के सदस्यों से ले लिया जाए, उसी दिन उन्हें कीटाणुरहित किया जाए और बाद में उनकी मरम्मत की जाए।

५. सभी कोलोनीवासियों को जांघिये तथा अधबहियां क़मीज़ें जारी की जाएं जिन्हें मूल गोर्की कोलोनी की लड़कियों ने तैयार किया है। दूसरी जोड़ी एक सप्ताह बाद जारी की जाए जबकि पहलेवाली धुलने के लिए दी जाए।

६. सभी कोलोनीवासियों के, लड़कियों को छोड़कर, बाल उस्तूरे से साफ़ कर दिए जाएं, और इसके तुरन्त बाद उन्हें मख़मली टोपियां दी जाएं।

७. सभी कोलोनीवासी, जहां भी उनसे बने, आज स्नान करें, धुलाईघर को लड़कियों के लिए छोड़ दें।

८. तमाम दस्ते बाहर खुले में झाड़ियों की छाया में या जहां भी वे चाहें, अपने कमाण्डरों की स्वीकृति लेने के बाद रात को सोएं, जब तक कि पुराने स्कूल में नये शयनागारों की मरम्मत तथा साज-सज्जा का काम पूरा नहीं हो जाए।

९. दस्ते मूल गोर्की कोलोनी से लाई गई तोशकों, कम्बलों और तकियों को सोने के लिए इस्तेमाल करें। दस्तों के सदस्य बिना किसी बहस या भुनभुनाहट के – भले ही वे काफ़ी न हों – साझे में उनका प्रयोग करें।

१०. इस बात को लेकर कोई नहीं झींके या शिकायत करे कि सोने के लिए सुविधा नहीं है, बल्कि इस समस्या को युक्तिपूर्ण ढंग से सुलझाया जाए।

११. कोलोनीवासी दस्तों में दो पालियों में भोजन करें, और एक दस्ते से दूसरे में अदला-बदली की कोई अनुमति नहीं दी जाए।

१२. सफ़ाई पर अत्यन्त ध्यान दिया जाए।

१३. पहली अगस्त तक दर्ज़ीघरों को छोड़कर अन्य किन्हीं वर्कशॉपों में काम नहीं किया जाए, और सारा काम नीचे लिखे निर्देशों के अनुसार किया जाएं:

मठ की दीवार को गिराना और ईंटों से तीन सौ सूअरों के लिए एक सूअरघर का निर्माण करना।

खिड़कियों के तमाम चौखटों, दरवाज़ों, रेलिंगों और पलंगों पर रंग-रोग़न करना।

खेतों और तरकारी-उद्यान में काम करना।

मेज़-कुर्सियों आदि की मरम्मत करना।

अहाते तथा पहाड़ी के सारे ढलवानों को साफ़ करना, पथ बनाना, फूलों की क्यारियां खोदना और एक पौधाघर बनाना।

प्रत्येक कोलोमीवासी के लिए कपड़ों की एक अच्छी जोड़ी तैयार करना, जाड़ों के लिए जूते ख़रीदना। गर्मियों में कोलोनीवासी नंगे-पांव ही काम चलाएं।

तालाब की सफ़ाई करना जिससे कि वह नहाने लायक़ बन जाए।

पहाड़ी के दक्षिणी ढलान पर एक नया बाग़ लगाना।

पहली अगस्त से वर्कशॉपों में इस्तेमाल करने के लिए ख़राद की मशीनों, सामग्रियों तथा औज़ारों को तैयार करना।"

अपनी तमाम प्रत्यक्ष सादगी के बावजूद इस एलान ने हरेक पर भारी प्रभाव डाला। ख़ुद हमें भी, जो इसके रचयिता थे, इसकी रुक्ष

स्पष्टता तथा ज़ोरदार ध्वनि ने चकित किया। इसके अलावा इस बात पर कुरियाजवासियों ने बाद में ख़ास तौर से ध्यान दिया कि इसने सबके सामने यह प्रत्यक्ष कर दिया कि गोर्कीआइटों के आगमन से पूर्व हमारा निष्क्रिय व्यवहार दृढ़ निश्चयों तथा गुप्त तैयारियों के लिए एक नक़ाब मात्र था। और यह कि जितने भी तथ्य उपलब्ध हो सकते थे, उन सबपर समुचित ध्यान दिया गया था।

नये दस्तों को चुनने में कोमसोमोल सदस्यों ने उज्ज्वल प्रतिभा का परिचय दिया था। जोर्का, गोर्कोवस्की और जेवेली की संयुक्त प्रतिभा की बदौलत अत्यन्त शुद्धता के साथ उन्होंने कुरियाजवासियों का विभिन्न दस्तों में वितरण किया था – मित्रता के उनके सूत्रों, शत्रुता की खाइयों, व्यक्तिगत रुझानों, प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं तथा उनकी सनकों को ध्यान में रखते हुए। अग्रिम मिश्रित ने एक पखवाड़े तक शयनागारों के यूं ही बेकार रौंद नहीं लगाए थे।

मूल गोर्कीआइटों के वितरण में भी समान जागरूकता का परिचय दिया गया था – सबल और कमज़ोर, स्फूर्तिवान और शिथिल, रुक्ष और मगन, असल मानवीय जीव और इसी कोटि से मिलते-जुलते अन्य कतिपय बातों का ख़याल करके इन सबके लिए जगह नियत की गई थी।

एलान की दृढ़ता कितने ही मूल गोर्कीआइटों के लिए भी आश्चर्य के रूप में प्रकट हुई और जहां तक कुरियाजवासियों का सम्बन्ध था, जोर्का के मुंह से एलान सुनकर वे पूर्णतया धराशायी हो गए। एलान को सुनने के दौरान कुछ श्रोता अपने पड़ोसियों से उस एकाध शब्द को दोहराने के लिए कहते जो उनसे छूट गया था, जबकि कुछ अन्य, पंजों के बल उचकते, आश्चर्य से अपने पीछे की ओर घूमकर देखते, और जब कोई ख़ास तौर से ज़ोरदार अंश आता तो चकित भाव से 'ओह-हो!' की ध्वनि करते। लेकिन जोर्का ने जब पढ़ना ख़त्म किया तो हॉल में एक सन्नाटा छा गया, पर यह एक ऐसा सन्नाटा था जिसमें अनबोल प्रश्न थरथरा रहे थे – हम अब क्या करें? पलायन, समर्पण, प्रतिवाद, उत्पात – किसका हम दामन पकड़ें? तालियां बजाएं, हंसें या कोसें?

जोर्का ने नम्रता के साथ काग़ज़ के उस टुकड़े को तहाया। लापोत

की आंखें तनिक सूजी हुई पलकों के नीचे से व्यंग्यमय संलग्नता के साथ भीड़ पर घूम गईं, और द्वेषपूर्ण अन्दाज़ में उसकी बत्तीसी झलकी:

"मुझे यह पसन्द नहीं। मैं एक पुराना गोर्कीआइट हूं! अपना निजी बिस्तरा और बिछावन, और अपना निजी कम्बल इस्तेमाल करने का मैं आदी हूं। और अब मुझे झाड़ी के नीचे सोना होगा। और कहां है वह झाड़ी? कुदलाती, तुम मेरे कमाण्डर हो—भला बताओ तो, कहां है वह झाड़ी?"

"है मेरी नज़र में एक! जाने कब से, एक मुद्दत से, तुम्हारे लिए उसे मैं अपनी नज़र में रखे हूं!"

"क्या उस झाड़ी में कुछ है? हो सकता है कि चेरी का या सेब का पेड़ हो? अच्छा हो कि उसमें बुलबुलें भी हों... क्यों कुदलाती, उसमें कुछ बुलबुलें-उलबुलें हैं या नहीं?"

"बुलबुलें तो अभी नहीं हैं, लेकिन हां, गौरैयां हैं।"

"गौरैयां? व्यक्तिगत रूप से मैं गौरैयों का ऐसा कोई ख़ास प्रेमी नहीं हूं। उनका गाना बड़ा फूहड़ होता है और, आप जानो, वे बड़ी गंदी होती हैं। कम-से-कम एकाध मैना या ऐसी ही कुछ और तो उसमें होनी चाहिए।"

"अच्छी बात है, तुम्हें मैना मिल जाएगी," कुदलाती ने हंसते हुए कहा।

"और इसके अलावा... लापोत ने अपने चारों ओर नज़र डाली, इस तरह मानो तरस के लिए मनुहार कर रहा हो। "हमारा दस्ता तीसरा है... ज़रा सूची तो देखें... आ-हु-म-म... तीसरा... एक, दो, तीन... आठ पुराने गोर्कीआइट हैं इसमें। सो इसका मतलब यह कि आठ कम्बल होंगे, आठ तकिए और आठ तोशकें और दस्ते में आदमियों की संख्या है बाईस। मुझे यह पसंद नहीं। और कौन-कौन हैं इसमें? हां तो अब—स्तेग्नी! कहां है स्तेग्नी? ज़रा अपना हाथ तो उठाओ। आओ, ज़रा इधर आओ! डरो नहीं, आओ, चल आओ!"

वेदीय-मंच की ओर एक लड़का बढ़ चला। ऐसा दिखता था जैसे प्रस्तरयुग से न तो वह कभी नहाया था, न उसने अपने बालों को कटाया था। धूप में उसके बालों का रंग उड़ गया था। उसके लाल गालों पर धूल की एक पेचीदा तह जमी थी जिसने अब तड़कना भी शुरू

कर दिया था। स्तेग्नी अचकचाहट के साथ मंच पर खड़े-खड़े हिलने-डुलने लगा। उसके पांवों पर धूल की पपड़ियां चढ़ी थीं, अटपटे अन्दाज़ में अपनी बत्तीसी को वह झलका रहा था और भीड़ की ओर मुंह किए मन्द नज़र से देख रहा था। उसके दांत इतने सफ़ेद थे कि आंखें चौंधिया जाती थीं।

"सो तुम हो वह जिसके साथ कम्बल में मेरा साझा रहेगा! मैं उम्मीद करता हूं कि तुम ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोरों के साथ दुलत्तियां नहीं झाड़ते होगे?"

स्तेग्नी के होंठों पर थूक के झाग उफन आए। उसकी मुट्ठी पर कलौंस चढ़ी थी। शरम के मारे वह झिझका और होंठों को गंदे हाथ से साफ़ करने की अपनी भावना को उसने रोका। इसके बजाय, बेहिसाब लम्बी तथा चिथड़ा हुई अपनी क़मीज़ के छोर से उसने अपना मुंह साफ़ किया।

"नहीं ..."

"चलो, यह एक अच्छी बात है... लेकिन, साथी स्तेग्नी, यह बताओ कि अगर बारिश हुई तो हम क्या करेंगे?"

"भाग खड़े होंगे, ही-ही!"

"कहां?"

एक क्षण सोचने के बाद स्तेग्नी के मुंह से बोल फूटा:

"सो मैं क्या जानूं?"

लापोत ने देनिस की ओर उद्विग्नता से देखा।

"देनिस, अगर बारिश हुई तो हम कहां जाएंगे?"

देनिस आगे बढ़ा, उक्राइनी काइयांपन के साथ अपनी आंखों को सिकोड़ते हुए और भीड़ की ओर देखते हुए।

"यह तो मैं नहीं जानता कि अन्य कमाण्डर इसके बारे में क्या सोचते हैं," उसने कहा, "और सच पूछो तो यह एक ऐसी बात है जो एलान की नज़र से छूट गई। लेकिन मैं इतना कह सकता हूं कि अगर बारिश या और कोई भी चीज़ हुई तो तीसरे दस्ते को इसका ज़रा भी डर नहीं है। नदी काफ़ी नज़दीक है और दस्ते को लेकर मैं बस वहां पहुंच जाऊंगा। एक बार नदी में प्रवेश करने पर बारिश तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी और अगर कहीं तुमने डुबकी लगा ली तो एक

भी बूंद तुम्हारे बदन को नहीं छू सकेगी। यह एकदम सुरक्षित तरीक़ा है और अत्यन्त स्वास्थ्यप्रद भी।"

देनिस ने निश्छल अन्दाज़ से लापोत की ओर देखा और दूसरी ओर चल दिया। लापोत, जैसे अचानक गुस्से से एकदम बौखलाकर, स्तेग्नी पर चिल्लाया, जो इतनी असाधारण घटनाओं को अपने मन में बैठाने में व्यस्त था।

"सुना तुमने?"

"हां, सुना," स्तेग्नी ने किलककर कहा।

"तो फिर हम दोनों एक साथ कम्बल पर सोएंगे – समझे, बुद्धू! लेकिन पहले वहां नदी में ले जाकर तुम्हें धोया-मांजा जाएगा और तुम्हारे सिर की यह घास छीली जाएगी, समझे?"

"हां, समझा," स्तेग्नी मुसकराया। लापोत ने उसके बुद्धूपन का वह चोग़ा उतार दिया जोकि उसने अब तक धारण कर रखा था। वह मंच के छोर के और निकट खिसक आया।

"सब समझ गए न?"

"समझ गए!" कितनी ही जगहों से जवाब में आवाज़ आई।

"अच्छा तो फिर, चूंकि हर चीज़ साफ़ है, इसलिए काम की बात अब होनी चाहिए। यह प्रस्ताव बिला शक, ऐसा कोई ख़ास सुखद नहीं है। लेकिन हमारी आम सभा को इसे पास करना है – इसके सिवा और कोई तरीक़ा नहीं है।"

निराशा से उसने हाथ लहराया, और आंसुओं से रुंधी आवाज़ में बोला:

"जोर्का, वोट लो!"

सभा हंसी से दोहरी हो गई। जोर्का ने अपना हाथ उठाया।

"मैं अब वोट लेने जा रहा हूं। जो हमारे प्रस्ताव के पक्ष में हों, अपने हाथ उठा लें!"

हाथों का एक जंगल खड़ा हो गया। एकाग्र नज़र से अपनी विस्तृत शक्तियों की इन पांतों को मैंने देखा। सभी के साथ उठे थे – कोरोत्कोव के दल के भी जो दरवाज़े के गिर्द जमा था। लड़कियां गम्भीर मृदुता के साथ अपनी गुलाबी हथेलियों को उठाए थीं, मुस्कराते और अपने सिरों को थोड़ा एक ओर को झुकाए। मैं चकित था – यह कैसे हुआ

जो कोरोत्कोव के दस्ते ने भी प्रस्ताव के पक्ष में हाथ उठाया? ख़ुद कोरोत्कोव दीवार से टिका खड़ा था, धीरज के साथ अपने हाथ को ऊंचा उठाए और सुन्दर आंखों को शांत भाव से मंच पर स्थित हमारे लड़कों की ओर मोड़े हुए।

इस क्षण की गम्भीरता को बोरोवोय के आगमन ने भंग कर दिया। वह अत्यन्त उत्साह के साथ भीतर आया, देहरी से लड़खड़ाता और अपने भीमाकार अकार्डियन से कानफोड़ आवाज़ निकालता हुआ "अहा!" वह चिल्लाया। "मालिक आ गए? ज़रा रुको, अब... स्वागत की एक धुन मुझे मालूम है... उसी को मैं बजाऊंगा!"

कोरोत्कोव का हाथ बोरोवोय के कंधे पर आकर टिका और उसने अर्थसूचक नज़र से उसको इशारा किया। बोरोवोय ने अपना सिर पीछे की ओर फेंका, मुंह खोला और ख़ामोश हो गया, लेकिन अपने अकार्डियन को अभी वह तैयारी की मुद्रा में थामे था – संगीत बांध तोड़कर किसी क्षण भी प्रकट हो सकता था।

जोर्का ने मतों का नतीजा घोषित किया:

"प्रस्ताव के पक्ष में – तीन सौ चौवन मत। ख़िलाफ़ – एक भी नहीं। सो हम इसे सर्वसम्मति से पास हुआ मान सकते हैं।"

गोर्कीआइटों ने तालियां बजाईं, मुसकराती हुई नज़रों का आदान-प्रदान करते हुए। अभिव्यक्ति के इस नये रूप को कुरियाजवासियों ने अत्यन्त उल्लास के साथ ग्रहण किया। शायद मठ की स्थापना के बाद पहली बार ही यहां ऐसा देखने में आया था कि गुम्बददार छत मानवसमूह की तालियों की आह्लादपूर्ण ध्वनि से गूंज उठी। छोटे लड़के अपनी उंगलियों को फैलाए देर तक तालियां बजाते रहे – कभी वे हाथों को अपने सिरों से ऊंचा उठाकर बजाते, कभी उन्हें अपने कान के पास लाकर बजाते और बजाए जाते, अगर – अन्त में – ज़दोरोव मंच पर आकर न खड़ा हो गया होता।

वह कब हॉल में आया, इसका मुझे पता तक नहीं चला। प्रत्यक्षतः वह रिजोव से कोई चीज़ लेकर आया था – उसके चेहरे और कपड़ों पर सफ़ेद धब्बे-से लगे थे। सदा की भांति बेदाग़ सफ़ाई और उन्मुक्त तथा निश्छल आह्लाद की छाप छोड़ता मालूम होता था। और अब

भी सभा को सम्बोधित करने से पहले अपनी जादुई मुसकान से उसने उसे सींचा।

"मित्रो, मैं कुछ-एक शब्द कहना चाहता हूं। और वे ये हैं – मैं सबसे पहला कोलोनीवासी हूं, सबसे पुराना। एक समय था, जब मैं सबसे बुरा था। अन्तोन सेम्योनोविच को यह शायद अच्छी तरह याद होगा। और अब मैं तकनोलॉजीकल संस्थान में प्रथम वर्ष का छात्र हूं। सो मैं तुमसे कहता हूं – तुमने अभी एक बढ़िया प्रस्ताव पास किया है, एक शानदार प्रस्ताव, मैं कहता हूं, लेकिन सच जानो, यह एक कठिन प्रस्ताव है – ओह, काफ़ी कठिन!"

उसने अपना सिर झटका, मानो प्रस्ताव की कठोरता से दबा जा रहा हो। हॉल स्नेह भरी हंसी से गूंज उठा।

"लेकिन कठिन हो या और कुछ, तुम लोगों ने इसे पास किया है। तुम्हें यह याद रखना चाहिए। शायद तुममें से इस समय कोई यह भी सोचता हो कि हम इसे पास कर सकते हैं। लेकिन जब इसे पूरा करने का समय आएगा, तब देखा जाएगा। जो भी ऐसा सोचता है, वह इनसान नहीं है, वह चूहा है – अपने घर की पत्तल में छेद करनेवाला! हमारे क़ानून के मुताबिक़ हर उस आदमी के लिए जो प्रस्ताव का पालन नहीं करता, केवल एक ही रास्ता है – और वह है बाहर का दरवाज़ा – वह जा सकता है!"

ज़दोरोव ने अपने सफ़ेद पड़े होंठों को कसकर भींचा, अपनी कसी हुई मुट्ठी को सिर से ऊंचा उठाया।

"बाहर निकालना!" उसने कठोर आवाज़ में कहा, और उसकी कसी हुई मुट्ठी नीचे आ गिरी।

भीड़ निस्तब्ध हो गई, नयी विभीषिकाओं की आशंका से, लेकिन तभी कराबानोव उसके बीच से आगे बढ़ा। वह भी लिथड़ा था, लेकिन किसी काली चीज़ से। चकित निस्तब्धता के वातावरण में उसने पूछा

"किसे बाहर निकालना है? मैं अभी चुटकी बजाते निकाले देता हूं!"

"वह तो ऐसे ही एक आम बात कह रहा था," लापोत ने मुलायमियत से कहा।

"मैं यह आम तौर से भी कर सकता हूं और अन्य किसी तौर

स भी, जैसा तुम चाहो," कराबानोव ने कहा। "लेकिन यह मातमी सूरतें बनाए तुम यहां क्यों बैठे हो – मेले के बीच पादरियों की भांति?"

"सो कुछ नहीं, हम सब ठीक हैं!" एक आवाज़ सुनाई पड़ी।

"ओह, तुम ठीक हो – क्यों? तो फिर ये झुके हुए सिर किस लिए? गाना-बजाना कहां है?"

"यहां, यह लीजिए, संगीत यहां है!" बोरोवोय खुशी से चहका, और उसने अपने अकार्डियन की भाथी खींच दी।

ओह, तो संगीत मौजूद है! तो आओ फिर, घेरा बना लिया जाए! आओ, लड़कियों, आओ, भट्टी के पास बैठकर अपने को बहुत गरमा चुकीं! होपक-नृत्य तुम में से कौन कर सकता है? नताल्का, मेरी गुड्डी! देखो, कितनी सुन्दर है हमारी नताल्का!"

लड़कों ने मुस्तैदी के साथ नताशा पेत्रेन्को की उजली शैतानी भरी आंखों, उसकी नागिन-सी चोटियों और उसकी दमकती हुई मुसकान के बीच झलकते उसके तिरछे दांत की ओर देखा और देखते रहे।

"सो, साथी, तुम होपक-नृत्य की धुन चाहते हो क्यों?" एक कलाविद की भांति सूक्ष्म मुसकान के साथ बोरोवोय ने पूछा और अपने अकार्डियन की भाथी एक बार फिर उसने ज़ोरों से खींची।

"तुम क्या बजाना चाहते हो?"

"मैं वाल्ट्ज़ बजा सकता हूं, तरह-तरह की धुनें बजा सकता हूं, – मैं हर चीज़ बजा सकता हूं।"

"यह सब कुछ बाद में, भई! अभी होपक-नृत्य चलने दो!"

कराबानोव की नृत्य सम्बन्धी रुचि की सरलता पर कृपापूर्ण अन्दाज़ में मुसकराते हुए बोरोवोय ने एक ओर को अपना सिर झुकाया, क्षण-भर जैसे कुछ सोचा, आकस्मिक हरकत के साथ अपने बाजे को लम्बा खींचा और नृत्य की एक निराली, अपना एक अलग व्यक्तित्व रखनेवाली धुन उसने निकाली – चंचल और प्रत्येक स्वर का अलग आभास लिए। कराबानोव ने एक साथ अपनी बाहें फैलाईं, उक्राइनी नृत्य की मुद्रा में बैठा और उन्मत्त स्वच्छन्दता के साथ उसने अपनी टांगों को आगे तथा पीछे की ओर फेंकना शुरू किया। नताशा की पलकें उसके लाल रंगते हुए गालों पर क्षण-भर के लिए फरफराईं और फिर वहीं स्थिर होकर रह गईं। एक बार भी उसने इधर-उधर नहीं देखा और नाव

की भांति फ़र्श पर तैर चली – इतनी तरलता के साथ कि उसके सादे, सुन्दर और अच्छी तरह इस्त्री किए घाघरे में मुश्किल से ही कोई सर-सराहट नज़र आती थी। सेम्योन के जूते की एड़ी की ठोकर से फ़र्श का तख़्ता कराहा और वह नताशा के गिर्द चक्कर लगाने लगा। उसका चेहरा उद्धत मुसकान से खिल गया, ताल-युक्त द्रुत पदचापों से समूचा कमरा गूंज उठा। उसकी चपल टांगें विभ्रांत कर देनेवाली तेज़ी से घूम रही थीं, – इतनी तेज़ी से कि लगता था, जैसे मात्र एक जोड़ी नहीं, बल्कि बीसियों एड़ियां आगे और पीछे की ओर लपक तथा कौंध रही हों। नताशा ने अपनी पलकों को उठाया और एक ऐसी नज़र से अपने साझी की ओर देखा जिसे, खास तौर से होपक-नृत्य के लिए लड़कियां अपने तरकश में सुरक्षित रखती हैं, और जिसका अर्थ होता है: "तुम एक सुहावने लड़के हो, और तुम जानते हो कि किस तरह नाचा जाता है – लेकिन फिर भी देखना, ज़रा संभलकर!"

बोरोवोय ने अपने बाजे को और ज़ोर से झकझोरा, सेम्योन और भी तेज़ी से नाचने लगा, नताशा और भी उल्लास के साथ लहरा चली। उसका घाघरा अब वह न मालूम-सी सरसाहट नहीं कर रहा था, बल्कि उसकी टांगों के इर्द-गिर्द लहरादार भंवर डाल रहा था। कुरियाजवा-सियों ने अपने घेरे को चौड़ा किया, फुर्ती के साथ अपनी नाकों को आस्तीनों से पोंछा और विह्वल होकर चहचहाने लगे। अकार्डियन के थरथराते हुए स्वर, होपक-नृत्य की जीवन्त गतिशील चेष्टाएं, अधिका-धिक बड़े होते वृत्तों में समूचे कमरे में फैल गयी और संगीत की मादक स्वरलहरी ऊंची उठकर छत से टकराने लगी।

अचानक एकदम भीड़ के बीच में से दो हाथ फैले, लापरवाही के साथ ढुलमुल भीड़ को चीरते हुए पेरेत्स अपने दोनों हाथों को कूल्हों पर रखे और कोहनियों को बाहर की ओर निकाले हुए, नृत्य के भंवर में आकर शामिल हो गया। वह अपनी टांग को दाहिने-बाएं फेंकने तथा नताशा की ओर अपनी आंखों को नचाने लगा। कोमल और प्यारी नताशा ने मान के साथ अपनी अधमुंदी आंखों से पेरेत्स के चेहरे पर एक नज़र डाली, कशीदे के काम से युक्त बर्फ़-सी सफ़ेद अपनी आस्तीन को ठीक उसकी नाक के नीचे ले जाकर फरफराया। अचानक

सरल मित्रता की मुसकान से उसका चेहरा खिल गया – एक बुद्धिमान् और ख़याल रखनेवाले मित्र की मुसकान से, एक कोमसोमोल-सदस्य की मुसकान से जो पेरेत्स की ओर मदद का हाथ बढ़ा रहा था।

पेरेत्स इस नज़र को नहीं सह सका। एक अन्तहीन क्षण की अवधि में बेचैनी के साथ उसने अपने इर्द-गिर्द देखा और फिर, मानो अपनी तमाम भीतरी शक्तियों को बिखेरकर, अचानक हवा में उछला, अपनी पुरानी टोपी को उसने फ़र्श पर फेंका, और भंवर के साथ वह ख़ुद भी भंवर बन गया। सेम्योन का चेहरा प्रशस्त मुसकान से खिल गया। नताशा और भी तेज़ गति से कुरियाजवासियों के चेहरों के सामने हवा बनकर तैर चली। पेरेत्स अपने मौलिक ढंग से नाचा – हास्यपूर्ण, उद्धत और बाज़ारू तौर-तरीक़ों का पुट लिए हुए।

चारों ओर नज़र दौड़ाने पर मुझे कोरोत्कोव दिखाई पड़ा। वह अपनी चौकस आंखों को गम्भीरता के साथ सिकोड़े हुए था, भावों की बहुत ही धुंधली परछाइयां उसके गोरे माथे से लेकर थरथराते हुए होंठों तक तैर रही थीं। उसने अपना गला साफ़ किया, पीछे मुड़कर देखा, मेरी स्थिर नज़र से उसकी नज़र की मुठभेड़ हुई। अचानक उसने मेरी ओर बढ़ना शुरू कर दिया। उस समय जब मेरे और उसके बीच दर्शकों में से किसी एक का व्यवधान रह गया था, उसने अपना एक हाथ मेरी ओर फैलाया। फिर भरभरी-सी आवाज़ में बोला :

"अन्तोन सेम्योनोविच, आज मैंने आप से हाल-चाल नहीं पूछा।"

"मिज़ाज तो अच्छे हैं," मैंने मुसकराते और उसकी आंखों में देखते हुए स्वर में स्वर मिलाया।

उसने नृत्य की ओर अपना मुंह घुमाया, मेरी ओर देखने के लिए एक बार फिर अपने आपको बाध्य किया, अपने सिर को झटका और एक ऐसी आवाज़ में जिसे वह आह्लादपूर्ण बनाना चाहता था, लेकिन जो भरभराई हुई बने रहने पर तुली थी, बोला :

"क्या ख़ूब नाचते हैं ये! कुतिया के पूत कहीं के!"

६ परिवर्त्तन

परिवर्त्तन की प्रक्रिया आम सभा के तुरन्त बाद ही शुरू हो गई, और लगभग तीन घंटे इसने लिए – किसी तरह के भी परिवर्त्तन की प्रक्रिया के लिए इसे एक रिकार्ड कहा जा सकता है।

सभा के समाप्त होने की सूचना देते हुए जैसे ही जोर्का ने अपना हाथ लहराया, क्लब शोर-गुल से गूंज उठा। कमाण्डर, अपने पंजों के बल उचक-उचककर, गला फाड़कर चिल्लाते हुए अपने दस्तों के सदस्यों को बुला रहे थे। कमरे में दो दरजन के क़रीब धाराएं बनना शुरू हो गई थीं, और ये धाराएं – कुछ क्षणों तक – कभी एक दूसरे से मिलतीं और कभी एक दूसरे को काटती, प्राचीन गिरजे की दीवारों के भीतर तैर रही थीं। कोनों में, भट्टी की बग़ल में, दीवार की ताक़ों में और कमरे के बीचोंबीच विभिन्न दस्ते अलग-अलग जमा हो गये। प्रत्येक दस्ता मैले-कुचैले लड़कों से भरा था। उनके बीच गोर्की-आइट के सफ़ेद कंधे, बिना किसी उतावलेपन के, हरकत करते नज़र आ रहे थे।

इसके बाद कोलोनीवासी क्लब में से बाहर अहाते में उमड़ आए, और शयनागारों की ओर बढ़ चले। पांच मिनट बीतते न बीतते क्लब तथा अहाते में सन्नाटा छा गया। केवल जब-तब किसी पवनसुत की उड़ती हुई एड़ियों की फरफराहट इस निस्तब्धता को भंग करती, जो अपने दस्ते के किसी ख़ास काम से लपक रहा होता।

मुझे चैन की सांस लेने का अवसर मिला।

गिरजे की पैड़ियों पर स्त्रियों का दल जमा था। मैं ऊंचाई के उस स्थल से घटनाओं का विकास देखने के लिए उधर चला गया। वाणी और विचारों से, कुछ देर के लिए ही सही, छुटकारा पाने के सिवा और कुछ मैं नहीं चाहता था। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना और लीदोच्का, प्रसन्न तथा हल्केपन का अनुभव करतीं, अलस भाव और बिना किसी असर के, साथी ज़ोया के प्रश्नों को निरस्त्र करती थीं। ब्रेगेल पैड़ियों की धूल-धूसरित सलाख़ों के सहारे टिकी थी, और गुल्ययेवा से कह रही थी: "मैं देख रही हूं कि इस सारे आडंबर से व्यवस्था का आभास मिलता है। लेकिन इससे क्या? यह निरा सतही है!"

गुल्ययेवा ने घूमकर मेरी ओर देखा: "अन्तोन सेम्योनोविच, इसका जवाब आप दें। मैं इन सब मामलों को नहीं समझती।"

"सिद्धान्तों के मामले में तो मैं ख़ुद भी ऐसा कोई माहिर नहीं हूं," मैंने वेमन से जवाब दिया।

कोई कुछ नहीं बोला। इसकी बदौलत विश्राम का एक अत्यन्त अल्प क्षण मेरे हाथ लग गया। मैंने अपने इर्द-गिर्द नज़र डाली, और उस अद्भुत चीज़ की एक झांकी ली जिसे हम मुद्दत से दुनिया कहते रहे हैं। लगभग दो बजा होगा। तालाब के उस पार गांव की फूस की छतें धूप में स्नान कर रही थीं। कुरियाज के ऊपर शान्त छोटे-छोटे सफ़ेद बादल छाए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे ख़ास आदेश से यहां तैनात हों, – कोतल-शक्ति के रूप में।

मैं जानता था कि उस क्षण कोलोनी में क्या हो रहा था। लड़के शयनागारों में बिस्तरों को बटोर रहे थे, तकियों और तोशकों से सूखी घास निकाल रहे थे, इन चीज़ों को बंडलों में बांध रहे थे। कम्बल, चादरें, पुराने और नये जूते – सब बंडलों में समा रहे थे। उधर, कोठरी में आल्योश्का वोल्कोव इस सारे कचरे को ग्रहण कर रहा था, दर्ज कर रहा था, उन्हें कीटाणुरहित कराने के लिए भेज रहा था। कीड़ा-मार-टंकी शहर से आई थी। यह पहियों पर स्थित थी और खलिहान में काम कर रही थी। देनिस क्रुदलाती वहां कमान संभाले था। गिरजे की दूसरी ओर पैड़ियों पर, नामों की सूची अपने हाथ में लिए जेवेली दस्ते के कमाण्डरों या उनके प्रतिनिधियों को नये कपड़े तथा साबुन बांट रहा था।

अचानक सिनेन्की, ज़िम्मेदारी के बोझ से दोहरा हुआ, गिरजे की दीवार के मोड़ की ओर से फरफराता हुआ आया।

"तारानेत्स कहता है कि भोजन के कमरे में कमाण्डरों की परिषद की सभा के लिए सिगनल दिया जाए," अपने बिगुल को फहराते हुए उतावली के साथ उसने कहा।

"तो दे दो!"

सिनेन्की ने अपने अदृश्य पंखों को सरसराया और भोजन के कमरे के दरवाज़े की ओर लपक गया। देहरी पर खड़े होते हुए, तीन ध्वनियों के एक लघु सिगनल की कई बार उसने आवृत्ति कीं।

ब्रेगेल जो सिनेन्की को ध्यान से देख रही थी, मेरी ओर मुड़ी। उसने पूछा :

"वह लड़का उन... अर्र... सिगनलों के लिए बार-बार आकर आपसे क्यों पूछता है? आखिर यह ऐसी कौन बड़ी बात है!"

"यह हमारा क़ायदा है – अगर कार्यक्रम से बाहर सिगनल की सूचना देना ज़रूरी है तो मुझे मालूम होना चाहिए।"

"निस्संदेह, यह सब बहुत... भला, क्या कहते हैं उसें – ओह, एकदम आडंबरपूर्ण है – निरा प्रदर्शन! क्या आप यह नहीं मानते?"

मैं झुंझला उठा। आज ऐसे दिन ये क्यों मेरी जान खाने पर तुले हैं? इसके अलावा, इनकी मन्शा क्या है? क्या कुरियाज के लिए उन्हें अफ़सोस है?

"आपके ये तमाम झंडे, और ढोल और सलामी किशोरों को केवल सतही ढंग से संगठित करते हैं!"

जी तो करता था कि कहूं – "मुंह बंद करो!" लेकिन अपेक्षाकृत अधिक विनम्र जवाब से ही मैंने अपने आपको सन्तुष्ट किया।

"ऐसा मालूम होता है जैसे आप किशोरों को, या कहें कि बच्चे को एक तरह का बक्सा समझती हैं जिसका एक ढक्कन – बाहरी हिस्सा होता है, और एक भीतरी हिस्सा – अन्तड़ियां भी। आप शायद सोचती हैं कि हमें अन्तड़ियों के सिवा और किसी चीज़ पर ध्यान नहीं देना चाहिए। फिर भी, अगर उसे ढंग से बंद न किया जाए तो वे तमाम क़ीमती अन्तड़ियां ग़ायब हो जाएं।"

वेत्कोवस्की भोजन के कमरे की ओर दौड़ा जा रहा था। ब्रेगेल की ग़ुस्सा भरी आंखें उसका अनुसरण कर रही थी।

"आप कुछ भी कहो, है यह सब बहुत कुछ फ़ौजी प्रशिक्षण स्कूल की तरह ही..."

"इधर देखो, वरवारा विक्तोरोवना," भरसक शिष्टता के साथ मैंने कहा, "अच्छा हो कि इस बातचीत को ख़त्म कर दिया जाए। इस तरह बात करने से कोई फ़ायदा नहीं, जब तक कि..."

"जब तक कि क्या?"

"जब तक कि साथ में कोई दुभाषिया न हो।"

ब्रेगेल का भारी-भरकम भूरा ढांचा बोझिल अन्दाज़ में सलाखों से अलग हुआ और मेरे ऊपर झुक आया। पीठ के पीछे अपनी मुट्ठियों को मैंने कसा, लेकिन उसने अपने कण्ठ-क्षेत्र के किसी कोने में से बाधित मुस्कान का छोर पकड़ा और उसे अपने चेहरे पर सजा लिया – कुछ वैसे ही फ़ुरसती अन्दाज़ में जैसे कि कोई कमज़ोर दृष्टिवाला आदमी अपने चश्मे को आंखों पर चढ़ाता है।

"दुभाषिये भी मिल जाएंगे, साथी मकारेन्को!"

"तो अच्छा हो, उनके मिलने तक हम इन्तज़ार करें!"

पहला दस्ता फाटक से हमारी ओर आ रहा था। उसके कमाण्डर गुद ने गिरजे की पैड़ियों पर द्रुत नज़र डालते हुए पूछा:

"क्यों, उस्तिमेन्को, तुम कहते हो कि यह दरवाज़ा कभी काम में नहीं लाया जाता?"

उस्तिमेन्को क़रीब पन्द्रह वर्ष का कुरियाज लड़का था। रंग सांवला। उसने दरवाज़े की ओर इशारा किया।

"नहीं, नहीं, वे कभी इस दरवाज़े का इस्तेमाल नहीं करते, मैं कहता जो हूं। इसमें हमेशा ताला पड़ा रहता है। वे उस दरवाज़े को इस्तेमाल करते हैं, और उसे भी, लेकिन यह – इसे वे कभी इस्तेमाल नहीं करते। सच, यक़ीन मानो।"

"वहां बीच में उन्होंने आलमारियां रख छोड़ी हैं। मोमबत्तियां, और दूसरी चीज़ें..." पीछे से आवाज़ आई।

गुद दौड़कर पैड़ियों पर चढ़ गया, इधर-उधर करता रहा और हंस पड़ा:

"इससे बढ़िया और क्या होगा? ओह, शानदार जगह है यह! इतना बढ़िया ओसारा जो यहां बेकार पड़ा है! और ऊपर छत, अगर बारिश हो तो... लेकिन फ़र्श कुछ सख़्त है। या शायद इतना सख़्त नहीं है – क्यों?"

कर्पीन्स्की ने जो एक पुराना गोर्कीआइट तथा गुद के दस्ते में बहुत ही अच्छे जूते बनाना जानता था, प्रसन्नता के साथ पथरीली पैड़ियों पर नज़र डाली।

"यह ज़रा भी सख़्त नहीं है। हमारे पास छः तोशकें हैं और छः कंबल, और हो सकता है कि कुछ और भी मिल जाएं।"

"सो तो है," गुद ने कहा।

वह तालाब की ओर मुड़ा, और इसके बाद निम्न एलान प्रसारित किया :

"हर ख़ास व आम को मालूम हो! इस ओसारे पर पहले दस्ते ने क़ब्ज़ा कर लिया है। और बस! अन्तोन सेम्योनोविच, आप इसके गवाह हैं!"

"बहुत अच्छा!"

"सो अब हम शुरुआत कर सकते हैं... हां तो, कौन-कौन है यहां? लेकिन रुको!"

· गुद ने अपनी जेब में से एक सूची बरामद की।

"स्लीवा और ख़्लेबचेन्को – ज़रा यहां सामने तो आओ।"

ख़्लेबचेन्को एक छोटा-सा, क्षीणकाय और पीतवर्ण लड़का निकला। उसके सीधे काले बाल उसके माथे के आगे निकले थे और नाक पर काले धब्बे लगे थे। उसकी गंदी क़मीज़ उसके घुटनों को छूती थी, और उन जगहों में जहां वह फटी थी, और भी नीचे तक लटक आई थी। वह अपने कंधे के ऊपर से देख और अटपटाकर मुसकरा रहा था। आलोचक की नज़र से गुद ने उसे देखा, इसके बाद स्लीवा की ओर घूम गया। स्लीवा भी उतना ही क्षीण, पीतवर्ण और चिथड़ा बना हुआ था जितना कि ख़्लेबचेन्को। लेकिन क़द में वह काफ़ी ऊंचा था। उसका संकरा सिर उसकी क्षीणतम गरदन पर टिका था और उसके होंठों की मोटाई तथा लाली देखते ही बनती थी। स्लीवा की मुसकराहट से दुःख की झलक मिलती थी। वह अपनी नज़र को पैड़ियों पर जमाए हुए था।

"ख़ुदा ही जाने, वे तुम्हें क्या चराते रहे हैं," गुद ने कहा। "तुम सबके सब इतने दुबले क्यों हो? लावारिस कुत्तों की भांति! दस्ते की खिलाई करनी होगी, अन्तोन सेम्योनोविच! इसे क्या कोई दस्ता कहा जा सकता है? नहीं, पहले दस्ते का यह चौखटा नहीं चलेगा। बस, नहीं चलेगा। खाने की कौन कमी है – नहीं है न? तो फिर ठीक। मैं समझता हूं तुम्हें खाना तो आता है!"

दस्ते में हंसी गूंज गई। गुद ने संदिग्ध भाव से स्लीवा और ख़्लेब-चेन्को के चेहरों पर एक बार फिर नज़र डाली और दुलराते हुए कहा :

"सुनो, स्लीवा और ख़्लेबचेन्को, मेरे चुन्नू और मुन्नू! इस ओसारे को धोकर साफ़ करना होगा – इसी क्षण। क्या तुम जानते हो कि किस चीज़ से धोया जाता है? पानी से। पानी कहां रहना चाहिए? पानी को डोल में रहना चाहिए। कर्पीन्स्की, ज़रा जल्दी करो! मित्का से कहो, हमें झाड़न और डोल दे। और साथ में झाड़ू भी। क्या तुम फ़र्श धोना जानते हो?"

स्लीवा और ख़्लेबचेन्को ने सिर हिलाकर हामी भरी। गुद हमारी ओर मुड़ा, अपनी टोपी को उसने सिर से उतारा, और अपनी पूरी बांह को हवा में फहराया।

"माफ़ करना, प्यारे साथियो, लेकिन इस इलाक़े पर पहले दस्ते ने दख़ल कर लिया है। अब कोई चारा नहीं है। चूंकि यहां बड़े पैमाने पर सफ़ाई का कार्य होने जा रहा है, इसलिए मैं आपको एक सुन्दर जगह दिखाए देता हूं, जहां आपके बैठने के लिए बेंच बिछे हैं। लेकिन यह जगह अब पहले दस्ते के क़ब्ज़े में है।"

पहला दस्ता इस शोभापूर्ण कार्यवाही का अत्यन्त मुग्ध भाव से अनुसरण कर रहा था। बेंचों से युक्त बढ़िया जगह के लिए मैंने गुद को धन्यवाद दिया, लेकिन उसका इस्तेमाल करने के प्रति अनिच्छा प्रकट की।

कर्पीन्स्की डोलों को खड़खड़ाता हुआ उपस्थित हो गया। गुद ने आख़िर आदेश दिए, और प्रसन्नता के साथ अपना हाथ फहराया।

"और अब हजामत के लिए!"

"ब्रेगेल गिरजे की पैड़ियों पर से उतर रही थी, मौन एकाग्रता के साथ अपने पांवों को हरकत करते देख रही थी। मैं हृदय से चाह रहा था कि जितनी जल्दी हमारे ये मेहमान विदा हों, उतना अच्छा है।

ठीक उस ओसारे के सामने जहां जेवेली ने अपनी दुकान सजा रखी थी, दस्तों के प्रतिनिधि पंक्तिबद्ध खड़े हो रहे थे। उनके सहायक तथा 'कुली' लोग जांघियों के नीले तथा क़मीज़ों के सफ़ेद बण्डलों को अपने कंधों पर लाद रहे थे, खड़खड़ाते डोलों को उठा और साबुन के भूरे बक्सों को अपनी बग़ल में दबा रहे थे, ज़िला कार्यकारिणी समिति की कार खड़ी थी, जिसके भीतर से ऊबा हुआ उनींदा ड्राइवर ब्रेगेल की ओर उदास भाव से देख रहा था।

हम चुपचाप बिना कुछ बोले, फाटक की ओर चल रहे थे।

दिशा आदि का मुझे कोई भान नहीं था। अगर मैं अकेला होता तो गिरजे की दीवार की बग़ल में घास पर लेट जाता, और अपने चारों ओर की सृष्टि को पैनी नज़रों से नापता रहता। प्रस्तुत कामों के पूरा होने में अभी क़रीब दो घंटे की देर थी, और तब सारे काम फिर मेरे सिर पर आ मौजूद होंगे। एक शब्द में कहूँ तो उदास ड्राइवर से मुझे पूर्ण सहानुभूति थी।

लेकिन एक सजीव, हंसता और चहकता लड़कों का दल फाटक से जा रहा था। मेरा हृदय फिर हल्का हो गया। यह आठवां दस्ता था। मैंने इसे पहचाना। इसके आगे फ़ेदोरेन्को का शानदार सुघर ढांचा नज़र आ रहा था, और कोरितो, नेचिताइलो और ओलेग ओग्नेव को पहचाना जा सकता था। मेरी नज़र, थोड़ी उलझन के साथ, कुछ अनपहचानी आकृतियों पर जाकर टिकी जो, गोर्कीआइटों के कपड़े पहने हुए थीं। इन कपड़ों को मैं अच्छी तरह पहचानता था। आख़िर मैंने समझा कि ये सब भूतपूर्व कुरियाजवासी हैं, और उनका यह रूप उस परिवर्त्तन का सूचक था जिसके लिए हम पूरे एक पखवारे से श्रम कर रहे थे। साफ़-सुथरे चेहरे और बाल कटे सिरों पर नयी मख़मली टोपी! और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तथा कृतार्थ कर देनेवाली चीज़ थी – नयी ढली, प्रसन्न, विश्वासपूर्ण उनकी नज़रें तथा साफ़-सुथरे और जुओं से मुक्त कपड़ों से सजे जीवों की नवजात कमनीयता।

फ़ेदोरेन्को ने नमित गर्व के साथ जोकि उसकी अपनी विशेषता थी, एक बाजू हटते हुए थोड़ी बोझिल गहरी आवाज़ में कहा:

"अन्तोन सेम्योनोविच, फ़ेदोरेन्को का आठवाँ दस्ता हाज़िर है – बाक़ायदा, पूरी तरह से चौकस। इसे आप ग्रहण कर सकते हैं।"

उसकी बग़ल में ही ओलेग ओग्नेव था। सिर नवाते समय – अछ‍ुवाए-से अन्दाज़ में – उसके लम्बे, स्पन्दनशील होंठ फैल गए थे।

"इन लोगों का बपतिस्मा सम्पन्न हो गया, और इसमें मुझ नाचीज़ का भी थोड़ा योग रहा है। हो सकता है कि मेरे भावी कृत्य कुछ ज़्यादा योग्य सिद्ध न हों, सो इसे आप अपनी नोटबुक में लिख लीजिए।"

मैंने हर्षित होकर ओलेग के कन्धों को दबाया। क्योंकि उसे, फ़ेदोरेन्को को, साथ ही अन्य सभी अद्‌भुत, शानदार छौनों को गले

से लगाने तथा चूमने के लिए मेरा हृदय बरबस अकुला उठा था। नोटबुक की बात छोड़िए, अपने हृदय तक में इस क्षण किसी भी चीज़ को टांक रखना मेरे लिए कठिन होता। दुनिया-भर के विचार, ख़याल, छवियां, पवित्र देवकथाएं, नृत्य की अधीर थिरकनें, एक बाढ़-सी बनकर अचानक मेरे हृदय में उथल-पुथल मचाए थीं। इनमें से किसी एक को मैं मुश्किल से पकड़ भी न पाता कि वह किलबिलाकर निकल भागती और भागकर भीड़ में खो जाती फिर कोई एक नयी चीज़ रसीले अन्दाज़ में पुकारकर अपनी ओर मेरा ध्यान खींचती। "बपतिस्मा और परिवर्तन", मन-ही-मन मैंने कहा, आगे की ओर डग बढ़ाते हुए, "धार्मिक जगह की अभिव्यक्तियां हैं।" लेकिन कोरोत्कोव के मुसकराते चेहरे ने, उसी क्षण, इस मौलिक निष्कर्ष को निश्चिन्ह कर दिया। अरे, हां, खुद मैंने ही तो इसपर बल दिया था – यह कि कोरोत्कोव को आठवें दस्ते में रखा जाए। प्रतिभा के धनी फ़ेदोरेन्को ने, एक ही नज़र में यह भांपते हुए कि मेरे विचार कोरोत्कोव पर केन्द्रित थे, कोरोत्कोव के गले में अपनी वांह डाली, और अपनी भूरी आंखों को न मालूम-से अन्दाज़ में फरफराते हुए कहा:

"अन्तोन सेम्योनोविच, दस्ते के लिए बहुत ही शानदार कोलोनी-वासी आपने हमें दिया है। मैं इससे बातें कर चुका हूं। समय आने पर यह एक अच्छा कमाण्डर सिद्ध होगा!"

गम्भीरता से मेरी आंखों में देखते हुए कोरोत्कोव ने प्रसन्न भाव से कहा:

"मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूं – अभी नहीं, बाद में।"

"तुम भी ख़ूब हो!" फ़ेदोरेन्को ने कहा, कोरोत्कोव के चेहरे पर नज़र डालते हुए जिसमें व्यंग्य का एक सुखद पुट मिला हुआ था। "भला, बात करने को ऐसा है भी क्या? बात-वात करना बेकार है। पता नहीं, लोगों को बात करने की ऐसी क्या रहती है?"

कोरोत्कोव ने भी उत्तर में फ़ेदोरेन्को की शैतानी भरी चेष्टा को दिलचस्पी के साथ देखा:

"मुझे, तुम जानो... कुछ ख़ास बात कहनी है..."

"नहीं, तुम्हें कुछ कहना-वहना नहीं है। यह सब बकवास है!"

"मैं चाहता हूं कि मुझे भी... गिरफ़्तार कर लिया..."

फ़ेदोरेन्को हंसी के मारे दोहरा हो गया।

"सो यह बात है जो तुम चाहते हो! लेकिन, भाई मेरे, यह चीज़ इतनी जल्दी नहीं मिलती! पहले तुम्हें कोलोनीवासी की उपाधि पानी होगी – यह बैज देख रहे हो न? तुम्हें अभी गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता। अगर अभी तुम से कहा जाए – 'अपने आपको गिरफ़्तार समझो!' तो तुम पलटकर जवाब दोगे। तुम कहोगे – 'किस लिए? मैंने ऐसा कुछ नहीं किया!'"

"और अगर सचमुच मैंने कुछ न किया हो तो?"

"देखा तुमने! तुम कुछ नहीं समझते। तुम्हारे लिए यह अति महत्त्वपूर्ण है, यह कि ग़लती से तुम पर अभियोग लगाया गया। लेकिन जब तुम कोलोनीवासी बन जाओगे, तब चीज़ों को दूसरी नज़र से देखोगे .. ओह मैं तुम्हें कैसे समझाऊं? देखो न, सबसे बड़ी चीज़ है अनुशासन, चाहे तुमने कुछ किया हो, या कुछ नहीं किया हो – यह बात कुछ इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है। क्यों मैं ठीक कहता हूं न, अन्तोन सेम्योनोविच?"

मैंने फ़ेदोरेन्को की ओर सिर हिलाकर हामी भरी। ब्रेगेल हमारी ओर देख रही थी, इस तरह जैसे हम खारे पानी के नमूने हों, और उसके गालों ने नीचे लटक आये मांस के झालर का रूप धारण कर लिया, अप्रिय प्रसंग से उसका ध्यान हटाने के लिए मैं उतावली के साथ फ़ेदोरेन्को की ओर उन्मुख हुआ:

"और वह झुंड क्या है? वह कौन है?"

"अरे वह... वह नन्हा-मुन्ना!" फ़ेदोरेन्को ने कहा। "वह भी एक प्यारा जीव है! कहते हैं उसे बुरी तरह पीटा गया।"

"ठीक," मैंने कहा, "यह ज़ाइचेन्को का दस्ता है।"

"उसे किसने मारा?" ब्रेगेल ने पूछा।

"रात को पीटा गया... बेशक, यहां के लोगों द्वारा ही।"

"किस लिए? आपने हमें सूचना क्यों नहीं दी? यह कब हुआ?"

"वरवारा विक्तोरोवना," मैंने कड़ा पड़ते हुए कहा। "बच्चों के साथ यहां, कुरियाज में वर्ष प्रतिवर्ष उठा-पटक की जाती रही है। और चूंकि आपने इसमें इतनी कम दिलचस्पी ली, सो मेरा यह समझना अकारण नहीं था कि यह घटना भी आपके ध्यान देने लायक़ नहीं थी

ख़ास तौर से उस हालत में जबकि मैं ख़ुद इसमें निजी दिलचस्पी ले रहा था।"

ब्रेगेल ने मेरे इस कठोर कथन को रास्ता नापने का संकेत समझा।

"अच्छा तो विदा," उसने सर्दमोहरी से कहा, और कार की दिशा में अपने डग बढ़ाए जिसके भीतर से साथी ज़ोया का चेहरा झांक रहा था।

मैंने सन्तोष की सांस ली, और ज़ाइचेन्को के अठारहवें दस्ते से मिलने चल दिया।

वान्या विजयी अन्दाज़ में अपने दस्ते की अगुवाई कर रहा था। अठारहवें दस्ते में हमने जान-बूझकर केवल कुरियाजवासियों को ही रखा था, जिससे कि दस्ता और उसका कमाण्डर दोनों अपने एक ख़ास महत्त्व का अनुभव कर सकें। वान्या इसे समझ गया। फ़ेदोरेन्को हंसी से दोहरा हो गया।

"ओह, तुम – नन्हे भूतो!"

अठारहवाँ दस्ता सुंदर फ़ौजी अन्दाज़ से बढ़ रहा था। बीस लड़के, चार-चार की पंक्तियों में मार्च कर रहे थे – ख़ूब क़दम मिलाकर, यहां तक कि असली सैनिकों की भांति अपनी बांहों को भी झुलाते हुए। इस ज़ाइचेन्को ने इतने थोड़े समय में ही, इतना अच्छा सैन्यकरण कैसे कर लिया? अठारहवें दस्ते के सैनिकों का उत्साह बढ़ाने के लिए मैंने अपना हाथ ऊंचा उठाया और अपनी टोपी के शिरोभाग का स्पर्श करते हुए, चुस्त अन्दाज़ में कहा:

"अभिवादन, साथियो!"

लेकिन अठारहवाँ दस्ता इस तरह की कार्यवाहियों के लिए तैयार नहीं था। जवाब में लड़के गड़बड़ा गए, और वान्का ने विक्षोभ से अपना हाथ फड़फड़ाया:

"दहकानं कहीं के!"

फ़ेदोरेन्को ने एकदम मुग्ध होकर अपने घुटनों पर हाथ मारा।

"भई वाह! यह तो अभी से इतना विद्वान बन गया!"

तनाव को थोड़ा हल्का करने के लिए मैंने कमान दिया:

"अठारहवाँ दस्ता – ऐट ईज़! अब यह बताओ तुम्हारा स्नान कैसा रहा?"

प्योत्र मालिकोव का चेहरा उज्ज्वल मुसकान से खिल उठा:

"हमारा स्नान? बहुत बढ़िया! क्यों तिम्का, था न बढ़िया?"

ओदरियुक ने अपना सिर मोड़ा और किसी के कंधे से ठीक मुंह सटाते हुए दबी आवाज़ में कह उठा:

"साबुन के साथ..."

ज़ाइचेन्को ने गर्व से मेरी ओर देखा।

"हर रोज़ अब हम साबुन से नहाया करेंगे। ओदरियुक हमारा सम्पत्तिप्रबंधक है। वह देखो!"

उसने भूरे डिब्बे की ओर इशारा किया जिसे ओदरियुक अपने हाथों में थामे था।

"आज हमने साबुन की दो बट्टियां ख़र्च कर डालीं–पूरी दो बट्टियां! लेकिन यह पहला मौक़ा था। अब इतना ख़र्च नहीं करेंगे। और हम आपसे कुछ पूछना चाहते हैं... बेशक, हम भींक नहीं रहे हैं..." वान्का अपने साथियों की ओर मुड़ा–"क्यों, हम भींक नहीं रहे हैं न?" उसने दोहराया।

"ओह, नन्हे भूतो, तुम्हें शैतान उठा ले जाए!" फ़ेदोरेन्को आनन्दातिरेक से छलछलाया।

"हम भींक नहीं रहे हैं, हम भींक नहीं रहे हैं!" नन्हे-मुन्ने चिल्लाए।

वान्या सभी दिशाओं में कई बार घूम गया।

"लेकिन फिर भी, हमें आप से कुछ पूछना है।"

"अच्छा, मैं समझा। तुम भींक नहीं रहे हो, महज़ मुझसे पूछते हो।"

वान्या ने अपने आपको चौकस किया।

"हां, यह ठीक। हमें आप से कुछ पूछना है। अन्य सभी दस्तों में पुराने गोर्कीआइट मौजूद हैं, तीन या पांच, जो भी हों। और यहां कुछ नहीं। एक भी नहीं!"

वान्या की आवाज़ ने चीख की सीमा तक तेज़ होते हुए 'एक भी नहीं' शब्दों का उच्चारण किया। उसने अपने एक फैली हुई उंगली को दाहिने कान के पास से बाहर की ओर फेंका।

इसके बाद वह हंसी में फूट पड़ा।

"एक भी कम्बल नहीं! नहीं! और एक भी तोशक नहीं। नहीं, एक भी नहीं! नाम लेने को भी नहीं!"

वान्या और भी ज़्यादा उत्साह से हंसा, और अठारहवें दस्ते के सदस्य भी उसके साथ हंसी में बह चले।

अठारहवें दस्ते के कमाण्डर को आल्योशा वोल्कोव के नाम मैंने एक पुर्ज़ा दिया – "इन्हें तुरन्त छः तोशकें और छः कम्बल दे दो।"

नदी की ओर जानेवाले पथ पर काफ़ी चहल-पहल और गतिशीलता नज़र आती थी। कोलोनीवासी के दस्ते उसपर से ऐसे गुज़र रहे थे जैसे किसी सैनिक अभियान में हिस्सा ले रहे हों।

अस्तबल के पीछे नरकुलों के बीच चार नाई अपना मोर्चा संभाले थे। वे उसी सुबह शहर से बुलाए गए थे। कुरियाज गंदगी के ढेर कुरियाजवासियों के बदन से उतरकर नीचे गिर रहे थे, और शुरू से ही क़ायम मेरे इस मत की पुष्टि कर रहे थे कि कुरियाजवासी भी वैसे ही लड़के निकलेंगे जैसे कि अन्य – चिलबिले, बातूनी, और कुल मिलाकर ख़ुशी से छलछलाते जीव।

उनकी उस उन्मुक्त ख़ुशी को मैंने देखा जो नये कपड़े पहनने पर उनके चेहरों पर उभर आई थी। वे अपने आपको निरख रहे थे, अप्रत्याशित नफ़ासत के साथ अपनी क़मीज़ों की सलवटों को संवार रहे थे, टोपियों को अपने हाथों में लिए बार-बार घुमा रहे थे। आ-ल्योशा वोल्कोव, निराली सूझ-बूझ का धनी, गिरजे के इर्द-गिर्द जमा दुनिया-भर के अम्बारों को उलट-पलटकर सर्वप्रथम हमारा एकमात्र बड़ा शीशा निकाल लाया – और दो लड़कों ने उसे तुरन्त चबूतरे पर जमा दिया। तुरन्त इसे शीशे के आस-पास लड़कों की एक भीड़ जमा हो गयी – यह देखने के लिए उत्सुक कि इस दुनिया में अब वे कैसे नज़र आ रहे हैं, उनकी छवि उन्हें अब कितनी प्यारी मालूम होती है। कुरियाजवासियों में कितने ही थे जो देखने में सुन्दर थे, और यों पूछो तो अन्य सब की शकल-सूरत में सुधार होना भी अब कोई ज़्यादा दूर की बात नहीं थी। कारण, काम और खाने-पीने का ढर्रा बैठने पर सौन्दर्य को आते देर नहीं लगती।

लड़कियों के बीच विशेष रूप में ख़ुशी का समा छाया था। गोर्की लड़कियां कुरियाज लड़कियों के लिए, ख़ास तौर से उनके लिए, बनाए

हुए ख़ुशनुमा कपड़े साथ लाई थीं – चौड़ी चुन्नटोंवाला नीला सूती घाघरा, बढ़िया सफ़ेद कपड़े का ब्लाउज़, हलके नीले रंग के मोज़ें और जूते। कुदलाती ने लड़कियों को सीने की मशीनें अपने शयनागार में ले जाने दिया। स्त्रियों की, जैसा कि हमेशा होता है, चुहल शुरू हो गई – काट-छांट, पहनकर देखना, उन्हें चुस्त-दुरुस्त करना। कुरियाज धुलाई-घर उस दिन लड़कियों को सौंप दिया गया था। पेरेत्स से भेंट होने पर कड़ाई के साथ मैंने उसे आदेश दिया था:

"काम के कपड़े पहन लड़कियों के लिए धुलाई-घर का बायलर गर्म करो। बिना किसी हुज्जत के। बस जाओ, जल्दी से।"

पेरेत्स का खरोंच लगा चेहरा आगे को खिंच आया, अपने सीने पर उसने हाथ पटका और पूछा:

"आपका मतलब है... मुझे लड़कियों के लिए पानी गर्म करना होगा?"

"हां।"

पेरेत्स ने अपनी तोंद को उभारा, गालों को कुप्पा-सा फुलाया, फ़ौजी अन्दाज़ से सलामी दी, और इतने ज़ोरों से हुंकार भरी कि समूचा मठ उसकी आवाज़ से गूंज उठा:

"लड़कियों के लिए पानी गर्म करना – अच्छा!"

वह निश्चय ही उत्साह से उमगा था, हालांकि उसे कुछ अटपटा-सा भी लग रहा था। लेकिन उत्साह के इस शानदार प्रदर्शन के बाद वह अचानक मन्द पड़ गया।

"काम की पोशाक मैं कहां से लाऊंगा? हमारे नौवें दस्ते को अभी ऐसी पोशाक मिली नहीं..."

"सुनो, मेरे मुनुआ," मैंने पेरेत्स से कहा। "क्या तुम चाहते हो कि मैं ख़ुद ही तुम्हारे कपड़े बदल दूं? हां तो अब, यहां खड़े-खड़े बतियाने में भला कितना समय तुम गंवाना चाहते हो?"

हमारे इर्द-गिर्द खड़े लड़के हंस पड़े। पेरेत्स ने अपना सिर हिलाया, बिना किसी औपचारिकता के कूक उठा:

"मैं करूंगा! ज़रूर करूंगा! आप बेफ़िक्र रहें!"

और वह दौड़ गया।

लापोत ने कमाण्डरों की परिषद की बैठक के लिए इस बार गिरजे

की पैड़ियों पर, जहां गुद के दस्ते ने सोने का निश्चय किया था, फिर से सिगनल दिया।

गिरजे की पैड़ियों पर खड़े होकर लापोत ने निम्न भाषण दिया :

"कमाण्डरो, बैठने की ज़रूरत नहीं, केवल एक या दो मिनट का मामला है। मेहरबानी करके अपने लड़कों को सिखाओ कि वे अपनी नाक किस तरह सिनकें। सारे अहाते में वे इस तरह नाक सिनकते नहीं घूम सकते। एक बात और – नित्यकर्म से निवृत्त होने के बारे में जोर्का सभा में बता चुका है। आल्योश्का ने कूड़े के लिए बक्से लगा दिए हैं, लेकिन लड़के जहां देखो वहीं छितरा देते हैं।"

"इतनी ताबड़तोड़ जल्दी न करें," मुसकराते हुए वेत्कोवस्की चीखा, "बक्सों की अभी चिन्ता छोड़ो। पहले सारी गंदगी का सफ़ाया तो कर लें।"

"सो कुछ नहीं, कोस्तिया! सफ़ाई करना एक बात है, और क़ायदे को निभाना दूसरी ... और तुम सैलानी जीव भी हो! और यह न भूलना – हरेक को अपने नियम से सतर्क करना है। नहीं तो वे बाद में कहेंगे – 'हमें पता नहीं था! हम कैसे जानते!'"

"कौन से नियम के बारे में?"

"थूकने के बारे में ... सब मिलकर दोहराओ!"

लापोत ने हाथ से संचालन किया और हंसते हुए कमाण्डरों ने एक स्वर से दोहराया :

"जो थूके एक बार – धोवे फ़र्श तीन बार।"

कुछ निठल्ले, कमाण्डरों की परिषद के प्रति नवदीक्षितों की भांति भय-मिश्रित थरथराहट का अनुभव करते हुए, मुंह वाए ताक रहे थे। लापोत ने परिषद की सभा को विसर्जित किया और लड़कों ने इस नारे को दस्तों के अस्थायी पड़ावों में पहुंचा दिया। इतना ही नहीं ख़लाबूदा तक के पास वे इस नारे को ले गए जिसने, गायों के बाड़े से निकलकर मुझे आश्चर्य में डाल दिया था – भूसे, धूल और चारे के कणों का पुतला मालूम होता था।

"बुरा हो उन औरतों का!" अपनी गहरी आवाज़ में वह चिल्लाया। "वे मुझे छोड़ गईं, और अब मुझे पैदल स्टेशन घिसटना पड़ेगा। हां, हां, जो थूके एक बार – धोवे फ़र्श तीन बार! शानदार! वित्का –

इस बूढ़े जीव पर दया करो! तुम अस्तबल के मालिक हो – किसी एक को जोत लो और मुझे स्टेशन पहुंचा आओ!"

विल्का ने विशालकाय अन्तोन ब्रातचेन्को की ओर देखा, और अन्तोन, जो वैसी ही गहरी आवाज़ का धनी था, बोला:

"किसी एक को क्यों? गाड़ी में 'मोलोदेत्स' को जोतो, और दादा को पहुंचा आओ! इन्होंने आज 'ज़ोर्का' को ख़ुद पखारा-संवारा है।" और वह खलाबूदा की ओर मुड़ा। "हां तो आओ, हम तुम्हें भी झाड़-पोंछकर अब नफ़ीस बना दें।"

तभी तारानेत्स मेरे पास आया। वह अपनी बांह में मानीटर की पट्टी लगाए हुआ था। प्रत्यक्षतः वह किसी चीज़ से विचलित जान पड़ता था।

"वहां... कुछ कृषिविद अड्डा जमाए हैं... अपने शयनागार से डिगने का नाम नहीं लेते, और कहते हैं – 'हमें दस्ते-वस्ते कुछ नहीं चाहिए!'"

"वहां तो काफ़ी साफ़ है – है न?"

"मैं वहीं था अभी। मैंने उनके बिस्तरों को और खूंटी पर लटकते कपड़ों को परखा। ढेरों जुएं और खटमल।"

"तो चलो, वहां चलकर देखें।"

कृषिविदों का कमरा अत्यन्त गड़बड़ स्थिति में था। साफ़ मालूम होता था कि एक मुद्दत से उसे झाड़ा-बुहारा नहीं गया है। वोस्कोबोइनिकोव ने, जिसे गायों के बाड़े के दस्ते का कमाण्डर नियुक्त किया गया था और उसके दस्ते के दो अन्य सदस्यों ने निर्देशों का पालन किया था, कीटाणुरहित करने के लिए अपनी चीज़ों को दे दिया था। वे वहां से हट गए थे। कृषिविदों के घोंसले में वह सब कूड़ा-कबाड़ अपने पीछे छोड़ गए थे जोकि घर बदलते समय अनिवार्यतः छितरा नज़र आता है। कमरे में कई लड़के रह गए थे। वे मुझसे बेरुखी से मिले। लेकिन मैं यह जानता था और ख़ुद वे भी जानते थे, कि विजय किसकी ओर थी। अब मसला केवल यह था कि किस रूप में वे घुटने टेकें।

"सो तुम लोग आम सभा के प्रस्ताव को नहीं मानना चाहते?" मैंने पूछा।

ख़ामोशी।

"क्या तुम लोग सभा में मौजूद थे?"

ख़ामोशी। तारानेत्स ने उनकी ओर से जवाब दिया:

"नहीं थे।"

"निश्चय पर पहुंचने के लिए काफ़ी समय तुम्हें दिया जा चुका है। तुम अपने को क्या समझते हो – कोलोनीवासी या सरायवासी?"

ख़ामोशी।

"अगर तुम सरायवासी हो तो मैं तुम्हें इस कमरे में दस दिन से ज़्यादा टिकने की इजाज़त नहीं दे सकता। और तुम्हें खाना भी नहीं दिया जाएगा।"

"तो हमें कौन खाना देगा?" स्वात्को ने पूछा।

तारानेत्स मुसकराया:

"क्या विचित्र जीव हैं!"

"मुझे नहीं मालूम," मैंने कहा। "मैं नहीं दूंगा।"

"तो क्या आप आज हमें खाना नहीं देंगे?"

"नहीं।"

"क्या आपके पास न देने का अधिकार है?"

"हां।"

"और अगर हम काम करेंगे?"

"केवल कोलोनीवासी यहां काम करेंगे।"

"हम कोलोनीवासी बन जाएंगे, लेकिन रहेंगे इसी कमरे में।"

"नहीं।"

"तो हम क्या करें, फिर?"

मैंने अपनी घड़ी निकाली।

"सोचने के लिए मैं तुम्हें पांच मिनट देता हूं। जो निश्चय करो, मानीटर को बता देना।"

"अच्छा!" तारानेत्स ने कहा।

आधे घंटे के बाद मैं फिर कृषिविदों की कोठरी के पास से गुज़रा। आल्योश्का वोल्कोव दरवाज़े में ताला लगा रहा था। तारानेत्स Ex officio पास खड़ा था।

"तो उन्होंने ख़ाली कर दिया?"

"हां-हां!" तारानेत्स हंसा।

"क्या वे सब भिन्न दस्तों में हैं?"

"हां। भिन्न दस्तों में – भिन्न दस्तों में एक-एक।"

डेढ़ घंटे बाद भोजन के कमरे में शानदार भोज हुआ, सफ़ेद मेज़पोशों से लक़दक़ मेज़ों पर। भोजन का कमरा इतना बदला हुआ था कि पहचान में नहीं आता था। अग्रिम दस्ता तड़के ही उठ गया था। उसने धुलाई-पोंछाई की, दीवारों को टहनियों और फूलों से सजाया। और गोर्कीआइटों के स्टेशन से आते ही आल्योशा वोल्कोव ने, पहले से तय निर्देशों के अनुसार, दीवारों पर लेनिन, स्तालिन, वोरोशीलोव और गोर्की के छवि-चित्र तथा शेलापूतिन और तोस्का ने नारे तथा अभिनन्दनसूचक फरहरे छत से लटका दिए थे, और इन सबके बीच, वह सूचना भी दर्शकों के ऊपर फहरा रही थी जिसपर अंकित था:

भौंकना मना है!

कुरियाजवासी नमे-दबे और पूर्णतया परास्त बाल छंटे हुए, नहाए-धोए, सब नयी सफ़ेद क़मीजें पहने हुए, गोर्कीआइटों के संकरे, चुस्त-दुरुस्त चौखटे में कसे थे, जिससे बचकर भाग सकना सम्भवतः अब उनके बस का नहीं था। वे चुपचाप अपनी जगहों पर बैठे थे, हाथों को अपने घुटनों पर जोड़े और मेज़ पर रखी रकाबियों में रोटियों के अम्बारों तथा पानी की पारदर्शक सुराहियों की ओर गहरी श्रद्धा के साथ देखते हुए।

सफ़ेद एप्रन से लैस लड़कियां और सफ़ेद खोलों से सज्जित जेवेली, शेलापूतिन तथा बेलूखिन निःशब्द इधर से उधर थिरक रहे थे, फुस-फुसाहट में शब्दों का आदान-प्रदान तथा छुरी-कांटों की आखिरी पांतों को संवार रहे थे, कहीं किसी चीज़ की वृद्धि करते और कहीं किसी व्यक्ति के लिए जगह बनाते हुए। कुरियाजवासी हताश होकर, सैनेटोरियम के रोगियों की भांति, अपने आपको उनके हवाले किए हुए थे। बेलूखिन उत्कण्ठा के साथ उनकी – मानो वे सचमुच में रोगी हों – देख-संभार कर रहा था।

छवि-चित्रों की बग़ल में, एक ख़ाली स्थल पर, मैंने मोर्चा जमाया। यहां से मैं इस नख़लिस्तान के ठीक आख़िरी छोर तक देख सकता था जो, मानो किसी जादू के ज़ोर से मठरूपी इस भ्रष्ट रेगिस्तान के बीच लहरा उठा था। कमरे में अजीब निस्तब्धता थी, ऐसी निस्तब्धता जो लाल रंगते हुए गालों, चमकती हुई आंखों और संकुचित कमनीयता में न्याय की चेतना तथा नवजन्म के रहस्य का वोध कराती तैर रही थी।

एक-एक करके, निःशब्द और जाने कब, बिगुल और ढोलवादक भीतर सरसरा आए – चेहरे तमतमाए हुए और व्यग्र, वे दीवार के सहारे सावधानी के साथ पांत में खड़े हो गये। अब हरेक की नज़र उनकी ओर गयी और इसके बाद – भोजन को भूल – सबकी आंखें जैसे वहीं, उनके ऊपर जाम होकर रह गईं।

तारानेत्स देहरी पर प्रकट हुआ।

"झंडे की सलामी के लिए खड़े हो! सावधान!"

गोर्कीआइट सीधे खड़े हो गए। कुरियाजवासी चकित रह गये। उठने की कोशिश में उन्होंने अभी मुश्किल से मेज़ के छोरों पर हाथ रखे ही होंगे कि एक और चीज़ ने उनके आश्चर्य में वृद्धि कर दी। इस बार हमारा आर्केस्ट्रा गूँज उठा था।

तारानेत्स हमारे ध्वज को भीतर ले आया। अब उसपर ग़िलाफ़ नहीं चढ़ा था। उसकी लाल रेशमी परतें, आह्लाद से सरसरा तथा साहस के साथ लहरा रही थीं। छवि-चित्रों की छांव में आकर ध्वज स्थिर हो गया। अपनी उपस्थिति मात्र से भोजन के हमारे कमरे को एक सोवियत उत्सवी आभा प्रदान करने लगा।

"बैठ जाओ।"

कोलोनीवासियों के सम्मुख मैंने संक्षेप में एक भाषण दिया जिसमें न तो मैंने काम का कोई ज़िक्र किया और न अनुशासन का। न तो मैंने उन्हें अपने दायित्वों की याद दिलाई, न किसी तरह की कोई आशंका प्रकट की। मैंने केवल उन्हें बधाई दी – इसलिए कि नया जीवन वे शुरू कर रहे हैं। मैंने विश्वास प्रकट किया कि उनका यह जीवन उतना ही शानदार होगा जितना शानदार कि एक मानवीय जीवन हो सकता है।

"हम अब एक सुन्दर, आह्लादपूर्ण तथा सुसंगत जीवन बिताने जा रहे हैं," मैंने उन्हें बताया, "क्योंकि हम मानव हैं, क्योंकि हमारे मस्तिष्क हैं और क्योंकि हम ऐसा चाहते हैं। और कौन है जो हमें रोक सके? हमें हमारे काम और हमारी आय से वंचित करनेवाले लोगों का अब कोई अस्तित्व नहीं है। हमारे सोवियत संघ में ऐसे लोग नहीं हैं। और ज़रा देखो तो, कैसे लोग अब हमारे इर्द-गिर्द मौजूद हैं। ज़रा देखो – एक पुराना कामगार और छापामार सैनिक जो आज दिन-भर हमारे साथ रहा – साथी ख़लाबूदा। गाड़ी को शंट करने में, सामान उतारने में और घोड़ों को साफ़ करने में उसने हमारा हाथ बंटाया। इतने अच्छे लोग हैं हमारे चारों ओर कि जब हम गिनना शुरू करें तो कभी अन्त तक न पहुंच सकें – अच्छे लोग, महान लोग, हमारे नेता, हमारे बोल्शेविक, जो हमारा ख़याल रखते हैं, जो हमारी मदद करना चाहते हैं। मैं तुम्हें दो ख़त पढ़कर सुनाना चाहता हूँ। तुम देखोगे कि तुम अकेले नहीं हो, कि तुम्हारी देख-संभार और तुम्हें प्यार करनेवाले मौजूद हैं.

मक्सिम गोर्की का पत्र
ख़ारकोव कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष के नाम

"**गोर्की** कोलोनी की मदद और उसका ख़याल रखने के लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूं।

केवल पत्र-व्यवहार द्वारा जोकि लड़के-लड़कियों तथा उनके संचालक के साथ मैंने किया है, मैं कोलोनी से परिचित हो गया हूँ लेकिन मैं अनुभव करता हूं कि कोलोनी सक्रिय मदद तथा गम्भीरता के साथ ध्यान दिए जाने की अधिकारिणी है।

लावारिस बच्चों में अपराध-वृत्ति निरन्तर बढ़ रही है, शानदार स्वस्थ अंकुरों के साथ-साथ रुग्ण तत्त्व उभर रहे हैं। आशा है कि इस तरह की कोलोनियां – जिनमें से एक को आप अपना सहारा दे चुके हैं – रुग्ण तत्त्वों के विरुद्ध संघर्ष का रास्ता खोलेंगी और, जैसा कि सिद्ध

हो चुका है, बुराई को भलाई में परिवर्तित करने में सफल होंगी।

साथी, मैं आपके श्रेष्ठतम स्वास्थ्य और उत्साह की, और आपके कठिन कार्य में सफलता की कामना करता हूं।

म० गोर्की।"

ख़ारकोव कार्यकारिणी समिति की ओर से मक्सिम गोर्की को जवाब

"प्रिय साथी,

बच्चों की कोलोनी के प्रति, उस कोलोनी के प्रति जो आपका नाम धारण किए है, जो संलग्नता आपने दिखाई है उसके लिए ख़ारकोव ज़िला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष-मंडल की ओर से गहरी कृतज्ञता स्वीकार करने की कृपा करें।

बच्चों की लावारिसी तथा बाल-अपराधों के विरुद्ध संघर्ष से सम्बन्धित समस्याओं पर हम विशेष रूप से ध्यान दे रहे हैं। वे हमें बाध्य करती हैं कि लावारिसों को शिक्षित करने तथा उन्हें स्वस्थ कामकाजी जीवन के अनुकूल ढालने के लिए हम अत्यन्त गम्भीर क़दम उठाएं।

निस्सन्देह यह एक अत्यन्त कठिन कार्य है जिसकी पूर्त्ति में समय का लगना अनिवार्य है, लेकिन हमने उससे जूझना शुरू भी कर दिया है।

कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष-मडल को यक़ीन है कि कोलोनी का कार्य अपनी नयी परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करेगा। निकट भविष्य में इस काम का और अधिक विस्तार किया जाएगा, और संयुक्त प्रयासों के द्वारा उस ऊंचाई पर इसे पहुँचाया जायेगा जिस ऊंचाई पर आपका नाम धारण करनेवाली कोलोनी को पहुंचना चाहिए।

प्रिय साथी, हम सच्चे हृदय से अपनी शुभकामनाएं

प्रकट करने की अनुमति चाहते हैं—आपके स्वास्थ्य और शक्ति लाभ के लिए, आगे और भी उपयोगी गतिविधियों तथा आपके भावी कार्यों के लिए।"

इन पत्रों को पढ़ते समय काग़ज़ के छोर के ऊपर से, मैं कोलोनीवासी की ओर बराबर देखता जाता था। वे मुझे सुन रहे होते, और ऐसा प्रतीत होता था जैसे उनकी आत्माएं, बिना किसी संकोच के, उनकी चकित तथा आह्लादपूर्ण आंखों में उभर आई थीं। इसी के साथ-साथ, इस नयी दुनिया का समूचा रहस्य तथा विस्तार, उनकी आंखों में समा नहीं पा रहा था। उनमें से कितने ही कोहनियों के सहारे टिके अपनी गरदनों को आगे मेरी दिशा में उचकाए थे। रवफ़ाक-छात्र दीवार से टिके खड़े थे और स्वप्निल भाव-भंगिमा में मुसकरा रहे थे। लड़कियां अपनी आंखों को सोख रही थीं, साहसी लड़के चोरी-छिपे उनकी ओर देख रहे थे। मेरे दाहिनी ओर एक मेज़ पर कोरोत्कोव बैठा था। उसकी सुन्दर भौंहें किसी सोच में रह-रहकर बल खा रही थीं। ख़ोवराख़, कष्टप्रद ढंग से अपने गालों को अपनी मुट्ठियों के शिकंजे में कसे बाहर की ओर देख रहा था।

जैसे ही मैंने पढ़ना ख़त्म किया मेज़ों के पीछे से गति और वाणी की एक लहर-सी उमड़ पड़ी, लेकिन करावानोव ने अपना हाथ उठाया।

"तुम जानते हो कि क्या? भला, कहना-सुनना क्या है हमें? ऊंहुक, हमें... ओह कम्बख़्त... गाना चाहिए, चिचियाना नहीं। हां तो, शुरू करें... लेकिन क़ायदे से... 'इंटर्नेशनल'।"

लड़कों ने सस्वर अपना सन्तोष प्रकट किया, लेकिन मैंने देखा कि कितने ही कुरियाजवासी कुछ परेशान और चुप-से हो गये थे। मैंने अनुमान लगाया कि वे 'इंटर्नेशनल' के बोल नहीं जानते।

लापोत एक बेंच पर चढ़ गया।

"हां तो, लड़कियो, ज़ोर से गाओ!"

उसने अपना हाथ फरफराया और हम गाने लगे।

बड़े आह्लाद से और मुसकराते हुए हमने अपना राष्ट्र-गीत गाया, प्रत्येक पंक्ति हमारे आए दिन के जीवन के साथ घनिष्ठ रूप में घुल-मिल गई थी। लड़कों ने लापोत की ओर अपनी आंखें बिचकाईं, उसकी

स्वांग और उत्कण्ठा से पूर्ण भाव-भंगिमा का बरबस अनुसरण करते हुए, जिसके द्वारा वह सब मानवीय भावना को प्रतिबिम्बित करने में सक्षम मालूम होता था। और जब हमने इन पंक्तियों को गाया:

इंटर्नेशनल प्रदान करेगा
मानव के अधिकार!

उसने प्रभावपूर्ण ढंग से हमारे बिगुलवादकों की ओर इशारा किया जो हमारे समवेतगान में योगदान कर रहे थे।

हमने गाना ख़त्म किया। मातवेई बेलूख़िन ने अपना सफ़ेद रूमाल हिलाया और रसोई-घर की ओर खुलनेवाली खिड़की की दिशा में चिल्लाकर कहा:

"कल-हंस, मधुपेय, बीयर, वोद्का और अन्य सारी बढ़िया चीज़ें हाज़िर करो, हरेक के लिए आईसक्रीम से लबालब रकाबियां भी!"

अपनी विह्वल आंखों को मातवेई पर स्थिर करते हुए लड़के ज़ोर से हंसे। उत्तर में मातवेई का चेहरा भी मित्रतापूर्ण ढंग से खिल उठा। उसने अपने समतल स्वर में कहा: "वोद्का और अन्य नफ़ासतें तो, प्रिय साथियो, वे नहीं लाये हैं, लेकिन आईसक्रीम ज़रूर होगी – सच, ज़रूर होगी! हां तो अब, अपना शोरबा खाना शुरू करो!"

भली और मित्रतापूर्ण मुसकानें भोजन के कमरे में तैर गईं। मेरी नज़र भी उनके साथ-साथ तैर चली और अप्रत्याशित रूप में ज़ुरिन्स्काया की बरबट्टा-सी खुली आंखों पर जा टिकी। वह देहरी पर खड़ी थी, और उसकी ओट में से यूरियेव का मुसकराता हुआ चेहरा झांक रहा था। मैं लपककर उनके पास पहुंचा।

ज़ुरिन्स्काया ने खोए-से अन्दाज़ में मुझसे हाथ मिलाया। बाल छंटे हुए सिर की पांतों, सफ़ेद कंधों और मित्रतापूर्ण मुस्कानों से अपने आपको अछूता रखने में वह असमर्थ थी।

"यह सब क्या है, अन्तोन सेम्योनोविच? ज़रा रुको! क्या ऐसा हो सकता है?" उसके होंठ थरथराये। "क्या ये सब तुम्हारे हैं? और वे... वे कहां हैं? ज़रा बताओ तो यहां यह क्या हो रहा है?"

"क्या हो रहा है? ख़ुदा ही जाने कि क्या हो रहा है... मेरी समझ से यह वैसा ही कुछ है जिसे लोग परिवर्तन कहते हैं। तुम जानो.. ये सब हमारे ही हैं!"

१०. देवलोक के पदतल में

मई और जून के महीने कुरियाज में श्रम में बीते। उस श्रम का उल्लास व उमंग की भाषा में यहां ज़िक्र किया जाये, ऐसा मेरा इरादा नहीं है।

अगर श्रम को गम्भीर भावना के साथ देखा जाए तो यह मानना पड़ेगा कि वह बोझिल, अरुचिकर, ग़ैरदिलचस्प भी होता है। धीरज तथा कष्ट पर क़ाबू पानेवाले स्वभाव की उसके लिए ज़रूरत होती है। और अत्यधिक श्रम को तो केवल इसी लिए सम्पन्न करना सम्भव होता है कि मानव ने कष्ट उठाना और सहन करना सीख लिया है।

श्रम के बोझ और उसके प्रति शरीर की सहज विरक्ति से अपनी पटरी बैठाना लोगों ने बहुत पहले सीख लिया था, लेकिन इस पटरी बैठाने की जिन और जैसी व्याख्याओं का प्रतिपादन किया जाता है – वे हमारे मस्तिष्क को हमेशा सन्तोष प्रदान नहीं करतीं। मानव-प्रकृति की कमज़ोरी को मानकर हम अभी भी निजी सन्तोष तथा स्वहित जैसे प्रेरक उद्देश्यों को सहन करते हैं, साथ ही इस बात की भी अडिग कोशिश करते हैं कि उनके स्थान पर सामूहिक हितों की व्यापक प्रेरणा को स्थापित किया जाये। लेकिन इस सम्बन्ध में उठी कतिपय समस्याओं से कितनी ही अत्यन्त उलझन में डालनेवाली प्रकृति की होती हैं, और कुरियाज में हमें, बिना किसी ख़ास बाहरी मदद के, उन्हें हल करना था।

किसी दिन सच्चा शिक्षा-विज्ञान इन समस्याओं की व्याख्या तथा मानवीय प्रयास की मेकैनिक्स का विश्लेषण करेगा, बतायेगा कि किस अनुपात में इच्छाशक्ति, आत्माभिमान, अनुसरण, भय और होड़ का इसमें हाथ होता है, और कितने परिमाण में विशुद्ध चेतनता, विश्वास और समझ-बूझ की प्रक्रिया इस सब में योग देती है। मेरा निजी अनुभव, प्रसंगवश, इस सिद्धान्त की पुष्टि करता है कि विशुद्ध चेतना और शारीरिक व्यय के तत्त्वों के बीच काफ़ी अधिक फ़ासला है, और यह कि इन दोनों को जोड़नेवाली कड़ियों के रूप में अधिक आदिम तथा भौतिक तत्त्वों का होना नितान्त आवश्यक है।

चेतना की समस्या बड़ी सफलता के साथ कुरियाज में गोर्कीआइटों

के आने के दिन हल कर ली गई। एक दिन के भीतर ही कुरियाज भीड़ में यह विश्वास जगा दिया गया कि नये आये हुए दस्ते उनके लिए एक अच्छा जीवन लेकर आये हैं, कि अनुभवी जन उनकी मदद के लिए आ गये हैं, कि उन्हें इन लोगों के साथ आगे बढ़ना होगा। यहां तक कि निर्णयात्मक तत्त्व की भूमिका लाभ की भावनाओं ने नहीं, बल्कि – बिला शक – सामूहिक सुझाव-प्रक्रिया ने अदा की थी – हिसाबी गणना ने नहीं, बल्कि आंखों, कानों, आवाज़ों और हंसी ने अदा की थी। और फिर भी, इस पहले दिन के परिणामस्वरूप, बिना किसी छिपाव के, कुरियाजवासी गोर्की समूह का सदस्य बनने के लिए व्यग्र थे। क्योंकि वह एक समूह था – जीवन की उन मधुरताओं में से एक था जिन्हें उन्होंने अब से पहले नहीं चखा था।

लेकिन अब तक केवल चेतना को ही हम अपनी ओर जीत सके थे, और यह बहुत ही कम था। ठीक अगले ही दिन, अपनी सम्पूर्ण पेचीदगी के साथ, इस कमी का दृश्य देखने को मिल गया। विगत सांझ, घोषणा-पत्र में नियोजित विभिन्न कामों के लिए मिश्रित दस्तों का संगठन किया गया था। क़रीब प्रत्येक दस्ते के साथ या तो शिक्षकों या वयस्क गोर्कीआइटों को नियुक्त किया गया था। कुरियाजवासियों की मनोस्थिति सुबह से ही शानदार थी। फिर भी भोजन का समय होने तक पता चला कि उन्होंने बहुत ही कम काम किया है। भोजन के बाद उनमें से कितने ही अपने काम पर पहुंचे तक नहीं बल्कि इधर-उधर छिपकर पड़े रहे, जबकि अन्य – आदत से मजबूर – शहर और रिजोव की ओर टुरक गये।

खुद मैंने सभी मिश्रित दस्तों का जाकर निरीक्षण किया – हर जगह एक ही हाल था। हर जगह बहुत ही अल्प परिमाण में, गोर्कीआइटों की बुकनी और कुरियाजवासियों का प्रत्यक्ष बाहुल्य आंखों के सामने उभरकर आता था। इस बात का ख़तरा था कि कहीं कुरियाजवासियों के काम करने का ढंग उनपर भी हावी न हो जाये, खास तौर से इसलिए कि मूल गोर्कीआइटों में नये लोगों की संख्या काफ़ी थी, और जो पुराने थे उनमें से भी कितनों के कुरियाजवासियों के साथ बह जाने तथा एक सक्रिय शक्ति के रूप में एकदम विलीन हो जाने की आशंका निराधार नहीं थी।

बाह्य अनुशासन से सम्बन्धित क़दम उठाना खतरनाक होता – वैसा क़दम एक परिपक्व समूह के लिए सुसंगत तथा कारगर सिद्ध होता है। पर अनुशासनहीन बहुत मात्रा में थे, उनसे निबटना कठिन भी होता, और अकारगर भी। इसके लिए अधिक समय की ज़रूरत थी। कारण, दण्ड देने की कार्रवाई केवल तभी कुछ काम देती है जब वह व्यक्ति को पंक्तियों से अलग कर सके, और जब जनमत के सुदृढ़ दण्ड का बल उसे प्राप्त हो। फिर, शारीरिक प्रयासों के संगठन के क्षेत्र में बाह्य उपाय सबसे कम कारगर होते हैं।

कम अनुभवी आदमी निम्न बातों के सहारे अपने आपको सन्तोष दे सकता था – लड़के अभी श्रम के अभ्यस्त नहीं हैं, अभी चीज़ों से उनकी कुछ जान-पहचान नहीं हुई है, वे नहीं जानते कि काम कैसे किया जाये, अपने साथियों के काम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की अभी उन्हें आदत नहीं पड़ी हैं, श्रम में गौरव की उस भावना का अभी उनमें अभाव है, जो एक समूह के सदस्यों की विशेषता होती है, और यह कि इन सब चीज़ों को एक ही दिन में हासिल नहीं किया जा सकता। ऐसी चीज़ों के लिए समय चाहिए। दुर्भाग्य से, मैं इस सन्तोष से अपने आपको सन्तुष्ट नहीं कर सका। मैं इस निर्मम नियम से पूर्णतया अवगत था – यह कि शिक्षा की प्रक्रिया में सरल निर्भरता जैसी कोई चीज़ नहीं है जिसका सहारा लिया जा सके, तुकदार नुसख़े की, द्रुत निगमनात्मक छलांग की यहां दाल नहीं गलती।

कुरियाज की हालत में जैसी भी वह थी मई के महीने में, संयुक्त प्रयासों के धीमी, फ़ुरसती विकास ने काम की आम शैली पर हावी होने और मूल गोर्कीआइटों के स्प्रिंगदार, द्रुत तथा शुद्ध तरीक़ों में – उनके काम की गति में – अटकाव डालना शुरू कर दिया।

शिक्षा शास्त्र ने शैली और प्रचलित वातावरण की हमेशा उपेक्षा की है, लेकिन वस्तुतः यह गुण सामूहिक शिक्षा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शीर्षकों के अन्तर्गत आते हैं। शैली एक नाज़ुक तथा शीघ्र ही नष्ट हो जानेवाली चीज़ है। सतत देख-भाल और नित्यप्रति सावधानी की वह अपेक्षा रखती है। उसे ठीक वैसे ही पालना-पोसना होता है जैसे कि फूलों की एक क्यारी को। आनन-फ़ानन में उसका निर्माण नहीं किया जा सकता। परम्पराओं के संचय के बिना उसकी कल्पना तक नहीं की

जा सकती – अर्थात् ऐसी मान्यताओं तथा आदतों की उसे ज़रूरत होती है जिन्हें अकेले चेतना ने ही स्वीकार नहीं किया है, बल्कि जो पुरानी पीढ़ियों के अनुभव के प्रति, प्रस्तुत समूह के व्यापक अधिकारत्व के प्रति, सजग सम्मान द्वारा भी स्वीकृत हैं, बच्चों की कतिपय संस्थाओं की विफलता की ज़िम्मेदारी इस तथ्य को दी जा सकती है कि न तो वे किसी शैली की रचना कर सकीं, न आदतों की, न परम्पराओं की, या फिर यह – जहां उन्होंने ऐसा करना शुरू भी किया – वहां शिक्षा-इन्स्पैक्टरों ने नियमानुसार उन्हें नज़र-अन्दाज़ किया – सो भी, बिला शक, अत्यन्त सराहनीय मान्यताओं से प्रेरित होकर। इसी का यह फल है जो समाज-शिक्षा के 'बालक' को हमेशा किसी भी प्रकार की – सुदीर्घ या अल्पकालीन – परम्पराओं से शून्य जीवन बिताना पड़ा है।

इस तथ्य की वजह से कि कुरियाजवासियों की चेतना को हमने जीत लिया था, मेरे लिए खुद बच्चों के साथ अधिक घनिष्ठ तथा विश्वासपूर्ण सम्बन्ध क़ायम करना सम्भव हो गया। लेकिन इतना ही काफ़ी नहीं था। सच्ची विजय के लिए शैक्षणिक तकनीक पर पूर्णतम दक्षता की ज़रूरत थी। तकनीक के इस क्षेत्र में मैं अभी भी उतना ही एकाकी था जितना कि १६२० में, हालांकि मैं अब उतने हास्यजनक रूप में कोरा नहीं था। मेरा एकाकीपन एक विशिष्ट प्रकार का था। शिक्षकों और बच्चों के समूह में अब मेरे समर्थकों का एक ठोस दल मौजूद था। ऐसी शक्तियों को लेकर मैं अत्यन्त पेचीदा अभियानों को हाथ में लेने का बीड़ा उठा सकता था। लेकिन यह सब धरती पर ही था।

'देवलोक' में, और उनसे तुरन्त नीचे के क्षेत्रों में, शैक्षणिक हिमालय की ऊंचाइयों में, शिक्षा की किसी भी तरह की ऊंचाइयों में, शिक्षा की किसी भी तरह की तकनीक को धर्म-द्रोह समझा जाता था।

'देवताओं' के इस लोक में बच्चे को एक ऐसा जीव समझा जाता था जो किसी ख़ास वायवीय और अब तक अज्ञात पदार्थ से बना था। वस्तुतः यह वही पुरानी चाल की अन्तरात्मा थी जिसे लेकर पुराने महर्षि अपनी दक्षता आज़माया करते थे। यह मान लिया जाता था (कामचलाऊ धारणा के रूप में) कि यह पदार्थ अगर अकेले छोड़ दिया जाए तो ख़ुद अपने आप अपना विकास कर सकता है। ढेरों

ग्रंथों की इस विषय पर रचना की गई थी, लेकिन ये सब के सब रुस्सो के इस आदेश की पुनरावृत्ति करते थे:

'बचपन श्रद्धा करने की चीज़ है ...'

'प्रकृति के काम में दख़ल देने में सावधान ...'

इस पथ का मुख्य रूढ़-सूत्र इस मान्यता में निहित था कि प्रकृति के प्रति उपर्युक्त श्रद्धा तथा मान रहने पर यह पदार्थ, अनिवार्यत: एक कम्युनिस्ट व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो जाएगा। लेकिन वस्तुत: इस तरह की विशुद्ध प्राकृतिक परिस्थितियों में मात्र वही चीज़ें उग सकती थीं जोकि प्रकृति को छुट्टा छोड़ देने पर हमेशा उगती हैं – निरे मामूली झाड़-झंखाड़। लेकिन इससे कोई परेशान नहीं मालूम होता था – शून्य विचारों और सिद्धान्तों को ही देवलोक के निवासी अपने हृदयों में संजोए थे, इन झाड़-झंखाड़ों और कम्युनिस्ट व्यक्ति के अपने आदर्श के बीच बेमेलपन की ओर जब भी मैं इशारा करता, तो कार्य-साधकता का मुझ पर आरोप लगाया जाता। मेरी वास्तविक प्रकृति के प्रति 'न्याय' करने के लिए स्वर अलापा जाता:

"बेशक, मकारेन्को अपने व्यावहारिक काम में चौकस है, लेकिन उसका सिद्धान्त-पक्ष कमज़ोर है।"

अनुशासन को लेकर भी खींच-तान की जाती। इस समस्या के सिलसिले में, सैद्धान्तिक आधार के रूप में, दो शब्दों की आड़ ली जाती जो लेनिन की कृतियों में बहुधा मिलते हैं – 'सचेत अनुशासन'। सहज बुद्धि रखनेवाला कोई भी व्यक्ति इन शब्दों का यही अर्थ लगाएगा कि ये एक सरल, बोधगम्य और पूर्णतया व्यावहारिक विचार को व्यक्त करते हैं। प्रस्तुत अनुशासनी कार्रवाई की आवश्यकता, उपयोगिता, उसका लाज़िमी स्वरूप तथा वर्ग-महत्त्व पूर्ण स्पष्टता के साथ ध्यान में रखना चाहिए। लेकिन शिक्षा-शास्त्र इन शब्दों का सर्वथा भिन्न अर्थ लगाता था। इसके अनुसार अनुशासन सामूहिक अनुभव से, समूह के मित्रतापूर्ण, व्यावहारिक प्रयासों के परिणामस्वरूप विकसित नहीं होता था, बल्कि विशुद्ध चेतना से, निरे बौद्धिक विश्वास से, आत्मा के स्फुरणों तथा भावनाओं से नि:सृत होता था। इस सिद्धान्त के प्रति-पादक इससे भी आगे बढ़ते थे। वे निर्णय देते कि 'सचेत अनुशासन' किसी काम का नहीं यदि वह वयस्कों के प्रभावों से उत्पन्न होता है।

उनकी मान्यता थी कि यह सचेत अनुशासन नहीं है, बल्कि महज़ क़वायद है, आत्मा के स्फुरणों पर नाजायज़ दबाव है। सो सचेत अनुशासन नहीं, बल्कि 'स्व-अनुशासन' यही वह चीज़ है जो हमें चाहिए। इसी तरह वे तर्क पेश करते कि बच्चों के लिए किसी भी तरह का संगठन-संयोजन अनावश्यक तथा नुक़सानदेह है – 'आत्म-संयोजन' ही अत्यावश्यक है।

अपनी विद्वत्ता पर दावा नहीं करते हुए मैंने सोचना शुरू किया। हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं – मैं तर्क करता – कि किस तरह के मानव-जीव तैयार करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। पार्टी का प्रत्येक सदस्य, प्रत्येक वर्ग-चेतन कामगर, जो थोड़ा भी शिक्षित है, इस तथ्य से परिचित है। सो समस्या यह नहीं है कि क्या करना चाहिए, बल्कि यह है कि कैसे करना चाहिए, और यह शिक्षा-तकनीक का विषय है।

तकनीक हमेशा अनुभवापेक्षी होती है। धातु-उद्योग सम्बन्धी नियम कभी स्थापित न हो पाते अगर मानव-जाति के इतिहास में पहले कभी किसी ने धातु पर काम न किया होता। केवल तभी जब कोई तकनीकल अनुभव होता है, आविष्कार, सुधार-छांटने और रद्दी माल छांटने का मौक़ा मिलता है।

हमारा शिक्षा-उद्योग कभी भी तकनोलोजी के तर्क पर आधारित नहीं रहा, बल्कि नैतिक समझ ही अदबदाकर उसकी लकुटिया रहा है। स्कूल सम्बन्धी कार्य की अपेक्षा शिक्षा के क्षेत्र में – इस शब्द के व्यापक अर्थों में – यह ख़ास तौर से देखा जा सकता है।

देवलोक की ऊंचाइयों से कोई विवरण या काम की पृथक अवस्थाएं नज़र नहीं आती थीं। इन ऊंचाइयों से बचपन के सीमाहीन निराकार सागर के सिवा और कुछ नहीं देखा जा सकता था, और ख़ुद उन देवालयों में भी अत्यन्त काज़ू-भोजू सामग्री – विचारों, मुद्रित सामग्री तथा काल्पनिक सपनों – से निर्मित बालक का एक प्रतिमान स्थापित था। 'देवलोक' के निवासी नीचे उतरकर जब कोलोनी में मेरे पास आए तो उनकी आंखें नहीं खुलीं, बच्चों का जीता-जागता समूह उन्हें कोई नयी चीज़ नहीं मालूम हुआ, तकनीकल परवाह की उन्होंने कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की। लेकिन उस समय जब सैद्धान्तिक वाद-विवाद के खड़खड़े पर मैं उन्हें कोलोनी में घुमा रहा था, कुछ मामूली-

सी तकनीकल चीज़ को अपने से बिलकुल दूर रखने में समर्थ नहीं हो सका।

चौथे दस्ते के शयनागार का फ़र्श आज नहीं धोया गया था, क्योंकि डोल ग़ायब हो गया था। डोल की माली क़ीमत और उसके ग़ायब होने की तकनीक ये दोनों ही चीजें मेरी चिन्ता का विषय थीं। कमाण्डर के डिपुटी की ज़िम्मेदारी में डोल दस्तों को दिये जाते हैं। वही सफ़ाई करनेवाली पालियों को क़ायम करता है और परिणामस्वरूप, साज़-सामान के लिए निजी तौर से ज़िम्मेदार भी रहता है। महज़ इस तरह की मामूली चीज़ – सफ़ाई की, और डोल तथा फ़र्श पोंछने के कपड़े की ज़िम्मेदारी – मेरे लिए तकनोलोजीकल सिद्धान्त का प्रतिमान रखती है।

यह चीज़ किसी फ़ैक्टरी के उस जीर्ण-शीर्ण, प्राचीन खराद-यंत्र के समान है जिसके फ़र्म का नाम तथा उत्पादन की तिथि जाने कहां लोप हो गई है। ऐसे खराद-यंत्रों को कहीं दूर, वर्कशॉप के चीकट ओने-कोने में, डाल दिया जाता है, और 'बकरियां' कहकर उनका उल्लेख किया जाता है। गौण महत्त्व की दुनिया-भर की चीज़ों – वाशरों, टेंकों, पटरियों और भांति-भांति के पेंचों को खरादने का उनसे काम लिया जाता है। उन 'बकरियों' में से जब कोई एक भी गड़बड़ा जाती है तो वर्कशॉप में बेचैनी की एक लहर दौड़ जाती है, असैम्बली-शॉप में 'सोपबन्ध उत्पादन' बनकर रह जाता है, और गोदाम की ताक़ें 'अधूरी चीज़ों' के अप्रिय बोझ से दबी कराहने लगती हैं।

डोल और झाड़न की ज़िम्मेदारी मेरे लिए ठीक ऐसे ही खराद-यंत्र के समान है। भले ही वह सबसे पिछली पांत की चीज़ हो, लेकिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानवीय गुणों को कसनेवाले हिस्से को – ज़िम्मेदारी की भावना को – खरादने के लिए वह ज़रूरी है। इस गुण के बिना कम्युनिस्ट व्यक्ति जैसी कोई चीज़ हाथ नहीं लग सकती, – 'अधूरी चीज़ों' के सिवा और कुछ हमारे पल्ले नहीं पड़ सकता।

देवलोक के निवासी तकनीक से भन्नाते हैं। उनकी तूती बोलती थी, इसलिए शैक्षणिक-तकनीकल चिन्तन, विशेष रूप से शिक्षा के कर्म-क्षेत्र में, हमारे शिक्षा-संस्थानों में एक मुद्दत से मुर्दा-घर की वस्तु बना हुआ था। सोवियत जीवन के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा शिक्षा का

क्षेत्र तकनीक की दृष्टि से सबसे कमज़ोर है। सो शिक्षा मात्र एक दस्तकार-उद्योग है, – अन्य दस्तकार-उद्योगों की अपेक्षा सबसे ज़्यादा पिछड़ा हुआ। नतीजा इसका यह कि गोगोल कृत 'इन्सपेक्टर जनरल' के एक पात्र लुका लुकीच ख़्लोपोव की यह टिप्पणी आज के दिन भी सटीक लगी है:

> "पण्डितों के महकमे में काम करने से अधिक बुरा और कुछ नहीं हो सकता – हर कोई दस्तन्दाज़ी करता है, हर कोई यह दिखाना चाहता है कि वह भी पांचवे सवारों में है!"

और यह कोई मज़ाक़, हास्यपूर्ण अतिरंजन नहीं, बल्कि एक गम्भीर सत्य है। कोई ऐसा नहीं मिलता जो शिक्षा की किसी भी और प्रत्येक समस्या को हल करने की कोशिश न करे। कुरसी पर बैठने-भर की देर है कि वह नतीजों को तौलना, कारणों की तुक भिड़न्त और सूत्रों का विलय करना शुरू कर देता। है कोई ऐसी पुस्तक जो उसका दिमाग़ ठंडा करने के लिए उसके हाथों में थमाई जाए? और उसे पुस्तक की आवश्यकता भी क्या? वह खुद भी तो बच्चेवाला है। लेकिन ज़रा देखिए शिक्षा के इस आचार्य को, शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं के इस विशेषज्ञ को। वह ग० प० ऊ० या न० क० व० द०* को लिखता:

> "मेरा बेटा कई बार मुझ पर हाथ साफ़ कर चुका है, रात को घर से ग़ायब रहता है... इसलिए सच्चे हृदय से मैं आपसे प्रार्थना..."

क्यों यहां यह पूछा जा सकता है, चेकिस्तों** से यह आशा क्यों की जाती है कि वे शिक्षा-शास्त्र के आचार्यों की अपेक्षा शिक्षा के ज़्यादा दक्ष मिस्त्री सिद्ध होंगे?

इस हृदयग्राही प्रश्न का मैं कोई फ़ौरी जवाव नहीं दे सका और उन दिनों, १६२६ के उस वर्ष में, तकनीक की दृष्टि से मेरी स्थिति अपनी दूरबीन के साथ गैलीली की स्थिति से क़तई अच्छी नहीं थी।

---

* विशेष आयोग।

** चेका, यानी विशेष आयोग का कर्मचारी।

प्रस्तुत विकल्पों में से किसी एक को मैं चुन सकता था – या तो कुरियाज में बण्टाधार, या फिर 'देवलोक' में बण्टाधार और इसके परिणामस्वरूप स्वर्ग से निष्कासन। मैंने दूसरे विकल्प को चुना। स्वर्ग, शास्त्रीय इन्द्रधनुष के रंगों से रंजित, मेरे सिर के ऊपर चमचमा रहा था, लेकिन मैं कुरियाजवासियों के मिश्रित दस्ते के पास पहुंचा और लड़कों से मैंने कहा :

"हां तो, लड़को, तुम्हारा काम किसी काम का नहीं... आज की सभा में तुमसे समझा जाएगा। भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा काम!"

लड़के शर्मा गए और उनमें से एक ने, जो अन्य सबसे लम्बा था, मेरी दिशा में अपनी कुदाल से संकेत किया और क्षोभ से भुनभुनाया :

"कुदाल खुट्टल हैं... ज़रा नज़र डालकर देखिये तो..."

"यह झूठ है!" तोस्का सोलोवियोव ने उसे चेताया। "यह झूठ है, और तुम जानते हो कि यह झूठ है!"

"तो फिर क्या है यह, पैनी?"

"और घास पर क्या एक घंटे तक तुम टल्लेनवीसी नहीं करते रहे? क्यों, नहीं करते रहे?"

"इधर सुनो।" मैंने मिश्रित दस्ते से कहा। "ब्यालू के समय तक तुम्हें वह काम पूरा करना होगा। अगर नहीं करोगे तो ब्यालू के बाद काम किया जायेगा। मैं ख़ुद भी तुम्हारे साथ कार्य करूंगा।"

"हम ख़त्म कर लेंगे," खुट्टल कुदाल-धारी ने उतावली के साथ जवाब दिया। "यह कौन ऐसा ज़्यादा काम है!"

तोस्का हंसा।

"है न काइयां लड़का?"

त्रस्त होने की इस मामले में गुंजाइश नहीं थी। अपने काम में आलस करनेवाले लोग जब अपने आलसपन के लिए भले-से कारणों की खोज करने लगते हैं तो इसे पहलक़दमी और रचनात्मक भावना की अभिव्यक्ति समझना चाहिए। देवलोकवासियों की मंडी में इन गुणों का भारी मूल्य आंका जाता है। मेरी तकनीक का तकाज़ा था कि ठंडे पानी से इस रचनात्मक जोश को ठंडा कर दिया जाए। बस

इससे अधिक और कुछ नहीं। और यह देखकर मैं खुश हुआ कि खुलकर बिरले ही किसी ने काम करने से इनकार किया हो। कुछ थे जो चुपचाप खिसककर जाने कहां ओझल हो गए थे, लेकिन उनके लिए मैं बहुत ही कम चिन्तित था। कारण, ऐसे जीवों से सुलटने के लिए लड़कों के पास उनकी अपनी तकनीक थी। ये सैलानी चाहे जहां भी जाकर छिपें, उन्हें अपने दस्ते की मेज़ पर भोजन तो करना होता ही था, चाहे उन्हें यह अच्छा लगे या न लगे। कुरियाजवासी बिना किसी ख़ास विक्षोभ के उन्हें भेंटते, बहुत हुआ तो निश्छल लहजे में महज़ उनसे पूछते:

"हम तो समझे थे कि तुम कोलोनी से कहीं ...भाग गए।"

लेकिन गोर्कीआइटों की जिह्वा और उनके हाथ भी इससे कहीं अधिक प्रभावशाली थे। सैलानी मेज़ की ओर इस तरह मंडराते आते मानो वे केवल साधारण जीव हों जिन पर कोई ख़ास ध्यान देने की ज़रूरत नहीं, लेकिन यह देखना तो कमाण्डर का काम था कि हरेक को उसकी सही क़ीमत प्राप्त हो।

"कोल्का!" कमाण्डर कड़ी आवाज़ में पुकारता। "होशियार हो जाओ! क्या तुम देखते नहीं? ख्रिवोरूच्को तशरीफ़ लाया है! उसके लिए जगह ख़ाली करो, जल्दी! इसे साफ़-सुथरी रकाबी दो! और यह कैसा चमचा तुम इसे दे रहे हो? इसे अच्छावाला चमचा लाकर दो!"

चमचा रसोई की खिड़की में ओझल हो जाता है।

"ख़ूब मालदार शोरबे से इसकी रकाबी भरो! हां, एकदम मालदार शोरबे से! पेत्का, लपककर बावरची के पास जाओ, और इसे एक ढंग का चमचा लाकर दो। जल्दी करो! स्तेप्का, इसके लिए रोटी के कतले करो... और देखो, क़ायदे से कतले करना... इतने मोटे-झोटे कतले केवल दहक़ान खाते हैं, यह पतले पसन्द करता है... पेत्का क्या चमचे के साथ ही ग़ायब हो गया! पेत्का, जल्दी से! वान्का, जाओ और पेत्का को आवाज़ दो कि चमचा लेकर आए!"

ख्रिवोरूच्को को वास्तव में मालदार शोरबे से छलछलाती रकाबी के सामने बैठाया जाता है। उसका चेहरा, जो लाल रंग गया है, शोरबे की सतह के ऊपर झुका है। पास की मेज़ से कोई गम्भीर लहजे में पूछता है:

"ए, नम्बर तेरह! क्या तुम्हारे पास कोई मेहमान आया है?"

"हां, महामहिम पधारे हैं, – तशरीफ़ लाये हैं, और भोजन करने की कृपा कर रहे हैं... ए पेत्का, हमें चमचा दो, हमारे पास फ़ालतू समय नहीं है!"

पेत्का लपक-झपक कर कमरे में आता है, उतावली के अन्दाज़ में, गुरु-गम्भीरता के साथ कोलोनी क़िस्म के एक मामूली चमचे को अपने दोनों हाथों में इस तरह थामे हुए मानो वह कोई बहुमूल्य भेंट हो। कमाण्डर इस पर गुस्से से उबल पड़ता मालूम होता है:

"क्या चमचा ऐसा होता है? तुमने सुना नहीं कि मैंने क्या कहा? बड़ा से बड़ावाला चमचा, जो तुम्हें मिल सके, ले आओ।"

पेत्का उतावली का दिखावा करता है, पागलों की भांति भोजन के कमरे में इधर से उधर लपकता और दरवाज़ों के भ्रम में खिड़कियों से जाकर टकराता है। एक सुविस्तृत नाटक का अभिनय किया जाता है, जिसमें रसोई-घर के कर्मचारी तक हिस्सा लेते हैं। दर्शकों में से कुछ सांस रोके देखते रहते हैं कारण इसे महज़ एक संयोग ही कहिए जो वे ख़ुद इस उत्कण्ठापूर्ण आतिथ्य का पात्र बनने से रह गये। पेत्का एक बार फिर भोजन के कमरे में अवतरित होता है – अपने हाथों में शोरबे का बड़ा करछुल थामे हुए। भोजन का कमरा हंसी से गूंज उठता है। तब धीरे-धीरे लापोत अपने दस्ते की मेज़ से उठकर दृश्य-स्थल की ओर बढ़ता है। उसकी नज़र नाटक में हिस्सा लेनेवाले सभी पात्रों के चेहरों पर से चुपचाप तैरती हुई कठोरता के साथ कमाण्डर के चेहरे पर टिक जाती है। इसके बाद उसके चेहरे की कठोरता पिघलकर सबकी आंखों के सामने मृदुल और दया की भावना का चोला धारण कर लेती है – ऐसी भावना का, जिसके बारे में हर कोई जानता था कि लापोत के लिए वह एकदम बेगाना चीज़ है। भोजनकर्ता अपनी सांस रोक लेते हैं, इस आशा में कि ख़ास तौर से बढ़िया अभिनय का एक अंश देखने को मिलेगा। क्रिवोरूच्को के सिर पर अपना हाथ रखते और अपनी बनावटी आवाज़ में अत्यन्त मृदुता का पुट सरसराते हुए लापोत कहना शुरू करता:

"खाओ, मेरे मुनुआ, डरो नहीं! अरे, तुम क्यों सब के सब इस बेचारे के पीछे पड़े हुए? एह? खाओ, मेरे मुन्नू, खाओ... क्या?

तुम्हारे पास चमचा नहीं है? कितनी शर्म की बात है–ए, इसे कोई चमचा दो... हां, यह ठीक रहेगा..."

लेकिन मुन्नू खा नहीं पाता। ज़ोरों से सुबकता हुआ जैसे-तैसे वह अपनी जगह से उठ खड़ा होता है। बढ़िया शोरबे से भरी रकाबी अनछुई पड़ी रहती है। लापोत भरसक गहराई के साथ भावों को अपने चेहरे पर प्रकट करता हुआ मुसीबत के मारे की ओर देखता है।

"अरे, यह क्या?" वह पूछता है, क़रीब-क़रीब रुआंसे-से अन्दाज़ में। "क्या तुम भोजन नहीं करोगे? देखो न, लोगों ने क्या गति कर डाली है लड़के की!"

लापोत अन्य लड़कों की ओर नज़र डालता है, निःशब्द हंसी हंसते हुए। इसके बाद, क्रिवोरूच्को के सुबकते हुए कंधों के गिर्द अपनी बांह डालते हुए, मृदु भाव से उसे भोजन के कमरे से बाहर ले जाता है। दर्शक हंसी के मारे दोहरे-तिहरे होने लगते हैं। लेकिन नाटक का अभी एक अंक और है जिसे दर्शकगण नहीं देख पाते। लापोत मेहमान को रसोई-घर में लिवा ले जाता है, रसोई-घर की बड़ी मेज़ के सामने उसे बैठाता है, और बावरची को आदेश देता है कि "इस जीव" को खाना खिलाए क्योंकि "तुम जानो, यह बुरे व्यवहार का सताया हुआ है"। और ठीक उस समय जबकि क्रिवोरूच्को, अभी भी सुबकियां भरते हुए, अपने शोरबे को ख़त्म कर चुकने के बाद अपनी नाक और आंसुओं की ओर ध्यान देने की स्थिति में होता है लापोत –मुंह पर राम-राम और बग़ल में छुरीवाली कहावत को भी फीका करते हुए– अपना आख़िरी अत्यन्त सूक्ष्म वार करता है:

"वे सब के सब क्यों तुम्हारे पीछे पड़े हैं? शायद तुम काम करने नहीं गए–क्या इस लिए?"

क्रिवोरूच्को सिर हिलाता है, हिचकता है, उसास छोड़ता है, और शब्दों के अभाव में चिन्हों के द्वारा अपने आपको व्यक्त करता है।

"भई ख़ूब, अजीब लोग हैं वे! ज़रा सोचो तो! तुम्हारा मतलब बस आख़िरी बार ऐसा करने का था–था न? आख़िरी वार–है न? और वे तुम्हारी जान को आ गए! किसी के साथ भी ऐसा हो सकता है। मुझे याद है, जब पहले-पहल मैं कोलोनी में आया था, तो पूरे सात दिन तक मैं काम पर नहीं गया था... और तुम तो केवल

दो दिन ही। ज़रा अपने भुजदण्ड तो दिखाओ! भई वाह! ऐसे भुजदण्डों से तो काम करना चाहिए ... करना चाहिए न?"

क्रिवोरूच्को फिर सिर हिलाता है, और अपने भोजन पर जुट जाता है। लापोत भोजन के कमरे की ओर मुड़ता है, क्रिवोरूच्को की ओर प्रशंसा में पगा एक अप्रत्याशित वाक्य फेंकते हुए:

"मैंने तो तुम्हें देखते ही जान लिया था कि तुम ठीक क़ायदे के लड़के हो!"

इस तरह के कुछेक प्रदर्शनों के बाद काम के घंटों में दस्ते से भागना एक असम्भव चीज़ बन गया। और सचमुच, जल्दी ही इस आदत का पूर्ण सफ़ाया हो गया। ख़ोवराख़ जैसे बहानेबाज़ों के साथ ज़्यादा कठिनाई उठानी पड़ी। दो दिन काम करने के बाद वह आतपघात का मरीज़ बन, कराहते हुए, किसी झाड़ी की छांव में आराम करने के लिए रेंग जाता। लेकिन ऐसे जीवों से सुलटने में तारानेत्स को अद्‌भुत दक्षता प्राप्त थी। अन्तोन से वह एक बग्घी लेता, जिसके बमों के बीच 'मोलोदेत्स' जुता होता। झंडों और लाल क्रॉसों से बग्घी सजी रहती। चिकित्सा सहायकों के साथ वह बाहर निकलता। लोहारघर की असली धौंकनी को संभालते हुए कुज़्मा लेशी इस काम में उसका सबसे बड़ा सहायक बनता। ठीक उस समय जबकि ख़ोवराख़ ने अपने लताकुंज का उपभोग अभी शुरू ही किया होता, 'एंबुलेंस' उसके पास आ धमकती। लेशी अपनी धौंकनी को फ़ौरन रोगी के सामने रख देता, और कई लोग तत्परता के साथ अनथक जोश से उसे धौंकने लगते। उन स्थलों में जहां यह समझा जाता कि आतपघात ने अपना घोंसला बनाया है, हवा धौंकी जाती, और इसके बाद उसे उठाकर गाड़ी की ओर ले जाया जाता। लेकिन ख़ोवराख़ अब तक चंगा हो जाता, और 'एंबुलेंस' तुरन्त कोलोनी की ओर चल देती। चिकित्सा की इस पद्धति को सहन करना ख़ोवराख़ के लिए कठिन था, लेकिन मिश्रित दस्ते में लौटकर जाना उसके लिए और भी कठिन था। कारण, वहां पहुंचने पर, अत्यन्त मासूम पूछ-ताछ के रूप में, औषधि की नयी मात्राओं को उसे चुपचाप पीना पड़ता था।

"क्यों ख़ोवराख़, इससे कुछ फ़ायदा हुआ न? यह एक शानदार इलाज है – क्यों है न?"

ये सब, कहने की आवश्यकता नहीं, छापामार युद्ध के तरीक़े थे। लेकिन प्रचलित वातावरण तथा काम को चालू रखने की समूह की सामान्य आकांक्षाओं ने उन्हें जन्म दिया था। और वातावरण तथा आकांक्षाएं मेरे तकनोलोजीकल प्रयासों का वास्तविक लक्ष्य थीं।

दस्ता निस्संदेह, एक आधारभूत तकनोलोजीकल विशिष्टता थी। 'देवलोक' के निवासी कभी यह पता नहीं लगा सके कि दस्ता वास्तव में क्या चीज़ था। उसके महत्त्व और शिक्षा की प्रक्रिया में उसकी सुनिश्चित भूमिका को समझाने का मैंने सच्चे हृदय से प्रयत्न किया। लेकिन हम दो भाषाएं बोलते थे और समझाने की कोशिश करना वेकार था। शिक्षा-शास्त्र का एक आचार्य कोलोनी में आया। सुसज्जित, आंखों पर चश्मा चढ़ाए, एक आरामदेह सूट पहने हुए। वह प्रत्यक्षतः एक विचारवान और नेक आदमी मालूम होता था। उसके और मेरे बीच जो बातचीत हुई, उसे क़रीब-क़रीब शब्दशः यहां उद्धृत किए देता हूं। वह यह जानने के लिए अत्यन्त व्यग्र था कि भोजन के कमरे की मेज़ों को दस्तों के लिए कमाण्डर ऑन ड्यूटी क्यों नियत करता है, शिक्षक क्यों नहीं करता।

"नहीं, साथी, यह गम्भीर बात है। निश्चय ही आप मज़ाक़ कर रहे हैं। कृपया, मेरे साथ गम्भीरता से काम लें। भला, एक लड़का-मानीटर भोजन के कमरे में हर चीज़ का कैसे संयोजन कर सकता है, जबकि आप है कि निश्चिन्तता के साथ अलग खड़े रहते हैं। क्या आपको यक़ीन है कि वह हर चीज़ को कायदे से कर लेगा, कि वह किसी के प्रति अन्याय नहीं करेगा? आख़िर... वह महज़ ग़लती कर सकता है।"

"भोजन के कमरे का संयोजन ऐसा कुछ बहुत कठिन काम नहीं है," मैंने आचार्य को जवाब दिया। "इसके अलावा हमारे यहां एक पुराना और बहुत ही बढ़िया क़ायदा प्रचलित है।"

"क्या सचुमच एक क़ायदा?"

"हां, एक क़ायदा। वह यह है – सारा काम, रुचिकर या अरुचिकर, कठिन या आसान, संख्यानुक्रम से, दस्तों द्वारा पालियों में सम्पन्न किया जाता है।"

"क्या? क्या मतलब है आपका? मैं कुछ ठीक से समझा नहीं..."

"मतलव विलकुल सीधा-सादा है। इस समय भोजन के कमरे में पहला दस्ता सबसे अच्छी जगह पर आसीन है, एक महीने बाद दूसरा दस्ता इसे प्राप्त करेगा, और इस प्रकार यह सिलसिला चलता रहेगा।"

"अच्छा। और अरुचिकर काम से आपका क्या अभिप्राय है?"

"अक्सर ऐसा काम होता है जिसे हम अरुचिकर कहते हैं। उदाहरण के लिए, अगर इसी समय कोई ज़रूरी अतिरिक्त काम करना पड़ जाए तो उसे करने के लिए पहले दस्ते का आवाहन किया जाएगा, अगर अगली बार कोई काम करना पड़े तो वह दूसरे दस्ते को करना होगा। जब सफ़ाई का काम दिया जाता है तो सबसे पहले दस्ते को संडासों को साफ़ करना होता है। निस्संदेह, यह केवल लगे-बंधे काम पर लागू होता है।"

यह भयानक क़ायदा क्या आपके अपने मस्तिष्क की उपज है?"

"विलकुल नहीं! यह लड़कों के मस्तिष्क की उपज है। इसमें उन्हें ज़्यादा आसानी मालूम होती है। आप जानो, इस तरह के काम का वितरण करना काफ़ी कठिन काम है, किसी न किसी से असन्तुष्ट हो उठना आवश्यक भी है! अब सब कुछ एकदम यंत्रवत् चलता है। एक पाली एक महीने तक काम करती है।"

"सो आपके बीसवें दस्ते का संडासों को साफ़ करने का नम्बर केवल वीस महीने बाद आएगा?"

"वेशक, लेकिन साथ ही भोजन के कमरे में सबसे अच्छी जगह भी उन्हें वीस महीने से पहले नहीं मिलेगी।"

"भयानक! लेकिन वीस महीने के दौरान बीसवें दस्ते में नये लोग भी आ जाएंगे। इस वारे में क्या कहते हैं?"

"नहीं, दस्तों की वनावट में मुश्किल से ही कोई अन्तर पड़ता है। हम टिकाऊ समूहों में विश्वास करते हैं। बेशक, हो सकता है कि कुछेक विदा हो जाएं, और कुछेक नये आ जाएं। लेकिन अगर यह भी मान लिया जाए कि दस्ते में अधिकांश एकदम नये आ गए हैं, तव भी इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। दस्ता एक समूह है, उसकी अपनी परम्पराएं हैं, इतिहास, गुण और ख्याति है। माना कि इस समय दस्तों में काफ़ी फेर-बदल किया गया है, लेकिन धुरी प्रत्येक में वैसी ही है।

"मेरी समझ में नहीं आया। मुझे यह बाज़ीगर का खेल जैसा मालूम होता है। यह गम्भीर नहीं है। दस्ते का महत्त्व और उसकी ख्याति भला क्या अर्थ रख सकते हैं अगर उसमें नये लोग आ जाएं? दुनिया में इसका किसी चीज़ से मेल नहीं खाता है!"

"मेल खाता है चपायेव डिवीजन से," मैंने मुसकराते हुए कहा।

"ओह, आपने फिर वह फ़ौजीकरण शुरू कर दिया... लेकिन, आखिर, चपायेव से भला इसका क्या वास्ता?"

डिवीजन में अब वे लोग नहीं हैं जोकि उसमें पहले थे। और चपायेव भी अब नहीं हैं। नये लोग। लेकिन वे चपायेव तथा उसकी सेनाओं की ख्याति तथा प्रतिष्ठा के वाहक हैं। क्या आप इतना भी नहीं समझते? चपायेव की ख्याति के लिए वे उत्तरदायी हैं। और अगर वे उसे कलंकित करते हैं, तो अगले पचास वर्षों के बाद नये लोग उनके कलंक के लिए उत्तरदायी होंगे।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों आप इस सबके पीछे पड़े हैं?"

और इस आचार्य की समझ में कभी यह नहीं आया। इससे अधिक भला मैं कर भी क्या सकता था?

शुरू के कुछ दिनों में कुरियाज दस्तों में महान कार्य सम्पन्न किया गया। प्रत्येक दो या तीन दस्तों में एक शिक्षक बहुत पहले से नियुक्त था। इन शिक्षकों का काम दस्तों के भीतर सामूहिक सम्मान की कल्पना तथा कोलोनी में श्रेष्ठतम और अत्यन्त इच्छित स्थान पाने की आकांक्षा को चेतन करना था। निस्संदेह, सामूहिक हितों की नयी तथा ऊंची भावना ने एक ही दिन में जन्म नहीं लिया, बल्कि वह काफ़ी तेज़ी के साथ विकसित हुई, उस स्थिति की अपेक्षा कहीं अधिक तेज़ी के साथ जब हम अलग-अलग व्यक्तियों से निबटने की कोशिश करते।

एक दूसरा और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क़दम नयी प्रेरणाओं का उद्घाटन करना है, ऐसा करने के लिए श्रम सम्बन्धी प्रयासों की व्यवस्था करने के दो तरीक़े हैं। पहला यह कि व्यक्ति के लिए निजी प्रेरणाओं को निर्धारित किया जाए, एक हद तक उसके माली हितों को उभारकर रखते हुए। लेकिन यह तरीक़ा उस काल के शिक्षाविदों द्वारा एकदम वर्जित कर दिया गया था। बच्चों के लिए वेतन या पुरस्कार के रूप

में अत्यन्त अल्प रक़म नियत करने की ज़रा-सी भी भनक 'देवलोक' में खलबली मचा देती थी। शिक्षाशास्त्री विचारकों का विश्वास था कि धन शैतान की देन है। ... आख़िर वे मेफ़िस्तोफ़ील्स को यह गाते सुन जो चुके थे:

लोग नष्ट होते सोने के फेर में ...

पगार और धन के प्रति उनका रवैया इतना उन्मादग्रस्त था कि उनके सामने इस विषय का ज़िक्र तक करना असम्भव था। पवित्र जल छिड़कने के सिवा और किसी चीज़ से भला होता नज़र नहीं आता था, पवित्र जल मेरे पास था ही नहीं।

यह सब होने पर भी पगार एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। मज़दूरी नौसिखियों को व्यक्तिगत तथा सामूहिक हितों में सामंजस्य बैठाना सिखाती है। वह सोवियत औद्योगिक-वित्तीय आयोजन के, आत्म-निर्भर आर्थिक प्रणाली के तथा लाभ के पेचीदा जाल में फंस जाता है। उसे सोवियत कारख़ानों के अर्थतंत्र की समूची प्रणाली को अध्ययन करने का अवसर मिलता है और वह सिद्धान्ततः, अन्य सब कामगारों की कोटि में स्थान प्राप्त करता है। आखिर में यह कि वह कमाई का मूल्यांकन करना सीखता है और अनाथालय से छात्रालय की उस युवती की भांति विदा नहीं होता जिसने जीवन के बारे में कुछ नहीं सीखा तथा 'आदर्शों' के सिवा और कुछ प्राप्त नहीं किया है।

लेकिन इस दिशा में कुछ किया नहीं जा सकता था – निषेध ज़रूरत से ज़्यादा कड़ा था।

केवल दूसरा तरीक़ा ही मैं अपना सकता था – समूह की मनःस्थिति को ऊंचा उठाना तथा सामूहिक प्रेरणाओं की एक सुविस्तृत प्रणाली का संयोजन करना। यह तरीक़ा कुछ कम नृशंसतापूर्ण मालूम होता था। "देवलोक" के निवासी इसके उपयोग को जैसे-तैसे सहन कर लेते थे। हालांकि सन्देह से भरी गुर्राहट जब-तब फिर भी उनके मुंह से निकल पड़ती थी।

जीने के लिए यह आवश्यक है कि मानव अपने सामने कोई प्रसन्नतादायक चीज़ देख सके। आनेवाले काल का सुख मानव जीवन की सच्ची प्रेरणा है। शैक्षणिक तकनीक में यह कल का आनन्द उन अत्यन्त महत्त्व-

पूर्ण चीज़ों में से एक है। सर्वप्रथम तो इस आनन्द का संयोजन करना, उसे जीवन के निकट लाना, और वास्तविकता में उसे परिणत करना ज़रूरी है। इसके बाद तुष्टि के जड़ स्रोतों को अडिग गति से अधिक पेचीदा तथा मानवीय महत्त्व के आनन्दों के रूप में परिणत करना ज़रूरी है। एक अत्यन्त दिलचस्प रेखा का यहां अनुसरण किया जा सकता है – एक मीठा बिस्कुट खाने से उपलब्ध होनेवाली सरल तुष्टि से लेकर कर्त्तव्य की गहरी भावना पर आधारित सन्तोष तक।

शक्ति और सौन्दर्य ऐसे दो मानवीय गुण हैं जो साधारणतया अत्यन्त रुचिकर प्रतीत होते हैं। और ये दोनों भावी प्रेरणाओं के प्रति व्यक्ति के रुख़ पर पूर्णतया निर्भर करते हैं। वह व्यक्ति जिसका रवैया तात्कालिक तुष्टि से नियमित है – आज के (आज के ही) – सबसे कमज़ोर आदमियों में से है। लेकिन अगर वह स्वार्थपरक प्रेरणा से तुष्ट है – चाहे वह प्रेरणा दूर ही क्यों न हो – तो वह कुछ सशक्त मालूम होगा, लेकिन दूसरों में सौन्दर्य की चेतना तथा व्यक्तित्व की सच्ची क़द्र के बोध का संचार करने का जहां तक सम्बन्ध है, यह वह कभी नहीं कर सकेगा। और वह समूह, जिसकी प्रेरणाओं के साथ व्यक्ति अपने हितों का तादात्म्य करने में समर्थ होता है, वह जितनी ही अधिक व्यापक होगी, उतना ही अधिक सुन्दर तथा शुभ्र वह व्यक्ति मालूम होगा।

मानव को शिक्षित करने का अर्थ उसे एक ऐसी प्रेरणा से सज्जित करना है जो कल के आनन्द की ओर उसे ले जानेवाला हो। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम के बारे में एक पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। इसका अर्थ है – मौजूदा प्रेरणाओं का पूरा उपयोग करते हुए नयी प्रेरणाओं का आयोजन करना, और क्रमशः योग्यतर प्रेरणाओं का निर्माण करते जाना। अच्छे भोजन, सरकस का खेल देखने जाने या तालाब की सफ़ाई करने से इसकी शुरुआत की जा सकती है। लेकिन समूचे समूह पर असर डालनेवाली प्रेरणाओं की रचना करना तथा उन्हें क्रमशः व्यापक बनाते जाता ज़रूरी है – इस हद तक कि वे ख़ुद सोवियत संघ की प्रेरणाओं का रूप धारण कर लें।

कुरियाज विजय के बाद नवान्न उत्सव का दिन हमारी निकटतम सामूहिक प्रेरणा का प्रतिमान बन गया।

लेकिन यहां एक स्मरणीय सांझ का ज़िक्र करना ज़रूरी है, एक ऐसी सांझ का जिसने किसी कारणवश कुरियाजवासियों के श्रम सम्बन्धी प्रयासों में एक मोड़ का रूप धारण कर लिया, हालांकि इस परिणाम को मुझे क़तई अन्दाज़ा नहीं था। मैं महज़ वही करना चाहता था जो मुझे करना चाहिए था, उपयोगितावाद को ज़रा भी अपने लक्ष्य में न रखते हुए।

नये कोलोनीवासी यह नहीं जानते थे कि गोर्की कौन थे। सो अपने आगमन के बाद जितनी भी जल्दी हो सका हमने एक गोर्की-संध्या का आयोजन किया। सब कुछ बहुत ही साधारण ढंग से किया गया, क्योंकि मैं उसे एक कन्सर्ट या साहित्यिक संध्या का रूप नहीं देना चाहता था। बाहर से हमने किसी को नहीं बुलाया। सादगी के साथ सजे हुए मंच के ऊपर अलेक्सेई मक्सिमोविच का एक छवि-चित्र लगा दिया गया।

गोर्की के काम और जीवन के बारे में काफ़ी विस्तार के साथ मैंने बच्चों को बताया। वयस्क लड़कों में से कुछ ने 'बचपन' के अश पढ़कर सुनाए।

नये कोलोनीवासियों ने सुना – उनकी आंखें आश्चर्य से खुली थीं। उन्होंने कभी कल्पना तक नहीं की थी कि ऐसा जीवन हो सकता है। उन्होंने कोई सवाल नहीं किया, कोई भाव नहीं प्रकट किया। आख़िर वह क्षण आया जब लापोत ने गोर्की के पत्रों का एक पुलिन्दा निकाला।

"यह उन्होंने लिखे हैं? ख़ुद उन्होंने? उन्होंने कोलोनीवासियों को पत्र लिखे हैं? ज़रा हमें दिखाओ ..."

लापोत पत्रों को सावधानी के साथ कोलोनीवासियों की पांतों में ले गया। जब-तब, उनमें से कोई एक, लापोत के हाथ को थामता इस कोशिश में कि जो कुछ हो रहा है, उसे और गहराई के साथ देख सके।

"देखा, देखा तुमने – 'मेरे प्रिय साथियो!' ठीक यही शब्द ..."

सभा में तमाम पत्र पढ़कर सुनाए गए। इसके बाद मैंने पूछा :

"क्या कोई कुछ कहना चाहता है?"

एकाध मिनट तक किसी में कोई प्रतिक्रिया होती नज़र नहीं आई। इसके बाद कोरोत्कोव, लाल होता हुआ, मंच की ओर बढ़ा। उसने कहा :

"मैं नये गोर्कीआइटों से कुछ कहना चाहता हूं... आपने जैसे.. लेकिन मैं बोलना नहीं जानता... अच्छा तो सुनो। साथियो, हम यहां रहते रहे हैं और हमारे पास आंखें हैं, लेकिन हमने कभी कुछ नहीं देखा... हम निपट अंधों की भांति थे। यह खेद की बात है, इतने साल क्यों यूं ही गँवा दिए! और अभी हमने देखा – गोर्की ही को... और लगा जैसे मेरे भीतर हलचल मची है... सच, ऐसा लगता है... तुम सबको कैसा लगता है, सो मैं नहीं जानता..."

कोरोत्कोव मंच के किनारे की ओर एक डग आगे बढ़ा, और अपनी गम्भीर सुन्दर आंखों को सिकोड़ा।

"हमें काम करना होगा, साथियो! हमें बिलकुल दूसरे ढंग से काम करना होगा... समझ रहे हो न?"

"समझ रहे हैं!" लड़के प्रसन्नता से चिल्लाए। उनकी तालियों की ज़ोरदार गड़गड़ाहट के बीच कोरोत्कोव मंच से नीचे उतर आया।

अगले दिन उन्हें देखकर पहचानना कठिन था। हांफते और फुंकार छोड़ते, अपने सिरों को उछालते, अत्यन्त सजगता तथा भारी प्रयासों के साथ वे उस काहिली पर क़ाबू पाने में जुटे थे जोकि मानव की प्राचीनतम विरासत है। उन्होंने सबसे अधिक, अत्यन्त आह्लादपूर्ण, प्रेरणा की – मानवीय व्यक्तित्व के मूल्य की – झलक पा ली थी।

११. नवान्न

मई के अन्तिम दिनों में एक के बाद एक नयी देनों का सिलसिला-सा बंध गया – अहाते में, एकदम साफ़-सुथरे स्थल, नये दरवाज़े और खिड़कियां, दरवाज़ों से बाहर नयी सुगंधि, हर ओर एक नयी भावना मौजूद थी। काहिली के अन्तिम अवशेषों को सहज ही दूर किया जा रहा था। हमारी विजय का उत्सव और भी अधिक उज्ज्वलता के साथ क्षितिज पर चमक रहा था। मठवाली पहाड़ी की अन्तड़ियों में से, अनगिनत कोठरियों में से, अतीत की सड़ांध के अन्तिम भभकारे ऊपर उठ रहे थे, और ग्रीष्म की हवा के तीव्र झोंके उन्हें तुरन्त लपककर दूर, बहुत दूर, अपने साथ बहा ले जा रहे थे – इतिहास के कूड़ा-दान में पटकने के लिए।

हवा के झोंकों का काम अब आसान हो गया था। कारण, पन्द्रह दिन के कड़े परिश्रम द्वारा, पुरानी, भारी-भरकम दीवारों को मिश्रित दस्तों ने गिरा दिया था। 'बाज़', 'मेरी' और स्वास्थ्य-लाभ करते कुरियाज घोड़े जो अब कमाण्डरों की परिषद द्वारा दिए गए भले नामों – 'वसिल्योक', 'मनाख' और 'ओरलिक' – से सुशोभित थे, ईंटों के खण्डित मलबे को वहां पहुंचा रहे थे जहां वह सर्वाधिक उपयोगी हो सकता था – वे सबसे अच्छे और सबसे बड़े टुकड़ों को सूअर-घर का निर्माण करने के लिए, छोटे टुकड़ों को पथ पर बिछाने तथा विभिन्न खड्डों और खोखलों को भरने के लिए ले जा रहे थे। कुदालियों, ठेला-गाड़ियों और स्ट्रेचरों से लैस अन्य मिश्रित दस्तों ने हमारे ढलवान के सीढ़ीनुमा भूखण्डों को चौड़ा किया, उन्हें साफ़ और समतल बनाया, नीचे घाटी में उतरने के लिए रास्ता तैयार किया, सीढ़ियां बनाईं। उधर बोरोवोय की ब्रिगेड ने सीढ़ीनुमा भूखण्डों तथा अन्य विभिन्न उपयुक्त कोनों में बैठने के लिए एक दरजन के करीब बेंचें लगाईं। अहाता अब अधिक रोशनीदार तथा खुला-सा मालूम होता था, अधिक आकाश अब दिखाई देता था। झाड़ियों की हरियाली तथा क्षितिज की नीलवर्ण दूरियां ऐसी मालूम होती थीं जैसे चारों ओर एक बड़ा चौखटा जड़ा हुआ हो।

अहाता और चारों ओर के ढलवानों को पूरी तरह से साफ़ कर दिया गया था। हमारा माली मिज़्याक – एक उदास और मुंहबंद आदमी जैसे कि सुन्दर स्त्रियों के कुरूप पतियों के बीच बहुधा नज़र आते हैं – अहाते और पथों के बाज़ुओं को खोद रहा था, मठ की पटरियों की जर्जर ईंटों को साफ़-सुथरे ढेरों में जमा कर रहा था।

अहाते के उत्तरी बाज़ू में हमारे सूअरघर की नींव डाली जा रही थी। उम्मीद बंधती थी कि सूअरघर बढ़िया बनेगा, अच्छे बाड़ों से लैस। शेरे अब ऐसा नहीं मालूम होता था जैसे उसका सब कुछ आग में जलकर स्वाहा हो चुका हो। आर्किमेडियन उल्लास उसमें भी हिलोरें लेने लगा था। तीस से भी ऊपर मिश्रित दस्ते अब रोज़ काम पर जाते थे। अब हम अपने हाथों में भारी ताक़त का अनुभव करते थे। यही वे दिन थे जब शेरे की काम करने की भूख के भयानक आकार-प्रकार का मुझे अन्दाज़ हुआ। उसकी इस भूख ने उसे और भी दुबला बना दिया

था – काम और काम करनेवाले अब काफ़ी थे, केवल एक चीज़ ऐसी थी जो उसी अनुपात में काफ़ी नहीं थी। वह चीज़ थी ख़ुद उसकी संगठनात्मक शक्ति। एडुआर्ड निकोलायेविच ने अपनी नींद में कटौती कर ली थी, अपने डगों को बढ़ा लिया था, अपने नित्य के कार्यक्रम में से अनेक अनावश्यक मदों को काट दिया था – जैसे कलेवे, भोजन और ब्यालू की मदों को – और इसके बाद भी वह सब करने के लिए उसे समय नहीं मिलता था जोकि वह करना चाहता था।

शेरे इस आकांक्षा से उमगा था कि सौ हैक्टर के हमारे क्षेत्र में छः सप्ताह के भीतर उतना काम कर डाले जितना कि पुरानी जगह में छः साल के भीतर हमने किया था। खेतों की निराई के लिए, मुश्किल से दिखाई पड़नेवाली घास-पात को उखाड़ फेंकने के लिए, वह बड़े मिश्रित दस्तों को खेतों में भेजता था। जिन खेतों में फ़सल ठीक से नहीं उग पाई थी उन्हें फिर से जोतकर अब देर से होनेवाली कोई ख़ास क़िस्म की फ़सल बोई जा रही थी। धरती की एकदम सीधी पट्टियां, घास-पात से मुक्त और 'अन्दालूशिया के राजा' तथा सभी काट-छांट की 'राजकुमारियों' की विष्ठा से पहले की तरह समृद्ध, किरणों की भांति खेतों में फैली थीं। खेतों से परे सड़क के पासवाले केन्द्रीय प्लाट में शेरे ने तरबूज़े लगा रखे थे। शैक्षणिक प्रेरणा सम्बन्धी मेरी मांग को तुष्ट करने के लिए यह किया गया था। कमाण्डरों की परिषद ने उसे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क़दम क़रार दिया। लापोत ने योग्य तथा पुराने कोलोनीवासियों की तुरन्त एक सूची बनानी शुरू कर दी। इस लिए कि तरबूज़ों के खेत में काम करने के लिए इन तत्त्वों में से एक विशेष दस्ते का निर्माण किया जा सके।

बावजूद इसके कि शेरे के कंधों पर काम का भारी बोझ था, तालाब को साफ़ करने के लिए हमने एक मिश्रित दस्ता बनाने का रास्ता निकाला। कराबानोव को इस दस्ते का कमाण्डर नियुक्त किया गया। चालीस नंगे लड़कों ने – जो देनिस कुदलाती से सबसे फटे-पुराने जांघिये मांगकर पहने हुए थे – पानी को उड़ाहना शुरू किया। तालाब की तलहटी में अनेक दिलचस्प चीज़ें मिलीं – राइफ़लें, बन्दूक़ों की नालियां, रिवाल्वर। कराबानोव ने कहा : "खोज-बीन के बाद हमें पतलूनें भी मिल जाएंगी क्योंकि पतलून उतारकर भागना अधिक आसान था।"

इन अस्त्रों को कीचड़ में से निकालना कठिन नहीं था, लेकिन खुद कीचड़ को हटाना काफ़ी टेढ़ा काम सिद्ध हुआ। तालाव काफ़ी वड़ा था। डोलों तथा स्ट्रेचरों के द्वारा कीचड़ निकालने का कोई अन्त ही नहीं मालूम होता था। आखिर चार घोड़ों को लकड़ी के पैडलों में जोता गया जिसका खास इसी उद्देश्य के लिए आविष्कार किया गया था। केवल तभी कीचड़ में कुछ कहने लायक़ कमी होती दिखाई दी।

करावानोव का 'विशिष्ट दूसरा दस्ता', काम करते समय अद्भुत सौन्दर्य का दृश्य प्रस्तुत करता था। लड़के, सिर से पांव तक कीचड़ में लिथड़े हुए बिलकुल हवशियों जैसे मालूम होते थे। उन्हें अलग-अलग पहचानना कठिन था। समूह में वे ऐसे मालूम होते थे जैसे वे किसी अनजान, दूरदराज़ देश के वासी हों। काम के तीसरे दिन हमें एक ऐसा दृश्य देखने का सौभाग्य मिला जो हमारे इन इलाक़ों के लिए निश्चय ही वेजोड़ था – लड़के काम करने निकले, अपने कूल्हों पर ववूल शाहबलूत और अजीबोग़रीब उपज के पत्तों की झालर का तरहदार बाना धारण किए हुए। गरदनों, हाथों और पांवों में तारों, लोहे और टीन की पतरियों के गहने उनकी साज-सज्जा में और भी चार चांद लगा रहे थे। उनमें से कितनों ने टहनियों को मोड़कर नाक के बुलाक़ तथा ढिवरियों, वोल्टों और छोटी-छोटी कीलों से कान की वालियां भी अपने लिए वना ली थीं।

हवशी, कहने की आवश्यकता नहीं, न तो रूसी भाषा जानते थे, और न उक्राइनी। एक दूसरे से केवल किसी देशज वोली में ही वातें करते थे जिसे हममें से कोई भी नहीं समझ पाता था। कर्णकटु और गरगल ध्वनियों का बाहुल्य उनकी इस वोली की विशेषता था, जो यूरोपीय कान को वड़ा अजनबी मालूम होता था। अचरज की बात यह कि विशिष्ट दूसरे मिश्रित दस्ते के सदस्य न केवल एक दूसरे को समझ ही लेते थे, वल्कि वे अत्यन्त बातूनी भी थे। तालाव की विस्तृत तलहटी में दिनभर एक असह्य हंगामा मचा रहता था। कमर तक कीचड़ से लथपथ तथा गला फाड़कर चिल्लाते हुए, उफनती हुई कीचड़ के एकदम वीच, 'स्त्रेकोज़ा' या 'बाज़' को पैडल तक टिकटिकाते हुए ले जाते।

करावानोव का रंग अन्य सबकी भांति काला और चमचमाता हुआ था। वालों का गुच्छा उसके माथे पर विकटाकार थक्के की भांति जमा हुआ था। आंखों की भीमाकार सफ़ेदी अटेरन की भांति घूमती हुई, अपनी भयानक वत्तीसी को चमकाते हुए वह चिल्लाता:

"कर्राम्वा!"

वीसियों आंखों की उतनी ही वनैली सफ़ेदी उस स्थल पर जाकर स्थिर हो जाती जहां कि करावानोव का अजीबोग़रीब कड़ों-छड़ों से सज्जित हाथ इशारा कर रहा था। वे खड़े-खड़े सिर हिलाते।

"हइया, हइया!" करावानोव चिल्लाता।

वहशियों का वनैला, घना झुंड ज़ोरों के साथ पैडल से जूझना शुरू करता, चीख़-चिल्लाहटों तथा प्रयासों के साथ 'स्त्रेकोज़ा' की ओर उकसाते-वढ़ाते हुए, जो पूरी एक टन घनी, भारी कीचड़ को तट की ओर खींचकर ले जा रही थी।

यह अजीवोग़रीव तमाशा सांझ को और भी उत्तेजनापूर्ण हो जाता जवकि समूची कोलोनी हमारी पहाड़ी के ढलवानों पर विश्राम कर रही होती, और नंगे पांव लड़के मन-ही-मन हुलसते उस मधुर क्षण की प्रतीक्षा करते जव करावानोव गरजकर आदेश देता – "उनकी गरदनें उड़ा दो!" और चेहरों को भयानक वनाए और ख़ून के प्यासे हवशी श्वेतों पर टूट पड़ते। भय से आक्रान्त श्वेत अहाते की ओर भाग खड़े होते, भयभीत चेहरे दरवाज़ों और दराज़ों में से झांककर वाहर की ओर देखते। लेकिन काले श्वेतों को कभी पकड़ न पाते। अन्ततोगत्वा आदमख़ोरी की नौबत न आ पाती। कारण, वहशी रूसी भाषा भले ही न जानते हों, लेकिन यह पूर्णतया समझते थे कि घर के भीतर गंदगी फैलाने के कारण घर में गिरफ़्तारी के सिवा और कुछ उनके पल्ले नहीं पड़ेगा।

वस्तुत: केवल एक ही वार कालों को श्वेत आवादी पर रोव जमाने का सौभाग्य मिला। ख़ारकोव नगर ही के निकट यह सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ।

ऊमस भरे और वर्षा-शून्य दिन के बाद सांझ को पच्छिम की ओर क्षितिज पर एक घनघोर बादल प्रकट हुआ। इस वादल ने भयप्रद अन्दाज़ में अपनी जटाओं को फटकारा, तेज़ गति से आकाश

में फैला, गरजा, और हमारी पहाड़ी पर आक्रमण करने के लिए बढ़ चला। विशिष्ट दूसरे मिश्रित दस्ते ने उत्साह के साथ उसका स्वागत किया, तालाव की तलहटी विजयी किलकारियों से गूंज उठी। अपने भारी-भरकम तोपगोलों की समूची शक्ति के साथ बादल कुरियाज पर गरजा, और आकाशी झूले पर टिके रहने में असमर्थ होकर भीषण ग़ुस्से, बारिश, गरज और बिजली के साथ हमारे सिरों पर टूट पड़ा। कानफोड़ चीखों के साथ ठीक इस प्रलय के बीच उन्मत्तों की भांति नाच करते विशिष्ट दूसरे मिश्रित दस्ते ने इसका जवाब दिया।

लेकिन ठीक इसी सुहावने क्षण, पहाड़ी के ढलवान पर, वर्षा में निकलकर उद्विग्न सिनेन्की ने ख़तरे का बिगुल बजाया। ख़तरे के झनझना देनेवाले स्वर गूंज उठे। वहशियों का नाचना बंद हो गया। अचानक रूसी भाषा की उन्हें याद हो आई।

"ऐं, यह बिगुल किस लिए? एह? कहां? क्या यहां?"

सिनेन्की ने अपने बिगुल से पोदवोर्की की ओर इशारा किया। कोलोनीवासी अहाते में से बाहर उमड़ आए थे और तालाब के किनारे-किनारे दौड़ रहे थे। किनारे से सवा सौ गज़ परे एक झोंपड़ी होली की भांति जल रही थी, लोगों का एक जलूस-सा उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। चालीस हबशी अपने सरदार की अगुआई में जलती हुई झोंपड़ी की ओर लपके। क़रीब एक दरजन भयभीत स्त्रियां और वृद्ध, उतावली के साथ देव-प्रतिमाओं की आड़ लगाए, पहले पहुंचे हुए लड़कों को दूर रखने का प्रयत्न कर रहे थे। एक दढ़ियल बुढ़ऊ चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था:

"तुम क्यों बीच में टांग अड़ाते हो? प्रभु ने इसमें आग लगाई – प्रभु इसे बुझा भी देगा..."

लेकिन अग़ल-बग़ल देखने पर इस दढ़ियल जीव से और साथ ही प्रभु में विश्वास करनेवाले अन्य लोगों से भी यह छिपा नहीं रहा कि न केवल यह कि प्रभु को आग बुझानेवाले की भूमिका अदा करने का क़तई इरादा नहीं है, बल्कि यह भी कि – प्रभु की शह से – निर्णयात्मक भूमिका शैतानी शक्तियों के हाथों में पहुंच गई है। हबशियों का झुंड, अपने अष्टावक्री कूल्हों की झालर को उन्मत्तों की भांति झड़-झड़ाते और अपने धातुवी आभरणों को झंकारते हुए, वहशियाना

चीखों के साथ उमड़ पड़ा। उनके काले चीकट चेहरे – (नाकों में गुंथी टहनियों ने ज़िन्हें और भी विकृत बना दिया था) – और उनके माथे की विकटाकार लटें, सन्देह के लिए ज़रा भी गुंजाइश नहीं छोड़ती थीं – कि इन जीवों का इरादा, इसके सिवा और कुछ नहीं है कि जलूस पर टूट पड़ें, और उन्हें खींचते हुए कहीं दोज़ख़ी क्षेत्रों में घसीट ले जाएं। वृद्ध पुरुषों और स्त्रियों के मुंह से हृदयवेधी चीख़ें निकलीं, और वे जिधर राह मिली गलियों में भाग खड़े हुए, देव-प्रतिमाओं के साथ जिन्हें वे बग़ल में दबाए थे। लड़के अस्तबल और गौशाला पर टूट पड़े, लेकिन अब कुछ हो नहीं सकता था – जानवर स्वाहा हो चुके थे। सेम्योन ने किसी एक कुन्दे से झुंझलाहट के साथ एक खिड़की को तोड़ा। उस पर चढ़कर झोंपड़ी के भीतर दाखिल हो गया। कुछ क्षण बाद एक सफ़ेद सिर और दढ़ियल चेहरा खिड़की में प्रगट हुआ। सेम्योन ने झोंपड़ी के भीतर से चिल्लाकर कहा:

"ए, बुढ़ऊ को बाहर निकालो ..."

लड़कों ने बुढ़ऊ को बाहर निकाला। सेम्योन एक दूसरी खिड़की में से कूदकर नम, हरियाले अहाते में उछलने-कूदने लगा जिससे घावों को आराम मिले। हबशियों में से एक गाड़ी लाने के लिए कोलोनी की ओर लपका।

आकाश में एक चौड़ी काली पताका-सी छोड़ते हुए बादल अब पूर्व की ओर चला गया था। अन्तोन ब्रातचेन्को, 'मोलोदेत्स' को तेज़ी से दौड़ाते हुए आ पहुँचा।

"गाड़ी अभी एक मिनट में आ जाएगी। दहक़ान कहां हैं? लड़कों के सिवा यहां और कोई क्यों नहीं दिखाई देता?"

गाड़ी के आ जाने पर बुढ़ऊ को हमने उसमें डाला, और उसके पीछे-पीछे कोलोनी की ओर चल दिए। फाटकों और बेंत के वाड़ों की ओट में से जड़े हुए चेहरे अपनी नज़रों से हमें झुलसाते हुए हमारी ओर देख रहे थे।

यों, कुल मिलाकर, गांव हमारी ओर से निरपेक्ष था, हालांकि कभी-कभी यह अफ़वाह हमारे कानों में पड़ जाती थी कि कोलोनी में अनुशासन की स्थापना का उन्होंने स्वागत किया है।

शनिवार और रविवार के दिन हमारा अहाता श्रद्धालुओं से भर

जाता था। जहां तक गिरजे का सम्बन्ध था, अधिकांश केवल वृद्ध ही उसमें जाते थे। युवा लोग आम तौर से उसकी दीवारों के चक्कर लगाना पसन्द करते थें। निगरानी करनेवाले हमारे मिश्रित दस्ते ने सत्संग के इस रूप की शीघ्र ही रोक-थाम की, – आख़िर यह सत्संग था किसके साथ – हमारे या ईश्वर के? बांहों पर नीले फ़ीते बांधे निगरानी दस्ते का पूजा-भजन की अवधि के लिए निर्माण किया गया। ये दस्ते भक्तों के सामने विकल्प रखते :

"या तो गिरजे में जाओ या फिर अहाते से चलते नज़र आओ। यह सैर-सपाटे की जगह नहीं है। अपने अंधविश्वासों को लेकर यहां से दूर ही रहो!"

ज़्यादातर लोग अहाते से बाहर चले जाना पसंद करते। कुछ समय तक हमने धर्म-विरोधी अभियान नहीं छेड़ा। बल्कि इसके प्रतिकूल, भाववादी दृष्टिकोण तथा भौतिकवादी दृष्टिकोण के प्रतिनिधियों के बीच, एक हद तक कुछ सम्पर्क क़ायम हुआ।

गिरजे की परिषद छोटी-मोटी समस्याओं को हल करने के लिए कभी-कभी हमारे पास आती थी। ये समस्याएं हमारी मिली-जुली सीमा से सम्बन्ध रखती थीं। पर एक बार परिषद के सदस्यों के सामने अपनी भावनाओं को व्यक्त किए बिना मैं नहीं रह सका।

"मेरी बात सुनो, पंचो! आप लोग उम... अरे... चमत्कारी झरनेवाले गिरजे को क्यों नहीं इस्तेमाल करते? अब तो वहां साफ़-सुथरा है। आप लोगों के लिए बिलकुल ठीक..."

"डाइरेक्टर साहब!" गिरजे के मुखिया ने कहा। "हम उसे कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं, यह जानते हुए कि वह गिरजा नहीं, बल्कि चैपेल मात्र है? उसमें वेदी नहीं हैं... और यहां क्या हम आपकी राह में कुछ आड़े आते हैं?"

"मुझे अहाते की ज़रूरत है। इतनी भी जगह नहीं कि थोड़ा घूम-फिर सकें। ज़रा आप ही देखो, हमने हरेक चीज़ पर रंग-रोग़न किया है, सफ़ेदी की है, और आपका वह जर्जर गंदा गिरजा आंखों में गड़ता है। अगर आप इसे छोड़ दें तो देखते ही देखते हम इसे गिरवा दें, और एक पखवारे के भीतर फूलों की क्यारियां यहां दिखाई देने लगें।"

दढ़ियल पंच मुसकराए – क्या यह सम्भव था कि उन्हें मेरी योजना पसंद आई ?

"गिराना तो आसान है," गिरजे के मुखिया ने कहा। "निर्माण करना कठिन है। ही-ही ! तीन सौ साल हुए जब इसे बनाया गया था, कड़ी मेहनत से पैदा किया हुआ धन इसमें लगाया गया। अब कहते हो – 'हम इसे गिरवा दें ! इसका मतलब यह है कि आपकी समझ में धर्म आखिरी सांस गिन रहा है... लेकिन आप ज़रा ठहरिए तब आप देखेंगे कि धर्म आखिरी सांस नहीं गिन रहा है लोग जानते हैं "

गिरजे का मुखिया सिरासन पर आराम से स्थिर हो गया। उसकी आवाज़ सचमुच ऐसे गूंज रही थी मानो ईसाई धर्म के उभार के प्रारम्भिक दिन लौट आए हों। लेकिन एक दूसरे वृद्ध ने उसके वाक्य-प्रवाह को रोका।

"इस तरह बात न करो इवान अकीमोविच ! डाइरेक्टर साहब अपने काम की बात सोच रहे हैं। लेकिन वहां उधर, जहां आप हमें जाने को कहते हैं, वहां केवल एक चैपेल है। इसके अलावा, मैं आपको बताता हूं, कि वह जगह भ्रष्ट कर दी गई है ."

"पवित्र जल छिड़कर आप उसे शुद्ध कर सकते हैं " लापोत ने सुझाया।

वृद्ध सकपकाया।

"पवित्र जल हमेशा कारगर नहीं होता, बेटे," उसने अपनी दाढ़ी खुजलाते हुए कहा।

"अरे, आप ऐसा न कहें। वह हमेशा कारगर क्यों नहीं होता ?"

"नहीं वह हर जगह कारगर नहीं होता, बेटे। अब अगर तुम पर उसे छिड़का जाए तो कोई फल नहीं निकलेगा – नहीं निकलेगा न ?'

"हां, शायद नहीं निकलेगा," लापोत ने स्वीकार किया।

"तो अब आयी बात तुम्हारी समझ में। वह कुछ कारगर नहीं होगा। यह मालूम होना चाहिए कि पवित्र जल का कहां इस्तेमाल किया जा सकता है।"

"क्या पादरी लोग जानते हैं ?"

"बेशक, वे जानते हैं। वे जानते हैं, बेटे।"

"वे जानते हैं कि उनका फ़ायदा किस चीज में है," लापोत ने कहा, "और तुम नहीं जानते। कल यहां आग लगी। अगर लड़के न होते तो एक बूढ़ा आदमी जलकर मर गया होता, एकदम कोयला हो गया होता!"

"प्रभु की इच्छा। शायद प्रभु यह चाहते थे कि उस जैसे वृद्ध का जलकर अन्त होना चाहिए।"

"और लड़कों ने दख़लन्दाज़ी की "

वृद्ध ने अपना गला साफ़ किया।

"तुम बहुत छोटे हो, बेटे—इन सब बातों पर अभी बहस नहीं कर सकते!"

"अच्छा?"

"और वह—पहाड़ी के पदतल में—वह एक चैपेल है। उसमें वेदी नहीं है।

विनम्रता के साथ वृद्ध लोगों ने हमसे विदा ली और चले गए, लेकिन अगले दिन गिरजे की दीवारों से उन्होंने रस्से और फंदे लटकाए। कामगार उनके सहारे सन्तुलित हो गए। वे डोल लिये थे। गिरजे की दीवारों की लज्जास्पद स्थिति के बारे में टिप्पणी से शरमाकर अथवा धर्म की सप्राणता का प्रदर्शन करने के लिए गिरजे की परिषद ने दीवारों पर सफ़ेदी कराने के लिए चार सौ रूबल नियत कर दिये थे। यह था हमारा उनके साथ सम्पर्क।

कुछ समय तक कोलोनीवासी गिरजे को लेकर केवल कौतुक से उमगे थे। लड़कों ने मुझ से पूछा

"क्या हमें देखने की इजाज़त है कि गिरजा-घर में क्या हो रहा है?"

"हां देखो।"

"लेकिन इसका ध्यान रखना—कोई शैतानी न हो पाए!" जोर्का ने उन्हें चेताया। "हुड़दंग से नहीं, हमें समझौता और जीवन के पुनर्निर्माण से उनकी चेतना पर असर डालना है।"

लड़कों के दिल पर चोट पहुंची।

"हम हुड़दंगी तो नहीं हैं!"

"ख़याल रहे, हमें किसी की भी भावनाओं को चोट नहीं पहुंचानी है हमें बड़ी चतुराई से काम लेना है समझे .."

जोर्का ने अपने निषेध-निर्देशों को हालांकि मुख्यत अपने चेहरे की मुद्राओं तथा अंग-संचालन द्वारा व्यक्त किया था, लेकिन लड़के उसका आशय समझ गए।

"हम समझते हैं .. सब ठीक होगा।"

लेकिन एक सप्ताह बाद बूढ़ा झुर्रीदार पादरी मेरे पास आया और फुसफुसाकर बोला

"एक बात आपसे कहनी है, डाइरेक्टर साहब! शिकायत मैं नहीं कर सकता, निस्संदेह, आपके लड़के ऐसी कोई हरकत नहीं करते, लेकिन ... पूजा करनेवालों का ध्यान बंटाते रहते हैं, यह कुछ अच्छा नहीं लगता ... मैं जानता हूं कि वे कोशिश करते हैं – खुदा न करे कि मैं उन पर कोई तोहमत लगाऊं – फिर भी अच्छा हो अगर आप उन्हें मना कर दें। वे गिरजा न जाया करें।"

"वे उत्पात करते हैं?"

"अरे नहीं, नहीं! खुदा न करे! वे उत्पात नहीं करते, ओह नहीं! लेकिन आप जानो, वे जांघिया पहने आते हैं अपनी उन टोपियों को सजाए हुए .. उनमें से कुछ क्रॉस का चिन्ह बनाते हैं, लेकिन अपने बाएं हाथ से, आप जानो, और यह वे क़ायदे से नहीं करते। वे चारों ओर देखते रहते हैं, वे नहीं जानते कि किस ओर देखना चाहिए। वे घूम जाते हैं – कभी वेदी की ओर बग़ल के रुख, कभी पीठ करके। बेशक, उन्हें यह सब दिलचस्प मालूम होता है, लेकिन फिर भी यह पूजा-वन्दना का घर है लड़के – वे पूजा-वन्दना का, गरिमा और खुदा के भय का अर्थ नहीं जानते। वे वेदी की ओर बढ़ते हैं, निस्संदेह विनीत भाव से, लेकिन वे गिरजे में इधर-उधर घूमते हैं, हर चीज़ को देखते हैं, देव-प्रतिमाओं को छूते हैं, सिरासन की ओर देखते रहते हैं। उनमें से एक तो पवित्र द्वार में भी जा खड़ा हुआ, प्रार्थना करते लोगों की ओर ताकने लगा। यह सब, आप जानो, बड़ा अटपटा लगता है।"

धर्म-पिता को मैंने तसल्ली दी, वायदा किया कि आगे कोई उनकी राह में बाधक नहीं होगा। सो कोलोनीवासियों की सभा में मैंने एलान किया :

"लड़को, गिरजे में न जाना। पादरी शिकायत कर रहा था।"

लड़के विक्षोभ से भर उठे।

"क्यों, हमें क्यों नहीं जाना चाहिए? हमने क़तई कुछ नहीं किया। जब भी वहां कोई गया, बस देख-दाखकर चला आया। वह झूठ बोलता है!"

"तुमने क्रॉस का चिन्ह क्यों बनाया? क्या ज़रूरत थी तुम्हें क्रॉस का चिन्ह बनाने की? तुम ख़ुदा में विश्वास करते हो क्या?"

"हमसे कहा गया था कि उनकी भावनाओं को चोट न पहुंचाना। हम क्या जानें कि किस तरह वहां आचरण करना चाहिए। विचित्र लोग हैं वहां! वे खड़े रहते हैं, फिर अचानक अपने घुटनों के बल ढह जाते हैं और क्रॉस का चिन्ह बनाते हैं। सो हमारे साथियों ने सोचा, उन्हें भी ऐसा ही करना चाहिए, जिससे वे बुरा न मानें।"

"अच्छा-अच्छा, सो हुआ। अब आगे से न जाना!"

"अच्छी बात है, हम नहीं जाएंगे ... वहां बड़ा अजीब लगता है! लेकिन वहां वे बोलते ख़ूब हैं। बराबर खड़े रहते हैं – सो किस लिए? उस खोह में ... भला, क्या कहते हैं उसे ... वेदी में ... इतना साफ़-सुथरा है, क़ालीन बिछे हैं, और इतनी बढ़िया सुगंध और वह सब जो पादरी वहां करता है ... किस तरह अपने हाथों को ऊपर फेंकता है ... सच, देखने लायक़!"

"क्या तुम ठीक वेदी के दरवाज़े के भीतर चले गए थे?"

"मैं उनके पास जा रहा था, ठीक तभी जब उसने अपने हाथों को ऊपर फेंका था। वह कुछ बुदबुदा रहा था। मैं बस वहां खड़ा रहा, कुछ भी तो मैंने नहीं किया। उसने कहा – 'जाओ, लड़के, जाओ, मेरे काम में बाधा न दो!' तो, मैं चला गया ..."

जून के मध्य तक कोलोनी को बिलकुल सजा-धजा लिया गया। दस तारीख़ को बिजलीघर चालू हो गया, तेल की ढिबरियों को कबाड़-घर के सुपुर्द कर दिया गया। इसके कुछ बाद हमारे नलों में भी पानी आ गया।

कोलोनीवासी अब फिर अपने शयनागारों में पहुंच गए थे। हमारे लोहारघर में पलंगों को क़रीब-क़रीब नये सिरे से बना लिया गया था। नयी तोशकें तथा तकिए भी तैयार थे, लेकिन कम्बल अभी भी हमारी सामर्थ्य से बाहर बने हुए थे, पुराने चिथड़ों को इस्तेमाल करते

उबकाई आती थी। कम्बलों को ख़रीदने में क़रीब दस हज़ार रूबल की लागत आती। कमाण्डरों की परिषद बार-बार इस सवाल को उठाती और लापोत की इस स्थापना से कभी आगे न बढ़ पाती :

"अगर हम कम्बल ख़रीदते हैं तो हम सूअरघर को पूरा नहीं कर पाएंगे। कम्बलों की निस्बत सूअर ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हैं!"

गर्मियों में कम्बल केवल शोभा बढ़ाने का काम दे सकते थे, लेकिन उस इच्छा से हरेक का हृदय उमगा था कि नवान्न के भोज तक शयनागारों को सजा-धजा देना चाहिए। हमारे जीवन की वर्ण व्यवस्था पर कम्बलों का अभाव धब्बे की भांति मालूम होता था।

और तभी जैसे बिल्ली के भाग्य से छीका टूटा।

ख़लाबूदा अक्सर कोलोनी में आता शयनागारों की मरम्मत के कामों और निर्माण-कार्यों का मुआयना करता, लड़कों से बतियाता। यह जानकर अत्यन्त ख़ुश होता कि उसकी रई की फ़सल पूरे समारोह के साथ काटी जाएगी। ख़लाबूदा कोलोनीवासियों को बेहद चाहने लगा था।

"हमारी घाघरा-पलटन वहां बस चिचियाना जानती है," वह कहता। "यह गड़बड़ है, वह वैसा नहीं है जैसा कि होना चाहिए! काश, मुझे कोई समझा सकता कि आख़िर वे चाहती क्या हैं। लड़के काम करते हैं, अपनी करनी में कोई कसर नहीं छोड़ते, वे अच्छे लड़के हैं – कोमसोमोल के सदस्य हैं। मैं समझता हूं कि यह तुम्हीं ने उन्हें बिदका दिया है – है न?"

लेकिन, हमारे सारे मसलों के साफ़ हृदय से संवेदनशीलता प्रकट करते हुए भी, जैसे ही कम्बलों का विषय छिड़ता, वह ठंडा पड़ जाता। सिदोर कारपोविच को पिघलाने के लिए लापोत कोई भी उपाय बाक़ी न छोड़ता।

"ओह, दादा!" लापोत उसास छोड़ता। "सबके पास कम्बल हैं, एक हमें छोड़कर। ग़नीमत यही है कि साथ सिदोर कारपोविच हमारे ओर हैं। देख लेना, वे हमें कम्बल देंगे"

ख़लाबूदा दूसरी ओर घूम जाता और असन्तुष्ट स्वरों में बुदबुदाता :

"तुम लोग हो तेज़ – 'सिदोर कारपोविच हमें देंगे'"

दूसरे दिन लापोत अपने शिकायत भरे स्वर को थोड़ा पस्त बनाकर प्रकट करता :

"सो सिदोर कारपोविच भी हमारी मदद नहीं कर सकते ! बेचारे गोर्कीआइट !"

लेकिन यह पस्त स्वर भी कुछ काम न देता, हालांकि सिदोर कारपोविच, प्रत्यक्षत· थोड़ा बेचैनी का अनुभव करता।

एक सांझ जब वह आया तो ख़ूब उत्साह से भरा था और खेतों, क्षितिज, सूअरघर और सूअरों की तारीफ़ से उमगा था। शयनागार में जब गया तो सफ़ाई से संवारे हुए बिस्तरों, नव-प्रक्षालित खिड़कियों की बिल्लौरी स्वच्छता, फ़र्श की ताज़गी और कोमल फूले हुए तकियों का सुहावनापन देखकर मुग्ध हो गया। बिस्तरों की चादरों का चौंधिया देनेवाला उघारपन, इसमें शक नहीं कि आंखों को खटकता था, लेकिन कम्बलों को लेकर बुढ़ऊ के पीछे पड़ते-पड़ते मैं ऊब गया था। ख़लाबूदा शयनागारों से जब बाहर आया, उदास-सा मालूम होता था।

"क्या मुसीबत है सच, इन्हें कम्बल चाहिए लेकिन वे आएं कहां से ?"

ख़लाबूदा और मैं बाहर अहाते में आए। उस समय पूरे चार सौ के चार सौ कोलोनीवासी वहां पंक्तिबद्ध मौजूद थे, यह कसरत का समय था। कोलोनी के क़वायद सम्बन्धी नियमों के अनुसार प्योत्र इवानोविच गोरोविच ने कमान दिया .

"साथी कोलोनीवासियो, सावधान ! सैल्यूट !

सैकड़ों हाथ गति में कौंधे और हमारी ओर उन्मुख गम्भीर चेहरों की पांतों के ऊपर जाकर स्थिर हो गए। ढोलवादकों की चार खंडीय कड़ाकेदार अभिनन्दन ध्वनि से क्षितिज गूंज उठा। गोरोविच आगे बढ़ा, अपने बदन को सीधा-सतर किए हुए। वह ख़लाबूदा के सामने आकर रुक गया और रिपोर्ट दी

"बाल-सहायता समिति के साथी अध्यक्ष ! गोर्की कोलोनी के तीन सौ नवासी सदस्य कसरत के लिए पंक्तिबद्ध हैं। तीन ड्यूटी पर, छः निगरानी करनेवाले मिश्रित दस्ते और दो बीमारों की सूची में।"

पुराना अश्वारोही सैनिक प्योत्र इवानोविच एक ओर हटा। गोर्की-

आइटों की पांतों का आह्लादपूर्ण दृश्य सिदोर कारपोविच की आंखों के सामने उभर आया। वे सलामी की मुद्रा में, कसरत के लिए आवश्यक अन्तर देकर, निश्चल खड़े थे।

सिदोर कारपोविच ने भावों के आवेश में अपनी मूंछों को सहलाया, अपने स्वभाव के प्रतिकूल बेहद गम्भीर हो गया, अपनी गांठदार छड़ी को धरती पर ठकठकाया। फिर अपनी गहरी आवाज़ में ज़ोरों से बोला

"नमस्ते, लड़को!"

और उस समय जब तीन सौ नवासी प्रफुल्ल, युवा कठों ने गूंजती हुई आवाज़ में एक स्वर से उसके नमस्कार का उत्तर दिया तो उसकी आंखें मिचमिचा गईं।

खलाबूदा, अपने आपको रोक सकने में अब असमर्थ हो मुसकराया, एक बाज़ू उसने नज़र डाली और सकपकाहट के साथ घरघरा उठा:

"भुतने कहीं के! एकदम दुरुस्त! मैं... मैं इनसे कुछ कहना चाहूंगा "

"ऐट ईज़!"

कोलोनीवासियों ने अपने दाहिने पांव को बदला, दोनों हाथों को कमर के पीछे फेंका, हल्का-सा झोंका लिया और सिदोर कारपोविच की ओर मुसकराये।

एक बार फिर सिदोर कारपोविच ने अपनी छड़ी से धरती को ठकठकाया, एक बार फिर अपनी मूंछों को सहलाया।

"लड़को, तुम जानो, भाषण देने का मैं शौक़ीन नहीं हूं। फिर भी, इस समय मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं। तुम बढ़िया लोग हो, साफ़-साफ़ मैं तुमसे कहता हूं, तुम लोग बढ़िया जीव हो! और तुम हर काम काम करनेवालों के ढंग से करते हो, – शानदार ढंग से। मैं तुमसे साफ़-साफ़ कहता हूं – अगर मेरा कोई लड़का होता, तो मैं चाहता कि वह तुम्हारे जैसा हो। तुम इस पर ध्यान न दो कि वे पटबी-जनियां क्या कहती हैं। मैं तुमसे साफ़-साफ़ कहता हूं – तुम अपनी लीक पर जमे रहो – मैं एक पुराना बोल्शेविक हूं, एक पुराना कामगार भी हूं, और मैं जानता हूं, कि यह सब हमारे ढंग से हो रहा है। अगर कोई कहता है, नहीं, तो उस पर ध्यान न दो, आगे बढ़े चलो! आगे – समझ गए न? तुम्हें यह दिखाने के लिए कि मैं बेकार की बात

नहीं करता साफ़-साफ़ मैं तुमसे कहता हूं – मैं तुम्हें कम्बल दूंगा अपने को ढांपने के लिए तुम्हें कम्बल मिलेंगे ! "

अपनी पांतों के सांचे को छिन्न-भिन्न कर लड़के हमारी ओर लपके। लापोत उछलकर आगे आया, सीधा-सतर होने की चिन्ता किये बिना अपनी बांहों को उसने फहराया और चिल्ला उठा

"हुर्रा, सिदोर कारपोविच ! "

गोरोविच और मैं बड़ी मुश्किल से एक बाजू हटे। खलाबूदा को अनेक हाथों ने ऊँचा उठाया, अनेक बार हवा में उसे उछाला और क्लब की ओर ले चले। उसकी गांठगठीली छड़ी भीड़ के सिरों के ऊपर थिरक रही थी।

क्लब के दरवाज़े पर उन्होंने उसे ज़मीन पर उतारा – अस्त-व्यस्त, लाल विह्वल को। अटपटे-से अन्दाज़ में उसने अपने कोट को ठीक करना शुरू किया, अपने कोट की एक जेब को अचरज के साथ वह अभी अपने हाथ से थपथपा ही रहा था कि तारानेत्स उसके पास पहुंचा और विनम्र भाव से कहने लगा

"यह लीजिये अपनी घड़ी, अपना बटुवा और अपनी ये कुंजियां भी ! "

"क्या ये सब गिर पड़ी थीं ?" खलाबूदा ने आश्चर्य से पूछा।

"नहीं ये गिरी नहीं थीं," तारानेत्स ने कहा। "इन्हें मैंने अपनी देख-संभार में ले लिया था, इस ख़याल से कि कहीं गिर न पड़ें, खो न जाएं आप जानो, ऐसा हो जाता है "

खलाबूदा ने अपनी निधियों को तारानेत्स के हाथ से ले लिया और तारानेत्स भीड़ में विलीन हो गया।

"क्या लड़के हैं ! सच ! "

अचानक वह ज़ोरों से हंस पड़ा।

"भुतने कहीं के ! भला, क्या कहोगे इसे तुम अब ! कहां है वह वह जिसने इन्हें 'ले लिया था'? "

पूर्णतया अभिभूत होकर उसने हमसे विदा ली और नगर के लिए रवाना हो गया।

इस सबके बाद अगले दिन अपने ख़ूब ठाठदार दफ़्तर में ठीक यही सिदोर कारपोविच जब रूखेपन से मेरे साथ पेश आया तो मैं एकदम

हतबुद्धि होकर रह गया। मुझ से बातें करने के बजाय अपनी मेज़ की दराज़ों में उसने खटर-पटर की अपनी नोटबुक के पन्नों को उसने उलटा-पलटा, नाक सुड़की।

"हमारे पास कम्बल-वम्बल नहीं हैं" उसने कहा। "नहीं, नहीं हैं!"

"हमें धन दे दीजिये – हम ख़ुद ख़रीद लेंगे।"

"धन भी हमारे पास नहीं है धन-वन कुछ नहीं है इसके अलावा, यह तुम्हारी मदों से बाहर की चीज़ है।"

"और कल कल के बारे में क्या कहते हैं आप?"

"हां तो, कल के बारे में क्या? वह महज़ एक बात थी। मैं क्या कर सकता हूं जब कुछ नहीं है?"

मैंने उस वातावरण की कल्पना की जिसमें खलाबूदा सांस लेता था, डारविन को मैंने याद किया, उंगलियों से अपनी टोपी के शिरोभाग को छूकर सलाम किया और उलटे पांव लौट आया।

सिदोर कारपोविच के पलट जाने का समाचार विक्षोभ के साथ कोलोनी में ग्रहण किया गया। गलातेन्को तक विक्षुब्ध हो उठा

"क्या चोंच आदमी है। जो हो, वह अब कोलोनी में नहीं आ सकता। और उसने कहा था – जब तरबूज़ पकने शुरू होंगे तो मैं आऊंगा। उनकी चौकसी करने में मदद दूंगा"

अगले दिन, बाल-सहायता समिति के अध्यक्ष के विरुद्ध, पंच-कमीशन के यहां मैंने शिकायत दाख़िल कर दी। मसले के कानूनी पक्ष को नहीं, बल्कि राजनीतिक पक्ष को मैंने अपनी शिकायत का आधार बनाया था – यह सहन नहीं किया जा सकता कि एक बोल्शेविक अपने वचन का पालन न करे।

और हमें आश्चर्य हुआ जब, दो दिन के भीतर ही पंच-कमीशन ने लापोत को और मुझे तलब किया। खलाबूदा जज की लाल कपड़ा बिछी मेज़ के सामने खड़ा था और कुछ सिद्ध करने की कोशिश कर रहा था। पार्श्व-भूमि में अपने चश्मों को चढ़ाए, लक़दक़ गरदनों और अमेरिकनकट मूंछों से लैस, वातावरण के प्रतिनिधि एक दूसरे से सटे आपस में फ़ुसफ़ुस कर रहे थे। पंचाधीश ने, जिसकी आंखें भूरी और ललाट चौड़ा था और जो काले रंग की क़मीज़ पहने था, पंखे की

भांति फैला हुआ अपना हाथ सामने मेज़ पर पड़े एक काग़ज़ के ऊपर रखा।

'ज़रा ठहरो, सिदोर!" उसने कहा। 'मुझे साफ़-साफ़ बताओ — क्या तुमने कम्बलों का वायदा किया था?"

ख़लाबूदा का चेहरा लाल रंग चला। उसने अपनी बांहों को फैलाकर जवाब दिया: "हां तो... इस बारे में कुछ बात तो हुई थी लेकिन इससे क्या अगर मैंने वायदा किया भी हो तो?"

"पंक्तिबद्ध कोलोनीवासियों के सामने?"

"हां, यह सच है... लड़के पंक्तिबद्ध मौजूद थे.."

"क्या उन्होंने तुम्हें उछाला?"

"लड़के जो ठहरे! उन्होंने मुझे उछाला ऐसे में कोई क्या कर सकता है?"

"भुगतान करना है।"

"कैसे?"

"भुगतान करो, मैं कहता हूं। वायदे के अनुसार कम्बल देने होंगे।"

जज मुसकराया। ख़लाबूदा आस-पास के लोगों की ओर मुड़ा, धमकी के अन्दाज़ में कुछ बुदबुदाते हुए।

कुछ दिन तक हमने इन्तज़ार किया। इसके बाद कम्बल या धन लेने के लिए ज़दोरोव ख़लाबूदा के पास पहुंचा। सिदोर कारपोविच ने ज़दोरोव को अपने दफ़्तर में घुसने तक नहीं दिया। उसके सप्लाई मैनेजर ने कैफ़ियत दी:

"समझ में नहीं आता कि तुम्हें यह क्या सूझा जो अदालत में हमें खींच ले गए। क्या काम करने का यही तुम्हारा तरीक़ा है? हां तो, यह लो, यह रहा पंच-कमीशन का प्रस्ताव। यह पड़ा है तुम्हारे सामने — यह देखो!"

"तो?"

"तो क्या? कुछ नहीं! और मेहरबानी करके अब यहां न आना! हो सकता है कि हम अपील दायर करने का निश्चय करें। अधिक-से-अधिक हम इसे अगले साल के बजट में ले सकते हैं। शायद समझते हो कि हम एकदम बाज़ार जाकर चार सौ कम्बल ख़रीद लायेंगे — यह एक प्रतिष्ठित विभाग है..."

ज़दोरोव नगर से अत्यन्त विचलित लौटा। कमाण्डरों की परिषद में सारी सांझ सरगर्म, उत्तेजित बहस होती रही। अन्य में निश्चय हुआ कि उक्राइनी सरकार के पास लिखित अपील दायर की जाए। लेकिन अगले दिन एक ऐसा रास्ता निकल आया जो एकबारगी सरल भी था और स्वाभाविक भी – इतना दिलचस्प और अप्रत्याशित कि समूची कोलोनी ख़ुशी से नाच उठी, हंसी के मारे दोहरी हो गई, जिसमें उस क्षण तक प्रतीक्षा करने की क़तई दरकार नहीं थी जब ख़लाबूदा का कोलोनी में पदार्पण हो, ख़ुद कोलोनीवासी उससे बातें करें। यह तरीक़ा था – बाल-सहायता समिति के बैंक में जमा चालू खाते पर प्रतिबंध लगाना। दो दिन गुज़र गए। एक बार फिर ऊंचे दफ़्तर में मेरी तलबी हुई जहां एक चौड़ी आराम-कुरसी पर वही सफ़ाचट साथी विराजमान था जिसने एक बार मुझ से यह जानना चाहा था कि मैं चालीस रूबली शिक्षकों को क्यों पसंद नहीं करता। अपने गालों पर आनन्द की चमक लिए वह ख़लाबूदा की ओर देख रहा था। लाली तो ख़लाबूदा के चेहरे पर भी थी, लेकिन वह दूसरी क़िस्म की लाली थी। वह दफ़्तर के फ़र्श को अपने डगों से नाप रहा था।

मैं चुपचाप देहरी पर खड़ा रहा। सफ़ाचट साथी ने अपनी हंसी को मुश्किल से रोकते हुए निकट आने के लिए मुझसे कहा :

"इधर आओ... यह क्या है? यह तुम कैसे कर सके, भाई? इस तरह नहीं चलेगा! यह प्रतिबंध हटाना चाहिए, नहीं तो ज़रा इसकी ओर तो देखो, वे इसे ख़ुद अपनी जेब में हाथ नहीं डालने देते! यह आप लोगों की शिकायत करने आया है। कहता है – 'मैं काम नहीं करना चाहता – गोर्की कोलोनी के संचालक ने मेरे साथ ज़्यादती की है!"

मैं कुछ नहीं बोला। यह जानने की प्रतीक्षा करता रहा कि सफ़ाचट साथी असल में क्या कहना चाहता है।

"प्रतिबंध हटाना ही चाहिए," उसने गम्भीरतापूर्वक कहा। "पहले कभी ऐसा प्रतिबंध देखने-सुनने में नहीं आया!"

इसके बाद अचानक वह अपने को नहीं संभाल सका। हंसी की ऐसी बाढ़ उमड़ी कि अपनी आराम-कुरसी में लुढ़क गया। ख़लाबूदा

ने हाथों को अपनी जेबों में खोंसा और खिड़की से बाहर की ओर देखने लगा।

"क्या आप प्रतिबंध को हटाने का आदेश देने जा रहे हैं?" मैंने पूछा।

"बात यह है, तुम जानो, मुझे ऐसा आदेश देने का कोई अधिकार नहीं है। सुना तुमने, सिदोर कारपोविच, मुझे कोई अधिकार नहीं है! मैं इससे प्रतिबंध हटाने के लिए कह सकता हूं। यह जवाब दे सकता है – 'मैं नहीं हटाऊंगा!'। मैं देख रहा हूं कि तुम अपनी जेब में चैक-बुक लिए हो। सो आवश्यक रक़म का एक चैक काट दो – दस हज़ार का – क्यों, ठीक है न? और बस..."

ख़लाबूदा खिड़की से हट आया, हाथों को अपनी जेबों से बाहर निकाला, लाली-मायल अपनी मूंछों पर उंगली फेरी और मुसकराकर बोला:

"लेकिन हैं ये हरामी? क्यों, है न?"

वह मेरे पास खिसक आया, मेरे कंधे पर उसने धौल जमाई और बोला:

"आदमी तुम ख़ूब हो! हमारे साथ ऐसे ही पेश आना चाहिए! हम सबके साथ जो निरे अफ़सरशाही के पुतले हैं! हम इसी योग्य हैं!"

सफ़ाचट साथी एक बार फिर हंसी में बह चला, यहां तक कि उसने रूमाल निकाला। ख़लाबूदा ने मुसकराते हुए अपनी चैक-बुक निकाली और एक चैक काट दिया।

नवान्न का उत्सव पांच जुलाई को मनाया गया।

यह हमारे प्राचीनतम उत्सवों में से एक था – हमारे पंचांग की एक अत्यन्त उल्लासपूर्ण तिथि – जिसे मनाने की कार्यविधि बहुत पहले से क़ायम थी। लेकिन इस बार उसमें कोलोनी को प्रदर्शित करने की भावना का प्राधान्य था, इसलिए कि तमाम सैन्य कार्रवाइयां अब पूरी हो चुकी थीं। शुरू से लेकर आख़िर तक, कोलोनीवासियों को इस भावना ने अभिभूत कर लिया था, इस हद तक कि गड़बड़ी का कोई चिन्ह तक न रहा। जोश और दृढ़ निश्चय की एक लहर के साथ – यह कि हर चीज़ प्रथम कोटि की होनी चाहिए – काम चल रहा था। कमज़ोर छोर अब मुश्किल से ही कहीं नज़र आते थे। बिस्तरे नये लाल कम्बलों

से सर्जे थे, तालाब की सतह आईने की भांति चमक रही थी और पहाड़ी के ढलवान पर भावी बग़ीचे के लिए सात नये सीढ़ीनुमा भूखण्ड तैयार कर लिए गए थे हर चीज़ चौचक थी। सिलान्ती सूअरों को जिबह कर रहा था, बुत्साई का मिश्रित दस्ता हारों तथा नारों को लटका रही थी। कोस्तिया वेत्कोव्स्की ने फाटक के ऊपरवाली मेहराब के सफ़ेद धरातल पर सावधानी के साथ लिख दिया था:

दुनिया-भर में श्रम की लाल पताका फहराए!

और फाटक के दूसरी ओर एक शब्द अंकित था:

अच्छा!

महीने के दूसरे दिन तेरहवां मिश्रित दस्ता ख़ूब सज-धज कर, जेवेली के कमान में निमंत्रण-पत्रों को वितरित करने शहर के लिए रवाना हुआ।

उत्सव के दिन आधा हैक्टर रई काटी जानी थी। रई का यह क्षेत्र लाल झंडियों की पांतों से चिन्हित था, और वहां तक जानेवाला पथ हारों तथा झंडों से सजा था। फाटक पर स्वागत समिति के लिए एक छोटी मेज़ लगी थी। तालाब के आगे को निकले हुए गहरे तट के ऊपरी हिस्से में छः सौ व्यक्तियों के लिए मेज़ें सजी थीं। वायु का विनम्र प्रवाह उनपर बिछे सफ़ेद मेज़पोशों के कोनों, गुलदानों में लगे फूलों, भोजन-कमीशन के उजले एप्रनों में लहरियों का संचार कर रहा था।

सिनेन्की और ज़ाइचेन्को, लाल रंग के जांघिये तथा क़मीज़ें पहने और चौड़े किनारेवाली काकेशियाई टोपियां लगाए, फाटक से बाहर नीचे सड़क पर चौकसी कर रहे थे। वे 'मोलोदेत्स' और 'मेरी' पर सवार थे। ख़रगोश की असली खाल की गोट लगा लाल तारे सहित बिना आस्तीन का सफ़ेद चोग़ा दोनों के कंधों से झूल रहा था। वान्या ज़ाइचेन्को ने सात दिन के भीतर हमारे सभी उन्नीस सिगनलों को सीख लिया था। सिगनल-ब्रिगेड के कमाण्डर गोर्कोवस्की ने उसे उत्सव के दौरान बिगुलवादक ऑन ड्यूटी का सम्मान देने योग्य माना था। लड़के अपने बिगुलों को साटिन के फ़ीतों के सहारे अपने कंधों से लटकाए थे।

पहले अतिथि रिजोव स्टेशन से पैदल चलकर दस बजे प्रकट हुए। ये ख़ारकोव कोमसोमोल संगठनों के प्रतिनिधि थे। घुड़सवारों ने अपने बिगुलों को ऊंचा उठाया, साटिन के फ़ीते उनके कंधों पर झूलते रहे, रकाबों में अपने आपको स्थिरता से जमाते हुए स्वागत में तीन बार बिगुल-ध्वनि की।

उत्सव का श्रीगणेश हो गया। स्वागत-समिति बांहों पर हल्के नीले फ़ीते बांधे हुए अतिथियों को फाटक पर भेंटती, आगन्तुकों के वक्ष पर लाल फ़ीते से बंधी रई की तीन बालों को पिन से खोंसती, साथ ही प्रत्येक को एक कार्ड प्रदान करती। उस कार्ड पर अत्यन्त शिष्टता के साथ, उस दस्ते का नम्बर और कमाण्डर का नाम अंकित थे जिनकी ओर से वे भोजन पर आमंत्रित थे।

अतिथियों को कोलोनी में घुमाने ले जाया गया और उधर, नीचे सड़क पर, हमारे शानदार घुड़सवारों ने एक बार फिर अभिनन्दन-सिगनल की ध्वनि की।

कोलोनी का अहाता और इमारतें अतिथियों से भरने लगीं। ख़ारकोव फ़ैक्टरियों के प्रतिनिधि, ज़िला कार्यकारिणी समिति और जन-शिक्षा विभाग के कार्यकर्ता, आस-पास की ग्राम-सोवियतों के लोग, समाचार-पत्रों के संवाददाता पैदल चलकर और जुरिन्स्काया, यूरियेव, क्ल्यामेर, ब्रेगेल, साथी ज़ोया, पार्टी-संगठनों के सदस्य तथा सफ़ाचट साथी मोटरों से आए। ख़लाबूदा भी अपनी 'फ़ोर्ड' मोटर में आया। कमाण्डरों की परिषद ने, जो ख़ास इसी उद्देश्य के लिए फाटक पर मौजूद थी, उससे भेंट की। मोटर में से फ़ौरन खींचकर उन्होंने उसे बाहर निकाला और हवा में उछाला। सफ़ाचट साथी मोटर के दूसरे बाज़ू में खड़ा मुसकरा रहा था। जब ख़लाबूदा को धरती पर अपने पांवों पर जमा दिया गया तो सफ़ाचट साथी ने पूछा:

"इस बार उन्होंने तुमसे और क्या झटका?"

ख़लाबूदा को यह बुरा लगा।

"क्या आप समझते हैं कि ये मुझसे कुछ झटक नहीं सकते? यह तो ये रोज़ करते रहते हैं!"

"अरे नहीं! भला बताओ तो?"

"उन्होंने एक ट्रैक्टर झटका .. मैं उन्हें एक ट्रैक्टर दे रहा हूं—

फ़ोर्डसन ट्रैक्टर ... बस मौज करो – चाहे जितना उछालो लेकिन और कुछ तुम नहीं पा सकोगे ! "

एक बार फिर ख़लाबूदा को हवा में उछाला गया। इसके बाद लड़के उसे अपने साथ कहीं ले गए।

कोलोनी का अहाता देखते-न-देखते वैसे ही चहल-पहल से भर गया जैसे कि किसी नगर की मुख्य सड़क। कोलोनीवासी बटन के छेदों में फूल खोंसे, नये आगन्तुकों के साथ सुन्दर तथा चौड़ी पांतों में पथों पर घूम रहे थे। वे अपने गुलाबी होंठों की मुसकानों से उन्हें सींच रहे थे, कभी संकोच में पगी और कभी आशा से उमगती नज़रों से कभी इस और कभी उस ओर इशारा करते, कभी उन्हें यहां और कभी वहां घुमाते हुए देख रहे थे।

बारह बजे सिनेन्की और ज़ाइचेन्को अपने घोड़ों पर सवार अहाते के भीतर आए, अपनी ज़ीनों से झुकते हुए कमाण्डर ऑन ड्यूटी नताशा पेत्रेन्को से फुसफुसाकर उन्होंने कुछ सलाह की और इसके बाद, हंसते हुए अतिथियों तथा कोलोनीवासियों के बीच से होकर सिनेन्की गोदाम-अहाते की ओर सरपट दौड़ गया। कुछ क्षण बाद आम सभा के लिए विजयी सिगनल की आवाज़ – एक ऐसी आवाज़ जो अन्य सबसे हमेशा एक अष्टक अधिक तेज़ होती थी – वहां से गूंजी और वान्या ज़ाइ-चेन्को ने उसे तुरन्त उठाया। कोलोनीवासी अपने अतिथियों को छोड़, केन्द्रीय चौरस की ओर लपके। इससे पहले कि बिगुल के अन्तिम स्वर रिजोव का स्पर्श करते, वे एक पांत में खड़े हो गए। तभी मित्या नि-सिनोव, अपनी एड़ियों को उछालते और सभी के हृदयों को मोहता हुआ, बाएं बाज़ू की ओर लपका। वह अपने हाथ में एक हरा झंडा लिए हुए था। मैंने अपने रोम-रोम में विजय का अनुभव किया। फूलों की क्यारियों की पांत की बग़ल में नीले और सफ़ेद फ़ीते के रूप में आह्लाद तथा यौवन से उमगती पांत के अचानक उदित होने का दृश्य कल्पना को चुनौती देता मालूम होता था तथा अपनी आंखों, अपनी रुचियों और अपनी आदतों के द्वारा उपस्थित मण्डली में बरबस अपने प्रति सम्मान की भावना जगा रहा था। आगन्तुकों के चेहरे, जो अब तक कृपापूर्ण अन्दाज़ में मुसकरा रहे थे – यह उदारतापूर्ण अन्दाज़ उन लोगों के चेहरों पर देखा जा सकता है, जो बच्चों के प्रति सदाशय

होते हैं – अचानक गम्भीर और एकाग्र हो गए। यूरियेव ने जो मेरे पीछे खड़ा था, ज़ोरों से कहा·

"बहुत सुन्दर, अन्तोन सेम्योनोविच! ऐसा ही होना चाहिए!"

कोलोनीवासियों ने सचेष्ट हो अपनी पांतों को सीधा किया। रह-रहकर, जब-तब, वे मेरी ओर देख लेते। पूरी तरह आश्वस्त कि सब कहीं हर चीज़ चौकस है, बिना किसी हिचक के मैंने अगला आदेश दिया

"सलामी के लिए, अटैंशन!"

गिरजे की दीवार की ओट से सैल्यूट की गतिमयता के साथ अपने डगों को उठाती नताशा के नेतृत्व में झंडा-ब्रिगेड प्रकट हुई और दाहिने बाज़ू की ओर बढ़ गई।

मैंने कोलोनीवासियों से दो-चार शब्द कहे, उत्सव के उपलक्ष्य में उनका अभिनन्दन किया और उनकी विजय पर उन्हें बधाई दी।

"और अब हम अपने श्रेष्ठतम कामगारों का, बुरून के कमान में नवान्नोत्सव के आठवें मिश्रित दस्ते का अभिनन्दन करते हैं।"

बिगुलों ने एक बार फिर अभिनन्दन-ध्वनि की। आठवाँ मिश्रित दस्ता दूर, पूरे खुले फाटक से निकल पड़ा। ओह, प्रिय मेहमानो! तुम्हारे भावों का, तुम्हारी थिर मंत्रमुग्ध नज़रों का मैं अनुभव कर सकता हूं। क्योंकि मैं खुद भी, और यह एकदम पहली बार ही ऐसा नहीं हुआ है, आठवें मिश्रित दस्ते के ऊंचे, विजयी सौन्दर्य से मंत्रमुग्ध हो उठा हूं। शायद देखने और अनुभव करने के जितने अधिक अवसर मुझे मिल सकते थे, उतने तुम्हें नहीं।

बुरून दस्ते की अगुवाई कर रहा था। बुरून, परखा हुआ पुराना जीव था। वह कोलोनी के काम करनेवाले दस्तों की पहली बार ही अगुवाई नहीं कर रहा था। पैने फल्केवाला हंसिया और पंजा, दोनों एक में जुड़े, चमचम चमकते और फूलों से सजे, उसके भीमकाय कंधों के ऊपर हवा में अधर उठे थे। बुरून आज राजसी सौन्दर्य से दमक रहा था, एक ऐसे सौन्दर्य से, जिसे केवल मैं ही पूर्णतया हृदयंगम कर सकता था। कारण, केवल मैं ही जानता था कि वह रंगमंच की एक मुख्य विभूति मात्र नहीं था, कि वह केवल सुन्दर देखने लायक़ कोलोनीवासी मात्र नहीं था, बल्कि सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख वह एक

असल कमाण्डर था, एक ऐसा कमाण्डर जो जानता था कि किसकी वह अगुवाई कर रहा है और किस दिशा में वह उन्हें ले जा रहा है। बुरून की कठोर, शान्त मुख-मुद्रा में, प्रस्तुत काम के बारे में उसकी भावनाओं को मैं पढ़ सकता था – आज आधे घंटे की अवधि में आधा हैक्टर रई को उसे काटना और पूलों में बांधना था। आगन्तुक यह नहीं देख पा रहे थे। वे यह भी नहीं देख पा रहे थे कि कटाई करनेवालों का आज जो नेतृत्व कर रहा था, वह डाक्टरी का छात्र था। यह संयोग एक ऐसी चीज़ था जिसमें हमारी सोवियत शैली अपने आपको इतनी स्पष्टता के साथ व्यक्त कर रही थी। हां बहुत कुछ था जो आगन्तुक नहीं देख पा रहे थे। यह एक इसी तथ्य से प्रकट था कि उनकी आंखें केवल बुरून को ही नहीं देख रही थीं। बुरून के पीछे चार-चार की पांतों में वैसी ही सफ़ेद क़मीज़ें पहने और वैसे ही फूलों से सजे हंसियों को धारण किए, सोलह कटाई करनेवाले व्यक्ति मार्च कर रहे थे। सोलह कटाई करनेवाले! कितना आसान था उन्हें गिनना! लेकिन कितने शानदार नाम उनमें दमक रहे थे – कराबानोव, ज़दोरोव, बेलूख़िन, श्नाइदेर, गेओर्गीयेव्स्की! केवल आख़िरी पांत नये गोर्कीआइटों से शोभित थी – वोस्कोबोनिकोव, स्वात्को, पेरेत्स और कोरोत्कोव!

काटनेवालों के पीछे सोलह लड़कियां मार्च कर रही थीं। प्रत्येक का सिर फूलों के हारों से सजा हुआ और प्रत्येक के हृदय में हमारे सुन्दर सोवियत दिनों के हार गुंथे हुए थे। इनका काम पूले बाँधना था।

ठीक उस समय जब आठवाँ मिश्रित दस्ता हमारे निकट आ लगा था, कटाई की दो मशीनें खड़खड़ करती फाटक के भीतर से आईं। दो जोड़ी घोड़े चुस्त दुलकी चाल से प्रत्येक को खींच रहे थे। घोड़ों की अयालें, उनका साज़ कटाई-मशीनों के फल्के फूलों से सजे थे। प्रत्येक घोड़े की पीठ पर, दाहिने बाज़ू, एक-एक सवार था। पहली मशीन की गद्दी पर ख़ुद अन्तोन ब्रातचेन्को आसन जमाए था, गोर्कोवस्की दूसरी पर। कटाई-मशीनों के बाद घोड़े-जुते पंजों का आगमन हुआ। इनके बाद पानी के पीपे का। इसे गलातेन्को हांक रहा था, – कोलोनी में सबसे आलसी जीव लेकिन कमाण्डरों की परिषद ने, इसके बावजूद, बिना किसी चूं-चां के आठवें मिश्रित में स्थान पाने का सम्मान दिया

था। अब यह देखा जा सकता था कि कितनी उद्यमशीलता के साथ नाम मात्र को भी काहिली न दिखाते हुए, गलातेन्को ने अपने पीपे को फूलों से सजाया था। यह पीपा नहीं था, बल्कि फूलों का एक सुगंधित बिछावन था। पहियों की आरों तक को फूलों से सजाया हुआ था। गलातेन्को के बाद रेडक्रॉस की एम्बुलेन्स थी। इसमें स्मेना के साथ येलेना मिख़ाइलोवना सवार थी। कौन जाने, काम के दौरान किस चीज़ की ज़रूरत पड़ जाए!

कोलोनीवासियों की पांत के सामने आकर आठवाँ मिश्रित दस्ता रुक गया। लापोत पांत में से बाहर निकल आया और उन्हें सम्बोधित करने लगा:

"आठवाँ मिश्रित दस्ते, क्योंकि तुमने अपने आपको अच्छा कोमसोमोल सदस्य, अच्छा कोलोनीवासी तथा अच्छा साथी सिद्ध किया है, इसी लिए कोलोनी ने नवान्न काटने का यह गौरव तुम्हें प्रदान किया है। ढंग से इसे निबाहना और हमारे तमाम किशोर कोलोनीवासियों के सामने एक बार फिर मिसाल रखना कि किस तरह काम करना चाहिए, किस तरह जीना चाहिए। कमाण्डरों की परिषद तुम्हें बधाई देती है और तुम्हारे कमाण्डर बुरून से अनुरोध करती है कि वह हम सबको अपने कमान में ग्रहण करे।"

कोई नहीं जानता था कि अन्य भाषणों की भांति इस भाषण की रचना किसने की थी। इस तरह के भाषण, वर्ष-प्रतिवर्ष, ठीक उन्हीं शब्दों में दिए जाते थे, कमाण्डरों की परिषद ने एक बार हमेशा के लिए उनका मज़मून तय कर दिया था। और ठीक इसी कारण ख़ास भावना के साथ उन्हें सुना जाता था। उस समय जब बुरून ने पास आकर मेरा हाथ दबाया और आवश्यक शब्दों को जब उसने दोहराया, तो कोलोनीवासी सांस रोककर थिर हो गए।

"कामरेड संचालक आठवें मिश्रित दस्ते को साथ ही मदद के लिए इन अन्य लड़कों को भी, काम पर ले जाने की मुझे अनुमति दें।"

जैसी कि आशा की जाती थी, मैं इसका जवाब देता हूं:

"साथी बुरून, आठवें मिश्रित को काम पर ले जाओ, अपनी मदद के लिए इन लड़कों को भी साथ में ले लो!"

इस क्षण के बाद बुरून कोलोनी का कमाण्डर बन जाता है। बनावट-संयोजन में फेर-फार करने के लिए वह कुछ आदेश देता है और एकाध मिनट बाद कोलोनी मार्च करने लगती है। सबसे आगे झंडा और ढोलवादक, फिर काटनेवाले और काटने की मशीनें, इनके बाद समूची कोलोनी और फिर मेहमान। मेहमान भी सामान्य अनुशासन को स्वीकार कर पांतों में गुंथ जाते हैं और क़दम से क़दम मिलाकर चलते हैं। ख़लाबूदा मेरे बराबर में मार्च कर रहा था। मैंने सुना, वह सफ़ाचट साथी से कह रहा था

"अच्छी सांसत है! अगर उन नासखेत कम्बलों का क़ज़िया न होता तो मैं भी इनके साथ मार्च करता नज़र आता, अपने कंधे पर हंसिया रखे हुए!"

मैंने सिलान्ती की ओर इशारा किया। वह तुरन्त गोदाम की ओर लपक गया। जब हम आधा हैक्टर के निर्णीत क्षेत्र पर पहुंचे तो बुरून ने कोलोनी को रोक दिया और साहस के साथ परम्परा से विच्छिन्न होते हुए कोलोनीवासियों से कहा :

"एक सुझाव आया है कि सिदोर कारपोविच ख़लाबूदा को ज़दोरोव की ब्रिगेड, आठवें मिश्रित दस्ते में पांचवां कटौवा नियुक्त किया जाए। किसी को आपत्ति है?"

कोलोनीवासियों ने हंसते हुए करतलध्वनि की। बुरून ने सिलान्ती से सजा हुआ हंसिया लिया और उसे ख़लाबूदा को प्रदान किया। किशोरों जैसी फ़ुर्ती के साथ सिदोर कारपोविच ने अपनी जाकेट उतारी, खेत की सीमावर्ती घास की पट्टी पर उसे फेंका और हंसिया को हवा में फहराया।

"धन्यवाद!"

ख़लाबूदा ने पांचवें कटौवे के रूप में ज़दोरोव की ब्रिगेड में स्थान ग्रहण किया। ज़दोरोव ने उसकी ओर अपनी उंगली हिलाते हुए चेताया।

"ऐसा न हो कि आप अपने हंसिये को धरती में धंसा दें। यह हमारी ब्रिगेड के लिए लज्जास्पद होगा,!"

"सो कुछ नहीं," ख़लाबूदा ने कहा। "मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि यह कैसे किया जाता है!"

कोलोनीवासी खेल के एक बाज़ू पंक्ति में खड़े हैं। झंडा रई के

ऊपर उस जगह फहरा रहा है जहां नवान्न का पहला पूला बांधा जाएगा। बुरून और नताशा झंडे के निकट पहुंचते हैं, उधर ज़ोरेन – हमारा सबसे कम-उम्र कोलोनीवासी – अपने आपको तैयार रखता है।

"अटैंशन!"

बुरून कटाई शुरू करता है। हंसिये के कुछ ही आघातों से नताशा के पांव के पास लम्बे तनेवाली रई का एक ढेर लगा देता है। पहली कटाई में से नताशा अपने लिए एक माला बना लेती है। दक्ष हाथों से पूला बांधती है, दो लड़कियां उसे एक रंगबिरंगे फूलों के हार से सजाती हैं और नताशा प्रयासों तथा सफलता के उद्वेग से रंजित पूला बुरून को सौंप देती है। बुरून पूले को अपने कंधे पर उठाता है और गम्भीर, चपटी नाकवाले ज़ोरेन से – बुरून के प्रत्येक शब्द को लपकने के लिए जिसने अपना सिर पीछे की ओर फेंक लिया है, कहता है:

"इस पूले को मेरे हाथों से ग्रहण करो, काम और अध्ययन करो, इसलिए कि बड़े होने पर तुम कोमसोमोल सदस्य बन सको। उस सम्मान को जीत सको जो मैंने जीता है – नवान्न के पहले पूले की कटाई करना।"

अब पांसा ज़ोरेन की ओर पलटा था।

गूंजदार आवाज़ में उसने बुरून को जवाब दिया। वह खेतों के ऊपर भारद्वाज पक्षी की भांति चहचहा रहा था।

"धन्यवाद ग्रित्सको! मैं अध्ययन करूंगा और साथ ही मैं काम भी करूंगा। जब मैं बड़ा होकर कोमसोमोल सदस्य बनूंगा तो मैं कोशिश करूंगा और सम्मान को जीतूंगा – नवान्न के पहले पूले को काटने तथा उसे सबसे छोटे कोलोनीवासी को प्रदान करने के सम्मान को।"

ज़ोरेन ने पुला ग्रहण किया। उसकी ओट में वह क़रीब-क़रीब ओझल हो गया। लेकिन छोटे लड़के फूलों से सजी स्ट्रेचर लिए बहुत द्रुत गति से उसके पास पहुंच चुके थे। ज़ोरेन ने अपने बहुमूल्य उपहार को फूलों के बिछावन पर रख दिया।

सैल्यूट की गरज के साथ झंडे और पहले पूले को दाहिने बाज़ू की ओर ले जाया गया।

बुरून ने कमान दिया।

"काटने और पूले बांधनेवालियो – अपनी जगह पर!"

कोलोनीवासी लपककर उन जगहों पर पहुंचे जो पहले से ही उनके लिए नियत कर दी गई थीं। खेत के चारों बाजुओं पर वे जम गए। अपनी रकाबों में खड़े होते हुए सिनेन्की ने काम के लिए सिगनल दिया। सिगनल के मिलते ही सत्रह कटौवों ने खेत का चक्कर लगाते हुए एक चौड़ी पट्टी काटकर साफ़ कर दी – कटाई-मशीनों की राह तैयार करने के लिए।

मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। पांच मिनट बीतते ही और कटौवों ने अपने हंसियों को ऊंचा उठाया। बांधनेवालियों ने आख़िरी पूलों को बांधा और उन्हें एक ओर लगा दिया।

अब समूची प्रक्रिया का सबसे अधिक नाज़ुक क्षण आया। अन्तोन और वित्का और हृष्ट-पुष्ट तथा ख़ूब आराम किये हुए घोड़े कमान के इंतज़ार में थे।

"आगे बढ़ो ... दुलकी चाल से!"

कटाई-मशीनें उन पट्टियों के पास आ लगती हैं जो उनके लिए साफ़ की गई थीं। एक या दो क्षण बीतते-न-बीतते वे बल खाती और खनखन करती रई के खेत में बढ़ चलती हैं। बुरून अपनी आंखों और कानों से व्यग्रता के साथ उनकी प्रगति का अनुसरण करता है। पिछले कुछ दिनों में अन्तोन तथा शेरे और दो बार खेत गए थे। अगर घोड़े दुलकी चाल से नहीं चले, इसके लिए अगर उन्हें टिकटिकाना पड़ा, अगर कटाई-मशीनें जाम हो गईं और उन्होंने काम करने से इनकार कर दिया तो यह भयानक लज्जा की बात होगी।

लेकिन बुरून का चेहरा क्रमशः खिल चला। कटाई-मशीनें थिर, यांत्रिक ध्वनि के साथ बढ़ चलीं, घोडों ने अपने आप उन्मुक्त दुलकी चाल पकड़ ली, मोड़ आने पर भी वे धीमे नहीं पड़े। लड़के अपनी काठियों पर निश्चल बैठे थे। एक चक्कर पूरा हुआ, फिर दूसरा। तीसरा चक्कर शुरू हुआ और कटाई-मशीनें उसी कमनीयता के साथ हमारे सामने से तैर गईं। गम्भीर अन्तोन ने बुरून को आवाज़ दी:

"सब ठीक, साथी कमाण्डर!"

बुरून कोलोनीवासियों की पांतों की ओर उन्मुख हुआ और अपने हंसिये को उसने ऊंचा उठाया:

"अटैंशन!"

कोलोनीवासियों ने अपने हाथ नीचे गिरा लिए, लेकिन उनके भीतर की हर चीज़ जैसे आगे बढ़ने के लिए कसमसा रही थी, उनकी मांस-पेशियां उनके वेग को रोक रखने में असमर्थ थीं।

"खेत में... दौड़ा!"

बुरून ने अपना हंसिया नीचे कर लिया। तीन सौ पचास लड़के खेत में उमड़ पड़े। उनके हाथ और पांव कटी हुई बालों की पांतों के ऊपर चमचमा रहे थे। हंसते हुए और एक दूसरे के ऊपर से उछलते-कूदते हुए, रबड़ की गेंदों की भांति उछलकर एक ओर हटते हुए, कटी हुई रई को उन्होंने बांधा, और कटाई-मशीनों के पीछे दौड़ पड़े। वे रई के प्रत्येक पूले पर दख़ल जमाते तथा प्रत्येक ढेर पर अपने दस्ते का अधिकार जताते हुए वे आगे बढ़ रहे थे।

"यह पांचवें दस्ते के लिए!"

मेहमान इतने हंसे कि उनके पेट दुखने लगे। ख़लाबूदा ने, जो अब हमारे पास लौट आया था, कड़ी नज़र से ब्रेगेल की ओर देखकर कहा :

"और तुम कहती हो... ओह, ज़रा देखो तो!"

ब्रेगेल मुसकराई।

"बहुत ठीक, मैं देख रही हूं। वे काम कर रहे हैं शान के साथ और ख़ुशी से उमगकर। लेकिन आख़िर है यह केवल काम ही.."

ख़लाबूदा के मुँह से एक अस्पष्ट-सी ध्वनि निकली लेकिन ब्रेगेल से उसने और कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, सफ़ाचट साथी की ओर क्षोभ के साथ देखकर वह बोल उठा :

"क्या फ़ायदा, इससे बातें करने से?"

यूरियेव ने, उल्लास से विह्वल होकर मेरा हाथ दबाया और जुरिन्स्काया से कहा :

"लेकिन सचमुच! ज़रा सोचो तो! यह मेरे हृदय को छूता है, मैं नहीं जानता कि क्यों। बेशक आज छुट्टी का दिन है, बेशक आज छुट्टी है, काम का दिन आज नहीं है... लेकिन जानती हो कि क्या यह श्रम का तिलिस्म है। जानती हो न कि मैं क्या कहना चाहता हूं?"

सफ़ाचट साथी ने ध्यान से यूरियेव की ओर देखा :

"श्रम का तिलिस्म? लेकिन चीज़ों को उलझाकर क्यों कहते

हो ? सुनो मैं तुम्हें बताता हूं कि वह क्या है जो इसमें अच्छा लगता है – ये खुश हैं, संगठित हैं और ये जानते हैं कि काम कैसे किया जाता है। शुरुआत के लिए इतना बहुत है, बहुत है। क्यों, आपकी क्या राय है साथी ब्रेगेल ? "

ब्रेगेल को सोचने का अवकाश नहीं था। कारण, ठीक उसी समय सिनेन्की हमारे सामने 'मोलोदेत्स' की रास खींचते हुए चहका :

"बुरून ने भेजा .. वे पूलों का अम्बार जमा कर रहे हैं। सब अम्बार के पास पहुंचे।"

अम्बार की बग़ल में झंडे के चारों ओर खड़े होकर हमने 'इण्टर्नेशनल' गाया। इसके बाद भाषण हुए, कुछ अच्छे और कुछ बुरे, लेकिन सब समान रूप में सचाई से भरे हुए थे। भाषणकर्ता संवेदनशील तथा नफ़ीस थे। वे मेहनतकशों के देश के नागरिक थे जिनके हृदयों को उत्सव ने, लड़कों ने, आकाश की निकटता और खेत में झिल्लियों की झंकार ने मुग्ध कर लिया था।

खेत से लौटने पर सब एक साथ भोजन के लिए बैठे, इस बात का कोई ख़याल किये बिना कि कौन बड़ा या कौन अधिक महत्त्वपूर्ण है। आज साथी ज़ोया तक हंस और मज़ाक कर रही थी।

काफ़ी देर तक समारोह चलता रहा। तरह-तरह के खेल खेलते रहे। ख़लाबूदा की आंखों पर पट्टी बांधी गई, गुंथी हुई रस्सी का छोर उसे थमा दिया गया और इसके बाद उसने घंटी बजाते हुए एक छोटे लड़के को पकड़ने का असफल प्रयास किया। फिर मेहमानों को नहाने के लिए तालाब पर ले जाया गया। इसके बाद केन्द्रीय चौरस में लड़कों ने एक संक्षिप्त मनोरंजन पेश किया। सम्मिलित लय के साथ, कविता-पाठ से इसका प्रारम्भ हुआ। इसमें बताया गया कि अगले पांच साल में किन-किन चीज़ों की वे आकांक्षा करते हैं – अपनी एक नगर-सोवियत की, अपने अहाते में एक नयी वर्कशॉप की, पहाड़ी के ओर-छोर में एक नये बग़ीचे के खिलने-फूलने की, और.. अगर सम्भव हो सके तो, – बिजली-चालित झूले की !

और कविता के अन्त में आशा प्रकट की गई थी

पांच साल के भीतर
हमारी मांस-पेशियां कर

लेंगी प्राप्त
शक्ति इस्पात की, न कि
रबड़ के टायरों की!

तालाब के तट पर आतिशबाज़ी के प्रदर्शन के बाद अपने मेहमानों को हम रिजोव स्टेशन छोड़ने गए। मोटरें पहले ही विदा हो गई थीं। सफ़ाचट 'मालिक' ने विदा लेते समय मुझसे कहा था

"अच्छा तो, साथी मकारेन्को! सिलसिला जारी रखना!

"अच्छा – जारी रखा जायेगा!" मैंने जवाब दिया।

१२. जीवन चलता रहा

इसके बाद निष्ठुर लेकिन आह्लादपूर्ण गति से चिन्ताओं, लघु विजयों और लघु आपदाओं से भरे दिनों का सिलसिला फिर शुरू हों गया। एक ऐसा सिलसिला जो प्राय: उन महान डगों और आविष्कारो को हमारी आंखों से ओझल कर देता था जिनके सहारे हम अपने भावी जीवन को निश्चित कर सकते थे। पहले की भांति, इन श्रमरत दिनों के दौरान और इससे भी अधिक शान्त संध्याओं में विचार आकार ग्रहण करते। सावधानी के साथ उन विचारों का हम सार निकालते जो दिन में हमारे मस्तिष्क में सरसराते, और पकड़ में न आनेवाली भविष्य की मृदु वाह्य रेखाएं स्पष्ट होने लगतीं।

लेकिन भविष्य वर्तमान का रूप धारण करता। तब मालूम होता कि वह मृदु ज़रा भी नहीं है – वह काफ़ी धक्के-धचकोले सह सकता है। हाथ से निकले अवसरों के शोक में समय न गंवाते और अपनी विफलताओं से प्राप्त अनुभव से समृद्ध हमारा जीवन बढ़ता रहा – हम आगे भी ग़लतियां करते पर उनसे फिर जाते।

पहले की भांति सख़्त आंखों ने अभी भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा था। हमारी निरन्तर भर्त्सना की जाती, चेताया जाता कि हमें ग़लतियां नहीं करनी चाहिए, कि हमें क़ायदे से आचरण करना चाहिए, कि हमें थ्योरी का दामन पकड़ना चाहिए, कि यह हमारे लिए अनुकरणीय है, और वह नहीं है

कोलोनी में बाक़ायदा एक उद्योग का उदय हो गया था। जैसे

भी बना, एक बढ़ई-घर का हमने संयोजन कर लिया था – बढ़िया साज़-सामान से लैस, तथा रंदे की मशीनों, जोड़नेवाले लेथों और आरों से सज्जित। अधिक नाज़ुक प्रक्रियाओं के लिए हमारे पास अब एक लेथ भी था जो ख़ुद हमारे डिज़ाइन ने किया तथा बनाया हुआ था। हम अब ठेके लेते थे, पेशगी वसूल करते थे, यहां तक कि साहस के साथ बैंक में एक चालू खाता भी हमने खोल लिया था।

इतना ही नहीं, हमने मधु-मक्खी-पालन भी शुरू कर दिया था। यह काम सरल क़तई नहीं था, बल्कि इसके लिए अत्यन्त शुद्धता की – अत्यन्त चौकस रहने की – ज़रूरत थी। लेकिन हमने इन सबमें दक्षता प्राप्त की और जल्दी ही सैंकड़ों की संख्या में मधुछत्ता-पेटी तैयार करने लगे। मेज़-कुरसियां, बारूद रखने के बक्से तथा अन्य विविध प्रकार की चीजें हम तैयार करते थे। हमने एक धातु के काम का विभाग भी खोला, लेकिन इससे पहले कि हम कुछ कर पाते, वह फिसे हो गया।

महीने बीतते गए। चारों ओर के हमलों को विफल करते तथा परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालते हुए हम जीवन तथा समृद्धि के पथ पर अग्रसर होते रहे – कभी समर्पण का भाव दिखाते हुए, कभी गरजते और अपने दांतों को पैनाते हुए, कभी विषैले डंकों से आतंकित करते और आड़े आनेवालों को – चाहे जो भी वे हों – अधिकतर गरदनियाते हुए।

मित्रों की दृष्टि से भी अब हम अधिक समृद्ध थे। ख़ुद शिक्षा की जन-कमिसरियट में भी ज़ुरिन्स्काया तथा यूरियेव की भांति कितने ही थे जिनके मस्तिष्क वास्तविकता को देखते थे, न्याय बरतने की भावना तथा हमारे जानलेवा काम के पहलुओं पर सोचने-विचारने की सच्ची आकांक्षा से सज्जित थे। लेकिन समाज के व्यापक क्षेत्रों में हमारे मित्रों की संख्या इससे कहीं अधिक थी – पार्टी और ज़िला-संगठनों में, पत्र-जगत् में और मज़दूरों के क्षेत्र में। ये मित्र ही उस वातावरण की रचना करते थे जिसमें हम कुछ सांस ले सकते थे।

सांस्कृतिक कार्य ने हमारे बीच गहरी जड़ें जमा ली थीं। हमारे स्कूल में छः क्लास होते थे। वसीली निकोलायेविच पेर्स्की अब हमारी कोलोनी में मौजूद था। वह एक उल्लेखनीय आदमी था – पूरा डोन क्विक्ज़ौट शतियों के तकनीकल आविष्कारों, साहित्य और कला से

मण्डित। काफ़ी क्षीणकाय और काफ़ी लम्बा – ठीक सर्वेण्टीज़ की कल्पना के अनुसार, एक ऐसा व्यक्ति जो क्लब के काम को संचालित करने तथा उसे संगठित करने में अत्यन्त कारगर सिद्ध हुआ। वह एक अनथक आविष्कारक तथा स्वप्नद्रष्टा था। कोई आश्चर्य नहीं अगर उसकी दुनिया – जैसी कि वह उसकी कल्पना करता था – नेकी तथा बदी की रूहों से भी आबाद हो। मुझसे पूछो तो एक ही सलाह मैं दूंगा। वह यह कि अगर किसी को क्लब के काम का संयोजन करना हो तो डोन क्विक्ज़ौटों के सिवा और किसी को बुलाने की ज़रूरत नहीं। वे हर चीज़ में भविष्य देखने की क्षमता से सज्जित होते हैं। उनके निर्देशन में लड़के चालीस-चालीस गज़ लम्बे भित्ति-समाचारपत्र निकाल सकते हैं, गत्ते से बने मॉडल के सहारे बममार वायुयान तथा गुप्तचर वायुयान को अलग पहचान सकते हैं और अपनी रगों में रक्त की अन्तिम बूंद रहने तक लकड़ी की अपेक्षा धातु की श्रेष्ठता को सिद्ध करना शुरू कर देते हैं। ये डोन क्विक्ज़ौट क्लब के काम में उत्साह, निश्चल न बैठनेवाली प्रतिभा तथा रचनात्मक कलाकारों में निहित अन्य आवश्यक तत्त्वों का संचार करते हैं। पेस्की के सारे कारनामों का यहां मैं वर्णन नहीं करूंगा। केवल इतना कहना ही काफ़ी होगा कि हमारी सांझों में उसने एक नया जीवन फूंक दिया। रंदे से उतरी छिलकनों, गोंद, स्पिरिट के लैम्पों, आरों की चरचराहटों तथा चालक-चक्रों के गुंजारों, सामूहिक कविता-पाठों और मूक-अभिनयों से हमारी सांझें अब गुलज़ार रहती थीं।

पुस्तकों पर भी अब हम काफ़ी ख़र्च करने लगे थे। वेदीय मंच पुस्तकें रखने के लिए अब काफ़ी नहीं होता था न ही वाचनालय में हमारे सारे पाठक अब समा पाते थे।

इनके अलावा और भी चीज़ें थीं।

इनमें सबसे पहली चीज़ थी – आर्केस्ट्रा। उक्राइन में और सम्भवत: समूचे संघ में हमारी कोलोनी सबसे पहली थी जिसने इस शानदार कार्य का संगठन किया था। साथी ज़ोया ने इससे अपने मूल विश्वास का – यह कि मैं भूतपूर्व कर्नल था – पोषण किया। लेकिन कमाण्डरों की परिषद ख़ुश थी। यह सच है कि कोलोनी में आर्केस्ट्रा का संगठन स्नायुओं के लिए भारी परीक्षा का काम है। चार महीने तक एक भी

ऐसा स्थल पाना असम्भव हो जाता है जहां त्रम्बोन, क्लोरनेट तथा कोरनेट वादक कुरसियों, मेज़ों और खिड़कियों के दासों पर चारों ओर बैठे हुए अत्यन्त भन्ना देनेवाली आवाज़ों से आत्माओं को विदीर्ण न करते हों। लेकिन पहली मई के दिन अपने आर्केस्ट्रा के साथ हमने नगर में प्रवेश किया। ओह, ख़ारकोव के बुद्धिजीवियों, बूढ़ी स्त्रियों, समाचारपत्रों के कर्मचारियों तथा सड़क के लड़कों का वह उत्कट भावोद्रेक, ख़ुशी से छलछलाते उनके वे आंसू और आश्चर्य का पुट लिए हुए उनका वह आनन्दातिरेक!

हमारी दूसरी उपलब्धि थी – सिनेमा। इसकी बदौलत अहाते के बीच में स्थित तीर्थधाम से हमारा द्वन्द्व शुरू हुआ। गिरजा-परिषद के सदस्य चाहे अपने हाथों को तोड़े-मरोड़ें, धमकियों की हमपर बौछार करें, लेकिन हमारे सिनेमा का खेल ठीक उसी समय शुरू होता जब उनकी संध्या-प्रार्थना की घंटी बजती। गिरजे के इस प्राचीन आवाहन को सुनकर अब जितने लोग उमड़ते थे, उतने पहले कभी नहीं उमड़ते थे। और कितनी तेज़ी से उसका असर होता था! घंटा-वादक के बुर्जी से उतरते-न-उतरते, और पादरी के फाटक में पांव रखते-न-रखते, क्लब के दरवाज़े पर दो-तीन सौ तक लोगों की क़तार लग जाती। उधर पादरी अपना लबादा धारण करते। इधर सिनेमा-मिकेनिक फ़िल्म को अपनी मशीन में फ़िट करता, ठीक उस समय जबकि पादरी गुनगुनाना शुरू करता 'आशीर्वाद प्रभु का. ' मिकेनिक अपना खेल शुरू कर देता। पूर्ण सम्पर्क!

यह सम्पर्क वेरा बेरेज़ोवस्काया के लिए दुःखद सिद्ध हुआ। वेरा मेरी उन छात्राओं में से थी जिनकी लागत, हमारे उद्योग को देखते हुए, बहुत ऊंची बैठती थी – वह हमारे किन्हीं भी तख़्मीनों में फ़िट नहीं होती थी।

'गुर्दे की बीमारी' के बाद कुछ दिनों तक वेरा शान्त रही। लगता था, जैसे काम में उसने अपने आपको समो दिया हो। लेकिन जैसे ही उसमें थोड़ी गुलाबी रमक आई और उसके बदन ने कुछ सहारा लिया, रंगीनी के साथ वेरा ने अपने कंधों, अपनी आंखों, अपनी चाल-ढाल और अपनी आवाज़ की लहरियों की नुमाइश शुरू कर दी। अक्सर अंधेरे कोनों में वह दिखाई देती – वह ख़ुद, और उसके साथ कोई एक

धुंधली आकृति। और मैंने लक्ष्य किया कि उसकी आंखों की रुपहली चमक कितनी बेचैन और अस्थिर होती जा रही थी। और मेरे आरोपों से जब वह अपना बचाव करती, तो उसकी आवाज़ में सचाई का दु:खद अभाव छिपा न रहता मुझसे।

"यह आपको क्या हुआ है, अन्तोन सेम्योनोविच? क्या किसी से बात करना भी गुनाह है?"

पुनर्शिक्षा के मामले में एक खेली-खाई लड़की जितनी कठिनाई उपस्थित करती है, उतनी और कोई नहीं करता। लड़का चाहे कितने ही लम्बे अर्से तक लावारिस क्यों न बना रहे, चाहे कितनी भी पेचीदा तथा निषिद्द मुहिमों में वह क्यों न हिस्सा ले चुका हो, शैक्षणिक हस्तक्षेप का चाहे कितना भी कड़ा प्रतिरोध वह क्यों न करे, यह निश्चित है कि एक स्वस्थ समूह में – बुद्धि की थोड़ी-सी भी चिनगारी रहने पर – वह वास्तविक मानव जीव बन जाएगा। इसका कारण यह है कि ऐसा लड़का वास्तव में महज़ पिछड़ा हुआ होता है। एक औसत लड़के से उसकी ओछाई या ख़ामी के परिमाण को हमेशा जांचापरखा तथा पूरा किया जा सकता है। लेकिन एक ऐसी लड़की जिसका यौन-जीवन समय से पहले शुरू हो चुका होता है, क़रीब-क़रीब बचपन से ही, वह मात्र शारीरिक तथा मानसिक पिछड़ेपन का ही शिकार नहीं होती, वह एक गहरे पेचीदा तथा अत्यन्त दु:खद सदमे का भी शिकार होती है। वह भेद भरी कनखियों का निशाना बनती है – कभी सहमी हुई किन्तु अश्लील, कभी उद्धत, कभी संवेदनशीलता या दिखावटी आंसुओं में पगी हुई। ये सभी कनखियां गुनाह की भावना को आरोपित करती हैं। वे लड़की को इस योग्य नहीं बनने देतीं कि वह अपने दु:ख को भूल सके, वे उसके मन में निरन्तर इस भावना को चेताए रहती हैं, कि मैं हीन हूं। और इस हीन भावना के साथ एक मूर्खतापूर्ण, आदिम दम्भ की भावना भी घर कर लेती है। वह यह कि अन्य लड़कियां उसकी तुलना में कच्ची, निरी बच्चा मात्र हैं, जबकि वह एक औरत है, उस चीज़ का वह अनुभव कर चुकी है जो अन्यों के लिए रहस्य बना हुआ है, पुरुषों के ऊपर एक ख़ास शक्ति का – एक ऐसी शक्ति जो उसके लिए अब घनिष्ठ तथा सहज है – वह उपभोग कर चुकी है। वेदना और दम्भ, ग़रीबी और सम्पन्नता, दिन में चुहुल और रात

में आंसुओं के पेचीदा भंवर में डूबना-उतरना, इन सबसे उबरकर अपना रास्ता निकालना, उस पर जम रहना, और नये अनुभवों, नयी आदतों, सावधानी और शिष्टाचार के नये रूपों का निर्माण करना आसान नहीं होता, इस्पाती इच्छाशक्ति की ज़रूरत होती है उसके लिए।

ये सब कठिनाइयां वेरा बेरेज़ोवस्काया के रूप में मेरे सामने साकार हो उठी थीं। कुरियाज स्थानान्तरण के बाद वह मेरे लिए काफ़ी दुःख का स्रोत सिद्ध हुई। मुझे सन्देह था कि यह ख़ुद अपने जीवन की डोर में अनेक गांठों तथा गुत्थियों की वृद्धि करती जा रही है। उसके साथ बातचीत में अत्यन्त सावधानी बरतनी पड़ती। छुई-मुई और तुनकमिज़ाज वह लड़की हमेशा मेरे पास से भाग खड़ी होती, और पुआल के ढेर या अन्य कहीं जाकर ख़ूब आंसू चुआती। साथ ही, रोज़ नये गुइयों के साथ, वह निरन्तर टकराती रहती। इस तरह के गुइयापन को तोड़ना कोई बड़ी समस्या नहीं था। कारण, कमाण्डरों की परिषद के सामने खड़े होने का घातक भय छैलों की जान सोखने के लिए काफ़ी था। वे ताव न ला पाते जब लापोत उनसे पूछता:

"अटैंशन खड़े हो और हमें बताओ कि यह सब क्या है?"

आख़िर वेरा ने समझा कि कोलोनीवासी उसके लिए उपयुक्त जीव नहीं हैं। सो अपनी प्रेम-लीला के लिए उसने एक अन्य मज़बूत आधार खोज निकाला। रिजोव का तार-बाबू एक मुंहासेदार तथा उदास-सा जीव था। उसका गहरा विश्वास था कि उसकी वरदी में लगी पीली गोट सभ्यता के उच्चतम स्तर को व्यक्त करती है। उसने अब वेरा की ओर ध्यान देना शुरू किया। वेरा बनखण्ड में उससे मिलने जाती। लड़के उन्हें वहां देखते और विरोध करते, लेकिन वेरा के पीछे पड़ते अब हम तंग आ गए थे। सो लापोत ने केवल वही किया जोकि किया जा सकता था। सिलवेस्त्रोव को – यही वह तार-बाबू था – उसने एकान्त में पकड़ा और उससे कहा:

"तुम वेरा को सीधा रास्ता नहीं पकड़ने दे रहे हो। याद रखो – तुम्हें उससे शादी करनी होगी!"

अपने गलगल, मुंहासेदार मुंह को एक ओर मोड़ते हुए तार-बाबू बुदबुदाया

"क्यों, मुझे शादी क्यों करनी होगी?"

"सुनो, सिलवेस्त्रोव, अगर तुम उससे शादी नहीं करोगे तो हम तुम्हारा कचूमर निकालकर रख देंगे–तुम हमें जानते हो तार-यंत्र की ओट में तुम अपने आपको हमसे छिपाकर नहीं रख सकते, अगर तुम कहीं और चले गए तो हम वहां से भी तुम्हें खींच लाएंगे!"

वेरा तमाम ज़ाब्तों को उपेक्षा के साथ ताक़ पर रखते हुए, जब भी मौक़ा मिलता, अभिसार-स्थल की ओर लपक जाती। अगर राह में कभी मुझसे टकराती तो उसके गालों पर लाली दौड़ जाती, अपने बालों को थोड़ा संवारती, और फिर नौ-दो-ग्यारह हो जाती।

लेकिन अन्त में भाग्य ने उसे भी नहीं छोड़ा। एक दिन काफ़ी सांझ गए वह मेरे दफ़्तर में आई और आकर बेतकल्लुफ़ी के साथ एक कुरसी पर जम गई। अपने घुटनों को उसने एक दूसरे के ऊपर रखा लाल होती हुई अपनी पलकों को झुकाया, लेकिन अपने सिर को ऊंचा थामे रही, और सस्वर तथा उद्धत आवाज़ में बोली:

"मुझे आपसे कुछ कहना है।"

"हां तो कहो!" उसके अधिकारपूर्ण स्वर को प्रतिध्वनित करते हुए मैंने कहा।

"मुझे गर्भ गिरवाना होगा।"

"क्या तुम्हें गर्भ है?"

"हां, है। मेहरबानी करके अस्पताल के लिए एक पुर्ज़ा लिख दीजिए।"

ख़ामोशी के साथ मैंने उसकी ओर देखा। उसने अपना सिर नीचे झुक जाने दिया।

"बस.. यही मुझे कहना था।" उसने कहा।

मैं एक क्षण और चुप रहा। अपनी अधमुंदी पलकों के नीचे से वेरा ने मुझे देखने का प्रयास किया, और उसकी इन नज़रों से पता चलता था कि वह अब एकदम निर्लज्जता का दामन थामे थी। उसकी ये नज़रें, उसके गालों का रंग, उसके बोलने का ढंग–सब इसकी पुष्टि कर रहे थे।

"इस बार तुम्हें अपने बच्चे को जन्म देना होगा," मैंने रुखाई से कहा।

वेरा ने कनखियों से, शोख़ी के साथ मेरी ओर देखा और अपने सिर को उछाला।

"नहीं, मैं बच्चे को जन्म नहीं दूंगी।'

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, अपनी मेज़ की दराज़ का ताला लगाया और अपनी टोपी सिर पर रखी। वह उठ खड़ी हुई और उसी अटपटी शोख़ी के साथ उसने मेरी ओर देखा।

"जाओ! सोने का समय हो गया।" मैंने कहा।

"लेकिन.. पुर्ज़ा। मैं अब और इन्तज़ार नहीं कर सकती। आपको समझना चाहिए।"

कमाण्डरों की परिषद के अंधियाले कमरे में से हम गुज़रे और वहां रुक गए।

"काफ़ी गम्भीरता से मैं तुमसे कहता हूं, मैं अपना निर्णय नहीं बदलूंगा। अब आपरेशन नहीं होगा। तुम्हें बच्चे को जन्म देना होगा।"

"ओह!" वेरा चीखी और दरवाज़े को अपने पीछे ज़ोरों से बंद करती हुई बाहर लपक गई।

इसके तीन दिन बाद वह फाटक पर मुझे मिली। काफ़ी सांझ हो गई थी। मैं गांव से लौटकर आ रहा था। वह मेरे साथ-साथ चलने लगी। मनावन के ढंग से और पूसी जैसी आवाज़ में उसने कहना शुरू किया:

"अन्तोन सेम्योनोविच, आप तो हर घड़ी मज़ाक़ करते हैं। लेकिन मेरे लिए यह मज़ाक़ नहीं है।"

"क्यों, तुम क्या चाहती हो?"

"जैसे आप न जानते हों! मैं एक पुर्ज़ा चाहती हूं–आप इतने अनजान बनने का बहाना क्यों करते हैं?"

मैंने उसकी बांह थामी और खेत की पगडंडी के सहारे उसे ले चला।

"आओ ज़रा बात करें।"

"इसमें बात क्या करनी है। बात करने से फ़ायदा क्या है? बस, मुझे एक पुर्ज़ा दे दीजिए!"

"सुनो, वेरा," मैंने कहा, "मैं अनजान बनने का बहाना नहीं कर रहा हूं और न ही मैं मज़ाक़ कर रहा हूं। जीवन एक गम्भीर

चीज़ है और यह ग़लत है, ख़तरनाक है – जीवन के साथ खेलवाड़ करना। तुम्हारे जीवन में एक बहुत गम्भीर बात घटी है – तुम प्रेम करने लगी हो। ठीक तो है – तुम उस आदमी से शादी कर लो।"

"जहन्नुम में जाए आपका वह आदमी! मैं और शादी! वाह! और फिर आप चाहते हैं कि मैं बच्चों-कच्चों का लशकर पालूं। बस आप मुझे एक पुर्ज़ा दे दीजिए! और कौन कहता है कि मैं प्रेम करने लगी हूं?"

"सो तुम प्रेम में नहीं पड़ी, क्यों? महज़ ऐयाशी करती रहीं?"

"इससे क्या? आप कुछ भी कह सकते हैं, बेशक!"

"अच्छा तो सुनो, मुझे क्या कहना है – मैं तुम्हें ऐयाशी नहीं करने दूंगा। तुमने एक आदमी के साथ रहना शुरू कर दिया है और अब तुम एक मां बनने जा रही हो!"

"मुझे एक पुर्ज़ा दे दीजिये, मैं आप से कहती हूं!" वेरा ने क्रन्दन किया, क़रीब-क़रीब रुआंसी आवाज़ में। "आप मेरा मज़ाक़ क्यों कर रहे हैं?"

"मैं तुम्हें कोई पूर्ज़ा नहीं देने जा रहा हूं। अगर तुम इस पर अड़ी रहोगी, तो मुझे मामले को कमाण्डरों की परिषद में पेश करना होगा।'

"ओह भगवान!" उसने चीख़ भरी और खेत के हरियाले छोर पर ढह गई। वह अब रो रही थी, उसके कंधे धौंकनी-से उठ-गिर रहे थे, वह अत्यधिक हांफ-हांफकर सांस ले रही थी।

मैं चुपचाप उसके पास खड़ा था। तरबूज़ों के खेत से गलातेन्को हमारे निकट आया, घास की पटरी पर पड़ी वेरा को देर तक उसने देखा और फ़ुरसती अन्दाज़ में कहा

"मैं हैरान था कि यहां कौन चिचिया रहा है? सो यह वेरा बिलख रही है यह तो आम तौर से हंसती है और अब आंसू बहा रही है।'

वेरा चुप हो गई घास से उठी, सावधानी के साथ अपने कपड़ों को झटका, चौकस होते हुए आख़िरी सुबकी ली और अपनी बांहों को झुलाती तथा तारों की ओर देखती कोलोनी की दिशा में चल दी।

"कुटिया में चलें अन्तोन सेम्योनोविच," गलातेन्को ने कहा।

"ऐसा तरबूज़ आपको खिलाऊंगा कि बस! राजा-तरबूज़! कुछ और लड़के भी वहां हैं।"

दो महीने बीत गए। दुरुस्त रेल-गाड़ी की भांति हमारा जीवन चलता रहा – कभी भरपूर तेज़ी के साथ, कभी ढचरा-पुल पर से गुज़रते समय गति को कुछ कम करते हुए, और कभी ढलान पर से उतरते समय ब्रेकों को कसे हुए और चढ़ाई पर चढ़ते समय फुफकारते हुए। हमारे जीवन के साथ-साथ वेरा बेरेज़ोवस्काया का जीवन भी आगे बढ़ता रहा, लेकिन वह हमारी गाड़ी में बिना महसूल के माल की भांति थी।

कोलोनीवासियों से यह छिपाना असम्भव हो गया कि वह गर्भवती थी। यों वेरा ने अपनी सहेलियों को यह भेद बता दिया था। यह सभी जानते हैं कि स्त्रियां किस तरह भेद को छिपाती हैं। जो हो, मुझे एक मौक़ा मिला – हालांकि मुझे इसका संदेह नहीं था – कोलोनीवासियों की उदारशीलता को सराहने का। वेरा को न तो किसी ने चिढ़ाया, न तंग किया। हमारे लड़कों की नज़रों में गर्भवती होना, या बच्चे को जन्म देना, न तो कलंक था और न दुर्भाग्य। किसी भी कोलोनीवासी ने भूलकर भी अपमानजनक शब्द कहना तो दूर रहा, उसे कभी उपेक्षा भरी नज़र से भी नहीं देखा। लेकिन सिलवेस्त्रोव के – उस तार-बाबू के प्रति उनका रवैया बिलकुल दूसरी बात थी। साफ़ मालूम होता था कि शयनागारों में, 'बैठकों' में, मिश्रित दस्ते के काम करने की जगहों में, क्लबों में, खलिहान में, वर्कशॉप तथा अन्य जगहों में जहां वे जमा होते थे, मसले के सभी पहलुओं पर हर तरह से विचार करते थे। अन्ततः उन्होंने सब कुछ तय कर लिया प्रतीत होता था। इस तरह इसका मुझसे ज़िक्र किया जैसे सब तयशुदा हो।

"परिषद की बैठक में आज हम सिलवेस्त्रोव से बात करने जा रहे हैं। आपको तो कोई आपत्ति नहीं?"

"नहीं, मुझे कोई आपत्ति नहीं। लेकिन शायद सिलवेस्त्रोव को आपत्ति हो।"

"उसे ले आया जाएगा। हमें देखना है कि वह कैसा कोमसोमोल सदस्य है!"

जोर्का और वोलोख़ोव उसी सांझ सिलवेस्त्रोव को ले आए, और

बावजूद इसके कि स्थिति दु:खद थीं, मैं मुसकराये बिना नहीं रह सका। उस समय जब लड़कों ने उसे सभा-स्थल के बीच में लाकर खड़ा किया और लापोत ने आख़िरी पेच कसा · "अटैंशन!"

सिलवेस्त्रोव कमाण्डरों की परिषद से बुरी तरह भयभीत था। न केवल यह कि वह कमरे के बीचोंबीच जाकर खड़ा हुआ, न केवल यह कि वह 'अटैंशन!' सुनते ही एकदम सीधा-सतर हो गया, बल्कि यह कि वह इस भयानक संस्था से सही-सलामत छुटकारा पाने की आशा में कोई भी करतब दिखाने और कोई भी पहेली हल करने के लिए तैयार था। लेकिन चीज़ों ने एक अप्रत्याशित पलटा खाया, कुछ इस ढंग से कि पहेली का हल सोचने का प्रयास ख़ुद परिषद के सिर पर आ पड़ा। कारण, सिलवेस्त्रोव अपनी जगह से बुदबुदाकर कह रहा था:

"साथी कोलोनीवासियो, यह तुम कैसे सोचते हो कि मैं इतना बुरा, इतना लफ़ंगा हूं? तुम कहते हो – उससे शादी करो। मैं बिलकुल तैयार हूं, लेकिन मैं क्या कर सकता हूं, जब वह ख़ुद शादी नहीं करना चाहती?"

"नहीं करना चाहती?" उछलकर खड़े होते हुए लापोत चीख़ा। 'यह तुमसे किसने कहा?"

"ख़ुद उसने ख़ुद वेरा ने!"

"अच्छा तो फिर हम उसे भी परिषद के सामने बुलाये लेते हैं। ज़ोरेन!"

"अच्छा!"

ज़ोरेन पलक झपकते दरवाज़े से बाहर दौड़ गया और दो मिनट बाद दफ़्तर में फिर आ मौजूद हुआ। लापोत की ओर उसने सिर हिलाया, और किसी दूरस्थित स्थल की ओर – जहां वेरा आजकल रहती थी – उसने अपने सिर से इशारा किया।

"वह नहीं आती! और आप जानो, मैंने उससे कहा लेकिन उसने मुझसे निकल जाने को कह दिया।"

लापोत की नज़र परिषद पर तैरती हुई फ़ेदोरेन्को पर जा टिकी। फ़ेदोरेन्को बोझिल-से अन्दाज़ में अपनी जगह से उठा, लापरवाह घनिष्ठता के साथ उसने सलामी दी, मन्द तथा समृद्ध लहजे में 'अच्छा'

कहकर दरवाज़े की ओर चल दिया। ज़ोरेन दरवाज़े पर उसकी बांह के नीचे डुबकी लगाता हुआ भयानक हड़बड़ी के साथ पैड़ियों को लांघ हवा हो गया। सिलवेस्त्रोव पीला पड़ा था, सभा-स्थल के बीच एकदम जाम जैसे पत्थर का बुत हो। कोलोनीवासियों के हाथों प्रेम के पतित हुए फ़रिश्ते की इस तरह चिन्दियां उड़ते हुए देखकर उसके होश फ़ाख़्ता हो गए थे।

मैं फ़ेदोरेन्को के पीछे लपका और अहाते में मैंने उसे रोका।

"परिषद में वापस जाओ। मैं ख़ुद वेरा के पास जा रहा हूं।"

फ़ेदोरेन्को ने चुपचाप रास्ता छोड़ दिया।

वेरा अपने बिस्तरे पर बैठी थी और अपने धीरज को संभाले यंत्रणा तथा गले में फंदा डाले जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। अपने हाथों में वह सफ़ेद रंग के कुछ बड़े बटन लिए थी और उन्हें बार-बार घुमाए जा रही थी। ज़ोरेन उसके सामने खड़ा था—उस शिकारी कुत्ते की भांति जिसे अपना शिकार दिखाई दे गया हो। उसने तेज़ आवाज़ में भौंकते हुए कहा:

"चलो! वेरा! चलो! नहीं तो फ़ेदोरेन्को... चलो! अच्छा हो कि चलो!" फिर अपनी आवाज़ को मन्द करते हुए वह फुसफुसाया—"अगर तुम नहीं चलोगी तो फ़ेदोरेन्को... तुम्हें अपनी बांहों में उठा ले जाएगा।"

मुझ पर नज़र पड़ते ही ज़ोरेन ओझल हो गया। उस जगह जहां वह खड़ा था नीले वायवीय शून्य के सिवा उसका और कोई चिन्ह शेष नहीं रहा।

मैं वेरा के बिस्तरे पर बैठा, सिर से इशारा करके दो-तीन लड़कियों को मैंने इशारा किया कि वे वहां से हट जाएं।

"क्या तुम सिलवेस्त्रोव से शादी नहीं करना चाहती?"

"नहीं।"

"तो बिलकुल ठीक, न करो।"

बटनों को अभी भी अपने हाथों में घुमाते हुए वेरा ने मुझसे कहा:

"हर कोई इस पर तुला है कि मैं शादी कर लूं। लेकिन मैं करना चाहूं तब न? बस, आप मुझे आपरेशन कराने की अनुमति दिला दीजिए!"

"नहीं!"

"दिला दीजिए, मैं आपसे कहती हूं। मैं क़ानून जानती हूं – अगर मैं आपरेशन कराना चाहती हूं तो आपको रोकने का कोई अधिकार नहीं है।"

"अब काफ़ी देर हो गई।"

"इससे क्या अगर देर हो गई तो!"

"बहुत देर हो गई। कोई भी डाक्टर आपरेशन करने के लिए राज़ी नहीं होगा।"

"वे राज़ी हो जायेंगे। मैं जानती हूं। केवल इसे सीज़ेरियन आपरेशन कहते हैं।"

"क्या तुम जानती हो कि यह क्या होता है?"

"बेशक! वे मेरा पेट चाक करेंगे। बस, इतना ही!"

"यह अत्यन्त ख़तरनाक है। तुम्हारी जान जोखिम में पड़ सकती है।"

"इससे क्या! बच्चे को जन्म देने से तो मर जाना अच्छा। नहीं, मैं नहीं चाहती!"

बटनों के ऊपर मैंने अपना हाथ रखा। अपनी नज़र को स्थानान्तरित कर वह तकिये की ओर देखने लगी।

"ज़रा इधर सुनो, वेरा! डाक्टरों को भी क़ानून का पालन करना होता है। सीज़ेरियन आपरेशन तभी किया जाता है जब मां बच्चे को जन्म नहीं दे सकती।"

"मैं भी तो नहीं दे सकती!"

"नहीं, तुम दे सकती हो। और तुम बच्चे को जन्म दोगी!"

उसने मेरा हाथ झटका और बटनों को ज़ोरों से ओढ़ावन पर फेंकते हुए बिस्तरे से उठ खड़ी हुई।

"मैं नहीं दे सकती! मैं जन्म नहीं दूंगी! यह आप जान लीजिए! मैं कड़ियों से लटक जाऊंगी या डूब मरूंगी, लेकिन बच्चे का लटकन अपने गले से नहीं बांधूंगी!"

उसने अपने आपको बिस्तरे पर पटक दिया और रोने लगी।

ज़ोरेन शयनागार में दौड़ा हुआ आया।

"अन्तोन सेम्योनोविच, लापोत जानना चाहता है कि वेरा की

वे उम्मीद करें या नहीं। और यह कि सिलवेस्त्रोव का क्या किया जाए?"

"उससे कहना कि वेरा उससे शादी नहीं करेगी।"

"और सिलवेस्त्रोव के बारे में?"

"दफ़ा करो उसे!"

ज़ोरेन ने अपनी अदृश्य दुम को लहराया, बिजली की भांति दरवाज़े में से ओझल हो गया।

और चारा भी क्या था? लोगों को इस धरती पर आबाद हुए न जाने कितने वर्ष हो गए पर उनके प्रेम के मामलों में यह सब गड़बड़ अभी भी जारी है! रोमियो और जूलियट, ओथेलो और डेस्डेमोना, ओनेगिन और ततियाना, वेरा और सिलवेस्त्रोव। कब इसका अन्त होगा? कब वह दिन आयेगा जब प्रेमियों के हृदय मैनोमीटरों, एम्पीयरमीटरों, वोल्टा-मीटरों आदि मापकयंत्रों तथा स्वयंचाहित आग बुझाने की द्रुत दमकलों से सज्जित होंगे? कब वह समय आयेगा, जब उनकी निगरानी करने और इस बात को लेकर चकित होने की आवश्यकता नहीं रहेगी कि वे फन्दा डालकर झूलेंगे, या नहीं झूलेंगे?

गुस्से से आक्रान्त मैं वहां से लौट आया। कमाण्डरों की परिषद युवा प्रेमी को बाहर का रास्ता दिखा चुकी थी। लड़की कमाण्डरों से मैंने कहा कि वे रुक जाएं, वेरा के बारे में बातें करनी हैं। गुलगुल, गुलाबी गालोंवाली ओल्या लापोत ने गम्भीर मैत्रीभाव से मेरी बातों को सुना।

"बिलकुल ठीक," उसने कहा, "अगर हम उसे ऐसा करने देते हैं तो वह एकदम धूल में जा गिरेगी।"

नताशा पेत्रेन्को शान्त समझदार आंखों से ओल्या की ओर बिना बोले देख रही थी।

"तुम्हारी क्या राय है, नताशा?"

"अन्तोन सेम्योनोविच," उसने कहा, "अगर कोई अपने गले में फंदा डालने पर तुला है, तो आप क्या कर सकते हैं? उसे रोकने का कोई उपाय नहीं है। लड़कियां कहती हैं – 'हम निगरानी करेंगी'। बेशक, हम निगरानी करेंगी, लेकिन वह हमारी उंगलियों में से निकल भागने में समर्थ होगी. "

हम विदा हुए, लड़कियां सोने के लिए, और मैं चिन्ता में डूबने-उतराने तथा खिड़की पर किसी के ठकठकाने की प्रतीक्षा करने के लिए।

इसी तरह व्यस्तता में अनेक रातें मैंने बिताईं। कभी-कभी वेरा के आगमन से रात का प्रारम्भ होता। अस्त-व्यस्त, आंखों को लाल किये तथा शोक से अभिभूत वह आती, मेरे सामने बैठती और अपने विनष्ट जीवन, मेरी क्रूरता तथा पेट चाक करने के विविध सफल आपरेशनों के बारे में ख़ुराफ़ातों की बाढ़ लगा देती।

ऐसे अवसरों से लाभ उठाकर मैं वेरा क़ो जीवन के आधारभूत दर्शन के कुछ तत्त्वों में, जिनका कि उसमें कल्पनातीत अभाव था, दीक्षित करने का प्रयास करता।

"तुम दुःख पा रही हो," मैं उसे बताता, "इसलिए कि तुममें इतनी अधिक लालसा है। तुम्हें आनन्द चाहिए, मनोरंजन चाहिए, सुख और मौज-मज़ा चाहिए। तुम जीवन को एक मुफ़्त का मनोरंजन समझती हो। बस, दावत के लिए आए, ख़ातिर कराई, नाच में हिस्सा लिया, एकमात्र अपने सुख का ख़याल रखते हुए!"

"तो क्या आप समझते हैं कि लोगों को निरन्तर दुःखों में लोटना चाहिए?"

"मैं समझता हूं कि जीवन एक निरन्तर मनोरंजन नहीं है। उत्सव और मनोरंजन बहुत कम ही आते हैं। जीवन का अधिकांश भाग श्रम, दुनिया-भर की मानवीय संलग्नताओं तथा कर्त्तव्यों से भरा होता है। काम करनेवाले सब इसी तरह जीवन बिताते हैं। तुम्हारे उत्सव और मनोरंजन की निस्बत इस तरह का जीवन अधिक आनन्ददायक तथा महत्त्वपूर्ण होता है। बीते ज़माने में ऐसे लोग थे जो काम नहीं करते थे, बल्कि केवल मौज करते और दुनिया-भर के सुखों में लोटते थे। तुम जानती हो कि उनके साथ हमने क्या किया – हमने उन्हें बस निकाल बाहर किया।"

"मगर," वेरा ने सुबकी ली, "कोई कामगार है तो आप सोचते हों कि उसे हर घड़ी कष्ट सहते रहना चाहिए।"

"क्यों, इसमें कष्ट सहते रहने की क्या बात है? काम और श्रमरत जीवन भी आनन्द की चीज़ होता है। देखो न – तुम एक लड़के की मां बनोगी, तुम उससे प्यार करना सीखोगी, तुम्हारा एक परिवार

होगा और एक लड़का होगा, जिसकी तुम देख-भाल करोगी। जैसे और सब हैं वैसे ही तुम रहोगी – काम और कभी आराम – यही जीवन है। और जब तुम्हारा लड़का बड़ा हो जाएगा तो तुम अक्सर कृतज्ञता के साथ मुझे याद करोगी कि मैंने तुम्हें उसे नष्ट करने से रोका।"

वेरा ने बहुत ही धीरे-धीरे मेरे शब्दों को सुनना तथा बिना भय और भिन्नाहट के अपने भविष्य का पर्यवेक्षण करना शुरू किया। कोलोनी में स्त्रियों की सारी ताक़तों को मैंने एकजुट किया। वे वेरा के प्रति ख़ास चहुंमुखी संलग्नता दिखातीं, इससे भी अधिक जीवन के विशिष्ट विश्लेषण में उसे दीक्षित करतीं। कमाण्डरों की परिषद ने वेरा के लिए एक अलग कमरा नियत कर दिया। कुदलाती की मुखियाई में तीन जनों का एक आयोग नियुक्त किया गया जिसने इस कमरे को फ़र्नीचर बरतनों और भांति-भांति की चीज़ों से सजा दिया। यहां तक कि छोटे लड़कों ने भी इनमें दिलचस्पी लेनी शुरू की, लेकिन – कहने की आवश्यकता नहीं – जीवन के प्रति गम्भीर दृष्टिकोण अभी उनके लिए बहुत दूर की चीज़ थी। इसके सिवा उस घटना का – शिशु के लायक़ एक नयी टोपी पहने हुए सिनेन्की के नज़र आने का – भला और क्या कारण हो सकता था।

"यह क्या है? तुमने उसे क्यों पहन रखा है?"

सिनेन्की ने टोपी को अपने सिर से उतारा और एक उसास छोड़ी।

"यह तुम कहां से लाए?"

"यह ... वेरा के बच्चे की ... टोपी.. लड़कियों ने बना ..."

"बच्चे की टोपी! तुम इसे क्यों लिए हो?"

"मैं उधर से गुज़र रहा था ..."

"तो?"

"मैं गुज़र रहा था, और यह वहां पड़ी थी ..."

"तुम दर्ज़ी-घर में ... गुज़र रहे थे?"

यह समझकर कि शब्दों की दाल अब गलेगी, एक ओर देखते हुए सिनेन्की ने चुपचाप सिर हिलाकर हामी भरी।

"लड़कियों ने किसी मतलब से इसे बनाया है और तुम इसे फाड़-फूड़कर, गंदा करके, फेंक दोगे ... क्या मतलब होता है इसका?"

सिनेन्की की नाज़ुक शक्ति के लिए यह आरोप ज़रूरत से ज़्यादा भारी था।

"नहीं, अन्तोन सेम्योनोविच, बात यह थी कि मैंने इसे लिया, और नताशा ने कहा – 'बड़ा शैतान हो गया तू!' फिर मैंने कहा – 'इसे वेरा के पास ले जाऊंगा।' और उसने कहा – 'अच्छी बात है, ले जाओ'। सो मैं वेरा के कमरे में गया। लेकिन वह अस्पताल गई हुई थी। और आप कहते हैं कि मैं इसे फाड़ डालूंगा ..."

एक महीना गुज़र गया। इस महीने के दौरान वेरा ने हमारे साथ अपनी पटरी बैठा ली और उसी लगन के साथ मातृत्व की देख-भाल में जुट गयी जिस लगन के साथ पेट चाक कराने के लिए वह मेरे पीछे पड़ी थी। सिलवेस्त्रोव एक बार फिर कोलोनी में आविर्भूत हुआ, और चतुर गलातेन्को तक ने चकित हो हवा में अपनी बांहें फैलाईं :

"समझ में कुछ भी नहीं आता! देखा, अब ये फिर शादी करना चाहते हैं!"

जीवन चलता और आगे बढ़ता रहा। हमारी गाड़ी अब और भी ज़्यादा जानदार हो गई थी, और आगे बढ़ती जा रही थी, अपने आह्लादपूर्ण सुगंधित धुएँ की बांहों में हमारे आह्लादपूर्ण सोवियत दिनों के प्रशस्त विस्तारों को लपेटते हुए। सोवियत लोग हमारे जीवन को देखते और उल्लसित होते। रविवार के दिन अतिथियों का आगमन होता – उच्च शिक्षा संस्था के छात्रों का, कामगारों के अभियान-दलों का, शिक्षाविदों और पत्रकारों का। समाचार-पत्र और पत्र-पत्रिकाएं हमारे जीवन के बारे में सरल, मित्रतापूर्ण विवरण छापतीं, हमारे लड़कों के छवि-चित्रों तथा सूअरघर और बढ़ई-घर के दृश्यों से उन्हें सजातीं। हमारे मेहमान हमारी विनम्र आभा से थोड़ा-बहुत अभिभूत हमसे विदा लेते, अपने नये मित्रों के हाथ दबाते हुए। हम उन्हें फिर आने का बुलावा देते, जवाब में सलामियों तथा 'अच्छा' का वे उच्चारण करते।

विदेशियों को भी अधिकाधिक बाहुल्य के साथ हमारे यहां लाया जाता। बढ़िया कपड़ों से लैस भद्रलोग शिष्टता के साथ हमारी आदिम खुशहाली, प्राचीन मठ के गुम्बदों तथा लड़कों के काम करने के सूती कपड़ों को देख अपनी आंखें सिकोड़ते। हमारे गायों के बाड़ों का भी

उन पर कोई रोब नहीं पड़ता। लेकिन लड़कों के सजीव चेहरे, संयमित कामकाजी गुंजन और चितकबरे मोज़े तथा लघु जाकेटों, सफ़ाई के माथ संवारे हुए चौखटों और चुनिया-मुनिया-सी नोटबुकों की ओर निर्देशित नज़रों की ओट में छिपा क़रीब-क़रीब अदृश्य-सा व्यंग्य – हमारे मेहमानों को प्रभावित करता मालूम होता।

छल भरे प्रश्नो की वे दुभाषियों पर बौछार करते। वे विश्वास न कर पाते कि हमने मठ की दीवार को गिरा दिया है, हालांकि प्रत्यक्ष था कि दीवार ऐसी कोई चीज़ अब वहां नज़र नहीं आती थी। उन्होंने लड़कों से बात करने की अनुमति माँगी। मैंने अनुमति दे दी – केवल एक कड़ी शर्त लगाते हुए कि वे लड़कों के अतीत के बारे में कोई सवाल नहीं पूछेंगे। इससे वे चौकन्ने हुए और बहस करने लगे। दुभाषिये ने थोड़ा परेशान-सा होते हुए मुझे बताया :

"वे जानना चाहते हैं कि आप लड़कों के अतीत को पर्दे में क्यों छिपाना चाहते हैं। अगर वह बुरा था – तो यह आपके लिए और भी गौरव की बात होगी।"

लेकिन पूर्ण सन्तोष का अनुभव करते हुए दुभाषिये ने मेरे उत्तर से उन्हें अवगत किया :

"हम इस गौरव के आकांक्षी नहीं हैं। केवल अत्यन्त साधारण शिष्टता के नाते हम यह अनुरोध करते हैं। हम अपने मेहमानों के अतीत में झांककर नहीं देखते।"

मेहमानों के चेहरे मुसकानों से खिले थे। हार्दिकता के साथ उन्होंने स्वीकारा :

"येस, येस!"

इसके बाद अपनी शानदार मोटरों में वे विदा हो गए और हमारा जीवन पूर्ववत् चलता रहा।

शरद में कोलोनीवासियों का एक और दल रबफ़ाक के लिए रवाना हुआ। जाड़ा आया, धीरज के साथ हमने फिर निर्माण-कार्य शुरू किया, एक के बाद एक ईंट चुनकर शैक्षणिक संस्कृति की कठोर इमारत को साकार किया।

और एक बार फिर वसन्त का आगमन हुआ! और सो भी इतनी जल्दी! तीन दिनों में ही सब कुछ हो गया। हिम की ख़ुश्क, चित्तीदार

परत साफ़-सुथरे, मज़बूत पथ पर अभी तक मौजूद है। कोई सड़क पर गाड़ी को हांकता हुआ ले जा रहा है। गाड़ी में रखा ख़ाली डोल आह्लाद के साथ खनखना रहा है। आकाश नीला, ऊंचा और उल्लास से उमगा है। लाल झंडा वसन्त की सुहावनी हवा में सस्वर फरफरा रहा है। क्लब का मुख्य फाटक पूरी तरह खुला है। चटाई दालान के धुले हुए फ़र्श पर इतनी सावधानी के साथ बिछाई है कि अनभ्यस्त शीत में वह और भी साफ़ मालूम होती है।

पौधा-घरों में बहुत पहले से ही काम ज़ोरों से चल रहा है। सींकों की चटाइयां दिन में लपेटकर अलग रख दी जाती हैं, कांच की छतों को रेकों के सहारे तिर्छा कर दिया जाता है। पौधा-घरों के किनारे पौधों को ठीक-ठाक करने की नोकदार छड़ियां अपने हाथों में लिए लड़के और लड़कियां बैठी हुई हैं और बीच-बीच में इस या उस विषय पर बातें कर रही हैं। जेन्या जुरबीना ने १६२४ में पहली बार इस दुनिया में आंखें खोली थीं और अब वह पहली बार इस धरती पर स्वयं सामर्थ्यवान बनकर विचरण कर रही है। वह पौधा-घरों के विशाल गड्ढों में झांकती हैं, सहमी-सी अस्तबल की ओर नज़र डालती है जहां 'मोलोदेत्स' रहता है, साथ ही अपनी दिलचस्पी के मसलों पर बतियाती भी जाती है:

"और जोताई कौन करेगा? लड़के? और हल को क्या 'मोलोदेत्स' खींचेगा? लड़कों के साथ? जोताई कैसे की जाती है?"

ईस्टर के बाद हमने उड़ती हुई ख़बरें सुनीं कि ख़ारकोव के दूसरी ओर ग० प० ऊ० द्वारा एक नया गृह – बाल कोलोनी-गृह – बनाया जा रहा है, जन-शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में नहीं, बल्कि ग० प० ऊ० के तत्त्वावधान में। इस ख़बर को लड़कों ने ऐसे ग्रहण किया जैसे वह नये युग का प्रतीक हो।

"ज़रा सोचो तो, एक नया गृह बनाया जा रहा है! एकदम नया गृह!"

ग्रीष्म के मध्य में एक मोटर कोलोनी में आई। वर्दी में सज्जित एक आदमी ने मुझसे कहा

"अगर आपके पास समय हो तो मेहरबानी करके मेरे साथ चले

चलिए। द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून के लिए गृह का निर्माण-कार्य अब पूरा हो चला है। हम चाहते हैं कि आप उसे देख लें ... शिक्षा के दृष्टिकोण से।"

हम गए।

मैं चकित हुआ। क्या यह लावारिसों के लिए था? खूब खुला-सा, रुपहला प्रासाद! चिकना फ़र्श, रंग-रोग़न की हुई छतें!

सात साल से मैं कोई बेकार सपना नहीं देखता आ रहा था। भविष्य के शिक्षा-प्रासादों की जो कल्पना मैं करता था, वह बेकार नहीं थी। ईर्ष्या के स्फुरण और क्षोभ के साथ 'शैक्षणिक दृष्टिकोण' का मैंने चेकिस्त के सम्मुख प्रतिपादन किया। मेरे शैक्षणिक अनुभव की देन के रूप में उसने उसे विश्वास के साथ स्वीकार किया और मुझे सम्यक् धन्यवाद दिया।

मैं कोलोनी लौटा। ईर्ष्या मेरे हृदय को कुरेद रही थी। वह कौन था जिसके लिए इस प्रासाद में काम करना बदा था? प्रासाद का निर्माण करना आसान है, लेकिन कुछ और भी है जिसका निर्माण करना कठिन है। जो हो, सन्ताप ने मुझे ज़्यादा त्रस्त नहीं किया। क्या हमारा समूह किसी भी प्रासाद से अच्छा नहीं था?

सितम्बर में वेरा ने पुत्र को जन्म दिया। साथी ज़ोया कोलोनी में पधारी, दरवाज़े को बंद किया और अपने ग़ुस्से का सारा ज़हर मुझ पर उंडेला।

"सो तुम्हारी लड़कियां बच्चों को जन्म दे रही हैं!"

"यह बहुवचन किस लिए? और यह आपको इतना ख़तरनाक क्यों मालूम होता है?"

"ख़तरनाक लड़कियों का बच्चों को जन्म देना!"

'स्वाभाविक है ... बच्चों को नहीं तो वे फिर किस चीज़ को जन्म देते?"

"यह मजाक़ की बात नहीं है, साथी!"

"मैं मज़ाक़ नहीं करता!"

"फ़ौरन एक बयान तैयार करना होगा।"

"यह सब ज़रूरी काम रजिस्ट्री ऑफ़िस कर चुका है।"

"रजिस्ट्री ऑफ़िस एक अलग चीज़ है, और हम दूसरी ..'

"जन्म का सर्टीफ़िकेट तैयार करने का अधिकार आपको किसी ने प्रदान नहीं किया है।"

"जन्म की नहीं... बात इससे कहीं बदतर है!"

"जन्म से भी ज़्यादा बदतर? मैं तो समझता था कि इससे बदतर और कुछ नहीं हो सकता... शॉपनहार या जाने किसने कहा है..."

"साथी, इस लहजे को अपने पास ही रखिये!"

"मेरा ऐसा इरादा नहीं है!"

"तो आप इसे बंद नहीं करेंगे? क्या मतलब होता है इसका?"

"क्या आप चाहती है कि मैं सचमुच गम्भीरता से बात करूं? तो सुनिये इसका मतलब यह है कि मैं तंग आ गया हूं—और बस! जाइये, यहां कोई बयान-वयान नहीं तैयार किया जाएगा!"

"अच्छी बात है!"

"आपका ख़ादिम!"

वह चली गई और उसकी 'अच्छी बात' का कोई नतीजा प्रकट नहीं हुआ। वेरा ने मां के रूप में असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया। वह एक सावधान, स्नेहमयी तथा समझदार मां बनी। और क्या चाहिए? हमारे एकाउन्ट आफ़िस में उसे काम दिला दिया गया।

खेतों में कटाई बहुत पहले ही की जा चुकी थी। पिटाई का काम भी पूरा हो चुका था। जाड़ों के लिए जो कुछ खत्तियों में भरना था भरा जा चुका था, वर्कशॉपों के लिए कच्ची सामग्री की व्यवस्था और नये कोलोनीवासियों को भर्ती किया जा चुका था।

प्रथम हिम-वर्षा बहुत जल्दी आ गई। एक दिन पहले तक गर्मी थी, और रात को हिम-कणों ने निःशब्द तथा चौकस भाव से कुरियाज पर हमला बोल दिया। अगली सुबह जेन्या जुरबीना पोर्च में बाहर आई और अहाते को सफ़ेद समकोण चतुर्भुज के रूप में उसने देखा और चकित भाव से पूछा:

"यहाँ यह नमक की बुकनी किसने छिड़की है? मैया रे! निश्चय ही यह लड़कों की करतूत है!"

१३. "बेचारे नन्हे लड़के को सहारा दो!"

दज़ेरजिन्स्की कम्यून की इमारत पूरी बन चुकी थी। बलूत के किशोर वन के छोर पर एक सुन्दर इमारत का उदय हो गया था। इसका अग्रभाग ख़ारकोव की ओर उन्मुख चमचम चमकता था। इमारत के भीतर ऊंचे हवादार शयनागार थे, नफ़ीस हॉल थे, चौड़े ज़ीने थे, पर्दे और छवि-चित्र थे। कम्यून की हर चीज़ सुरुचि का परिचय देती थी, जन-शिक्षा विभाग की शैली से सर्वथा भिन्न।

दो हॉल वर्कशॉपों के लिए नियत थे। इनमें से एक के कोने में – देखकर मैं तो अत्यधिक चकित रह गया – मोची-घर था।

कम्यून का बढ़ई-घर बढ़िया लेथों से सज्जित था। लेकिन ठीक यहीं यह अनुभव किया जा सकता था कि संयोजक अपने आपसे पूर्णतया आश्वस्त नहीं थे।

कम्यून के निर्माताओं ने मुझसे और कोलोनी से अनुरोध किया कि नयी संस्था को उद्घाटन दिवस के लिए तैयार करने में योग दें। क़िरगीज़ोव के कमान में इस काम के लिए मैंने एक ब्रिगेड नियुक्त की। जी-जान से वे इस काम में जुट गए।

दज़ेरजिन्स्की कम्यून में अधिक से अधिक सौ लड़कों के लिए जगह थी। लेकिन यह फ़ेलिक्स दज़ेरजिन्स्की की यादगार बनने जा रहा था। उक्राइनी चेकिस्तों ने इस मामले में न केवल अपना निजी धन ही, बल्कि अपने अवकाश के तमाम क्षण, अपने हृदय तथा मस्तिष्क की समूची शक्ति लगा दी थी। केवल एक चीज़ थी जिसे वे कम्यून को अर्पित करने की स्थिति में नहीं थे। वह चीज़ थी शैक्षणिक सिद्धांत, जिसमें वे कोई ख़ास पारंगत नहीं थे। लेकिन किसी कारणवश वे शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष से दूर नहीं भागे।

मेरा हृदय भारी उत्सुकता से उमगा था – यह देखने के लिए कि चेकिस्त इस कठिन परिस्थिति से कैसे पार पाते हैं। वे निस्संदेह सिद्धांत की उपेक्षा कर सकते थे, लेकिन क्या सिद्धांत भी उनकी उपेक्षा करने के लिए तैयार होगा? एक ऐसे मामले में जो इतना नया और आधारभूत था, शिक्षा-विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों का – मिसाल के लिए जैसे भूमिगत स्व-शासन का – उपयोग करना क्या उतना ही अच्छा न

होगा? चेकिस्त शिक्षा-विज्ञान के हितों में क्या अपनी रंगी-चुनी छतों तथा सुन्दर फ़र्नीचर को क़ुरबान करने के लिए तैयार होंगे? बहुत जल्दी ही यह प्रकट हो गया कि वे ऐसी कोई क़ुरबानी करने के लिए तैयार नहीं हैं। चेका के आदमी ने अपने दफ़्तर में एक गहरी आराम-कुरसी में मुझे बैठाया और कहा:

"मैं जो आपसे कहना चाहता हूं वह यह कि हम इस सबको तोड़-फोड़कर चौपट नहीं करने देंगे। बेशक, कम्यून होना चाहिए, और एक लम्बे अर्से तक कम्यून की अभी ज़रूरत होगी। हम जानते हैं कि आपके पास एक अनुशासित समूह है। शुरू करने के लिए आप हमें लगभग पचास लड़के दे दीजिये, बाकी को हम सड़क के लड़कों से पूरा कर लेंगे। उनका अपना स्व-शासन और अच्छी व्यवस्था होगी। समझ रहे हैं न?"

मैं उसकी बात ख़ूब समझ रहा था। मैं पूर्णतया समझ रहा था कि यह बुद्धिमान व्यक्ति शिक्षा-विज्ञान की छाया से भी परिचित नहीं है। सच पूछो तो उस क्षण मैंने एक अपराध किया। मैंने इस साथी से छिपाया कि शिक्षा-विज्ञान भी ऐसी एक चीज़ है और 'भूमिगत स्व-शासन' के बारे में भी कुछ नहीं कहा। मैंने कहा – "अच्छा" और चुपचाप पंजों के बल चला आया, अपने इर्द-गिर्द नज़र डालते तथा कपट के साथ मुसकराते हुए।

मैं ख़ुश था कि गोर्कीआइटों को एक नये समूह का निर्माण-कार्य सौंपा गया। लेकिन इस मामले के दु:खद पहलू भी थे। अपने श्रेष्ठतम लड़कों को भला मैं कैसे छोड़ सकता था? क्या ख़ुद गोर्की कोलोनी को अपने प्रत्येक श्रेष्ठतम सदस्य की ज़रूरत नहीं थी?

क़िरगीज़ोव ब्रिगेड का काम समाप्ति पर था। कम्यून के लिए फ़र्नीचर हमारी वर्कशॉपों में तैयार हो रहा था। और दर्ज़ी-घर में भावी कम्यून के सदस्यों के लिए कपड़ों की सीलाई शुरू की जा रही थी। कपड़े एकदम फ़िट हों, इसलिए पचास 'द्ज़ेरजिन्स्किआइटों' का फ़ौरन चुनाव करना ज़रूरी था।

इस मामले को अत्यन्त गम्भीरता के साथ कमाण्डरों की परिषद में उठाया गया।

"कम्यून में अच्छे लड़के भेजने चाहिए," लापोत ने कहा, "लेकिन

पुरानों में से नहीं। पुराने अन्त तक गोर्कीआइट ही रहें। यों वह दिन भी ज़्यादा दूर नहीं है जब उन्हें ख़ुद बाहर की दुनिया में प्रवेश करना होगा।"

कमाण्डर लापोत से सहमत थे। लेकिन जब हमने सूची को जांचना शुरू किया तो अच्छी-ख़ासी बहस छिड़ गई। हर कोई यह चाहता था कि उसके नहीं, किसी अन्य के दस्ते से कम्यून के लिए सदस्यों को चुना जाए। गई रात तक हम जमे रहे। आख़िर चालीस लड़कों तथा दस लड़कियों की एक सूची हमने बनाई। इस सूची में दोनों जेवेली, गोर्कीवस्की, वान्का ज़ाइचेन्को, मालिकोव, ओदारियुक, ज़ोरेन, निसिनोव, सिनेन्की, शारोवस्की, गार्दिनोव, ओल्या लापोवा, स्मेना, वास्का अलेक्सेयेव, मार्क शेइनहौस शामिल थे। मिशा ओवचारेन्को का नाम भी उसमें डाल दिया गया था। केवल इस उद्देश्य से कि सूची अधिक रोबदार नज़र आयेगी। मैंने सूची को एक बार फिर देखा, मुझे संतोष हुआ – किशोर थे तो क्या, लेकिन थे वे अच्छे और अडिग।

कम्यून के लिए नियत लड़के स्थानान्तरण के लिए अपनी तैयारियों में जुट गए। अपने नये घर पर उन्होंने कभी नज़र तक नहीं डाली थी। इस कारण अपने साथियों से विदा होना उनके लिए और भी उदासी का कारण बन गया था। कुछ तो यहां तक कहते सुने गए:

"कौन जानता है कि वहां कैसे बीते। इमारत बढ़िया हो सकती है, लेकिन हर चीज़ लोगों पर निर्भर करती है।"

नवम्बर के अन्त तक स्थानान्तरण की सारी तैयारियां पूरी हो गईं। नये कम्यून के लिए मैंने स्टाफ़ को जमा करना शुरू किया। ख़मीर उठाने के लिए मैंने क़िरगीज़ोव को भी भेज दिया।

यह सब उक्राइन की शिक्षा की जन-कमिसरियट के 'चिन्तनशील शैक्षणिक हल्क़ों' से पूर्ण अलहदगी के वातावरण में घट रहा था। इन हल्क़ों का मेरे प्रति रवैया पिछले दिनों से बुरा तो था ही साथ ही उपेक्षापूर्ण भी था। यों ये हल्क़े अपने आप में काफ़ी संकुचित थे। उनमें शामिल लोग सहज ही समझे जा सकते थे, फिर भी – जाने क्यों – मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे लिए अब कोई आशा नहीं है।

एक भी दिन ऐसा नहीं बीतता था जब कोई-न-कोई – नगण्य और महत्त्वपूर्ण मामलों की ओर उंगली उठाते हुए – यह नहीं कह

बैठता था कि कितना नीचा मैं गिर गया हूं। मैं ख़ुद भी अपने बारे में सन्देह करने लगा।

नफ़ीस से नफ़ीस और सुखदतम प्रसंग भी अचानक द्वन्द्व का कारण बन जाते। संभवतया मैं एकदम ग़लत था?

ख़ारकोव में 'बच्चों के हितैषियों' का एक सम्मेलन होनेवाला था। कोलोनी को उसका अभिनन्दन करना था। यह तय हुआ था कि हम वहां ठीक तीन बजे पहुंच जायेंगे।

हमें करीब दस मील का रास्ता पैदल तय करना था। हम फ़ुरसत के साथ रवाना हुए। अपनी रफ़्तार को घड़ी से अन्दाज़ते हुए मैंने दस्ते को रोका। यह इसलिए कि लड़के थोड़ा आराम कर सकें, पानी-वानी पी सकें और नगर पर एक नज़र डाल सकें। कोलोनीवासी इस तरह के अभियानों के शौक़ीन थे। लोग सड़कों पर हमें देखते, हमारे रुकने पर इर्द-गिर्द जमा हो जाते, हमसे सवाल पूछते, मित्र बनते और बनाते। प्रसन्न, चुस्त-दुरुस्त कोलोनीवासी मज़ाक़ करते, सुस्ताते, अपने समूह के सौन्दर्य का अनुभव करते। इस बार भी सब कुछ शान के साथ बीता। अगर कुछ चिन्ता थी तो केवल हमारे अभियान के लक्ष्य के बारे में। मेरी घड़ी की सूइयां ठीक उस समय तीन बजने का निर्देश कर रही थी जब हमारा दस्ता संगीत तथा फहराते हुए ध्वज के साथ उस जगह पहुंचा जहां सम्मेलन होनेवाला था। लेकिन झुंझलाई हुई एक बुद्धिजीवी महिला खीझकर हमसे मिली:

"इतनी जल्दी क्यों आ धमके? अब बच्चों को सड़क पर इन्तज़ार करना होगा!"

मैंने घड़ी की ओर इशारा किया।

"सो कुछ नहीं!" मुझे बताया गया। "अभी तैयारियां बाक़ी हैं!"

"तीन बजे का समय तय किया गया था।"

"ओह, साथी, आप हमेशा इस या उस चीज़ को लेकर झिक-झिक करने लगते हैं।"

कोलोनीवासियों के लिए यह समझना उनके बूते से बाहर था कि उन्होंने ऐसा क्या अपराध किया है, क्यों उन्हें उपेक्षा के साथ देखा जा रहा है।

"और इन नन्हों को लेकर आप क्यों आए हैं?"

"समूची कोलोनी यहां आई है।"

"इन नन्हों को दस मील तक भला कोई कैसे घसीट सकता है? यह अक्षम्य है! केवल इसलिए कि आप चमकना चाहते हैं, इतना क्रूर बनने का आपको कोई अधिकार नहीं है!"

"नन्हों ने इस अभियान को ख़ूब पसंद किया है। और अभिनन्दन-अभिवादन के बाद हम सरकस देखने जा रहे हैं। मैं उन्हें छोड़कर भला कैसे आ सकता था?"

"सरकस? और सरकस से आप घर कब पहुंचेंगे?"

"रात को।"

"साथी, नन्हों को फ़ौरन वापस भेज दीजिये!"

'नन्हे' – ज़ाइचेन्को, मालिकोव, ज़ोरेन, सिनेन्की – अपनी-अपनी जगहों पर पीले पड़ गए। आंखों में निराशा में डूबी मनुहार लिये वे मेरी ओर देख रहे थे।

"चलिए, उनसे पूछें," मैंने प्रस्ताव किया।

"उनसे क्या पूछना है – सब एकदम साफ़ है। उन्हें फ़ौरन लौटा दीजिये।"

"मुझे माफ़ करें, लेकिन आपका आदेश पालन करने का मेरा इरादा नहीं है।"

"इस हालत में मुझे ख़ुद आर्डर देना होगा।"

"ज़रूर दीजिये!" अपनी मुसकान को मुश्किल से छिपाते हुए मैंने कहा।

वक्त्री सीधे हमारे दाहिने बाज़ू की ओर बढ़ी।

"बच्चो! नन्हे बच्चो, वे जो उधर हैं – सीधे घर जाओ! तुम थक गए होगे!"

उसकी सहृदय ध्वनि ने किसी को स्पर्श नहीं किया। किसी ने चिल्लाकर कहा: "घर जाओ? वाह! बिलकुल नहीं!"

"और तुम सरकस देखने नहीं जाओगे – बहुत देर हो जाएगी।"

'नन्हे' हंस पड़े। ज़ोरेन की आंखें शैतानी से थिरकीं।

"ज़रा देखो तो इसे – है न काइयां? अन्तोन सेम्योनोविच, ज़रा आप भी देखिये – क्यों है न काइयां?"

वान्या ज़ाइचेन्को ने गुरू-गम्भीरता के साथ अपने निराले अन्दाज़ में ध्वज की ओर अपना हाथ फहराया।

"बात करने का यह कोई ढंग नहीं है..." उसने कहा। "आप इस तरह बात नहीं कर सकतीं – उस समय जबकि हम क़वायद की पांत में खड़े हैं। वह देखिये – हम अपने ध्वज के नीचे खड़े हैं क्या आप इतना भी नहीं देख सकतीं ?"

महिला ने दया के अन्दाज़ में बुरी तरह सैनिकीकृत इन बच्चों की ओर देखा और वहां से खिसक गई।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस तरह के द्वन्द्व दैनिक जीवन का जहां तक सम्बन्ध था, कोई बुरा नतीजा नहीं पैदा करते थे लेकिन उन्होंने मेरे इर्द-गिर्द संगठनात्मक एकाकीपन की एक असह्य भावना का संचार कर दिया था। लेकिन यह भावना ऐसी नहीं थी जिसका आदमी अभ्यस्त न हो सके। धीरे-धीरे मैंने प्रत्येक नई घटना को उदास तत्परता के साथ सहन करना तथा, जैसे भी हो, उसे दरगुज़र करना सीख लिया। मैं कोशिश करता कि बहसों से दूर रहूं। अगर कभी यदा-कदा पलटकर मैं गुर्राता भी था तो सहज़ शिष्टतावश, सच, एकदम शिष्टतावश – अपने नेतागण के सामने कुछ न कुछ तो कहना चाहिए न !

अक्तूबर में आरकादी ऊजिकोव को लेकर एक मुसीबत उठ खड़ी हुई जिसने मेरे और 'उनके' बीच आख़िरी और न पार की जा सकने-वाली खाई की रचना कर दी।

रबफ़ाक-छात्र सप्ताहान्त बिताने हमारे यहां आये थे। सोने के लिए हमने उन्हें एक कक्षा-कमरा दे दिया। दिन का समय हम वन की सैर में बिताते थे। उस समय जबकि सब लोग वन की सैर में मग्न थे, ऊजिकोव ने उनके कमरे में प्रवेश किया। चमड़े के उस बेग को उसने तिड़ी कर दिया जिसमें उन्होंने हाल में मिली अपनी छात्रवृत्ति रख छोड़ी थी।

कोलोनीवासी रबफ़ाक-छात्रों को जी-जान से प्यार करते थे। हम सब लज्जा से अभिभूत हो गए। कुछ समय तक चोर को जाना नहीं जा सका और मामले का यही पहलू मेरी नज़र में सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण था। सुसम्बद्ध समूह में चोरी का होना भयावह है, इसलिए नहीं

कि सम्पदा का लोप होता है, किसी व्यक्ति को नुक़सान पहुंचता है या यहां भी चोरी की लत से पीछा नहीं छूटता, बल्कि इसलिए कि इससे आम ख़ुशहाली का स्तर नीचे गिरता है, साथियों के बीच पारस्परिक विश्वास नष्ट हो जाता है। इससे निम्नतम भावनाओं को जन्म मिलता है। सन्देहशीलता, निजी सम्पदा के प्रति चिन्ता, चौकस और लुकी-छिपी स्वार्थपरता के भाव उत्पन्न होने लगते हैं। अगर चोरी करनेवाले का पता नहीं चलता तो समूह अपनी सभी सीवनों पर से उधड़ना शुरू हो जाता है – शयनागारों में फुसफुसाहटें चक्कर लगाती हैं, गुप्त बातचीत में संदिग्ध व्यक्तियों के नाम लिए जाते हैं, व्यक्तियों को अनावश्यक यंत्रणाओं में से गुज़रना पड़ता है – बहुधा उन्हीं व्यक्तियों को जिनका बचाव होना चाहिए। कारण, उनके चरित्रों ने ठीक दिशा में विकसित होना अभी शुरू ही किया है। उस हालत में भी जबकि कुछ दिन बाद चोर का पता चल जाता है, जबकि उसे उसके उपयुक्त 'पुरस्कार' भी मिल चुके होते हैं – न तो इससे घाव भरते हैं, न इससे आहत होने की चेतना नष्ट होती है, न ही समूह में पूर्ण शान्ति लौट पाती है। एक अकेली चोरी अन्तहीन दुश्मनी, कटुता, एकाकीपन तथा वास्तव में मानवविद्रोही प्रक्रियाओं के कीटाणुओं का घर हो सकती है। चोरी समूह में घटनेवाली उन अनगिनती घटनाओं की कोटि से सम्बन्ध रखती है जो किसी ख़ास प्रभाव-क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आतीं, जो पहले से सोची हुई कुत्सा से भिन्न, रासायनिक प्रक्रियाओं के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं। चोरी केवल वहीं उपद्रवरहित होती है जहां समूह नहीं होता, जहां जनमत का अभाव होता है, इस तरह कि लूटनेवाले तथा लूटे जानेवाले के सिवा अन्य कोई वहां पर नहीं आता। लेकिन चोरी जब समूह में होती है तो गुप्त भावों को उजागर करती है। वह समूह की आवश्यक शालीनता तथा सहनशीलता को नष्ट कर देती है। यह एक ऐसी चीज़ है जो 'बाल-अपराधियों' के समाज के लिए तो और भी विनाशकारी होती हैं।

ऊजिकोव के अपराध का तीन दिन बाद पता चला। मैंने तुरन्त उसे दफ़्तर में रखा और दरवाज़े पर एक सन्तरी खड़ा कर दिया – अनधिकृत प्रतिकारों पर रोक लगाने के लिए। कमाण्डरों की परिषद ने तय किया कि मामले को साथियों की अदालत में पेश किया जाए।

इस तरह के मुक़दमे का हम बहुत कम ही सहारा लेते थे। कारण, आम तौर से लड़के कमाण्डरों की परिषद पर बिना किसी लाग-लपेट के भरोसा करते थे। साथियों की अदालत में पेशी ऊजिकोव के ज़रा भी हित में नहीं थी। जजों का चुनाव आम सभा में हुआ। सर्वसम्मति से पांच नाम स्वीकार किये गये – कुदलाती, गोर्कोवस्की, ज़ाइचेन्को, स्तूपित्सीन और पेरेत्स। पेरेत्स को कुरियाजवासियों की ख़ातिर चुना गया। स्तुपित्सीन अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था। पहले तीन इस बात का आश्वासन थे कि भावुकता या कोमलता को पास नहीं फटकने दिया जायेगा।

सांझ के समय खचाखच भरे हॉल में मुक़दमा शुरू हुआ। ब्रेगेल और ज़ुरीन्स्काया भी, जो इसी उद्देश्य से कोलोनी में आई थीं, वहां मौजूद थीं।

ऊजिकोव अलग एक बेंच पर बैठा था। पिछले कुछ दिनों से उसका व्यवहार उद्दण्डतापूर्ण था – अक्खड़पन के साथ वह मुझे तथा कोलोनीवासियों को जवाब देता था, बुरे ढंग से मुसकराता – यहां तक कि हृदय सचमुच घृणा से भर उठता था। आरकादी को कोलोनी में आए एक साल से कुछ ऊपर हो चुका था। इस काल में बिना किसी सन्देह के उसमें कुछ सुधार हुआ था। यह सच है, कि शकल-सूरत से वह कुछ अधिक साफ़-सुथरा बन गया था, अपना सिर उठाकर चलने लगा था। उसकी नाक उसके बाक़ी चौखटे पर अब हावी नहीं रहती थी, यहां तक कि उसने मुसकराना भी सीख लिया था। लेकिन यह सब होने पर भी वह वही पुराना आरकादी ऊजिकोव था, एक ऐसा व्यक्ति जिसके हृदय में – समूह की बात छोड़िये – दुनिया में किसी के भी प्रति नाममात्र को भी आदर की भावना नहीं थी, एक ऐसा जीव जो मात्र तात्कालिक लालसा के लिए जीता था।

हमारे यहां आने से पहले ऊजिकोव अपने पिता तथा मिलीशिया से भय खाता था। कोलोनी में कमाण्डरों की परिषद या आम सभा के सिवा वह और किसी चीज़ से नहीं डरता था। लेकिन इन संस्थानों के महत्त्व से वह एकदम बेगाना था। उसकी ज़िम्मेदारी की भावना और भी कुंठित हो गई थी। उसकी नवप्राप्त मुसकान तथा उद्धत भाव-भंगिमा का यही रहस्य था।

लेकिन इस समय ऊजिकोव का रंग उड़ा हुआ था। प्रत्यक्षत:, माथियों की अदालत का उस पर असर पड़ा था।

जजों के प्रवेश के समय कमाण्डर ऑन ड्यूटी ने खड़े होने के लिए सबका आवाहन किया। कुदलाती ने गवाहों तथा अभियुक्त से जिरह शुरू की। उनकी शहादत में व्यंग्य का पुट था और गहरी निन्दा में वह पगी थी। मिशा ओवचारेन्को ने कहा:

"लड़के कह रहे हैं कि आरकादी ने कोलोनी के नाम पर बट्टा लगाया है। लेकिन मैं, मित्रो, आपसे कहता हूं, कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह कोलोनी के नाम पर बट्टा लगाए। वह कोलोनीवासी नहीं है – हो भी कैसे सकता है? आप उसे इनसान तक नहीं कह सकते – नहीं कह सकते न? आप ख़ुद सोचकर देखिये – क्या वह इनसान है? उससे तो, सच, एक कुत्ता या बिल्ली भी अच्छी होगी, लेकिन उसके साथ किया क्या जाये? हम उसे दफ़ा भी तो नहीं कर सकते, इससे कोई भला नहीं होगा। मेरा प्रस्ताव है कि उसके लिए एक मांद बना दी जाये और उसे भौंकना सिखाया जाये। तीन दिन तक उसे खाना न दिया जाए बस वह सब सीख जायेगा। लेकिन उसे घर में नहीं रहने दिया जा सकता।"

यह एक अपमानजनक तथा धराशायी कर देनेवाला भाषण था। जजों की बेंच पर बैठा वान्या ज़ाइचेन्को जी भरकर हंसा। आरकादी ने गम्भीरता के साथ मिशा की ओर देखा, वह लाल हो गया और उसने अपना सिर फेर लिया।

ब्रेगेल ने बोलने के लिए अनुमति मांगी। कुदलाती ने कहा:

"अच्छा हो कि आप थोड़ा रुकें – लड़कों को जो कहना है, पहले कह लेने दें!"

लेकिन ब्रेगेल के ज़ोर देने पर देनिस ने मान लिया। ब्रेगेल मंच पर आई और उसने एक भावपूर्ण भाषण दिया। उसके कुछ अंश मुझे अभी तक याद हैं: "तुम इस लड़के पर चोरी का मुक़दमा चला रहे हो। यहां जो मौजूद हैं, सब कहते हैं कि यह अपराधी है, कि इसे कड़ी सज़ा देनी चाहिए, और कुछ ने तो इसके निष्कासन तक की मांग की है। बेशक यह अपराधी है, लेकिन बाक़ी कोलोनीवासी और भी ज़्यादा अपराधी हैं!"

हॉल में कोलोनीवासियों के मध्य निस्तब्धता छा गई। वे अपनी गरदनों को उचका रहे थे – उस को देखने के लिए जिसने यह उभारकर रखा था कि ऊजिकोव की चोरी के लिए अपराधी वे हैं।

"एक साल से भी अधिक से यह तुम्हारे साथ रहा है, वह अभी भी चोरी करता है। इसका मतलब यह कि तुमने बुरी तरह उसे पाला, कि उसके प्रति सही रवैया – बिरादराना रवैया – रखने में तुम असफल रहे, कि तुमने उसे ठीक ढंग से जीना नहीं सिखाया। यहां कहा गया है कि वह एक बुरा कामगार है, कि वह पहले भी अपने साथियों की चीज़ें चुराता रहा है। यह सब केवल यही सिद्ध करता है कि तुमने आरकादी की ओर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना कि देना चाहिए था।"

किशोर लड़कों की तीक्ष्ण दृष्टि ने आख़िर ख़तरे को भांपा और साथियों के चेहरों की ओर बेचैनी से नज़रें फेंकीं। यह स्वीकार करना होगा कि उनकी आशंका निराधार नहीं थी। कारण, उस क्षण समूह को एक गम्भीर ख़तरा आतंकित कर रहा था। लेकिन ब्रेगेल ने सभा की इस आशंका को नहीं देखा। सच्चे आवेश के साथ उसने अपने भाषण का अन्त किया:

"आरकादी को सज़ा देने का मतलब उससे बदला लेना होगा, तुम्हें बदला लेने पर नहीं उतरना चाहिए। तुम्हें समझना चाहिए कि इस क्षण आरकादी को तुम्हारे सहारे की आवश्यकता है – वह नाज़ुक स्थिति में है, तुम सब उसके ख़िलाफ़ मोर्चा लगाये हो, अभी-अभी किसी ने जानवर से उसकी तुलना की थी। कुछ अच्छे लड़कों को यह भार सौंपना चाहिए कि वे आरकादी को अपने संरक्षण में लें, और उसे सहारा दें।"

ब्रेगेल मंच पर से उतर आई, और हॉल में एक अच्छी-ख़ासी हलचल-सी दौड़ गई। लड़के व्यग्रता से मुसकराते हुए आपस में बातें कर रहे थे। किसी ने गम्भीर, गूंजदार आवाज़ में पूछा:

"क्या कह रही थी भला वह?"

एक अन्य आवाज़ ने पूर्णतया संयत लहजे लेकिन ऐसे शब्दों में जो काफ़ी तीखे थे, जवाब दिया

"बच्चो, ऊजिकोव को सहारा दो!"

हॉल में हंसी गूंज गई। जज वान्या ज़ाइचेन्को अपनी कुरसी में पीछे की ओर लुढ़क गया। उसका पांव मेज़ की दराज़ से जा टकराया। कुदलाती ने सख़्ती के साथ उसे ताकीद की :

"वान्या, यह तुम कैसे जज हो?"

ऊजिकोव ने जो अपने घुटनों पर दोहरा हुआ बैठा था, अचानक हंसी की पिचकारी छोड़ी, लेकिन फिर तुरन्त अपने को संभाला। उसका सिर और भी ज़्यादा नीचे झुक आया। कुदलाती उससे कुछ कहने जा रहा था, लेकिन न कहना ही ज़्यादा अच्छा समझा, केवल अपने सिर को हिलाते हुए, बींध डालनेवाली नज़र ऊजिकोव की ओर फेंककर रह गया।

ब्रेगेल इन तुच्छ घटनाओं की ओर कोई ध्यान देती मालूम नहीं हो रही थी। वह और जुरीन्स्काया, दोनों दिलचस्प वार्तालाप में व्यस्त थीं।

कुदलाती ने घोषणा की कि जज विचार-विमर्श के लिए अवकाश लेंगे। हम जानते थे कि अपनी क़ानूनी खोज-बीन तथा सज़ा का मसौदा बनाने के लिए वे एक घंटे से कम नहीं लेंगे। अतिथियों को मैंने अपने दफ़्तर के लिए आमंत्रित किया।

जुरिन्स्काया सोफ़े के एक कोने में बैठ गई और गुल्यायेवा के कंधे की ओट से सत्य की खोज में चुपचाप बैठे अन्य लोगों की ओर देखने लगी। ब्रेगेल को पक्का विश्वास था कि आज उसने 'वास्तविक शैक्षणिक कार्य' का एक दृष्टान्त हमारे सामने रखा था। पर मैं एक विचित्र प्रकार के कड़वे हठ का अनुभव कर रहा था, उस हठ का नहीं, जो अपनी निष्कपटता की चेतना अथवा विजय की भावना उद्भूत होता है। मेरा यह हठ अपने काम की लाचारी की धुंधली भावना से उत्पन्न हठ था।

"तो आप मुझसे सहमत नहीं हैं?" ब्रेगेल ने कहा।

"क्या आप थोड़ी चाय लेंगी?" मैंने पूछा।

ये लोग अति पर उतरी हुई न्यायसंगतता के मरीज़ हैं – यह इलाज अच्छा है, वह बुरा है, इसलिए हमेशा पहले का प्रयोग करना चाहिए। द्वन्द्वात्मक तर्कप्रणाली जाने ये कब सीखेंगे? इन्हें कैसे बताया जाये कि मेरे जैसे काम में प्रक्रियाओं की एक अटूट श्रृंखला सन्निहित है। कुछ

प्रक्रियाएं ज़्यादा समय लेती हैं, कुछ कम'। कुछ सालों तक विस्तारित होती हैं और हमेशा टक्कर की छाप लिए प्रकट होती हैं – एक ऐसी टक्कर की, जिसमें समूह के तथा व्यक्तिगत सदस्यों के हित गुत्थियों में उलझे होते हैं। उन्हें कैसे समझाया जाए कि कोलोनी में मेरे काम के सात सालों के दौरान एक भी ऐसा मामला मेरे देखने में नहीं आया जो एक दूसरे से मिलता हो। उन्हें कैसे बताया जाये कि समूह को अनिर्णीत स्थिति के तनाव का, समाज की विवशता का अनुभव नहीं करने देना चाहिए। उन्हें कैसे समझाया जाये कि आज के इस मुक़दमे में शैक्षणिक कार्य का लक्ष्य ऊजिकोव या व्यक्तिगत रूप में चार सौ कोलोनीवासी नहीं, बल्कि खुद समूह है।

मानीटर ने हम सबको हॉल में चलने के लिए आमन्त्रित किया। कोलोनीवासियों ने खड़े होकर पूरी शांति के साथ फ़ैसला सुना।

फ़ैसला

'ऊजिकोव को मेहनतकशों के दुश्मन तथा चोर के नाते बिना किसी आबरू के कोलोनी से निकाल दिया जाना चाहिए, लेकिन उसके पक्ष में शिक्षा की जन-कमिसरियट की मध्यस्थता को ध्यान में रखते हुए साथियों की अदालत निश्चय करती है:

१. ऊजिकोव को कोलोनी में रहने दिया जाये।

२. एक महीने की अवधि के लिए उसे कोलोनी का ग़ैर-सदस्य समझा जाये। उसे उसके दस्ते से निकाल दिया जाये, मिश्रित दस्तों में उसे शामिल नहीं किया जाये। सब कोलोनीवासियों पर पाबंदी लगाई जाए कि वे उससे न तो कोई बात करें और न ही उसकी कोई मदद करें। न उसके साथ मेज़ पर बैठें और न उसके साथ एक ही शयनागार में सोएं, उसके साथ खेलें, उठे-बैठें या टहलें भी नहीं।

३. उसे अपने भूतपूर्व कमाण्डर दि्मत्री जेवेली के अधीन ही रहने दिया जाए। उसे अपने कमाण्डर से

बातें करने की छूट केवल काम के बारे में ही मिले। बीमारी की हालत में डाक्टर से बात करने की भी उसे छूट दी जा सकती है।

४. ऊजिकोव शयनागार के गलियारे में सोए, कमाण्डरों की परिषद द्वारा निर्धारित पृथक मेज़ पर भोजन करे और, अगर वह चाहे तो, कमाण्डर द्वारा निर्देशित काम को खुद अपने आप अकेला करे।

५. इस प्रस्ताव का उल्लंघन करनेवाले को – जो भी वह हो – कमाण्डरों की परिषद के आदेश से फ़ौरन कोलोनी से निकाल दिया जाये।

६. कोलोनी के संचालक की स्वीकृति के बाद फ़ैसला तुरन्त अमल में लाया जाये।'

लड़कों ने इस फ़ैसले को सहर्ष स्वीकार किया।

"बहुत बढ़िया!" हमारी ओर मुड़ते हुए कुज़्मा लेशी चहका। "इसे कहते हैं सच्ची मदद! कहते हैं – बेचारे की मदद करो, ओह नन्हे लड़के की मदद करो! कृपा कर उसके लिए कुछ चोर-तालियां बना दो!"

यह सब खुद ब्रेगेल के सामने उस सीधे-सादे कुज़्मा ने कहा। उसे नाम को भी इस बात का गुमान नहीं था कि ऐसा करना अशिष्टता हो सकता है। ब्रेगेल ने अवमानना के साथ झबरीले लेशी की ओर देखा और अधिकारपूर्ण लहजे में मुझसे कहा:

"बेशक, आप इस प्रस्ताव की पुष्टि करने नहीं जा रहे हैं!"

"इसकी पुष्टि करनी होगी," मैंने जवाब दिया।

कमाण्डरों की परिषद के खाली कमरे में जुरिन्स्काया मुझे एक ओर लिवा ले गई:

"मैं तुमसे बात करना चाहती हूं। यह प्रस्ताव क्या है? तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?"

"यह एक अच्छा प्रस्ताव है," मैंने कहा। "बहिष्कार निस्सन्देह एक खतरनाक अस्त्र है, और सामान्यत: इसकी सिफ़ारिश नहीं की जा सकती, लेकिन इस मामले में यह लाभदायक होगा।"

"आपको पक्का विश्वास है ?"

"हां, पक्का। देखो न, ऊजिकोव कोलोनी में अत्यन्त अप्रिय है – सब उससे घृणा करते हैं। समूचे एक महीने के लिए यह बहिष्कार सम्बन्धों को एक नया और सही रूप प्रदान कर देगा। अगर ऊजिकोव इसे सहन कर सका, तो वे उसका ज़्यादा सम्मान करेंगे। और ऊजिकोव के लिए यही उचित रहेगा।"

"और अगर वह इसे सहन नहीं कर सका ?"

"तो लड़के उसे धता बतायेंगे।"

"और आप उनका समर्थन करेंगे ?"

"करूंगा।"

"लेकिन यह असम्भव है !"

"नहीं, इसके सिवा अन्य सब असम्भव है। समूह को अपना बचाव करने का अधिकार है – क्यों है न ?"

"ऊजिकोव की बलि देकर ?"

"ऊजिकोव अपने लिए कोई दूसरा समाज खोज लेगा। और यह ख़ुद उसके लिए भी अच्छा होगा।"

जुरिन्स्काया उदास भाव से मुसकराई।

"तो यह है आपका शिक्षा-विज्ञान ?"

मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। अचानक उसने अपने मन में से एक व्याख्या खोज निकाली :

"शायद यह संघर्ष का शिक्षा-विज्ञान है ?"

"शायद।"

दफ़्तर में ब्रेगेल विदा होने की तैयारी कर रही थी। तभी लापोत आदेश को लिये हुए आया।

"इसकी पुष्टि की जाए न, अन्तोन सेम्योनोविच ?"

"बेशक। यह एक बहुत अच्छा प्रस्ताव है।"

"आप इस लड़के को आत्मघात के लिए मजबूर कर देंगे," ब्रेगेल ने कहा।

"किसको ? ऊजिकोव को ?" लापोत सचमुच चकित हो उठा। "आत्मघात के लिए ? ओह, ख़याल तो बुरा नहीं अगर वह अपने आपको लटका सके   लेकिन वह ऐसा नहीं करेगा।"

"ओह, भयानक!" ब्रेगेल ने फुंकार छोड़ी और चल पड़ी। ये स्त्रियां ऊजिकोव को या कोलोनी को नहीं जानतीं। कोलोनी और ख़ुद ऊजिकोव, दोनों ने उत्साह के साथ बहिष्कार का श्रीगणेश किया। कोलोनीवासियों ने सचमुच आरकादी से कोई सम्पर्क नहीं रखा। लेकिन मानवता के इस निकृष्ट नमूने के प्रति उनके रुख में गुस्से का, अपमान या घृणा का लेशमात्र भी नहीं था। मानो यह सब अदालत के फ़ैसले ने ख़ुद अपने कंधों पर ले लिया था। कोलोनीवासी भारी दिलचस्पी के साथ दूर से ऊजिकोव को देखते और इस समूची कार्यवाही तथा ऊजिकोव के सम्भावित भविष्य को लेकर निरन्तर आपस में बहस करते। कितनों ने घोषित किया कि अदालत द्वारा दी गई सज़ा किसी काम की नहीं। कोस्तिया वेत्कोवस्की की भी यही राय थी:

"क्या तुम इसे सज़ा कहते हो? ऊजिकोव हीरो की भांति घूम रहा है। ज़रा सोचो तो – समूची कोलोनी की नज़र उसपर टिकी है! वह इस योग्य तो नहीं!"

ऊजिकोव सचमुच हीरो की भांति घूमता था। प्रकट दम्भ और गर्व का एक भाव वह अपने चेहरे पर धारण किए था। वह कोलोनी-वासियों के बीच इधर से उधर ऐसे घूमता था जैसे बादशाह हो – जिससे न तो कोई सवाल पूछने का साहस कर सकता था, न ही कोई उसे सम्बोधित कर सकता था। भोजन के कमरे में सबसे पृथक, एक छोटी-सी मेज़ पर, वह इस तरह बैठता था जैसे सिंहासन पर बैठा हो।

लेकिन वीरत्व का यह मोहक अन्दाज़ जल्दी ही लुप्त हो गया। कुछ दिनों के भीतर ही आरकादी को कांटों के उस ताज की चुभन का अनुभव होने लगा जिसे साथियों की अदालत ने उसके सिर पर रखा था। कोलोनीवासी जल्दी ही उसकी असाधारण स्थिति के अभ्यस्त हो गए, लेकिन उसका पृथकीकरण बना रहा। अब आरकादी था, और निपट एकाकीपन से भरे उदास दिन थे – और ये दिन एकरस एक के बाद एक आते ही गए। ये मानवीय स्पर्श की गरमाई से एक-दम शून्य घड़ियां थीं जिनका कोई अन्त नहीं था। और इसी के साथ-साथ ऊजिकोव के चारों ओर समूह का जीवन – उत्साह और उमंग से भरपूर हंसी गूंजती थी, मज़ाक़ की फुलझड़ियां छूटती थीं, व्यक्तिगत

रुझान अपनी झलक दिखाते थे, मित्रता और सहानुभूति की ज्योति जब-तब चमकती थी। अपनी बेचारगी के बावजूद ये सब सुख ऐसे थे जिनका ऊजिकोव आदी हो चुका था।

एक सप्ताह बाद उसके कमाण्डर जेवेली ने मुझसे कहा :

"ऊजिकोव आपसे बात करने की इजाज़त चाहता है।"

"नहीं," मैंने कहा। "मैं उससे तभी बात करूंगा जब वह सफलता के साथ इस परीक्षा को पार कर लेगा। उसे बता देना।"

और शीघ्र ही यह देखकर मुझे ख़ुशी हुई कि आरकादी की भौंहें जो अभी तक निश्चल थीं, उसके माथे में रेखाएं डालने की अभ्यस्त होती जा रही हैं। मुश्किल से दिखाई पड़ने पर भी ये रेखाएं प्रभावपूर्ण थीं। लड़कों की ओर अब वह स्थिर नज़र से देखने लगा था। ऐसा लगता था जैसे वह कुछ सोच रहा हो, कोई सपना देख रहा हो। काम के प्रति उसके रवैये में भी एक परिवर्तन आ गया था – उल्लेखनीय परिवर्तन जिसे हर कोई देख सकता था। अधिकतर जेवेली उसे अहाता साफ़ करने का काम देता था। बिना किसी चूक के, एकदम ठीक समय पर, वह काम के लिए निकलता, हमारे बड़े अहाते को बुहारता, कूड़ेदानों को ख़ाली करता, फूलों की क्यारियों के चारों ओर की मेंड़ों को सीधा करता। अपनी खुरपी के साथ वह बहुधा सांझ को भी प्रकट होता, इधर-उधर छितरे काग़ज़ के टुकड़ों तथा सिगरेट के छोरों को बटोरता, फूल की क्यारियों की देख-भाल करता। एक दिन कक्षा एक बड़े काग़ज़ पर वह समूची सांझ झुका बैठा रहा जिसे अगली सुबह एक मुख्य स्थान पर उसने लगा दिया :

कोलोनीवासियो ! अपने साथी के श्रम का सम्मान
करो, काग़ज़ के टुकड़े इधर-उधर न छितराओ।

"ज़रा देखो तो!" गोर्कोवस्की ने कहा। "वह अपने आपको हमारा साथी समझता है..."

ऊजिकोव की परीक्षा के मध्य में साथी ज़ोया का कोलोनी में आगमन हुआ। ठीक भोजन का समय था। ज़ोया सीधी ऊजिकोव की मेज़ के पास पहुंची और निस्तब्धता के बीच जो तुरन्त भोजन के कमरे पर छा गई थी, व्यथित आवाज़ में उसने उससे पूछा :

"क्या तुम ऊजिकोव हो? बोलो तुम कैसा अनुभव करते हो?"

ऊजिकोव खड़ा हो गया, गम्भीर भाव से ज़ोया की आंखों में उसने देखा और पूरी शालीनता के साथ उसने उससे कहा:

"मैं आपसे बात नहीं कर सकता – इसके लिए कमाण्डर की अनुमति लेनी ज़रूरी है।"

साथी ज़ोया मित्का की खोज में लपकी। मित्का प्रकट हुआ – सजीव, चुस्त और काली आंखों से सज्जित।

"क्या बात है?"

"मुझे ऊजिकोव से बात करने की अनुमति दी जाये।"

"नहीं," जेवेली ने कहा।

"नहीं क्या – क्या मतलब है इसका?"

"मैं अनुमति नहीं दूंगा। बस, यही!"

साथी ज़ोया दफ़्तर में आई और ख़ुराफ़ाती उद्गारों की उसने एक झड़ी लगा दी।

"यह नहीं चलेगा!" वह चीख़ी। "उसे कोई शिकायत करनी हो तो? कौन जाने, वह अतल गर्त के अगारे पर खड़ा हो! क्या यह यंत्रणा नहीं है?"

"मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता, साथी ज़ोया।"

अगले दिन कोलोनीवासियों की आम सभा में नताशा पेत्रेन्को बोलने के लिए खड़ी हुई।

"लड़को! आरकादी को अब हमें माफ़ कर देना चाहिए। वह अच्छी तरह काम कर रहा है और, जैसा कि एक कोलोनीवासी को करना चाहिए, अपनी सज़ा को सम्मान के साथ वहन कर रहा है। मैं माफ़ी देने का प्रस्ताव करती हूं।"

आम सभा ने सहानुभूति की ध्वनियां प्रकट कीं। "हां, क्यों न माफ़ी दी जाए?"

"ऊजिकोव ने शानदार ढंग से अपने को संभाला है..."

"हां!"

"यही समय है! सही मौक़ा है!"

"हमें लड़के की मदद करनी चाहिए!"

कमाण्डर से अपनी राय देने की मांग की गई।

"मैं तुम्हें साफ़ बताता हूं," जेवेली ने कहा, "वह **एक** दूसरा ही आदमी बन गया है। कल जब वह ... तुम जानते तो हो!"

"हम जानते हैं!"

"हां, तो कल जब वह उसके पास पहुंची, और उसने कहा – 'लड़के, मेरे बच्चे!' तो जैसे एकदम लोहे की लाट – टस से मस नहीं हुआ। मैं ख़ुद यह सोचता था कि ऊजिकोव का कुछ नहीं बन पायेगा, लेकिन अब मैं तुमसे कहता हूं – उसमें है, उसमें कुछ है ... वह हमारे ही ..."

लापोत की बत्तीसी खिल गई:

"हां तो ठीक – हम उसे माफ़ कर देंगे।"

"वोट!" कोलोनीवासी चिल्लाये।

ऊजिकोव वहीं मौजूद था, भट्टी की ओट में दुबका हुआ, अपने सिर को नीचे की ओर लटकाये हुए। लापोत ने ऊंचे उठे हुए हाथों का पर्यवेक्षण किया और प्रसन्नता से कहा:

"हां तो, सभी इससे सहमत मालूम होते हैं। आरकादी – ए, ज़रा इधर आओ! बधाई! तुम अब मुक्त हो!"

ऊजिकोव मंच पर आया, उसने सभा की ओर देखा, अपना मुंह खोला ... और उसकी आंखों में आंसू ढुलक आये।

हॉल में भावावेश की एक लहर-सी उमड़ी। किसी ने चिल्लाकर कहा:

"कल ... यह हमें कल बतायेगा ..."

लेकिन ऊजिकोव ने आस्तीन से अपनी आंखों को पोंछा। उसकी ओर देखने से साफ़ मालूम होता था कि वह वेदना का अनुभव कर रहा है। आख़िर उसने कहना शुरू किया:

"धन्यवाद, लड़को ... और लड़कियो ... और नताशा ... मैं ... मैं ... समझता हूं, सब समझता हूं ... तुम यह न सोचना कि मैं ... मेहरबानी।"

"भुला दो यह सब!" लापोत ने कड़ी आवाज़ में कहा।

ऊजिकोव ने विनम्रता से अपना सिर झुकाया। लापोत ने सभा को ख़त्म किया और लड़के लपककर मंच पर ऊजिकोव के पास पहुंच गए। जो सहानुभूति आज उन्होंने प्रदर्शित की थी, सूद के साथ वह

उन्हें चुकता कर दी गई थी। मैंने सन्तोष की सांस ली – उस डाक्टर की भांति जो सफलतापूर्वक मस्तिष्क का आपरेशन कर चुका हो।

दिसम्बर में द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून का उद्घाटन किया गया। गुरु-गम्भीरता तथा हार्दिकता के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ।

उस दिन कोमल हिम-कणों की वर्षा हो रही थी – नये सूटों और रोएंदार ओवरकोटों से लैस कम्यून के लिए चुने गए पहले पचास सदस्यों ने अपने साथियों से विदा ली और नगर से होते हुए अपने नये घर की ओर चल दिए। दल में एकसाथ इकट्ठे होकर वे बहुत ही छोटे मालूम होते थे – जैसे काले सुन्दर चूज़ों का दल हो। हिम-कणों से आच्छादित, प्रसन्न और गुलाब की भांति खिले हुए, वे कम्यून में पहुंचे। चूज़ों की भांति वे कम्यून में इधर-उधर फुदकने और बिना कोई आगा-पीछा सोचे विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक सवालों को कुरेदने लगे। पंद्रह मिनट भी न बीते होंगे कि उन्होंने कमाण्डरों की एक परिषद का संगठन कर लिया, और तीसरा मिश्रित दस्ता बिस्तरे जमाने के काम में जुट गया।

कम्यून के उद्घाटन में शामिल होने के लिए पांतों में अपने ध्वज के नीचे गोर्कीआइटों ने मार्च किया। आगे-आगे उनका आर्केस्ट्रा था। अब वे खुद अपने ही साथियों के मेहमान थे जो इस दिन से कम्यून के सदस्य का नया तथा गुरू-गम्भीर नाम धारण करने जा रहे थे। चार सौ भूतपूर्व लावारिस लोगों के बीच चेकिस्त – जो सबसे महत्त्व-पूर्ण, सबसे व्यस्त तथा सबसे सम्मानित कार्यकर्ता थे – नाम मात्र को भी परोपकारी नहीं मालूम होते थे। उनके और लड़कों के बीच पलक झपकते ही हार्दिक सम्बन्ध क़ायम हो गये, हालांकि पीढ़ियों के बीच का अन्तर और हमारे सम्मान की वह विशिष्ट भावना – जो सोवियत बच्चे अपने से बड़ों के प्रति रखते हैं – स्पष्ट परिलक्षित होती थी। इसके अलावा ये किशोर निरे संरक्षित मात्र नहीं थे। उनका एक अपना संगठन था, उनके अपने नियम-क़ायदे थे, गतिविधि का उनका अपना एक क्षेत्र था और वे सब अपनी एक गरिमा से, ज़िम्मेदारी और कर्त्तव्य की चेतना से मण्डित थे।

कम्यून का संचालन मेरे हाथों में सौंपा जाना ऐसा मालूम होता

था जैसे वह एक तयशुदा घटना हो, हालांकि इस बारे में कुछ तय या घोषित नहीं किया गया था।

कम्यून की तुलना में गोर्की कोलोनी अत्यन्त पेचीदा तथा कहीं कठिन चीज़ थी। अपने पचास साथियों को खोकर गोर्कीआइटों ने पचास नये सदस्य प्राप्त किये। इन नवागन्तुकों ने कोलोनी के अनुशासन तथा परम्पराओं को जहां तेज़ी के साथ आत्मसात किया, वहां वास्तविक संस्कृति तथा सच्ची सामूहिक रूप-रेखा ने कहीं अधिक धीमी गति से उनमें आकार ग्रहण किया। लेकिन हमारे लिए यह सब कुछ कोई नयी चीज़ नहीं था।

शानदार दृश्यपट हमारे सामने खुले थे। हमने सपने देखने शुरू किये – खुद अपने रबफ़ाक के, यंत्र-विभाग की नयी इमारत के, जीवन के नये रास्तों के। और एक दिन हमने समाचारपत्रों में पढ़ा कि हमारे गोर्की सोवियत संघ में आ रहे हैं।

१४. पुरस्कार

दिसम्बर से जुलाई तक का वह समय एक अद्भुत समय था। उन दिनों मेरे बजरे को डगमगाने-उछालने में तूफ़ान ने कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन मेरे साथ बजरे पर दो समूह सवार थे – दोनों ही अपने ढंग से शानदार।

द्ज़ेरजिन्स्की कम्यूनवालों की संख्या बढ़कर द्रुत गति से क़रीब डेढ़ सौ तक पहुंच गई थी। तीस-तीस के तीन दलों में नयी शक्तियों का आगमन हुआ था। आगे नाथ न पीछे पगहा, ये सब लावारिस थे, पहली कोटि के चुने हुए नमूने। कम्यूनवालों का जीवन एक साफ़-सुथरा और शिष्ट जीवन था। बाहर से देखने पर उनसे केवल ईर्ष्या करने को जी चाहता था। सचमुच, उनसे ईर्ष्या करनेवाले कुछ कम नहीं थे और वे लावारिस क़तई नहीं थे।

द्ज़ेरजिन्स्की कम्यूनवाले लोगों के सामने चौड़े सफ़ेद कालरों से सज्जित अच्छे ऊनी कपड़ों में प्रकट होते। उनका आर्केस्ट्रा बढ़िया धातु के वाद्य-यंत्रों का धनी था, उनके बिगुलों पर प्राग के एक सुप्रसिद्ध कारख़ाने की छाप अंकित थी। कामगारों तथा चेकिस्त के क्लबों के

द्वार कम्यूनवालों के लिए खुले थे। वे वहां गुलाब की भांति खिले हुए, मैत्री से युक्त होकर काफ़ी नफ़ासत के साथ जाते थे। उनका समूह हमेशा इतनी सुसंस्कृत दिखता कि कुछ लोग – जो मस्तिष्क जैसी चीज़ के बोझ से मुक्त थे – सचमुच क्षोभ के साथ कहते :

"भले-चंगे बच्चों को इन्होंने पकड़ा, कपड़ों से उन्हें सजाया और नुमाइश शुरू कर दी। सड़क के तलछटियों से सिर मारो, तब जानें!"

लेकिन इस सबकी चिन्ता करने का मेरे पास अवकाश नहीं था। चौबीस घंटों के भीतर अत्यन्त आवश्यक चीज़ों को भी मैं मुश्किल से ही निबटा सकता था। दो घोड़ोंवाली बग्घी पर मैं एक समूह से दूसरे की ओर लपकता रास्ते में बेकार जानेवाली घड़ियां, समय के मेरे बजट में बहुत ही अखरनेवाला व्यतिक्रम मालूम होतीं। हालांकि छात्रों की हमारी पांतों में कमज़ोर पड़ने के कभी कोई चिन्ह नहीं दिखते थे और समृद्धता के अपने साहिल को हम कभी नहीं छोड़ते थे, शिक्षकों का हमारा स्टाफ़ भी काम से बुरी तरह चूर था। तभी उस सिद्धांत का मैंने आविष्कार किया जिसे मैं आज भी प्रतिपादित करता हूं, भले ही वह एक व्याघात-सा मालूम हो – सामान्य बच्चों को या उन बच्चों को जो सामान्य अवस्था में लाये जा चुके हैं, शिक्षित करना अत्यन्त कठिन होता है। उनकी प्रकृति अधिक सूक्ष्म होती है, उनकी मांगें अधिक पेचीदा होती हैं, उनकी संस्कृति अधिक गहरी और उनके सम्बन्ध अधिक विविध होते हैं। हमारी इच्छाशक्ति की व्यापक प्रचण्ड ता की नहीं, रोब डालनेवाले भावों की नहीं, बल्कि अत्यन्त पेचीदा कार्य-नीति की वे हमसे अपेक्षा करते हैं।

कोलोनीवासी और कम्यूनवाले, दोनों समाज से विलग व्यक्तियों के पृथक समूह-मात्र नहीं रह गये थे। अन्य संगठनों के साथ – कोमसोमोल, पायनीयर, खेल-कूद, सैन्य और क्लबों के साथ दोनों समूहों ने पेचीदा सामाजिक सम्बन्ध क़ायम कर लिए थे। कोलोनी और नगर के बीच अनगिनत राहों तथा पगडंडियों से होकर न केवल मनुष्य ही गुज़रते थे, वरन् विचारों, भावनाओं व प्रभावों का दौर भी आगे बढ़ता था।

इन सब ने हमारे शैक्षणिक कार्य में एक नयी आभा का, नये रंग का समावेश कर दिया था। अनुशासन और आये दिन के जीवन की

व्यवस्था अब एक लम्बे अर्से से मात्र मेरी चिन्ता का विषय नहीं रहे थे। वे अब समूह की परम्परा में शामिल हो गए थे। वह समूह मेरी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह उनसे निबट सकता था। वह केवल उसी समय उनकी निगरानी नहीं करता था जब परम्परा के उल्लंघन का कोई मामला सामने होता था, कोई उत्पात या उन्माद का दौरा उठ खड़ा होता था, बल्कि वह हर घड़ी सजग रहता था। वह चीज़ जिसे हम सामूहिक चेतना कहते हैं, उसका पथ-प्रदर्शन करती थी।

उन दिनों मामले मेरे लिए कठिन थे पर जीवन मेरा सुखी था। उस सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता जो बालकों के समाज में एक वयस्क को प्राप्त होता है–बालकों का भी वह समाज जो उसकी अपनी आंखों के सामने बड़ा हुआ है, जो उसमें अटूट विश्वास रखता और एक-साथ मिलकर आगे बढ़ता है। ऐसे समाज में विफलता भी शोक का संचार नहीं करती, खीज और वेदना भी अपना एक ऊंचा मूल्य रखती मालूम होती है।

कम्यूनवालों की अपेक्षा गोर्की समूह मेरे अधिक निकट था। मित्रता की जड़ें वहां कहीं ज़्यादा मज़बूत और गहरी थीं, मानवीय जीवों को ढालने में वहां कहीं ज़्यादा लागत देनी होती थी और कहीं ज़्यादा गहरा संघर्ष करना पड़ा था। गोर्कीआइटों को मेरी ज़रूरत भी ज़्यादा थी। द्ज़ेरजिन्स्की कम्यूनवाले इस मामले में भाग्यशाली थे कि उन्हें एकदम शुरू से ही चेकिस्तों का संरक्षण प्राप्त था। इसके प्रतिकूल, अपवाद रूप में मुझे तथा शिक्षकों के हमारे छोटे-से दल को छोड़कर, अन्य कोई गोर्कीआइटों के सिर पर हाथ रखनेवाला नहीं था। सो मैंने कभी यह कल्पना तक नहीं की थी कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब मुझे गोर्की कोलोनी को छोड़ना पड़े। इस तरह की परिस्थिति की कल्पना करना मेरी सामर्थ्य से बाहर था। जीवन की एक महानतम दुर्घटना के रूप में ही मैं इसे ग्रहण कर सकता था।

लौटकर कोलोनी में आना घर आने के समान था। कोलोनी-वासियों की आम सभाओं, कमाण्डरों की परिषद की बैठकों, अत्यन्त पेचीदा टक्करों तथा कठिन निर्णयों तक में मैं वास्तविक विश्राम पा सकता था। यही वे दिन थे जब मेरी सर्वाधिक स्थायी आदत की नींव

पड़ी। निस्तब्धता के बीच काम करने की मेरी क्षमता लुप्त हो गई। अब मैं केवल उसी समय वस्तुतः आरामदेह अनुभव करता था जबकि ठीक मेरी बग़ल में एकदम मेज़ पर बच्चों की चहचहाहट गूंजती रहती, केवल तभी मेरे विचारों के डैने फैलते, मेरी कल्पना हिलोरें लेना शुरू करती थी। इसके लिए ख़ास तौर से मैं गोर्कीआइटों का ऋणी था।

लेकिन द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून अधिकाधिक परिमाण में मुझसे समय और ध्यान देने की मांग करता था। वहां की चिन्ताएं बिलकुल नयी थीं, वैसे ही शैक्षणिक दृश्यपट भी नये थे।

ख़ास तौर से नयी और अप्रत्याशित चीज़ मेरे लिए चेकिस्तों का समाज था। तात्त्विक रूप में वे एक समूह थे। यह एक ऐसी चीज़ थी जो उस समय के जन-शिक्षा विभाग के कार्यकर्त्ताओं के बारे में नहीं कही जा सकती। और इस समूह को जितनी ही अधिक निकटता से मैं देखता, जितना ही अधिक अपनी कार्यविधि से उनके निकट पहुंचता जाता, अधिकाधिक स्पष्टता के साथ एक नयेपन का अनुभव करने लगता। यह कैसे हुआ, नहीं जानता, लेकिन चेकिस्त-समूह ठीक उन सब गुणों से समृद्ध था जिन्हें मैं आठ साल से कोलोनी के समूह में संचारित करने का प्रयास करता आ रहा था। अचानक मेरे सामने वह छवि साकार हो उठी थी जिसके अस्तित्व का अब तक मैं केवल अपने मस्तिष्क में ही अनुभव करता था। एक ऐसी छवि जिसकी मैंने तर्कशास्त्र तथा कला की मदद से क्रांति की तमाम घटनाओं तथा उसके समूचे दर्शन का मन्थन करके, रचना की थी, लेकिन जिसे मैंने अब तक भी नहीं देखा था और उसे कभी देख सकने की उम्मीद भी छोड़ दी थी।

यह आविष्कार मेरे लिए इतना बहुमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण था कि मन में अगर कोई आशंका होती थी तो यही कि कहीं निराश न होना पड़े। इस आविष्कार को एक गहरे भेद की भांति मैं अपने भीतर छिपाये था। कारण, मैं नहीं चाहता था कि इन लोगों के साथ मेरे सम्बन्धों में नाम मात्र की भी बनावट का समावेश हो।

यह आविष्कार मेरे नये शैक्षणिक दर्शन का केन्द्र-बिन्दु बना। यह देखकर मुझे ख़ास तौर से ख़ुशी हुई कि चेकिस्त-समूह के गुण बहुत ही

आसानी तथा सरलता के साथ काफ़ी हद तक उन अंशों को स्पष्ट करते थे जो मेरी उस भावनामूलक छवि में – जो अब तक मेरे काम में मेरा निर्देशन करती आ रही थी – अस्पष्ट तथा अनिश्चित थे। अब मैं अत्यन्त विस्तृत विवरण के साथ उन कतिपय क्षेत्रों का चित्र मूर्त कर सकता था जोकि मेरे लिए रहस्यमय थे। शिक्षा तथा संस्कृति के साथ ऊंचे बौद्धिक मानदण्डों के संयोग ने चेका के लोगों में वह रूप धारण नहीं किया था जो भूतपूर्व रूसी बुद्धिजीवियों में मुझे घिनौना मालूम होता था। यह मैं पहले ही जानता था कि ऐसा होकर रहेगा, लेकिन यह कल्पना करने में मैं असमर्थ था कि ये गुण किस प्रकार जीते-जागते व्यक्तियों के कृत्यों में प्रस्फुटित होंगे। अब मैं सम्भाषण का, तर्क की प्रक्रियाओं का, बौद्धिक भावावेश के नये रूपों का, रुचियों के नये झुकावों का, स्नायुओं की नयी बनावट का, और – सबसे बढ़कर – उस नये उपयोग का जिसमें कि आदर्शों को लगाया जा रहा था, अध्ययन कर सकता था। हमारे पुराने बुद्धिजीवी आदर्श को ऐसा समझते हैं जैसे वह कोई ढीठ किरायेदार हो, वह जो दूसरों के कमरों पर क़ब्ज़ा तो जमाता है, पर कभी पैसा नहीं देता। मुख़बिर का काम करता है और हरेक की जान सांसत में किये रहता है। हर कोई उसकी शिकायत करता है और आदर्श से भरसक दूर रहने का प्रयत्न करता है। अब मैं एक दूसरी ही चीज़ देख रहा था। वह यह कि आदर्श कोई किरायेदार नहीं, बल्कि एक प्रतिभाशाली प्रशासक है। वह अपने पड़ोसी के काम का आदर करता है, वह मरम्मतों और अंगीठियों के प्रति सजग रहता है। उसके अधीन काम करना सुखकर और सुविधाजनक मालूम होता है। इसके अलावा, सिद्धांत के प्रति उनका रवैया मेरी दिलचस्पी का विषय था। चेकिस्त सिद्धांत के भक्त हैं, लेकिन उनके लिए सिद्धांत – जैसा कि मेरे कई 'मित्रों' के साथ है – आंखों पर बंधी पट्टी के समान नहीं है। चेकिस्त सिद्धांत को वे एक मानदंड समझते, जिसका वे उसी तरह इस्तेमाल करते जैसे कि अपनी घड़ी का। आख़िर सिद्धांत को मैंने सामान्य जीवन में देखा। मेरा यह विश्वास अन्ततः पुष्ट हुआ कि सिद्धांत के मामलों में पुराने बुद्धिजीवियों के रुख़ के प्रति मेरी घृणा निराधार क़तई नहीं थी। यह किसी से छिपा नहीं है कि यह बुद्धिजीवी जब सिद्धांत रूप में कुछ करता है, तो आधे घंटे

बाद ही वह ख़ुद और वे सब जो उसके इर्द-गिर्द होते हैं, अपने हृदय को संभालने के लिए दवा पीने लगते हैं।

और भी बहुत-सी नयी विशेषताएं मैंने देखीं: सर्वव्यापी मग्नमयता, बोलचाल का लाघव, बने-बनाए नुसख़े के प्रति नफ़रत, सोफ़ों पर पसरने या मेज़ पर लम्बा होने में अशक्यता और सबसे अन्त में काम करने की एक आह्लादपूर्ण लेकिन सीमाहीन क्षमता, शहीदी अन्दाज़ या ढोंग से मुक्त 'दैवी शहीद' की घिनौनी मुद्रा से जिसका दूर का भी वास्ता नहीं होता। आख़िर मैंने ख़ुद निजी रूप में देखा और अनुभव किया उस बहुमूल्य पदार्थ को, जिसके लिए सामाजिक सीमेण्ट से अधिक अच्छा मुझे और कोई नाम नहीं सुझाई देता – सामाजिक परिदृश्य की वह भावना, काम की हर अवस्था में समूह के सभी सदस्यों का पारस्परिक अहसास, ऊंचे सार्वजनिक लक्ष्यों की अनवरत चेतना, एक ऐसी चेतना जो कभी भी नीचे गिरकर पाण्डित्य के दम्भ तथा बातख़ोरी का रूप धारण नहीं करती। यह सामाजिक सीमेण्ट ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे ठीक किसी सभा या सम्मेलन के मौक़े पर झटपट दूकान से पांच कोपेक में ख़रीदकर मंगाया जाये। वह बग़ल में बैठे आदमी के साथ शिष्ट मुसकान के आदान-प्रदान का एक रूप मात्र नहीं थी, बल्कि वह एक वास्तविक एकता थी – गति और काम, ज़िम्मेदारी और मदद एक ताल-मेल में गुंथे हुए। वह परम्परा की एकता थी।

चेकिस्तों की विशेष देख-संभार का पात्र होने के कारण कम्यूनवालों की स्थिति शुरू से ही सौभाग्यपूर्ण थी। उनके लिए जो किया जा रहा था, उसे स्वीकार करने के सिवा उन्हें और कुछ नहीं करना था। ख़ुद मुझे भी अब पत्थर की दीवार से सिर नहीं टकराना पड़ता था – जेबी-रूमालों की आवश्यकता तथा उपयोगिता का विश्वास दिलाने के लिए अधिकारियों से बेकार सिर नहीं मारना पड़ता था।

मेरा सन्तोष अब उच्चतम शिखरों को छूता था। वास्तविक बोल्शेविकों से अब मैं घनिष्ठ रूप से परिचित था। मैं यह विश्वास कर सकता था कि मेरा शैक्षणिक शास्त्र सच्चा बोल्शेविक शैक्षणिक शास्त्र है। जिस मानवीय टाइप को मैं आदर्श-रूप में अपने सामने रखता था वह मेरा एक अपना सुन्दर सहज आविष्कार, एक सपना मात्र नहीं था, बल्कि एक वास्तविक, जीता-जागता तथ्य था, एक ऐसा तथ्य

जिसका मैं पूरा अनुभव कर सकता था, क्योंकि वह मेरे काम का एक अंग बन चुका था।

कम्यून में मेरा काम अब उन्मादग्रस्त हस्तक्षेपों से मुक्त था। काफ़ी कठिन होते हुए भी वह ऐसा काम था जिसे मानव-मस्तिष्क सह सकता था।

कम्यूनवालों का जीवन वैसा कुछ समृद्ध तथा चिन्तामुक्त नहीं था जैसा कि बाहर के लोग विश्वास करते थे। कम्यूनवालों के रख-रखाव के लिए चेकिस्त अपने वेतन का कुछ प्रतिशत प्रदान किया करते थे। लेकिन यह न तो हमारे लिए उचित था, .न उनके लिए ही।

तीन महीने भी न बीते होंगे कि कम्यून में वास्तविक तंगी का अनुभव होने लगा। हम वक़्त पर वेतन न दे पाते और अपने संरक्षितों के भोजन तक का ख़र्च पूरा करना हमें कठिन मालूम होता। वर्कशॉपों से बहुत ही कम आमद होती थी, क्योंकि वे, कहने की आवश्यकता नहीं, काम सिखाने की जगहें थीं। यह सच है कि कम्यून में हमारे शुरू के दिनों में लड़के और मैं मोची-घर का साज़-बाज़ एक अंधेरे कोने में खींच ले गये और तकियों से उसका गला घोट डाला – एक हत्या जिसे चेकिस्तों ने व्यवहार-कुशलता के साथ नज़रअन्दाज़ कर दिया। लेकिन अन्य वर्कशॉपों में भी ऐसी कोई चीज़ हमारे हाथ नहीं लगी जिससे आमद का कुछ भरोसा हो सकता।

एक दिन हमारे चीफ़ ने मुझे बुलाया और भौंहें सिकोड़ते तथा सोचते-विचारते हुए एक चेक मेज़ पर रखा और कहा:

"बस, यही है।"

मैं समझा।

"आप कितना मुझे दे रहे हैं?"

"दस हज़ार। यह आख़िरी है। एक साल के लिए पेशगी बटोरा गया है। बस, और अधिक नहीं मिल पायेगा – समझ गए न? उसको... उस व्यक्ति को काम में लाना... वह ख़ूब क्रियाशील है..."

कुछ दिन बाद एक व्यक्ति जो ठीक शिक्षकों की बिरादरी का नहीं मालूम होता था, कोलोनी में इधर से उधर लपकता नज़र आने लगा। उसका नाम सोलोमोन बोरिसोविच कोगान था। सोलोमोन बोरिसोविच अब युवा नहीं रहा था। वह क़रीब साठ साल का था।

उसका हृदय कमज़ोर था, दम फूल जाता था, स्नायु सम्बन्धी गड़बड़ी और स्थूलता का वह शिकार था। लेकिन इस आदमी में जैसे क्रियाशीलता का दानव बसेरा डाले था उसे वह किसी तरह भी शान्त नहीं कर सकता था। सोलोमोन बोरिसोविच अपने साथ न तो कोई पूंजी लेकर आया था, न कोई सामग्री और न कोई नया आविष्कार। लेकिन पुराने शासन में उसकी अप्रयुक्त शक्तियां उसके स्थूल शरीर में निरंतर उबली पड़ रही थीं – क्रियाशीलता, आशावादिता, दृढ़ता, लोगों की जानकारी और सिद्धांतहीनता की एक हल्की-सी क्षम्य बुकनी अजीब ढंग से भावनाशील हृदय तथा विचार से उसमें घुली-मिली निवास करती थी। बहुत सम्भव है कि यह सब पहिये की तीलियों की भांति अभिमान रूपी उसके चौखटे में स्थित हों। कारण, सोलोमोन बोरिसोविच बड़े चाव से कहा करता.

"तुम कोगान को अभी नहीं जानते! पहले कोगान को जान लो, तब कहना!"

और वह ठीक कहता था। हमने कोगान को जाना और हमने कहा – आदमी शानदार है! जीवन के उसके अनुभवों की हमें सख़्त ज़रूरत थी। यह सच है कि उसके ये अनुभव कभी-कभी अपने आपको ऐसे रूपों में व्यक्त करते कि हमारा लहू सर्द हो जाता था और हमसे अपनी आंखों पर विश्वास करते नहीं बनता था।

सोलोमोन बोरिसोविच नगर से कुन्दों की एक लारी लेकर आया था।

"यह किस लिए?"

"किस लिए? क्या कहते हो गोदाम-घर के बारे में? निर्माण-विद्यालय के लिए फ़र्नीचर बनाने का एक आर्डर मैंने लिया है। उसे रखने के लिए कोई जगह तो होनी चाहिए न!"

"क्यों, उसे रखने की क्या ज़रूरत है? हम फ़र्नीचर बनाएंगे और उसे निर्माण-विद्यालय के पास भेज देंगे।"

"ही-ही! क्या तुम सचमुच समझते हो कि वह वास्तव में कोई विद्यालय है? नहीं, वह कोई विद्यालय नहीं है। वह कोरा भुलावा है। अगर वह सचमुच विद्यालय होता तो मैं उससे कोई वास्ता नहीं रखता!"

"तो यह विद्यालय नहीं है?"

"विद्यालय क्या होता है? उनके मन में जो आए अपने आपको कह सकते हैं! बड़ी चीज़ यह है कि उनके पास पैसा है। और चूंकि उनके पास पैसा है, इसलिए उनके लिए फ़र्नीचर की ज़रूरत है और फ़र्नीचर के लिए छत होनी चाहिए। यह आप खुद भी जानते वे छत नहीं बना सकते, क्योंकि दीवारें अभी खड़ी नहीं हुई हैं।"

"तुम कुछ भी कहो, हम कोई गोदाम-वोदाम नहीं बनाएंगे।"

"यही मैंने उनसे कहा। वे सोचते हैं कि द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून कोई बड़ी चीज़ नहीं है... लेकिन वह एक आदर्श संस्था है। भला वह तुच्छ गोदाम बनाने में क्यों समय ख़र्च करेगा? हमारे पास इसके लिए समय नहीं है!"

"और उन्होंने क्या कहा?"

"उन्होंने कहा – 'जाओ, बनाना शुरू करो!' हां तो, इस बारे में चूंकि वे इतने व्यग्र मालूम होते थे, सो मैंने उनसे कहा – 'इसमें बीस हज़ार की लागत आएगी।' लेकिन अगर आप नहीं बनाना चाहते तो जाने दो! हम गोदाम-घर क्यों बनाएं, जबकि हमें ज़रूरत असेम्बली-शॉप बनाने की है?"

दो सप्ताह बाद सोलोमोन बोरिसोविच ने असेम्बली-शॉप बनानी शुरू कर दी: खंभे गड़ गए और बढ़इयों ने दीवारें खड़ी करनी शुरू कर दीं।

"सोलोमोन बोरिसोविच, असेम्बली-शॉप के लिए धन कहां से आया?"

"कहां से आया? मैंने आपको बताया नहीं, क्या? बीस हज़ार हमारे नाम जमा करा दिया गया..."

"किसने जमा करा दिया?"

"उसी विद्यालय ने..."

"क्यों?"

"क्यों? वे चाहते हैं कि उनके गोदाम-घर हों... तो क्या? मुझे उनके गोदाम-घरों से भला क्या चिढ़ हो सकती है!"

"लेकिन सुनो, सोलोमोन बोरिसोविच, तुम असेम्बली-शॉप बना रहे हो, गोदाम-घर नहीं..."

सोलोमोन बोरिसोविच मुझसे चिढ़ गया।

"और सुनो! भला, यह किसने कहा था कि हमें गोदाम-घर नहीं चाहिए? आपने ही तो – क्यों कहा था न?"

"हमें धन लौटा देना होगा।"

सोलोमोन बोरिसोविच ने वितृष्णा के साथ अपनी भौंहों को सिकोड़ा।

"बस-बस, इतने ग़ैर-दुनियादार न बनो! क्या आपने किसी को नक़द रक़म लौटाते सुना है? शायद आपके स्नायु इतने मज़बूत हैं, सो आप ऐसा कर सकते हैं, लेकिन मैं ठहरा बीमार आदमी, अपने स्नायुओं के साथ मैं ऐसा खिलवाड़ नहीं कर सकता... वाह, धन वापस लौटाना!"

"लेकिन वे मालूम कर लेंगे।"

"अन्तोन सेम्योनोविच! आप एक समझदार आदमी हैं – क्यों, हैं न? इसमें ऐसा है क्या जो वे मालूम कर लेंगे? अगर वे चाहें तो कल ही चले आएं – उन्हें लोग काम करते दिखाई देंगे! और कौन है जो कहेगा कि यहाँ असेम्बली-शॉप का निर्माण हो रहा है?"

"जब शॉप में काम करने लगेंगे तब?"

"क्यों हमें काम करने से भला कौन रोक सकता है? क्या निर्माण-विद्यालय हमें काम करने से रोक सकता है? और किसका बूता है जो कहे कि हमें गोदाम-घर में काम करना है या खुली हवा में? क्या इस बारे में कोई क़ानून है? नहीं ऐसा कोई क़ानून नहीं है!"

सोलोमोन बोरिसोविच का तर्क-भण्डार असीम था। वह एक लड़ाकू मेढ़ा था, प्रचण्ड शक्ति से युक्त, किसी बाधा को स्वीकार न करनेवाला। कुछ समय तक हमने उसका प्रतिरोध करना छोड़ दिया, कारण – प्रतिरोध करने के हमारे सारे प्रयत्न सिर उठाने से पूर्व ही धराशायी हो जाते थे।

वसन्त में जैसे ही हमारे दोनों घोड़ों ने रात चरागाह में बितानी शुरू की, वित्का गोर्कोवस्की ने मुझसे पूछा:

"सोलोमोन बोरिसोविच अस्तबल में क्या बना रहा है?"

"बना रहा है?"

"हां उसने बनाना शुरू भी कर दिया है। उसने एक बायलर लगाया है और एक चिमनी बना रहा है।"

"उसे मेरे पास बुलाओ!"

और सोलोमोन बोरिसोविच आता है, सदा की भांति चिकनाई के दाग़ों से पुता, पसीना चुआता और हांफता हुआ।

"यह तुम क्या बना रहे हो?"

"यह कि यह एक फ़ाउण्ड्री है।"

"फ़ाउण्ड्री? लेकिन हमने तो निश्चय किया था कि फ़ाउण्ड्री हम्माम के पीछे बनाई जाएगी।"

"हम्माम के पीछे क्यों, जबकि उसके लिए एक बनी-बनाई इमारत मौजूद है?"

"सोलोमोन बोरिसोविच!"

"जी, यह मेरा ही नाम है, – कहिए, क्या है?"

"और घोड़े?" गोर्कोवस्की ने पूछा।

"घोड़े बाहर रह सकते हैं, ताज़ी हवा में। क्या तुम सोचते हो कि ताज़ी हवा की केवल तुम्हें ही ज़रूरत है और घोड़े चाहे जो गंदगी अपने फेफड़ों में भर सकते हैं! वाह, अच्छे मालिक हो तुम!"

यह मानना होगा कि हम निरस्त्र कर दिए गए। लेकिन वित्का ने फिर ज़ोर मारा:

"और जब जाड़े आएंगे?"

लेकिन सोलोमोन बोरिसोविच ने उसकी चिन्दियां बिखेर दीं।

"क्या सचमुच? बड़े विश्वास के साथ कहते हो कि जाड़े आएंगे ही!"

"सोलोमोन बोरिसोविच!" वित्का चीख़ा, जैसे बिजली गिरी हो।

सोलोमोन बोरिसोविच थोड़ा पीछे हट गया।

"और अगर जाड़े आते भी हैं तो इससे क्या? क्या अस्तबल अक्तूबर में नहीं बनाया जा सकता? तुम्हें इससे मतलब? तुम इतनी हड़बड़ी में हो कि दो हज़ार रूबल अभी ख़र्च कर देना चाहते हो, क्यों? है न ऐसा?"

उदास भाव से हमने उसास छोड़ी और हथियार डाल दिये। हम पर तरस खाते हुए सोलोमोन बोरिसोविच ने समझाना शुरू किया, प्रत्येक माह को अपनी झुकी हुई उंगलियों पर गिनते हुए: "मई, जून, जुलाई, और भला क्या कहते हैं उसे... अगस्त, सितम्बर..."

यहां आकर वह केवल क्षण-भर के लिए रुका, और भी भरपूर विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए :

"अक्तूबर ... ज़रा सोचो तो – पूरे छः महीने! छः महीनों के भीतर दो हज़ार रूबल से दो हज़ार रूबल और पैदा किये जा सकते हैं। और तुम चाहते हो कि अस्तबल छः महीने तक ख़ाली पड़े रहें! अपनी पूंजी को जाम करके यूं ही पड़ी रहने हम नहीं दे सकते!"

जाम हुई पूंजी के प्रति सोलोमोंन बोरिसोविच का बैर अत्यन्त निश्छल रूपों में प्रकट होता था।

"मैं सो नहीं सकता," उसने कहा। "कोई कैसे सो सकता है जबकि चारों ओर इतना काम हर घड़ी बिखरा पड़ा हो? प्रत्येक घड़ी प्रक्रिया के समान है! जाने किसने यह तय किया कि लोगों को इतना अधिक सोना चाहिए!"

हम आश्चर्य करते – पहले हम इतने ग़रीब थे और अब सोलोमोन बोरिसोविच इमारती लकड़ी, धातु और लेथों से अटा था। हमारा काम का दिन कुछ ऐसे शब्दों से गूंजता रहता था – सूचना-पत्र, चेक, अग्रिम अदायगी, इनवायस, दस हज़ार, **बीस** हज़ार। सोलोमोन बोरिसोविच कमाण्डरों की परिषद में लड़कों के भाषणों को उनींदी उपेक्षा के साथ सुनता – पतलूनों के लिए तीन सौ रूबल जैसी नगण्य रक़म सम्बन्धी भाषणों को!

"यह भी भला कोई बहस की बात थी? लड़कों को पतलून चाहिए – और तीन सौ रूबलवाली पतलून नहीं – वे भला किस काम के होंगे – एक हज़ार रूबलवाली ..."

"और इतना धन आयेगा कहां से?" लड़के पूछते।

"तुम्हारे पास हाथ हैं, मस्तिष्क हैं। ख़ुद अपने से पूछो – किसलिए हैं तुम्हारे ये मस्तिष्क? टोपियां सजाने के लिए? नहीं, सो कुछ नहीं! बस, वर्कशॉपों में कुल पन्द्रह मिनट रोज़ और काम करो, मैं तुम्हारे सामने फ़ौरन एक हज़ार रूबल खनखना दूंगा, शायद और भी ज़्यादा, जितना तुम कमाओ उतना!"

सोलोमोन बोरिसोविच ने अपनी ढचरा वर्कशॉपों को – जिन्हें देखकर गोदामों का सन्देह होता था – पुराने, सस्ते लेथों और दुनिया-भर के अंगड़-खंगड़ की, रस्सियों और मंत्रों के सहारे कस-कसाकर,

बरात सजा रखी थी, लेकिन कम्यूनवाले खुशी से उमगे अंगड़-खंगड़ के इस अम्बार में डुबकी लगाते थे। सभी तरह की चीज़ें इनमें बनाई जाती थीं – क्लब के लिए फ़र्नीचर, मक्खनदानी, पलंगों के अंश, जांघिये, क़मीज़ें, डेस्कें, कुर्सियां, आग बुझाने की दमकलों के प्लंजर – और सो भी भारी तादाद में। कारण, सोलोमोन बोरिसोविच के उद्योग में श्रम का विभाजन उच्चतम शिखरों को छूता था।

"तुम्हें कोई ब़ढ़ई थोड़े ही बनना है – नहीं बनना है न? मैं जानता हूँ कि तुम्हें बढ़ई नहीं बनना है – तुम डाक्टर बनने जा रहे हो। सो तुम बस पाये बनाओ – पूरी कुरसी बनाने की भला तुम्हें क्या ज़रूरत है? दो पायों के लिए मैं एक कोपेक देता हूँ, तुम दिन-भर में पचास कोपेक तक बना सकते हो। तुम्हारे पास न बीवी है, न बच्चे हैं ..."

कम्यूनवाले कमाण्डरों की परिषद में हंसते, हर तरह के छोटे-मोटे काम का प्रतिपादन करने के लिए सोलोमोन बोरिसोविच को भला-बुरा कहते, लेकिन अब हम अपने एक औद्योगिक-वित्तीय योजना से सज्जित थे – और यह सर्वोच्च महत्त्व की बात थी।

कम्यूनवालों के लिए पारिश्रमिकों का इतने सहज भाव से समावेश किया गया मानो शिक्षा-विज्ञान जैसी कभी कोई चीज़ नहीं रही, मानो शैतान और उसकी तमाम करतूतों का कहीं कोई अस्तित्व न हो। जब शिक्षकों ने पारिश्रमिकों के शैक्षणिक पहलू की ओर सोलोमोन बोरिसोविच का ध्यान खींचने का प्रयास किया तो सोलोमोन बोरिसोविच ने जवाब दिया:

"हमारा यह काम है कि जिन लोगों को हम तैयार करें वे समझदार हों। मेरी समझ में जो फोकट में काम करता है, वह भला कैसे समझदार हो सकता है?"

"लेकिन, सोलोमोन बोरिसोविच, तुम्हारी समझ में क्या विचार का कोई मूल्य नहीं है?"

"जब आदमी को मज़दूरी मिलती है तो इतने विचार उसके दिमाग़ में आते हैं कि संभाले नहीं संभलते। और जब उसके पास फूटी कौड़ी नहीं होती, तो केवल एक विचार उसके दिमाग़ में सरसराता है – वह यह कि किससे उधार ले? यह एक सत्य है।"

सोलोमोन बोरिसोविच हमारे श्रम-समूह में एक अत्यन्त उपयोगी ख़मीर का स्थान रखता था। हम जानते थे कि उसके तर्क बेहूदा और हमारे लिए ग़ैर थे, लेकिन वह ढेर सारे अंधविश्वासों पर इतने उल्लास और प्रचंडता से घातक आघात करता था कि – चाहे केवल प्रतिरोध के रूप में ही क्यों न हो – भिन्न प्रकार की औद्योगिक शैली की मांग करने के लिए बाध्य कर देता था।

द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून अत्यन्त सरलता के साथ पूर्णतया आत्म-निर्भर बन गया था। इसके लिए क़रीब-क़रीब हमें कोई प्रयास नहीं करना पड़ा था। इसलिए हमें इसमें कोई बहुत महत्त्व की बात नहीं दिखाई पड़ी। सोलोमोन बोरिसोविच ने बेकार ही यह नहीं कहा था:

"क्या कहा? एक सौ पचास कम्यूनवाले अपनी रोटियों का जुगाड़ नहीं कर सकते? बेशक, कर सकते हैं। उन्हें शैम्पैन के कार्क थोड़े ही उड़ाने हैं – नहीं उड़ाने हैं न? या शायद उनके पास गहने-कपड़ों पर जान देनेवाली बीबियां हैं?"

कम्यूनवालों ने अपनी तिमाही औद्योगिक-वित्तीय योजनाओं को, एक के बाद एक अपने प्रशस्त संयुक्त प्रयामों से पूरा किया। चेका के लोग प्रति दिन हमारे यहाँ आते थे। लड़कों के संग गुंथे वे हर छोटे-से-छोटे मामले की हर छोटी-से-छोटी त्रुटि की, सोलोमोन बोरिसोविच की बनियापन की प्रवृत्तियों से उत्पन्न निम्न कोटि के माल की हर ख़राबी की खोज-बीन करते थे। कम्यूनवालों के उद्योग-सम्बन्धी अनुभव ने, जो आए दिन अधिक ऊंचे स्तर का बनता जा रहा था, सोलोमोन बोरिसोविच के प्रति आलोचनात्मक रवैये को उनमें विकसित कर दिया था, जिसपर झुंझलाकर वह कहता:

"यह क्या? जैसे वे अब हर चीज़ के माहिर बन गए हैं! वे मुझे सिखाना चाहते हैं कि ख़ारकोव इंजन वर्क्स में कैसे क्या किया जाता है! वे क्या जानें कि ख़ारकोव इंजन वर्क्स क्या है?"

एक सर्वस्वीकृत नारे ने अब कम्यून में चमकना शुरू किया:

'एक असली फ़ैक्टरी की अब हमें आवश्यकता है!'

फ़ैक्टरी अधिकाधिक बाहुल्य के साथ अब हमारी चर्चा का विषय बन चली। हमारे चालू खाते में एक हज़ार के बाद दूसरा हज़ार जैसे-जैसे जमा होता जाता था, वैसे-वैसे अपनी फ़ैक्टरी रखने की हमारी

सामान्य आकांक्षाएं अधिक वास्तविक तथा व्यावहारिक रूप धारण करती जा रही थीं। लेकिन ये सब चीज़ें थोड़ा बाद के काल से सम्बन्ध रखती थीं।

द्ज़ेरजिन्स्की कम्यूनवाले बहुधा गोर्कीआइटों से मिलते थे। छुट्टियों के दिनों में दस्ते बनाकर वे एक दूसरे के यहां जाते थे, फ़ुटबॉल, वालीवॉल और गोरोद्की* खेलते, मिलकर नदी में स्नान करते थे, स्केटिंग करते थे, सैर के लिए निकलते और नाटक देखने जाते थे।

विभिन्न प्रकार के अभियानों के लिए – कोमसोमोल तथा पायनियरों के कार्यक्रमों, दृश्य-दर्शनों, अभिनन्दनों तथा पर्यटनों के लिए – कोलोनी तथा कम्यून बहुधा अपनी शक्तियों को एकजुट कर लेते थे। ऐसे दिनों को मैं अत्यन्त चाहता था। ये मेरी वास्तविक विजय के दिन थे। और मैं अच्छी तरह जानता था कि यह मेरी आख़िरी विजय होगी।

ऐसे दिनों के लिए कोलोनी तथा कम्यून दोनों के लिए आम आदेश जारी कर दिए जाते थे। कपड़ों से लेकर – जोकि पहने जाने थे – सभा के समय तथा जगह की सूचना तक इन आदेशों में शामिल होती थी। गोर्कीआइट तथा कम्यूनवाले एक-सी वर्दी पहनते थे – ब्रीचेज़, पैरों में पट्टी, चौड़े सफ़ेद कालर और टोपी, ऐसे अवसरों से पहले की रात, आम तौर से, मे कोलोनी में बिताता था। इस बीच कम्यून की देख-संभार क़िरगीज़ोव को सौंप देता था। यात्रा के लिए तीन घंटों का अन्तर छोड़कर हम कुरियाज से रवाना होते और खोलोद्नाया पहाड़ी की ढलान पर से नगर में प्रवेश करते। हम हमेशा, अखिल-उक्राइनी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के ठीक सामने तेवेलेव चौरस के अस्फ़ाल्ट से बने व्यापक विस्तार में मिलते।

सदा की भांति नगर की सड़कों में, गोर्की कोलोनी बड़ी शानदार दिखती। हमारी चौड़ी पांतें, छः-छः जनों की, क़रीब-क़रीब समूची सड़क को घेर लेतीं, यहां तक कि ट्राम की पटरियों को भी। और कुछ नहीं तो एक साथ दस-दस ट्रामों का कारवां हमारे पीछे रुका खड़ा रहता, उनके चालक झिड़कते और अपनी घंटियों को निरन्तर टनटनाते। लेकिन बाएं बाज़ूवाले किशोर अपने कर्त्तव्यों के प्रति ख़ूब

---

* डंडाबेड़ी।

सजग गम्भीरता से आगे बढ़ते रहते, अपने डगों को ज़रा धीमा करते और कभी-कभी शैतानी के साथ, पटरियों की ओर नज़र फेंकते, लेकिन ट्रामों, उनके चालकों और टनटनाहट को चुपचाप नज़रअन्दाज़ कर जाते। सबसे अन्त में प्योत्र क्रावचेन्को आता, एक तिकोनी झंडी लिए हुए। सड़क के लोग ख़ास कुतूहल तथा हार्दिकता के साथ उसे देखते। लड़के इतनी उत्सुकता के साथ उसके इर्द-गिर्द उमड़ते कि सकपकाया हुआ प्योत्र अपनी पलकों को नीचे गिरा लेता। उसकी झंडी ट्राम-चालक की ठीक नाक के नीचे फड़फड़ाती, और प्योत्र ट्राम की घंटियों के कानफोड़ हल्ले-गुल्ले में डूबे घने वायुमण्डल में जैसे तैरता हुआ मालूम होता।

आख़िर रोज़ा लक्सेम्बर्ग चौरस में दस्ता ट्राम की पटरियों को मुक्त करता। ट्रामें एक-एक करके पास से निकल चलतीं। मुसाफ़िर खिड़कियों में से झांकते, हंसते और लड़कों की दिशा में अपनी उंगलियां दिखाते। और लड़के अपने सन्तुलन को क़ायम रखते तथा अपने क़दमों को ज़रा भी न गड़बड़ाते हुए, बाल कुटिलता के साथ अपनी मुसकानों की उनपर बौछार करते। और वे क्यों न मुसकराते? क्या शहर के लोगों से हंसी-ठिठोली करना मना है, क्या उनके साथ एकाध निश्छल शैतानी नहीं की जा सकती? वे हमारे अपने लोग हैं। बढ़िया लोग – अमीर-उमरा लोग अब हमारी सड़कों पर नहीं चलते, सजे-बजे अफ़सर मालिकों को अपनी बांहों का सहारा दिए सड़कों पर अब नहीं निकलते, दुकानदार लोग तिरस्कार के साथ अपनी नज़रों के तीर अब हम पर नहीं छोड़ते। नगर में अब हम मालिकों की भांति घूमते हैं – 'अनाथालय के लड़कों' की भांति नहीं – बल्कि कोलोनीवासियों की, गोर्कीआइटों की भांति। हमारा लाल फरहरा सबसे आगे यूं ही नहीं हवा में फहराता, हमारे बिगुल अकारण ही 'बुदेन्नी मार्च' की धुन नहीं बजाते।

हम तेवेलेव चौरस की ओर मुड़ गये। हमने अभी ढलान पर चढ़ना शुरू किया ही था कि द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून फरहरे की चोटी दिखाई देने लगी। सफ़ेद कालरों की लम्बी पांत वहां नज़र आ रही थीं। नज़र आ रहे थे गम्भीर परिचित चेहरे, सलामी में उठे हुए हाथ और संगीत। यह क़िरगीज़ोव की ब्रिगेड थी। फरहरे की सलामी के साथ कम्यूनवाले हमारा अभिनन्दन करने लगे। अगले ही क्षण मार्च

की अपनी धुन को बंद कर, हमारे आर्केस्ट्रा की जवाबी अभिनन्दन ध्वनि वायुमण्डल को गुंजाने लगी।

क़िरगीज़ोव ने अपनी रिपोर्ट दी। इस संक्षिप्त अवधि में हम एकदम निस्तब्ध आमने-सामने खड़े हो गये। फिर पांतों को भंग कर लड़कों ने अपने मित्रों की ओर लपकते ही उनसे हाथ मिलाया। हँसी ठिठोली की। मुझे डाक्टर फ़ॉस्ट की याद आ गई। वह कुटिल जर्मन चाहे तो मुझपर ईर्ष्या कर सकता है। भाग्य का खोटा था वह – बुरे युग में, अनुपयुक्त सामाजिक ढांचे में उस डाक्टर ने – जन्म लिया था।

अगर हम छुट्टी के दिन से ठीक पहले मिलते, तो बहुधा ऐसा होता कि मित्का जेवेली मेरे पास आता और सुझाव रखता :

"चलिए, गोर्कीआइटों के यहां चले चलें। वे आज सांझ को फ़िल्म 'युद्धपोत पोतेम्किन' का प्रदर्शन कर रहे हैं। और खान-पान का वहां कोई टोटा नहीं है ..."

ऐसे अवसरों पर हम पोदवोर्की गांव को रात की गहराइयों में, अपने संयुक्त आर्केस्ट्राओं की ध्वनि से जगा देते। काफ़ी देर तक चहल-पहल रहती – भोजन के कमरे में, शयनागारों में, क्लब में। वयस्क अपने प्रारम्भिक वर्षों के उतार-चढ़ावों का ज़िक्र करते, छोटे ईर्ष्या के साथ सुनते।

अप्रैल के प्रारम्भ से हमारी बातचीत का विषय गोर्की का आगमन हो चला। अलेक्सेई मक्सिमोविच ने हमें लिखा था कि वे जुलाई में ख़ास तौर से ख़ारकोव आ रहे हैं। तीन दिन वे कोलोनी में ही रहेंगे। अलेक्सेई मक्सिमोविच के साथ हमारा पत्र-व्यवहार बहुत पहले से नियमित रूप धारण कर चुका था। हालांकि कोलोनीवासियों ने पहले कभी अपनी आंखों से उन्हें नहीं देखा था, फिर भी अपनी पांतों में उनके अस्तित्व का वे अनुभव कर रहे थे। इसमें उन्हें वैसा ही सुख मिलता था जैसा कि बच्चे को अपनी मां की छवि में मिलता है। केवल वही जो बचपन में ही पारिवारिक जीवन से वंचित कर दिया गया हो, स्नेह की ज़रा-सी भी कोतल पूंजी के बिना जिसे अपना समूचा जीवन विताना पड़ा हो, यह समझ सकता है कि दुनिया कभी-कभी कितनी सर्द मालूम होती है। केवल वही उस दुलार तथा देख-संभार की सच्ची क़द्र कर सकता है जोकि एक बड़े आदमी से – एक ऐसे आदमी से जो समृद्धिशाली तथा उदार हृदय का धनी है – उसे प्राप्त होता है।

गोर्कीआइट मृदु भावनाओं को व्यक्त करना नहीं जानते थे— मृदुता उनके लिए एक अत्यन्त महंगी चीज़ थी। आठ साल से मैं उनके साथ था। कितने ही मुझसे अत्यन्त गहरा लगाव रखते थे। लेकिन इस समूचे काल में इनमें से एक ने भी मेरे साथ मृदुता नहीं बरती— इस शब्द के साधारण अर्थों में। मैं उनकी भावनाओं की थाह केवल ऐसे लक्षणों से ले पाता था जिन्हें अकेला मैं ही जानता था—नज़र की गहराई से, रंग के आकस्मिक प्रवाह से जो उनके गालों पर दौड़ जाती थी, उनकी संलग्नता से जो सुदूर कोनों से मेरा अनुसरण करती थी, गला फंस जाने से, मिलने पर कूद-फांद तथा दौड़ से। सो मैं उस अनकथ मृदुता को देख सकता था जिससे कि लड़के गोर्की का ज़िक्र करते थे। उस उल्लास को मैं देख सकता था जिसे गोर्की के आगमन की सूचना ने जन्म दिया था।

कोलोनी में गोर्की का आगमन उच्चतम पुरस्कार था। एक ऐसा पुरस्कार जिसके हम अपनी दृष्टि में पूर्णतया योग्य नहीं थे—सचमुच, योग्य नहीं थे। यह उच्चतम पुरस्कार उस समय हमें मिलने जा रहा था जबकि समूचा सोवियत संघ इस महान लेखक का स्वागत करने के लिए अपने फरहरों को ऊंचा उठा रहा था, जबकि हमारा छोटा-सा समूह इस प्रशस्त सार्वजनिक उछाह में सहज ही लुप्त हो सकता था।

लेकिन वह लुप्त नहीं हुआ। उसने हमारे हृदयों को छुआ, हमारे जीवन को एक ऊंचा मूल्य प्रदान किया।

गोर्की का स्वागत करने की हमारी तैयारियां उनका पत्र मिलने के अगले दिन से ही शुरू हो गई थीं। गोर्की ने अपने आने से पहले हमें एक उदारतापूर्ण उपहार भेजा था। इसने कुरियाज के पुराने दिनों-वाले अपने घावों के अवशेषों को भरने में हमें मदद दी।

और ठीक इन्हीं दिनों अपनी गतिविधि की जवाबदेही के लिए मुझे तलब किया गया। सभी काट-छांट के शिक्षा-शास्त्री धुरंधरों के दरबार में मुझे यह बताना था कि शिक्षक के नाते मेरा धर्म क्या है, किन सिद्धांतों का मैं प्रतिपादन करता हूं। यह सब विवरण प्रस्तुत करने के कारणों-आधारों की कोई कमी नहीं थी।

उत्साह के साथ मैंने इसके लिए तैयारी की, हालांकि मैं रहम या उदारता दोनों में से किसी एक की भी आशा नहीं करता था।

आख़िर उस ऊंचे तथा खुले से हॉल में, देवदूतों और पैग़म्बरों की अच्छी-ख़ासी पंगत के सामने मैं पेश हुआ। यह एक बाक़ायदा दरबार था। यहां मत प्रकट किए जाते थे – शिष्टता के साथ, सभ्य सीमा में लिपटे हुए, दिमाग़ की तहों, प्राचीन ग्रंथों और जर्जर आराम-कुरसियों की सुगंध में पगे हुए। लेकिन ये देवदूत और पैग़म्बर न तो सफ़ेद दाढ़ियों से सज्जित थे, न श्रद्धा उपजानेवाले नामों से और न महान आविष्कारों से। किस अधिकार से वे यह आलोक-मण्डल धारण किए थे, किस अधिकार से वे अपने हाथों में पवित्र कुण्डली-पत्रक थामे थे? आख़िर वे धूर्त जीव नहीं तो फिर क्या थे जो उस समय, जबकि सोवियत जीवन के लाभ वितरित किए जा रहे थे, दरवाज़े की ओट से बाहर निकल आए थे।

इनमें प्रोफ़ेसर चाइकिन सबसे ज़्यादा क्रियाशील था। यह वही प्रोफ़ेसर चाइकिन था जिसने, कुछ साल पहले, चेख़ोव की एक कहानी की याद ताज़ा कर दी थी।

अपने भाषण का अन्त करते हुए चाइकिन ने श्रेय की एक चिन्दी भी मेरे पास नहीं रहने दी:

"साथी मकारेन्को चाहते हैं कि शिक्षा की प्रक्रिया कर्त्तव्य की भावना पर आधारित हो। माना कि इसके साथ वे 'सर्वहारा' शब्द और जोड़ देते हैं, लेकिन इस तरह, साथियो, अपने विचार के भीतरी तत्त्व को वे हमारी आंखों से छिपाकर नहीं रख सकते। हम साथी मकारेन्को को सलाह देंगे कि वे कर्त्तव्य की भावना के ऐतिहासिक स्रोतों का अच्छी तरह अध्ययन करें। यह भावना बुर्जुआ सम्बन्धों की देन है – एक ऐसी भावना जो अत्यन्त व्यावसायिक प्रकृति की है। सोवियत शिक्षा-विज्ञान व्यक्तित्व में रचनात्मक शक्तियों, रुझानों और पहलक़दमी को विकसित करना चाहता है, कर्त्तव्य की बुर्जुआ भावना को नहीं – किसी तरह भी नहीं!

दो आदर्श संस्थाओं के सम्मानित संचालक के मुंह से गहरे शोक तथा आश्चर्य के साथ सम्मान की भावना चेताने की अपील को हमने सुना है। इस अपील के विरुद्ध हम अपना विक्षोभ घोषित किए बिना

नहीं रह सकते। सोवियत जनमत की आवाज़ भी विज्ञान की हमारी आवाज़ के साथ है। वह उस धारणा को अपने गले से नहीं लगा सकता जो, इतनी स्पष्टता के साथ अफ़सरी विशेषाधिकारों, वर्दियों और बिल्लों की यादगार है।

वक्ता के उन तमाम कथनों को लेकर हम यहां बहस में नहीं पड़ सकते जो उद्योग के बारे में उन्होंने कहे हैं। हो सकता है कि यह, कोलोनी की माली ख़ुशहाली की दृष्टि से, एक उपयोगी प्रलोभन हो, लेकिन शिक्षा-विज्ञान उद्योग को शैक्षणिक प्रभाव के तत्वों में शामिल नहीं कर सकता। वक्ता के इस तरह के कथनों का अनुमोदन करना तो और भी दूर की बात है कि 'औद्योगिक-वित्तीय योजना श्रेष्ठतम शिक्षक है'। इस तरह की मान्यताएं श्रम-शिक्षा के विचार को कुत्सित रूप देने के सिवा और कुछ नहीं करतीं।"

कितने ही वक्ता और बोले, कितने ही लोग आलोचनात्मक मौन साधे रहे। आख़िर मैं अपने को नहीं रोक सका। सारी सावधानी को ताक़ पर रखकर मैंने आग में घी का काम कर दिया।

"शायद आप सही हों – हम कभी किसी एक समझौते पर नहीं पहुंच सकेंगे। मैं आपको नहीं समझ सकता। मिसाल के लिए, आप पहल-क़दमी को एक तरह की प्रेरणा मानते हैं। कोई नहीं जानता कि यह कहां से आती है, जाने किस विशुद्ध सूने निठल्लेपन में से आती है। मैं आपसे तीसरी बार कहता हूं कि पहलक़दमी उस समय आती है जब करने के लिए कोई काम होता है – जब उसे पूरा करने की ज़िम्मे-दारी होती है, जब समय की बरबादी के लिए सिर पर जवाबदेही होती है, जब समूह इसके लिए मांग करता है। लेकिन आप मुझे नहीं समझ सकते और काम से सर्वथा मुक्त पहलक़दमी का राग अलापते हैं। आपके अनुसार अगर आप अपनी नाभि की ओर एकटक काफ़ी देर तक देखते रहें तो पहलक़दमी का उदय हो जाएगा ..."

ओह, कितना आहत हो उठे वे, किस तरह चिल्लाए वे मुझ पर। किस तरह वे बलबलाए और अपने वरदहस्त से अपनी आत्मा की उन्होंने ख़ैर मनाई! और इसके बाद, यह देखकर कि लपटें मज़े से थिरक रही हैं, कि सभी वैतरणियां बहुत पीछे छूट चुकी हैं, कि अब कुछ खोने के लिए नहीं है क्योंकि सब कुछ खोया जा चुका है, मैंने कहा:

"आप इस योग्य नहीं कि शिक्षा या पहलक़दमी के बारे में कोई फ़ैसला दे सकें – आप उनके बारे में कुछ नहीं जानते!"

"और क्या आप जानते हैं कि लेनिन ने पहलक़दमी के बारे में क्या कहा था?"

"जानता हूँ।"

"नहीं, आप नहीं जानते!"

मैंने अपनी नोटबुक निकाली और उसमें से पढ़ा, बहुत ही स्पष्ट उच्चारण के साथ:

'पहलक़दमी निहित है सुव्यवस्थित ढंग से पीछे हटने में और कड़े अनुशासन को क़ायम रखने में', २७ मार्च, १९२२ के दिन रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविकों) की ग्यारहवीं कांग्रेस में लेनिन का कथन।

देवदूत अचकचाए, लेकिन क्षण-भर के लिए ही, और इसके बाद चीख़े: "पीछे हटने का इससे क्या वास्ता?"

"मैं आपका ध्यान उन सम्बन्धों की ओर खींचना चाहता हूं, जो अनुशासन तथा पहलक़दमी के बीच मौजूद हैं। इसके अलावा, ख़ुद मुझे सुव्यवस्था के साथ पीछे हटना चाहिए ..."

देवदूतों ने आंखें टिमटिमाईं, इसके बाद वे एक दूसरे की ओर लपके, फुसफुसाए और अपने काग़ज़ों को उन्होंने सरसराया। दरबार ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव रखा:

'शैक्षणिक प्रक्रिया की प्रस्तावित प्रणाली एक ग़ैरसोवियत प्रणाली है।'

मेरे मित्रों में से भी कई वहां मौजूद थे, लेकिन वे चुप बैठे रहे। चेकिस्तों का एक दल वहां मौजूद था। ध्यान के साथ उन्होंने बहस का अनुसरण किया, अपनी नोटबुकों में कुछ टांका और फ़ैसले का इन्तज़ार किए बिना ही उठकर चले गए।

रात गए हम कोलोनी में लौटे। मेरे साथ शिक्षक तथा कोमसोमोल ब्यूरो के कई सदस्य थे। जोर्का वोल्कोव रास्ते-भर बुदबुदाता रहा:

"वे कैसे यह सब कहते हैं? वे क्या सोचते हैं – क्या सम्मान ऐसी कोई चीज़ नहीं है, क्या हमारी कोलोनी का सम्मान ऐसी कोई चीज़ नहीं है? उनकी बात मानो तो ऐसी कोई चीज़ नहीं है!"

"उनकी बात पर ध्यान न देना, अन्तोन सेम्योनोविच,' लापोत ने कहा। "वे पूरे बोर हैं – सच, पूरे बोर हैं!"

"अरे नहीं, मैं कोई ध्यान नहीं दे रहा हूं," मैंने लड़कों को तसल्ली दी।

लेकिन मसले के बारे में निश्चय किया जा चुका था, वह तय हो चुका था।

बिना किसी थरथराहट के, एक क्षण के लिए भी आम वातावरण को नीचे न गिरने देते हुए, मैंने समूह को समेटना शुरू किया। अपने मित्रों को, जितना भी जल्दी हो, उसमें से बाहर निकालना आवश्यक था। दोनों ही कारणों से यह आवश्यक था – एक तो इसलिए कि उन्हें नयी व्यवस्था की अग्नि-परीक्षा में से गुज़रना पड़े, दूसरे इसलिए कि कोलोनी के भीतर मैं विरोध के केन्द्र छोड़कर नहीं जाना चाहता था।

अगले दिन ही यूरियेव को मैंने अपना त्याग-पत्र दे दिया। सोचपूर्ण ख़ामोशी के बाद बिना एक शब्द कहे, उसने मुझसे हाथ मिलाया। लेकिन जैसे ही मैं कमरे से बाहर जाने लगा, उसने पीछे से आवाज़ दी:

"एक मिनट! लेकिन... गोर्की आ रहे हैं।"

"तो क्या आप यह सोचते हैं कि मैं अपने सिवा और किसी को गोर्की का स्वागत करने दूंगा?"

"तब ठीक है!"

उसने बुदबुदाते हुए दफ़्तर के फ़र्श को इधर से उधर नापना शुरू किया।

"जहन्नुम! जहन्नुम में जाए सब!"

"क्यों, क्या हुआ?"

"मैं यहाँ नहीं टिक सकता।"

उसे इसी भली मनःस्थिति में छोड़कर मैं चल दिया। उसने मुझे गलियारे में आ पकड़ा:

"अन्तोन सेम्योनोविच, मेरे बुज़ुर्ग, आपके लिए यह कष्टप्रद है – है न?"

"बस-बस, रहने दो!" मैं हंसा। "आख़िर परेशानी क्या है?

ओह, तुम बुद्धिजीवी लोग! अच्छी बात है, तो गोर्की के विदा होने के दिन मैं कोलोनी छोड़ूंगा। बागडोर मैं जुरबिन को सौंप जाऊंगा। फिर जैसा मन हो करना..."

"अच्छा तो..."

कोलोनी में अपने त्याग-पत्र के बारे में मैंने किसी को कुछ नहीं बताया। यूरियेव ने वायदा किया कि वह किसी से ज़िक्र नहीं करेगा।

मैंने फ़ैक्टरियों और चेकिस्तों के यहां दौड़-धूप की। वरिष्ठ कोलोनीवासियों के कोलोनी छोड़ने की चर्चा पहले ही काफ़ी दिनों से चल रही थी – सो कोलोनी में किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। मित्रों की सहायता से गोर्कीआइटों के लिए ख़ारकोव फ़ैक्टरियों में जगहें तथा शहर में कमरे पाने में ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई। येकातेरिना ग्रिगोरियेवना तथा गुल्यायेवा ने छोटे-से वस्त्रागार को संभाला जिसमें अब तक वे काफ़ी अनुभवी हो चुकी थीं। गोर्की के आगमन में अभी दो महीने थे। सो समय काफ़ी था।

हमारे बड़े लड़कों ने एक के बाद एक बाहर दुनिया में पांव रखा। आंसुओं के साथ वे विदा हुए, लेकिन शोक के आंसुओं के साथ नहीं। वे जानते थे कि हम फिर मिलेंगे। गार्ड ऑफ़ ऑनर तथा संगीत के साथ, फहराते हुए गोर्की ध्वज की छाया में हमने उन्हें विदा दी। इस प्रकार तारानेत्स, वोलोख़ोव, गुद, लेशी, गलातेन्को, फ़ेदोरेन्को, कोरितो, वोल्कोव बन्धु, लापोत, कुदलाती, स्तुपित्सीन, सोरोका तथा अन्य कितने ही हमसे विदा हुए।

कुछ को, कोवाल के साथ तय करके, वेतन पर हमने कोलोनी में ही रहने दिया। यह इसलिए कि कोलोनी नेतृत्वविहीन न होने पाए। उन सबको जो रबफ़ाक के लिए तैयारी कर रहे थे, शरद तक के लिए द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून में स्थानान्तरित कर दिया गया। शिक्षकों के लिए तय किया गया कि कुछ समय तक वे अभी कोलोनी में ही रहें, जिससे तहलका जैसी कोई चीज़ न फैलने पाए। केवल कोवाल नहीं रहा। अन्त की प्रतीक्षा किये बिना ही वह देहात चला गया।

इस काल में जिन पुरस्कारों की मुझ पर वर्षा की गई, उनमें एक सर्वथा अप्रत्याशित था – इस तथ्य का आविष्कार कि चार सौ

लोगों के एक जीते-जागते समूह को आसानी के साथ नष्ट नहीं किया जा सकता। जो हमें छोड़कर चले गए थे, नये सदस्यों ने उनकी जगहों को भर दिया – ऐसे लड़कों ने जो उतने ही जानदार, परिहासपूर्ण तथा आशावादी थे। कोलोनीवासियों की पांतें फिर पुर गईं, युद्ध के दौरान सैनिकों की पांतों की भांति। समूह मरना नहीं चाहता था, भूलकर भी मरने की बात सोचने के लिए तैयार नहीं था। उसका जीवन भरा-पूरा था, वह अपनी चिकनी पटरियों पर द्रुत गति से आगे बढ़ रहा था, गम्भीरता और मृदुता के साथ अलेक्सेई मक्सिमोविच के स्वागतोत्सव के, लिए तैयारियां कर रहा था।

हमारे सामने शानदार दिन, खुशी से भरे दिन फैले थे। हमारे दिन जैसे फूलों से, श्रम और मुसकानों से, हमारे सुस्पष्ट भविष्य से, सुहावने और मित्रतापूर्ण शब्दों से सजे थे। हमारी लगन हमारे सिरों पर इन्द्रधनुषी वितान ताने थी, हमारे सपने सर्चलाइट की भांति आकाश की गहराइयों को आलोकित कर रहे थे।

और सदा की भांति उल्लसित विश्वास के साथ हम अपने समारोह की ओर – अपने इतिहास के महानतम समारोह की ओर – अग्रसर हो रहे थे।

आख़िर वह दिन आया।

सुबह से ही कोलोनी के इर्द-गिर्द बाक़ायदा छावनी-सी लग गई – शहर के लोग, मोटरें, अधिकारी, पत्र-संवाददाताओं की एक अच्छी-ख़ासी सेना, फ़ोटोग्राफ़र, चलचित्र लेनेवाले सभी वहां उपस्थित थे। इमारतें फरहरों और हारों से सजी थीं, अहाते में फूल लगे थे, काफ़ी अन्तर देकर लड़के पांतों में तैनात थे, आख़्तिर राजमार्ग पर घुड़सवारों और अहाते में गार्ड ऑफ़ ऑनर की व्यवस्था की गई थी।

सफ़ेद टोपी पहने दीर्घकाय गोर्की कार में से उतरे। उन्होंने अपने चारों ओर एक नज़र डालकर देखा, अपनी घनी, मेहनतकशों जैसी मूंछों को कांपती उंगलियों से सहलाया और मुसकरा दिए। स्पष्ट ही वे द्रवीभूत थे। उनका चेहरा ऋषि जैसा था, और आंखों में मित्रता की झलक थी।

"कहो, अच्छी तरह तो हो! क्या ... ये तुम्हारे लड़के हैं? हां, ठीक! तो चलो फिर!"

आर्केस्ट्रा की झंडा-सलामी, लड़कों के हाथों की द्रुत सरसराहट, जगमगाती हुई आंखें, खुले हृदय – ये सब हमारे मेहमान के लिए पलक-पांवड़ों की भांति बिछे थे।

गोर्की ने पांतों के सामने से चलना शुरू किया ...

१५. उपसंहार

सात साल बीत चुके हैं। यह सब अब इतिहास की चीज़ बन चुका है।

वह दिन और उस दिन की एक-एक बात – आख़िरी विवरण तक – मुझे आज भी याद है। वह दिन जब गोर्की विदा हुए, वह गाड़ी विदा हुई जो गोर्की को बिठाकर ले गई। विचार और हमारी भावनाएं अभी भी गाड़ी का अनुसरण कर रही थीं, हमारे लड़कों की आंखें विदा की हार्दिकता से उमगी अभी भी चमचमा रही थीं। मेरे लिए अब एक छोटी-सी 'सरल' प्रक्रिया को सम्पन्न करना-भर बाक़ी रह गया था। गोर्कीआइट और द्ज़ेरजिन्स्की कम्यूनवाले समूचे प्लेटफ़ार्म पर, इस छोर से उस छोर तक, फैले थे, दोनों आर्केस्ट्रों के बिगुल तथा झंडों के शिखर चमचमा रहे थे। सामनेवाले प्लेटफ़ार्म पर रिजोव जानेवाली लोकल गाड़ी छूटने ही वाली थी। तभी जुरबिन मेरे पास आया :

"क्या गोर्कीआइट गाड़ी में सवार हो सकते हैं?"

"हां।"

कोलोनीवासी, पीतल के बिगुल, रेशमी क़सीदा किया हुआ हमारा पुराना रेशमी फरहरा – सब मेरे सामने तैर गए। कुछ ही क्षणों के बाद लड़के और लड़कियों के उजले सिर गाड़ी की प्रत्येक खिड़की में से झांकने लगे। आंखों को सिकोड़े वे मेरी ओर देख रहे थे और चिल्लाकर कह रहे थे :

"अन्तोन सेम्योनोविच, आइए, हमारे डिब्बे में आ जाइए!"

"क्या आप नहीं चल रहे हैं? क्या आप कम्यूनवालों के साथ जा रहे हैं?"

"और हमारे यहां कल आयेंगे?"

उन दिनों मैं मज़बूत था। मुसकराकर लड़कों का मैंने अभिनन्दन किया। जब जुरबिन मेरे पास आया तो मैंने उसे एक आदेश दे दिया। उसमें कहा गया था, चूंकि मैं 'छुट्टी पर' जा रहा हूं, इसलिए कोलोनी का निर्देशन उसके हाथों में रहेगा।

जुरबिन ने शून्य चेहरे से आदेश की ओर देखा।

"तो क्या यह अन्त है?"

"हां," मैंने कहा।

"लेकिन ... कैसे ..." जुरबिन ने कहना चाहा लेकिन तभी गार्ड की सीटी की कानफोड़ आवाज़ आई और जुरबिन अपने वाक्य को पूरा करने में असमर्थ निराशा से हाथ हिलाता वहां से चला गया। उसने अपने सिर को गाड़ी की खिड़कियों से दूसरी ओर फेर लिया था।

लोकल गाड़ी चल पड़ी। लड़कों के खिले हुए चेहरे फूलों के गुच्छों की भांति मेरे सामने तैर गए। ऐसा लगा जैसे वे उत्सव मनाने जा रहे हों। चिल्लाकर उन्होंने 'विदा' कहा और परिहास के साथ दो उंगलियों के बल अपनी टोपियों को ऊंचा फहराया। आख़िरी खिड़की में कोरोत्कोव खड़ा था। मुसकराते हुए उसने मौन सलामी दी।

मैं बाहर चौरस में निकल आया। द्ज़ेरिजन्स्की कम्यूनवाले पंक्तिबद्ध मेरी प्रतीक्षा में खड़े थे। मैंने कमान दिया और वे शहर में से होते कम्यून की ओर चल दिये।

इसके बाद मैं फिर कभी कुरियाज नहीं गया।

तब से सात सोवियत साल गुज़र चुके हैं और ये साल मिसाल के लिए ज़ारशाही के सात सालों से कहीं ज़्यादा दीर्घव्यापी थे। इस अवधि में हमारा देश पहली पंचवर्षीय योजना के शानदार पथ को पार कर चुका था। दूसरी योजना क़रीब-क़रीब समाप्ति पर थी। इस काल में युरोप के पूर्वीय क्षेत्रों का दुनिया ने जितना अधिक आदर करना सीखा उतना रोमानोव शासन के तीन सौ सालों में भी नहीं सीखा था। इस काल में हमारे लोगों ने नयी मांसपेशियां विकसित कीं और हमारे अपने नये बुद्धिजीवी बड़े, और बड़े हुए।

मेरे गोर्कीआइट भी बड़े हुए। समूचे सोवियत संघ में वे फैले।

अपनी कल्पना में उन्हें एक जगह जमा करना मेरे लिए कठिन था। इंजीनियर ज़दोरोव को पकड़ना अब आसान नहीं था जो तुर्कमेनिस्तान के किसी व्यापक निर्माण-कार्य में निमग्न था, न ही वेर्शनेव को खींचकर लाना आसान था जो विशेष सुदूर पूर्वी सेना में मेडीकल अफ़सर था। इसी प्रकार बुरून को बुलाकर भी अब भेंट नहीं की जा सकती थी, जो यारोस्लावल में डाक्टर था। यहां तक कि निसिनोव और ज़ोरेन – वे नन्हे-मुन्ने छौने भी – उड़कर दूर चले गए थे, अपने परों को फरफराते हुए, उन परों को जो मेरी शैक्षणिक सहानुभूति के कोमल अंकुर मात्र नहीं, बल्कि अब सोवियत वायुयानों के इस्पाती पर बन गए थे। शेला-पूतिन की वह शपथ भी कोरी शपथ नहीं थी कि वह वायुयान-चालक बनेगा। शुरका जेवेली भी अपने बड़े भाई के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए – जोकि अब उत्तरी ध्रुव-प्रदेश में जहाज़ चलाता है – वायुयान-चालक बन गया था।

कोलोनी में आनेवाले साथी प्रायः मुझसे पूछते:

"कहते हैं कि लावारिसों और आवारों में अनेक प्रतिभाशाली, रचनात्मक प्रतिभा के धनी, व्यक्ति हैं... हमें यह तो बताइये, उनमें कोई लेखक या चित्रकार भी है?" हाँ, हमारे बीच लेखक थे, और चित्रकार भी, जिनके बिना कोई भी समूह क़ायम नहीं रह सकता। अगर वे न होते तो भित्ति-समाचारपत्र जैसी चीज़ कभी सम्भव न होती। लेकिन यहां यह दुःख के साथ स्वीकार करना पड़ेगा कि गोर्कीआइटों में से कोई लेखक या चित्रकार नहीं निकल पाये। उनमें कोई कलात्मक प्रतिभा नहीं रही हो, बात ऐसी नहीं थी। बात यह थी कि वे जीवन और उसकी आए दिन की व्यावहारिक समस्याओं में जी-जान से जुट जाने के कारण कलात्मक प्रतिभा को उभारने का अवसर नहीं पा सके थे।

कराबानोव कभी कृषिविद नहीं बना। कृषिरबफ़ाक की डिग्री उसने प्राप्त की, लेकिन वह विद्यालय में दाखिल नहीं हुआ। उसने दृढ़तापूर्वक मुझसे कहा:

"अनाज उगाने की चिन्ता न करो! मैं नन्हे साथियों के बिना नहीं रह सकता। जाने कितने लड़के – एक से एक अच्छे – अभी भी दुनिया में घूम रहे हैं – ओह, जाने कितने! अगर आप, अन्तोन सेम्योनोविच,

इस मामले में अपना जीवन खपा सकते हैं तो फिर, मेरी [illegible] मैं भी ऐसा कर सकता हूं।"

और सो सेम्योन कराबानोव ने समाज-शिक्षा का साहसिक पथ पकड़ा और आज के दिन तक कभी उसे नहीं छोड़ा, हालांकि सेम्योन को – अन्य किन्हीं भी साहसियों के मुक़ाबले – कुछ कम दु:खद परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ा। उसने चेर्नीगोव लड़की से शादी कर ली थी और उनके तीन वर्ष का एक लड़का था – अपनी मां की भांति काली आंखोंवाला तथा अपने पिता की भांति आवेगपूर्ण। एक दिन ख़ुद सेम्योन के छात्रों में से एक ने इस लड़के की जान ले ली। वह एक विकारग्रस्त लड़का था जिसे 'कठिन बच्चों' के गृह में भेजा गया था और जो इससे पहले भी एक से अधिक बार इस तरह के कृत्य कर चुका था। इसके बाद भी न तो सेम्योन कभी ढुलमुल हुआ, न उसने हमारे मोर्चे को छोड़ा – न वह भनभनाया, न उसने किसी को कोसा। उसने केवल मुझे एक छोटा-सा पत्र लिखा जिसमें शोक से अधिक आश्चर्य व्यक्त था।

मातवेई बेलूख़िन उच्च शिक्षा के लिए नहीं गया। एक दिन उसका एक पत्र मुझे मिला:

> "मैंने, अन्तोन सेम्योनोविच, आपसे एक शब्द भी कहे बिना जान-बूझकर ऐसा किया। कृपा कर मुझे माफ़ करना, लेकिन हृदय से सैनिक आदमी होने के कारण मैं भला इंजीनियर क्या ख़ाक बनता! सो मैं घुड़सवार सेना के एक स्कूल में भर्ती हो गया हूं। बेशक, चाहें तो आप कह सकते हैं कि रबफ़ाक छोड़कर मैंने गधे की-सी मूर्खता की। यह सब कुछ अच्छा न था, मैं जानता हूं। लेकिन, कृपा कर, मुझे एक पत्र ज़रूर लिखना। क्योंकि, इस बारे में मैं काफ़ी बेचैनी का-सा अनुभव कर रहा हूं।"

यह सदा ही आशाजनक है जब बेलूख़िन जैसे लोग भी 'बेचैनी का-सा' अनुभव करते हैं। और हम दीर्घ जीवन की आशा कर सकते

हैं जब सोवियत सेनाओं को बेलूख़िन जैसे कमाण्डर प्राप्त हैं। मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हुआ जब अपने नये बिल्लों के साथ मातवेई मुझसे मिलने आया – एक दीर्घकाय, बलिष्ठ, परिपक्व मानव – एक 'पूर्णकृति'।

मातवेई की भांति अन्य भी आए। उन्हें देखकर मैं हमेशा चौंका कि वे इतने बड़े हो गए हैं – तकनोलोजिस्ट ओसाद्‌ची, ड्राइवर मिशा ओवचारेन्को, कास्पियन के उस पार सिंचाई-कर्मचारी ओलेग ओग्नेव, शिक्षिका मारूस्या लेवचेन्को, ट्राम-चालक सोरोका, मिस्त्री वोलोख़ोव, फ़िटर कोरितो, मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन का फ़ोरमैन फ़ेदोरेन्को और आल्योश्का वोल्कोव, देनिस कुदलाती और जोर्का वोल्कोव – सब के सब पार्टी के कार्यकर्त्ता। मार्क शेइनहौस भी आया – अभी भी वैसा ही स्पन्दनशील और सच्चे बोल्शेविक चरित्र का धनी। और अन्य भी कितने ही आए।

लेकिन कितने ऐसे भी थे जो इन सात सालों में दिखाई नहीं दिए। अन्तोन घोड़ों की दुनिया में जाने कहां विलीन हो गया था। अपने जीवन के वह कोई चिन्ह प्रकट नहीं करता। प्रफुल्ल, तूफ़ानी आत्मा लापोत, और इसी प्रकार बढ़िया मोची गुद तथा महान निर्माता तारानेत्स भी लोप हो गये थे। लेकिन इसके लिए मैं दुःख नहीं करता या लड़कों को दोष नहीं देता कि वे भूल गए। हमारा जीवन ख़ूब भरा-पूरा है। यह आशा नहीं की जा सकती कि अपने पिताओं तथा शिक्षकों की सनकी भावनाओं को सदा रखा जाए। फिर उन सबको जमा करना 'तकनीकी तरीक़े' से भी असम्भव था। जाने कितनी लड़कियाँ और लड़के इस गोर्की कोलोनी में से निकले हैं, जिनके नामों का इन पन्नों में उल्लेख तक नहीं हुआ और जो उतने ही सजीव, उतने ही परिचित और उतने ही प्रिय थे जितने कि अन्य। गोर्की कोलोनी का अन्त हुए सात साल हो चुके हैं। इन सालों में एक भी ऐसा साल नहीं था जो युवा समुदाय की पांतों से, उनके संघर्ष से, उनकी पराजयों और विजयों से, परिचित आंखों की चमक और परिचित मुसकानों की अठखेलियों से निरन्तर भरा-पूरा न रहा है।

द्ज़ेरजिन्स्की समूह अभी भी अपना सम्पन्न जीवन बिना रहा है जिसे लेकर दस हज़ार महाकाव्यों की रचना की जा सकती है।

सोवियत देश में समूह पर पुस्तकें लिखी जाएंगी। कारण, सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख, यह समूहों का देश है। और ये पुस्तकें उन पुस्तकों से कहीं अधिक ज्ञान प्रदायिनी होंगी जिन्हें मेरे उन मित्रों ने – देवलोक के निवासियों ने – लिखा था जो समूह की अजीबोग़रीब व्याख्या करते थे :

> 'समूह परस्पर अन्तरप्रक्रियाशील व्यक्तियों का दल है जो संयुक्त रूप में, इस या उस उत्तेजना से प्रतिक्रियान्वित होते हैं।'

केवल पचास गोर्कीआइटों ने हिम-कणों से आच्छादित एक दिन – द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून के सुन्दर कमरों में पांव रखा था, लेकिन वे पेचदार उपलब्धियों, परम्पराओं और आविष्कारों को समूह की एक परखी हुई यथाक्रम तकनीक को – स्वामियों से मुक्त मानव की प्रस्फुटित होती हुई तकनीक को – अपने साथ लेकर आए थे। और इस स्वस्थ ज़मीन पर, चेकिस्तों की देख-संभार के अन्तर्गत तथा उनके उत्साह, संस्कृति और प्रतिभा की मदद से कम्यून ने विकसित होकर उज्ज्वल सौन्दर्य, श्रम की यथार्थ समृद्धता, उच्च समाजवादी संस्कृति से युक्त एक समूह का रूप धारण कर लिया, एक ऐसे समूह का जिसमें 'मानवीय प्राणी के पुनःसुधार' की बेहूदा समस्या का अब ज़रा-सा भी चिन्ह शेष नहीं था।

द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून में जीवन के सात साल संघर्षों के भी सात साल थे, गहरे तनावों के सात साल।

सोलोमोन बोरिसोविच की प्लाइवुड की वर्कशॉपों की अब किसी को याद नहीं थी। बहुत पहले ही उन्हें तोड़ा और ईंधन के रूप में जलाया जा चुका था। और ख़ुद सोलोमोन बोरिसोविच की जगह अब क़रीब एक दरजन इंजीनियरों ने ले ली थी जिनमें कितने ही इस योग्य थे कि उनके नामों को सोवियत संघ के अनेक सम्मानपूर्ण नामों के साथ अंकित किया जाना चाहिए।

१९३१ में कम्यूनवालों ने अपने पहले कारख़ाने का निर्माण कर लिया – बिजली के औज़ार बनानेवाले एक प्लांट का। छवि-चित्रों और फूलों से सज्जित उजले, ऊंचे हॉल में तरह-तरह के लेथों की पांतें

खड़ी थीं। और कम्यूनवालों के हाथों से अब जांघिये या पलंगों के अंश नहीं, बल्कि सभी बारीकियों से युक्त कमनीय औज़ार नमूदार होते हैं, सौ-सौ हिस्सों के बने हुए और ऊंचे गणित की आभा से रंजित।

कम्यून का समाज ऊंचे गणित से वैसे ही आह्लादित तथा अनुप्राणित है जैसे कि कभी बहुत पहले चुकन्दरों, सीमेन्थाल गायों, शूकर 'वसीली वसीलियेविच' तथा घोड़े 'मोलोदेत्स' ने हमें अनुप्राणित किया था।

जब 'फ़० द० ३' बड़ा ड्रिल असेम्बली शॉप से बाहर निकला, तो उसे परीक्षा करने की मेज़ पर रखा गया और वास्का अलेक्सेयेव ने – जो अब बड़ा हो गया था – बिजली को चालू किया, तो इंजीनियरों, कम्यूनवालों और कामगारों के क़रीब दो दरजन सिर व्यग्रता से आगे को झुक आये।

"चिनगारी दे रहा है..." चीफ़ इंजीनियर गोरबुनोव ने उदासी के साथ कहा।

"चिनगारी दे रहा है, शैतान कहीं का!" वास्का ने कहा।

अपनी उदासी को छिपाने के लिए मुसकराते हुए वे ड्रिल को फिर शॉप में ले गए, उसके पुर्ज़ों को अलग किया, जांचा-परखा, गणित के सारे ऊंचे नियमों का उस पर प्रयोग किया, अपने ब्लूप्रिण्ट को उसके ऊपर सरसराया। पूरे तीन दिन तक यह सब चलता रहा। परकारों की टांगें ब्लूप्रिंट के ऊपर घूमीं, स्पन्दनशील 'केलेनबर्गर' ख़राद की मशीनों ने आख़िरी फालतू हिस्से को – इंच के सौवें अंश को – छीलकर साफ़ किया, लड़कों की संवेदनशील उंगलियों ने अत्यन्त कोमल हिस्सों को जोड़ा, अपनी संवेदशील आत्माओं में अगली परीक्षा की प्रतीक्षा में थरथराहट का अनुभव करते हुए।

तीन दिन बाद 'फ़० द० ३' ड्रिल को एक बार फिर परीक्षा करने की मेज़ पर रखा गया, एक बार फिर उसके ऊपर सिर झुके और एक बार फिर चीफ़ इंजीनियर गोरबुनोव ने उदासी के साथ कहा:

"चिनगारी दे रहा है..."

"चिनगारी दे रहा है, जंगली!" वास्का अलेक्सेयेव ने प्रतिध्वनि की।

"अमरीकी ड्रिल चिनगारी नहीं छोड़ता था," गोरबुनोव ने ईर्ष्या के साथ याद किया।

"हां, वह चिनगारी नहीं छोड़ता था," वास्का को भी याद आया।

"नहीं, यह चिनगारी नहीं छोड़ता था," एक अन्य इंजीनियर ने पुष्टि की।

"बेशक, वह चिनगारी नहीं छोड़ता," सब लड़के एक साथ चीखे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि किससे वे गुस्सा हों—अपने से, लेथों से, नम्बर चार की संदिग्ध इस्पात से, लड़कियों से जिन्होंने आर्मेचर पर काम किया था, या इंजीनियर गोरबुनोव से।

लेकिन तिम्का ओदारियुक जो लड़कों की भीड़ के बीच पंजों के बल खड़ा था और अपना झाइयांदार लाल चेहरा सबके सामने प्रदर्शित कर रहा था, लजाता और नीचे की ओर देखता आगे बढ़ा:

"अमरीकी ड्रिल भी इसी तरह चिनगारी छोड़ता था।"

"तुम्हें क्या मालूम?"

"मुझे याद है कि जब उसे चालू किया गया तो किस प्रकार वह चिनगारी छोड़ता था। और चिनगारी छोड़ना लाज़िमी है, यहां के वेण्टीलेटर की वजह से।"

तिम्का की बात का किसी ने विश्वास नहीं किया। ड्रिल को फिर शॉप में ले जाया गया, एक बार फिर दिमाग़, लेथ तथा स्नायु उस पर काम में जुट गए।

समूह का तापमान काफ़ी बढ़ गया, शयनागारों, क्लबों और कक्षा-कमरों में चिन्ता लहराने लगी।

ओदारियुक के इर्द-गिर्द समर्थकों का एक दल उठ खड़ा हुआ।

"बेशक, हमारे साथी उद्विग्न हैं, क्योंकि पहला ड्रिल है। लेकिन अमरीकी ड्रिल इससे भी बदतर चिनगारियां छोड़ते हैं।"

"नहीं !"

"छोड़ते हैं !"

"नहीं !"

"छोड़ते हैं !"

आखिर हमारे स्नायु जवाब दे गए। हमने मास्को को खटखटाया और अपने से बड़ों तथा श्रेष्ठों से मनुहार की :

"हमें एक 'ब्लैक और डैकर' भेज दीजिये !"

उन्होंने भेज दिया।

अमरीकी ड्रिल को कम्यून में लाया गया और परीक्षा करने की मेज़ पर उसे रखा गया। दो दरजन से कहीं ज़्यादा सिर अब मेज़ के ऊपर झुके थे, और तीन सौ कम्यूनवालों की व्यग्रता हम सब पर छाई थी। वास्का ने सर्वथा पीतवर्णी बिजली चालू की। इंजीनियरों ने अपनी सांस रोक ली। मशीन की गूंज के बीच ओदारियुक ने ज़ोरों से कहा :

"यह देखो, मैं कहता था न ..."

कम्यून से सन्तोष की एक सांस ऊपर उठी, और आकाश में जाकर विलीन हो गई, उसकी जगह विजयी चेहरों और मुसकानों ने ले ली।

"तिम्का ठीक कहता था !"

विह्वलता से भरा वह दिन हम कभी का भूल चुके हैं। कारण कि अब – काफ़ी अर्से से – हम पचास ड्रिल प्रतिदिन तैयार कर रहे हैं, और चिनगारियों का छूटना भी अब एक अर्से से बंद है। कारण, हालांकि तिम्का ने सच कहा था, लेकिन एक सच और भी था। और वह सच था चीफ़ इंजीनियर गोरबुनोव का निश्चय, साथ में ऊंचे गणित का संयोग।

"चिनगारी नहीं निकलनी चाहिए !"

यह सब भूला जा चुका है, क्योंकि नयी चिन्ताएं और नये मामले बराबर उभरते रहते हैं।

१९३२ में कम्यून में कहा गया :

"हम 'लेइका' केमरा बनाने जा रहे हैं !"

एक चेकिस्त ने यह कहा था, एक क्रान्तिकारी और कामगार ने,

जो इंजीनियर नहीं था, आप्टीकल मिकेनिक या फ़ोटो-निर्माता नहीं था। अन्य चेकिस्तों, क्रान्तिकारियों और बोल्शेविकों ने कहा :

"कम्यूनवाले 'लेइका' बनाने का काम हाथ में लें!"

इस बार कम्यूनवाले क़तई उद्विग्न नहीं हुए :

"'लेइका'? बेशक, हम 'लेइका' बनाएंगे!"

लेकिन अन्य भी थे सैकड़ों की संख्या में – इंजीनियर, आप्टीकल मिकेनिक, निर्माता – जिन्होंने जवाब दिया :

"'लेइका'? पागल तो नहीं हो गए? हा-हा!"

और एक नया संघर्ष शुरू हुआ, उन अत्यन्त पेचीदे सोवियत अनुष्ठानों में से एक, जो उन दिनों इतनी अधिक संख्या में हमारे अपने देश में सम्पन्न किये जा रहे थे। इस संघर्ष में सभी कुछ सन्निहित था – विविध प्रकार के भावोद्रेक, कल्पना की उड़ानें, सोवियत वायुयानों की उड़ानें, ब्लूप्रिंट, पूर्ण ख़ामोशी के साथ प्रयोगशालाओं में प्रयोग तथा अन्य गुरु-गम्भीर प्रक्रियाएं। इसमें ईंटों की धूल और... बार-बार धावे, कम्यूनवालों की पांतों के धावे, पराजित वर्कशॉपों में शक्तियों की आज़माइश सन्निहित थी, करो या मरोवाली दृढ़ता के साथ। चारों ओर एक बार फिर सन्देह की उसासें विस्तृत हुईं, शीशों की ओट में छिपी आंखें एक बार फिर अविश्वास के साथ सिकुड़ उठीं :

"'लेइका'? ये छोकरे? लैन्स – माइक्रोन तक शुद्ध लैन्स! हा-हा!"

लेकिन पांच सौ लड़के और लड़कियां माइक्रोनों की, शुद्ध लेथों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म जाल की अत्यन्त नाजुक सहनशीलता की, वर्तुलीय व्यतिक्रमों और आप्टीकल वक्रताओं की दुनिया में उतर चुके थे। इन लड़कों और लड़कियों ने मुसकराते हुए घूमकर चेकिस्तों की ओर देखा।

"परवाह नहीं, लड़को! चिन्ता न करो!" चेकिस्तों ने कहा।

कम्यून में बढ़िया 'फ़ेद' वर्क्स का उदय हो गया – चारों ओर फूलों, अस्फ़ाल्ट और फौव्वारों से सजा हुआ। और कई दिन पहले कम्यूनवालों ने जन-कमीश्नर की मेज़ पर दस हज़ारवां 'फ़ेद' केमरा प्रस्तुत किया – एक बेदाग़, कमनीय यंत्र!

बहुत कुछ घटित हुआ, बहुत कुछ याद की पकड़ से छूटता गया। वह आदिम साहसिकता, चोरों की वह बोली और अतीत के अन्य अवशेष – सब एक मुद्दत से विस्मृति के गर्भ में समा चुके हैं। हर वसन्त में कम्यून का रबफ़ाक बीसियों छात्रों को उच्च शिक्षा की संस्थाओं में भेजता है, शीघ्र ही इन संस्थाओं से इंजीनियर, डाक्टर, इतिहासविद, भूगर्भशास्त्री, विमान-चालक, जहाज़-निर्माता, रेडिओ-आपरेटर, शिक्षाविद्, संगीतज्ञ, अभिनेता, गायक बनकर निकलेंगे। ये नये बुद्धिजीवी, प्रत्येक गर्मियों में, अपने कामगार-बंधुओं – टर्नरों, केप्स्टन लेथ पर काम करनेवालों, मिलिंग मशीन आपरेटरों, ढलाईगरों से मिलने आते हैं और तब अभियान का आयोजन होता है। प्रतिवर्ष गर्मियों के ये अभियान हमारी परम्परा का नया अंग बन चुके हैं। कम्यूनवाले हज़ारों किलोमीटर पार कर चुके हैं, पहले की भांति छः-छः की पांतों में, सबसे आगे आर्केस्ट्रा के साथ झंडा फहराते हुए। वोल्गा ज़िले, क्रीमिया और काकेशस को वे पार कर चुके हैं, मास्को, ओदेस्सा और आज़ोव सागर के तटों को वे छू आए हैं।

कम्यून में ग्रीष्म पुनर्मिलन के दौरान उन दिनों जब 'चिनगारियां छूटती थीं' और उन दिनों में जब कम्यूनवालों का श्रमिक जीवन कम शान्त गति से बढ़ता होता, गोल सिर और स्वच्छ आंखोंवाला एक लड़का पोर्च की ओर लपकता, अपने बिगुल को आकाश की दिशा में तिरछाता और 'कमाण्डरों की परिषद' के लिए एक संक्षिप्त सिगनल ध्वनित करता। सदा की भांति कमाण्डर दीवारों से लगकर बैठ जाते, दरवाज़ों पर उत्सुक दर्शकों की भीड़ जमा हो जाती और नन्हे लड़के फ़र्श पर आसन जमाते। सदा की भांति उसी गम्भीरता तथा तेज़ाबी लहजे के साथ कमाण्डरों की परिषद का अध्यक्ष उस दिन के अपराधी को आदेश देता:

"चलो, कमरे के बीचोंबीच जाकर खड़े हो – एकदम अटैंशन – और बताओ कि यह सब क्या है?"

ठीक पुराने दिनों की भांति विभिन्न घटनाएं घटतीं, मिज़ाज टकराते, समूह – मधुमक्खियों के छत्ते की भांति गुंजार करता हुआ – ख़तरे के स्थल में कूदता। शिक्षा-विज्ञान अब भी उतना ही कठिन तथा पेचीदा सिद्ध होता जितना कि पहले।

यह सब होने पर भी चीज़ें अब अधिक सहज हैं। लांछना और पंगुता में डूबा गोर्की कोलोनी में मेरा वह पहला दिन दूर – बहुत दूर – छूट चुका है। दूरबीन के संकरे लैन्स से देखे गए लघु चित्र की भांति वह मुझे दिखाई देता है। हां, चीज़ें अधिक सहज हैं। सोवियत संघ के अनेक हिस्सों में गम्भीरता के साथ शैक्षणिक कार्य करने के लिए ठोस केन्द्र अब खुले हैं, दुर्भाग्य एवं कुचरित्रपूर्ण बचपन के आख़िरी पोषण-केन्द्रों पर कम्युनिस्ट पार्टी अन्तिम प्रहार कर रही है।

शायद वह दिन अब दूर नहीं है जब लोग 'शिक्षा के महाकाव्य' न लिखकर एक सीधी-सादी कामकाजी पुस्तक लिखेंगे जिसका नाम होगा 'कम्युनिस्ट शिक्षा की पद्धति'।

ख़ारकोव, १९२५–१९३५

परिशिष्ट

अन्तोन सेम्योनोविच मकारेन्को (१८८८-१९३९) एक प्रसिद्ध सोवियत शिक्षाविज्ञ और लेखक थे। वे भूतपूर्व ख़ारकोव प्रांत के बेलोपोल्ये नगर में एक कामगार के परिवार में पैदा हुए थे। १९०५ में उन्होंने एक रेलवे स्कूल में पढ़ाना शुरू किया।

क्रान्तिकारी घटनाओं का प्रभाव, मार्क्सवादी साहित्य का ज्ञान, कामगार जनता के साथ निरन्तर संपर्क – इन सब ने मिलकर तरुण मकारेन्को की विचार-धारा को निश्चित किया।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद मकारेन्को ने अपने समस्त ज्ञान और बल को नये, सोवियत मानव की शिक्षा-दीक्षा में लगा दिया।

१९२० के सितंबर में जन-शिक्षाविभाग के आदेश से मकारेन्को ने उक्राइन के पोल्तावा नगर के पास बाल-अपराधियों के लिए एक श्रम-कोलोनी की स्थापना की। बाद में इस कोलोनी का नाम म० गोर्की के नाम पर रखा गया।

१९२७ के अंत में मकारेन्को ख़ारकोव उपनगर में स्थापित फ़० द्ज़ेरजिन्स्की बाल-कम्यून के अध्यक्ष हुए लेकिन साथ ही साथ वे अपना पहला काम भी करते रहे।

मकारेन्को की प्रवर्तनशीलता का, बाल-समुदाय को शिक्षित करने की उनकी प्रगतिशील प्रणाली का शिक्षाविज्ञान के उन व्याख्याताओं ने डटकर विरोध किया जो सोवियत व्यवस्था के अनुकूल न बैठनेवाली

विचार-धारा के पक्षपाती थे। १६२८ के अन्त में मकारेन्को को गोर्की कोलोनी से त्यागपत्र देने और द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून में जुटकर काम करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

उनके शैक्षणिक कृत्यों की गोर्की ने हृदय से सराहना की। १६२५ से मकारेन्को और उनके शिष्यगण मक्सिम गोर्की से पत्र-व्यवहार करने लगे और १६२८ में गोर्की कोलोनी और कम्यून में पधारे। गोर्की ने ही मकारेन्को को सुझाव दिया कि वे कोलोनीवासियों के जीवन के बारे में एक पुस्तक लिखें।

१६३२ में मकारेन्को की पहली पुस्तक – '१६३० की प्रगति' प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून की प्रगति की झांकी दिखाई है।

१६३३ में 'जीवन की ओर' का पहला भाग प्रकाशित हुआ। दूसरा और तीसरा भाग १६३५ में प्रकाशित हुए।

१६३७ में मकारेन्को मास्को चले आए और साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यों में तन-मन से लग गए। अगले दो वर्षों के अन्दर उन्होंने लगभग साठ कृतियां प्रकाशित कीं जिनमें 'मां-बाप और बच्चे' (१६३७), 'प्रतिष्ठा' (१६३७-१६३८) और 'बुर्जों पर के झंडे' (१६३८) भी शामिल हैं।

साहित्य-क्षेत्र में उनकी अद्भुत सेवाओं के लिए उन्हें १६३६ की फ़रवरी में श्रम लालध्वज-पदक से सुशोभित किया गया। उनका देहान्त तब हुआ जब उनकी रचनात्मक शक्तियां ज़ोरों पर थीं।

* * *

अन्तोन सेम्योनोविच मकारेन्को ने 'जीवन की ओर' १६२५ में लिखना शुरू किया। इस पुस्तक को पूरा करने में उन्हें दस वर्ष लग गए।

मक्सिम गोर्की ने लेखक मकारेन्को में असाधारण मित्रतापूर्ण दिलचस्पी दिखलाई, उन्हें अपनी सलाह दी और हर तरह से प्रोत्साहन भी दिया।

'जीवन की ओर' लिखते समय मकारेन्को ने गोर्की के साथ जो पत्र-व्यवहार किया वह बहुत ही दिलचस्प है।

गोर्की को लिखे गए आरंभिक पत्रों में ही मकारेन्को ने उन्हें सूचित किया कि उन्होंने कोलोनी के सम्बन्ध में पुस्तक लिखना शुरू कर दिया है।

१६२५ के ६ दिसंबर को गोर्की ने लिखा – " 'जीवन की ओर' को मुझे समर्पित करने की आपकी आकांक्षा के लिए आप मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करें। आप इसे कहां से प्रकाशित कराना चाहते हैं? मेरी सलाह है कि इसे मास्को से ही प्रकाशित कराएं... क्या इसमें चित्र देने का भी आपका विचार है? यह बड़ा ही नेक विचार है..."

इस पत्र की प्राप्ति के बाद मकारेन्को अपनी पुस्तक की प्रगति के बारे में ही गोर्की को सूचित नहीं करते रहे बल्कि उनके साथ अपने विचारों और अनुभूतियों का भी आदान-प्रदान करते रहे। ५ अक्तूबर, १६३२ को मकारेन्को ने लिखा:

> "अपनी कृतियों में मुझे 'जीवन की ओर' सबसे प्रिय है। यह पुस्तक गोर्की कोलोनी में मधुरतम उपलब्धियों का नहीं बल्कि गुरुतम संघर्ष का चित्रण प्रस्तुत करती है..."

१६३३ के सितम्बर में मकारेन्को ने 'जीवन की ओर' का पहला भाग गोर्की को दिखलाया और उसी महीने में गोर्की ने उन्हें लिखा:

"...मेरे विचार से, 'जीवन की ओर' में आपको बहुत सफलता मिली है। इसके 'कथानक' की महत्ता और विषय की मार्मिकता का तो कहना ही क्या, आपने विषय को बड़ी अच्छी तरह संभाला है और वर्णन का सच्चा, जीवन्त और प्रभावशाली ढंग अपनाया है। आपके हास-परिहास बिलकुल अपने उचित स्थल पर ही उमड़े हैं। मुझे ऐसा लगता है कि पाण्डुलिपि में बहुत अधिक संपादन की आवश्यकता नहीं, लेकिन कोलोनीवासियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि को दिखाना ज़रूरी है क्योंकि 'कमाण्डरों' के बारे में तो बहुत कुछ कहा गया है लेकिन ख़ुद फ़ौज अंधेरे में है।

पाण्डुलिपि अवश्य ही प्रकाशित होनी चाहिए। लिखने का काम ज़ोर-शोर से चल रहा है न? क्या यह संभव नहीं कि प्रथम भाग को कुरियाज जाने के निर्णय के साथ समाप्त किया जाए?"

* * *

मकारेन्को ने 'जीवन की ओर' के प्रथम भाग को आठ वर्षों (१९२५-१९३३) में पूरा किया। इसके प्रकाशन के बाद, उन्होंने गोर्की के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हुए लिखा (मार्च, १९३४): "आपके मनोयोग, समर्थन और प्रोत्साहन के बल पर ही 'जीवन की ओर' का प्रकाशन संभव हो सका है..." आगे उन्होंने 'जीवन की ओर' के दूसरे भाग के सम्बन्ध में अपने विचारों और योजनाओं के बारे में लिखा था:

"मुझे दूसरा भाग लिखना चाहिए या नहीं? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि दूसरे भाग के लिए मेरे पास प्रचुर सामग्री है। गोर्की कोलोनी अपने पूरे उभार पर है। पहले भाग में मैंने समूह के निर्माण के बारे में बताने की कोशिश की थी और दूसरे भाग में मैं एक विशाल समूह की सबल प्रगति, कुरियाज की विजय और ख़ारकोव-संघर्ष के बारे में लिखना चाहता हूँ। कुरियाज में आपके आगमन के वर्णन के साथ-साथ मैं इस भाग को समाप्त करना चाहता हूँ।

पहले भाग की अपेक्षा दूसरा भाग मेरे लिए अधिक कठिन है– यह ध्यान में रखना है कि सम्पूर्ण समूह का वर्णन तो हो लेकिन साथ ही व्यक्तिगत पात्रों की उपेक्षा भी न की जाए, उनके विविध चरित्रों पर स्पष्ट प्रकाश अवश्य डाला जाए। मुझे भय-सा लगता है।

मुझे यह मालूम नहीं कि कथानक में शिक्षा-समस्या सम्बन्धी सैद्धान्तिक विषयान्तरण में प्रवेश उपयोगी होगा या नहीं। इसके लिए मेरे अन्दर एक कसमसाहट-सी हो रही है – क्या यह अच्छी बात है?"

१४ जून, १९३४ को लिखे गए एक अन्य पत्र में मकारेन्को ने बताया था कि ख़ारकोव में एक समिति स्थापित की गयी थी जिसका काम था बाल-श्रम-कम्यूनों का संगठन करना। उन्होंने अपनी पुस्तक के दूसरे भाग के बारे में निम्न शब्द लिखे थे: "मैं 'जीवन की ओर' का दूसरा भाग लिख रहा हूँ। यह काम धीरे-धीरे चल रहा है। सदा की भांति कम्यून के सख़्त काम-काज बाधा डालते हैं।"

गोर्की ने इसका उत्तर दिया: "यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि सरकार ने बड़े पैमाने पर बाल-श्रम-कम्यून संगठित करने का निर्णय किया है। मैं इस विलक्षण कार्य में आपके सहयोग की आवश्यकता

अच्छी तरह महसूस करता हूँ लेकिन मुझे यह जानकर दुःख पहुँचा है कि 'जीवन की ओर' का दूसरा भाग लिखने का काम धीरे-धीरे चल रहा है।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप उस कृति की महत्ता अच्छी तरह महसूस नहीं करते जो बच्चों की शिक्षा-दीक्षा सम्बन्धी आपके तरीक़े को न्यायोचित और सुदृढ़ करनेवाली है। आप 'जीवन की ओर' को समाप्त करने की कोशिश करें। मेरी इच्छा है कि नये कम्यूनों की स्थापना के समय वह पढ़ी जाए। इस कार्य से आप उनकी सफलता सुनिश्चित करेंगे – ठीक उसी तरह जिस तरह कुरियाज कोलोनी और द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून को सफलताएँ मिलीं। मुझे आशा है कि आप दूसरे भाग को समाप्त करने में जी-जान से जुट जाएंगे। केवल एक लेखक के नाते ही नहीं बल्कि उपर्युक्त कारणों से भी आपसे मेरा यह अनुरोध है।"

१६३४ के अगस्त में मकारेन्को ने 'जीवन की ओर' का दूसरा भाग समाप्त करके उसे गोर्की के पास भेज दिया।

गोर्की से इस पुस्तक की विस्तृत समीक्षा प्राप्त करने के बाद मकारेन्को ने उन्हें १८ सितंबर, १६३४ को लिखा :

"प्रिय अलेक्सेई मक्सिमोविच! किन शब्दों में मैं आपका आभार और प्रेम व्यक्त करूँ? मैं केवल एक ही बात जानता हूँ – कि आपने जो असाधारण दिलचस्पी मुझमें और मेरी पुस्तक में दिखलाई है उसके योग्य हम दोनों में से कोई भी नहीं और जो कार्य आपने हमें उदारतापूर्वक सौंपा है उसके भी हम योग्य नहीं।

अपने दूसरे भाग के बारे में मेरी कोई निश्चित सम्मति नहीं – कभी मुझे यह अच्छा लगता है, यहाँ तक कि पहले भाग से भी बेहतर, और कभी मैं सोचता हूँ कि इसमें कोई जान नहीं, इसका कोई उपयोग नहीं है। मैंने इसे बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियों में लिखा है; कम्यून में अपने तूफ़ानी कामों के अर्से में तथा कम्यूनवालों के ग्रीष्मकालीन पर्यटन के दौरान – रेल के डिब्बे में, नगर की सड़कों पर, परेडों के बीच विश्रामकाल में।

इसके फलस्वरूप और मेरी अनुभवहीनता तथा अक्षमता के कारण इसमें बहुत-सी त्रुटियाँ हैं जो अब आपकी समीक्षा के बाद मेरे सामने और भी साफ़-साफ़ झलकने लगी हैं।

मैंने इस में वहुत ही काट-छांट की है। टाइप किये हुए पचास से अधिक पृष्ठ मैंने काट डाले। लेकिन सम्पूर्ण दूसरे भाग पर फिर से काम करना मेरे लिए ज़रा मुश्किल है क्योंकि इसका निर्माण एक ऐसे विशेष सिद्धान्त पर आधारित है जिसे मैं सही समझता हूँ लेकिन इस पुस्तक पर काम करते समय उस सिद्धान्त का पालन करने में मैं पूर्णत: सफल नहीं हो सका हूँ।

मैं आपसे निम्न बातों पर ध्यान देने के लिए अनुरोध करता हूँ:

शिक्षा सम्बन्धी मेरा मत – शिक्षा-शास्त्र द्वंद्वात्मक विषय है – बिलकुल त्रुटिहीन शिक्षा-प्रणाली का प्रतिपादन नहीं कर सकता। हर तरह का मत जो परिस्थितियों से और किसी ख़ास क्षण की मांगों से उद्भूत नहीं होता, ग़लत होता है।

मैं यही प्रतिपादित करना चाहता हूँ कि कम्यूनिस्ट शिक्षा में श्रम-समूह ही शिक्षा का एकमात्र प्रमुख साधन है। इसलिए, संगठनकर्त्ता का मुख्य प्रयास ऐसे ही समूह के सृजन और संरक्षण पर केन्द्रित होना चाहिए ...

'जीवन की ओर' के पहले भाग में मैंने यह दिखाने की कोशिश की है कि मेरे जैसे अनुभवहीन व्यक्ति को ग़लतियाँ करते हुए भी बाल-अपराधियों को समूह के सांचे में ढालने में किस तरह सफलता मिली। मुझे अपने इस विश्वास के कारण सफलता मिली कि – समूह को एक जीवन्त समूह होना आवश्यक है और इसका गठन सच्चे अर्थों में जीवन्त व्यक्ति ही कर सकते हैं जो अपने काम के दौरान ख़ुद भी बदलते और ढलते हैं।

दूसरे भाग में व्यक्तिगत सुधार के बारे में मैंने जान-बूझकर नहीं लिखा है। मेरे विचार से अलग-अलग व्यक्ति का सुधार एक गौण कार्य है और सामूहिक सुधार को प्रमुखता देनी आवश्यक है। दूसरे भाग में मैंने शिक्षा के प्रमुख साधन – समूह – पर रोशनी डालने और इसके विकास की द्वंद्वात्मक प्रकृति को दिखाने का साहस किया है ...

... हो सकता है कि मैं यह सब कुछ अच्छे ढंग से न कह सका होऊँ; यह एक अलग बात है।

तीसरे भाग में मैं उस गतिशील समूह को दिखाना चाहता हूँ जो तीन सौ कुरियाज लड़के-लड़कियों से बना है और जिसमें व्यक्तिगत

सुधार पर नहीं, बल्कि सामूहिक सुधार पर ज़ोर दिया जाएगा। तीसरे भाग में यह प्रमाणित करने के लिए मेरे पास प्रचुर सामग्री है कि समूह के दायरे में सुधार का काम सरलतर है और उसे शीघ्रता से सम्पन्न किया जा सकता है।

तीसरे भाग में मैं शिक्षा की जन-कमिसरियट के कुछ व्यक्तियों द्वारा लगाई गई अड़चनों पर रोशनी डालना चाहता हूँ। दूसरे भाग में मैंने इस संघर्ष का केवल आभास मात्र दिया है। कुरियाज में गोर्की-आइट समूह के सक्रिय कार्य-कलाप से भड़ककर ही शिक्षा की जन-कमिसरियत ने मेरे काम में मीन-मेख निकालना और मेरे रास्ते में अड़चनें डालना शुरू किया था। तीसरे भाग में मैं यह भी दिखाना चाहता हूँ कि किस प्रकार 'उपरोपण' (ग्राफ़्टिंग) की प्रणाली से एक स्वस्थ समूह अन्य समूहों (द्ज़ेरजिन्स्की कम्यून) को आसानी से ढाल सकता है।

यही है मेरी योजना। हो सकता है कि मैं यह सब कुछ इतने अच्छे ढंग से न कह सका और न कह सकूँ कि पाठक इसे साफ़-साफ़ समझ जाएं। यह अच्छा ही हुआ कि मुझे अभी ही इसका पता चल गया – तीसरे भाग में मैं भरसक अपने को सुबोध बनाने की कोशिश करूँगा।

प्रिय अलेक्सेई मक्सिमोविच, मेरी ओर से एक बार फिर धन्यवाद स्वीकार करें। कितने अफ़सोस की वात है कि मैं आपके दर्शन नहीं कर सका। सबसे दु:ख की बात तो यह कि आप अस्वस्थ हैं।

मैं आपके स्वास्थ्य और प्रसन्नता की कामना करता हूँ।

आपका भक्त
अ० मकारेन्को"

२६ जनवरी, १६३५ को एक पत्र में मकारेन्को ने लिखा :

"मैंने 'जीवन की ओर' का तीसरा भाग लिखना शुरू कर दिया है। मुझे आशा है कि मैं साहित्यिक पत्र के सातवें अंक के लिए इसे भेज दूँगा। मेरी बड़ी इच्छा है कि तीसरा भाग सर्वोत्तम हो, अतः मैं इसे

यथाशीघ्र पूरा करने की कोशिश करूँगा ताकि इसमें संशोधन-परिवर्द्धन करने या ज़रूरत पड़ने पर पुन:लेखन का अवसर मिल सके।"

शीघ्र ही पुस्तक पूरी हो गयी।

१९३५ के सितंबर में पुस्तक के प्रकाशित होने पर अन्तोन सेम्योनोविच ने गोर्की को लिखा: "आपके तक़ाज़े और सक्रिय सहयोग के बिना मैं यह पुस्तक कभी नहीं लिख सकता था"। १९३६ में, गोर्की की मृत्यु के बाद, 'मक्सिम गोर्की और मेरा जीवन' शीर्षक अपने एक लेख में मकारेन्को ने अपनी भावनाओं को सरल और सीधे शब्दों में अभिव्यक्त किया: "... अपने जीवन की आख़िरी सांस तक मक्सिम गोर्की मेरे गुरु बने रहे ..."

गोर्की के साथ मकारेन्को का पत्र-व्यवहार एक महान लेखक और एक प्रतिभाशीली एवं उत्साही लेखक-शिक्षाविज्ञ के बीच रचनात्मक मैत्री का प्रमाण है।

पाठकों से

'रादुगा' प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

'रादुगा' प्रकाशन
मकान न० ३३, सी – १४
ताशक़न्द – ७०००११
सोवियत संघ

RADUGA PUBLISHERS
House № 33, C–14
TASHKENT – 700011
USSR

АНТОН МАКАРЕНКО

ПЕДАГОГИЧЕСКАЯ ПОЭМА

В двух томах

Том второй
Части вторая и третья

На языке хинди

Перевод сделан по изданию: Макаренко А. С., Собрание сочинений в 7-ми томах, изд-во Академии педагогических наук РСФСР, т. 1, 1950 г.